श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी ग्रन्थमाळा-ग्रन्थाङ्क ५३

ॐ अर्हं महावीरदेवायनम.

श्रीमद् देवचन्द्र भाग २ बीजो

संशोधक,

योगनिष्ठ शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरि

प्रगटकर्त्ता,

श्रीअध्यात्मज्ञानप्रसारकमंडळ

हा. वकील मोहनलाल हिमचन्द, पादरा.

प्रति-५००

वीर संवत् २४४५ — विक्रम संवत् १९७५

किम्मत ३-८-०

आ ग्रंथ मळवानुं ठेकाणुं :—

वकील मोहनलाल हिमचंद—पादरा (गुजरात)

बडोदरा–शियापुरामां, लुहाणामित्र स्टीम प्रेसमां, विठ्ठलभाइ आशाराम
ता १–१०–१९१९ ना रोज प्रगटकर्त्ता माटे छापी प्रसिद्ध कर्युं

निवेदन

श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिजी ग्रंथमाळाना ओगणपच्चाशमा
ंका तरीके श्रीमद् देवचन्द्र प्रथम भाग छपाया पछी दोढ वर्षे
ा श्रीमद् देवचन्द्र बीजो भाग बहार पडे छे श्रीमद् देवचन्द्रजी
हाराजना तमाम ग्रंथो एकत्र करी छपाववानी योजना जैनाचार्य
ीमद् बुद्धिसागर सूरिजीनी प्रेरणाथी अने उपदेशथी क्यारे
ने केवी रीते थई, तेमज क्या ग्रंथो क्यांथी केवी रीते मळ्या
सर्वे हकीकत श्रीमद् देवचन्द्र प्रथम भागनी प्रस्तावनामा
ागवार जणावेली होवाथी ते फरीथी अत्रे जणावेल नथी
ंम भागनी ५०० नकलो छपावी हती तेमाथी जैन पुस्तक
ो तथा साहाय्य करनार विगेरेने भेट आपवामा १५०
ो तेमज वेचाणमा २०० नकलो मळी एकदर ३५०
ो खपी छे जो के मागणीओ घणीज आवे छे छता
ो थोडी होवाथी उपयोग प्रमाणे आपवामा आवे छे

श्रीमद् देवचन्द्र बीजा भागना एकदर पृष्ट १२०० ना
ारे छे अने तेनी पण ५०० नकलो छपावी छे, ग्रंथनु
भारे थवाथी त्रणसो नकलो बे कटके बाधवामा आवी छे
पकी पहेला कटकामा विचारसार ग्रंथ अने बाकीना ग्रंथो
ा कटकामा आव्या छे बाकीनी २०० नकलो आखी
ामा आ... जे पुस्तकालयो वगेरेने आपवामा उपयो-
ओ

ीमद् देवचन्द्र बीजा भागमा जे जे ग्रंथो छपाया छे

वेनी वीगनवार यादी अनुक्रमणिका उपरथी वाचको जोई शकशे श्रीमद् देवचन्द्र प्रथम भागनी पेठे आ वीजो भाग पण जैनो तेमज जैनेतरोने अत्यन्त उपयोगी थई पडे तेम छे युरोपीय विग्रहना समयमा आ ग्रंथ छपाववामा आवेलो होवाथी सख्त मोंघवारीना लीधे कागळो-छपामणी-बंधाई वगेरेनो एटलो बधो खर्च थयो छे के एक नकलनी पडतर कीं रु ६-०-० ना आशरे थाय छे तेमज कद वधी जवाथी वे कटके बांधेल छे छता तेनी कींमत मात्र रु ३-८-० राखी छे वे कटका साथेज आपवामा आवशे.

श्रीमद् देवचन्द्र प्रथम भाग तथा बीजा भागमा मदद करनार जैन ग्रहस्थोना नाम नीचे प्रमाणे —

रु ५०१ शा म्होलाल नाथाभाई-पादरा
२०० शा म्होलाल नरोतमदास-रणु (पादरा)
२०० शा झवेरभाई भगवानदास-कावीठा (बोरसद)
१०१ श्रीयुत श्रेष्ठी अमरचंदजी बोथरा बालुचर (मुर्शिदाबाद)
३१ श्रीयुत श्रेष्ठी बुधसिंहजी बोथरा " "
६१ " " जगतपतिसिंहजी दुगड " "
५१ " " हरखचंदजी नाहटा " "
२५ " " गुलाबचंदजी मूरा " "
१८६ शा हीरालाल छोटालाल-पादरा
२५० बाइ रतन शा चुनीलाल कहानदासनी विधवा इटोला (वडोदरा)
१०१ वकील मोहनलाल हीमचंद-पादरा
२५ सो बाइ जमना वकील मोहनलाल हीमचंदना पत्नी "

१०० शा लक्ष्मीचद लालचद–वड (पादरा)
१०० बाइ चचल शा दामोदर कल्याणदासनी विधवा „
८९ बेन मणी शा प्रेमचद दलसुखभाइनी भाणेज पादरा
८० शा केशवलाल लालचद वडोदरा–मामानी पोळ
७५ शा केशवलाल नरोतमदास वड (पादरा)
७५ बाइ आधार शा गोरधनभाइ हीराचदनी विधवा अगु-
टण (डभोइ)
५० शा रतनचद लालाजी कार्वीटा (नोरसद)
४१ शा भाइलाल चुनीलाल पादरा
२५ वकील नदलाल लल्लुभाइ पादरा
२५ बाइ साकळी ते शा मणीलाल चुनीलालनी विधवा पादरा
२० एक गृहस्थ तरफथी पादरा
१० शा नीकमलाल व्रजलाल राजली (डभोइ)
३५ शा मुलजी पीताम्बरदास मुजपुर (पादरा)
५ बाइ रुक्मणी शा दलसुखभाइ प्राणजीवनदासनी दीकरी
पादरा
५ बाइ डाही ते शा छोटालाल छगनलालनी विधवा पादरा
२०० बाइ आदीत शा मथुरभाइ ईश्वरदासना विधवा मुजपुर
१६ शा माणेकलाल वरजीवनदास पादरा
१५० गाम वेजलपुरना जैनशाळाना ज्ञान खातेथी हा शा
छगनलाल लक्ष्मीदास
७५ दाहोदना शा हेमचद हरजीवनदास
५० शेठ वीरचदभाइ कृष्णाजी माणसावाळा
१२५ गाम गभीराना ज्ञानखातेथी
७५ शा रवचद आशाराम गंभीरा

५१ शा हीराचद केशवजी गभीरा
२५ शा अबालाल आशाराम „
२५ शा माणेकलाल केशवजी „
१० शा जेचद केशवजी „
११ शा प्रेमचद दलसुखभाइ पादरा
१० शा नगीनलाल मोतीलाल „
१० शा हीरालाल ल्लुभाइ „
१० बाइ परसन ते वकील दलपतभाइ ल्लुभाइनी विधवा पत्नी
१० बाइ समरत ते शा कस्तुर दीपचदना सो पत्नी
३३२०

उपर प्रमाणे बन्ने भाग छपाववामा मदद आपनाराओन.. उपकार मानवामा आवे छे

श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना ग्रथोथी जैन कोमने अत्यत लाभ थयो छे, थाय छे अने भविष्यमा थशे

श्रीमद् जैनाचार्य बुद्धिसागर सूरिजीए श्रीमद्ना पुस्तको सुधारवामा-प्रस्तावना लखवामा-तेमज बने भागनु काम पुरु थता सुधी दरेक प्रसगे उपयोगी सूचनाओ आपवामा जे आत्मभोग आपेलो छे ते उपकारनो बदलो कोई रीते वळी शके तेम नथी एटलुज नही पण आ कार्य तेओश्रीना खास उपदेश अने प्रेरणाथीज उपस्थित थयु होवाथी आ कार्यथी जैन समाजने तथा मने पोताने जे लाभ थयो छे ते सर्वेना निमितभूत तेओश्रीज छे तेथी तेओश्रीनो जेटलो उपकार मानीए तेटलो ओछो छे

श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना पुस्तको मेळवी आपवामा जे जे मुनि महाराजाओए तथा अन्य ग्रहस्थोए मदद करेली छे तेमज जे जे ग्रहस्थोए द्रव्य सहाय करी छे तेमनो अने मारा सहाध्यायी बंधु माणेकलाल नरजीवनदास, मगलभाइ लक्ष्मीचद (वड्ड) प्रेमचद दल्सुखभाइ तथा भाइलाल चुनीलाल वगेरे जेमणे आ कार्यमा घणी मदद करी छे ते सर्वनो प्रथम भागमा उपकार मानवामा आवेलो छे तेमज आ बीजो भाग छपावी पूर्ण करती वखते पण फरीथी उपकार मानवामा आवे छे

श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना ग्रथो बहार पाडनार अमो तेमज आ कार्यना मुख्य उत्पादक श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिजी महाराज ए सर्व मोटा भागे तपगच्छना छीए छता श्रीमद्ना गुणानुरागथी तेमना ग्रथो छपाववामा अहोभाग्य मानीए छीए तेज प्रमाणे खरतर गच्छना मुनिराजो तथा श्रावको श्री तपागच्छना मुनिओ उपर गुणानुरागी बनी तेमना बनावेला उत्तम ग्रथो बहार पाडी बने गच्छवाळा परस्पर सहकार्यथी प्रयत्न करशे तो जैन कोमने घणो लाभ थशे

स १९७५ ना वैशाख सुदि ६ ना दीवसे पादरामा श्री शातिनाथजी महाराजना देराशरना ध्वजा दडारोपण महोत्सवना वरघोडामा जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी महाराजना उपदेशथी श्री कल्पसूत्र, महोपाध्याय श्रीयशोविजयजी महाराजना ग्रथो तथा श्रीमद् देवचद्र भाग पहेलो तथा श्री आनदघनपद भावार्थ सग्रह ए ग्रथोने छेड् बहुमान पुर्वक खास

एक हाथी उपर बेसवानो चढावो बोल्ना वडुना शा मणीलाल लख्मीचंदे भारे रकमनो चढावो बोली श्रीमद् देवचन्द्र पहेलो भाग लेइ हाथीपर नेठेला आ उपरथी श्रीमद्ना ग्रंथो प्रत्येनो अपूर्व भक्तिभाव जणाइ आवे छे जेन कोममा पूर्वाचार्योना ग्रंथो खरखर आगमोनी पेठे मनाय छे श्रीमद्ना बन्ने भागो छपावीने बहार पडवाथी अमोने घणोज आनंद थयो छे. आ ग्रंथोमा शुद्धि कर्या छता जे भुलो रही गएली जणाशे ते बीजी आवृतिमा सुधारी लेवामा आवशे

श्रीअध्यात्म ज्ञान प्रसारक मंडळ तरफथी घणा पुस्तको पडतर किंमते अने केटलाक पडतरथी पण ओछी किंमते बहार पाडवामा आवे छे माटे आ सस्थानी कदर करनार सर्वे ग्रहस्थो मंडळ तरफथी पुस्तको छपाववामा सहाय करशे तो मंडळ वधारे उत्साहथी एथी पण वधारे उपयोगी कार्य बजावशे

बीजी आवृत्ति छपावता पहेला आ ग्रंथो सबंधी जे जे महाशयो योग्य सूचनाओ करशे तो बीजा प्रसंगे ते उपर पूरतु ध्यान आपवामा आवशे

इत्येवं ॐ अर्हं शान्ति ३

मु० पादरा–आश्विन शुक्ल २ स १९७५ } वकील मोहनलाल हीमचंद

श्रीमद् देवचंद्र भाग २.

(विभाग पहेलो.)

अनुक्रमणिका

२

विचारसार ग्रन्थमां गुणस्थान उपर अवतारेल ९६ द्वारनी विगत

१० बंधद्वार (मूळ प्र० बं०—उत्तर प्र० बं०—८ भिन्न कर्माष्टकबंध)
१० उदयद्वार (१० संख्या बंधवत्)
२ उदीरणाद्वार (मूळ—उत्तर)
१० सत्ताद्वार (१० संख्या बंधवत्)
१ जीवभेद (१४)
१ गुणस्थान (१४)
१ योग (१५)
१ उपयोग (१२)
१ लेश्या (६)
२ मूळबंध हेतु—उत्तरबंध हेतु
४ भिन्नबंध हेतु चतुष्क (४)
१ अल्प बहुत्व
८ मूळभाव—उत्तरभाव—भिन्नभाव ५—सान्निपातिक भाव
२ ५६३ जीवभेद (मूळभेद—उत्तरभेद)
४ उत्तरमिलने
१ समुद्घात (८)
४ ध्यान (४)
१ दंडक (२४)
१ वेद (३)
१ योनि (८४)
१ कुल कोटि
६ ध्रुवबंधि-अध्रुवबंधि-ध्रुवोदयि-अध्रुवोदयि—ध्रुवसत्ताक—अने अध्रुव सत्ताक प्रकृतियो
३ सर्वघाति—देशघाति—अघाति प्रकृतियो

४ पुण्य०पाप–परावर्त्तमान–ने अपरावर्त्तमान प्रकृतियो
४ क्षेत्रविपाकादि प्रकृतिभेद ४
८ आठकर्मना भागा

४ आस्रव–संवर–निर्जरा–बंधतत्त्वना भेद

९६ द्वार

ॐ अर्हंनमः

प्रस्तावना.

महोपाध्याय श्रीमद् देवचन्द्रमहाराज अने तत्कृत पुस्तको.

ज्ञानदर्शनचारित्र–व्यक्तरूपाय योगिने
श्रीमते देवचन्द्राय, सयताय नमोनम ॥ १ ॥
द्रव्यानुयोगगीतार्थो, व्रताचारप्रपालक
देवचन्द्रसम साधु, र्वाचीनो न दृश्यते ॥ २ ॥
वाचकम्प महारागी, सर्वजैनोपकारक
सम्मति यस्य सद्ग्रन्थै, स्तत्त्वबोध प्रजायते ॥३॥
आत्मोद्वारामृत यस्य, स्तवनेषु प्रदृश्यते
निर्विवतापतप्ताना, पूर्णशान्तिप्रदायकम् ॥ ४ ॥
आनन्दघनगीतार्थ–पदम्तवनपूजक
गच्छेखरतरेतस्य, सम कोऽपिनयोगिराट ॥ ५ ॥
आत्मशमामृतस्वादी, शास्त्रोद्यानविहारवान्
यत्कृतशास्त्रपायोधा, स्नानकुर्वन्ति सज्जना ॥६॥
सिद्धान्तपारदृश्वा यो, गुणानुरागिशेखर
माध्यस्थ्ययस्यसच्चित्ते, नस्मै नित्य नमोनम ॥७॥
गुर्जरोर्व्यांच सोराष्ट्रे, मेदपाटेच माल्वे
लाटदेशेच पञ्जाबे, मरुदेशे स्वपद्रत ॥ ८ ॥

विहाराश्चकृतानेंके, लोकाना बोधहेतवे
ज्ञानिने देवचन्द्राय, पूर्णप्रेम्णा नमोनम ॥ ९ ॥
समत अन्तरात्मा य, आत्मानुभववेदक
अप्रमत्तन्शयोगी, जिनेन्द्राणाप्रसेवक ॥ १० ॥
श्रुतागमप्रलीनाय, भक्त्यध्यात्मरागिणे
चिदानन्दस्वरूपाय, सर्वसत्त्वरागिणे ॥ ११ ॥
ध्यानसमाधिरक्ताय, विश्वजन्यायसाधवे
श्रीमते देवचन्द्राय, पूर्णप्रीत्या नमोनम ॥ १२ ॥
जैनसंघस्यसेवायै, सर्वस्वार्पणकारिणे
श्रीमते देवचन्द्राय, शुद्धात्मने नमोनम ॥ १३ ॥
भारत जैनसघे य , प्रादुर्भवो महामुनि
मोहतमोविनाशेन, देवचन्द्रोहिभास्कर ॥ १४ ॥
शीतल सर्वलोकाना–मान्तरशान्तिकारक
क्षमापृथ्वीसमा यस्य, गाम्भीर्यं सागरोपमम् ॥ १५ ॥
धैर्यं मेरुसम यस्य, गगावन्निर्मल मन
तस्मै श्रीदेवचन्द्राय पूर्णप्रीत्या नमोनम ॥ १६ ॥
कायोधर्ममयोयस्य, वचश्चविश्वपावकम्
मनआत्मनिसंलग्न मात्मालीन प्रभोसदा ॥ १७ ॥
तस्मै श्रीदेवचन्द्राय, त्यागिने धर्मरागिणे
नमः श्रीविश्वपूज्याय, विश्वकल्याणकारिणे ॥ १८ ॥
आत्ममेघस्वरूपाय विश्वोपग्रहकारिणे
नम श्रीदेवचन्द्राय सिद्धान्तपारगामिने ॥ १९ ॥
सर्वगच्छेषु मान्यस्य, यस्य सत्य प्रतिष्ठितम्
तस्मै श्रीदेवचन्द्राय, पूर्णप्रीत्या नमोनम ॥ २० ॥

स्वपरगच्छ माध्यस्थ्य, यस्य ज्ञानेन शोभते ।
सर्व गच्छसम । श्रीमद् । देवचन्द्र नमोऽस्तुते ॥२१॥
तपागच्छीय साधुभि सार्वं मैत्री प्रवर्तक
आदर्शो देवचन्द्रोऽभूत् सर्व साधु शिरोमणि ॥२२॥
देवचन्द्रकृत ग्रन्थान्, स्तुवेऽह भक्तिभावत
अमृतसागरा यत्र, विद्यन्ते सुखकारका ॥ २३ ॥
गुणानुरागयोगेन, देवचन्द्रमहामुने
स्तुति कृता तपागच्छे, बुद्धिसागरसूरिणा ॥ २४ ॥
गुणिनां गुणरागेण, व्यक्ताभवन्ति सद्गुणा
दोषास्त्याज्या गुणाग्राह्या भाषते बुद्धिसागर ॥२५॥

श्रीमद् देवचन्द्र मुनिराज.

श्रीमद् देवचद्र मुनिराने खरतरगच्छना श्री दीपचन्द्रजी साधु पासे दीक्षा लीधी हती तेओ श्री जैनश्वेतांबर कोममा अतिप्रसिद्ध महात्मा तरीके गणाय छे. तपागच्छीय विश्ववद्य सर्वगीतार्थ शिरोमणि श्री यशोविजयजी उपाध्याय (वाचक) ना तेओ पूर्ण रागी हता, अने तेथी तेमणे श्री ज्ञानसार ग्रन्थपर ज्ञानमजरी नामनी टीका करी छे श्वेताम्बर जैनधर्ममा पूर्वे चोराशी गच्छो हता हाल तो पाच ॰ गच्छो विद्यमान जणाय छे जे गच्छमा जे दीक्षा ले ते गच्छना ते मुनि कहेवाय छे अने पछी ते मुनि ते गच्छना आचारोने पाळे छे अने ते समाचारीने तथा पोताना पूर्वजोने मसरे छे श्रीमद् देवचद्रजी महाराजे खरतरगच्छने खरतर गच्छ

जिनआणारागी वगेरे शब्दोथी वखाण्यो छे तेनी साथे कहेवु पडे छे के तेमणे तपागच्छ वगेरे गच्छोनी कोइ पण ग्रन्थमा निन्दा करी नथी उपोद्घात कर्ता लेखकने श्रीमद्‌ना पुस्तको पैकी आगमसारनो परिचय थयो मेहसाणामा स. १९५४ नी सालमा श्रीमद् रविसागर गुरुमहाराज साहेबनी सेवामा रहेवानु थयु हतु ते वखते आगमसारनु प्रथम वाचन थयु अने त्यारथी द्रव्यानुयोगनी रुचि वधी तथा आत्मज्ञाननी रुचि वधी. लगभग सोवार आगमसार ग्रन्थ वाच्यो, तथा नयचक्रसार वाच्यो, तेमज चोवीशी वाची तेथी जैनतत्त्वज्ञाननी पूर्ण श्रद्धा थइ अध्यात्मज्ञाननी श्रद्धामा आनन्दघनजी चोवीशी तथा श्रीमद् आनन्दघनना पदो उपयोगी थया, तेवी रीते द्रव्यानुयोगना ज्ञानमा श्रीमद् देवचन्द्रजीना पुस्तको उपयोगी थया तेथी तेमना पुस्तको वाचवानी जिज्ञासा वधी अने तेथी साधु जीवनमा शोधखोळ करी घणाखरा पुस्तको वाच्या काळ लीधोने जैन तत्त्वज्ञान थवामा श्रीमद्‌ना पुस्तको अत्यत उपयोगी छे एम जणायु, तेमज तेमनां पुस्तकोने वाचवानी जिज्ञासा धारण करनारा जैनकोममा घणा जैनो मालुम पड्या तेथी छेवटे स १९६८ नी सालमा पादरामा वैशाख मासमा वकील मोहनलाल हिमचद वगेरेनी समक्ष तेमना सर्व पुस्तको छपाववानो निश्चय कर्यो अने ते निश्चयने वकील मोहनलाल हिमचद वगेरेए झीली लीधो-सुश्रावक वकील मोहनलाल हिमचदे उपाडी लीधो तेमणे देश परदेशमा अनेक साधुओ, साध्वीओ, श्रावक अने श्राविकाओपर अनेक पत्रो लखी तथा जाते जइ पुस्तकोनी शोध करीने छपाववा प्रयत्न कर्यो छे श्रीमद् देवचद्रनो प्रथम भाग बहार पड्यो तेना पर जैनोए तूटातूट करी मूकी अने -

वे लगभग खलास थवा आव्यो छे, आ उपरथी श्रीमद् देवचन्द्रजीना द्रव्यानुयोगना पुस्तकोनी महत्ता सर्व लोको जाणी शकशे. श्रीमद् देवचन्द्रजीना द्रव्यानुयोगना पुस्तकोथी सकळ जैनकोमने एक सरखो लाभ मळे छे तेमज जैनेतर प्रजाओने पण एक सरखो लाभ मळे छे अतएव श्रीमद् देवचन्द्रजी विश्वमां पोताना सद्विचारो वडे व्यापक छे श्रीमद् देवचन्द्रजीए खास खरतर गच्छनी भिन्न मान्यताओने स्थापन करवा कोइ ठेकाणे उल्लेख कर्यो नथी तेनु कारण ए छे के तेमने आत्मज्ञान थयु हतु अध्यात्मज्ञानी महात्माओ अमुक गच्छनी अमुक क्रियाचारनी भेदताने वळगी रहेता नथी अने तेथीज खास मुक्ति छे, एम मानता नथी तेथी तेओ मुख्य आत्मानी मुक्तिना उद्देश माटे लखे छे अने बोले छे. ए प्रमाणे श्रीमद्नी आत्मदृष्टि होवाथी तेओ खरतर गच्छना छता निश्चयनयनी अपेक्षाए सर्व गच्छोमां रहेनार समभावीओनी मुक्ति माननार हता तेथी आखी जैनकोमने ते प्रिय थइ पडे एमा कइ आश्चर्य नथी खरतर गच्छमां आज सुधीमां जे जे आचार्यो मुनियो थया छे तेओए घणा ग्रन्थो लख्या छे छता श्रीमद् देवचन्द्रजीनी पेठे द्रव्यानुयोगना ज्ञान माटे तथा अध्यात्मज्ञान माटे आटला पुस्तको लख्या होय एवी व्यक्ति जणाती नथी तेथी खरतर गच्छमां सर्वथी प्रथम नबरे श्रीमद् देवचन्द्रजी आवे छे श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजनी पेठे कोइए आत्म सबधी उद्गारो निकाळ्या नथी तेथी देवचन्द्रजीए जे काम कर्यु छे अने जैनकोमनी आगळ जे वारसो मूक्यो छे तेथी जैनकोम तेमनी अनृणी छे एम कथ्या विना चालतु नथी आवा महापुरुषना आत्मानी केटली बधी उन्नति

थई छे तेनो ख्याल ते दशाने प्राप्त करनारने आवी शके तेम छे तेमना जेवी जेओनी दशा न होय तेओ भले पिस्तालीश आगमना ज्ञाता होय तोपण तेओ तेमने पिछाणी शके नहीं. आवा महान् महात्मानु जीवनचरित्र जाणवानी जरुर छे

श्रीमद् देवचद्रना बाह्यजीवन चरित माटे देशपरदेशमा अनेक पत्रो लखावी घणी शोधो करावी परतु हजु सुधी तेमनु जीवनचरित्र प्राप्त थयु नथी एटले हवे तेमना सबधी किंवदन्तीओ वगेरेथी तेमना जीवन पर अजवाळु पाडवा नीचे प्रमाणे प्रयत्न करवामा आवे छे

श्रीमद् देवचद्रमहाराजनी जन्मभूमि, गृहस्थावास

केटलाक वृद्ध पुरुषोना कहेवा प्रमाणे श्रीमद् देवचद्रजीनी जन्मभूमि गुर्जरत्रा (गुजरात) छे एम जणाय छे श्रीमद् देवचद्रजीनी प्रथममा प्रथम कृति स १७४३ नी सालमा बनेली अष्टप्रकारी पूजा अने एकवीश प्रकारी पूजा ए बे छे ए बे कृतियो ते वखतनी गळगळु गुजराती भाषामा छे गुर्जर भाषाना साक्षरो जो बराबर लक्ष्य राखीने वाचशे तो तेमने गळगळु शब्दवाळी गुजराती भाषा समजाया विना रहेशे नहीं श्रीमद् महात्मा देवचद्रजीनो ब्राह्मणना कुळमा अगर वणिकमा उच्च कुळमा जन्म थएलो होवो जोइए अष्टप्रकारी अने एकवीश प्रकारी पूजा गुजरातमा रचेली जणाय छे अतएव श्रीमद्नो जन्म गुजरातमा छे तेमणे गुजरातमा श्रीमद् ज्ञानसागरजी उपाध्याय पासे अभ्यास करेलो हतो श्री ज्ञानसागरजी प्राय अचलगच्छमा थया होय एम जणाय छे तेमणे स १७४३ नी सालमा प्रथम अष्टप्रकारी पूजा

रही ते वखते तेमनी ओछामा ओछी वीश बावीश वर्षनी उमर होवी जोइए, एटले तेमनो जन्म स १७२० नी साल लगभग होवो जोइए, अने दीक्षा स १७३२ लगभगमा होवी जोइए, ए प्रमाणे होय तो ते जमानामा ते दीक्षा लीधा बाद अगियार वर्षे अने जन्मथी त्रेवीश वर्षे ग्रन्थ रचवाने समर्थ थएला होवा जोइए, तेमनो गृहस्थावास लगभग बार वर्षनो होवो जोइए

श्रीमद् देवचन्द्रजीमहाराजनी दीक्षा.

श्रीमद् देवचन्द्रजीने दीक्षा आपनार खरतर गच्छीय श्री दीपचन्द्रजी उपाध्याय हता खरतर गच्छमा जिनचन्द्रसूरि थया तेमना पुण्यप्रधानोपाध्याय थया तेमना श्री सुमतिसागरोपाध्याय थया तेमना राजसागर उपाध्याय थया तेमना ज्ञान धर्मपाठक थया तेमना शिष्य राजहस अने दीपचन्द्र बने शिष्य पाठक थया तेमा श्रीमद् दीपचन्द्रना शिष्य श्रीमद् देवचन्द्र पाठक थया दीक्षा लीधा बाद तेओ लगभग गुजरातमा, काठियावाडमा, अने छेवटे मारवाडमा विचर्या होय एम जणाय छे तेथी तेमनो गुजराती भाषा पर सारो काबु जाम्यो हतो स १७६६ नी सालमा तेओए पजाबमा मुलतानमा ध्यान चतुष्पदी बनावी, तोपण तेने गुजराती भाषामा बनावी, तेज तेमनी गुजराननी जन्मभूमिने माटे अने गुजरातमा ३० वर्ष लगभग रह्या ए पूरवार करी आपे छे

विहार–गुजरात, मारवाड, पजाब

गुजरातथी विहार करी मारवाडमा तेओए चोमासा कर्या अने त्यार्थी जेसल्मेर थइ पजाबदेश तरफ विहार करेलो जणाय छे पजाबदेशमा ते वखते जैनवणिकोनी घणी सरया होवी जोइए, पाछळथी त्या जैन ढुढक साधुओनो प्रवेश थयेलो

होवो जोइए तेमणे स १७६६ ना वैशाखमा ध्यानदीपिका चतुष्पदी (मुल्तानमा) अने १७६७ ना पोष मासमा हिन्दी भाषामा द्रव्यप्रकाश सैवैया छन्दमा (बिकानेरमा) बनाव्यो ते उपरथी तेमनो विहार पजाब अने सरहद सुधी थएलो होवो जोइए पजाब तरफथी विहार करी सिंध वगेरे थइ मोटाकोट मरोटमा तेओए चातुर्मास करेलु जणाय छे मोटाकोटमा तेमणे स १७७६ माना फागण मासमा तेमना सहायक मित्र दुर्गादासने माटे आगमसारनी रचना करेली छे श्रीमद् देवचद्रना मोटा-कोटमा दुर्गादास केवी रीते मित्र हता तेपर अनेक कल्पनाओ थाय छे जे श्रावको साधुओने मित्र तरीके मानी घेंतें छे ते अपेक्षाए कदापि मित्र लख्या होय वा अन्य कारणथी, तेनो निर्णय हाल थइ शके तेम नथी. मारवाडमाथी तेओ विहार करीने अनुक्रमे गुजरात तरफ आवेला जणाय छे स १७९६ मा जामनगरमा (नवानगरमा) कार्तिक सुदि एकमे विचारसार अने कार्तिक सुदि पचमीए ज्ञानमजरी पूर्ण करी छे एटले स १७७६ थी पछी १७९६ मा गुजरात तरफ आवेला अने गुजरातमा रहेला सिद्ध थाय छे स. १७७० पछीथी तेओश्री प जिनविजयजीनेभणाववा पाटण आव्या बाद स १७७५ पश्चात् मोटाकोट मरोटमा गया हता

श्रीदेवचंद्रजीए तपागच्छना प जिनविजयजीने तथा उत्तमविजयजीने अभ्यास कराव्यो

श्रीमद् देवचद्रजी महाराज सिद्धातना ज्ञाता हता. श्रीसीमाविजयजीए पोताना शिष्य जिनविजयजीने विशेषा-वश्यक धराववा माटे पाटणमा तेडाव्या हता (स. १७७० थी १७७५ सुधीमा) तेनी साक्षी नीचे प्रमाणे–

श्रीज्ञानविमलसूरिजी कन्हे वाची भगवती खास,
महाभाष्य अमृत लह्यो देवचन्द्रगणि पास ॥

॥ (जिनविजयजीना शिष्य उत्तमविजयजीए दीक्षा लीधा बाद गुरुनी साथे सं १७९९ मा पादरामा चोमासु कर्यु हतु स १७९९ ना श्रावण सुदि १० दशमे पादरामा तेमना गुरु जिनविजयजी, देवगत थया, त्यार बाद ग्रामानुग्राम विहार करता तेमणे भावनगरमा चोमासु कर्यु त्या श्रीमद् देवचन्द्रजीने अभ्यास करवा माटे बोलाव्या हता ते सबधी प उत्तमविजयजीना निर्वाणरासमा नीचे प्रमाणे लखेल छे—

इम अनुक्रमे वधता थका रे लोल, हुवा अष्टादश वर्षे रे
खरतर गच्छमाहि थया रे नामे श्री देवचद रे ॥
जैनसिद्धात शिरोमणि रे लोल, धैर्यादिक गुणवृन्द रे ॥ ८ ॥

देशना जास स्वरूपनी रे लोल, ते गुरुना पदपद्म रे
वदे अमदावादमा रे लोल, पूजाशा नि छद्म रे ॥ ९ ॥

ते गुरुनी वाणी सुणी, हरख्यो चित्त कुमार
ज्ञानाभ्यास करु हवे, तुम्ह पासे निर्धार ॥ १ ॥

इगित आकारे करी, जाणी तेह सुपात्र
ज्ञानाभ्यास करावता, कीधो तेहने छात्र ॥ २ ॥

श्राविका रामकुवर तिहा, धर्मी अति गुणवत
गुरुवचने ते कुवरने, अतिशय सहाय करत ॥ ३ ॥

हवे कुवर नित्य २ भणे, प्रकरण जैनना सार, ललना,
दडक ने नवतत्त्वजी, जाण्या जीवविचार, ललना ॥१॥

त्रणलोकनी दीपिका, सग्रहणी सुविचार, ललना
भाष्य चैय गुरु वदना, वळी पच्चखाण प्रकार, ललना ॥२॥
क्षेत्रसमास सोहामणो, सिद्ध पचाशिका नाम, ललना
सिद्धदंडिका तिम वळी, चउसरण अति अभिराम, ललना ॥३॥
कर्मग्रन्थ अर्थे कर्या, कम्मपयडी मुखपाठ, ललना
पचसग्रह मुख ग्रन्थमा, विवर्यो कर्म जे आठ, ललना ॥४॥
कालविचार अगुल वळी, वनस्पति तिम जाण, ललना
दर्शनसत्तरी सित्तरी, कर्त्ता एहनु नाण, ललना ॥५॥
खड पड्ल तिम वळी, निगोद छत्रीशी जेह, ललना
वळिय विचार पचाशिका, निज अभिप्रायरे तेह, ललना ॥६॥
वृत्ति सहित वाचे सने, ते गुरुने उपकार, ललना
भगजाल मुख बहु भणे, रहस्य ते आगम अपार, ललना ॥७॥
सप्तभगी नय सात जे, वळिय निक्षेपनी वात, ललना
तिनभगीपणे ग्रहे, केना कहु अवदात, ललना ॥ ८ ॥
इम करता हवे अन्यदा, गुरुजी करे विहार, ललना
सुरतनदर आविया, साथे तेह कुमार, ललना ॥ ९ ॥
शब्दशास्त्र ते शहेरमा, भणिया यत्न अपार, ललना ॥

पाटण शहेरना वाणिया, कचरा कीका नाम
आवी सुरतमा रह्या, सुदर जेहनु धाम ॥ १ ॥
पुण्य प्रकृत जोरो थयो, त्हीं क्षेत्रातर योग
मनचिंते सफळो करु, लक्ष्मीनो सयोग ॥ २ ॥
आवी गुरुने विनवे, करशु तीरथ जात
पठित पुस्प जो कोइ दियो, तो होय सफळी वात ॥३॥
गुरु पण तेह कृपालवे, जाणी चतुर सुजाण
तस आग्रहथी आपियो, लक्षणरूप निधान ॥ ४ ॥

श्री उत्तमविजयीजीए भावनगरमा चोमासु कर्युं ते वखते तेमणे श्रीमद् देवचन्द्रजीने ओटावीने अभ्यास कर्यो तेनी साक्षी रासमा नीचे प्रमाणे छे—

भावनगर आदेशे रह्या भविहित करे मारा लाल
तेडाव्या देवचद्रजीने हवे आदर मारा लाल
वाचे श्री देवचद्रजी पासे भगवती मारा लाल
पन्नवणा अनुयोगद्वार, वली शुभमति मारा लाल
सर्व आगमनी आज्ञा दीधी देवचदर्जी मारा लाल
जाणी योग्य तथा गुणगणना वृन्दजी मारा लाल
तिहा कुवरजी लागा भक्ति घणी करे मारा लाल
कचराकीका सघ लेइ इण अवसर मारा लाल
श्री सिद्धाचल यात्रा करवा आविया मारा लाल
गुरुजी पण सिद्धाचल साथे सिद्धाविया मारा लाल ॥

श्रीमद् श्रीदेवचद्रजी पाटणमा १७७५ सुधी हता पश्चात् ते मोटाकोट मरोट (मारवाड) मा चोमासु रह्या पश्चात् ते स १७७८ मा पाछा गुजरातमा अमदावादमा आव्या हता ते वखते उत्तमविजयजी निर्वाणरासना आधारे—श्री उत्तमविजयजीए ससारीपणामा अढार वर्षनी उमरे एटले जन्म १७६० अने १७७८ नी सालमा अमदावादमा उपर प्रमाणे—रासमा गणाव्या प्रमाणे ग्रन्थोनो अभ्यास कर्यो हतो अमदावादमा १७७८–७९–८० लगभग चोमासा थया होय एम समजे छे श्री देवचद्रजी पासे पूजाशाने भणावता रामकुवर श्राविकाए सारी सहाय करी हती श्रीमद् देवचद्रजीए अमदावादथी विहार करी खभात, वडोदरा, पादरा, भरुच थइ सुरत

विहार कर्यो अने ते साथे कुवर पुजाशा हता सुरतमा श्रीमद् देवचद्रजीनी पासे पुजाशाए व्याकरणादि अभ्यास कर्यो अने ते वखते पाटणथी व्यापार करवा आवेला सघवी कचरा कीकाए सुरतथी सघ काढ्यो त्यारे श्रीमद् देवचद्रजीनी आज्ञाथी पुजाशाने साथे लीधा श्रीमद् देवचद्रजीए सुरतमा चार पाच चोमासा कर्या होय एम जणाय छे पुजाशाहे स १७९८ मा श्री जिनविजयजीनी पासे अमदावादमा दीक्षा लीधी अने तेमनु नाम उत्तमविजयजी पाड्यु त्याथी गुरु शिष्ये प्रेमापुरमा चोमासु कर्यु त्याथी सुरत जइ स १७९९ मा पादरामा चोमासु कर्यु स १७९९ नी सालमा पादरामा भगवतीसूत्र वाचना प जिनविजयजीए श्रावण सुदि दशमे देहोत्सर्ग कर्यो ज्या तेमना शरीरने अग्निदाह देवामा आव्यो छे त्या तळावना काठे देरी करावामा आवी छे श्री उत्तमविजयजीए स १८०२ मा भावनगरमा चोमासु कर्यु त्या श्रीमद् देवचद्रजी पासे भगवती पन्नवणा अनुयोगद्वार वगेरे सूत्रो धार्या अने श्री देवचद्रजीए सकलागमो वाचवानी तेमने आज्ञा करी स. १८०३ मा श्रीमद् देवचद्रजी भावनगरमा हता, पश्चात् सुरत गया अने कचरा कीकाना सघनी साथे शत्रुजयनी यात्रा करवा माटे आव्या, ते वखते भावनगरथी उत्तमविजयजी पण सिद्धाचलनी यात्राए एक सघमा मेळा गया स १८०४ मा श्री देवचद्रजीए सिद्धाचलनी यात्रा करी ते सबधीना स्तवनमा नीचे प्रमाणे लखाण छे

सवत अढार चिंटोतर वरसे, सित मृगसिर तेरसिये
श्री सुरतथी भक्ति हरखथी, सघ सहितु उल्लसिये ॥

कचरा कीका जिनवर भक्ति, रुपचद गुणवतुजीए
श्री सघने प्रभुजी भेटाया, जगपति प्रथम जिणद ॥
ज्ञानानन्दित त्रिभुवन वदित, परमेश्वर गुणभीना
देवचद्र पद पामे अद्भुत, परम मगल लयलीना ॥

उपर प्रमाणे श्रीमद् क्ये क्ये स्थानके विहार कर्या अने क्या क्या चोमासा कर्या ते जणातु श्रीमद्नो विहार गुजरात, काठियावाड, लाट, मारवाड, सिन्ध, पजाब वगेर देशोमा थएलो छे तेमणे तपागच्छना साधुओने अभ्यास कराव्यो एम श्री जिनविजयजी अने श्री उत्तमविजयजी पन्यासना निर्वाणथी सिद्ध थाय छे

यात्राओ

श्रीमद् देवचद्रजीए अनेक तीर्थोनी यात्राओ करी छे एम तेमना ग्रन्थो अने स्तवनो परथी जणाय छे द्रव्यानुयोगी आत्मज्ञानी श्रीमद् देवचद्रजी व्यवहार अने निश्चयनी श्रद्धा वाळा अने ते प्रमाणे वर्तवावाळा हता तेमणे सिद्धाचल तीर्थ के जे सर्व तीर्थ शिरोमणि कहेवाय छे ते तीर्थनी घणीवार यात्रा करी हती तेओ स १८०४ मा सुरतना सघवी कचरा कीकाना सघमा गया हता त्यार बाद तेमणे विहार वा यात्रा करी एवा उल्लेखो मळी आवता नथी तेमणे गिरनार पर्वत पर रहेल श्री नेमिनाथनी यात्रा करी हती एम गिरनारनी स्तुतिपरथी जणाय छे गुजरातथी मारवाड तरफ जता तारगाजी, कुभारीया, आबुजी, देलवाडा वगेरे तीर्थोनी यात्रा करेली होवी जोइए तेओ सिंधनी सरहद पर मोटाकोट मरोट सुधी गया हता तेथी मारवाड, कच्छ अने सिन्धनी आजुबाजुना जिन-

मंदिरोनी यात्रा करेली होवी जोइए तेओश्रीए मुलतानमा चोमासु कर्युं हतु तेथी त्याना तीर्थोनी यात्रा करेली होवी जोइए स १७६६ नु चोमासु बिकानेरमा कर्युं हतु गुजरातमा पाटण, अमदावाद, खभात, सुरत, भावनगर, लींबडी, पालीताणा वगेरे स्थळे चोमासा कर्या हता ते ते स्थळोनी प्रतिमाओनी अने आजुबाजुना गामो शहेरोनी जिनप्रतिमाओना दर्शन करेला होवा जोइए

उपदेश-प्रतिष्ठा

श्रीमद् देवचंद्रजीनो दीक्षा पर्याय लगभग ७५ पोणोसो वर्षनो होवो जोइए १७३२ लगभगमा दीक्षा अने स १८१० लगभगमा निर्वाण अने बार वर्षनो गृहवास, एम आशरे गणना उमर लगभग नेवु वर्षनी होय तेम अनुमान थाय छे, तेथी तेमनो दीक्षा पर्याय पोणोसो वर्ष लगभगनो गणना तेटला वर्षमा तेमणे अनेक गाम शहेरोमा उपदेश आपेलो जणाय छे तेओ उपदेश देवामा एक्का होवा जोइए, एम तेमना ग्रन्थो उपरथी अवबोधाय छे मारवाड, पंजाब वगेरे देशोमा उग्र विहार करीने तेमणे ते समयमा जे बोध आपीने आत्मभोग आप्यो छे तेथी जैनकोमनी जे सरक्षा थइ छे तेनो ख्याल आवतो मुश्केल छे तेमणे स १७९४ मा शत्रुंजय पर्वत पर प्रतिष्ठा करी छे एम शिलालेखथी जणाय छे एम श्रीयुत मोहनलाल दलिचद जणावे छे तेमज तेमना गुरुनी साथे स १७८८ मा शत्रुंजय पर कुंथुनाथजीनी प्रतिष्ठा वखते तेओ हाजर हता तथा सिद्धाचल पर समवसरणनी प्रतिष्ठा वखते हाजर हता तथा अमदावादमा सह-

स्रफणानी प्रतिष्ठा वखते हाजर हता तथा लींबडीमा देरासरना मूळ नायकनी बे बाजुए बे देरीओनी पोते प्रतिष्ठा करावी हती

श्रीमद् देवचद्रजीनी महत्ता-विद्वत्ता

श्रीमद् देवचद्रजी महाराज जेनागमोना पारगामी हता तेमणे अनेक गामना श्रावकोए पुछेला प्रश्नोना उत्तरो आप्या हता प्रश्नोत्तर नामनो ग्रन्थ ते बाबतनी साक्षी पूरे छे ते समयना विद्वानोमा तेमनी प्रतिष्ठा अने विद्वत्ता सारी रीते वृद्धि पामी हती खरतर गच्छमा ते वखते तेमना समान कोइ विद्वान् होय एम ते समयना ग्रन्थोथी अवलोकना अवबोधातु नथी' तपागच्छना सवेगी साधुओमा तेमनी महत्ता हती पोतानी महत्ता रचे एवा गुणो तेमनामा हता तपागच्छना सवेगी मुनिओ पैकी महान् श्री जिनविजयजी अने प श्री उत्तमविजयजी जेवाना तेओ धर्मशास्त्र पाठक गुरु हता सवेगी पक्ष ते समयमा चारित्रमार्ग सुधारक हतो तेमना हृदयमा श्रीमद् देवचद्रजीना गुणो स्फुया अने तेमना गुणो श्रीमद् देवचद्रजीना हृदयमा स्फुया अने तेथी सवेगी क्रियोद्धारक साधुओनी पुष्टि थइ तेथी श्रीमद् देवचद्रजी महाराजनी घणी प्रतीष्टा वधी तेमना समयमाज तेमनी महत्ता-प्रतिष्ठानी आखा भारतमा ख्याति प्रसरी तेमनी सर्व गच्छोमां महत्ता वधवा लागी श्रीमान् पन्यास पद्मविजयजी के जेओ पिस्तालीश हजार गाथाओना रचनार पद्मद्रह तरीके प्रसिद्ध थया छे तेमणे श्री उत्तमविजयजीना निर्वाण रासमा तेमना समानकालमा

खरतर गच्छ माहे थया रे नामे श्री देवचद्र रे

जैनसिद्धांत शिरोमणि रे लोल
धैर्यादिक गुणवृन्द रे, देशना जास स्वरूपनी रे लोल ॥

इत्यादि शब्दोथी श्रीमद् देवचन्द्रनी विद्वत्तानी अने साधु तरीकेनी महत्तानी स्तुति करी छे तपागच्छमा संवेगी पक्षमा श्री पद्मविजयजी पन्यासनी घणी प्रतिष्ठा छे श्रीमद् देवचन्द्र महाराजनो श्री पद्मविजयजीए संसारीपणामा तथा साधुपणामा समागम करेलो हतो अने ते समयमा ते महा विद्वान् गणाता हता तेनो जाति अनुभव कर्यो हतो तेथी तेमणे श्रीमद् देवचन्द्रने जैनसिद्धान्त शिरोमणि एवा पदथी नवाज्या छे, तथा धैर्यादिक गुणना वृन्द तरीके प्रशंस्या छे, तथा तेनो देशनास्वरूपनी अर्थात् आत्मस्वरूपने प्रकाशनारी छे, एम प्रतिपादन कर्यु छे ते खरेखर अनुभव करीने कर्यु छे संवेग पक्षी मुनिशेखर श्रीमद् प पद्मविजयजी जेवा महा विद्वान् अने गुणानुरागीए श्रीमद् देवचन्द्रजीनी प्रतिष्ठा, महत्ता अने विद्वत्तानी ख्याति करी छे उपाध्याय श्री देवचन्द्रजीने एक परंतु ज्ञान हतु, एम श्री ज्ञानसारजीए आ ग्रन्थना पा १०४३ मा जणाव्यु छे, तथा ते आत्मज्ञानी वक्ता हता एम स्पष्ट जणायु छे इत्यादि अनेक रीतथी श्रीमद् देवचन्द्रजीनी महत्तानी सिद्धि थाय छे तेथी हवे तत्संबंधी विशेष लखवानी जरुर जणाती नथी

समकालीन जैन साधुओनु अने श्रीमद् देवचंद्रनु परस्पर मिलन

अढारमा सैकाना मध्यभागमा आखी जैन कोममा अने भारतदेशमा महाप्रखर विद्वान् तरीके श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्यायजी तपागच्छीय प्रसिद्ध छे अर्वाचीन कालमा तेमना

जेवा कवि, भक्त, ज्ञानी, कर्मयोगी महात्मा अल्प थया हशे वा नहि तेओ जैनकोममा सर्वमान्य धर्मधुरंधर गीतार्थ हता सर्व अनुयोगोना वे गीतार्थ हता तेमना समागममा श्रीमद् देवचन्द्रजी आव्या होय एम जणाय छे उपाध्यायजी स १७४५ लगभग सुधी जीवता हता उपाध्यायना समागममा आवायी तेमनु आत्मज्ञान तरफ लक्ष्य गयु होय एम अनुमान थाय छे अने तेथी तेमणे ज्ञानसारपर ज्ञानमजरी टीका लखी श्रीमद् यशोविजयजीनी विचारमाळानी पुष्टि करी जणाय छे पाटणमा श्रीमद् ज्ञानविमलसूरि साथे श्रीमद् देवचद्रनो समागम थएलो प्रतीत थाय छे प जिनविजयजीने श्रीज्ञानविमलसूरिए भगवती वचायु हतु अने वे साल लगभग श्रीजिनविजयजीने श्रीमद् देवचद्रजीए विशेषावश्यक वचायु हतु तेथी पाटणमा बने विद्वानोनो समागम थएलो होवो जोइए श्रीमद् देवचन्द्रजी अने श्री ज्ञानविमलसूरि बनेए मळी आनन्दघन चोवीशीना छेल्ला वे स्तवनो रच्या हता श्रीमान् आनन्दघनजीना समयमा तेओश्री विद्यमान हता परतु आनन्दघनजीनी साथे समागम थयो होय एम मानवाने सबल कारणो मळ्या नथी श्रीमद् यशोविजयजीने श्रीआनदघनजीनो समागम थयो हतो अने तेथी उपाध्यायजीनी दृष्टि पश्चात् अध्यात्मज्ञान तरफ वळी हती श्री उदयरत्नजी वगेरे मुनिराजो श्रीमान्‌ना समानकालीन हता

भिन्न भिन्न गच्छना साधुओनु परस्पर मिलन तथा तेओनुं पठनपाठन

ते कालमां तपागच्छना मुनियो अने खरतरगच्छना मुनियो तथा अचलगच्छना मुनियो परस्पर एक बीजा गच्छना विद्वान्

साधुओ पासे अभ्यास करता हता सोळमा सैकाथी अढारमा सैकाना मध्यकाळमा परस्पर भिन्न गच्छीय साधुओमा गुणानुराग वृद्धि पाम्यो हतो अढारमा सैकाना मध्यकाळमा खरतर गच्छ अने तपागच्छना सूरिवर्यो सम्राट्ने ज्यारे मिलवा याता करता जता हता त्यारे तेओ गुजरातमा (श्रीमद् कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्रनी जन्मभूमिमा) मळ्या त्यारे बन्ने गच्छना आचार्योमा घणो राग थयो अने बे गच्छना आचार्योनां ज्ञानकोष एकठा कर्या तेमा बे लाख रूपैयानी उपज थइ बन्ने गच्छमा ते वखते पठनपाठन अरसपरस चालु हतु

श्री देवचन्द्रजीए अनेक पुस्तको रच्या छे तेनी नीचे प्रमाणे यादी आपवामा आवे छे—

श्रीमद् देवचन्द्रजीकृत कृतियो

पुस्तकनु नाम.	रच्यानो संवत्	क्या गाममा
१ अष्टप्रकारी पूजा	१७४३	"
२ एकवीशप्रकारी पूजा	"	
३ ध्यानदीपिका चतुष्पदी	१७६६ वै व १३ मुल्तान पंजाब	
४ द्रव्यप्रकाश	१७६७ पो व १३	बिकानेर, चोमासु स १७६६ नु कर्या बाद
५ आगमसार	१७७६ फा सु ३	मोटाकोट मरोट
६ नयचक्र		
७ विचारसार	१७९६ का सु १	नवानगर (जामनगर)
८ ज्ञानमजरी टीका	" " ५	"
९ विशविहरमानवीशी		पालीताणा
१० सिद्धाचल स्तवन.	१८०४ मा सु १३	"

११ गुरुगुणषट्त्रिंशिनो टबो
१२ पाच कर्मग्रथनो टबो
१३ विचाररत्नसार (... स्वरूप)
१४ प्रश्नोत्तर
१५ कर्मसंवेध
१६ प्रतिमा पुष्पपूजासिद्धि
१७ गुणस्थानक अधिकार
१८ अध्यात्मगीता (प्राय १७४३)मां लींबडी वृद्धोना कहेवा प्रमाणे
१९ वर्तमान चोवीशी
२० अतीत चोवीशी पैकी एकवीशी
२१ स्नानपूजा
२२ नवपदपूजा उलाळा
२३ वीरनिर्वाणना स्तवननी ढाळो भावनगरमां
२४ साधुजिनस्तवन अने तेनो टबो
२५ भावीचोवीशी पैकी पद्मनाभनु स्तवन
२६ सीमंधरजिन स्तवन
२७ दीवालीनु स्तवन लघु
२८ नवानगर आदि जिनस्तवन
२९ द्रु० पद स्तवन
३० समवसरण स्तवन
३१ कुंभस्थापना
३२ सहस्रकूट स्तवन
३३ अजितनाथजिन होरी.
३४ प्रभु स्तुति
३५ सिद्धाचल स्तुति.

३६ गिरनार स्तुति
३७ वीशस्थानक स्तुति
३८ ज्ञानबहुमान स्तुति
३९ } सिद्धाचल स्तवन
४०
४१
४२ वडी साधु वन्दना
४३ अष्टप्रवचन मातानी सज्झाय — जामनगर
४४ प्रभजनानी सज्झाय — रीनडीमा
४५ ढंढणऋषिनी सज्झाय
४६ समकितनी सज्झाय
४७ गजसुकुमालनी सज्झाय
४८ पचेन्द्रियविषय त्याग पद
४९ } त्रण कागल—लखेल पत्रो
५०
५१
५२ साधुस्वाध्याय वेनापर ज्ञानसारनो टबो
५३ सहझाय
५४ साधुनी पचभावना — जेसलमेरमा
५५ (आनन्दघनजीनी चोवीशीमा ज्ञानविमलजी अने देवचन्द्रजी बन्ने भेगा थइ बनावेला २३–२४ वे स्तवनो)
५६ आजको लाहो लीजीए रे काल कोने दीठी छे (प्राय देवचन्द्रजीकृत जणाय छे)

परस्परना ग्रन्थोमा साक्षीओ

श्रीमद् देवचन्द्रजीकृत जे जे ग्रन्थो–कृतियो उपलब्ध थइ छे ते उपर प्रमाणे जणावी छे भविष्यमां जे जे उपलब्ध थशे ते ते जणाववामा आवशे श्रीमद् देवचन्द्रजीए पोताना ग्रन्थोमा वाचक यशोविजयजीना ग्रन्थनी साक्षी आपी छे तेथी तेओ गुणानुरागी हता एम सहेजे सिद्ध थाय छे तेमज तेमणे श्रीमद् आनन्दघनजी के जे अर्वाचीनकालना अध्यात्मज्ञानोद्धारक हता, तेमना वचनोनी पण पोताना ग्रन्थमा साक्षी आपी छे तेथी ते कालमा तपागच्छीय श्रीमद् आनदघनजीना विचारो आखी जैनकोममा जल्दी प्रसरी गया हता एम सिद्ध थाय छे श्रीमद् देवचन्द्रजीना ग्रन्थोना पूर्णरागी श्री अमीविजयजी (अमीकुवजी) हता तेमणे नवतत्त्व प्रश्नोत्तरमा श्रीमद् देवचन्द्रजीकृत ग्रन्थनी साक्षी आपी छे परस्पर गच्छना आचार्यो अने साधुओ पोतपोताना ग्रन्थोमा एक बीजाना सद्विचारोनी साक्षीओ आप्या विना रहेता नहोता

त्रण मुनिओनी एक पूजा

आ वखते तपागच्छ अने खरतरगच्छना आचार्योमा सप हतो स्थानकवासीओ सामे बने गच्छवाळा कुसपने मूकी क्षुल्लक मान्यताओना भेदोने उपशमावी एक थया हता प्रतिमाना उत्थापको सामे प्रतिमा सिद्धिना विचारो आपवामा एक सरखी रीते गुरोपी मिनराज्योनी पेठे सर्पीने वर्त्या हता श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्यायकृत नवपद स्तुति तथा ज्ञानविमलसूरिकृत नवपद स्तुति अने श्रीमद् देवचन्द्रकृत नवपदनी

तेमा अहंममत्व बुद्धि नष्ट थाय छे अने अप्रमत्त दशामा प्रवेश थाय छे श्रीमद् देवचंद्रजीने एवी उत्तम आत्मज्ञान दशा प्रगट थइ हती, अने एवी दशामा अवधूत बनेला हता तेथी ते प्रसंगे जे उद्गार बहार पडेला छे तेमा आत्मदशानी खुमारी नीतरी छे ते तेमना उद्गारवाळा स्तवनोथी वाचको सहेजे समजी शके तेम छे नामरूपनो अहंभाव टळ्यो हतो देह छता तेमणे विदेह दशानो अनुभव कर्यो हतो लींबडीना उपाश्रय पासे देरासरमा एक भोंयरामा तेओश्री ध्यान धरता हता एम त्याना वृद्ध श्रावको जणावे छे मोटाकोट मरोटमा तेओश्री बने त्रण त्रण वा कलाकोना कलाको पर्यंत आत्माना शुद्धोपयोगमा तल्लीन थइ आत्मसमाधिमा मग्न रहेता हता तेमणे सविकल्पध्यान समाधि उपरांत निर्विकल्पक समाधिनो रस लीधो हतो अने तेओ देह छता देहातीत दशामा अखंड उपयोग पणे रह्या हता तेथी तेओए शुद्धोपयोगना तानमा स्तवनोमा आत्मदशानो रस रेड्यो छे जेटला प्रमाणमा आत्म-दशा प्रगटी होय छे तेटला प्रमाणमा उद्गारो प्रकटे छे जेटलु आत्मामा प्रगट्यु छे तेटली झाखी शब्दोद्वारा बहार प्रकाशे छे दरेकना पोताना शब्दोमा तेना विचारो होय छे श्रीमद् देवचंद्रजीना पुस्तको एज तेमनु आन्तरजीवन छे बाह्यजीवननी चेष्टामा तो प्रारब्ध योगे विचित्रता होय छे छता आन्तरजीवननो तेथी जुदा प्रकारनु होय छे बाह्यजीवन ते शरीर, वाणी अने कर्मना भोगथी मिश्रित होय आध्यात्मिक जीवनतो उपयोग रूप होय छे शुष्क नाळियेरना जेवु बाह्यमा राग द्वेषथी हतु एम तेमना स्तवनोथी जणाय

श्रीमद्‌ना प्रभुना स्तवनोमा आत्मदशाना उद्गारो छे तेमाथी संक्षेपथी केटलाक नीचे प्रमाणे जणाववामा आवे छे—

आरोपित सुख भ्रम टल्यो रे, भास्यो अव्याबाध
समर्यो अभिलाषीपणो रे, कर्ता साधन साध्य ॥अ०॥
ग्राहकता स्वामित्वता रे, व्यापक भोक्ता भाव
कारणता कारजदशा रे, सकल ग्रह्यु निज भाव ॥अ०॥

प्रभु दरिसण महामेहतणे प्रवेशमें रे
परमानंद सुभक्ष थयो मुज देशमें रे ॥ १ ॥
तिन भुवन नायक शुद्धातम तत्त्वामृतरस वुठु रे
सकल भविक लीलाणी मारु मन पण तुठु रे ॥आ० २॥
मनमोहन जिनवरजी मुजने, अनुभव प्याले दीधो रे
पूर्णानन्द अक्षय अविचलरस, भक्ति पवित्र थइ पीधोरे॥आ० ३॥
ज्ञानसुधा लाली नी लहेरे, अनादि विभाव विसार्यो रे
सम्यग्ज्ञान सहज अनुभवरस, शुचि निजबोध समार्योरे॥आ ४॥

जिनगुण रागपरागथी रे, वासित मुज परिणाम रे
तजशे दुष्ट विभावता रे, सरशे आतम काम रे ॥
जिन भक्तिरत चित्तने रे, वेधकरस गुण प्रेम रे
सेवक जिनपद पामशे रे, रसवेधित अय जेम रे ॥
नाथ भक्तिरस भावथी रे, तृण जाणुं पर देव रे
चिन्तामणि सुरतरुथकी रे, अधिकी अरिहंत सेव रे ॥
परमातम गुण स्मृतिथकी रे, फरश्यो आतमराम रे
नियमा कंचनता लहे रे, लोह ज्यु पारस पाम रे ॥

सहेजे प्रगट्यो निज परभाव विवेकजो,
अन्तर आतम ठहर्यो सावन सावचे रे लोल,
साध्यालम्बी थइ ज्ञायकता छेकजो,
निज परिणति थिर निज धर्मरसे ठवे रे लोल ॥
त्यागीने सवि परपरिणतिरस रीजजो,
जागी छे निज आतम अनुभव इष्टता रे लोल ॥
सहजे छूटी आस्रवभावनी चाल जो,
जालम ए प्रगटी सवर शिष्टता रे लोल ॥
बधना हेतु जे छे पापस्थान जो,
ते तुज भक्ते पाम्या पुष्ट प्रशस्ता रे लोल ॥
ध्येयगुणे वलग्यो पूरण उपयोग जो,
तेहथी पामे ध्याता ध्येय समस्तता रे लोल ॥
जे अति दुस्तर जलधि समो ससार जो,
ते गोपद सम कीधो प्रभु अवलबने रे लोल ॥
जाण्यो पूर्णानद ते आतमपास जो,
अवलब्यो निर्विकल्प परमातम तत्त्वने रे लोल ॥

भास्यो आतमस्वरूप अनादिनो विसर्यो हो लाल
सकल विभाव उपाधिथकी मन ओसर्यो हो लाल
सत्ता साधन मार्गभणी ए सचर्यो हो लाल
दानादिक निज भाव हता जे परवशा हो लाल
ते निज सन्मुख भाव ग्रही लही तुज दशा हो लाल
क्षायोपशमिक गुण सर्वे थया तुज गुणरसी हो लाल
सत्ता साधन शक्ति व्यक्तता उल्लसी हो लाल
हवे सपूरण सिद्धतणी शी वार छे हो लाल
देवचन्द्र जिनराज जगत आधार छे हो लाल

श्रीमद्‌नी भक्त दशा.

श्रीमान् देवचन्द्रजी परमात्माना ज्ञानी भक्त हता तेमणे चोवीश तीर्थंकरोनी पूर्ण प्रेममयी स्तवना करी छे तेमणे हृदयना पूर्ण भावथी वास्तविक परमात्माना गुणोनु वर्णन कर्यु छे तेमनी भक्तिमा लघुता अने परमात्मानी प्रभुतानु दृश्य छे. परमात्मानी भक्ति-प्रार्थना करती वखते पोते हृदयने जरा मात्र छद्मस्थ राखता नथी प्रभुनी भक्तिमा नामरुपनी अहंता विसरी जाय छे तेमज प्रभुने मळवा माटे अनेक आशामय सुरम्य भावनाओने हृदय आगळ खडी करे छे पोतानी मोहदशा न होवा छता तेने मोटी करीने दास भावे प्रभुने पोताने दोषी तरीके जणावे छे पोताना बनावेला स्तुति पदोमाथी सक्षेपथी नीचे प्रमाणे आपवामा आवे छे —

तार हो तार प्रभु मुज सेवक गणी
जगत्‌मा एटलु सुजस लीजे
दास अवगुण भर्यो जाणी पोतातणो
दयानिधि दिनपर दया कीजे तार० ॥ १ ॥
रागद्वेषे भर्यो मोह वेरी नड्यो,
मोहनी रीतिमा घणुए रातो
क्रोधवश धमधम्यो शुद्धगुण नवीरम्यो
भम्यो भवमाहि हु विषय मातो तार० ॥ २ ॥
आदर्यु आचरण लोक उपचारथी
शास्त्र अभ्यास पण काइ कीधो
शुद्ध श्रद्धानवण आत्म अवलब विण
तेह्वो कार्य तेणे को न सिद्धयो तार० ॥ ३ ॥

स्वामी गुण ओलखी स्वामीने जे भजे
दर्शन शुद्धता तेह पामे
ज्ञानचारित्र तप वीर्य उल्लासथी
कर्म जीती वसे मुक्ति धामे तार० ॥ ५ ॥
जगत् वत्सल महावीर जिनवर सुणी
चित्त प्रभु चरणने शरण वास्यो
तारजो बापजी बिरुद निज राखवा
दासनी सेवना रखे जोशो तार० ॥ ६ ॥

होवत जो तनु पांखडी, आवत नाथ हजूर लालरे
जो होती चित्त आंखडी, देखत नित्य प्रभुनूर लालरे
देव जशा दर्शन करो ॥
शासन भक्त जे सुरवरा, विनवुं शीष नमाय लालरे
कृपा करो मुज उपर, तो जिन वन्दन थाय लालरे (देव)
पूछ पूर्व विराधना, शी कीधी एणे जीव लालरे
अविरति मोह टळे नहीं, दीठे आगम दीव लालरे (देव)
इत्यादि

ते समयनी स्थिति अने सुधारणानो बोध

श्रीमद् देवचन्द्रना समयमा पण गाडरीया प्रवाह प्रमाणे जैनो वर्तता हता तळावमा पाणी होय छे तो ठील होय छे तेम कोइ जमानो एवो नथी होतो के जेमा सर्व लोको ज्ञानीओ होय वा सर्व लोको अज्ञानीओज होय ज्ञानीओनी साथे अज्ञानीओ होय छे अने अज्ञानीओनी साथे

ज्ञानीओ होय छे भक्तो होय छे त्या अभक्तो पण होय छे दुनियाना जीवो रजोगुण, तमोगुण अने सत्त्वगुण युक्त होय छे जीवोने कर्मप्रकृति नचावे छे केटलाक जीवो एकात क्रियावादी होय छे केटलाक शुष्क ज्ञानवादी होय छे, **ज्ञान क्रियाभ्यामोक्ष** ज्ञान अने क्रिया ए बेथी मुक्ति छे एम माननारा दुनियामा रत्ननी पेठे अल्प मनुष्यो होय छे श्रीमद् देवचद्रजी महाराज उपदेशक हता तेमज जैनोनी धर्म दशाना निरीक्षक हता जैनोने जोध पमाडीने धर्मना स्थिर करनार हता ते वखतना जैनोमा ते वखते बाहुल्य क्रियाजडदशानु हतु तेथी क्रियाजडमनुष्यो गाडरिया प्रवाहे समज्या विना प्रतिक्रमणादि क्रियाओने मानी पश्चात् आत्मज्ञान तरफ रुचि धरावता नहोता अने आत्मज्ञानी मुनिराजोनी महत्ता अवबोधवा शक्तिमान् थया नहोता सर्व काळमा ए प्रमाणे बने छे श्रीमद् देवचद्रजी जैनशासन प्रवर्तक हता आखी दुनियाना मनुष्यो जैनतत्त्वज्ञान प्राप्त करी ले तो बहु सारु एवी भावनावाळा हता वे वखतमा अज्ञानी व्यवहारवादीओनी बाहुल्यता हती आत्मज्ञान रसिक अल्प मनुष्यो ते वखतमा हता तेथी तेओ चद्रबाहु जिनना स्तवनमा नीचे प्रमाणे उद्गारो काढे छे

द्रव्य क्रिया रुचि जीवडा रे, भाव धर्म रुचि हीन,
उपदेशक पण तेहवा रे, शु करे जीव नवीन रे
चद्राननजिन, ३

तत्त्वागम जाणग तजी रे, बहु जन सम्मत जेह,
मूढ हठीजन आदर्यो रे, सुगुरु कहावे तेह रे चन्द्रानन० ४

आणा साध्य विना क्रिया रे, लोके मान्यो रे धर्म,
दंशणनाण चरीत्तनो रे, मूल न जाण्यो मर्म रे चन्द्रानन० ५
गच्छकदाग्रह साचवे रे, माने धर्म प्रसिद्ध,
आतमगुण अकषायता रे, धर्म न जाणे शुद्ध रे चन्द्रानन० ४
तत्त्व रसिकजन थोडला रे, बहुलो जन सवाद,
जाणो छो जिनराजजी रे, सघळो एह विवाद रे चन्द्रानन० ७
इत्यादि

ए प्रमाणे तत्कालीन धर्मीओनी दशानु वर्णन कर्यु छे लोकोने श्रीयशोविजयजी उपाध्याये ते वखतमा शिखामण रूप सख्त चाबखा लगाव्या छे ते प्रमाणे श्रीमद् वाचक देवचंद्रजीए सख्त चाबखा लगाव्या नथी तेमणे तो जे कथु छे ते पण मर्यादामा शिखामणरुपे कथु छे परतु लोको पर तेनी घणी सारी असर थइ छे अने भविष्यमा थशे

श्रीमद् कर्मयोगी महात्मा

आजकाल जे आत्मज्ञानीओ देखाय छे तेमानो मोटो भाग शुष्क ज्ञानीओनो बनेलो होय छे आत्मानु सम्यग्-ज्ञान प्राप्त कर्या विना शुष्कज्ञानीपणु प्राप्त थाय छे अने तेथी वाचकज्ञानी तरीके उपहासने पात्र थाय छे कोटाधुदीना भावना भाववावाळा शेटनी पेठे बनीने जेओ कहेवा प्रमाणे वर्तता नथी तेओ पोते तरी शकता नथी अने अन्योने तारी शकता नथी क्रिया विनानु शुष्कज्ञान कइ करी शकतु नथी. लौकिक शास्त्रो पैकी भगवद्गीतामा श्रीकृष्णे अर्जुनने कर्मयोगी थवा माटे सारी रीते उपदेश आप्यो हतो

कइ करवु नहीं जने वेसी रहेवु लानी लानी वातो कर्या करवी स्वपरनु श्रेय थाय एवा कार्यो करवा नहीं एथी स्वपरनु कल्याण थतु नथी व्यवहारमा रहीने स्वाधिकारे योग्य धर्मप्रवृत्ति कर्या विना आत्मज्ञान, इडानी पेठे काचु रहे छे वा काचा पाराना जेवु रहे छे शुभ प्रवृति, सेवा, परमार्थ कार्यो वगेरे कार्यो कर्या विना कोइने आत्मज्ञाननी परिपक्वता थइ नथी अने थशे नथी वातो कर्याथी वडा थता नथी तेम शास्त्रोमाथी आत्मज्ञाननु स्वरूप वाच्यु एटला मात्रथी आत्मज्ञानी थवातु नथी देव, गुरु, धर्मनी भक्ति करवाथी अने स्वाधिकार प्रवृत्तिथी प्रवृत्त थता आत्मज्ञान परिणाम पाम्यु के नहीं तेनो अनुभव आवे छे सेवा कर्या विना आत्मज्ञान जे छे ते आत्मामा परिणमतु नथी देश सेवा, कुटुम्ब सेवा, गुरुजन सेवा, प्रभु गुरु भक्ति, समाज सेवा, जाहेर उपदेश प्रवृति, अनेक ग्रन्थोनी रचना, वगेरे शुभ कर्मो करवाथी अध्यात्मशास्त्रोद्वारा वाचेलु आत्मज्ञान खरेखर आत्मज्ञानरूपे परिणाम पामे छे श्रीमद् देवचद्रजीए दीक्षित थया बाद पोताना गुरु श्रीदीपचद महाराजनी मन वाणी कायाथी सेवा उठावी हवी धर्मविद्या गुरु श्री ज्ञानसागरजीनी पूर्ण प्रेमथी सेवा करी हवी तेओ गुरुकुळमाथी छुटा पड्या नहोता, गुरुकुळवासमा रहीने तेमणे परपरा सहित ज्ञान प्राप्त कर्यु हतु शास्त्रज्ञाता थता पोतानी मानता पूजा वधारवा माटे गुरुथी जूदा पड्या नहोता धर्मव्यवहारनी शुभाचरणाओनो तिरस्कार कर्यो नहोतो निश्चयज्ञानमा परिपूर्ण थया छता शुष्कज्ञानी बन्या नहोता प्रतिमा स्नानरूपभावपूजा, तीर्थयात्रा, विहार, प्रतिक्रमणादि शुभ

धर्म क्रियाओनो त्याग कर्यो नहोतो गामोगाम फरीने तथा देशोदेश फरीने धर्मोपदेश आपीने तथा ग्रन्थो लखीने कर्मयोगीनी पदवीने तेमणे शोभावी छे साधुओ, साध्वीओ, श्रावको अने श्राविकाओने धर्मशास्त्रोनो अभ्यास करावी धर्म प्रवृत्तिमा जीवन गाळी आदर्श कर्मयोगीनु जीवन पाळनी दुनिया माटे मूकी गया छे लगभग ७०-७५ वर्ष सुधी ज्ञानी कर्मयोगीनु साधु जीवन गाळी तेओए जैन धर्मनी पूर्ण सेवा करीने जैन कोमनी अपूर्व सेवा बजावी छे ते तेमना ग्रन्थो रहेशे त्यासुधी जैनोने उपकार कर्या करशे श्रीमद् जेवा कर्मयोगीओथी जगत्मा धर्मनी जाहोजलाली वर्ते छे श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय, श्रीमद् विनयविजयजी उपाध्याय अने श्री देवचद्रजी महाराज जेवा ज्ञानी कर्मयोगीओए अढारमा सैकानी जाहोजलाली दीपावी छे अने हाल पण तेमना शास्त्ररूप अक्षर देहोथी जैन कोममा जाहोजलाली वर्ती रही छे अने भविष्यमा वर्तो

श्रीमद्नो शिष्य समुदाय

श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना शिष्यभूत साधुओ अने साध्वीओ हती के नहीं तेनो हजु सुधी चोक्कस निश्चय जणायो नथी महा प्रख्यात पुरुषोनी पाछळनी सतति तेवा प्रकारनी होती नथी कातो देवतानी पाछळ कोयला जेवु थाय छे श्रीमद् हेमचद्र महाराजनी पाछळ तेमनी सतति परपरा वही नथी श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्यायना शिष्य साधुओ हता पण तेमनी परपरा वही नथी श्रीमद् आनन्दघनजीनी पाछळ साधु शिष्यो नहोता तेओनी पासे उपदेश

श्रवण करनारा श्रावक शिष्यो तो थया होय छे श्रीमद् देवचन्द्रजी प्रति बोधित श्रावक समुदाय अनेक देशोमा हतो तेमना श्रावकोए तेमनी बनावेली अध्यात्मगीताने सुवर्णना अक्षरे लखावी हती तेमना रागी श्रावकोए तेमना ग्रन्थोनो सर्वे देशमा प्रचार करी दीधो हतो ए तेमनी गुरुभक्तिनी उत्तमता हती श्रीमद्ना श्रावको सिद्धातोना श्रोताओ हता अने तेथी तेओ अनुभवी बन्या हता श्रीमद् देवचन्द्रना साधु शिष्य थया होत तो तेओ कोइ ठेकाणे कइ पण लख्या विना रह्या न होत कदापि तथा प्रकारना थया नहीं होय अथवा तेमनी दशाए कोइ शिष्य बन्यो तेमने लायक देखायो नहीं होय इत्यादि अनेक कल्पनाओथी चोक्कस निश्चय करी शकाय नहीं

श्रीमद्नु निर्वाण अने निर्वाणस्थान पालीताणा

सवत् १८०४ सुधी तो तओ हयात हता एवु तेमना बनावेला सिद्धाचलना स्तवन परथी माल्म पडे छे ते वखते तेओ लगभग ८४ वर्षनी उमर लगभगना होवा जोइए पछीथी स्थिरवासनी आवश्यकता जणाइ होय एम अनुमान थाय छे स १८०४ नी सिद्धाचल पालीताणामा स्थिरवास करेलो होवो जोइए पालीताणामा स्थिरवास करीने तीर्थस्थानमा समाधिमरण करवाने एवा महापुरुष इच्छे तेमा कइ आश्चर्य नथी सिद्धाचल पर्वत पर अनेक मुनियोए अनशण कर्या छे, वृद्धावस्थामा जरा बलक्षीण थाय छे पाचे इन्द्रियोनु ज्ञान बळ घटे छे, मननी विचारशक्ति क्षीण थती जाय छे अने विहार थइ शकतो नथी, युवा-

वस्थानी पेठे उपदेश आपी शकाती नथी अने ग्रन्थ रचना वगेरेनी प्रवृत्ति मन्द पडी जाय छे श्रीमद्नी वृद्धावस्थामां पूर्वोक्त स्थिति थाय ए संभवित छे वृद्धावस्थामां छेवटे परमात्मानुं स्मरण अने आत्माना शुद्धोपयोगनुं स्मरणज थइ शके छे श्रीमदे सिद्धक्षेत्रमां परमात्मानुं ध्यान राखामां लक्ष्य राख्युं हतुं तेओ शरीर, नाम, जाति, आदि सर्व बाह्य पदार्थोमां आसक्ति विनाना थया हता आत्माना शुद्धोपयोगना तारोतारमां लयलीन रहेता हता अने मभाविमरण अभव्यजीवो न पावति ॥ अभव्यजीवोने मरणकाले समाधिमरण प्राप्त थतुं नथी जेमणे पोणोसो वर्ष लगभग आत्म ज्ञानोपयोग, आत्मध्यान, आत्मानुं चिन्तन, मनन, अने आत्म समाधिमां गाळ्या होय तेने मरण वरवते निवृत्तिदशामां समाधिमरण (पंडित मरण) थाय एमां कइ आश्चर्य नथी श्रीमदे अनादि अनंत ज्ञानरूप आत्मजीवनमां मनने लीन कर्युं हतुं अने बाह्य दृश्य पदार्थोमां रागद्वेषपरिणामथी मुक्त थया हता आत्मा अने परमात्माना उपयोग विना तेओ हृदयमां अन्य कशो विचार प्रगटावता नहोता कर्मयोगी हता तेथी मरण वखते शारीरिक दुःख सहेवामां जराभार कायर बनता नहोता तेओ गुरुकुळ वासमेवी हता अने तेओए अनेक मुनियोनो आशीर्वाद लीधो हतो तेथी तेओने आत्मभान भूलावे एवी पीडा थवी नहोती श्रीमद् बाळ ब्रह्मचारी हता तेथी तेमने आत्म शुद्धोपयोगनी रमणतामां अन्यना आवती नहोती शुभ परिणाम अने अशुभ परिणाम पण औदयिकभावज नित छे एम जाणी तेओ फक्त आत्माना शुद्धोपयोगमां रहेता हता तेओए मरणकालनी पहेला धार्मिक प्रवृत्तियोनी

घणी मन्दता करी हती आत्माना शुद्ध परिणाममा रहेता अने आत्माने भावता छता तथा अरिहंतशरण, सिद्धशरण, साधुशरण अने केवलि प्रज्ञप्त धर्मशरण ए शरणने अंतरमा परिणमावी परमेष्टि महामंत्रनु ध्यान करता छता बाह्य प्राणोनो त्याग करी तेओ शुभगति भजनारा थया आत्माना अनुभवमा रहीने शरीरनो संयोग दूर कर्यो धन्य छे एवा आत्मज्ञानी महापुरुषने धन्य छे, तेमना जीवनने धन्य छे, तेमना शरीरने श्रावकोए विधिपूर्वक अग्नि संस्कार कर्यो तेमना मरणना समाचारथी आखा भारतमा जैनकोममा घणो खेद प्रगट्यो पण भाविभाव आगळ कोइनु कइ चालतु नथी एम जाणी अते जैनो तेमना गुणोनु स्मरण करवा लाग्या अने तेमनी पाछळ तेमना चिरंजीव अक्षर देहरुप ग्रन्थोनु अवलम्बन लेवा लाग्या संसारमा धर्मज शरणभूत छे पोतानी साथे दुनियानी कोइ वस्तु आवती नथी मोहथी जीवो आत्म-भान भूलीने अते जन्म हारी जाय छे श्रीमद् श्वेत वस्त्र-धारी हता ज्ञान वैराग्य भावना भाववामा एक्का हता खंडन, मंडन, वादविवाद, विकथा वगेरे जेथी आत्म कल्याण वा सत्र कल्याण न थाय तेनाथी दूर रहेता हता तपश्चर्या आदिथी श्रीमदे आत्मज्ञाननी परिपक्वता करी हती तेथी तेमनु समाधिमरण थयु हतु तेओ कोइनी कदापि निन्दा करता नहोता कोइना अवर्णवाद बोलता नहोता तेमने स्वगच्छ वा परगच्छ संबंधी मध्यस्थ दशा हती तेमणे साधु दशानु अनुभव गम्य वर्णन कर्युं छे तेमाथी केटलाक उद्गारो नीचे प्रमाणे आपवामा आवे छे—

जगतमे सदा सुखी मुनिराज परविभाव परिणति के त्यागी,

जागे आत्म स्वभाव निजगुण अनुभव के उपयोगी
जोगी ध्यान जहाज ॥

निर्भय निमल चित्त निराकुल, विलगे ध्यान अभ्यास
देहादिक ममता सवि वारी, विचरे सदा उदास ॥ अ ॥

भावे साधन जे एक चित्तथी रे, भाव साधन निजभाव
भावसिद्ध सामग्री हेतु ते रे, निस्संगी मुनिभाव ॥ साधक ॥

हेय त्यागथी ग्रहण स्वधर्मनो रे, करे भोगवे साध्य
स्वस्वभावरसिया ते अनुभवे रे, निजगुण अव्याबाध ॥ साधक ॥

निःस्पृह निर्भय निर्मम निमला रे, करता निज साम्राज
देवचन्द्र आणाये विचरता रे, नमिये ते मुनिराज ॥ साधक ॥

हवे वाचको श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना शरीरने देखी शके तेम नथी परंतु हाल तो तेमना आत्माना प्रतिबिंबरूप तेमना सद्विचारोना दर्शन स्पर्शन करी शके तेमछे तेमनी समनमा रहेला मनुष्योने धन्य छे तेवा अध्यात्मज्ञानी वैरागी गीतार्थनो एक घडीनो वा अर्ध घडीनो समागम खरेखर कोटि अपराधोनो नाश करी शके छे पुस्तको करता सन्त महात्मानो प्रत्यक्ष समागम खरेखर अनन्तगुण लाभकारी छे एवा ज्ञानी साधुओने तेमना जीवनकालमा पूर्वभवना संस्कारी अल्प मनुष्यो ओळखी शके छे कारण के ते समयना केटलाक दुर्जनो तेमना समागममा आवनाराओने दोष दृष्टिथी विपर्यय दशावाळा करी मूके छे हवे तो तेमना अभावे तेमना पुस्तको तेमना आत्मानी ज्ञान वैराग्य सुगंधिथी वाचकोने लाभ आपे छे

श्रीमद् देवचद्रजीना महाविदेह क्षेत्रमा केवली तरीके अवतार

श्रीमद् अध्यात्मज्ञानी, आत्मशुद्धोपयोगी देवचद्रजी महाराज हालमा महाविदेह क्षेत्रमा केवली तरीके विचरे छे एम अनेक मनुष्योना मुखे किंवदन्ती तरीके श्रवण कर्यु छे साभळवा प्रमाणे श्रीमद्ना रागी अध्यात्मज्ञानी श्रावके पाटणमा महान् तप कर्यु हतु ते तपना प्रभावे भुवनपति देवे तेमने साक्षात् दर्शन आप्यु ते वखते ते श्रावके भुवनपति देवने श्रीमद् कइ गतिमा गया एवु प्रश्न कर्यु तेना उत्तरमा देवे कह्यु के श्रीदेवचद्रजी महाविदेह क्षेत्रमा जन्म्या छे अने हाल केवलज्ञानी तरीके विचरे छे अने अनेक भव्य जीवोने देशना देइ तारे छे अमदावादमा सारगपुर तळीयानी पोळमा आत्मज्ञानी ध्यानी परम वैरागी श्री मणिचद्रजी नामना यति–साधु हता तेमणे आनमरामेरे मुनिरमे वगेरे अपूर्व वैराग्यमय सझ्झाओ, पद रच्या छे तेओ महातपस्वी ध्यानी हता तेमना तप प्रभावे तेमनी पासे धरणेन्द्रे साक्षात् दर्शन दीधु अने मणिचद्रजीने शाता पुच्छी मणिचद्रजीने कोढ, रक्तपातनो महाभयकर रोग हतो, ते दर्दथी पीडाता हता देवे मणिचद्रजिने वरदान मागवानु कह्यु परतु श्रीमणिचद्रजीए कइ माग्यु नहीं तेमनो रोग टाळवा विनति करी पण तेमणे ना कह्यु अने कह्यु के ते रोग भोग व्या विना छुटको नथी, कर्यां कर्म उदयमा आवे छे, तेनु देवु रोग भोगवीने आपवु जोइए प्रारब्धकर्म तो तीर्थंकर भगवानने पण भोगववु पडे छे तो मारे पण भोगववु जोइए के जेथी परभवमा कर्मनु लेणदेण रहे नहीं श्रीमणि

चद्रजीए धरणेन्द्रदेवने श्रीमद् देवचद्रजीनी गति विषे पुच्छ्य त्यारे धरणेन्द्रे क्यु के श्रीमान् देवचद्रजी हाल्मा विदेहक्षेत्रमा केवली तरीके विचरे छे श्रीमद् आनन्दघननी गति विषे पुच्छ्यु त्यारे कयु के तेओ एकावतारी छे एम श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय सबधी पुछ्यु हतु, तेनो उत्तर एकावतारी तरीके आप्यो हतो एक वृद्ध श्रोता श्रावके अमने ए प्रमाणे किंवदती परपराथी चालती आवेली कही हती आ प्रमाणे किंवदन्तीओ अत्र जणावी छे कलकत्तामा रहेनार अध्यात्मज्ञानी सुश्रावक हीरजीभाइए पण उपरना भाव वाळी एक किंवदन्ती कही हती पण तेनो विस्तार थाय तेथी अत्र लखी नथी

श्रीमद्ना चमत्कारो

श्रीमद् देवचद्रजीना चमत्कार सबधी अनेक किंवदन्तीओ साभळवामा आवे छे काशीवाळा मडलाचार्य श्रीबालचन्द्रसूरि महाविद्वान थइ गया छे तेमना समयमा तेमनी साथे विचरनार ऐंशी वर्षना एक वृद्ध यतिजी अमने ससारीपणामा विजापुर ताळुके आजोल गाममा मळ्या हता तेमणे अनेक वातो करी हती ते कहेता के मारा गुरु नेवु वर्षना हता ते वखते मे बाल्यावस्थामा श्रीमद् देवचद्र सबधी वातो साभळी हती स १९५२ नी सालमा अमारु ने वर्ष सुधी आजोलमा धार्मिक अभ्यास कराववा माटे सघना आग्रहथी रहेवानु थयु हतु ते प्रसगे श्रीमद्नी चोवीशी वगेरे कठाग्र करी हती वृद्ध यतिजी वगेरेए आजसुधी कहेली किंवदन्तीओ नीचे प्रमाणे लखवामा आवे छे श्रीमदे ज्यारे दीक्षा

लीधी हती त्यारे ते बाल्यावस्थामा हता ते एक वखते काउसग्गमा हता त्यारे एक भयंकर सर्प आव्यो अने श्रीमद्ना शरीरपर चढवा लाग्यो शरीर पर चडीने ते श्रीमद्ना खोळामा बेठो ते वखते आजुबाजुना साधुओ गभरावा लाग्या तो पण श्रीमद् जराभार चलायमान थया नहीं, श्रीमदे काउसग्ग पार्यो त्यारे ते सर्प फुल्कार करतो खोळामाथी उतर्यो अने सामो बेठो श्रीमदे तेने समता भावना वचनो कह्या ते तेणे मस्तक डोलावीने साभळ्या आवी स्थितिने देखीने बीजा साधुओ खरा हृदयथी श्रीमद्ना धैर्यनी प्रशसा करवा लाग्या अने कहेवा लाग्या के श्रीमद्मा आत्मानी निर्भयदशा प्रगट थइ छे तेओ बाल्यावस्थामा एक दिवसमा सो श्लोको मुखे करता हता अने ते विसरी जता नहोता

धरणेन्द्रनु व्याख्यान साभळवा माटे ब्राह्मणना रूपे आवागमन

श्रीमद् मारवाडमा मोटाकोट मरोटमा चोमासु रह्या हता तेमनी देशना आत्मस्वरूपनी हती दररोज व्याख्यानमा सर्व दर्शनना लोको आवता हता अने आत्मज्ञान प्राप्त करता हता तेमना व्याख्यानमा एक वृद्ध ब्राह्मण जेवो मनुष्य आवतो हतो तेनी कोइने खबर पडती नहोती श्रीमद् महोपाध्याय यशोविजयजी कृत ज्ञानसारनु दररोज व्याख्यान करवामा आवतु हतु श्रीदेवचद्रजी महाराज तेनु अनुभव पूर्वक उडा उत्तरीने व्याख्यान करता हता तेथी श्रोताओना आत्माओमा ज्ञानरस उत्कट जतो हतो पेलो वृद्ध ब्राह्मण पण आनदथी उल्लसित थइ जतो हतो ते बोलतो नहोतो

तमज व्याख्यान पूर्ण थया बाद त्या जतो हतो तेनी कोट्ने समजण पडती नहोती, एक वखते रात्रीए ते ब्राह्मण उपाश्रयमा आव्यो अने श्रीमद्ने वन्दना करी बेठो ते वखते अन्य साधुओ पण जागता हता वृद्ध ब्राह्मणे जणाव्यु के हु धरणेन्द्र छु तमारी आत्मस्वरूपनी देशना में चार मास सुधी साभळी आ वखते भरतक्षत्रमा तीर्थकरनी पेठे आत्मस्वरुव्याख्या करो छो तेथी हु घणो प्रसन्न थयो छु धरणेन्द्रे श्रीमद्ने कइ मागवानु कह्यु त्यारे श्रीमदे कह्यु के अनत दु खनो नाश करनार अने अनत सुखने प्रगटावनार आत्माना शुद्धोपयोग विना मारे अन्य कोइ वस्तुनी चाहना रही नथी धरणेन्द्रे आवु साभळीने तेमने धन्यवाद आप्यो धरणेन्द्रे सर्व साधुओने पोतानी प्रतीत थवा माटे एकदम उत्तर वैक्रिय शरीर प्रगट करी देखाड्यु तेथी सर्वेनी आखो अजाइ गइ अने उपाश्रयमा अजवाळु अजवाळु थइ गयु आथी साधुओने श्रीमद् देवचद्र महापुरुष छे अने तेमना वचन आराध्य छे एवो निश्चय थयो महात्माओ देवताओने आराधता नथी तो पण देवताओ तेमनी पासे आवे छे अध्यात्म ज्ञानी महात्माओमा अनेक प्रकारनी लब्धिओ प्रकटे छे तेमा कइ आश्चर्य नथी

सिंह शात थइ पगे लाग्या

श्रीमद् एक वखत पजाब तरफ विहार करता हता पर्वतनी पासे थइ जवानो रस्तो हतो, पर्वतनी नीचे एक सिंह बेठेलो हतो घणी वखत त्या थइ जनार मनुष्योने ते खाइ जतो हतो, श्रीमद् त्या विहार करवा लाग्या तेमने केटलाक लोकोए वार्या तो पण तेओ पाछा वळ्या नहीं,

अने कहेवा लाग्या के मारे सर्व जीवोनी साथे मैत्री भाव थयो छे माटे भय नथी, तेओ ज्या सिंह बेठो त्या थइ जवा लाग्या आ वखते साथे आवेलो प्रसंग देखी गृहस्थो पण आव्या हता पेला सिंह पासे श्रीमान् आवी पहोंच्या श्रीमद्ने देखी सिंह बराडा पाडी उठ्यो अने श्रीमद्नी पासे आव्यो अने तेमना पगे पडी सामो उभो रह्यो श्रीमदे तेने शांत कर्यो पछी ते चाल्यो गयो पाछळ आवनारा गृहस्थो तो आ दु देखी आश्चर्य पाम्या अहिंसाया प्रतिष्ठाया वैरत्याग आ महान् सूत्र वचन खरु पड्यु

जामनगरमा जैन देरासरना ताळा तोड्या.

एक वखत जामनगरमा मुसल्मानोनु साम्राज्य वधी गयु हतु एक जैन देरासर हतु तेनी मूर्तियोने भोंयरामा सताडवामा आवी हती, मुसल्मानोए जबराइथी तेनो कबजो लेइ मस्जीद तरीके तेनो उपयोग कर्यो हतो केटलाक वर्ष सुधी जैनोए आ बाबत सहन करी लीधी पण पाछु तेमनु जोर ओछु थता अने हिन्दु राज्यनु जोर वधता जैनोए राजा आगळ फरियाद करी, पण जैनोनु कइ वळ्यु नहीं बाह्यथी अने अतरथी ते जैन देरासर हतु एम त्यानी अढार वर्ण कबुल करती हती पण चमत्कार विना नमस्कार थाय नहीं एवी स्थिति थइ पडी एवामा श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज विहार करता करता त्या आवी पहोंच्या तेमणे राजानी समक्ष जैन देरासर सिद्ध करवा प्रयत्न कर्या अने मुसल्मानोए मस्जीद सिद्ध करवा प्रयत्न कर्यो छेवटे राजाए एवो ठराव कर्यो के देरासरने ताळा लगाववामा आवे अने जे पोताना

प्रभुना नामे प्रार्थना करी उघाडे अने उघडे तेने-तेनो कब्जो सोंपवामा आवशे, आ प्रमाणे ठराव करीने फकीरोने पहेली तक आपी, फकीरोए खुदाना नामे कुरान वाची प्रार्थना करी पण मूळ जैन देरासर हतु तेथी ताळा तूट्या नहीं पछीथी श्रीमद् देवचद्रजीनो वारो आव्यो तेमणे जिनेन्द्र परमात्मानी स्तुति करीके तटाक देइने ताळा तूटीने हेठा पड्या पश्चात् वृद्ध श्रावकोए राजाने भोंयरु जे गुप्त हतु ते देखाड्यु अने तेना द्वारना ताळा पण जिनेन्द्र परमात्मानी स्तुतिथी तूटी गया अने तेमाथी घणी मूर्तियो नीकळी ते पाछी विधिपूर्वक देरासरमा स्थापन करवामा आवी श्रीमद्ना चमत्कारो देखीने जामनगरनो राजा अने प्रजा खुश थइ गइ अने जैन धर्मनी प्रसशा सर्वत्र प्रसरी श्री कृपाचद्रसूरिजी वगेरे साधुओ अने वृद्ध श्रावकोना मुखथी आवी वात साभळी हती ते अत्र लखी छे ज्ञानीध्यानी महात्माओ स्वय चमत्कार रूप छे आत्मानी अनत शक्ति छे आत्मानी जेओ उपासना करे छे तेओ परमात्मानी पेठे शक्तिओ फोरवी बतावे छे ॥ अहो अनन्त-वीर्योऽयमात्माविश्वप्रकाशक त्रैलोक्यचालयत्येव ध्यान-शक्तिप्रभावत. ॥ (ज्ञानार्णव) अनत वीर्यरूप आत्मा छे अने विश्वनो प्रकाशक छे ते ध्यानशक्ति प्रभावे त्रण लोकने चलाववा शक्तिमान् छे

सिद्धाचलपर कागडा आवता बध कर्या

श्रीमद् देवचन्द्रजी घणी वखत सर्व तीर्थ शिरोमणि सिद्धाचल तीर्थनी यात्रा करवा जता हता सिद्धाचलमा तेमणे विहरमान विशी रची हती तेमणे सिद्धाचलनी अनेक यात्राओ

करी हती ऋषभजिणंदशु प्रीतडी ए स्तवन तेमणे किंवदन्ती प्रमाणे सिद्धाचल आदीश्वर भगवान् आगळ रच्यु हतु श्री दीपचंदजी महाराजनी साथे घणी यात्राओ करी हती दुःषमकालना योगे सिद्धाचलतीर्थपर कागडाओ आवत्रा लाग्या जेओ महाप्रभावक हता तेओ वारवार शांतिस्नात्र भणावीने कागडाओनु आवागमन बंध करता हता सके सके कोइ प्रभावक महात्मा जैन कोममा प्रगटी नीकळे छे अने जैन धर्मनी प्रभावना करे छे श्रीमद् देवचंद्रजीना कालमा सिद्धाचलपर कागडाओ आवत्रा लाग्या हता तेथी जैन कोममा अने अन्य कोममा अनीष्टनो भय लाग्यो राज्य बदलवानो प्रसंग आववानो होय छे, वा दुष्काल पडवानो होय छे त्यारे तथा महारोग फाटी नीकळवानो होय छे त्यारे तथा धर्मराज्यनी पडती थवानो प्रसंग आवे छे त्यारे सिद्धाचलतीर्थपर कागडाओ आवे छे जे भावीभाव बनवानो होय तेना निमित्त चिन्हो प्रगट्या करे छे जे काले जे बनवानु होय छे ते बन्या करे छे अनिष्ट निमित्तोथी अनिष्ट थाय छे स १९७५ ना माह मासमा विजापुर पासे वरसोडा गामना जैन देरासर पर विजळी पडी अने प्रतिमा पर पण विजळी पडी तेथी एक मासमा त्याना ठाकोर राओळश्री सुरजमल्जी मृत्यु पाम्या आवा अनिष्टसूचक चिन्होथी लोको भय पामे छे निमित्तशास्त्र सत्य पडे छे जैन कोममा सिद्धाचलपर कागडाओना आवागमनना उत्पातथी सवमा क्लेश, भेद, जैनोनी हानि, आगेवानोनी पडती वगेरे शकाओ थवा लागी श्रीमद् देवचंद्रजी महाराज सुरतना कचरा कीकाभाना सघमा स १८०४ मा सिद्धाचल आव्या प्रसंग पामीने जैन सघनी

विनतियी तेमणे सिद्धाचल पर्वतपर आदीश्वर भगवाननी हुकमा शातिस्नान भणाव्यु अने पर्वतनी चारे तरफ शाति जलनी धारा देवरावी तेथी कागडाओ आवता बध थया तेथी जैन कोममा आनद शाति प्रसरी अने अनीष्ट उपद्रवनो नाश थयो श्रीमद् यशोविजयजीए तथा ज्ञानविमळसूरिए प्रसगो-पात्त अनेक चमत्कारो बताव्या छे प्रसग विना अमुक महा-त्मामा अमुक शक्ति छे ते मालुम पडती नथी महात्माओ कइ जादुगरनी पेठे वादीनी पेठे खेल करी बतावता नथी तेमना आत्मामा जे वइ सिद्धियो उत्पन्न थाय छे तेनी ते-ओने पण मालुम पडती नथी परतु प्रसग प्राप्त थाय छे त्यारे तेओ पण जाणी शके छे

तेमणे मारवाडमा सघ जमण प्रसगे गौतम स्वामिना ध्या-नथी एक हजार श्रावको जमे तेटला जमणमा आठ हजार श्रावकोने जमाडवानी मत्रशक्ति वापरी हती तेमने सिद्धातोनो तीक्ष्ण उपयोग हतो अनेक प्रकारनी अवधान शक्तिओ तेमनामा खीली हती परतु तेओ ते कोइनी आ-गळ प्रसग विना जणावता नहोता हालनी पेठे ते प्रसगे महात्माओ अवधानोना खेलो करता नहोता जैनोमा वा हिन्दुओमा जेटली अवधान शक्ति खीले छे तेटली पाश्चात्य लोकोमा खीलती नथी तेओ ज्या चोमासु करता अगर पधारता त्या लोकोमा शाति प्रसरती हती तेमनामा वचन-सिद्धि प्रगटी हती तेओ वरी मनुष्योना वैरनो, सहजमा उपदेश आपी नाश करता हता गच्छोना खडनमडनमा तेओ पडता नहोता तेथी सर्व गच्छवाळाओने तेओ प्रिय (अइ,

पढ्या हता श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय अने श्रीमद् आनदघनजी महाराजनी आध्यात्मिक विचार श्रेणिनु तेमणे अनुकरण करी तेओ वस्तुत बन्नेना आत्मिक अनुयायी बन्या हता तेथी जैन कोममा तेओ तत्त्वज्ञाननो प्रचार करवाने शक्तिमान् थया हता तेमना पूर्वभवना धार्मिक सस्कारो घणा तीव्र होवा जोइए पूर्वभवना सस्कार विना श्रुतधर्म अने चारित्र धर्मपर रग लागतो नथी, तेमज अध्यात्मज्ञान पर रग लागवो पण तो अत्यन्त दुर्लभ वात छे तेओने सर्वनी प्राप्ति थइ माटे तेमना आत्माने नमस्कार थाओ

श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना रचित ग्रन्थोनो सार

श्रीमद् देवचन्द्रजी उपाध्याये आगमोमाथी सारमासार तत्त्व के जे द्रव्यानुयोग कहेवाय छे तेनो सार भाग खेंचीने ग्रन्थोनी रचना करी छे द्रव्यानुयोगज्ञान, अध्यात्मज्ञान, शान्त रस अने वैराग्यरस तो तेओना ग्रन्थोमाथी ज्या त्या नीतर्या करे छे तेमना ग्रन्थोरूपी सरोवरो खरेखर तत्त्वज्ञानथी छलकाइ जाय छे तेमना बनावेला ग्रन्थो पैकी आगमसार, नयचक्र अने विचारसार ए त्रण ग्रन्थो तो खास तत्त्वज्ञानथी भरेला छे ए त्रण ग्रन्थोनो गुरुगम पूर्वक अभ्यास करवाथी सर्व आगमोमा प्रवेश थाय छे अने सर्व आगमोनो सार पामी शकाय छे अनतज्ञानसागरनो पार नथी परतु तेमा प्रवेश थवा माटे ए त्रण ग्रन्थो घणा उपयोगी छे प्रश्नोत्तर नामनो तेमनो ग्रन्थ खरेखर अनुभवज्ञानथी भरपूर छे तेथी मननीय छे अनेक जैनशास्त्रो वाच्या बाद प्रश्नोत्तर ग्रन्थमा करेला प्रश्नोना उत्तरार्थनो अनुभव थइ शके तेम छे श्रीमद्‌ना गच्छोनी

क्रिया वावतनी तकरारो सवधी प्रश्न के उत्तर नथी तेथी सर्वे गच्छना जैनो माटे प्रश्नोत्तर ग्रन्थनी उपयोगिता एक-सरखी रीते सिद्ध थरे छे वाचको जो स्थिर चित्तथी प्रश्नोत्तर ग्रन्थनो अभ्यास करशे तो तेओ तत्त्वज्ञानमा उडा उतरी शकशे अध्यात्मज्ञानमा उडा उतरवा माटे श्री ज्ञानसार ग्रन्थ पर रचेली ज्ञानमजरी टीका अपूर्व छे आत्मज्ञान सवधी जैनोमा भगवद्गीतानाथी पण कोइ महान् सत्यथी भरेलो ग्रन्थ होय तो ज्ञानसार ग्रन्थ छे तेना पर श्रीमदे टीका रचीने पोताना अध्यात्मज्ञान सवधी विचारोने जीवता मूकी गया छे अर्वाचीनकालमा ज्ञानसारनी महत्ता, उपयोगिता सर्वत्र प्रचार पामी छे जैनोना सर्वे फीरकाओमा ज्ञानसार ग्रन्थ वचाय छे अध्यात्मज्ञानीओनु ज्ञानसारग्रन्थ खरेखर आनदमय हृदय छे तेना पर टीका रचीने श्रीमदे ज्ञानसारनी महत्तामा वृद्धिनो प्रकाश पाड्यो छे श्रीमद् उपाध्याय शिरोमणि यशोविजयजी उपाध्यायना छेल्लामा छेल्लो अध्यात्म जीवनरसनो झरो जेमा वह्यो छे ते ग्रन्थ खरेखर ज्ञानसार छे अने श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजनी छेल्ली जीदगीनो अध्यात्म ज्ञानरसनो जीवतो झरो जेमा वह्यो छे ते टीका खरेखर ज्ञानसार परनी ज्ञानमजरी टीका छे पछी तेमा अध्यात्मानन्दरस मीठाश सवधी शु पुच्छवु सर्वे फीरकाना जैनो एकी अवाजे ज्ञानसार अने ज्ञानमजरीनी सुगधी माटे माथु धुणावी प्रशसा करी नाचे कुदे छे सस्कृत भाषामां ज्ञानमजरी टीका छे तेमा शब्द पाडित्य करता भाव घणो भरेलो छे ते वाचकोने सहेजे समजाशे श्रीमद्नी रचित चोवीशीमा ज्ञान अने भक्तिनो रस उल्काइ जाय छे

तेमना स्तवनोने दरेक गच्छवाळा मुखे करे छे अने प्रभुनी प्रतिमा आगळ गाय छे वीशमी सदीमा गच्छकदाग्रहोतुं ममत्व धीमे धीमे विलय थतु जाय छे अने जे कोई गच्छनी मारामारी करे छे तेना तरफ जैनो दयानी लागणीथी देखे छे देवचन्द्र चोवीशीनो जैनो अभ्यास करे छे तेमना सर्व ग्रन्थोनो अभ्यास करनार कोई पण मनुष्य पक्को जैन बनी शके छे अने ते गाडरीया प्रवाहमाथी मुक्त थई ज्ञानप्रवाह तरफ वळे,छे तेमना ग्रन्थोमा षड्द्रव्य, नवतत्त्व, कर्मव्याख्या, सातनय, सप्तभगी, अनेकपक्ष, आगम व्याख्यान, आत्मतत्त्व-स्वरूप, वगेरे सर्व बाबतोनु विवेचन करवामा आव्यु छे एक-दर रीते कहीए तो तेमना ग्रन्थोमा ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, उपासनायोग, वगेरे सर्व योगोनु स्वरुप आव्यु छे अने तेथी तेमना ग्रन्थो खरेखर वाचकोपर सारी असर कर्या विना रहेता नथी तेओ सनातन जैन मार्गोपासक हता तेमना ग्रन्थो एकदर रीतिए आगमो, प्रकरणो अने पूर्वाचार्योना ग्रन्थोने अनुसरीने रचायला छे तेथी तेओ पूर्व परपराना मार्गे गति करीने जैनधर्म प्रवर्तक हता तेमणे जिनेश्वर प्रतिमाने पुष्प चढाववाना पाठोने आगमना आधारे दर्शाव्या छे तेमा खूबी ए छे के तेमणे भगजनी समतोलता खोइ नथी तेमना शब्दोमा मधुरता, स्नेहता अने आकर्षता छे तेमणे पोताना ग्रन्थोमा असभ्य शब्दो वगेरेथी कठोरता आववा दीधी नथी तेमना हृदयमा शु चारित्र हतु ते तेमना ग्रन्थो बतावी आपे छे तेमणे ग्रन्थो रचवामा पाडित्यनु अभिमान देखाय एवो एके शब्द वापर्यो नथी - लोकोने जैन-धर्मना तत्त्वोने केम सरल रीते बोध थाय एज दृष्टि, ध्यानमा

रासीने ग्रन्थो लख्या छे तेथी तेमा तेमणे शब्दलालित्य पाण्डित्य के प्रौढता तरफ लक्ष ज दीधु नथी जैनधर्मनु तत्त्वज्ञान शु छे तेनी दिशा देखाडी होय वा तेनी झाखी करावी होय तो तेमना ग्रन्थोनो गुरुगम पूर्वक अभ्यास करवानी जरुर छे तेमना बनावेला विचारसार ग्रन्थमा आगमोमा आवेली सर्व बाबतोने अनुक्रमे गोठवी गणावी छे तेथी ते धर्मग्रन्थ वगेरेमा आवेला विषयो उपरात घणा विषयोथी भरपूर छे पाकेली केरीनो कोई रस काढी छे तेवी रीते तेमणे जैन-शास्त्रोमाथी रस काढीने आगमसार, नयचक्र, विचारसार वगेरे ग्रन्थो रच्या छे पहेला भागमा अने द्वितीय भागमा आवेला ग्रन्थोने वाचको जो सायत वाची जशे तो पछी अमारु लखवु व्याजबी छे एम गुणानुरागी सज्जनोने बराबर समजाशे जैनधर्म तत्त्वज्ञानथी भरेला तेमना ग्रन्थोनी जेटली प्रशसा करीए तेटली न्यून छे तेमा एकदर रीते जैनशास्त्रोनो प्राय घणो सार आवी गयो छे

श्रीमद् देवचद्रजीनी सस्कृत भाषा तथा गुर्जर भाषानी विद्वत्ता

श्रीमद् देवचद्रजी महाराजे सस्कृत भाषामा अने गुर्जर भाषामा जे जे ग्रन्थो लख्या छे तेथी तेमनी भाषा विद्वत्ता केवा प्रकारनी हती तेनो वाचकोने–विद्वानोने सहेजे ख्याल आवी शके तेम छे बाळ जीवोने समजाववा माटे तेमणे सस्कृत भाषामा बहु सरलताए लखाण कर्यु छे जेम बने तेम भाषानी क्लिष्टता, प्रौढता दुरवगाहता थवा दीधी नथी द्रव्यानुयोगना विषयमा सामान्य सस्कृत भाषा जाणनाराओ

पण रस लेइ शके तेवो प्रयत्न करेलो देखाय छे द्रव्यानु योगना ग्रन्थो रचवामा पूर्वाचार्योए पण क्लिष्टता वापरी नथी तेथी तेओना ग्रन्थोमा बाळ जीवोने पण सहेजे प्रवेश थइ शके छे तेथी तेमणे द्रव्यानुयोगना ग्रन्थोमा तेओनी शैलीन अनुकरण कर्यु छे ज्ञानमजरी टीका विचारसार टीकादियी तेमणे सस्कृत भाषामा ग्रन्थो रचवा माटे शुभे यथा शक्ति यतनोयनी प्रवृत्ति करी जैनकोमनी भारे सेवा उठावी छे, अने सस्कृत साहित्यनी वृद्धि करी छे अढारमा सैकामा थएल वाचक शिरोमणि गीतार्थ यशोविजयजी उपाध्याय तथा श्रीमान् विनय विजयजी उपाध्याय, श्रीमान् मानविजयजी उपाध्याय, वगेरे सस्कृत भाषाना महान् पडितोनु अनुकरण करीने तेमणे यथाशक्ति प्रवृत्ति करी छे केटलाक आधुनिक सस्कृत भाषाज्ञमुनिवरोनो एवो मत छे के श्रीमद् देवचन्द्रजी सस्कृत भाषाना प्रौढ विद्वान नहोता जमो तेमना विचारोमा सुधारो एटलो मूकीए छीए के–श्रीमदे द्रव्यानुयोगना गहन विषयोने सादी सस्कृत भाषामा बाल्जीवोने समजाववा पर खास लक्ष्य दीधु छे तेथी तेओए प्रौढ सस्कृत भाषा वापरी नथी, तेमज भाषाद्वारा विद्वत्ता देखाडवा तरफ तेमनु बिल्कुल लक्ष्य नहोतु आत्मज्ञानिमहात्माओ भाषाने शणगार सजाववा तरफ लक्ष्य देता नथी, तेओ तो भाषा द्वारा हृदयनो आत्मिक भाव जणावे छे कविमा अने ज्ञानीभक्तमा भाषाना शणगार परत्वे तफावत रह्या करे छे कवि भाषाने शणगार सजाववानी उपासना करे छे अने ज्ञानी भावरसना भोगी होवाथी ते पोतानु वक्तव्य सादी भाषामा जणावी शके छे पोताना विचारोने बाळको पण समजे

एवी सादी भाषामा अवतारवा तरफ भक्तोनु स्वाभाविक लक्ष्य रहे छे श्रीमद् देवचद्र महाराज ज्ञानी भक्त हता, तेथी तेमनी पासेथी संस्कृत प्रौढ भाषामा केटलाक आधुनिक विद्वानोनी दृष्टि प्रमाणे बनेला ग्रन्थोनी आशा राखी शकाय नहीं ते बनवा योग्य छे तेमना ग्रन्थोने पाछळथी शोधवामा नहीं आवेला होवाथी तथा अशुद्धिमा वृद्धि करनार लहिया ओ पासे लखावेला होवाथी तेनी शुद्धि करवामा प्रयास पडे ते स्वाभाविक छे अने तेवो प्रयास थता पण जे जे अशुद्धिओ रही होय ते बीजी वखते सुधारीने छपाववानी जरुर छे संस्कृत भाषाना ग्रन्थोनी पेठे तेमणे प्राकृत भाषामा पण विचारसारादि ग्रन्थो रच्या छे तेमनी प्राकृत भाषा पण सरल अने सुगम अवबोधाय पठी वाचको अनुभव करता सहेजे समजी शकशे संस्कृत अने प्राकृतनी पेठे गुर्जर भाषामा तेमणे ग्रन्थो रच्या छे गुर्जर भाषापर तेमनो सारो काबु हतो द्रव्यानुयोगना गहन विषयोने तेमणे चोवीशी, वीशी वगेरे पद्य ग्रन्थोमा सारी रीते गुथ्या छे के जे विषयो पहेला गुर्जर भाषामा कोइए गुथ्या नहोता श्रीमदे चोवीशीपर जाते टबो भर्यो छे अने तेथी तेमणे जेनकोम पर द्रव्यानुयोगना ज्ञाननो सरलताथी लाभ आपवा माटे घणो उपकार कर्यो छे गति करता स्खलन थाय ए स्वाभाविक नियम छे ते न्याये श्रीमद्ना संस्कृत ग्रन्थोमा भाषा दोष रही गयो होय तो तेमना आशयो अने उपकारोने ध्यानमा लेइ विद्वानो क्षतव्य गणे एमा कइ आश्चर्य नथी दोष दृष्टिथी जोता ज्या त्या दोषो देखाय छे अने गुणदृष्टिथी देखता ज्या त्या गुणो नजरे आवे छे सज्जनो गुणोने देखे

छे ज्ञानियोनी प्रवृत्ति खरेखर सज्जनोना लाभार्थे होय छे ते प्रमाणे श्रीमद्नी ग्रन्थ रचनानी प्रवृत्तिपर लक्ष्य राखीने तेमनी भाषा विद्वत्ता सवधी लक्ष्य धारतु जोइए आत्मार्थीओ स्वाभाविक धर्म पर लक्ष्य राखे छे श्रीमदे गुर्जेर भाषामा गद्यपद्य ग्रन्थो रचीने भाषा ज्ञाननी विद्वत्तानी पण महत्ता खरेखर जनसमाज आगळ जणावी आपी छे वाचको भाषानी दृष्टिए पण तेओना ग्रन्थोमाथी घणो लाभ उठावी शकशे सस्कृत, प्राकृत अने गुर्जरभाषामा रचायला तेओना ग्रन्थोमाथी सज्जनो घणो लाभ उठावी शकशे सस्कृत प्राकृत अने गुर्जरभाषामा ग्रन्थो रचीने विश्वनी भाषा साहित्यनी वृद्धि करवामा पोतानी तरफथी तेमणे सारो फाळो आप्यो छे, तेथी तेमनी सेवा प्रवृत्ति तरफ माननी लागणीथी जैनेतर कोम पण देखे एमा कइ आश्चर्य नथी अने जेनो तेमने पूज्य उपकार दृष्टिथी देखे अने मध्यस्थ मनुष्यो तथा जिज्ञासुओ तेमना ग्रन्थोमाथी घणो सार खेंची शके ए बनवा योग्य छे

श्रीमद् देवचद्रजीनी कवित्वशक्ति

श्रीमदे कवित्वशक्तिनो भक्तिमा व्यय कर्यो छे भक्त लोको कवित्वशक्तिने भक्तिना रूपमा परिणमावे छे तेओ अनेक रुपकोथी प्रभुनु वर्णन करे छे श्रीमदे उपमालकारोने प्रभुभक्तिना रूपकोमा परिणमाव्या छे तेमणे आध्यात्मिक दृष्टिए मेघने प्रभुनी रुपकभक्तिमा परिणमाव्यो छे ते नीचे मुजब—

श्रीनमिजिनवर सेव, घनाघन उनम्यो रे ॥ घ० ॥
दीठा मिथ्या रौरव, भविक चित्तथी गम्यो रे ॥ भ० ॥

शुचि आचरणा रीति ते, अभ्र वधे वडा रे ॥ अ० ॥
आतम परिणति शुद्ध, ते वीज झबूकडा रे ॥ बी० ॥१॥
वाजे वायु, सुवायु, ते पावन भावना रे ॥ पा० ॥
इन्द्र धनुष्य त्रिकयोग, ते भक्ति एकमना रे ॥ भ० ॥
निर्मल प्रभुस्तव घोष, ज्यु ध्वनि घन गर्जना रे ॥ ध्व० ॥
तृष्णा ग्रीष्मकाल, ते तापनी तर्जना रे ॥ ता० ॥२॥
शुभ लेश्यानी आलि, ते वग पक्ति बनी रे ॥ ब० ॥
श्रणि सरोवर हस, वसे शुचि गुणमुनि रे ॥ व० ॥
चउगति मारग बन्ध, भविक निजवर रह्या रे ॥ भ० ॥
चेतन समता सग, रगमें उमह्या रे ॥ र० ॥३॥
सम्यग्दृष्टि मोर, तिहा हरखे घणु रे ॥ ति० ॥
देखी अद्भुत रूप, परम जिनवरतणु रे ॥ प० ॥
प्रभु गुणनो उपदेश, ते जलधारा वही रे ॥ ज० ॥
धमरुचि चित्त भूमि, माहे निश्चल रही रे ॥ मा० ॥४॥
चातक श्रमण समूह, करे तव पारणो रे ॥ क० ॥
अनुभव रस आस्वाद, सकल दु ख वारणो रे ॥ स० ॥
अशुभाचार निवारण, तृण अकूरता रे ॥ तृण० ॥
विरतितणा परिणाम, ते बीजनी पूरता रे ॥ बी० ॥५॥
पञ्च महाव्रत धान्य-तणा कर्षण वध्या रे ॥ त० ॥
साध्यभाव निज थापी, साधनताए सध्या रे ॥ सा० ॥
क्षायिक दर्शन ज्ञान, चरण गुण उपन्या रे ॥ च० ॥
आदिक बहुगुण शस्य, आतम घर नीपना रे ॥ आ० ॥६॥
प्रभु दर्शन महामेह-तणे प्रवेशमें रे ॥ ता० ॥
परमानन्द सुभक्ष, थयो मुज देशमें रे ॥ थ० ॥

देवचन्द्र जिनचन्द्र-तणो अनुभव करो रे ॥ त० ॥
सादि अनन्तोकाल, आतम सुख अनुसरो रे ॥ आ० ॥७॥

श्रीमद्नी उपमा आपवानी आध्यात्मिक काव्यशक्ति बहु रसस छे बाह्य भावोने आध्यात्मिक रुपमा गोठवीने जन समाजने ते तरफ वाळवा तेमणे काव्यशक्तिनो धर्ममार्गमा सदुपयोग कर्यो छे श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय, श्रीमद् विनयविजयजी उपाध्याय वगेरेनी काव्यशक्ति अत्यन्त प्रशस्य छे श्रीमदे पण आलंकारिक काव्यशक्तिनो आध्यात्मिक भाव प्रगट करी दर्शाव्यो छे तेमनो द्रव्यानुयोगनो विषय होवाथी आलंकारिक काव्यशक्तिनो घणो उपयोग थएलो जणातो नथी, तोपण जैन समाज आगळ भक्ति स्तवनरुपे जेटली प्रसादी मळी छे तेथी पूर्ण सन्तोष मळी शके तेम छे तेमणे आ स्तवनमा हार्दिक विषयने सारी रीते चर्चीने अध्यात्मज्ञाननो प्रकाश कर्यो छे माटे तेमनी जेटली स्तवना करीए तेटली न्यून छे श्रीमद् देवचन्द्रजीना आत्मामा गुणोनो सुमिश्र-भाव थयो हतो ते तेमणे सहजोद्गारथी आ स्तवनमा जणावी दीधु छे श्रीमद् द्रव्यानयोगना सर्व विषयोमा कुशळ हता आत्मा अने परमात्माना गुणोमा आध्यात्मिक रूपकोथी अंतरमा परिणाम पामता हता अने तेथी आन्तर शुद्धजीवन अप्रमत्त दशारूप हतु ते तेमना आध्यात्मिक भावथी स्पष्ट जणाय छे

ते समयनी अने हालना समयनी परिस्थितिनो विवेक

श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना समयमा जैनतत्त्वज्ञान प्रचा-रनी न्यूनता हती यतियोमा वैराग्य त्यागमा शैथिल्य प्रचार

पामतु हतु सवेगी साधुओ पण श्रीपूज्य आचार्योनी आज्ञा प्रमाणे चोमासु करवु वगेरे प्रवृत्ति करीने तेमनी आज्ञामा रहेता हता ते समयमा ज्ञान मार्ग करता क्रिया मार्गमा गाडरीया प्रवाहनु ज्या त्या जैनोमा प्राधान्य प्रवर्ततु हतु अध्यात्मज्ञान, तत्त्वज्ञान जेवा विषयोमा साधुओ पण विशेष ज्ञानी नहोता तथा बहु जन सम्मत केटलाक आचार्यो वगेरेने जैनो जेटला प्रमाणमा मानता हता तेटला प्रमाणमा श्रीमद् देवचद्रजीने ओळखवा माटे जैनो लायक नहोता खरतर गच्छना आचार्यो, यतियो वगेरेनी साथे श्रीमद् देवचद्रजीनी विचार मान्यता मळती आवती होय तेम सर्वांशे जणातु नथी, छता तेओ उदार विचाराचारथी स्वपरगच्छीय साधुओनी साथे वर्तता हता तेओ श्वेत वस्त्रधारी हता ते जमानाना ते सुधारक सवेगी पक्षी साधुओने उत्तेजन आपनारा हता सर्व जैनोमा ऐक्यनु वातावरण फेलाववा तेमणे यथाशक्ति प्रयत्न कर्यो हतो परस्पर गच्छोनी क्रियामत भेदोथी उत्पन्न थती क्लेशनी उदीरणाने शमाववनार हता जैनोमा अनेक मतभेदथी थता क्लेशोथी जेनोनी पडती थाय छे, एवी दीर्घ दृष्टिथी तेमणे पोताना उद्गारो प्रगट कर्या छे श्रीमद् देवचद्र महाराजना समय करता हालना समय कइ विशेष सारो नथी ते वखतना तेमणे काढेला उद्गारो हालनी सदीने पण लागु पडे छे, छता हाल आजुबाजुना शुभ प्रगतिमद सयोगो घणा अनुकुल छे, फक्त ते प्रमाणे वर्तवनारा मुनियो विशेष प्रमाणमा प्रगटवानी जरुर छे श्रीमद् देवचद्र महाराजे पोताना ग्रन्थोमा अमुक खरतर गच्छना आचार्यना साम्राज्यमा ग्रन्थो लख्या एवु लख्यु नथी तेथी

तेओ ते वखतना खरतर गच्छीय पट्टधर आचार्य साथे पूर्ण सम्बंधी हता के नहीं ते विचारवा योग्य छे तेमणे आत्मानो शान्त रस अनुभव्यो हतो, धर्मप्रवृत्ति वाळा अने संसारप्रवृत्तियी विरुद्ध होवाथी तेओ निवृत्ति मार्गना योगी हता तेमना पण विरोधीओ हता छतां पण तेमना उत्तम विचारो जैनसमाजमां जल्दी प्रसर्या हता

श्रीमान् देवचन्द्रजी महाराजना ग्रन्थो परथी अने तेमना जीवनपरथी ग्रहवा योग्य शिक्षण

श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना ग्रन्थो अने तेमना चरित्र परथी प्रत्येक मनुष्ये शिक्षण ग्रहण करवु जोइए, एज आ लेखनो मूळ उद्देश छे तेमना ग्रन्थो अने चरित्र परथी आध्यात्मिक शक्तियो खीलववानी जरुर छे समानभाव अने तत्त्वज्ञाननी प्राप्ति करवा माटे तेमनु जीवन घणु उपयोगी छे जैन कोमे आत्मज्ञान तरफ वळवु जोइए अने व्यक्ति स्वातन्त्र्य तथा सत्स्वातन्त्र्य प्रगट करवु जोइए अध्यात्म ज्ञानती प्राप्ति विना विशाल विचारो अने मतसहिष्णुता प्रगटवानी नथी तेमनी पेठे व्यवहारनयनु अवलम्बन ग्रही प्रवृत्तिधर्म याने सेवाधर्म स्वीकारी कर्मयोगी बनवु जोइए श्राविकाओनी प्रगति करनार धार्मिक केळवणीनो प्रचार करवो जोइए जड क्रियावादी अने शुष्कज्ञानी न बनवु जोइए तेमनी पेठे पूर्व पुरुषोना विचाराचारोने मान आपी वर्तवु जोइए अने जे असत्य लागे तेनो त्याग करवो जोइए पण कदाग्रही न बनवु जोइए कर्मयोग अने ज्ञानयोग ए बन्नेने स्वीकारी स्याद्वादी बनवु जोइए साधुओए अने साध्वीओए वीशमी

सदीमा तेमनी पेठे प्रगति करवी जोइए गच्छना नामे नकामा क्लेशनी उदीरणा करनारा विवादो अने झघडाओ करीने जैन कोमनी शक्तियोनो नाश न करवो जोइए तेमनी पेठे उग्रविहारी बनवु जोइए अन्य गच्छीयोनी साथे मैत्री, प्रमोद, माध्यस्थ वगेरे भावनाओने आचारमा मूकी वर्तवु जोइए ज्ञानरुचि धारण करीने गाडरिया प्रवाहमा तणाता नव थवु जोइए भिन्न भिन्न गच्छीय साधुओमा परस्पर गच्छक्रियादि मतभेद छता जैन कोमना सार्वजनिक प्रगतिकर कार्योमा एक्य धारण करवु जोइए समदृष्टिनी साथे परस्पर समजनां बनवु जोइए गमे ते गच्छना साधु पासेथी ज्ञान ग्रहण करवु अने सत्य ते ते मारु एवो निश्चय करी प्रवर्तवु जोइए सर्व गच्छना साधुओनो सव एक स्थाने मेगो करीने जैन कोमनी अस्तिता रहे एवा उपायो हस्तमा धरवा जोइए आतरजीवन विकासथवामा आत्मभोग आपवानु शिक्षण ग्रहवु जोइए तेमनी पेठे वक्ता, लेखक अने ज्ञानी बनवु जोइए जैन कोमना कोइ पण फिरकानी निन्दा न करवी जोइए अने सर्व फिरकाओनी साथे मैत्रीभाव धारण करी मळती बाबतोमा ऐक्य धारी कर्तव्य कार्यो करवा जोइए हवे तो गृहस्थ जैनोए दृष्टिरागनो त्याग करीने जैनोनी सख्या वधे अने जैन धर्मनो फेलावो थाय तेवा उपायोमा भोग आपवो जोइए जैन तत्त्वज्ञाननो फेलावो थाय एवा उपायो लेवानो समय जो चूकवामा आवशे तो जैन कोमनी अस्तितामा हरकत आववानो समय छे माटे सकल सघे समयनी किमत आकी सयोगोने अनुकूल करी लेवा जोइए

उपसहार

प्रमाणे श्रीमद् देवचन्द्रजी उपाध्यायना ग्रन्थो अने
रेत सबधी यत्किंचित् प्रस्तावना यथाशक्ति जैन
गळ रजु करीने जैन सघनी सेवा करता छद्मस्थ
कइ दोष वगेरे थया होय तेनी जैन सघ आगळ
। छु मिथ्या दुष्कृत दउ छु जैन सघनी सेवा
कइ स्खलन थाय ते जैन सघे क्षमवु जोइए
गगच्छीय होवा छता आत्मभावे-जैनधर्मे समान
द् देवचन्द्रजीना ग्रन्थोनी प्रस्तावना लखी छे गमे
मनुष्य पोते जैन होवाथी जैनधर्मनी समान
रना करीने मुक्तिपद पामे छे डाळा, पाखडा,
ञगवाना जुदा जुदा मतभेदोमा मध्यस्थ बनी शुक्षमा
वहता सज्जावनरस भणी लक्ष्य आपवानी जरुर छे सर्व जैनोना
हृदयमा जैनदेव एक छे तो पछी भेदभावथी क्लेश करवानी
कइ जरुर नथी लेखकने (म्हने बुद्धिसागरने) व्यवहारथी
तपागच्छीयमान्यतानी श्रद्धा छे अने तपागच्छनी समाचारी
मान्य छे परतु तेथी अन्य गच्छोनी समाचारी पर द्वेष नथी
हु मारी तपागच्छनी साधु क्रियादिनी समाचारीमा व्यवहारे वर्ती
अने निश्चयनयथी समभावे शुद्धात्ममा रमी एकाग्रताथी लीनता
पामी मोक्ष पामु तेम अन्य गच्छीय जैनो पण तेमना गच्छनी
समाचारीने मननी एकाग्रता, लीनता करवा साथे निश्चयनयथी
समभावे रमे तो मोक्ष पामे एवी मारी सापेक्षनययुक्त मान्यता
छे जैनागमो, प्रकरणो, पूर्वाचार्योना ग्रन्थो, परपरा अने
समाचारी वगेरेमा सापेक्षपणे म्हने पूर्ण श्रद्धा छे अस-

रुपयोगो खरखर मुक्ति पामवाने माटे हेतुओ छे सापेक्षपणे गमे ते योगनी आराधना करता मुक्ति छे एवी मारी श्रद्धा छे अने ए प्रमाणे उपदेश छे, लेशकने सम्यग्दृष्टिथी जैनागमो अने मिथ्याशास्त्रो, सम्यक्त्वरूपे परिणमे छे एवी नन्दिसूत्रनी मान्यता प्रमाणे विचारप्रवृत्ति छे जैनागमोनु ज्ञान प्राप्त करीने व्यवहारनयथी वर्तवामा आवे अने निश्चयने हृदयमा धारवामा आवे तोज मुक्तिनी प्राप्ति थाय छे एवो उपदेश सत्य छे व्यवहारनयनो उच्छेद करता जैन शासन अने धर्मनो उच्छेद थशे माटे कोइए धर्म व्यवहारनी उत्थापना न करवी जोइए साध्यबिंदु लक्ष्यमा राखीने सापेक्षपणे सानन्दोत्साहे धर्मनी आराधना करवी जोइए श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना ग्रन्थो सुधारता घणी शुद्ध प्रतियो मळी नथी विचारसार माटे तो बीजी प्रतियो मळी नथी, तेथी हजी तेमा घणी अशुद्धिओ रही गइ छे ते साधन सामग्री मळता बीजी आवृत्तिमा सुधारो करी शकाशे, यथा शक्ति मनोने सुधारवा प्रयत्न कर्यो छे, छता जे कइ स्खलना रही गइ होय तेने अन्य पंडितो प्रसगोपात्त सुधारशे एवी प्रार्थना छे जैन ग्रन्थो खरेखर जैन सघनी मील्कत छे तेमा सुधारवा यथाशक्ति मे भाग लीधो छे अने अन्य सज्जनो पण सुधारवा भाग लेशे एवी प्रार्थना छे श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना पुस्तको छपाववामा पादरावासी सुश्रावक वकील मोहनलाल हिमचंद तनमनधनथी प्रयत्न कर्यो छे, तेमणे सर्व ग्रन्थो भेगा करवामा अनेक पत्रो लख्या, तथा अनेक स्थळे गमन करी अनेक महाशयो पासेथी ग्रन्थो मेळव्या, भडारोना मालीको पासे जाते जइ ग्रन्थो मेळव्या, अनेक मुनियो अने श्रावको साथे पत्र व्यवहार कर्यो, श्रीमद्नु

जीवनचरित्र शोधवा तेमणे साधुओ साध्वीओ पर अनेक पत्रो लख्या श्रीमद्ना ग्रन्थो छपाववामा ऊ सात वर्ष सुधी अखड अथाग प्रयत्न सेव्यो तेथी तेमने धर्मलाभपूर्वक अनेकश धन्यवाद आपवामा आवे छे श्रीमद्ना जे भागो उपार्जीने तेमणे जैनशासननी अने जैनोनी सारी सेवा बजावी छे श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना जे भागो छपाववामा मुख्यनाय तेमनो भाग छे एम जैन कोमने जणाववा माटे वे शब्दो अत्र लखवामा आव्या छे डहेलाना उपाश्रयमायी श्रीमद् देवचन्द्रजीना पुस्तकोने काढी आपनार झवेरी भोगीलाल ताराचदने धन्यवाद घटे छे बालुचर (मुर्शिदाबाद निवासी) झवेरी अमरचन्द्रजी बोथरा श्रीमद्ना पुस्तकोनी यादी आपवामा तथा अन्य पुस्तको मोकली आपवामा घणी साहाय्य करी छे पादरा निवासी सुश्रावक माणेकलाल, तथा प्रेमचदभाइ तथा मगलभाइ लक्ष्मीचद वगेरेए पुस्तको छपाववामा साहाय्य करी छे माटे तेओने धन्यवाद घटे छे प्रवर्तक कान्तिविजयजी प लाभविजयजी प दानविजयजी वगेरेने पुस्तको आपवा माटे धन्यवाद घटे छे श्रीमद्ना ग्रन्थो जैन सघना कल्याण माटे थाओ, एम इच्छी प्रस्तावना समाप्त करवामा आवे छे अर्हं ॐ शान्ति मु पादरा–नवपुरी जैन उपाश्रय ज्ञानमदिर सवत १९७५ आश्विन शुक्ल द्वितीया

तपागच्छीय सागरशाखीय जैनाचार्य बुद्धिसागरसूरिणा प्रस्तावना लिखिता

जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरि ग्रन्थमाळामा प्रकट थयेला ग्रन्थो तथा तेमना अन्यत्र प्रकट थयेला ग्रन्थानी यादी.

	पृष्ट संख्या	किंमत
१ भजन संग्रह भाग १ लो	२००	०-८
१ क अध्यात्म व्याख्यानमाला	२०६	०-४
२ भजन संग्रह भाग २ जो	३३६	०-८
३ भजन संग्रह भाग ३ जो	२१९	०-८
४ समाधिशतक (अमदावादवाळा शेठ जगाभाई दलपतभाई)	३४०	०-८
५ अनुभव पचिशी	२४८	०-८
६ आत्मप्रदीप	३१५	०-८
७ भजन संग्रह भाग ४ थो	३०४	०-८
८ परमात्म दर्शन	४३२	०-१२
९ परमात्म ज्योति	५००	०-१२
१० तत्त्वबिन्दु	२३०	०-४
११ गुणानुरागकुलक विवेचन (आ २)	२४	०-१
१२ भजन संग्रह भाग ५ मो	१९०	०-६
१३ तीर्थयात्रानु विमान (आ २)	६४	०-१
१४ अध्यात्म भजन संग्रह	१९०	०-६
१५ गुरु बोध	१७२	०-४
१६ तत्त्वज्ञानदीपिका	१२४	०-६
१७ गहुंलीसंग्रह	११२	०-३
१८ श्रावक धर्मस्वरूप भाग १ लो (आ ३)	४०	०-१
१९ श्रावक धर्मस्वरूप भाग २ जो (आ ३)	४०	०-१
२० भजनपदसंग्रह भाग ६ ठो	२०८	०-१२

२१	वचनामृत (लघु) वकील मोहनलाल हिमचद तरफथी भेट		
२२	वचनामृत (मोटु)	३०८	०–१४
२३	योगदीपक	२६८	०–१४
२४	जैन ऐतिहासिक रासमाळा	४०८	१–०
२५	आनन्दघनपद भावार्थसग्रह	८०८	२–०
२६	अध्यात्मशान्ति (आ २)	१३२	०– ३
२७	भजनपद काव्यसग्रह भाग ७ मो	१५६	०– ८
२८	जैनधर्मनी प्राचीन अने अर्वाचीन स्थिति	९६	०– २
२९	कुमारपाल चरित्र (हिन्दी)	२८७	०– ६
३०–३४	सुखसागर गुरु गीता श्री मयासागरजी चरित्र श्री नेमिसागरजी चरित्र रविसागरजी च० सुखसागरजी च०	३००	०– ४
३५	षड्द्रव्यविचार (द्वितीयावृत्ति) [वकील मो हि पादरा]	२४०	०– ४
३६	विजापुर वृत्तात	९०	०– ४
३७	साबरमती काव्य (गुजराती)	१९६	०– ६
३८	प्रतिज्ञापालन	११०	०– ५
३९–४०–४१	जैनगच्छमतप्रबन्ध सघप्रगति जैनगीता	६१५	१– ०
४२	जैन धातुप्रतिमा लेखसग्रह	३२४	१– ०
४३	मित्रमैत्री	१६४	०– ८
४४	शिष्योपनिषद्	५७	०– २
४५	जैनोपनिषद्	४८	०– ८
४६–४७	धार्मिक गद्यसग्रह तथा पत्रसदुपदेश भाग १ लो	९७६	३–०
४८	भजन सग्रह भाग ८ मो पद्यसग्रह	९०४	३–०

४९	देवचन्द्र प्रथम भाग	१०२८	२–०
५०	कर्मयोग	१०१२	३–०
५१	आत्मतत्त्वदर्शन	११२	०– ८
५२	भारतसहकारशिक्षण	१६८	०–१०
५३	श्रीमद् देवचन्द्र भाग बीजो	१२००	३– ८
५४	कर्मप्रकृति (भाषान्तर छपाय छे)		
५५	एकदर		

श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिकृत अन्यत्र छपायला पुस्तको

१ श्री रविसागरजी चरित्र अने शोकविनाशक ग्रन्थ (वडोदरा केशवलाल लालचंद, मामानीपोळ)

२ आत्मशक्तिप्रकाश (गुजराती) समाधिशतकना भेगो छपायो छे

३ आत्मदर्शन गीता (संस्कृत मूळ श्लोक १८२) आत्मप्रदीप भेगो छपायो छे

४ ज्ञानदीपिका (गुजराती) भजनसंग्रह पांचमा भाग भेगो छपायो छे–छपायो छे

५ पूजासंग्रह (अष्टप्रकारी अने वास्तुक पूजा) साणंद–बुद्धिसागर समाज ०–२–०

६ श्री यशोविजय निबन्ध (साहित्य परिषद्–वडोदरा) ०–४–०

७ ध्यानविचार (भावनगर–आत्मानन्द सभा)

८ जैन धर्म अने ख्रीस्ति धर्मनो मुकाबलो (धी जैन फ्रेन्डली सोसाइटी मुंबाइ)

९ चिंतामणि (साणंद)

१० कन्याविक्रय निषेध (साणंद)

११ तत्त्वविचार } ज्ञानप्रसारक मंडळ मुंबाई–झवेरी बजार
१२ सत्यस्वरूप }

१३ आत्मप्रकाश (माणसाबाळा शेठ वीरचंदभाइ कृष्णाजी) मेतळे छे

१४ चेतनशक्ति (भजन भाग त्रीजामा छपायो छे)

१५ वर्तमानकाल सुधारो (भजन भाग त्रीजामा छपायो छे)
१६ परमब्रह्म निराकरण (भजनसंग्रह भाग ४ मा)
१७ बुद्धिप्रकाश गायनसंग्रह भाग १ लो (मणिलाल वाडीलाल साणंद)
१८ बुद्धिप्रकाश गायन संग्रह भाग २ जो (अमदावाद सभन्न जिन मंडळ)
१९ श्रीमंत सरकार सयाजीराव गायकवाडनी आगळ आपेलु भाषण
२० आनन्दमौक्तिक प्रस्तावना (शत्रुंजय रासनी प्रस्तावना) [शु दे ला फ पु उ]
२१ षोडशक प्रकरणनी प्रस्तावना (देवचंद ला पुस्तोद्धार फंड)
२२ गुरुगीता (संस्कृत) [छपाइ गइ छे]
२३ श्रीमद् देवचन्द्र प्रस्तावना (श्रीमद् देवचन्द्र बीजा भागमां)
२४ चोवीशी (साणंद बुद्धिसागर समाज)
२५ अध्यात्मगीता
२६ आत्मस्वरुप (विजापुर भ)
२७ तत्त्वपरीक्षा विचार
२८ गुरु माहात्म्य (अमदावाद आंबलीपोळ ज्ञानभंडारमां)

(२५–२८) नहीं छपायला

उपरना ग्रन्थो मळवाना ठेकाणा :—

पादरा—वकील मोहनलाल हिमचंदभाइ
मुंबाइ—अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ चंपागली हा शेठ ल्ल्लुभाइ करमचंद दलाल
" मेघजी हीरजी बुकसेलर—पायधुनी
पुना—शेठ वीरचंदभाइ कृष्णाजी
विजापुर (गुजरात)—जैन मित्रमंडळ हा शा मोहनभाइ जेशींगभाइ
साणंद (गुजरात)—शा आत्माराम खेमचंद

श्रीदेवचन्द्रकृत विचारसारग्रन्थस्य ॥

। टीका स्तवकश्च ।

नमियजिण गुणठाणे, मूलुत्तरबधुदयदीरणया।
सता जियगुणजोगो–, वओगलेसादुविहहेउ ॥१॥

टीका—श्रीनाभेयजिन नत्वा, शुद्धसिद्धाद्रिमडनम् ।
कल्याणमगलानाच, मूल सद्भावदेशकम् ॥ १ ॥
वर्धमान जिनाधीश, शुद्धस्याद्वादवादकम् ।
निर्विकल्पमहानद–रसानुभवपूरकम् ॥ २ ॥
वाचस्वशसमुद्भव, मुक्ताफलसनिभान् ।
गुरुन् स्मृत्वा गुणस्थानशतकाख्यस्य, वृत्तिरेषा वितन्यते ३॥

अथ शिष्टाचारपरिपालनाय प्रथममगलाभिधेयप्रतिपादनरूपा ॥गाथामाह॥ नमिअजिणइति, नत्वायोगोपयोगबहुमानपरिणत्या जिनवीतराग गुणस्थाने द्वारशतक वक्ष्ये, गुणा येनक्षयोपशमादिरूपास्तेषा स्थानानि गुणस्थानानि। तेषु एकवचन प्रत्येकत्वर यापनार्थं मिथ्यात्वस्य दोपरूपत्वेपिगुणस्थानत्वतुविपर्यस्तचेतनागुणाशस्यसर्वज्ञत्वाशन प्रारभ्य शेष गुणस्थानकाभिधायिका गाथामाह ॥ १ मिच्छे, २ सासण, ३ मीसे, ४ अविरय, ५ देसे, ६ पमत्त, ७ अपमत्ते, ८ नियट्टि, ९ अनियट्टि, १० सुहुम, ११ उवसम, १२ खीण, १३ सजोगि, १४ अजोगि, १६

गुणा । ११ । गुणस्थानानि तत्र सूचनात्सूत्रमिति न्यायात्पदैकदेशे पदसमुदायोपचाराद्वा इहैव गुणस्थानकनिर्देशोऽवसेयः १ तत्राद्यमि-थ्यादृष्टिगुणस्थान, २ सास्वादनसम्यग्दृष्टिगुणस्थान, ३ सम्यग्-मिथ्यादृष्टिगुणस्थान, ४ अविरतसम्यग्दृष्टिगुणस्थान, ५ देश-विरतिगुणस्थान, ६ प्रमत्तसंयतगुणस्थान, ७ अप्रमत्तसंयतगु-णस्थान, ८ अपूर्वकरणगुणस्थान, ९ अनिवृत्तिबादरसंपरायगुण-स्थान, १० सूक्ष्मसंपरायगुणस्थान, ११ उपशान्तकषायवीतराग-छद्मस्थगुणस्थान, १२ क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थगुणस्थान, १३ सयोगिकेवलिगुणस्थान १४ अयोगिकेवलिगुणस्थान, तत्रगुणा ज्ञानदर्शनचारित्ररूपा जीवस्वभावविशेषा स्थानपुनरत्रतेषांशुद्ध्यशु-द्धिप्रकर्षापकर्षकृत स्वरूपभेद तिष्ठत्यस्मिन्गुणाइतिकृत्वागुणानांस्थान-गुणस्थान, मिथ्या विपर्यस्तादृष्टिरर्हत्प्रणीतजीवाजीवादिवस्तुप्रतिप-त्तिर्यस्य भक्षितहृत्पूरपुरुषस्य सितेपीतप्रतिपत्तिवत्, स मिथ्यादृष्टिस्तस्य गुणस्थान ज्ञानादिगुणानामविशुद्धिप्रकर्षविशुद्ध्यपकर्षकृत स्वरूपवि-शेष मिथ्यादृष्टिगुणस्थान, ननुमिथ्यादृष्टिस्तत्कथंगुणस्थान तत्रनि-गोदावस्थायामपितथाभव्यक्तस्पर्शमात्रप्रतिपत्तिसद्भावात् अन्यथा-जीवत्वप्रसंगात्, यदागम सव्वजीवाणंपि अण अरकरस्सअणंतमो-भागो निच्चुग्घाडिओचिट्ठइ जइपुण सेसोवि आवरिज्जा तेणजीवोअ-जीवत्तणपावीज्जत्ति" तथाहि समुन्नतामनहुल्जीमूतपटलेन दिनकर-जनीकरतिरस्कारेऽपिनैकान्तेन तत्प्रभानाश संपद्यते, प्राणिप्रसिद्ध-दिनरजनीविभागाभावप्रसंगात्, उक्तंच सुट्ठुविमेहसमुदये होइपहा-चन्दसूराणमिति एवमिहापिप्रबलमिथ्यात्वोदयेपिकाचिद्विपर्यस्तादृष्टि-र्भवतीतितदपेक्षयामिथ्यादृष्टेरपिगुणस्थानसंभव । यद्येवकथमसौमि-थ्यादृष्टिरेवाशरयाविपर्यस्तत्वात्, नैवयतोभगवदर्हत्प्रणीत सकलमपि-द्वादशांगार्थमभिरोचयमानो यदि तद्भणितमेकमप्यक्षरं न रोचयति तदा-

नीमप्येपमिथ्यादृष्टिरेवोच्यते तस्य भगवति सर्वज्ञम पयनाशात्॥यदुक्तं॥ पयमरक्खरपिइक्क, जो न रोएइ सुत्तनिदिठ, सेसरोयतोविहु, मिच्छ दिट्ठीजमालिव्वेति॥ किंपुनर्भगवदर्हदभिहितसकलजाजीवादिवस्तु-तत्त्वनिकल्पति, अयमुपशमसम्यक्त्वलाभल्पणसादयति अपनय-तीत्यासादन, अनन्तानुबंधिकषायवेदन, अत्रपृषोदरादित्वाद्यशब्दलोप "कृद्बहुल" मितिकर्तर्यनट् सतिह्यस्मिन् परमानदरूपानन्तसुखफलदोनि-श्रेयसनरनीचमन औपशमिकसम्यक्त्वलाभो जघन्यन समयमात्रेणो-त्कर्षेन पड्विरावलिकाभिरपगच्छतीतिनिनन्तमहत्स्वादनेनवर्तनइतिसा-स्वादन सम्यगजिनपण्नादृष्टिर्जिनप्रणीतवस्तुप्रतिपत्तिर्यस्य स सम्यग् दृष्टि सासादनश्चासौसम्यग्दृष्टिश्चसासादनसम्यग्दृष्टिस्तस्यगुणस्थान सासादनसम्यग्दृष्टिगुणस्थान। तत्रसम्यक्त्वलक्षणरसास्वादनेनवर्त्तत-इतिसास्वादन यथाहि भुक्तक्षीरान्नविषय व्यलीकचित्त पुरुषस्तद्व-मनकाले क्षीरान्नरसमास्वादयति तथैवोपिमिथ्यात्वाभिमुखतयासम्य-क्त्वस्योपरिव्यलीकचित्त सम्यक्त्वमुद्रमन् तद्रसमास्वादयति तत स-श्चासौसम्यग्दृष्टिश्च तस्यगुणस्थानत सास्वादनसम्यगदृष्टिगुणस्थान। एतदेव भवति इहगम्भीरापारससारमध्य यासीनोजतुर्मिथ्यात्वमत्स्य-मनन्तान् पुद्गलपरावर्त्तान् अनन्तदु खलक्षणानवुभयकथमपि तथा भव्यत्वपरिपाकवशात् गिरिसरिदुपलघोलनाकल्पेनानाभोगनिर्वर्त्ति-तपथाप्रवृत्तिकरणेन कयणपरिणामोऽनेतिवचनादध्यवसायविशेषरूपे-णायुर्वर्जानिज्ञानावरणीयादिकर्माणि सर्वाण्यपिप ल्योपमासख्येयभा-ग यूनैकसागरकोटिस्थितिकानि करोति अत्रातरे जीवस्यकर्मजनितो-घनरागद्वेपपरिणाम कर्कशनिविडचिरमरूढगुपिलवक्रग्रन्थिवत्तद्दुर्भे-दोऽभिनपूर्वोग्रथिर्भवति, तदुक्तं, वीण्णि योवमित्तो, खवीयेइत्यतर मिजीवस्स, हवइहुअभिनपुवो, गंठीएवजिणाविंति॥१॥ गंठित्तिसुदु-ब्भेओ, कक्कडघणरूढिगूढगंथिव, जीवस्सकम्मजणिओ, घणरागदोस-

र्थियास्दम या अपियथाप्रवृत्तकरणेन क्
ऽन्ति, उक्तचावश्यकटीकाया ॥ अभ
करणनोग्रथिमासाद्य अर्हदादिरिभनिर्द्दर्श-
र्तमानस्य द्रपश्रुतसामायिकलाभोभव-
निरक्षिदेवमहात्मास्यपरमनिवृत्तिसुस
ामसरोनिशिनकुठारधारयेनपरमविशुध्या
ाय मिथ्यात्वस्थितेरन्तर्मुहूर्तमुदयक्षणा-
त्तिकरणलक्षणविशुद्धिजनितसामर्थ्यात्
देशवेश्यदलिकाभावरूपमन्तरकरणकरोति ।
ानिवृत्तिकरणानामपन्नम ।जागठीताप-
य । अनियट्टिकरणपुण । सम्मत्तपुरक्कडे-
ोत्ति ॥ ग्रथिसमतिनामनोभिदानस्येति,
ुरस्कृतयेनतस्मिन्नासन्नसम्यक्त्वेजीवेऽनि-
श्चान्तरकरणेकृतेसति तस्यमिथ्यात्वकर्मण
ाादवस्तनीप्रथमास्थितिरन्तर्मुहूर्तप्रमाणा।
ीशेषाद्वितीयास्थापना । । तत्रप्रथमस्थि-
ामिथ्यादृष्टिरेव, अन्तर्मुहूर्तेन पुनस्तस्याम-
यणौपशमिकसम्यक्त्वमाप्नोति । मिथ्या-
ाहि वनदवानल पूर्वदग्धेंधनमूषरवादेशा-
मिथ्यात्ववेदनवनदवोप्यन्तरकरणमवाप्य-
ौपशमिकसम्यक्त्वलाभ ॥ उक्तंच ॥
लाइवणदवोपप्प इयमिछस्सअणुदये, उव-
अनसिद्धांताशये अनिवृत्तिकरणातेकृतत्रि-
मसम्यक्त्वलाभोभवति तथापिप्रायोबहु-
ात् कार्मग्रथिकानाउपशमसम्यक्त्वस्यप-



यमलाभ यार या कर्मग्रथेपि न क्षयोपशमनिषेधइति औपशमिकस्यच अन्तर्मुहूर्तस्याग्रुपशाताद्धायापरमनिषिद्धाभकल्पाया जघन्यन समय-शेषायामुत्कृष्टत पटावलिकाशेषायासत्याकस्यचि महाविमिषेको-स्थानवन्नपोऽनन्तानुबन्ध्युदयोभवति तदुदयेचासोसास्वादनसम्यग्दृष्टि-गुणस्थानेवर्तते उपशमश्रेणिप्रतिपनिनोवाकश्चित्सासादनत्व यानि न-हुत्तरकारस्यावश्यमिथ्यात्वोदयादसौमिथ्यादृष्टिर्भवति तथा सम्यक्त्व-मिथ्यादृष्टिर्यस्यासौसम्यग मिथ्यादृष्टिस्तस्यगुणस्थानसम्यग्मिथ्यादृष्टि-गुणस्थान, इहानतराभिहितविधिनालब्धौपशमिकत्वेनमदनकोद्रव-स्थानीयमिथ्यात्वमोहनीयकर्मशो ग्रयित्वानिधाकरोति ॥ तद्यथा ॥ शुद्धमर्द्धविशुद्धमशुद्धचेनिस्थापना ० ० ० तत्रत्रयाणापुंजानामध्येय-दार्धविशुद्ध पुजउदेति तदातदुदयात्यावज्जीवस्यार्द्धविशुद्धजिनप्र-णीततत्त्वश्रद्धान मिश्रत्वेनव्यक्तेनानिद्धारस्पभवति तेननदासौसम्य-गमिथ्यादृष्टिगुणस्थानमतर्मुहूर्तकाल स्पृशति ततऊर्द्ध्वअवश्यसम्य-त्वमिथ्यात्वमावगच्छति ३ तथा विरतिविरतस्त्रीवेक्तप्रत्ययस्ततपुन सावद्ययोगप्रत्यार यानतन्नजानातिनाम्युपगच्छति न तत्पालनाय यतते इतिनयाणापदानाअष्टौभगा ऽऽऽ ऽऽ। ऽ।ऽ ऽ॥ एतेषुचतुर्षुभगेषुमिथ्यादृष्टिर-ज्ञानित्वात्शेषेषु ॥ऽऽ। सम्यग्दृष्टिज्ञानित्वात्सप्तस्य-स्तुभगेषु नास्य विरतसमरती- विरताऽप्रादित्यपचप्रय धर-मभगेतुविरतिरस्तीतिपद्वाविरमतिस्मसावद्ययोगेभ्योनिवर्त्ततेस्मेतिनिर-त कर्त्तरिक्तप्रत्ययेनविरतोऽविरत सचासोसम्यग्दृष्टिश्चअविरतसम्य-ग्दृष्टिरिदमुक्तभवतिय पूर्ववर्णितोपशमिकसम्यग्दृष्टि शुद्धदर्शनमो-हपुजोदयवर्तीक्षयोपशमिकसम्यग्दृष्टिर्वाक्षीणदर्शनसप्तकक्षायिकस-म्यग्दृष्टिर्वापरममुनिप्रणीतासावद्ययोगविरतिसिद्धिसौधाध्यारोहणनि-श्रेणिरूपाजानन्प्रत्यार यानकषायोदयविघ्नतस्त्वानाम्युपगच्छति न-चनतपाल्नायपनतइत्यासावविरतिसम्यग्दृष्टिरुच्यते तस्यगुणस्थान

अविरतसम्यग्दृष्टिगुणस्थान ॥ उक्तच ॥ बधअविरइहेउ, जाणनो-रागदोसदुरकच विरइसुह इछतो, विरइकाउ असमत्थो ॥ १॥

एसअसजयसम्मो, निंदितोपावकम्मकरणच ॥
अहिगयर्जावाजीवो, अचलियदिठीचलियमोहो ॥

तथासर्वसावद्ययोगस्यदेशेएकव्रतविषयेस्थूलसावद्ययोगादौ सर्वविषयानुमतिवर्जसावद्ययोगाद्विरतिविरतिर्यस्यासौदेशविरत सर्वसावद्यविरति पुनरस्यनास्ति प्रत्याख्यानावरणकषायोदयात् सर्वविरतिरूपप्रत्याख्यानआवृण्वतीतिप्रत्याख्यानावरणा ॥ उक्तच ॥

सम्मदसणसहिओ, गिण्हतोविरइमप्पसत्तीए ॥
एगवयाइचरमो, अणुवयमित्तत्तिदेसजई ॥ १ ॥

देशविरतस्यगुणस्थान देशविरतगुणस्थान ५ तथासच्छयतिस्म सम्यगुपरमतिस्म सयत 'गत्यर्थात्कर्मेति' क्त प्रमाद्यतिस्म सयमयोगेषुसीदतिस्म क्तप्रत्ययेप्रमत्त यद्वाप्रमदन–प्रमत्त ॥ प्रमाद सचमदिरादिविषयकषायनिद्राविकथानामन्यतम सेर्वजाप्रमत्तमस्यास्तीतिप्रमादवान् अभ्रादिभ्यइत्यप्रत्यय प्रमत्तश्चासौसयतश्चप्रमत्तसयतस्तस्यगुणस्थानप्रमत्तसयतगुणस्थान विशुध्ध्यविशुद्धिप्रकर्षापकर्षकृत्त स्वरूपभेद ॥तथाहि॥ देशविरतिगुणापेक्षया एतद्गुणानाविशुद्धिप्रकर्षोऽविशुद्धप्रकर्षश्चअप्रमत्तसयतापेक्षयातुविपर्यय एवमन्येष्वपिगुणस्थानेषुपूर्वोत्तरापेक्षया विशुद्धविशुद्धिप्रकर्षापकर्षयोजना द्रष्टव्या ६ न प्रमत्तोऽप्रमत्त यद्वानास्तिप्रमत्तमस्यासावप्रमत्त सचासौसयतश्चतस्यगुणस्थान अप्रमत्तसयतगुणस्थान ७ अपूर्वमप्रथमप्रथममित्यर्थ करण, स्थितिघात १ रसघात २ गुणश्रेणि ३ गुणसक्रम ४ स्थितिबधानो ५ पचानामर्थानानिर्वर्तनयस्यासौऽपूर्वकरण तथाहि

बृहत्प्रमाणा या ज्ञानावरणीयादिकर्मस्थितिस्तस्या अपवर्त्तनाकरणेन-
खण्डनमल्पीकरणं स्थितिघातउच्यते, रसस्यापिप्रचुरीभूतस्यसतोऽपवर्त्त-
नाकरणेनखण्डनमल्पीकरणंरसघातउच्यते, एतौद्वावपिपूर्वगुणस्थानेषु-
विशुद्धेरल्पत्वादल्पावेवकृतवान्, अत्रपुनर्विशुद्धेः प्रकृष्टत्वात् बृहत्प्र-
माणतया अपूर्वाविमौकरोति, तथाउपरितनस्थितेर्विशुद्धिवशादपवर्त-
नाकरणेनावतारितस्यदलिकस्यान्तर्मुहूर्तप्रमाणमुदयक्षणादुपरिक्षिप्रतरक्ष
पणाय प्रतिक्षणमसंख्येयगुणवृद्ध्याविरचनगुणश्रेणि स्थापना एना च
पूर्वगुणस्थानेषु अविशुद्धत्वात्कालतोद्राघीयसींदलिकरचनामाश्रित्य-
द्राघीयसीं च दलिकस्यापवर्त्तनाद्विरचितवान् ॥ इहतुनाम च विशु-
द्धत्वादपूर्वांकालतोह्रस्वतरांदलिकस्यविरचनामाश्रित्यपुन पृथुतरांबहु-
तरदलिकस्यापवर्त्तनाद्विरचयतीति तथावध्यमानशुभप्रकृतिष्वबध्य-
मानाशुभप्रकृतिदलिकस्यप्रतिक्षणमसंख्येयगुणवृद्ध्याविशुद्धिवशानयन
गुणसंक्रमस्तमप्ययसाविहापूर्वंकरोति, तथास्थितिकर्मणामशुद्धत्वात्प्रा-
ग्द्राघीयसींनरू न् इहतुनामपूर्वोविशुद्धत्वादेवह्रस्वीयसींबध्नाति, अ
यचापूर्वकरणोद्विधा क्षपकउपशमकश्चक्षपणोपशमतार्हत्वाच्चैवमुच्यते-
राज्यार्हकुमारराजवदयनरसौक्षपयति, उपशमयतिवातस्यगुणस्थान
अपूर्वकरणगुणस्थान एतच्चगुणस्थानप्रपन्नानंतरवर्तिनोनानाजीवान-
पेक्ष्यसामान्यतोऽसंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा यध्यवसायस्थाना-
निभवन्ति, कथंपुनस्तानिभवन्ति ? इतिविनेयजनानुग्रहार्थंविशेष-
तोपिप्ररूप्यते, इहतावदिदंगुणस्थानकमन्तर्मुहूर्तकालप्रमाणभवति
तत्रचप्रथमसमयेप्रपन्ना प्रपद्यते, प्रपत्स्यते च तदपेक्षयाजघन्यादी-
न्युत्कृष्टान्यसंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा यध्यवसायस्थानानिल-
भ्यते प्रतिपत्तृणांबहुत्वादध्यवसायानांचविचित्रत्वादितिभावनीय
ननुयदिकालत्रयापेक्षाक्रियते तदैतद्गुणस्थानकं प्रतिपन्नानामनंता-
ध्यवसायस्थानानिकस्मान्नभवति ? अनंतजीवैरस्यप्रतिपन्नत्वादन-

तरेवमनिपत्रमानत्वादिति, सत्य स्यादेव यन्निलमतिपन्नणानां पापयणपृयगूभिरान्ये राध्यनसायस्थानानिस्युरन्त्रनारित, यद्नाने ऽध्यवसायस्थानन तत्वादपीनि ततोद्वितीयसमयेतद पा यधिकतराण्यध्यवसायस्थानानिलभ्यते, तृतीयेसमयेतदन्यान्यधिकतराणि चतुर्थसमयेतदन्यान्यधिकतराणी येव तावनेययावच्चरमसमय एतानिएतानिचध्याप्यमानानिविषमचतुरस्रक्षेत्रमसि पाप्नुवंति तद्यथा ' अथमप्रथमसमयजघन्यात्तदुत्कृष्टमनन्तगुणविशुद्ध, तस्माचतृतीयसमयजघन्यमनन्तगुणविशुद्ध, ततोपितदुत्कृष्टमनन्तगुणविशुद्धमिति एवं समयगतानिचाध्य यवसायस्थानानिपरस्परमनन्तभागवृद्धासंख्यातभागवृद्धसंख्यातभागवृद्धासंख्येयगुणवृद्धा ऽसंख्येयगुणवृद्धानन्तगुणवृद्धरूपषट्स्थानपतितानिमुगपदेतद्गुणस्थानमतिपन्नानांचपरस्परमध्यवसायस्थान यावृत्तिलक्षणानि, वृत्तिरस्यास्तीतिनिवृत्तिगुणस्थानकमप्येतदुच्यते अतएवोक्तसूत्रेनिमट्टीमनियट्टीत्यादि८ तथा युगपदेतद्गुणस्थानकप्रतिपन्नाना बहूनामपि जीवानाम यो ऽन्यमध्यवसायस्थानस्य यावृत्तिर्निवृत्तिनास्त्यस्येति अनिवृत्ति समकालमेतद्गुणस्थानकमारूढस्यापरस्यध्यवसायस्थान विवक्षितोऽन्योपिकश्चित्तद्वर्त्तेनेत्यर्थ सपरैतिपर्यटतिसंसारमनेनेतिसंपराय कषायोदय बादर सूक्ष्मकिट्टीकृत संपरायापेक्षयास्थूर संपरायोयस्य स बादरसंपराय अनिवृत्तिश्चासौबादरसंपरायश्च तस्यगुणस्थानमनिवृत्तिबादरसंपरायगुणस्थान इदमप्यन्तर्मुहूर्तप्रमाणमेव तत्रचान्तर्मुहूर्त्तेयावत समयास्तावन्तिएव ततात्रैवाध्यवसायस्थानानि भवन्त्येकसमयप्रविष्टानां एकस्यैवाध्यवसायस्थानस्यानुवर्त्तनादिति स्थापना प्रथमसमयादारभ्यप्रतिसमयानन्तगुणविशुद्धयोत्तरमध्यवसायस्थानभवतीतिवेदितव्य, सचानिवृत्तिबादरोद्विधाक्षपकउपशमकश्च ॥९॥ तथा संपराय किट्टीकृतलोभकषायो-

दयरूपो यस्य सोऽयमूक्ष्मसपराय । सोपि द्विधाक्षपकउपशमकश्चक्ष- पयति उपशमयति वा लोभमेकमपीतिव्याख्यास्य गुणस्थान सूक्ष्मस- परायगुणस्थान ॥ १० ॥ तथाऽद्यत्येकेवलज्ञान केवलदर्शन- घात्मनोऽनेनेतिऽद्मजानावरणदर्शनावरणमोहनीयान्तरायकर्मोदय । सतितास्मिन्केवलस्यानुत्पादात् । तदपगमानतरचोत्पादात् ऽद्मनि- तिष्ठतीतिऽद्मस्थ । सचसरागोपिभवतीत्यतस्तद्व्यवच्छेदार्थवीतरा- गग्रहण वीनो विगतो रागोमायालोभकषायोदयरूपोयस्यसवीतराग सचासाऽद्मस्थश्चवीतरागऽद्मस्थ सचक्षीणकषायोपिभवति । त- स्यापियथोत्तरगोपरमात् । अतस्तद्व्यवच्छेदार्थमुपशातकषायग्रहण कषशिषेत्यादिदण्डकधातुर्हिंसार्थ । कषति कष्यति च परस्परमस्मिन् प्राणिनइतिकष ससार कषमयतेगच्छयेभिर्जंतवइतिकषाया क्रो- धादय उपशाता उपशमिता विद्यमानाएवसक्रमणोद्वर्तनादिकरणो- दयायोग्यत्वेन व्यवस्थापिता कषाया येन सउपशातकषाय सचासो- वीतरागऽद्मस्थश्चेतिउपशातकषायवीतरागऽद्मस्थ तस्यगुणस्थान- मितिभावत् । तत्राविरतसम्यग्दृष्टे प्रमत्यनन्तानुबधिन कषाया उपशाता सभवति उपशमश्रेण्यारभेऽनन्तानुबधिकषायानऽविरतो- देशविरत प्रमत्तोऽप्रमत्तोवासन्नुपशमय्य दर्शनमोहत्रितयमुपश- मयति । तदुपशमानन्तरप्रमत्ताप्रमत्तगुणस्थानकपरिवृत्तिशतानिकृ- त्वा ततोऽपूर्वकरणगुणस्थानोत्तरकालमनिवृत्तिबादरसपरायगुणस्थाने चारित्रमोहनीयस्य प्रथमनपुसकवेदमुपशमयति तत स्त्रीवेद ततो- हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्साक्षयुगपत्षट्क तत पुरुषवेद- ततोयुगपदप्रत्याख्यानावरणप्रत्याख्यानावरणौ क्रोधौ तत सज्वलन- क्रोध । ततोयुगपद्द्वितीयतृतीयमानौ तत सज्वलनमानततोयुग- पद्द्वितीयतृतीयमायेतत ... ततोयुगपद्द्वितीयतृतीयौलो-

भंतत सूक्ष्मसपरायगुणस्थानेसज्वलनलोभमुपशमयति इत्युपशमश्रेणि ॥ तदेवमन्येष्वपिगुणस्थानकेषुकापिकियतामपिकषायाणामुपशातत्वसभवात् उपशातकषाय यपदेश सभवत्यनस्तद्व यवच्छेदार्थवीतरागग्रहणवीतरागइत्येतावतापीष्टसिद्धौछद्मस्थग्रहणस्वरूपकथनार्थव्यवच्छेद्याभावात्नछद्मस्थउपशातकषायवीतराग सभवति यस्यछद्मस्थग्रहणेन यवच्छेद स्यादिति। अस्मिन्गुणस्थानकेअष्टाविंशतिरपिमोहनीयप्रकृतय उपशाता ज्ञातव्या ॥ उपशातकषायश्चजघन्येनैकसमय भवति । उत्कर्षेणतुअतर्मुहूर्त्तकालतन ऊर्ध्वनियमादसौप्रतिपतति। प्रतिपातश्चद्वेधा भवक्षयेण अद्धाक्षयेणच। तत्रभवक्षयोम्रियमाणस्य अद्धाक्षय उपशाताद्धायासमाप्तायां पतीताया अद्धाक्षयेणचप्रतिपतन् यथैवारूढस्तथैवप्रतिपतति। यत्रयत्रबंधोदयोदीरणाव्यवच्छिन्नास्तत्रप्रतिपततता सता तेआरभ्यते। इतिपतन् प्रतिपातश्चतावत्प्रतिपतति यावत् प्रमत्तगुणस्थान कश्चित्तुततोप्यधस्तनगुणस्थानद्विकयाति । कोपिमासादनभावमवाप्यमिथ्यात्वगच्छति य पुनर्भवक्षयेणप्रतिपतति। स प्रथमसमयएवसर्वाण्यपिबधादीनिकरणानिप्रवर्त्तयतीतिविशेष । उत्कर्षतश्चैकस्मिन्भवेद्वौ(वारान्)वारौउपशमश्रेणिंप्रतिपद्यते तस्यक्षपकश्रेणिर्नभवेदपीति॥उक्तच॥ सप्ततिकाचूर्णौ "जोदुवारेउवसमसेढिंपडिवज्जइ तस्सनियमातम्मिभवेखवगसेढीनत्थि जोइक्कसिंउवसमसेढिंपडिवज्जइ तस्सकस्सविखवगसेढीविहुजत्ति " एष कार्मग्रंथिकाभिप्रायेण, आगमाभिप्रायेणत्वेकस्मिन्भवेएकामेवश्रेणिंप्रतिपद्यते ॥ यदुक्त कल्पभाष्ये " एवअपरिवडीए सम्मत्ते देवमणूआइजम्मेसु अन्नयरसेढिवज्ज " अन्यत्राप्युक्त, मोहोपशमएकस्मिन्भवे द्वि स्यात्सतत यस्मिन्भवेतूपशम क्षयो मोहस्यतत्रनेति अत्राशय उपशमश्रेणिक प्रतिपतितो बाहुल्येनाशुद्धपरिणामत्वात्पुनर्विशुद्धा-

ध्यवसायधारा नारोहतितेन बाहुल्येन एकामेवश्रेणिं करोतिक-श्चिन् प्रतिपतितोऽपि तीव्रवीर्यविशुद्धोपयोगात् पुन श्रेणिमारोहतितेन अत्पत्वात्कल्पभाष्येनाधिकृतमिति ॥ ११ ॥ तया-क्षीणा अभावमापन्ना कषाया यस्य स क्षीणकषाय तत्रानंतानुबंधि-कषायान् प्रथममविरतिसम्यग्दृष्ट्याद्यप्रमत्तांतगुणस्थानेषुक्षपयितु-मारभते ततोमिथ्यात्वमिश्रसम्यक्त्वं ततोऽप्रत्याख्यानावरणानुक-षायानष्टौक्षपयितुमारभते तेषुचार्द्धक्षपितेष्वेवानिविशुद्धिवशादंतराल एवस्त्यानर्द्धित्रिक, नरकद्विक, तिर्यग्द्विक, जातिचतुष्क, आतप, उद्योत, स्थावर, साधारणमितिप्रकृतिषोडशकक्षपयति । तस्मिन्श्चक्षीणे-कषायाष्टकस्यक्षपितशेषक्षपयति । ततोनपुंसकवेद, स्त्रीवेद, हास्या दिषट्क, पुंवेद, ततोसंज्वलनक्रोधमानमाया क्षपयति एताश्चप्रकृती-रनिवृत्तिबादरसूक्ष्मसंपरायगुणस्थानेक्षपयति । संज्वलनलोभसूक्ष्म-संपरायगुणस्थाने इतिक्षपकश्रेणि । तदेवमन्येष्वपिगुणस्थानेषुक्षी-णकषायव्यपदेश संभवति । क्वापिकियन्मात्रकषायाणांक्षीणत्वाद-तस्तद्व्यवच्छेदार्थंवीतरागग्रहण। क्षीणकषायवीतरागत्वंच केवलिनो प्यस्ति। तद्व्यवच्छेदार्थंछद्मस्थग्रहणं छद्मस्थे च ग्रहणेकृतेसराग य वच्छेदार्थंवीतरागग्रहण सचोपशांतकषायोप्यस्तितद्व्यवच्छेदार्थंक्षी-णकषायग्रहण । इत्यनेनक्षीणकषायवीतरागछद्मस्थगुणस्थानमिति ॥ १२ ॥ तयायोगोवीर्यंशक्तिरुत्साह पराक्रमइतिपर्याया सच-मनोवाक्कायलक्षणकरणभेदात्रिस्र सज्ञा लभते । मनोयोगोवचनयो-ग काययोगश्चेति तथाचोक्त कर्मप्रकृतौ" परिणामालंवणगहणसाह-णतेणलद्धनामतिग । कज्जाभ्यासान्नुमाण्प वेसविसमाकयपएस ॥१॥ तत्रभगवतोमनोयोगोमन पर्यायज्ञानिभिरनुत्तरसुरादिभिर्वा-मनसापृष्टस्यसतोमनसैवदेशनाते हि भगवत्प्रयुक्तानि मनोद्रव्याणि-मन पर्यायज्ञानेनावधिज्ञानेनत्रापश्यन्ति दृष्ट्वा च ते विवक्षितवस्त्वाका-

रान्यथानुपपत्त्यालोकस्वरूपादिना प्रमेयमभिगच्छति। वाग्योगोधर्मदेशनादौ काययोगोनिमेषोन्मेषचङ्क्रमणादौ। तनो अनेनयोगत्रयेणसहवर्त्तते इतिसयोगी रागादेरिन्यत्यय केवलज्ञानकेवलदर्शनचविद्यतेयस्य स केवली सयोगी चासौकेवलीचसयोगीकेवलीतस्यगुणस्थानसयोगीकेवलीगुणस्थान ॥१३॥ न विद्यते योगा पूर्वोक्ता यस्यासावयोगी। कथमयोगित्वमसावुपगच्छतीतिनिवेद्यते, स भगवान्सयोगीकेवलीजघन्यनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कृष्टनोदेशोनपूर्वकोटिंविहृत्यकश्चित्कर्मणासमीकरणार्थसमुद्घातनकरोति यस्यवेदनीयादिकमायुष सकाशादधिकभवति सकरोतिसमुद्घात अयस्तुनकरोति यदाह श्रीमदार्यश्यामपादा पन्नवणाया। सव्वेविणभंतेकेवलीसमुग्घायगच्छइ गोयमा नो तिणटेसमट्टे जस्साआऊणणतुल्लाइ बन्धणेहिंठिईइयभवोवगाहिकम्माइ से न समुग्घायगच्छइ ॥ १ ॥

अगंतूणसमुग्घाय, मणनाकेवलीजिणा ।
जरमरणविप्पमुक्का, सिद्धिवरगइंगया ॥ २ ॥

समुद्घाताधिकारेवक्ष्याम भवोपग्राहिकर्मक्षपणायलेश्यातीतमत्युत्कृष्टमत्यन्ताप्रकम्पपरमनिर्जराकारणध्यानमतिपित्सुर्योगनिरोधायउपक्रमते। तत्रपूर्वबादरकाययोगेन बादरमनोयोग निरुणद्धि ततोवाग्योग तत सूक्ष्मकाययोगेन बादरकाययोगतेनैवसूक्ष्ममनोयोग सूक्ष्मवाग्योग च सूक्ष्मकाययोगतु सूक्ष्मक्रियमनिवृत्तिशुक्लध्यान ध्याययन्स्वावष्टम्भेननिरुणद्धि अन्यस्यावष्टम्भनीयस्य योगातरस्यतदासत्वात् तद्ध्यानसामर्थ्याच्चवदनोदरादिविवरपूरणेनसङ्कुचितदेहत्रिभागवर्त्तिप्रदेशोभवति।तदनतरसमुच्छिन्नक्रियमप्रतिपातिशुक्लध्यानध्यायन् मध्यमप्रतिपत्त्याह्रस्वपञ्चाक्षरोद्गिरणमात्रकालशैलेशीकरण प्रविशति। तत्रशैलेशोमेरुस्तस्येवस्थिरता साम्यावस्थाशैलेशी

यद्वासर्वसंवर शील्तस्येश शैलेश तस्येयंयोगनिरोधावस्थाशैलेशी-तस्या करणपूर्वविरचितशैलेशीसमयसमानगुणश्रेणिकस्य वेदनीयना-मगोत्रार याघातिकर्मत्रितयस्यासंख्येयगुणयाश्रेण्याआयु शेषस्यतुयथा-स्वरूपस्थितयाश्रेण्यानिर्जरणशैलेशीकरण तत्रासौप्रविष्टोऽयोगी सचा-सौकेवलीच अयोगीकेवली शैलेशीकरणचरमसमयानंतरमुच्छिन्नचतु-र्विधकर्मत्वनत्वादण्मृत्तिकालेपलिप्ताधोनिमग्नम् मापनीतमृत्तिकालेप-जलतलमर्यादोर्ध्वगामी तयाविधालाबुवदूर्ध्वलोकातगच्छति न पर-तोपिम स्पजलकल्पगत्युपष्टंभकधर्मास्तिकायाभावात्। सचोर्ध्वंगच्छन् ऋजुश्रेण्यायावत् स्वाकाशप्रदेशेष्विहावगाढस्तावत् एवप्रदेशानूर्ध्वम-प्यवगाहमानेविवक्षितसमयाच्चसमयांतरमसस्पृशन्गच्छति॥ तदुक्त मावश्यकचूर्णो। जत्तीएजीवोअवगाढोभवइ। आएओगाहणाए-उड्ढेउज्झगगच्छइ। नवक्वीयचसमयनफुसइत्ति। दु खमायकारनिम-ग्नजिनवचनप्रदापमनिमा श्रीजिनभद्रगणिपूज्याअप्याहु॥ पज्झ-त्तमित्तसन्निस्स। जित्तियाइजहन्नयोगिस्स हुतिमणोदवाइ तेयोवयरो-यजम्मित्तो।१। तदसखगुणटाण, समए समए निरुभमाणोसो मणसो-सवनिरोह। कुणइ असखिज्झसमएहिं॥२॥ पज्झत्तमित्तबिंदीय। जहन्नवइयोगपज्झयाजेउ, तदसखगुणविहीणो, समए समए निरु-भतो॥ ३॥ सव्वनइं योगरोह, सखाइएहिंकुणइसमएहिं। तत्तोयसुहुमपणयस्स, पढमसमयोवत्रन्नस्स॥ ४॥ जोकिर जहन्न जोगो, तदसखिज्झगुणहीणमिक्किक्के, समएनिरुभमाणो देहतिभा-गचमुचतो॥ ५॥ रुभइसकाययोग, सखाइएहिं चेव समएहिं, तोकायजोगीरोहो, सेलेसीभावणामेइ॥ ६॥ हस्सक्खराइमज्झेण, जेणकालेणपचभन्नति। अच्छइमेलेसिगओ, तित्तीयमेत्ततओकाल॥ ७॥ तणुरोहारभाओ, ज्झायइसुहुमकिरियानियट्टिसो, विच्छि-न्नकिरीय मप्पडि-वाईसेलेसिकालमि॥ ८॥ तदसखेज्झगुणाए,

गुणसेढीए रइयपुराकम्म । समएसमएखविउ । कमेणसन्त्तितिहिंकम्म ॥ ९ ॥ उज्झुसेढीपडिवन्नो, समइपएसतरअफुसमाणो । एगसमएणसिज्झइ । अट्सागारोवउत्तोसो ॥१०॥ इतिनस्य गुणस्थानमयोगिकेवलिगुणस्थानमिति याख्या ॥ तानि समारनानि चतुर्दशगुणस्थानानि । एतेपुगुणस्थानेपुत्रयादीनिकर्मभगातानिद्वाराणि आगमानुसारत लिख्यते । तत्रप्रथमबन्धद्वार तस्यातद्वाराणिमूलनधोत्तरबन्धगुणस्थानेपुभिन्नभिन्नकर्मप्रकृतिग्रलक्षणानि दश एवमुदयस्यापि दश उदीरणाया निर्विशेषत्वात्द्रणवद्वारेएवसत्ताया दश एवद्वात्रिंशद्वाराणितथागुणस्थानेपुजीवभेदानि १ तथागुणस्थानानि २ तथागुणस्थानेयोगद्वार ३ उपयोगद्वार ४ लेश्याद्वार ५ एवसप्तत्रिंशद्द्वाराणि तत द्विविधहेतुरूपमूलहेतुद्वारमुत्तरहेतुद्वार भिन्नहेतुद्वारकचतुष्क एनपद्द्वाराणिमिलनेनचत्वारिंशद्वाराणि ॥ १ ॥

टबार्थ —प्रणम्यशासनाधीशं, वीरं स्याद्वाददेशकं
विचारसारग्रथस्य, टबार्थ सप्रतन्यते ॥ १ ॥

नमस्कार करीने जिन क० वीतराग प्रत्ये गुणठाणा १४ ने विषे इतला द्वार कहीस । मूलबन्ध ८।७।६।१ ए च्यार स्थानक छे । उत्तरबन्ध १२० एकसोवीस तेहनी आठ कर्मनी जूदी जूदी ८ द्वार एनले दशद्वारबधना । इम मूलउदय १ उत्तरउदय २ वली आठ कर्मनो उदय । एव १० इम मूलउदीरणा १ उत्तरउदीरणा २ इम सत्ताना दश द्वार । मूलसत्ता १ उत्तरसत्ता १ आठ कर्मनी सत्ताएव ३४ द्वार पछे गुणठाणे जीवभेद ३५ पछे गुणठाणे गुणठाणा ३६ पछे गुणठाणे योग १५ द्वार ३७ पछे गुणठाणे उपयोग १२ कहेवा ३८ द्वार पछे गुणठाणे लेश्या ६ कहेवा, ३९ पछे गुणठाणे मूलहेतु ४ कहेवा पछे

उत्तरहेतुसमुच्चय पछे च्यार हेतु तेहनामि ६ द्वार एव ८५ द्वार ॥ १ ॥

अप्पबहुभावजीयभेय, समुग्घायाझाणदडगा
वेआजोणीकुलकोडीओ, धुधुदयसतधुवअधुवा ॥२॥

टीका—ततोऽल्पबहुत्वगुणस्थानेषु एव चतुश्चत्वारिंशन्नन मूलभावोत्तरभावमिश्रभिन्नभावसान्निपातिकभावलक्षणानि द्वाराणि अष्टौमिलनेद्विपचाशद्द्वाराणि तन पचशतत्रिषष्टिर्जीवभेदद्वाराणिमूलतोउत्तररूपेद्वेद्वारेमिल्नेचतु पचाशत्चत्वारिउत्तरमिलने ५८ द्वाराणि तत गुणस्थानेसमुद्घातलक्षणएकोनषष्टितमद्वार । ततोध्यानद्वार । मूलोत्तरत एव निषष्टितम, गुणस्थानेषुदडकाभिधायकद्वारचतुषष्टितम ततोवेदद्वारपचषष्टितम । ततोयोनिद्वारषट्षष्टितम तत कुलकोटिरूपसप्तषष्टितम तत ध्रुवबधोऽध्रुवबधो ध्रुवोदयोऽध्रुवोदयो ध्रुवसत्ता अध्रुवसत्तालक्षणानिषट्द्वाराणि एवगाथाद्वयेनत्रिसप्ततिद्वाराणि ॥२॥

व्यार्थ —पछे गुणठाणानो अल्पबहुत्व ४६ पछे गुणठाणे मूलभाव १ उत्तरभाव ५ भावमिश्रपणे पछे सान्निपातिकभावना भागा एव ८, द्वार ५४ पछे जीवभेद पाचसोत्रेसठ तेहना द्वार ६ एव साठ ६० द्वार पछे समुद्घात ७ एव द्वार ६१ पछे ध्यान ४ मूल तेहना पाया १६ कहीस्यू एव द्वार ६३ पछे गुणठाणे दडक २४ द्वार ६४ पछे गुणठाणे वेद एव द्वार ६५ पछे गुणठाणे योनि लाख ८४ एव द्वार ६६ पछे गुणठाणे कुलकोडी एक कोडी साढासत्ताणुलाख एव द्वार ६७ पछे ध्रुवबधी १ अध्रुवबधी १ ध्रुवउदयी १ अध्रुवउदयी १ ध्रुवसत्ता १ अध्रुवसत्ता १ एव द्वार ६ द्वार ७३ ॥ २ ॥

सव्वदेसघाईअघाई, पुन्नपरावत्तइयरसित्ताइ
चउरोविवागभगा, कम्माण चेव दाराइ ॥ ३ ॥

टीका—सव्वेति सर्वघाति १ देशघाति २ अघाति लक्षणानि द्वाराणि पीणिनत पुण्यप्रकृति १ पापप्रकृति २ परावर्त्तमान ३ इतर शब्देन अपरावर्त्तमानलक्षणानि सप्तद्वाराणि मिलनेअशीनिद्वाराणि तत क्षेत्रादिविपाकचतुष्टयरूपाणि चत्वारिद्वाराणिनत कर्माष्टकस्यगुणस्थानेभंगप्रतिपादकानि अष्टौद्वाराणि एवमिलनेद्विनवतिद्वाराणि ॥ ३ ॥

दबार्थ —पछे सर्वघाति एकद्वार ७४ पछे देशघाति एकद्वार ७५ पछे अघाति एकद्वार ७६ पछे पुण्यप्रकृति ७७ इतरशब्दे पापप्रकृति ७८ पछे परावर्त्त ७९ पछे अपरावर्त्त एकद्वार ८० पछे क्षेत्रविपाक ८१ भवविपाक ८२ जीवविपाक ८३ पुद्गलविपाक एकद्वार ८४ पछे गुणठाणे कर्मनाभांगा एकद्वार ८ एकद्वार ९० चेवशब्दे गुणठाणे आस्रवभेद ९१ संवरभेद ९२ निर्जराभेद ९३ बंधनचना भेद ९४ एम चोराणद्वार गुणठाणे कहीसूं ॥ ३ ॥

अपमत्तत्तासत्तठ, मीस अपुव्वबायरे सत्त,
बधइछस्सुहुमोइग, मुवरिमाअवधगअयोगी ॥ ४ ॥

टीका—चेवेति चकारेणगुणस्थानेआस्रवभेदा संवरभेदा निर्जराभेदा बंधभेदाभिधानलक्षणानिचत्वारिद्वाराणि। एवंसर्वेमिलनेषण्णवतिद्वाराणि गुणस्थानरक्त यानि। तं प्रतिपादकगुणस्थानशतकाख्यप्रथमाधिकारमुच्यते। द्वारशब्दार्थं प्रतिद्वारमेवरक्तं य तत तएवज्ञेया तत्रप्रथमंव प्रतिपादकद्वारमुच्यते। तत्रात्मनअभिमुख्येन सत् मुखत्वेनमिथ्यात्वादिभिर्हेतुभिर्नवस्य नूतनस्य कर्मणोज्ञानावा-

रणादेर्ग्रहणमुपादानलोलीभावकरणं तदत्रत्युच्यते । तत्रमूलतो बंध-
स्थानानिचत्वारि तानि गुणस्थानकेषु निवेद्यन्ते। तत्रमूलतः कर्मण-
अष्टका तत्रायुर्वंधकोजीवअष्टविधवंधक आयुषस्त्वेकस्मिन्भवे एक-
वारमेवान्तर्मुहूर्त्तप्रमाणकालंबध्नात्, शेषकालंतुसप्तविधबंधकोयंजीव
तथासूक्ष्म सपरायगुणस्थानकेष्यानविशुध्यामोहनीयायषीनबध्नाति,
तेनपद्वविधबंधकप्रकाच अकषायीजीवउपशान्तादिगुणस्थानिके
वेदनीयस्यएकस्यैवबंधक । अतोबंधस्थानानिमूलतश्चत्वारि । तत्रच
मिथ्यादृष्टिप्रमत्तयोऽप्रमत्तान्ता । सप्ताष्टौवाकर्माणिबध्नाति आयुर्बंध-
कालेऽष्टौशेषकालंतुसप्त । मीसअपुव्वनायरेऽनि, मिश्रापूर्वकरणा-
निवृत्तिबादरा सप्तबध्नंतिषामायुर्बंधाभावात्, तत्रमिश्रस्यतथास्वा-
भाव्यात् इतरयो पुनरतिविशुद्धित्वादायुर्बंधस्यच घोलनापरिणाम
निबंधनत्वात् बंधको बध्नाति। उसुहमति सूक्ष्मसपरायोमोहनीयायुर्व-
र्जानिषट्कर्माणिबध्नाति । मोहनीयबंधस्यबादरकषायोदयनिमित्त-
त्वात् । तत्रचतदभावात् आयुर्बंधाभावस्त्वतिविशुद्धित्वादत्रसेय ।
एगमुवरिमत्ति । एकसातवेदनीयकर्मोपरितना सूक्ष्मसपरायादुपरि-
वृद्धर्तिनउपशांतमोहक्षीणमोहसयोगिकेवलिनोबध्नाति। न शेषकर्मा-
णिनद्बंधहेतुत्वाभावात् । अबंधक सर्वकर्मप्रपचबंधरहितोऽयोगी-
श्वरमगुणस्थानवर्त्तीसर्वबंधहेतुत्वाभावादिति ॥ ४ ॥

स्वार्थ —कर्म आठ छे ते एक समे एक जीव आठ कर्म
बांधे अथवा आउपो न बांधे तो सात कर्म बांधे ते वली आऊपो
मोहनीए बे न बांधे तो ६ बंधाइ पछे एकसाता बांधे इम च्यार
बंधना थानक छे ते मिथ्यात्व १ सास्वादन २ अविरतिसमकित
१ देशविरति १ प्रमत्त १ अप्रमत्त १ ए ७ गुणठाणे सीम सात
बांधे अने आऊखो बांधे तेवारे आठ बांधे तथा त्रीजे मिश्रगु-

णठाणे तथा आटमु अपूर्वकरणगुणटाणे तथा नवमु अनिवृत्तिगुणठाणे आऊखो न बाधे। तिणे सातकर्म बाधे तथा दशमा सूक्ष्मसपराय गुणटाणे आऊखो १ मोहनीय विना शेष छ कर्म बाधे व्रे न बाधे उपरत्यो इग्यारमो बारमो तेरमो ए तिन गुणठाणे एक वेदनी कर्म बाधे तथा अयोगी गुणटाणे कोई कर्म बाधे नहीं अबधक छे सही ॥ ४ ॥

वीसहियसयबधे, ओहेमिच्छेसत्तरससयं तु ।
सासाणेइगहियसय, मीसे चउसत्तरीबधो ॥ ५ ॥

टीका– उक्तागुणस्थानेषमूलबन्धानयोजना । साम्प्रतगुणस्थानेष उत्तरप्रकृतिबन्धनिरूपकद्वारमुच्यते । वीसहियत्ति ५ बधेओघन सामान्यत विंशत्यधिकशतबध्यते, तत्रज्ञानावरणीयपचक, दर्शनावरणीयनवक । वेदनीयद्विविध । मोहनीयषड्विंशतिभेद । मिश्रमोहनीसम्यक्त्वमोहनीयस्यबधाभावात् । बधे तुमिथ्यात्वमोहनीयस्यैवबधात् । मिथ्यात्वदलिकानामेवविशुद्ध्याशोधितानामिश्रमोहसम्यक्त्वमोहरूपपुञ्जभवनात्। तयाचोदयात् तेनोदयेएवभवनात् न बधे, तेन। षड्विंशतिरेवबध्यते। आयुश्चतुर्भेदनामकर्मण अधिकशतप्रकृतिप्रमाणस्यबन्धनपचदशकसघातनपचकस्यबधाभावात् । शरीरनामकर्मबधेएवग्रहणात् । वर्णादिविंशते वर्णगधरसस्पर्शस्य एकैकग्रहणेचत्वार्येवबध्यते । तेनषोडशकाग्रहणेशेषानाम्न सप्तषष्टिरेवबध्यते । एकजीवस्यैकसमयेएकमेवेदवान्य । कालातरेजीवातरवर्णादिविंशतिरेव बधसभवात् ओघेचवर्णादीनाचतुर्णांग्रहणत्व यामोहार्थमितिगोबस्यद्धौ। अतरायस्यपचएवसर्वमिलनेओघतोविंशत्यधिकमेकशत च बधेभवति। तदेवजिनशततीर्थंकराहारकाद्विकवर्जं मिच्छे मिथ्यात्वे, सत्तरसमयाति, सप्तदशाधिकशत सप्तदशशतबधे-

भवतीति। अयमनाभिप्राय तीर्थंकरनामतावत्सम्यक्त्वगुणानुगयोग-कषायप्रवृत्तिनिमित्तमेवबध्यते । आहारकशरीरांगोपांगलक्षणद्विक-अप्रमत्तयतिसर्वविसयमानुयायियोगकषायप्रवृत्त्या बध्यते ॥यदुक्त॥ शिवशर्मसूरिपाद शतके। समत्तगुणनिमित्त तित्थयरस नमेणआहार-मितिमिथ्यादृष्टिगुणस्थानेउभयाभावात् । एतत्प्रकृतित्रयवर्जनक्र-तशेषपुन सप्तदशशतमिथ्यात्वादिमिहतुभिर्बध्यते। तनहेतुचतुष्ट-यसद्भावात् मिथ्यात्वेनद्र य नन्वना सप्तदशशतसख्यासर्वाअपिमि-थ्यादृष्टिप्रायोग्या किंतुमिथ्यात्वप्रायोग्या षोडशनाश्चमिथ्यात्ववि-गमेगच्छतिताश्चेमा १ नरकगति, २ नरकानुपूर्वी, ३ इति नरक-त्रिक १ एकेंद्रिय, २ द्वींद्रिय, त्रींद्रिय चतुरिन्द्रियजातिचतुष्कल-क्षणजातिचतुष्क। १ स्थावर, २ सूक्ष्म, ३ अपर्याप्त, ४ साधारण, लक्षणस्थावरचतुष्क । आतपहुटछेदपृष्ट नपुंसकवेद मिथ्यात्वमिति-एता षोडशप्रकृतय मिथ्यादृष्टिगुणस्थाने एवबन्धमायान्ति मिथ्यात्व-प्रत्ययत्वादेतासानोत्तरत्र। सास्वादनादिषुमिथ्यात्वहेत्वभावात्। प्रा-योनरकाद्य यताशुभन्वाच्चमिथ्यादृष्टिरेवबध्नाति । तेनसप्तदशशतात् पूर्वोक्तषोडशापगमेशेषमेकोत्तरप्रकृतिशतमेवसास्वादनेबन्धमायाति। सासाणे,सास्वादने,एगहियसय एकाधिकशतबन्धप्रकृतीनाअस्ति,मी-सेत्ति। मिश्रामिधानेगुणस्थानके चतुर्विंशतिसप्ततिबन्धत्वेनअस्ति १ तिर्यग्गति, २ तिर्यगानुपूर्वी, ३ तिर्यगायु, लक्षणतिर्यक्त्रिक १ निद्रानिद्रा, २ प्रचलाप्रचला, ३ स्त्यानर्द्धिलक्षणस्त्यानर्द्धि-त्रिक। १ दुर्भग, २ दुःस्वर, अनादेयलक्षणदौर्भाग्यत्रिक ३ अनतानु-बंधिक्रोध १ मान, २ माया, ३ लोभ, ४ लक्षणअनंतानुबंधिच-तुष्टय । १ न्यग्रोध, २ सादि, ३ वामन, ४ कुब्ज, ५ लक्षण-मध्यसंस्थानचतुष्क १ ऋषभनाराच, २ नाराच, ३ अर्द्धनाराच, ४ कीलिका, लक्षणमध्यमसंहननचतुष्क, नीचैर्गोत्र । १ उद्योत, २

अप्रशस्तविहायोगति ३ स्त्रीवेद, ४ इत्येता पचविंशति सास्वादनातावध्यते नोत्तरत्र, यतोऽनतानुबधिप्रत्ययोह्यस्योत्तर । सचोत्तरत्रनास्ति तेननंतासावध सम्मामिच्छदिठी आउअत्रधिनकरेइत्ति वचनात् शेषनरायुदेवायुर्द्वयमपिनवध्नाति अन एकोत्तरशतात् सप्तविंशतिरपगमेमिश्रगुणस्थानकेचतु सप्ततिर्वध्नाति ॥५॥

द्धार्थ —हवे उत्तरप्रकृतिवध कहे छे ओघेएकसोवीसनो वध छे, ते कहे छे ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ९, वेदनी२, मोहनी २६, समकित मोहनी तथा मिश्रमोहनी ए बे बधमे नहीं तिणे २६ छे तथा आउखो ४ नामकर्मनी १०३ प्रकृति छे ते मध्ये १५ बधन ५ सघातन ए शरीर मध्ये गण्या छे अने वर्णादिक २० छे तेमायी वर्ण १ गध १ रस १ फरस १ ए च्यार बाधे बीजा १६ नाघे नहीं, एटले नामकर्मनी सडसठ बाधे गोत्रनी २ अतराय ५ एव एकसोवीस बाधे एकसोवीसमायी १ आहारक २ जिननाम काढीये तेवारे मिथ्यात्वगुणठाणे एकसोसत्तर बाधे तेमायी नरक ३ जाति ३ थावर ४ हुडक १ छेवठो १ आतप १ नपुसकवेद १ मिथ्यात्व १ ए सोल काढीइ तेवारे सास्वादन गुणठाणे एकसोएक बधाय ए सोल प्रकृति मिथ्यात्व छताज बाघे मिथ्यात्व गयेज जाय तेवारे एकसोएक बधाय तथा तेमायी तिर्यच ३ थीणद्धी ३ दुर्भग ३ अनतानुबधी ४ मध्यसघयण ४ मध्यसस्थान ४ अशुभविहायोगति १ नीचैर्गोत्र १ उद्योत १ स्त्रीवेद १ देवायु १ मनुष्यायु १ ए २७ काढीये तेवारे मिश्र गुणठाणे चमोत्तरनो वध छे ॥ ५ ॥

सम्मे सगसयरिदेसे, सगट्ठिठतेवट्ठिपमत्ति अपमत्ते।
नवअडवन्नापुवे, अडछप्पन्नाछवीसाय ॥ ६ ॥

टीका—सम्मेत्ति ६ सम्यक्त्वामिधानेतुर्येगुणस्थानेआयुर्बंधात् मनुष्यायु १ देवायु २ एतद्द्विकसम्यक्त्वानुगप्रवृत्याच तीर्थंकरनाम बध्नाति, इत्यनेनपूर्वोक्तचतु सप्ततितीर्थकरनामआयुर्द्वयमेलनात् सम्यग्दृष्टिगुणस्थानेसप्तसप्ततिप्रकृतीना बधोभवति तनतिर्यग्मनुष्या सम्यग्दृष्टय देवायुरेवबध्नन्ति। नारकादेवाश्चसम्यग्दृष्टय मनुष्यायुरेवबध्नन्ति। देसेत्ति, देशविरतिलक्षणेपचमेगुणस्थानके वज्रर्षभनाराचसहनन १ नरगति १ नरानुपूर्वी २ नरायु ३ लक्षणनरत्रिक द्वितीयेकषाये अप्रत्याख्यानक्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ चतुष्क ४ औदारिकशरीरागोपागलक्षणऔदारिकद्विक एतासादशप्रकृतीनामविरतिसम्यग्दृष्टौअनोभवति । अनबध्यतेनोत्तरत्रेत्यर्थ अयमनाभिप्राय द्वितीयकषायास्तावत्तदुदयाभावान्नबध्नाति । कषायाद्यननानुमपिवजावेत्रमानाणुवब्र यते । जेवेणइत्तेनवइ इतिवचनात्। अनतानुबधिनस्तुचतुर्विंशतिसत्कर्मानतवियोजकोमिथ्यात्वगतोनतावल्लिकामानकालअनुदितान्न नाति ॥यदाहु ॥ सप्ततिटीकाया श्रीमलयगिरिपादा इहसम्यगदृष्टिनासनाकेनचित्प्रथमतोऽनतानुबन्धिनोविसयोजिता एतावतेवसविश्रातो न मिथ्यात्वादिक्षपायसउद्युक्तवान् तथाविधसामग्र्यभावात् । तन कालातरेणमिथ्यात्वगत सन्मिथ्यात्वप्रत्ययतोभूयोप्यनतानुबन्धिनोबध्नाति। ततोबधावलिकाया यावन्नाद्याप्यतिक्रामति तावत्तेषामुदयविनाबध्नाति। नरत्रिकमनुष्यत्वेव प्रथमसहनन औदारिकद्विक मनुष्यतिर्यग्वेचदेशविरतात्मादिषुदेवगतिनेवमेवबध्नाति ना यत्तेनासादशप्रकृतीनामविरतसम्यग्दृष्टिगुणस्थाने अन । ततएतत्प्रकृतिदशकपूर्वोक्तसप्तसप्ततेरपनीयते । ततोदेशविरतेअनोदेशेसप्तषष्टिर्बध्यते । ततस्तृतीयकषायाणाप्रत्याख्यानावरणक्रोध १ मान २ माया ३ ४ लोभाना देशविरतेअनस्तइत्तरेतेषामुदयाभावात् । अनुदितानां-

चाभवात एतद्यमकृतिचतुष्कप्रोक्तसप्तषष्ठेरपनीयते । तत वे-
गठिपमत्ते, इतिप्रमत्तेप्रमत्तसाधुलक्षणेषष्ठेगुणस्थानकेनिषष्टिर्बध्यते ।
इनित शोक अरति अस्थिरअशुभअयश असातमित्येता षट्प्रकृतय
प्रमत्तातेउच्छिद्यते तत कश्चिज्जीव पूर्वबद्धायु अथायुषोऽनवरोदेवा-
युरपिनबध्नाति । तेनसप्तापगमे आहारकद्विकस्यअत्रबन्धोभवति ।
अप्रमत्तपरिणामेनैवाहारकस्यबन्धात् तेन य प्रमत्तेदेवायुर्न प्रमारभते
सअप्रमत्तेगतोपिदेवायुर्न बध्नाति आयुष्कस्यनुघोल्नापरिणामेनैवबन्ध-
नात्।सबद्धमानायु अप्रमत्ते यागच्छेत् सदेवायुर्न नवप्रकृतिपदकमेवो-
च्छेदयति।तस्यशेषा सप्तपचाशत् भवति। योदेवायुर्नबध्नातिससप्तक-
मुच्छेदयति । तस्यषट्कपञ्चाशत्भवति । अस्याहारकद्विकबन्धे-
भवति अयमत्राशय अप्रमत्तयतिनिमग्नधिनासयमविशेषेणाहारकद्विक-
बध्यते । तदेहलभ्यते । इतिपूर्वापनीतमप्यत्रक्षिप्यते । तत
सप्तपचाशत् पुनराहारकद्विक क्षेपेएकोनषष्ठि पट्पचाशत् आहा-
रकक्षेपे अष्टपचाशद्भवति । सप्तमेऽप्रमत्ताख्येगुणस्थानकेइति ।
अपुन्वे, अपूर्वकरणाभिधानेऽष्टमेगुणस्थानकेभागसप्तक तत्रप्रथमभा-
गेअष्टपचाशत् बध्नाति । तत निद्राद्विकस्यनिद्राप्रचलालक्षणस्या-
तोभवत्यत्रनोबध्यते नोत्तरत्रापिउत्तरत्रबन्धप्रसायस्थानाभावात् ।
उत्तरेष्वप्ययमेनहेतुरनुसरणीय । तत परषट्पचाशत्भवति । पच-
सुभागेष्वित्यर्थ । तत्रपञ्चभागाना समत्वेनानेकभागोविवक्षित ।
तत त्रिंशत्प्रकृतीनामतोभवतीत्याह । देवद्विकदेवगतिदेवानुपूर्वी-
लक्षण । पचेंद्रियजाति ३ प्रशस्तविहायोगति ४ त्रसनवकत्रस १
बादर २ पर्याप्त ३ प्रत्येक ४ स्थिर ५ शुभ ६ सुभग ७ सुस्वर
८ आदेयलक्षण ९ वैक्रियाहारकतेजसकार्मणलक्षणशरीरचतुष्टय ४
वैक्रियाहारकागोपागलक्षणउपागद्वयसमचतुरस्रसंस्थान १ निर्माण १
जिननाम २ अगुरुलघु १ उपघात १ पराघात १ श्वासोच्छ्वास १

लक्षण वर्ण १ गंध १ रस १ स्पर्श १ लक्षणमित्येनासात्रिंशत्प्रकृतीनां यपगमेअपूर्वकरणस्यचरमेभागेशेषा षड्विंशतिप्रकृतयोबंधेलभ्यते ॥ ६ ॥

टवार्थ —तथा देवायु १ नरायु १ जिननाम १ ए तिन मेलिइ तेवारे सत्तोतेर बाधे । तेमांथी मनुष्य ३ बीजी चोकडी कषायनी ४ वज्रऋषभनाराचसंघेण १ औदारिक २ काढीए तेवारे देशविरति गुणठाणे सडसठ बाधे, तेमांथी त्रीजी चोकडी कषायनी काढीए तेवारे प्रमत्तगुणठाणे तेसठ बाधे तेमांथी सोगमोहनी १ अविरति १ असाता १ अथिर १ अशुभ १ अजस १ ए छ काढीइ अने आहारक मेलीइ तेवार अप्रमत्त गुणठाणे ए गुणठाणे एगुणसठि बाधे अने देवताना आऊखानो बंध न बाधे इहां आहारक २ मेलीये त्यारे अठावन बाधे ॥ तथा अपूर्वकरणगुणठाणाना भाग सात छे ॥ ते पहेले भागे अठावन बाधे पछे निद्रा १ प्रचला १ एव बे काढीये तेवारे बीजे त्रीजे चोथे पांचमे छठे भागे छप्पन छप्पन बाधे ॥ तेमांथी देवद्दुग १ पचेंद्रीजाति १ शुभ विहायोगति १ समचउरस १ त्रसनाम १ वैक्रिय १ आहारक तेजस १ कार्मण १ वैक्रिय उपांग १ आहारक उपांग १ वर्णादि ४ अगुरुलघु १ उपघात १ उसास १ परायात १ जिननाम निर्माण १ ए तीस बाधे नहीं तेवार आठमा गुणठाणाने सातमे भागे वीस बाधे ॥ ६ ॥

अनियट्टीबावीस, इगेगहीण च सतरसुहमम्मि ।
तिसुसायमयोगम्मि, बंधाभावो अणतो य ॥ ७ ॥

टीका—अपूर्वकरणस्यचरमसमयेहास्य १ रति २ भय १ जुगुप्सा ४ एतत्प्रकृतिचतुष्टयपूर्वोक्तषड्विंशतेरपनीयते । शेषा

द्वाविंशति सत्तानिवृत्तिबादरप्रथमभागेभवति। अनियट्टीति । अनिवृत्तिकरणाख्यनवमगुणस्थानकस्य प्रथमभागे पूर्वोक्तद्वाविंशतिनव एकैकहीनोवाच्य तत्प्रथमभागातेपुरुषवेदस्यछेद तनोद्वितीयभागे एकविंशतेर्बंध द्वितीयभागातेसज्वलनक्रोधस्यछेद ततस्तृतीयभागे-विंशतेर्बंध चतुर्थभागातेसज्वलनमायाया छेद तत पचमभागे-ऽष्टादशानाबध तदतेचअनिवृत्तिबादररस्याप्यत ॥ अनिवृत्तिबादर-चरमसमयेसज्वलनलोभस्याप्यत । तत दशमेसूक्ष्मसपरायकेगुण-स्थानके सप्तदशप्रकृतीनाबधोभवति। सूक्ष्मसपरायस्यातेज्ञानावरण-पचक । दर्शनावरणचतुष्क । यशोनामउच्चैर्गोत्रणता षोडशप्रकृ-तय छिद्यते । तत । तिसु । त्रिषु, उपशातमोह १ क्षीणमोह २ सयोगिकेवलीलक्षणेषत्रिषुगुणस्थानेषुएकमात्रवेदनीयप्रकृतिर्बध्नाति। प्रकृतिप्रदेशरूपाणकषायहेत्वभावात् । नस्थितिरसयोर्बंध । इति-सानस्यकेवलयोगप्रत्ययस्यद्विसामायिकस्यतृतीयेऽस्थानाभावात् । इतिभाव । आहचभाष्यसुधाभोनिधि । उवसतखीणमोहा । के-वलिणोएगविहबधते। पुणदुसमठियस्स। बधगा न उणसपरायस्सत्ति, अजोगम्मि, अयोगि केवलिगुणस्थानेयोगाभावात् । ततोऽबधका-अयोगिकेवलिन ॥ उक्तच ॥ सेलेसीपडिवन्ना । अबधगा हतिना-यव्वा। अयोगिगुणस्थानेबधस्याभाव " अणतोयंत्ति। अनतस्यबधा-भावस्यनअतोनक्षयइतिबधाभाव । अतरहितइतिउत्तरप्रकृतिबध-उक्तोगुणस्थानेषु ॥ ७ ॥

टबार्थ —वेमाथी हास्य १ रति १ भय १ दुगछा १ ए च्यार काढीइ तेवारे अनिवृत्तिबादर नवमु गुणठाणु तेहने पेहले भागे बावीस बाधे पछे पुरुषवेद काढीए तेवारे बीजे भागे २१ बाधे पछे सज्वलनोक्रोध काढीए तेवारे त्रीजे भागे २० बाधे.

पछे सज्वलनोमान काढीइ तेवारे चोथे भागे १९ बाधे पछे सज्वलनीमाया काढीइ तेवारे पाचमे भागे १८ बाधे तेमायी सज्वलनोलोभ काढीइ तेवारे दशमा सूक्ष्मसपरायगुणठाणे सत्तरप्रकृतिनोबध छे तेमायी ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अतराय ५ उच्चैर्गोत्र १ जसनामकर्म १ ॥ सोल काढीए तेवारे इग्यारमे उपशातमोह गुणठाणे एकसातावेदनीज बाधे बारमे क्षीणमोहे एकसातावेदनी बाधे तेरमे सयोगीकेवलीगुणठाणे एकसातावेदनी बाधे ए तीन गुणठाणे साता एकज बाधे चउदमे अयोगी केवलीगुणठाणे बधनो अभाव छे ते अनत छे ए अनतपणानो अत छेहडो नथी, ए जीव सदा अबध होवे हेतुने अभावे बधनो अभाव छे ॥७॥

नाणतरायदसग, उच्चागोयचसायजसनाम ।
दसणचउसुहुम जा, वधइतिव्वायमदाय ॥ ८ ॥

टीका—अथ ज्ञानावरणादीना कर्मणा भिन्नभिन्नगुणस्थानेषु बध सद्भावदर्शयन्नाह । नाणतरायेत्ति । ८ ज्ञानावरणीयपचक अतरायपचकमिलनेदशक । उच्चैगोत्र च पुन यशोनाम । दसणचउत्ति । दर्शनावरणीयचतुष्क एता प्रकृतय । सुहुमजात्ति । सूक्ष्मसपरायगुणस्थानकयावद्बध्नाति । तत्किमत्रतत्तुल्यएवबध इतिशकापनोदार्थमाह॥ तिव्वायमदायत्ति तद्बधकाध्यवसायाना तीव्रत्वे एतासातीव्रएवबध । पुनस्तद्बधकाध्यवसायानामदत्वे मदएवबध । तत्रभावना प्रथमेमिथ्यात्वेगुणस्थानअशुभाध्यवसायानातीव्रत्वात्ज्ञानावरणीयाद्यशुभप्रकृतीनातीव्रोबध । सम्यग्दर्शनादिगुणेषुमदमदतरमदतमा शुभाध्यवसायान् मदमदतरमदतमएवबध । सातादीनातुशुभानाप्रकृतीनामिथ्यात्वेशुभाध्यवसायस्यमदत्वान्मदएवरसबध । ततस्ती-

त्रतीव्रतरतीव्रतमश्चतुर्भाग्यरसायान् शुभप्रकृतीनातीवतीव्रतरतीव्रतम-एवग्रबोभवति। एवसर्वेनसर्वप्रकृतीनाम्प्रमनशाव्यवसायानातीव्रत्वे-तीव्रोभव मदेमदोभवतिदृश्यम । प्रकृतिनशाभवश्चनद्वप्रकाष्यर-सायाभावतो ज्ञेय ॥ ८ ॥

टवार्थ — हवे कर्म सर्वनो रस गुणठाणे कहे छे ॥ ज्ञाना-वरणी ५ अतराय ५ एमिल्या दश १० उच्च गोत्र १ सातावेदनी १ इहा सकषायवेदनी याग मुहूर्त स्थितिवाली छीवी छे । अक-षायी सातावेदनीनो तेरमा सघी रस छे । तथा यशनाम १ दर्श-नावरणी ४ ए प्रकृति सूक्ष्मसम्पराय गुणठाणा सुधी रसाय छे ए १७ मध्ये १४ अशुभ छे । ते प्रथमगुणठाणे तीनरसे बाधे छे पछे दशमा सीम मन्दतर मन्दतम बाधे छे अने तीन शुभ छे । तेह पछे गुणठाणे मदरसे बाधे । पछे तीव्र तीव्र रसे बाधे इम सर्वत तिव्रताये मदताये बध कहेवो ॥ ८ ॥

थीणतिग आइदुगे, निद्ददुग जा अपुव्वपढमसे ।
नीय सासाण जा, असायवधो पमत्त जा ॥ ९ ॥

टीका—थीणत्ति । दर्शनावरणीयस्य नवप्रकृतयस्तत्रस्त्यान-र्द्धित्रिक निद्रा निद्रा १ प्रचला प्रचला १ स्त्यानर्द्धिलक्षण १ आइदुगेत्ति आदिप्रथमतो द्विके मिथ्यात्वसास्वादनप्रथमगुण-स्थानद्वयेबन्ध नोत्तरत्र अत्यन्तसक्लेशपरिणामप्रत्ययात् अत्यन्तसक्ले-शश्चानतानुबन्ध्युदयतोभवति तदुन्यश्चगुणस्थानद्वये एवभवति तेनसास्वादनयावदेवस्त्यानर्द्धित्रिकबन्ध निद्दुगति—निद्राद्विकनिद्रा-प्रचलालक्षण तस्यबन्ध अपूर्वकरणप्रथमाशयावत् नोत्तरत्र घोल्ना-परिणामस्यतावदेव सद्भावात् । दर्शनावरणचतुष्टयस्य बन्ध सूक्ष्म

सपरायपावत् पूर्वमुक्तएतक्षयायनमित्तकत्वात् । गोत्रकर्मणिनीचै-र्गोत्रसास्वादनयावदेवबन्धाति नोत्तरत्र, अनन्तानुबन्धुदयाद्युद्भसक्लेश-जन्यत्वात् । उच्चैर्गोत्रंतुसूक्ष्मसंपराययावत् पूर्वमुक्तमेववेदनीयद्वये असातवेदनीयमिथ्यात्वेन प्रमत्तयावद्बन्धाति । प्रमादप्रत्ययत्वात् तत्र परप्रमादाभावात् सातवेदनीयतुक्षाय सूक्ष्मसंपराययावद्वधाति। अकषायवेदनीयंतु सयोगिकेवलिचरमसमयातबध्नाति योगास्रव वात् इति ॥ ९ ॥

टबार्थ —दर्शनावरणी कर्मनी नव प्रकृति छे ते मध्ये थीणद्धी तीन (त्रिक) पहिल बीजे ए आदिद्भुग कहेता बे गुणठाणे बांधे। निद्रा १ प्रचला १ ए बे प्रकृति पहिलाथी आठमा पर्यंत। आठमाना पहिला भाग सूधी बांधे । शेष दर्शनावरणी च्यार दशमाना अंत सूधी बांधे । ते पहिली गाथा मध्ये कह्यो छे गोत्रकर्मनी प्रकृति २ ते मध्ये नीचगोत्रसास्वादन जा कहेता मिथ्यात्वसास्वादन ए बे गुणठाणे बांधे पछी न बांधे उचगोत्र दशमा सूधी बांधे, तथा वेदनीनी २ प्रकृति ते मध्ये असातावेदनी पहिलाथी मांडी छठ्ठा प्रमत्तगुणठाणा सूधी बांधे पछे न बांधे, सातावेदनीकसकषायदशमा सूधी बांधे, अकषायीसाता तेरमा सूधी बांधे ॥ ९ ॥

मिच्छेआउचउग, सासाणे निरयहीणत्तिगबधो ।
मीसे न आऊबधो, सम्मत्ते देवनरबधो ॥ १० ॥

टीका—आयु कर्मणिचतुष्प्रकारे तत्र मिथ्यात्वआयुष्कचतु-ष्कबध्नाति एव, जीवएकस्मिन्समयेएकमेवायुर्बध्नाति । तथापि बहु-जीवापेक्षयातुआयुश्चतुष्टयबंधसद्भावएवनरदेवायुष शुभत्वेपिमिथ्या-त्वेद्व्यक्तियाप्रशस्तउदयात्तशाद्वच मिथ्यात्वानन्तानुबंधिविपाकान्नु-

व्यक्रियाअत्यतसमग्राएवकरोति। तस्यग्रहीतेअभिग्रहीतत्वात् सास्वादने नरकायु नवध्नाति। मिथ्यात्वप्रत्ययत्वात्। तदभावेचनद्वधाभावात्। मिश्रेमिश्रारव्येगुणस्थानेआयुष बन्धएवनभवति, मिश्रेमरणाभावात्। सम्यक्त्वेदेवायुषोमनुष्यायुषश्चबन्ध प्रशस्तपरिणतेर्मुख्यत्वात् उत्सूत्र स्यतिर्यगादिगतिहेतुत्वात् सम्यक्त्वेप्राप्तेच आस्रवानामभावत्वान्नाशु-भायुर्नवध्नाति ॥ उक्तच ॥ सम्मदिट्ठीजीवो जइविहुपावसमायरेकिंचि, अप्पोसिहोइवधो जेणननिंद्धंधस कुणई ॥ १० ॥

टवार्थ —मिथ्यात्वगुणठाणे च्यार आऊखानो बंध छे जेवा परिणाम होय तेवा बंधाये, अने सास्वादनगुणठाणाने विषे एक नरकनो आऊखो न बंधाइ, अने बीजा तिन आऊखा ते किहा तिर्यंचनो मनुष्यनो अने देवनानो ए बंधाये मिश्रगुणठाणे कोइ आऊखो न बांधे मिश्रमध्येमरवो नथी मध्यस्थपरिणाममाटे अथवा मिश्रनो स्थितिकाल अतर्मुहूर्त्तनो छे तेहथी आऊखानो बंधकालनोमुहूर्त मोटो छे ते माटे हवे समकितगुणठाणे देवतानो तथा मनुष्यनो आऊखो बांधे बीजा २ आयु न बाधे ते मध्ये देवना तथा नारकी समकिती मनुष्यायु बांधे। तिर्यच तथा मनुष्य समकिती देवतानो आऊखो बांधे ॥ १० ॥

देसाइतिग देवाउ, बधई सेसया न बधंति।
मोहे छवीस मिच्छे, नपुमिच्छविहीणसासाणे ॥११॥

टीका—देशविरतित समारम्यअप्रमत्तयावत् देवायुषएवबन्ध प्रशस्तपरिणामस्यप्राधान्यात् । अपूर्वकरणादिषु शुक्लपरिणामप्राब-ल्येननायुष बध्नाति तेनशेषका अपूर्वकरणनोऽयोगिकेवलिपर्यन्ता आयुकर्मबन्धका न भवन्ति । मोहनीयकर्मणिप्रकृत्यष्टाविंशतिलक्षणे मिश्रमोहनीय सम्यक्त्वमोहनीय बन्धेनास्ति । यत मिथ्यात्वदलि-

काएवत्रिपुंजीकरणपरिणामेन त्रिभक्ता शुद्धपुंजमिश्रपुंजरूपा सम्यक्त्वमोहमिश्रमोहलक्षणप्रकृतिद्वयविपाककालेभवति तेनषड्विंशतेरेवबन्ध तत्रमिथ्यात्वेषड्विंशधिक विंश षड्विंशएवबन्ध नपुंसकवेदमिथ्यात्वमोहनीयविनासास्वादनेमोहनीयस्यचतुर्विंशतिप्रकृतयोबन्ध्यते। कर्मस्तवे सोलसोइगवीसयसासणि । इतिवचनात् ॥ ११ ॥

भावार्थ —देशविरतिआदि देई तिन गुणठाणे एक देवनानो आऊखो बांधे शेषअपूर्वकरण गुणठाणेथी माटी ऊपरला सर्व गुणठाणे आऊखो कोइ बांधे नहीं, स्वरूपालम्बनी माटे, परालम्बने आयुर्बन्ध छे मोहनीकर्मनी २८ प्रकृति छे ते मध्ये समकितमोहनी मिश्रमोहनी न बांधे एटले छवीसनोबन्ध मिथ्यात्व गुणठाणे छे सास्वादनगुणठाणे नपुंसकवेद १ तथा मिथ्यात्वमोहनी न बांधे एटले सास्वादनगुणठाणे मोहिनीना चोवीस प्रकृति बांधे छे ॥ ११ ॥

अणचउरथीनेय विणा, मीसदुगे देसवीयकसायविणा, अतीयकसायपमत्ते, अपमत्ते दुगे दुसोगविणा ॥१२॥

टीका—अणत्ति मिसदुगे मिश्राविरतसम्यग्दर्शनलक्षणेगुणस्थानद्वयेअनन्तानुबंधिचतुष्कस्त्रीवेद विना अभावेनमोहनीयकर्मण एकोनविंशतेरेवबन्ध तत्रकस्यचजीवस्यैकसमये सप्तदशानामेवबन्ध मृत्त सप्त न बध्यते देशविरतौद्वितीयकषायस्य अप्रत्याख्यानावरणस्यक्रोधमानमायालोभलक्षणस्य देशविरतौबन्धो न भवति। बयरनरतिपवियकसाया उरलदुगनोदेस इतिवचनात्, मृत्त एकादश न बध्यते। शेषा कषायाष्टकहास्यषट्कपुरुषवेदरूपा पचदश बध्यते। एकजीवस्यत्रयोदश बध्यते, प्रमत्ते अतीयकसायत्ति। तृतीयकषायस्यप्रत्याख्यानावरणक्रोधमानमायालोभरूपस्याभाव शे-

षाप्कादशवध्यते पचदश न बध्यते अपमत्तदुगत्ति–अप्रमत्तेअपूर्वकरणे दुसोगत्ति–अरतिशोकद्विकतेनविनानवप्रकृतीनाबधोभवति । शेषानवप्रकृतय बध्यते । सज्वलनचतुष्क ४ हास्यचतुष्क ४ पुरुषवेदएवनव ॥ १२ ॥

टबार्थ —तथा मीसदुगे कहेता मिश्रगुणठाणे समकित गुणठाणे अनतानुबधी ४ स्त्रीवेद न बाधे एटले चार कषाय, हास्यादि ६ पुरुषवेद ए ओगणीस बाधे मोहनीकर्मनी सात नबाधे देशविरतिगुणठाणे बीजी चोकडी अप्रत्याख्यानी क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ ए न बाधे एटले ने चोकडीनी आठ हास्यादि ६ पुरुषवेद १ ए पनर बाधे मोहनीनी प्रमत्त गुणठाणे तीजी चोकडी प्रत्याख्यानी क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ ए न बाधे मोहनीकर्मनी तथा अपमत्तदुगे कहेता अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण ए बे गुणठाणे शोक १ अरति १ एबे विना सज्वलना ४ हास्य १ रति २ भय ३ दुगछा ४ पुरुषवेद १ ए नव बाधे बे गुणठाणे ॥ १२ ॥

हासचउहीणनवमे, सुहुमाओ अवधगा उ मोहस्स ।
नामेमिच्छेचउसट्ठि, सासाणे एगपन्नासा ॥ १३ ॥

टीका—हासत्ति हास्यचतुष्क ४ हास्यरति २ भयजुगुप्सा २ लक्षणा प्रकृतय हीयते इतिहास्यचतुष्कहीनेनवमेअनिवृत्तिबादरगुणस्थानेशेषा सज्वलनचतुष्कपुरुषवेदश्चएते पच बध्यते। अनिवृत्तिबादरस्यअतोसज्वलनचतुष्कपुरुषवेदाभावेसूक्ष्मसपरायस्यपरत मोहनीयस्यबधो न भवति । न इइ उ सहुमो एग इति पटसितिवचनात् । नामेत्ति नामकर्मणि मिथ्यात्वेचतु षष्टिप्रकृतयोबन्यते। ती-

र्थंकरनामाहारकशरीराहारकांगोपांगनयवर्जैएतत्प्रकृतिनयसम्यग्द-र्शनचारित्रानुगचेतनावीर्यस्यप्रशम्नकषाययोगपरिणामेन बन्धात् । तदभावेचात्र न बन्ध सासाणे—सास्वादनेद्वितीयगुणस्थानेनरकगति १ नरकानुपूर्वी २ एकेंद्रियजाति १ द्वीन्द्रिय २ त्रीन्द्रिय ३ चतुरींद्रियजातिचतुष्टय ४ स्थावर १ सूक्ष्म १ साधारण १ अपर्याप्तरूप १ स्थावरचतुष्क ४ सेवार्त्त १ हुडक १ आतप १ एतत्त्रयोदशमकृतीनामास्वादनेबन्धो न भवति । शेषाएकपचाशत्नामप्रकृतयो बध्यते ॥ १३ ॥

टबार्थ —हास्यादि च्यार विना नवमे गुणठाणे पाच प्रकृति सञ्वलना च्यार ४ पुरुषवेद १ ॥ पाच बाधे सूक्ष्मसंपरायथी माडी उपरला सर्व गुणठाणा मोहनीकर्मना अबन्धक छे दशमाथी उपरान मोहनीकर्म न बाधे हवे गुणठाणे नामकर्मनी प्रकृति कहेछे मिथ्यात्वगुणठाणे आहारकद्विक २ जिननामविना चोसठनो बन्ध छे सास्वादनगुणठाणे तेर नामकर्मनी निकली एटले एकावन रही गति ३ जाति पचेन्द्रिय १ शरीर ४ उपाग २ सघयण ५ छेवठ्ठविना सस्थान ५ हुडकविना, वर्णादि ४ आनुपूर्वी ३ नरकविना, विहायोगति २ परावातादिक ६ त्रसादिक १० अस्थिर ६ ए एकावन बाधे ॥ १३ ॥

छसगदुगदुगइगइग, अहीयातीसाअपुव्वकरणझ्झा । इगइगनवभेदसमे, सेसा नाम न बधति ॥ १६ ॥

टीका—छ सगत्ति १४ मिश्रनाम्न षट्त्रिंशत्प्रकृतयो बध्यते। तिर्यग्द्विक २ दुभगत्रिक ३ मध्यसहननचतुष्टय ४ मध्यसस्थान चतुष्टय ४ अशुभविहायोगति १ उद्योत १ एता पचदशप्रकृतय सास्वादनातेअतनीता तेनशेषा षट्त्रिंशत्प्रकृतयोबध्यते ।

ता षड्विंशत् जिननामसयुक्ता सम्यक्त्वेसप्तविंशत् बन्ध्यते । तथा देशविरतौमनुष्यद्विक औदारिकद्विकवज्रऋषभनाराचसहननवर्जा-नाम्न द्वात्रिंशत्प्रकृतयोबध्यते । प्रमत्तेऽपिताएवद्वात्रिंशद्बध्यते । अप्रमत्तेच अस्थिरद्विकअयश एतेत्रय प्रसज्यते आहारकद्विकमि-ल्नेएकत्रिंशद्बध्यते । अपूर्वकरणेपिएकत्रिंशद्बध्यते । छट्ठि षट्ट सगइत्ति सगदुगइतिद्विकपुनर्द्विक इगत्ति एक पुन इगत्ति एक । एभि अधिकात्रिंशत् अपूर्वकरणयावत्बध्यते । तद्यथा मिश्रेषट्-विंशत् सम्यक्त्वेसप्तविंशत् । देशविरतोद्वात्रिंशत्, प्रमत्तेद्वात्रिं-शत्, अप्रमत्तेएकत्रिंशत्, अपूर्वकरणेएकत्रिंशत् प्रकृतयोबध्यते । अपूर्वकरणावेत्रिंशत् व्यपगमे नवमे अनिवृत्तिबादरायेगुणस्थाने एका यशोनामकर्मरूपाप्रकृतिर्बध्यते । दशमे सूक्ष्मसपराये-प्येकाएवबध्यते । शेषाउपशातमोहाद्या नामकर्म न बध्यते । एकस्यसातवेदनीयस्यबधनसभवात् ॥ १४ ॥

टबार्थ —मिश्रगुणठाणे नामकर्मनी छत्तीस बाधे पन्नर नीक-ली ते केही तिरिदुग २ दुर्भग ३ मध्यसवयण ४ मध्यसस्थान ४ अशुभविहायोगति १ उद्योत १ ए पन्नर न बाधे । तथा समकि-तगुणठाणे जिननाम बाधे सटतीस बाधे देशविरति गुणठाणे बत्तीस बाधे मनुष्यदुग २ ओदारिकद्विक २ वज्रऋषभनाराच १ ए पाच नीकली तथा प्रमत्तगुणठाणे पण बत्तीस नामकर्मनी बाधे तथा सातमे गुणठाणे अस्थिर १ अशुभ २ अजस ३ ए तीन काढीइ आहारकद्विक २ मेलीइ एटले एकतीस प्रकृति बाधे आठमे गुणठाणे इकतीस नामकर्मनी बाधे पछे तीस नीकली तेवारे नवमे दशमे गुणठाणे एक जसनाम बाधे । शेष इग्यारमे, बारमे, तेरमे, चउदमे गुणठाणे नामकर्मनी प्रकृति बाधे नही हेतु अभाव माटे ॥ १४ ॥

आसुहुम अठण्ह, उवसमखीणम्मि सत्तमोहविणा।
चउचरिमदुगवेइई, अघाइकम्माइ नियआइ ॥१५॥

टीका—इति देवचन्द्रगणि विरचितायास्वोपज्ञविचारसारटीकायां बन्धाधिकार समाप्तिक्रमेनविवरणना यन्मयाविनिपुण्यट्टहकर्मबंधमुक्तोलोक सर्वोपिविनेनास्तु। साम्प्रतमुदयाधिकारस्तत्रमूलत उदयस्थानानि त्रीणि अष्टौ सप्त च त्वारि तानिगुणस्थानेसभाव्यन्ते। आसुहुमति। सूक्ष्मसम्परायगुणस्थानकमभि व्याप्यउदयेअष्टवेतकर्मप्रकृतयो भवन्ति। अयमर्थ मिथ्यादृष्टिगुणस्थानकमारभ्य सूक्ष्मसंपराययावदुदयेअष्टावपिकर्माणिप्राप्यन्ते, उवसम उपशान्तमोहलक्षणे। खीणति क्षीणमोहलक्षणेगुणस्थानद्वयेमोहविनामोहनीयवर्जयित्वा सप्तकर्माणि उदयेभवन्ति मोहनीयस्योपशान्तत्वात्क्षीणत्वाद्वा, चरमद्विकेसयोगिकेवलयोगिकेवलिरूपे गुणस्थानद्वये उदयेचतस्रोऽघातिकर्मप्रकृतय प्राप्यते घातिकर्मचतुष्टयस्यक्षीणत्वात्, नियआइत्ति, निजकानिस्वकृतानिनान्यत्कृतकर्म अन्येनभुज्यते॥ उक्तंच॥ पचमागे से नूणभवेवे अत्तकडाइकम्माइवेयति ?। परकडाइकम्माइवेयति ? गो, अत्तकडाइवेयति नोपरकडाइवेयति ॥ १५ ॥

टबार्थ—सूक्ष्मसंपराय दशमा गुणठाणा सुधी आठकर्मनो उदय छे उपशान्तमोहगुणठाणे क्षीणमोहगुणठाणे सातकर्मनो उदय छे मोहनीकर्मनो उदय नथी छेहला बेहुठे तेरमे चउदमे गुणठाणे च्यार कर्म अघाती वेदनी १, आउखो २, नाम ३, गोत्र ४, ए च्यार वदे अघातिनेस्युकहिइ जे आत्माना ज्ञानादिक गुण ते कारणरूप वे वर्मे छे ते माटे ते गुणने घात करे ते घाती कर्म कहीइ अने अव्याबाधादिक च्यार गुण ते कार्यरूप छे तेहने आवरे ते अघाती कहीइ ॥ १५ ॥

ओहेमिच्छेवीए, दुवीससत्तरङगारअहीयसय ।
मीसेसयचसम्मे, चउसयसगसोद्द देसम्मि ॥१६॥

टीका—अथोत्तरोदयप्रकृतयोगुणस्थानेषुचि यते,(उच्यन्ते)ओहेमिन्छेइत्यादितत्कर्मपुद्गलानायथास्थित्यतिक्रान्तानाउदयसमयप्राप्ताना यद्विपाकेनानुभवनेनवेदन स उदय उच्यते । ओघे सामान्येमिथ्यात्वे बीजेतिद्वितीयेसास्वादनेद्विविंश यधिकशत मिथ्यात्वे सप्तदशाधिकशतमास्वादने एकाधिकशतउदयेप्राप्यते तत्र नोक्तमेकशतविंशत्यधिकप्रकृतीनासम्यक्त्वमोहमिश्रमोहमिल्नेद्वाविंश त्यधिकशतमुदयेप्राप्यते । सम्यक्त्वमोहविपाकस्तुसम्यक्त्वशुद्धतत्त्वश्रद्धानलक्षणमोहयतिशङ्काद्यतिचारेण मोहयति दूषयतिमलिनकरोतीति सम्यक्त्वमोह मिश्रमोह मिश्रमिथ्यात्वसम्यक्त्वोभयरहित च मोह मिश्रमोहइतिमिथ्यात्वेसप्तदशशतउदयेभवति । मिश्रमोहनीय १ सम्यक्त्वमोहनीय १ जिननाम १ आहारकद्विक २ एतासापचानाउदयोमिथ्यात्वेनास्ति । इदमत्रहृदयमिश्रोदयस्तावत्सम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्थानेएवभवति । सम्यक्त्वोदयस्तुअविरतसम्यग्दृष्ट्यादौउदयोभवति । आहारकद्विकोदय प्रमत्तादौ, जिननामोदय सयोगिकेवल्यादौभवति । तदिदप्रकृतिपचकद्वाविंशतिशतादपनीयते ततोमिथ्यादृष्टिगुणस्थानेसप्तदशशतभवतीतिसूक्ष्मत्रिकसूक्ष्मअपर्याप्तसाधारणरूपअत पचमिथ्यात्व च एतत्प्रकृतिपचकस्यमिथ्यात्वेअतोभवति । अयमत्राशय सूक्ष्मनाम्नउदय सूक्ष्मैकेन्द्रियेषु अपर्याप्तनाम्न सर्वेष्वपिअपर्याप्तेषु साधारणनाम्नोऽनतवनस्पतिषु आतपनामोदयस्तु बादर पृथिवीकायिषुपर्याप्तेषुपन्नचैतेषुस्थितोजीव सास्वादनत्वलभते। नापिपूर्वप्रतिपन्नस्तेषूत्पद्यते । तथापितत्स्यातपनामोदयस्तत्रोत्पन्नमानस्यासमाप्तशरीरस्यैतसास्वादनत्ववमनात् समाप्ते च शरीरे तत्रा-

तपनामोदयोभवति । मिथ्यात्वोदय पुन मिथ्यादृष्टावेवतेनैतासाप-
चप्रकृतीना मिथ्यादृष्टागुदयस्थानस्तनङ्दप्रकृतिपचकंपूर्वोक्तसप्तदश
शतादपनीयते। नरकानुपूर्व्यपनयने च एकादशशतभवतीत्येतदेवाह
" सासाणेइगारसय नरयाणुपुविणुदयति " नरकानुपूर्व्युदयोहि नर-
के वक्रेणगच्छतोजावस्यभवति न च सास्वादनोनरकगच्छतीति
॥ यदुक्त ॥ बृहत्कर्मस्तवभाष्ये, नरयाणुपुव्विआए, सासणसम्म-
मि होइनहुउदयो । नरयम्मि जनगच्छइ । अवाणिज्झइ तेनसातस्स
॥ १ ॥ ततोनरकानुपूर्वीमृ॰मनिकानपमिथ्यात्वलक्षणप्रकृतिप-
ट्क सप्तदशशतादपनीयतेशेषसास्वादनेएकादशशतभवतीति । मी-
सत्ति मिश्रलक्षणेतृतीयगुणस्थानेशतमेकशतप्रकृतीनामुदय अन-
तानुबधिनश्चत्वार क्रोधमानमायालोभा स्थावरनामएकेंद्रियविक-
ला पचेंद्रियजात्यपेक्षयाअसपूर्णा द्वीन्द्रियजातित्रीन्द्रियजातिचतुरिंद्रि-
यजातयएतासानवानामकृतीनासास्वादनातेउदयात मिश्रेउदयोना-
स्ति । इयमत्रभावना । अनतानुबधिनामुदयेहिसम्यक्त्वलाभएवन-
भवति ॥ यदाह ॥ श्रीभद्रबाहुस्वामिपादा पढमिल्लुयाणउदये,
नियमासजोयणाकसायाण । सम्मद्दसणलाभ, भवसिद्धियावि न ल-
हति ॥ १ ॥ नापिसम्यग्मिथ्यात्वकोप्यनतानुबधुदयेगच्छतियो-
पिपूर्वप्रतिपन्नसम्यक्त्वोऽनतानुबधिनामुदयकरोति सोपिसास्वादनए-
वभवतीत्युत्तरप्यासामुदयाभावात् । स्थावरेकेंद्रियजातिविकलेंद्रियजा-
तयस्तुयथास्वमेकेंद्रियविकलेंद्रियपर्याप्तव उत्तरगुणस्थानानितुसंज्ञि-
पचेंद्रियएवप्रतिपद्यते। पूर्वप्रतिपन्नोपिपचेंद्रियेष्वेवगच्छतिउत्तरेष्वासा-
मुदयाभाव । तिर्यगानुपूर्वीमनुष्यानुपूर्वीदेवानुपूर्वीणामुदानुपूर्व्युदय
मिश्रे न भवति मिश्रेमरणाभावात् । न सम्ममीसो कुणइ कालमितिव-
चनात् । सास्वादनेचैकादशाधिकशतान् द्वादशप्रकृतयोऽपनीयते।
मिश्रमोहोदयश्चात्रभवति । तेन शतमिश्रेउदये अस्ति । सम्मेत्ति ।

सम्यक्त्वेअविरतिसम्यक्त्वलक्षणेगुणस्थानेमिश्रमोहोदयोनभवति।
तेनशेषा नवनवति तत्र सम्यक्त्वमोहनीयचानुपूर्वीचतुष्टय अनउद-
येप्राप्यते तत सर्वजीवापेक्षयासम्यक्त्वेचतुरधिकशतउदयेप्राप्यते।
तत्रउपशमक्षायिकसम्यक्त्वेसम्यक्त्वमोहनीयस्योदयोनभवति।सम्य-
क्त्वमोहस्यातिचारहेतुत्वात् एतयोश्चनिरतिचारत्वात् न सम्यक्त्वेमो-
होदय । क्षयोपशमसम्यक्त्वतुनासम्यक्त्वमोहनीयोदयोभवति प्रति-
पन्नसम्यक्त्व प्रवृद्धायु अभिनव वा नव्याकार कृत्वाचतुर्गतिषुग-
च्छति तस्यानुपूर्वीउदयोअनरालेभवति। तेनचतुरधिकशतचतुर्थेगुण-
स्थानेउदयेप्राप्यते । सगसीइति अमत्यार यानावरणाश्चत्वार क्रोध-
मानमायालोभा मनुजानुपूर्वीतिर्यगानुपूर्वी वैक्रियशरीरवैक्रियागोपाग-
देवगतिदेवानुपूर्वीदेवायु नरकगतिनरकानुपूर्वीनरकायु दुर्भगअ-
नादेयअयशइत्येतासासप्तदशप्रकृतीनाअविरतिसम्यग्दृष्टयातातुउद-
यप्रतीत्यछेदोभवति । तत इमा सप्तदशप्रकृतय पूर्वोक्तचतु श-
तादपनीयते शेषासप्ताशीतिर्देशविरतेउदयेभवति इदमत्रतात्पर्य द्वितीं-
यकषायोदयेहिदेशविरतिलाभएवनिषिद्ध यदागम । बीयकसायाणु-
दये, अपच्चक्खाणनामधेज्जाण । सम्मदसणलाभ, विरयाविरयनहुल-
हति॥ १ ॥ नामिपूर्वप्रतिपन्नस्यापिआनुपूर्वीउदयस्तुपरभवादिसम-
येषुनिष्पातरालगतावुदयसभव सचयथायोगमनुजतिरश्चावर्पाष्ट-
कादुपरिष्टात्सभविषुदेशविरत्यादिगुणस्थानेषुनसभवति । देवद्विक-
नरकद्विकचदेवनारकनैयमेवनचतेषुदेशविरत्यादे सभव । वैक्रिय-
शरीरवैक्रियागोपागनाम्नस्तुदेवनारकेषूदयरितयग्मनुष्येतुप्राचुर्येणा-
विरतिसम्यग्दृष्टयतेषु यस्तुउत्तरगुणस्था नेष्पपिकेषाचिदागमेविष्णु-
कुमारस्थूलभद्रादीना वक्रियद्विकस्योदय श्रूयते। सचोत्तरवैक्रियत्वाद-
त्रनविवक्षित गुणस्थानेयोगगणनाया हेतुगणनायातुविवक्षित-

एवदुर्भगमनादेयद्विकमित्येतस्तुनिस्त्र प्रकृतयोदेशविरत्यादौगुणप्र-त्ययानोदयनइत्येताअविरतेव्यवच्छिद्यवेइतिइगसिति ॥ १६ ॥

टबार्थ —हवे उत्तरप्रकृतिनो उदय चउदमे गुणठाणे कहे छे ते मध्ये ओघे एकसोबावीस छे ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ वेदनी २ मोहनी २८ आऊखा ४ नामकर्मनीसडसट्ठी ६७ गोत्र २ अनराय ५ ॥ एकसोबावीसनो उदय छे मिथ्यात्वगुणठाणे मिश्रमोहनी १ समकितमोहनी १ जिननामकर्म १ आहारक २ ए पाच काढीइ तेवार मिथ्यात्वे एकसो सत्तरनो उदय छे अने सास्वादनगुणठाणे सुषम तीन आतप १ मिथ्यात्व १ नरकानुपूर्वि १ ए ६ काढीइ तेवारे एकसो इग्यारनो उदय छे मिश्रगुणठाणेअनंतानुबंधी ४ स्थावर १ जाति ४ आनुपूर्वि ३ ए बार काढीइ मिश्रमोहनीमेलीइ तेवारे एकसोनोउदय छे, तथा समकितगुणठाणेमिश्रमोहनी १ काढिये अने समकितमोहनी १ आनुपूर्वि ४ ते मेलीइ तेवारे एकमो च्यारनो उदय छे ते मध्येथी देवत्रिक ३ नरकत्रीक ३ वैक्रिययुग २ मनुष्यानुपूर्वि तिर्यंचानुपूर्वि १ बीजी चोकडि ४ दुर्भग १ अनादेय १ अजस १ ए सत्तर काढीइ तेवारे देशविरति गुणठाणे सत्यासी प्रकृतिनो उदय छे ॥ १६ ॥

इगसीछगदुगसयरी, छसठिसठीयइगुणसठीअ
उवसततालीणे, सगपणपन्नाउ वेयति ॥ १७ ॥

टीका—प्रमत्तान् उपशातमोहयावत् एकाशीति प्रमत्ते छगसयरिति षट्सप्तति अप्रमत्तेदुगसयरित्ति द्वासप्तति अपूर्वकरणेछसठित्तिषट्षष्टि । अनिवृत्तौसठियत्तिषष्टि । सूक्ष्मसपरायेएकोन-

धष्टि । उपशातमोहेऽप्रयोजनीय । इयमत्रभावना । निर्यग्गति निपगायु नीचैर्गोत्रउद्योतच तृतीया कषाया प्रत्याख्यानाव-रणाश्चत्वार क्रोधमानमायालोभा एत अष्टौमप्तास्विति मैत्याद्पनीयते । तदाप्रमत्ते आहारकशरीरआहारकागोपागलक्षणयुगलप्रक्षेपात् एका-शीतिरुदयेभवति । इदमत्रहृदय । निर्यग्गतिनिर्यगायुर्धातिर्यग्वे-द्येएतेतेषुचदेशविरतान्तायेत्रगुणस्थानानिवर्तते नोत्तराणीत्युत्तरेषु तदुदयाभाव । नीचैर्गोत्रतुनिर्यगतिस्वाभाव्यात् । ध्रुवोदयिस्नपरा-वर्त्तते । ततश्चदेशविरतस्यापिनिरश्चोनीचैर्गोत्रोदयोऽस्त्येवमनुजेषुपुन सर्वस्यदेशविरतादेर्गुणिनोगुणप्रत्ययादुच्चैर्गोत्रमेवोदेति । उत्तरनीचै-र्गोत्रोदयाभाव उद्योतनामस्वभावादतिर्यग्वेद्यतेषुचदेशविरतान्तान्येव-गुणस्थानानिनोत्तराणि । उत्तरेषुनतुदयाभाव यद्यपियतिवैक्रियेप्सु-द्योतनामोदेति । उत्तरदेहेचदेवजइतिवचनात् तथापिस्वल्पत्वादि-ना केनापिकारणेनपूर्वाचार्यैर्नविवक्षित इत्यस्माभिरपिनविवक्षित-भगाधिकारेविवक्षितमपितृतीयकषायोदयेहिचारित्रलाभएवनभवति । उक्तच ॥ श्रीपूज्यै । तइयकसायाणुदए । पच्चक्खाणावरणनामधे-ज्जाण । देसिकदेसविरइ । चरित्तलभनउल्हति ॥१॥ इत्येताअष्टौ-प्रकृतय पूर्वोक्तसप्ताशीतेरपनीयतेशेषाएकोनाशीति । तत आहा-रकयुगलक्षिप्यतेयतप्रमत्तयतेराहारकयुगलस्योदयोभवति इति एका-शीति । तत निद्रानिद्रा १ प्रचलाप्रचला २ स्त्यानर्द्धिरूप-त्रिक आहारकयुगल एकाशीतेरिदपचकमपनीयते शेषा षट्सप्तति-रप्रमत्तेउदयेभवति । अयमाशयश्चस्त्यानर्द्धित्रिकोदय प्रमादाय-त्वात् अप्रमत्तेनसभवति । आहारकद्विकचविकुर्वणामाश्रित्य-प्रमत्तेएवविकुर्येअप्रमत्तेपिआहारकोदयीएवनजानि तथापिकेनापि-कारणेनऔदारिकोदयमुख्यत्वेननागीकृतमिति आहारकापचयौदा-रिकोपचयीचाप्रमत्तइतिवचनात् । क्रियमाणकृतमितिसूत्रोक्तत्वा-

नाधिकृतयोगाधिकारेत्वधिकृतमेव । सम्यक्त्वमोहनीय अर्द्धनाराच-कीलिकासेवार्त्तल्क्षणसहननत्रिक पूर्वोक्ताया पट्सप्ततेरपनीयते-शेषाद्वासप्तति अपूर्वकरणेउदयेभवति । भावार्यस्तुसम्यक्त्वमोहे-क्षपितएवश्रेणिद्वयमारुह्यते इति अपूर्वकरणादौ तदुदयाभाव । अतिमसहननत्रयोदयेतुश्रेणिमारोढुमेवनशक्यते । तथाविधविशुद्धे-रभावात् परिणामविशुद्धिश्चवीर्यबाहुल्याद्भवतिवीर्यबाहुल्यचसहन-नकारणेनतस्मात् अतिमसहननानामाद्यानूननाद्यवीर्योल्लासइति । हास्यादियट्कोदयमात्यापूर्वकरणेष्वभवति । तेनापूर्वकरणाते एवात तेनानिवृत्तिकरणेहास्यादिषट्कहीनभवति । तेनषट्षष्टि-रनिवृत्तिनादरेउदयेभवति । वेदत्रिकस्त्रीवेदनपुसकवेदपुरुषवेद-लक्षणसज्वलनत्रिक क्रोध १ मान २ मायालक्षण ३ एतासा-षण्णामनिवृत्तिनादरेछेदोभवति । तत्रस्त्रिया श्रेणिमारोहत्या स्त्री-वेदस्यप्रथममुच्छेद तत क्रमेणपुवेदस्यनपुसकस्यसज्वलनत्रय-स्यच, पसस्तुश्रेणिमारोहत प्रथमपुवेदस्योच्छेद तत क्रमेणस्त्रीवेद षडवेद य सज्वलनत्रयस्योच्छेद षढस्यतुश्रेणिमारोहत प्रथम षढ-वेदोच्छेद तत स्त्रीवेदपुवेदस्यसज्वलनत्रयस्योच्छेद एतत्प्रकृति-षट्कपूर्वोक्तषट्षष्टेरपनीयतेशेषा षष्टि सूक्ष्मसपराये उदयेभवति अत्र-चतुर्यलोभात इयमेकाप्रकृतिषष्टेरपनीयतेशेषाउपशातमोहेएकोन-षष्टिरुदयेभवति। तत्र ऋषभनाराच १ नाराच २ सहननद्वयउपशान्त-मोहेभवति । प्रथमसहननेनैवक्षपकश्रेण्यारोहात् तेनमूलतएवस-हननद्वयाभावेक्षीणमोहस्यसप्तपचाशत्उदयेभवति तत निद्रा १ प्रचलालक्षणनिद्राद्वयाभावे २ क्षीणमोहस्यचरमसमयेपचपचाशत् उदयेभवति । अपरेपुनराहु उपशातमोहेनिद्राप्रचलयोरुच्छेद । पचानामपिनिद्राणाघोलनापरिणामेभवत्युदय क्षपकाणात्वतिविशुद्ध-त्वान्निद्रोदयसभव उपशमकानापुनरनतिविशुद्धत्वात्स्यादपीति १७

टबार्थ—प्रमत्तगुणठाणे तिर्यग्गति १ तिर्यगायु १ नीचैर्गोत्र १ उद्योत १ तीजी चोकडी इए आठ काढीइ अने आहारकद्वुगमेळिये तेवारे प्रमत्ते ईक्यासीनो उदय छे अप्रमत्तगुणठाणेयी एहवी ३ आहारक २ नो उदय काढीइ तेवारे छहुत्तरनो उदय छे तिहा सातमे गुणठाणे हेतु अधिकारे योगाधिकारे आहारक शरीर कह्यो छे, अने उदयमे ना कह्यो छे ते नवो आहारक लब्धि प्रमत्ते करे अप्रमत्ते न करे, तिणे व्यवहारनये करवाने अभावना छे परक्रजूसूत्रनये आहारक शरीर उदय छे अपूर्वकरणे समकितमोहीनी तीन सवयण काढीये तेवारे बहुत्तरनो उदय छे नवमे गुणठाणे हास्यादिक ७ काढिये तेवारे छासठीनो उदय छे तेमायी सज्वल ३ वेद ३ ए ६ काढीये तेवारे सूक्ष्मसपराये साटनो उदय छे तेमायी सज्वलनो लोभ काढीइ तेवारे उपशातमोहगुणठाणेइगुणसाठनो उदय छे बारमे गुणठाणे ऋषभनाराच १ नाराच २ ए काढीये तेवारे पहिले भागे सत्तावननो उदय छे पछे नीद्रा २ काढीइ तेवारे बीजे भागे पचावननो उदय छे ॥ १७ ॥

बायालसयोगम्मि, बारसपयडी अयोगीचरमंते।
वेयईउईरणाय, अयोगोविणुसवगुणठाणे ॥ १८ ॥

टीका—तयाक्षीणमोहातेज्ञानावरण ५ दर्शनावरणचतुष्टय ४ अतरायपचक ५ मपनीयतेनदशेषकच त्वारिंशत्तीर्थकरनामोदयाच्च तत्प्रक्षेपेद्विचत्वारिंशत् सयोगिकेवलिनिभवति तत सयोगिकेवल्यतेऔदारिकद्विक २ अस्थिरद्विक २ खगतिद्विक २ प्रत्येकत्रिक ३ पदसस्थानानि अगुरुलघुचतुष्क अगुरुलघु १ उपघात २ परा-

घात २ उच्छ्वास ४ लक्षण वर्णचतुष्क वर्ण १ गंध २ रस ३ स्पर्श ४ लक्षण निर्म्माण १ तैजसशरीर १ कार्मणशरीर १ वज्रऋषभनाराचसंहनन १ दुःस्वर १ सुस्वर १ सातासातयोरेकतरत् कस्यचित्सातोच्छेदेऽसातातिष्ठति कस्यचित्असातोच्छेदेसात च तिष्ठति इति त्रिंशत्प्रकृतीनां छेदे तत अयोगिकेवलिनि द्वादशप्रकृतय उदयेभवन्ति, त्रसत्रिक ३ मनुष्यद्विक २ पंचेन्द्रियजाति १ जिननाम १ उच्चैर्गोत्र १ सुभगत्रिक ३ एकान्यतरवेदनीयप्रकृति १ एवं द्वादश अयोगिचरमान्ते व्यवच्छिद्यते । इत्युदयाधिकारे निष्कर्षितेति प्रसंगागतमुदीरणास्वरूपं लिख्यते । उदयावस्थाऽप्राप्तानां सत्तागतानां दलीकानां वीर्यकरणेनाकृष्य उदयत्वेन नीयते सा उदीरणा ॥ उक्तंच कर्मप्रकृतौ "जंकरणेणुक्कड्ढीय। उदये दिज्जइ उदीरणाएसा" इतिवचनात्, सा च ओघतोद्वाविंशत्यधिकशतंभवति । तत्रमिथ्यात्वे सप्तदशाधिकशतं सास्वादने एकादशाधिकशतं । मिश्रे शतं सम्यक्त्वे चतुरधिकशतं देशे सप्ताशीति प्रमत्तेएकाशीति तत्राप्रमत्ते उदये(स्त्यानर्द्धि)त्रीणात्रिक ३ आहारकद्विक २ छिद्यते, उदीरणायांतु एतत्पंचक वेदनीयद्विक मनुजायु, उदीरणा तु संक्लेशे न भवति तत्र परं संक्लेशाभावात् प्रकृतित्रय नोदीरयति तेन त्रिसप्तत्युदीरणा भवति। तत्र संहननत्रिक सम्यक्त्वमोहनीय एतच्चतुष्कापगमे एकोनसप्ततिरेवप्रकृत्यपहार सयोगिकेवलिनि एकोनचत्वारिंशदुदीरणा भवति। सयोगिचरमान्ते सर्वग्रासोदीरितत्वात् । अयोगिगुणे उदयएव नोदीरणा एवं अयोगिनविनासर्वेगुणस्थाने उदीरणाज्ञातव्या । अनपवर्गीतिसत्कर्मापि स्तिबुकसंक्रमेण संक्रमय्यक्षपयति इतिशेषः ॥ १८ ॥

टबार्थ—ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अंतराय ५ ए चउद काढीये तीर्थंकरनाममेळिये तेवारे सयोगीकेवलीगुणठाणे

बेनाळीसनो उदय छे ते येनाळीस मध्येथी औदारिक २ अस्थिर २ विहायोगति २ प्रत्येक २ संस्थान ६ वर्ण ४ अगुरुलघु ४ निर्माण १ तैजस १ कार्मण १ प्रथम संघयण १ दुःस्वर १ सुस्वर १ एक येन्नां ये त्रीस काढीये तेवारे अयोगीगुणठाणे बार प्रकृतिनो उदय छे अयोगीयकममने तेहनो अन भाव ए उदय, तीमहीज उदीरणा पण्ठो विशेष जे अप्रमत्तगुणठाणे वेदनी २ आउखो १ मनुष्यनो ए तीणनी उदीरणा नथी गुणठाणे नीकले पुरठे उदये ५ नीकले उदीरणाए आठमीरुपे पुरुठो भेद छे तेरमे गुणठाणे ओगुणचालीसनो उदय छे तेरमाने उते उदीरणा छे अयोगीगुणठाणे उदीरणा नथी संभाम उदय घुरो छे बार प्रकृतिना दल सत्र विद्यमान छे पण योगसत्तागत नथी अयोगसत्तागतने आश्रयीने उदय करवो ते इहां नथी ते माटे अयोगी ॥ १८ ॥

जा खीणता पणपण, उदओ नाणतरायकम्माण ।
थीए नवयपसत्ते, छ चउ खीणमि वेयति ॥१९॥

टीका—जाखीणति १९ अथमतिकर्मप्रकृतिगुणस्थानकविम-जगाह। यत्तत्क्षीणम्य पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् क्षीणमोहाना पंचज्ञानावरणप्रकृतय पचांतरायप्रकृतय तासामुदयोभवति अनेन ज्ञानावरणपयकांतरायपचकाना क्षीणमोहयावत् उत्पो5स्ति अत्र यथाक्रमप्रमत्तादिगुणस्थानेषु ज्ञानावरणीयांतरायप्रकृतीना दलिका सरता प्रतिसमय परिणामविशुद्ध्यानिर्जीर्यमाणा अपिसर्वथाप्रक्षयभावोक्षीणमोहातविना न भवति। तेनसर्वप्रकृतिपंचकपचकउदयेसत्तायाभवत्येव। ज्ञानावरणीयांतराययो क्षयोपशम मागदृष्ट। क्षयस्तुक्षी-

णमोहाते एव क्षायिकचारित्रविशुद्धाएवानयो क्षयोदृष्ट । बीयेत्ति द्वितीये दर्शनावरणीयाख्ये कर्मणि प्रकृतिनवक प्रमत्ते प्रमत्तगुणस्थानकयावत्उदयेभवति। अनेकजीवापेक्ष सूत्र तुएकजीवमाश्रित्यदर्शनावरणीयेचतुष्पचएवमुदयस्थानद्वय एव प्रमत्तात्तयावन्स्त्यानर्द्धित्रिक उदयेसभवति । यद्यपिस्त्यानद्व्युदयेपरिणामाशुद्धत्वस्थापिनगुणस्थानाभाव पारतम्यान्करिदष्ट्रोत्पानकशिष्यस्यसमानिष्कासन । नतु-गुणस्थानकाभावे किंतु स्त्यानद्व्युदयेकदाचित्पूर्व राादिश्रुतवता या-घानायभवति तदर्थमपनयइति । अप्रमत्तप्रथमसमयत क्षीणमोहस्य द्विचरमसमययावत् स्त्यानर्द्धित्रिकहीन निद्रा १ प्रचला २ द्वय-दर्शनचतुष्क च एवपदप्रक्रृ युदयोभवति । चउत्ति, दर्शनावरणचतुष्क क्षीणमोहस्यचरमसमयेउदयोभवति । भावनाचपूर्वभावितैव ॥१९॥

टबार्थ—गुणठाणे उदीरणा नथी, सत्ता पच्यासी छे वेस्ति-बुकसक्रमे चार मध्ये सक्रमी खपे छे, हवे आठकर्मनो भिन्न उदय विहचे छे खीणमोहगुणठाणा सुधी पाच पाचनो उदय छे ज्ञानावरणी तथा अतरायनो बारमागुणठाणा सुधी उदय छे बीजा दर्शनावरणी कर्मनो प्रमत्तगुणठाणा सुधी नवप्रकृतिनो उदय छे अप्रत्तथी माडी बारमागुणठाणाना प्रथमभाग सुधी दर्शनावरणी ■ प्रकृतिनो उदय छे, थीणद्धीनीन नथी बारमाने छेहले भागे दर्शनावरणी च्यारनो उदय छे तेरमे चउदमे दर्शनावरणीनो उदय नथी ॥ १९॥

छपणदुगदुगअहिया, चोसाअठारचउदस दुगम्मि ।
तेरससगइगउदयो, सुहमजा मोहणीजस्स ॥ २० ॥

अथमोहनीयप्रकृतीना उदयो गुणस्थानेदिशन्नाह, छपणत्ति

छइति,षडअधिकाविंशतिर्मिथ्यात्वेमोहनीयस्योदयस्तत्रसम्यक्त्वमोह-मिश्रमोहोदय स्वस्वस्थानेएवभवतितेन मिथ्यात्वेकषायपोडशकनो-कषायनवक मिथ्यात्वमोहश्चएवषड्विंशतिप्रकृत्युदयोऽनेकजीवापेक्ष-याभवति। एकजीवापेक्षयाउत्कर्षेन प्रकृतिदश क्रमेणोदेति। पणत्ति, पचाधिकाविंशति पचविंशति सास्वादनेउदयेभवति। मिथ्यात्वो-दयश्चमिथ्यात्वेएव नोत्तरत्र, इगदुगत्ति-द्विकद्विकअधिकाविंशति। इत्यनेनद्वाविंशतिर्मिश्रेद्वाविंशतिरेवअविरतसम्यक्त्वेउदयेभवति। तत्रअनतानुबंधिचतुष्टय सम्यक्त्वमोह मिथ्यामोहविनाद्वाविंशतिरुद-येमिश्रेभवति। अनतानुबंधिचतुष्कमिथ्यात्वमोहमिश्रमोहोऽपयवि-नाशेषाद्वाविंशति सम्यक्त्वेउदयेभवति। अट्ठारसि-देशविरतौ अ-प्रत्याख्यानचतुष्टयमन्तरेण शेषाअष्टादशमोहनीयप्रकृतय उदयेभवति। प्रत्याख्यानसज्वलनाष्टक नोकषायनवक सम्यक्त्वमोहनीय च एता उदयेभवति। प्रमत्ते प्रत्याख्यानावरणचतुष्टयहीन प्रकृतिचतुर्दशकमु-दयेभवति।अपूर्वकरणाख्ये गुणस्थाने सम्यक्त्वमोहविना त्रयोदशप्र-कृतयउदयेभवति। अनिवृत्तिबादरे हास्यषट्कोदयाभावे शेषा सप्तउ-दयेभवन्ति। अपूर्वकरणातेहास्योदयसभवस्तुनिमित्तात्प्रवृत्तानुस-निमित्तैकाग्रतायाहर्षोदय प्रशस्तोपिहास्यसद्भावेएवभवति। एव षट्कमपिभावनीय अनिवृत्तिबादरेतुशुक्लध्यानध्यायकत्वात्स्वरू-पावलम्बनसुखत्वेननैकाग्रतायामह्यानन्दएव नतु हर्ष। आनदहर्ष-यो क प्रतिविशेषस्तत्राह, आत्मोपयोगयोगोल्लासरूप हर्ष। आ-त्मोपयोगस्वभावनिश्चानिसुखानुभवलक्षणआनन्दइति, हर्ष हास्य-रत्युदयसहाय्यात्, पश्चात्तापश्चअरतिशोकोदयसहायात्। दोषात्स-कोच भयोदयसहायात्भयोद्वेग। प्रशस्तजुगुप्सासाहायात् अप्र-शस्तेप्रशस्त अप्रशस्तेऽप्रशस्त एवसर्वेभावनीय, इगत्ति-सू-क्ष्मसपरायाख्येदशमेगुणस्थाने, इगोत्ति-सज्वलनलोभाख्यमेकत्र-

पिसूमिमुदयेभवति । इयमत्रभावना सूक्ष्मसपराये किट्टीकृतानत-भागसूक्ष्मलोभदलिकानामुदयोऽस्तिनद्विपाकाध्यवसायानामत्यतसूक्ष्मत्वात् नत्र च नगोचरीभवति । अनुभवगम्याएवश्रुतज्ञानाधारध्यानावलनकत्वात् श्रुतज्ञानस्यद्रव्यश्रुताधीनत्वात्द्र यश्रुताभिमुखत्वचऔदयिकाधीनइतिमोहनीयस्योदय सूक्ष्मसपराययावदेवनपरत उपशातमोहादिपुमोहोदयाभावात् ॥ २० ॥

टबार्थ —मोहनीकर्मनी प्रकृतिनो, मिथ्यात्वगुणठाणे वीसनो उदय छे मिश्रमोहनी १ समकितमोहनीनो उदय नथी सास्वादनगुणठाणे मिथ्यात्वमोहनी विना पचवीसनो उदय छे मिश्रगुणठाणे अनतानुबन्धी ४ समकितमोहिनी १ मिथ्यात्वमोहिनी ६ ए छ विना बावीसनो उदय छे समकितगुणठाणे बावीसनो उदय छे देशविरतिगुणठाणे अप्रत्याख्यानी च्यार विना अढारनो उदय छे प्रमत्तगुणठाणे प्रत्याख्यानी चोकडी विना १४ नो उदय छे सातमे अप्रमत्तगुणठाणे पण १४ नो उदय छे आठमे गुणठाणे समकितमोहिनी विना तेरनो उदय छे अने नवमे अनिवृत्तिबादरगुणठाणे हास्य ६ विना सातनो उदय छे सूक्ष्मसपरायगुणठाणे एक लोभसज्वलननो उदय छे इग्यारमे बारमे तेरमे मोहनीकर्मनी प्रकृतिनो काइ उदय नथी अमोही छे ॥२०॥

चउ उदओआइचउगे, देसेदुगसेसयम्मि (सेसएसु) इगउदओ ॥
आउस्सप्रियणीस्सय उदओ दुणतुसवत्थ ॥ २१ ॥

टीका—आउत्ति—आयुष्कर्मणि आदिचतुष्के मिथ्यात्वसास्वादनमिश्रअविरतसम्यक्त्वलक्षणे प्रथमगुणस्थानचतुष्के चउ-

उदओ चतुर्णांआयुष्कर्मणा उदयोभवति चतुर्ष्वपिगतिषुगुणस्थान-कचतुष्कसभवात्। देसे देशविरताख्ये पचमे गुणस्थाने दुर्गति तिर्यगायुर्लक्षणद्वयउदयेभवति । सेसएसुत्ति–शेषकेषु प्रमत्ताद् अयोगिकेवलिपर्यंतेषु गुणस्थानेषु एकोदय एकमेवनरायुरुदयेभवति। सद्विवेकवत सयम सभवति तेन सयमद्गुणस्थानानिमनुष्यस्यैवभ-वति । आउस्साचि इतिआयुष उदयोनिवेदित वेदनीयस्योदय द्वयोरपिसर्वेनसर्वगुणस्थानेषुभवति । यद्यपिअयोगिकेवलिनि एक-वेदनीयोदयस्तथापिभिन्नजीवापेक्षयाकस्यचित्सातस्यकस्यचिदसात-स्य एवसर्वजीवापेक्षयाअयोगिचरमातयावद्दुभयवेदनीयोदय ॥२१॥

टबार्थ —देशविरतिगुणठाणेतिर्यचनोआउखो तथा मनुष्यनो आउखो उदय छे शेष छट्ठागुणठाणाथी मांडी चउदमागुणठाणा सुधी आउखाकर्म आश्रयीमिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ३ अविरति ४ समकितएच्यारगुणठाणेच्यारआउखानो उदय छे, वेदनीकर्मनी बे प्रकृतिनो उदय सर्वचउदगुणठाणे उदय छे, एक जीवने एक समय एक वेदनी उदय होय, परअनेक जीव आश्रयी हुम छे ॥ २१ ॥

चउसठी गुणसठी, इगपणपन्नाचोयालदुगठाणे ॥
बायाला अपमाये, नवहीयतीसचउगुणेसु ॥ २२ ॥

टीका—अथनामकर्मप्रकृतीनांगुणस्थानेषुविभजन्नाह चउसठीत्ति तत्रमिथ्यात्वेआहारकद्विकजिननामविना चतुःषष्टिर्नामप्रकृत्यउदये भवति जिननामोदय सयोगिकेवलिनिआदौ प्राप्यसासादने प्रमत्ताम-मत्तेषु तेन न मिथ्यात्वेउदय एकोनषष्टि सास्वादने भवति सूक्ष्म-त्रिकातापनरकानुपूर्व्यालक्षणप्रकृतिपचकमिथ्यात्वे एवोदय नसास्वा-

दनादिषु इगपणपन्ना इति इगपन्ना एकपचाशत् मिश्रे नामकर्मप्रकृतय उदयेसति,स्थावरनामकर्म जातिचतुष्कशेषानुपूर्वीत्रिक च मिश्रेनोदय कारणभावनाचपूर्ववत् ,सम्यक्त्वेआनुपूर्वीचतुष्कोदयस्तेनपचपचाश-द्दुदय सभा पते,दुगठाणेति द्विकगुणस्थानकेदेशविरतिप्रमत्तारव्ये गुणस्थानद्वयेचतुश्चत्वारिंशनामकर्मप्रकृतीनामुदयोभवति तनदेवद्विकनरकद्विकमनुजानुपूर्वीतिर्यगानुपूर्वी एतासाचअविरतोसत्यामुदयात् वैक्रियस्पसहजस्याविरतोएवोदयात्,उत्तरवैक्रियस्य कारणेनाग्रहीनत्वात् दुर्भगनिकगुणप्रत्ययान्नोदयइति प्रमत्तेचनिर्यग्गातिउद्योतरूपप्रकृतिद्वयतिर्यग्मुख्यवेद्यचनापनीत तथापिआहारकद्विकोदयात्चतु चत्वारिंशदेवप्रकृतीनामुदयोज्ञेय ।अपमायेत्ति-अप्रमादलक्षणेसप्तमेगुणस्थानेआहारकद्विकहीनानाद्विचत्वारिंशत्प्रकृतीनामुदयोभवति आहारकोदयश्चाप्रमत्तपर्यंत हेत्वधिकारेदगेऽपिलब्ध्युदयोत्कर्षाभावान्नाधिकृत तत्कारणचकेवलिनोविदन्ति, अतिप्रसहननत्रिकाभावेऽपूर्वकरणाद्युपशातमोहावेषुचतुर्षुगुणस्थानकेषुनवत्रिंशधिकानिंशत्नवाधिकानिंशद्दुदयेभवति ॥ २९ ॥

टबार्थ —हवे नामकर्मनी प्रकृतिगुणठाणे कहे छे मिथ्यात्वगुणठाणे आहारक जिननाम विना चोसठिनो उदय छे, तथा सास्वादनगुणठाणे सूक्ष्मत्रिकआतप १ नरकानुपूर्वि १ ए पाच विना ओगणसाठनो उदय छे मिश्रगुणठाणे स्थावर १ जाति ४ आनुपूर्वी ३ वलि काढीइ तेवारे एकावन्ननो उदय छे एकावन्नमा आनुपूर्वी ४ मेलीये तेवारे समकितगुणठाणे पचावन प्रकृति नामकर्मनी उदये छे ते मध्येयी वेद २ नरक २ वैक्रिय २ मनुष्यानुपूर्वी १ तिर्यगानुपूर्वी १ दुर्भग १ अनादेय १ अजस १ इग्यार विना चौतालीसना उदय छे पाचमे देशविरति गुणठाणे

छे छठे प्रमत्तगुणठाणे तिर्यचनीगति १ उद्योत १ ए बे नीकले अने आहारक मेले, इहा पण चोमालीस नामकर्मनी प्रकृतिनो उदय छे सातमे अप्रमत्तगुणठाणे आहारक २ दुगविना बेतालीस प्रकृतिनो उदय छे, छेहला संघयण ३ काढिये एटले ओगुणचालीस प्रकृतिनो नामकर्मनी आठमे तथा नवमे इग्यारमे ए च्यार गुणठाणे उदय छे ॥ २२ ॥

सगतीसखीणमोहे, अडतीससयोगि नवअयोगमि ।
नामुदयो गोयम्मि, जादेसिदुगम्मिगमियरे ॥ २३ ॥

टीका—सगतीसत्ति-सप्तअधिकात्रिंशत्सप्तत्रिंशत् क्षीणेक्षीण मोहेउदयत्वेनभवति। क्षपकश्रेणिप्रारभप्रथमसहननत्वेन एवतेन-सहननद्विकाभावात् । सप्तत्रिंशदुदय क्षीणमोहेभवति । तीर्थंकर-नामोदयेक्षिप्तेअष्टात्रिंशदुदयेनामप्रकृतय सयोगिगुणस्थानकेउदयेभ-वति। अयोगिकेवलिनि चतुर्दशगुणस्थानकेन च नामकर्मप्रकृतयोवे-द्यते। अत्रशैलेशीकरणे घनीभूतत्वात्शरीराद्युदयाभावएवतेननाप्रत-वनामप्रकृतीनाचर्जीवविपाकित्वात् आत्मप्रदेशेपुनर्तदलानांसन्निक-र्षात् तद्विपाकश्चामूर्तादिगुणरोधलक्षणसद्भावादरगत यइति नामोदयो एव प्रकारेणनाम्नउदयोज्ञातव्य । गोयमित्ति गोत्रेकर्मणि जादेसति-यावत्देशविरतिगुणस्थानकंतावद्विक उच्चं नीचैर्लक्षणगोत्रद्विकउदये-भवति । इतरपुप्रमत्तादारभ्यअयोगिकेवलिपर्यंतेपुगुणस्थानकेपु इगत्ति एकउच्चैर्गोत्रएवोदय गुणवतानीचत्वनास्त्येव हरिकेशीप्र-मुखेपुउच्चैर्गोत्रोदयएवदेवादीनापूज्यत्वात्। स्वयचासकोचात् नीचै-र्गोत्रोदयीस्वयमेवसकुचनेचमद्वेषेदुगछाचद्वेषप्रत्यया न तेषानीचैर्गो-त्रोदय एवज्ञेयम्॥इति देवचन्द्रगणिविरचितायास्वोपज्ञविचारसारटीका-

इयमुदयाधिकार उदयाधिकारम्यार याकरणेविज्ञापितचश्रीपूज्ये निष्ठुदयेभवत्व यापक्रोजन ॥ २३ ॥

टबार्थ—ते मध्ये ऋषभनाराच १, नाराच २, ए बे संघयण विना सात्रीस प्रकृतिनो उदय षीणमोह गुणठाणे छे तेरमे सयोगी गुणठाणे तीर्थंकरनाम मेलीने तेत्रीसनो उदय छे चउदमे अयोगी गुणठाणे त्रस ३ शुभग ३ मनुष्यगति १, पचेंद्रीजाति १, जिननाम कर्म ए नवनो उदय छे ए नाम कर्मनो उदय गुणठाणाने विषे कह्यो गोत्रकर्मनो देश विरति गुणठाणा सूधी वे गोत्रनो उदय छे उठायी पछे एक-उच गोत्रनो उदय छे एटले उदयनो अधिकार कह्यो ॥२३॥

उइरतिपमत्तता, सगट्ठमी(समी)सट्ठआउवेयविणा॥
छगअपमत्ताइ तओ, छपचसुहुमोपणुवसंतो ॥२४॥

टीका—अयमूलोदीरणागुणस्थानेविभजयन्नाह। तनउदीरणास्थानानिमूलत पचअष्टौसप्तषट्पचद्वय तनोच्यते उइरति इत्यादि २४ उदीरणालक्षणचकम्मपकृतौ जकरणेणुदुक्किया उदए दिज्जेए उइरणा-एसा पगइठिइअणुभागप्पएसमुक्कत्तरविभागा १ यत्कर्मनापन्नपरमाण्वात्मकदलिककरणेनयोगसंज्ञिकेनवीर्यविशेषेणकषायसहितेन असहितेनचउदयावलिकाबाहिर्वर्तिनीभ्य स्थितिभ्योऽपकृष्य उदयेदीयते उदयावलिकायामक्षिप्यतेएषाउदीरणा उक्तच उदयावलियबाहिरिल्लठिईहिंतो कसायसहिएण असहीएणं वा योगसन्नेणकरणेण दलीयमाकदियउदयावलियापवेसणउदीरणत्ति साचचतुर्विधा तद्यथा प्रकृत्युदीरणास्थित्युदीरणाअणुभागोदीरणाप्रदेशोदीरणाच एकैकापिद्विधामूलप्रकृतिविषयाउत्तरप्रकृतिविषयाच अत्रप्रकृत्युदीरणावसर

मिथ्यादृष्टिप्रभृतय प्रमत्तातायावदत्राप्यनुभूयमानभवायुरावलिका- वशेषनभवतितावत् सर्वेप्यमीनिरन्तरमष्टावपिकर्माण्युदीरयन्ति आ- वलिकावशेषेपुअनुभूयमाने भवायुषिसत्तत्र आवलिकावशेषस्यकर्मण अनुदितदलिकाभावान्नोदीरणा उदीरणादिआवलिकामात्रमेवदलि- कमुदीरयति तस्यचोदीरितत्वा नेति मीसग्रहेसम्यग्मिथ्यादृष्टि पुन- रष्टावेवकर्माण्युदीरयति ननुकदाचनापिसम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्था- नकेवर्तमानस्यसत आयुष आवलिकावशेषत्वाभावात् सय्यन्तर्मुहूर्ताव- शेषायुस्कएवतद्वावपरित्यज्यसम्यक्त्वमिथ्यात्वचानियमात्प्रतिपद्यते इति अप्रमत्तादयस्त्रयोऽप्रमत्तापूर्वकरणानिवृत्तिबादरलक्षणावेद्यायु- र्विनावेदनीआयुर्वीअनरणपट्कर्माण्युदीरयन्ति तेपामतिविशुद्धत्वावे- दनीयायुषोरुदीरणायोग्याध्यवसायस्थानाभावात वेयणीआणपमत्तो इतिकर्मप्रकृतिवाक्यात् ततपरअनन्तरोक्तानितानिचतानुदीरयन्ति यावन्मोहनीयमावलिकावशेषनभवति आवलिकावशेषेचमोहनीयेत- स्याप्युदीरणायाअभावाच्छेषाणिपचकर्माणिउदीरयन्ति "छपचसुहुमो" सूक्ष्म सूक्ष्मसपरायारय गुणस्थानक प्रथमपदआवलिकाशेषे- चलोभोदय पचोदीरयन्ति सूक्ष्मसंपरायगुणस्थानस्योजीव लक्षणयात्तेय एवसर्वेन पण्उवसन्तोत्ति उपशान्तमोहवेदनीयायुर्मोहनी- यवर्जाणिपचकर्माण्युदीरयति ॥२४॥

टबार्थ —हवे उदीरणा गुणठाणे मूल कहे छे मिथ्यात्वसास्वादन १, अविरतिसमकित १, देशविरति १, प्रमत्त १, एतले गुण- ठाणे सातनी पण उदीरणा छे आठनी पण उदीरणा छे तिहा भवने अते एक आवलि आउखो शेष थाकता आउखानो उदय पामीये पर उदीरणा न पामीइ तेणे सातनी उदीरणा पामीइ बीजू आठनी उदीरणा छे अने मिश्र गुणठाणे मरण

नथी ते माटे आठनी उदीरणा छे अने अप्रमत्तादिकनीन गुणठाणे वेदनी कर्म तथा आउखानी उदीरणा नथी जे ए कर्मने उदीरणा सक्लेश परिणामे छे ते माटे सातमायी आगले वेदनी कर्मनी उदीरणा न करे उदयावली काई आणी मुक्या छे ते उदय आवे छे सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे पहिले भागे छनी उदीरणा छे, पछे मोहनी कर्मनो उदय एक आवलि शेष रहि तेवारे पाचनी उदीरणा छे इग्यारमे गुणठाणे पांचनी उदीरणा ॥२४॥

पणदोखीणदुजोगी, णुदीरगअयोगीसतमोह जा ॥
अडंसगखीणअमोहा, चउचरिमदुगेयसतसा॥२५॥

टीका—पणदोखीणत्ति २५ क्षीणमोहोअनतरोक्तानि पचकर्मांण्युदीरयतितानिचनावदुदीरयति यावत्ज्ञानावरणदर्शनावरणान्तरायाण्यावलिकाशेषाणिभवति आवलिकाशेषेतुद्वेएव नामगोत्रलक्षणेकर्मणीउदीरयति दुजोगित्ति द्वेकर्मणीनामगोत्रारये योगामनोवाक्कायलक्षणाविद्यते यस्ययोगीइत्यनेनसयोगीकेवल्युदीरयति घात्युदयाभावान्नमूलत अन्नातिपुवेदनीयायुषोस्तुदीरणापूर्वोक्तकारणादेवनभवति अतोद्वेएव "णुदीरगअयोगित्ति" अयोगीकेवलीनकन्याप्युदीरक योगवीर्याकरणवीर्याभावात् इत्युक्तामूलोदीरणा उत्तरोदीरणा तु ओघतद्वात्रिंशत्युत्तरशतनमिथ्यात्वे सप्तदशाधिकशतसास्वादने एकादशाधिकशत सम्यक्त्वे चतुरधिकशतदेशे सप्ताशीति प्रमत्ते एकाशीति अप्रमत्तेथीणद्धीनिकाहारद्विवेदनायद्विकमनुजायुर्वर्जंगेपत्रिसप्तति उदीरयतिअपूर्वेत्वेकोनसप्तति रनिवृत्तिबादरेत्रिपष्टि सूक्ष्मेसप्तपचाशत् उपशातेषट्पचाशत् क्षीणमोहप्रथमभागेचतुपचाशत् द्विचरमसमयेद्विपञ्चाशत् सयोगिकेवलिनिचतुर्दशापग-

मेतीर्थंकरोपेतेचएकोनचत्वारिंशत् उदीरणायाभवति सयोग्य-
तेसर्वेषामपिउदीरणाभाव सचग्रासोदीरितत्वेनाकरणवीर्यत्वेनच
स्वामित्वतूदयवदेवभावनीय वेदनीयमनुजायुष स्वामित्वप्रम-
त्तपर्यंतमेवेति इति श्रीदेवचन्द्रगणिविरचितायास्वोपज्ञ विचारसार
टीकायाउदीरणाधिकार ॥ कर्मोदीरणाव्याख्यानकरणेयाथार्थ्यभाव
विज्ञानेपरभावानुगवीर्यं स्वभावसत्ताग्रकभवतात् ॥ अथसत्ताकम
कर्मणाज्ञानावरणादीनायोग्यपरमाणूनाबन्धनसक्रमणादिकरणेनआत्म-
प्रदेशावस्थितानालोलीभावमापन्नानायास्थितिरवस्थानसद्भाव स-
त्ताचतुर्विधाप्रकृत्यादिभेदं तनमूलत सत्तास्थानानिअष्टौसप्तचतु-
र्लक्षणानितत्राणितन सतमोहजा इतिशात उपशात अतुरया-
पन्नमोहोयस्य शातमोह एकादशगुणस्थानकयावत् अष्टानाम-
पिकर्मणासत्ताअस्त्वेन "सतेअटयाल्सय" जावुसमुविजिणविइअनइए
इतिकर्मस्तववाक्यात् "सगखीणत्ति" क्षीणमोहेगुणस्थानकेमोहकर्म-
तापन्नदलिकानासर्वथात्मप्रदेशावस्थितेरभावात् अमोहामोहकर्मरहि-
तसप्तानकर्मसत्तायाप्राप्यते "चउचरिमदुगेत्ति" चरिमद्विकेसयोगिअ-
योगिलक्षणेगुणस्थानेचउइतिचत्वारिवेदनीयायु नामगोत्रलक्षणानि-
सत्तायासति घातिनातुसर्वथाक्षयात् तत्रसयोगिगुणेउदीतानिअ-
नुदितान्यपिसत्तास्थानानिलभ्यते अयोगिगुणेतुउदितान्येव अ-
नपचाशीतिसत्कर्मण सर्वप्रकृत्युदयस्तुस्तिबुकसक्रमेणज्ञेय स्तिबु-
कसरूपश्चयथामिनवशरावकेबिंदुमानजलद्विबिंदुमानजलशनै शनै
परिक्षिप्यते ततजलशरावकेप्रविष्टदृष्टिगोचरीभवति शरावकास्या-
मेवलभते तथाएता पचाशीतिप्रकृतय यथायोगद्विचत्वारिंशत्प्रकृ-
तिषुसक्रमतितद्रूपत्यालभते भिनाइतिचेत्नसक्रम्यते तर्हि पएसक-
म्म नीयमा वेएइ इतिभगवतीवाक्यात् अनुदितानाक्षयाभावस्तेनस-
क्रम्यक्षपयतिइतिज्ञेय गुणाधिरूढोजीवोद्विविध उपशमश्रेणिगतो-

क्षपकश्रेणिगतश्चतत्रचारित्रमोहगतैकविंशति प्रकृतिउपशमनात्तउप-
शमश्रेणिगत तेषामेवक्षपणात् क्षपकश्रेणिगत द्वयोरपिजीवयो
र्वेद्येत्तुतीनमदस्थितिरसबन्धरूपोमेदोनतुपकृतिरूपमेद उदयोदीर-
णायानभेद सत्तायामप्रकृतिभेदात्मिनाधिकारस्तत्रस्वल्पत्वात्प्रथम-
मुपशामिकानामेवोच्यते ॥ २५ ॥

टवार्थ—बारमे क्षीण मोहगुणठाणे पहिले भागे पाच मूल कर्मनी उदीरणा छे पछीं ज्ञानावरणी १ दर्शनावरणी १ अंतराय १ ए तीन कर्मनी आवलिका शेष उदय थका उदीरणा नथी ते माटे नाम १ तथा गोत्र १ ना उदीरणा छे । ए तेरमे सयोगी गुणठाणे नाम १ तथा गोत्र १ नी उदीरणा छे । अयोगी गुणठाणे उदीरणा नथी, जे कारणे अजोगी गुणठाणे करण वीर्यनो अभाव छे अने उदीरणा ते करण वीर्यथी थाये ते माटे उदीरणा नथी । हवे सत्तानो अधिकार कहे छे ॥ इग्यारमा गुण ठाणा पर्यंत मूल आठ कर्मनी सत्ता छे । सत्ता आठ कर्मनी छे, क्षीण मोह गुणठाणे मोहनी कर्मनी सत्ता नथी, तेणे सात कर्मनी सत्ता छे तेरमे चउदमे गुणठाणे वेदनी १ तथा नाम १ गोत्र १ आऊषो १ ए च्यार कर्मनी सत्ता छे ॥ २५ ॥

अडचत्तसयसता, उवसत ताविजिणुवीयतइए
उवसमसमत्तीण, उवसमसेढी पयन्नाण ॥ २६ ॥

टीका—अडचत्तेति २६ मिथ्यादृष्टिगुणस्थानात्प्रभृतिउप-
शातमोहगुणस्थानयावदष्टचत्वारिंशदधिकशतसत्तायांभवति विजिणु-
त्ति विगतजिननामयस्मात्तद्विजिनजिननाम विरहितनदेवाष्टचत्वारिं-

शशनभवति केन्याह द्वितीयेसास्वादने तृतीयेमिश्रप्रष्ट्वा सामाणमिरस रहिसुरानि यमिनिवचनात् सास्वादनमिश्रयो समचत्वारिंशशनभवनि इदमत्रहृदय इट्टमिथ्यादृष्टेश्चत्वारिंशमधिशनमत्तापा ॥ यन्नाह । आग्बद्धनरकायु क्षयोपशमिकसम्यक्त्वमवाप्यतीर्थंकरनामोरवमारभ्यते तदासौनरकेषूत्पद्यमान सम्यक्त्वमवश्यवमति तेनमिथ्यादृष्टेस्तीर्थंकरनामोऽपिसत्तागभवनि पुन पूर्वअप्रमत्तादिपुगतम्याहारकद्विकमवश्येनि । अवायुश्चतुष्टयतुबद्धजीवापेक्षया सास्वादनमिश्रयोस्तुतास्मि रोरजिननामरहितेसमचत्वारिंशशतनसत्तायाभवनि जिननामसत्कर्मणोजीवस्यतद्भावानवाप्ते स्तद्भावस्यचतुर्द्रसम्यक्त्वन श्र हृत्कर्मस्तवभाष्येप्युक्त नित्ययरेणविहीण सीयालसयतुसतणहोइ सासायणम्मिउगुणे सम्मामीसेयपयडीण १ अविरतसम्यगृदृष्टयादीनाअष्टमदर्शनसप्तकानाअष्टचत्वारिंशशतसत्तायाभवति केषामित्याह उवसमेत्तिउपशमसम्यक्त्वनाउपशमश्रेणिचारित्रमोहोपशमन्याश्रेणि यथाक्रमोत्तरोत्तरगुणारोहरूपाप्रपन्नानामेवभवति पूर्वममत्तादिप्वाहारकादिद्वतसत्ताकस्योपशमश्रेणिवनोभवति ॥ २६ ॥

दवार्थ—हवे उत्तर कर्मनी सत्ता कहे छे पहेलो अने अडतालीस उत्तर प्रकृतिनी सत्ता छे इग्यारमा गुणठाणा सुधी बीजे सास्वादन गुणठाणे अने त्रीजे मिश्र गुणठाणे जिन नामनी सत्ता नथी तेणे एकसोसडतालीसनी सत्ता छे ए उपसम समकितवंत जे जीव छे, पहीला सातमा पर्यंत चढ्या होये तेहने एकसो सडतालीसनी सत्ता थाये अनादि मिथ्यात्व जीव प्रथमथी समकित पामे । तेहने जिन नामनी १ आहारक १नी सत्ता बंध करे पछी होये पर प्रथम नीत होये । ए उपसम श्रेणि चडतो जीवनी । सत्ता जांणवी ॥ २६ ॥

इगचत्तसयसता, खायगसमत्तसतसेढीण ॥
अडतीससयनवमे, खवगसेढीपवन्नाण ॥ २७ ॥

टीका—अथवात्रकश्चिद्विसंयोजितानन्तानुबन्धिचतुष्कस्ततस्तत्प्रत्यय-जन्यनरकतिर्यगायुषोरबन्धकः बद्धदेवायुर्मनुजायुषिवर्त्तमानः क्षयो-पशमसम्यक्त्वचारित्रशालिआहारकादिरुपशमश्रेणिमारोहति तस्य-तिर्यगायुर्नरकायुरनन्तानुबन्धिचतुष्टयलक्षणप्रकृतिषट्करहितशेषद्विच-त्वारिंशदधिकशतसत्तायामाप्यते ॥ यदुक्तं बृहत्कर्मस्तवभाष्ये ॥ अणतिरि-नारयरहीअ नायाल सयं च याणसत्तम्मि उवसामगस्सपुव्वा तिपढ्ढि-सुहुमोवसंतम्मि । १ । यः कश्चिज्जीवः क्षयोपशमसम्यग्दृष्टिः विशुद्धाध्यवसायबलेनकारणापन्नात्मार्गसापेक्षोपियथा प्रभुत्वतत्त्वभाव-र्मकार्यातिसर्गश्रद्धानुभवलीनः तेनकारणेनाप्रमवीर्येणक्षयीकृतानुब-न्धिचतुष्कमिथ्यात्वमिश्रसम्यक्त्वमोहलक्षणसप्तकस्तस्योपशमश्रेणिग-तस्यापि एकचत्वारिंशदधिकशतसत्तायामवति यावदुपशान्तमोहगुणस्थान-कतावन्नक्षायिकसम्यक्त्वोपशमश्रेणिस्थानादीनामेवभवति अथवा पूर्वबद्धायुः पश्चात्क्षयोपशमीभूयक्षायिकसम्यग्दृष्टिर्भवति तस्यसप्तक-क्षयेणैकचत्वारिंशदधिकशतमेवसत्तायां स पुनः मनुष्यः क्षपकश्रेण्यारो-हानुकूलस्तस्यनरकतिर्यग्देवायुषः सत्ताभावात् केवलमनुष्यायुस्त-त्सत्ताकएवतेनअविरतिगुणस्थानात्दर्शनसप्तकायुस्तु (स्वदं) याभा-वात् अनिवृत्तिबादरप्रथमभागंयावत् अष्टत्रिंशदधिकशतसत्तायांभवति ॥ २७ ॥

अर्थ—जे जीव पहेला क्षयोपसमकित होइ ते जीवने परिणामनि विशुद्धता थाये । अनन्तानुबंधी ४ मिथ्यात्व मोहिनी १ समकित मोहिनी १ मिश्र मोहिनी १ एवं सात प्रकृति क्षय करे । तेहने एकसो एकताळीसनी सत्ता थाये

ते चोथायी माडी इग्यारमा पर्यंत १४ नी सत्ता होये, ए जीव क्षायिक समकिती उपसमश्रेणि छे तेहने इम होये इम क्षपक श्रेणि पडिवज्या जीवने प्रथमथी नारकी १ तिर्यंच १ देवता १ नी गतिना आऊपा टाले, तेवार पछी अनतानुबंधी ४ दर्शन मोहिनी ३ एव दश खपावे तेवारे चोथायी माडी नवमा गुण ठाणाना नव भाग छे। तेहने पहिले भागे एकसो अडतीसनी सत्ता छे। इहा कोइ पूछे जे तीन सत्ता तो कोड जीवने न होइ तो खपावे किहायी ? तेहनो उत्तर जे परिणामे आऊपानो बंध थाये एहवा परिणामनी योग्यता टाले तेहनी क्षेपणा गवेपी छे, बीजे भागे एकसो बावीसनी सत्ता छे, तीजे भागे एकसो चउदनी सत्ता छे, चोथे भागे एकसो तेरनी सत्ता छे, पाचमे भागे एएकसोबारनी सत्ता छे, छठे भागे एकसोछनी सत्ता छे, सातमे भागे एकसोपाचनी सत्ता छे आठमे भागे एकसोचारनी सत्ता छे नवमे भागे एकसोतीननी सत्ता छे ॥२४॥

दुसयसुहुमेखीणे, इगसयननवइसत्तपयडीउ ॥
पणसी(ह)सयोगीअयोगी, तेरसखबीउणसिज्झति२८

टीका—द्वितीयभागेतुस्थावर १ सूक्ष्मद्विक २, तिर्यग्गति १, तिर्यगानुपूर्वीलक्षणद्विक नरकगतिनरकानुपूर्वीलक्षण २, आतपोद्योतद्विक २, स्त्यानर्द्धित्रिक ३, एकेंद्रियजातिचतुष्क ४, साधारणनामलक्षणप्रकृतिपोडशकतिर्यग्नरकगतिनैमित्तिकसचायाक्षीयते सदाद्वाविंशशतसत्तायाभवति तृतीयभागेअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानकषायाष्टकक्षीयते तदाचतुर्दशशतसत्तायाभवति नपुंसकवेदे

क्षीणेनयोदशशमसृत्ताबातर्येभागेभवति तत स्त्रीवेदेक्षयेपचमेभागेद्वादशशनसत्तायाभवति ततोहास्यषट्कक्षयेषष्ठे भागेषटधिकशतसत्तायाभवति तत पुरुषवेदक्षयेसप्तमेभागेपचाधिकशनभवतिसत्ताया तत सज्वलनक्रोधेक्षीणेअष्टमेभागेचतुरधिकशनभवतिसत्ताया तत सज्वलमानाभावेननवमेभागेत्र्यधिकशतसत्तायाभवति पुरुषप्रतिपत्तेरयक्रम अथस्त्रीमारभिरातप्रथमनपुसकवेदनतपुरुषवेदनतोहास्यषट्कतन स्त्रीवेदअथनपुसक प्रारभकस्ततोऽसौ अनुदीर्णमपिप्रथमस्त्रीवेदक्षपयति तत पुरुषवेदतत पट्कततोनपुसकवेद तत सज्वलनत्रिक इत्येवक्रमतोनेय अनिवृत्यतमसमयेसज्वलनमायाक्षयेदशमेसूक्ष्मसपरायाख्येगुणस्थाने द्व्यधिकशतसत्तायाभवति क्षपकस्येकादशेअगमनात् क्षीणेक्षीणमोहाख्येगुणस्थानेसज्वलनलोभस्यसूक्ष्मसपरायातेक्षयणादेकाधिकशत प्रथमेभागेक्षीणमोहेभवति ततोनिद्राद्वयक्षयगतेक्षीणमोहस्यद्वितीयेभागेनवनवति सत्तायाभवति क्षीणमोहेचरमसमयेज्ञानावरणीयपचकमतरायपचकदर्शनावरणचतुष्टयक्षपयित्वासयोगिकेवलीगुणस्थानेपचाशीतिसत्कर्माभवति अयोगिद्विचरमसमययावत् पचाशीतिसत्ताभवति अयोगिचरमसमयात्पूर्वसमयेद्वासप्तति क्षपयतिताएवदर्शयति देवद्विकदेवगतिदेवानुपूर्वीलक्षणस्वर्गोतिद्विक शुभाशुभविहायोगतिरूपगतद्विकस्पर्शाष्टकवर्णपचक रसपचकतनुपचक बधनपचक सघातनपचक सहननषट्क सस्थानषट्क अस्थिरषट्क अगुरुलघु १ उपघात १ पराघात १ उच्छ्वास १ निर्माण १ पचक अपर्याप्तनामप्रत्येकत्रिक पाउगतिक सातासातरूप एकतरवेदनीय सुस्वरनीचैर्गोत्रमितिद्वासप्ततिर्क्षीयते ततोऽयोगिचरमसमयेत्रयोदशसत्तायाभवति मतान्तरेमनुजानुपूर्व्यपिअत्रैवक्षीयते अत्रमनुजानुपूर्वीक्रमेण भिन्नोदयोनास्ति स्तिबुकसक्रमस्यापिअत्राभावात् प्रदेशउद-

नाभावेचाश्रयात् अत ततोपूर्वमेवमनुजत्रिकयश आदेयसुभग-जिननामउच्चैर्गोत्रपचेन्द्रियजाति सातासातयोरेकतरवेदनीयम्एतास्त्र-योदश मनुष्यानुपूर्व्वीमनरेणद्वादशचरमसमयेक्षपयित्वासिद्धिंप्राप्नो-तिजीव अव्ययममूर्त्तोखटायानागात्यतिक्रांतिकनिर्द्वंद्वनिरामयल-क्षणामिति ॥ २८ ॥

टबार्थ —सूक्ष्मसपरायगुणठाणे एकसोवेनी सत्ता छे, खीण-मोहगुणठाणे बारमे पहिले भागे एकसो एकनी सत्ता छे तेहने निद्रा २ गये नवाणुनी सत्ता वीजे भागे छे। ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अतराय ५ ॥ खपे तेवारे तेरमे तथा चउदमे गुणठाणे पचासीनी सत्ता छे ते चउदमाना छेला वे समय रहे तेवारे वेंत्तेर प्रकृति खपे तेवार छेहले समये तेर प्रकृ-तीनी सत्ता रहे ते तेर प्रकृति अयोगीचरमसमये खपाविने सिद्ध थाये ॥ २८ ॥

खीणजासत्तसा नाणा, वरणतरायएपच ।
वेयणीयगोअकम्मे, दुगदुगसत्ताअयोगिंता ॥२९॥

टीका--अथसत्तास्वामित्वमाह ॥ खीणजाइति २९ क्षीण-मोहगुणस्थानकयावत्ज्ञानावरणातरायपचकसत्ताप्राभवति वेदनीय-गोत्राख्यद्विकद्विकसत्तायाअयोगिगुणस्थानकयावद्भवति प्रथमभा-गातएकैकस्यसत्ताभवति ॥ २९ ॥

टबार्थ —खीणमोह बारमा गुणठाणासीम ज्ञानावरणीनी पाच प्रकृतिनी सत्ता छे, अतरायनी पाच प्रकृतिनी सत्ता छे, वेदनी कर्मनी बे प्रकृतिनी सत्ता छे, गोत्रकर्मनी बे प्रकृतिनी सत्ता

छे अयोगीना प्रथम भाग पर्यन्त छे छेहले भागे वेर रहे ते-
वारे एक वेदनी तथा एक गोत्रनी सत्ता रहे छे ॥ २९ ॥

बीएउवसतता, नवखवगाणतुवायराओछग ।
खीणेछचउसता, मोहेअडवीसउवसते ॥३०॥

टीका—बीएउवसतनवाइति द्वितीयेदर्शनावरणीयाख्येकर्मणि-
उपशांतमोहांतनवापिप्रकृतीनांसत्ताभवति क्षपकानांतुअनिवृत्ति-
प्रथमभागपर्यंतनवानामपिदर्शनावरणप्रकृतीनांसत्ताभवति प्रथम-
भागात्पोडशापगमात्परेस्त्यानर्द्धिनिकाभावेनतत परक्षीणमोहप्रथम-
भागयावतूदर्शनावरणीयस्यषट्प्रकृतीनांसत्ताभवति क्षीणमोहस्यच-
रमसमयेदर्शनावरणीयचतुर्थ्यभवसत्तायाभवति "खीणदुचरिमेगसय-
इतिदरस्सओ" इतिवचनात् तत पश्चदर्शनावरणीयमत्तानभवति अथ
मोहनीयकर्मण सत्तास्वामित्वमुच्यतेमोहनीयेकर्मणिउपशमसम्यक्त्वो-
पशमचारित्रत्र उपशमश्रेणिगतस्यउपशांतमोहगुणस्थानकयावत्
अष्टविंशतिप्रकृतय सत्तायांसभवति कृतत्रिपुंजएवाननग्राग अकृ-
तत्रिपुंजस्यानपेक्षैवग्रंथिभेदकालेप्रथमकृतत्रिपुंजीक्षयोपशमसम्यक्त्व-
लभते अकृतत्रिपुंजीतुउपशमसम्यक्त्वलभते इतिसिद्धांताशय कर्म-
ग्रंथिकास्तुकृतत्रिपुंजीअकृतत्रिपुंजीजीवोपिप्रथमउपशमसम्यक्त्वमे-
वलभतेइतिवदति ॥ ३० ॥

टबार्थ—बीजे दर्शनावरणा कर्मे उपशमश्रेणिने उपसांत-
मोहगुणठाणामीम नवनी सत्ता छे । क्षपकश्रेणिने नवमा गुण-
ठाणाना बीजे भागे सोल प्रकृति खपे तेवारे थीणद्धी तीन
खपे छे तेहने ६ प्रकृतिनी सत्ता रहे छे दर्शन ४ निद्रा २
ने खीणमोहगुणठाणे पहिले भागे दर्शनावरणी छनी सत्ता छे

बीजे भागे निद्रा २ क्षय करे तेवारे दर्शनावरणी च्यारनी सत्ता छे चारमाने अंते दर्शनावरणी ४ सत्ता खपे छे मोहनीकर्मनी उपसमसमकित उपसमचारित्रीयाने इग्यारमा गुणठाणा पर्यंत अठावीसनी सत्ता छे ॥ ३० ॥

अविरईसमत्ताओ, इगवीसउवसमम्मिसतसा ॥
खवगम्मियइगवीस, तेरसबारसइगारच ॥३१॥

टीका—अविरयेत्यादि वाइतिपक्षांतरेइत्यनेनक्षायिकसम्यक्त्वे उपसमश्रेणिस्थस्यअविरतसम्यग्गुणस्थानकात् आरभ्यएकादशयावत्दर्शनसप्तकविनाएकविंशतिमोहप्रकृतिनासत्ताभवति खवगम्मि क्षायिकसम्यक्त्वक्षपकश्रेणिस्थस्यप्रथममनंतानुबंधिचतुष्कदर्शनत्रिकेक्षीणेअविरतसम्यक्त्वगुणस्थानतोऽप्रमत्तयावत्मोहनीयस्यएकविंशति सत्ताभवति ततोकषायाष्टकेक्षीणेऽनिवृत्तिनादरतृतीयभागेमोहनीयस्यत्रयोदशसत्ताभवति ततोनपुंसकेक्षीणेद्वादश स्त्रीवेदेक्षीणेएकादश ॥ ३१ ॥

टबार्थ—तथा क्षायिकसमकिती उपसमश्रेणीने चोथा अविरति गुणठाणाथी मांडीने इग्यारमा उपशांत मोह गुणठाणा पर्यंत चार कषाय नवनो कषाय एकवीसनी सत्ता छे उपसमभावे मोहनीनी प्रकृतिनो उदय नथी तेवारे परसत्ताथी काढी नसके ए रीत छे। हवे क्षपकश्रेणिने प्रथमथी अनंतानुबंधी ४ दर्शनमोहिनी तीन खपे तेवारे एकवीसनी सत्ता छे पछी आठ कषाय खपे तेवारे तेरनी सत्ता छे, पछी नपुंसकवेद खपावे तेवारे बारनी सत्ता छे, पछी स्त्रीवेद खपावे तेवारे इग्यार प्रकृति मोहीनानी सत्ता छे ॥ ३१ ॥

पचयचउतिदुइग, सतठाणाणिमोहसतम्मि ॥
सुहुमज्जआउकम्मे, चउसताअपमत्तज्जा ॥३२॥

टीका—हास्यषट्कक्षयेपच पुरुषवेदक्षयेचनस्र सज्वलनलो-भस्यक्षयेनिस्र सज्वलनमानक्षयेद्वो सज्वलनमायाक्षयेएका स-ज्वलनलोभप्रकृतिनःक्षयेसत्ताभावोमोहस्यसूक्ष्मसपरायपावत् मोह-नीयसत्ताक्षीणमोहादौतुनैवेति सत्तास्थानानानिमोहसत्तायासूक्ष्मस-परायपानवडतिसनन आयु कर्मणिअममत्तयावत् चतुर्णामपिसत्ताभ-वनि प्रनद्वापेश्यैवनि ॥ ३२ ॥

टबार्थ—पछे हास्यादिक खपावे तेवार मोहिनाने पाच प्रकृतिनी सत्ता छे, ते मायेथी पुरुषवेद खपावे तेवारे मोहि-नीनी च्यार प्रकृतिनी सत्ता छे, पछी सज्वलनो क्रोध खपावे तेवार आठमे भागे तीन प्रकृतिनी सत्ता छे, ते सज्वलनोमा बे प्रकृतिनी सत्ता छे पछी सज्वलनी माया खपावे तेवारे दशमे सूक्ष्म सपराय गुणठाणे एक लोभनी सत्ता छे दशमाने अते ते पिण खपावे ते अमोही थाये ए दशमा गुणठाणा पर्यत क्षपकश्रेणिवालाने मोहिनी कर्मनी सत्ता छे, बारमो खीणमोही छे आउखा कर्मनी अप्रमत्त गुणठाणा पर्यंत च्यार आउखानी सत्ता छे, एवं आउखो बांध्यो होय तेमाटे उपशमश्रेणे जीवने च्यार आउखानी सत्ता कही ते योग्यतानी छे, उपशमश्रेणिवाला एक आउखो बांधी पछी श्रेणि चढे ॥ ३२ ॥

घउदुगइगसतता, खीणाओएगसतनाममि ।
तिनवइउनसततता, असीइखवगेनवअयोगि ॥३३॥

टीका——तत्र परउपशमश्रेण्यावर्तमानानानाजीवविवक्षानापूर्वबद्धायुषाएकादशायावत्चतुर्णामपिसत्ताभवति मिर्जीवापेक्षमिदं वाक्य अथवाकश्चिन्मनुष्योदेवायुर्बन्धाउपशमश्रेणिमारोहते तस्यभुज्यमानमनुजायुरभिनवबद्धदेवायरितिद्वयो सत्ताभवति पुनर्य औपशमिकसम्यग्दर्शनीअबद्धायुरेवोपशमश्रेणिमारभते तस्यभुज्यमाननरायुषसत्ता(या)भवति क्षीणाओइति क्षायिकसम्यग्दर्शनीस्वपकश्रेणिमारोहतिनस्यैकमेवमनुजायु सत्तायामवति नाम्मिति नामकर्मणिउपशमश्रेणिस्थस्यउपशातमोहयावत् अनेकजीवापेक्षयात्रिनवति सत्तायामाप्यतेक्षपकश्रेणिमारूढस्यनवमगुणाद्वितीयभागेत्रयोदशनामप्रकृतिक्षये अशीतिरेवसत्तायायावदयोगिद्विचरमसमयेतावद्भवति अयोगिचरमसमयेनवनामप्रकृतीनासत्ताभवति ततस्तासांक्षयेजीव सिध्यतिसकलप्रदेशपुद्गलकर्मशेषरहितएवभवति इतिश्रीदेवचन्द्रगणिविरचितायास्वोपज्ञविचारसारटीकायांसत्ताधिकार सत्ताकर्म यारयाकरणेजीवस्वभावविज्ञानेसत्ताकर्मविमुक्ता भवतुर्जीवा सदाजिना ॥३३॥

टबार्थ ——चारे आऊखानी सत्ता भिन्न जीव अपेक्षाये होये आऊखा बान्ध्या विना उपशम श्रेणि माडे तेहने एक वर्त्तमान मनुष्यायु सत्तामा होये ए रीते पण होइ क्षपकश्रेणि जीवने श्रोथायी माडी चउदमा पर्यंत एक्न मनुष्यायु सत्तामा होय हवे नाम कर्म्मनी सत्ता गुणठाणे कहे छे उपशमश्रेणिनी अपेक्षाइ सामान्य अनेक जीवने नाम कर्मनी त्राणु प्रकृति सत्तामा छे अने क्षपकश्रेणिने नवमा गुणठाणाना पहिला भाग पयन त्राणुनी सत्ता छे पछी बीजे भागे सोलखपावे तेवारे तेर नाम कर्मनी खपे तेवार तेरमा गुणठाणा पर्यंत ऐंसीनी सत्ता छे पछी चउदमाने छेहले भागे तिऊत्तरखपावे तेवारे अयोगीनेने छेहले भागे नवनी सत्ता रहे छे ॥३३॥

सव्वजीयठाणमिच्छे, सगसासाणेपणअपज्जसन्निदुग।
सम्मेसन्निदुविहो, सेसेसुसन्नीपज्जत्तो ॥३४॥

टीका—अथगुणस्थानेषुजीवस्थानानिरूप्यते इहसुहुमबायरे गिंदीबितिचउअसन्निपचेंदि अपजत्तापज्जत्ता कमेणचउदसजीअठाणा १, इहास्मिनजगतिसक्षेप यार यायासंग्रहनयेन एगेआया इतिएकएवजीवभेदोमध्य यार यायाविशुद्धनगमआस । पवहारनयेन-चतुर्दशजीवस्थानानिकेनक्रमेणेतिचेदित्याह सूक्ष्मबादरैकेंद्रियद्विनिचतुरसंज्ञिसंज्ञिपचेंद्रियाइनिसप्तएतेसप्तअपर्याप्तपर्याप्तभेदाश्चतुर्दशएकस्पर्शनलक्षणमिंद्रियंयेषांतेएकेंद्रिया पृथ्व्यप्तेजोवायुवनस्पतय तेच प्रत्येकद्विधासूक्ष्मा बादराश्चतत्रसूक्ष्म नामकर्मोदयात्सूक्ष्मा सकललोकव्यापिन बादरनामकर्मोदयाद्बादरास्तेचलोकप्रतिनियतदेशवर्तिन द्वेस्पर्शनरसनलक्षणेइंद्रियेएषांतेद्वीन्द्रिया कृमिपूतरकादय त्रीणिस्पर्शनरसघ्राणरूपाणिइंद्रियाणियेषांतेत्रींद्रिया कुंथुमत्कुणयूकादय चत्वारिस्पर्शनरसनघ्राणचक्षुर्लक्षणानिइंद्रियाणियेषांतेचतुरिंद्रिया भ्रमरमक्षिकामशकवृश्चिकादय पचस्पर्शनरसनघ्राणचक्षु श्रोत्रलक्षणानिइंद्रियाणियेषां ते पचेन्द्रिया मत्स्यकलभसारसुरनारकमनुष्यादय तत्रातिर्यग्मनुष्यपचेन्द्रियाद्विविधासंज्ञिन असंज्ञिनश्चतत्रसंज्ञानसंज्ञाभूतभवद्भाविभावस्वभावपर्यालोचनदीर्घकालिकीसंज्ञायासासंज्ञाविद्यते येषांतेसंज्ञिन विशिष्टस्मरणादिरूपमनोविज्ञानभाजइतियावत् तद्विपरीता स्त्वसंज्ञिनोमनोविज्ञानविकलाइत्यर्थं एतेचप्रत्येकद्विधापर्याप्तकाअपर्याप्तकाश्च पर्याप्तिनामपुद्गलोपचयज पुद्गलग्रहणपरिणमनहेतुशक्तिविशेष साचविषयभेदात्षोढा आहारपर्याप्ति शरीरपर्याप्ति उच्छ्वासपर्याप्ति भाषापर्याप्ति मन पर्याप्तिरिति-

तत्रयथालोमादिआहारमादायखलरसरूपतयापरिणामयति साआहारपर्याप्ति यथारसीभूतमाहारशरीरतया परिणामयति साशरीरपर्याप्ति येचपुद्गला शरीरतयापरिणमय्यइन्द्रियाकारसद्भावयतयापरिणामयतिसा शरीरपर्याप्ति यथाउदयानुगशक्तिविशेषयापुनरुच्छ्वासप्रायोग्यवर्गणादलिकमादाय उच्छ्वासरूपतया परिणमय्यालम्ब्य च मुञ्चति साउच्छ्वासपर्याप्ति यथानुभाषायोग्यवर्गणाद्यगृहीत्वाभाषात्वेनपरिणामय्यालम्ब्यवचनरूपतयामुञ्चतिसाभाषापर्याप्ति यापुनर्मनोयोग्यवर्गणादलिकगृहीत्वामनस्त्वेनपरिणमय्यालम्ब्यचिन्तनव्यापारकृत्वा मुञ्चति सामन पर्याप्ति एताश्चयथाक्रममेकेन्द्रियाणाविकलासंज्ञिनातथासंज्ञिनाचतु पञ्चषट्सख्याभवन्ति स्वस्वयोग्यपर्याप्तिपरिसमाप्ता पर्याप्तका तदपरिसमाप्तिविकलास्तेऽपर्याप्तका तेऽपयाप्तकाद्विधालब्ध्याकरणेश्चयेचाहारशरीरेन्द्रियपर्याप्तिनिष्पाद्यम्रियते तेलब्धिऽपर्याप्तका येचाहारशरीरेन्द्रियाणिनिष्पादितानि शेषा स्वयोग्या पर्याप्तय निष्पादयिष्यतितेकरणापर्याप्तका इतिम नजीवट्टाणमिच्छे इत्यादिसर्वानिजीवस्थानानिचतुर्दशाऽपिमिथ्यादृष्टिगुणस्थानकेभवन्ति सगत्ति सप्तजीवस्थानानिसास्वादनेभवन्ति पञ्चापर्याप्ता बादरकेन्द्रियाऽपर्याप्ता द्वीन्द्रियाअपर्याप्ता त्रीन्द्रियाअपर्याप्ता ३ चतुरिन्द्रियाअपर्याप्ता असंज्ञिपञ्चेन्द्रियाअपर्याप्ता ५ संज्ञिद्विकसंज्ञिअपर्याप्तपर्याप्तलक्षण केवलापर्याप्तकाश्चेहकरणापर्याप्तकाद्रष्टव्या नतुलब्धिअपर्याप्तकास्तेषुमध्येसास्वादनसहितस्योत्पादाभावात् भावनाचकश्चिदेवादिगतोजीव प्रथमपृथिवीकायादिकआयुर्बध्वाततः परप्रथिभेदसमयउपशमसम्यक्दर्शनमवाप्यसासादनगतआयु क्षयेएकेन्द्रियोभवति तस्योत्पत्तिकालेसभाव्यते विकलेन्द्रियासंज्ञिनातुतिर्यग्मनुष्यतम्तंयत्रमृतस्यसभाव्यते सम्मे अविरतिसम्यग्दृष्टिगुणस्थानेसंज्ञीद्विविधोऽपर्याप्तरूपोद्रष्टव्य इहापर्याप्तकरणापेक्षयानेयो नतुलब्ध्यय-

र्याप्तक सम्यग्दृष्टिर्भवतिशेषेपुमिश्रदेशविरत्याद्ययोगिपर्यंतेपुगुण-स्थानकेपुसज्ञीपयाप्तलक्षणमेकजीवस्थानमाप्यते इति याख्यातानि गुणस्थानकेपुजीवस्थानानि ॥ ३४ ॥

स्यार्थ —हवे गुणठाणाने विषे जीवना भेद कहे छे मिथ्यात्व गुणठाणे सर्व चउद भेद जीवना छे सास्वादन गुणठाणे अपर्याप्ता पाच बादर अपर्याप्तो १, बेंद्रीअपर्याप्तो १, तेंद्रीअपर्याप्तो १, चौरिंद्रीअपर्याप्तो १, असज्ञीपचेंद्रीअपर्याप्तो १, ए पाच अने सज्ञीपचेंद्रीअपर्याप्तो १, तथा सज्ञीपचेंद्री पर्याप्तो ए बे एव सात जीवना भेद छे सास्वादन गुणठाणे ते जाणवा सहि चोथे समकित गुणठाणे सज्ञी पचेंद्री पर्याप्तो तथा अपर्याप्तो ए बे जाव भेद छे तथा देशविरति प्रमत्ते १ अप्रमत्तअपूर्वकरण, अनिवृत्ति बादर सूक्ष्मसपराय उपशातमोह क्षीणमोह सयोगीगुणठाणे अयोगीकेवली ए अग्यार गुणठाणे १ पचेंद्रियपर्याप्तो जीवभेद छे

सव्वगुणठाणमज्झे, सनामगुणठाणगचनेयव्व । अज्जवसायमसखा, सुहुमताइवेगचउचरिमे ॥३५॥

टीका—सप्रतिगुणस्थानकेपुगुणस्थानान्याह ॥ सव्वगुणठाणति ॥ ३५ ॥ सर्वेषुगुणस्थानकेषुमध्येस्वनामेनिस्वस्वकीयनामस्वनामपञ्चगुणस्थानक स्वनामगुणस्थानक "नेअव्व" ज्ञातव्यमित्यथ यतोमिथ्यात्वेमिथ्यात्व एवगुणस्थानक "सासादन" सासादनमेवगुणस्थानक मिश्रे मिश्रमेवगुणस्थानक एवमवसेयम् "सुहुमित्ति" सूक्ष्मसपराययावत् प्रत्येक एकैकस्मिन्गुणस्थानके मिश्रअ वसायास्तीव्रतीव्रतरतीव्रतममदमदतरमदतमरूपा, परिणामभेदाअसख्ये

या संख्यातीताश्चेया तत्रमिथ्यात्वेपितीव्रमंदादिभेदेनअसंख्येया परिणामा सति एवंसास्वादनेपिसम्यक्त्वप्रतिपातनं प्रथमसमयेअ पा सत्क्लिष्टाद्वितीयसमयेविशेषत संक्लिष्टा तृतीयसमयेविशेषतरसंक्लिष्टा-श्चेया नोनिशुद्धाभवंति शेषेपुगुणेपुसंक्लिष्टा अप्पतरयेपाविशुद्धा अप्पतरयेयाभवति सयमस्थानानामपिअसंख्येयत्व कषायक्षयोप-शमत्व सयमश्रेणिन ज्ञेय। सयमस्थानेचारित्राविभागानाय स्थान-पन्तिरनिश्चेय, स्थानानाचतु स्थानिकत्वमेवसूक्ष्मसपराययावत् उ-पशांतमोहक्षीणमोहसयोगिअयोगिगुणेचारित्रस्यैकमेवाध्यवसाय-स्थानमोहोदयाभावात्नाध्यवसायभेद उक्तंचभगवत्या "निग्गयाण-एगेसजमठाणेसणायाणएगेसजमठाणे" एवंचतुर्दुनिर्जरास्थाना-निअनेकानिप्रतिसमयमसंख्येयगुणनिर्जराधिकृत्वात् प्रतिगुणस्थान-कस्य "असखगुणनिज्झराजीवा" इतिवचनात् ॥ ३५ ॥

टबार्थ —सर्व चउद गुणठाणाने विषे पोताना नामनो तेहज एक गुणठाणो पामीये, जे कारणे मिथ्यात्वमा मिथ्यात्व गुणठाणो, सास्वादनमा सास्वादन गुणठाणो, एम सर्वने जाणवो अने एक एके गुणठाणे तीव्रमदमदतरतीव्रतर परिणामभेदेअ-ध्यवसाय असंख्याता जाणवा एक मिथ्यात्व गुणठाणो पिण मिथ्यात्वनी तीव्रमंदता अनेक प्रकारनी छे सास्वादनमे पिण तीव्र मदतानो प्रतिसमयमेछे एक समयना अध्यवसाय असं-ख्याता छे कषायना तीव्रमदता क्षयोपशमथी छे ते जानाइ कषायनो क्षयोपशम छे तासुधी अध्यवसायनो पण भेद छे एतले दशमा गुणठाणापर्यंत अध्यवसाय असंख्याता छे तरत-मयोग छे ते नली छठाण वडीया छे। इग्यारमाथी माडी उपरले च्यार गुणठाणे मोहनो उदय नथी तेमाटे चारित्रनो एक

अध्यवसाय छे। निर्ज्जरा थानकमे अनेक भेद छे, परचारि-
त्रना थानकनो भेद नथी ॥ ३५ ॥

मिच्छिदुगिअजय(यि)योगा, हारदुगुणाअपुव्वपणगेओ।
मणवयउरलसविउव्वि, मिसिससविउव्व(व्वि)दुगदेसे।३६।

टीका—अथगुणस्थानकेषुयोगान्निरूपयन्नाह। मिच्छुगत्ति ३६॥
योगा पंचदशधा तत्रमनोयोगश्चतुर्द्धा सत्यमनोयोग असत्यमनो-
योग सत्यामृषामनोयोग असत्यामृषामनोयोग तत्स्वरूपचेद "स-
च्चाहीयासन्नामिह सतोगुणापयच्छाबानिचवरीयामोसामीसाजातदुभ-
(य)सहावा १ अणहिगयाजाना सुविसुच्चुविंयाकेवलिअसच्चमोसा ए-
ववाग्योगोपिचतुर्वाद्रष्टव्य। काययोग सप्तधा औदारिक औदारिक-
मिश्र,वैक्रियवैक्रियमिश्र,आहारकआहारकमिश्र, कार्मणश्चतत्रौदारि-
ककाययोगस्तिर्यग्मनुष्ययो तयोरेवापर्याप्तयो रौदारिकमिश्रकाय-
योग वैक्रियकाययोगोदेवनारकयोस्तिर्यग्मनुष्ययो र्वैक्रियलब्धिमतो
वैक्रियमिश्रकाययोगोऽपर्याप्तयो र्देवनारकयोस्तिर्यग्मनुष्ययोर्वा वैक्रि-
यस्यारभकालेपरित्यागकालेचआहारकचतुर्दशपूर्वविद आहारकमि-
श्रकाययोग आहारकस्यप्रारभसमयेपरित्यागकालेचकार्मणकाययो-
गोऽष्टप्रकारकर्मविकाररूप शरीरचेष्टास्वरूपोंतरालगतावुत्पत्तिप्रथ-
मसमयेकेवलिसमुद्घातसमयेचयोगस्वरूपवस्तुत तत्त्वार्थटीकानो-
ल्लिख्यते वीर्यांतरायक्षयोपशमजनितेनपर्यायेणात्मन सम्बयोयोग ॥
सचवीर्यप्राणोत्साहपराक्रमचेष्टाशक्तिसामर्थ्यादिशब्दवाच्य अथ-
वायुजत्येनवीर्येवीर्यांतरायक्षयोपशमजनितपयायमितियोग सच-
कायादिभेदत्रिविध तत्रकाय शरीरमात्मनोनिवास पुद्गलद्रव्य-
घटत स्थविरस्यदुर्बलस्ययष्टयालंबनयष्टिकादिवद्विषमेषुपथाहकस्त-
द्योगाज्जीवस्यवीर्यपरिणामशक्ति सामर्थ्यकाययोग यथाग्निसप

र्वात् घटस्परक्तत्वापरिणाम तथा मन कायकरणसव्यपेक्षपरि-
णति स्वयात्मपुन्नकायायत्तवागवर्गणायोग्यस्कन्धानिसृज्यमाना-
वाक्त्वेनकरणनामापद्यते तेनवाक्करणेनसवन्धो मनोमद्र्यापेसमुत्थान-
भापकशक्ति सवागयोग सत्यादिभेदाच्चतुर्धा नन्न अत्रपुद्गलानस्तुनो-
नसत्यादिभेदभाज किंतुज्ञानमेवसत्यादिभेदमुपयन तदुपग्रहारो-
तथापिनद्वलाधीनसावकत्मत्वाद्व्यागपिसत्यादिभेदेनोपचर्यते तथा
आत्मनाशरीरवत्तावलंभदेशेगृहीतामनोवर्गणायोग्यस्कन्धा मननार्थक-
रणभावमाल्पवते ततस्तवत्वादात्मन पराक्रमविशेषोयोग सत्यादि-
विकल्पाच्चतुर्धा ननु अत्रापिमनोवर्गणायोग्यस्कन्धानसत्यादि पदेशा
परमार्थत किंतुनोइन्द्रियावरणक्षयोपशमसमुद्भूतमनोविज्ञानपरिण-
तात्मनोवलाधानकारित्वादात्मसहचरितत्वादुपचारत सत्यादि-
व्यपदेश उदारप्रधानसहजानगाहनामहत्वादुदारा तीर्थंकरादय-
स्तेषामिदमौदारिक अथवा उदारप्रधानमोक्षसाधनरूपकार्यनिष्प-
घवेतस्माच्छरीरात् तद्धेतुमनशरीरमौदारिक विविधक्रियादृश्यादृश्य-
रूपकारणोवैक्रिय सूक्ष्मार्थग्रहणार्थतीर्थंकरातिशयादिमहिमावलो-
कनार्थंवाआह्रियतेइत्याहारक, सर्वकर्मप्ररोहबीज सांसारिकसुखदु ख
भाजनकर्मवर्गणानिष्पन्नकार्मण, अवकार्मणशरीरकर्मणोर्नपेक्षयग्राहा-
रतयागृहीतकार्मणवर्गणास्कन्धा तेचशरीरत्वेनपरिणमतियेचाकर्मप्र-
कृतितयापरिणमतियेचास्त्रवपरिणत्यायोगवीर्येणगृहीताकर्मणवर्गणा-
स्कन्धाकर्मप्रकृतितयापरिणतास्तेकषायाध्यवसायेन स्थितिरसमा-
जोभवति येचशरीरतयापरिणतास्तेनैवनवास्थितिंकुर्वंति पूर्वबद्ध-
स्थितिप्रमाणतिष्ठंति तेजसशरीरमाहारपाचनसमर्थनामिनवकर्मगृह-
णकारणतेनननभेदेनोपात्त,नवयोगस्थानपरिणतिर्नीयाविभागवर्गणा-
दिरूपपुद्गलवर्गणावलत्रिकरणवीर्यभावयोग येनोच्यते पर्याप्तिना-
मोदयागतमनोवाक्कायपर्याप्तिभागेन मनोवाक्कायवर्गणा सूहचा-

(र्यायत्तप्रवात्तद्व्य?)योगत्वेन यपदिश्यते तत्रपापात्विरत यइत्या-
दियथार्थसत्य तद्विपरीतोऽसत्य पापनास्तिपरमतादिनास्तिर्ईश्वरकृ-
तजगदित्यादिउभयलक्षण सत्यानृतोयथेमागावश्चरतिपुसामपितत्र-
सभवात् उभयलक्षणायोगादसत्यानृतो यथाहेदेवदत्तग्रामगच्छेत्यादि
एपत्रिविधोवियोगश्चत्वीर्यतनाद्विविध दयादानपूजादिप्रवृत्त शुभ
हिंसास्तेयमैथुनेच्छादिप्रवृत्तोऽशुभइति "मिच्छदुगि"इत्यादिमिथ्याद-
गिद्विकमिथ्यादृष्टिसास्वादनलक्षणत्रयअयतेअविरतसम्यग्दृष्टौचेत्येत-
गुणस्थानत्रयेआहारकद्विकोआहारककाययोगाहारकमिश्रयोगरहि-
तास्त्रयोदशयोगा सभवति "आहारकदुगजापइचउदसपुव्विस्सेत्ति"
वेन तए तेषु तथा अपूर्वपचकेअपूर्वकरणानिवृत्तबादरसूक्ष्मसपरायो-
पशातमोहक्षीणमोहलक्षणेनवयोगाभवति तत्रथा चतुर्विधोमनोयो-
गचतुर्विधोवाग्योग औदारिककाययोगइतिनवशेषाअत्यन्तविशुद्धत-
पावेषा वैक्रियाहारकद्विकारभाभावात् तयोश्चौत्सुक्यादिपरिणामपूर्वक-
मेवसभवात् सवैक्रियादशयोगामिश्रे सम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्थानके-
चतुर्विधोमनोयोग चतुर्विधोवाग्योग औदारिकवैक्रियलक्षणौद्वौ-
काययोगौएवदशयोगामिश्रेभवतिनशेषा तत्रथाआहारकद्विकस्या-
सभव पूर्वाधिगमाभावात् कार्मणौदारिकवैक्रियमिश्राभावस्तुमरणा-
भावात् अनचवैक्रियलब्धिमताअमिनवैक्रियारभकालेवैक्रियमिश्र-
भवति तत्वकृताश्चित्कारणात्पूर्वाचार्यैर्नाभ्युपगम्यते तत्रसम्यगत्रग-
च्छामस्तथाविधसप्रदायाभावात् देशेदेशविरतिलक्षणेगुणस्थानकेवै-
क्रियवैक्रियमिश्रसहिताएकादशयोगाभवति यथाअवटस्येति ॥३६॥

टबार्थ —हवे गुणठाणे योग कहे छे मिथ्यात्व १ तथा
सास्वादन एक तथा अविरति समकित १ ए तीन गुणठाणे
तेर योग छे मनना ४ वचनना ४ औदारिकद्विक २ वैक्रिय-

द्विक २ कार्मण १ शेष १३ छे आहारक २ बे नहीं ते छठे गुणठाणे मुनिने होये, बीजाने न होये, अपूर्वकरणथी माडी ५ गुणठाणे क्षीणमोह पर्यंत नवयोग पामीये मनना ४ वचनना ४ एक औदारिक ए नवयोग छे पछे मिश्र गुणठाणे ए नव मध्ये वैक्रिय १ मेळीइ तेवारे १० योग छे इहा वैक्रियमिश्रनो अभाव छे, जे अपर्याप्तो अवस्थाए मिश्र गुणठाणो न होये अने वैक्रियलब्धि नवि करे तेहने पण मिश्र गुणठाणे लब्धि करे ते गवेषी नथी, विउव्विआहारगे उरलमिस्से इतिवचनात् ॥३६॥

साहार(ग)दुगपमत्ते, तेविउवाहारमीसविणुइयरे ॥
कम्मुरलदुगंताइम, मयवयणसयोगिनअयोगी॥३७॥

टीका—साहारगदुपमत्तेत्यादि ३७। पूर्वोक्तपचैकादशयोगाःसाहारकद्विकाआहारकाहारकमिश्रयुक्ता त्रयोदशप्रमत्तेभवंति, औदारिकमिश्रकार्मणाभावस्तुपूर्ववदेवतेएववैक्रियमिश्राहारकमिश्रविनाएकादश इतरस्मिन्नप्रमत्तगुणस्थानकेभवति, वैक्रियाहारकमिश्रतुमारभकालेलब्ध्युपजीवनतुऔत्सुक्यादिप्रमादेसप्रमेतुप्रमादाभावात् नेति "मायीविउव्वति नोअमायीविउव्वति" इत्यागमवचनात् तथाकार्मणऔदारिकद्विकऔदारिकमिश्रलक्षणअताद्यिमनसीसत्य १ असत्याअमृषारूपौमनोयोगौ एवमेवसत्य १ असत्याअमृषालक्षणौवाग्योगौचेतिसप्तयोगा सयोगिकेवलिनिभवंति कार्मणौदारिकमिश्रतुसमुद्घातावस्थायामितिन अयोगित्ति नैवएकोपियोग अयोगिकेवलिनिइतिउक्तागुणस्थानेषुयोगा ॥३७॥

टबार्थ—देशविरति गुणठाणे वैक्रिय मिश्र मेळीये तेवारे ११ योग छे, मनना ४ वचनना ४ औदारिक १ वैक्रियद्विक

२ ए इग्यार योग होये प्रमत्त गुणठाणे आहारकद्विक २ मेलीइ तेवारे तेर योग पामीये प्रमत्त गुणठाणे ते मध्येयी वैक्रिय मिश्रआहारक मिश्र ए बे काढीये तेवारे सातमे अप्रमत्त गुणठाणे इग्यार योग होये, जे कारणे अप्रमत्त साधु लब्धी फोरवे नहीं तेम भगवतीसूत्रमा कह्यु छे, मायी विउवत्तिनो अमायीविवत्ति ए वचन छे अने तेरमे सयोगी गुणठाणे कार्मण २ औदारिकमिश्र २ औदारिक २ मनना २ सत्यमनोयोग २ असत्यामृषामनोयोग इम वचनात् २ ए सातयोग पामीये ते मध्ये कार्मण १ औदारिकमिश्र १ ए बे योग समुद्घात करता पामीये अने अयोगी गुणठाणे योग नथी, योगनोरोध कर्यो छे ॥३७॥

तिअन्नाणदुदसाइमेदुगे, अजयदेसिनाणदसतिग ॥
तेमिसिमीससमणा, जायाइकेवलदुगतदुगे ॥३८॥

टीका—अधुनातेष्वेवोपयोगानभिधातुकामआह " तिअन्नाणत्ति ।३८। त्रयाणामज्ञानानांसमाहारस्त्र्यज्ञानमत्यज्ञानश्रुताज्ञान , विभंगज्ञानरूप द्वयोर्दर्शनयो समाहारोद्विदर्शनचक्षुर्दर्शनाचक्षुदर्शनरूपमित्येते पंचोपयोगा मिथ्यादृष्टिसास्वादनयोर्भवति न॰ शेषा "बेंदियस्सदोनाणाइंकहलब्भंति भण्णइसासायणपडुच्चतस्सअपज्जत्तगस्सदोनाणाइ इतिप्रज्ञापनापेक्षया सासादनेज्ञानसूत्रेसमतमपिकर्मग्रंथाभिप्रायेणसास्वादनस्यमिथ्यात्वाभिमुखत्वादनंतानुबंधिकषायोदयेयथार्थोपयोगमलीमसत्वेन तन्निबंधनस्यज्ञानस्यापिमलीमसत्वादज्ञानरूपताइति । अत्रघिदर्शनाभावश्चविभंगेकतिचित्पर्यायज्ञानात् वैपरीत्येनसामान्यावबोधरहितत्वात् । जीवाभिगमे । विभंगि-

नाअवधिदर्शनग्रहणेप्यननिषेधस्तेनपंचेत्रोपयोगा सम्यक्त्वविरत्य-भावाद्यनशेषा तथा अपने अविरतसम्यग्दृष्टौ देशे देशविरतौ नाण-दसणतिगति" मतिश्रुतावधिरूप ज्ञानत्रिक चक्षुअचक्षुअवधिदर्शन-रूपदर्शनत्रिक एव पडुपयोगा नशेषा सर्वविरत्यभावात् एतेपत्रप-डुपयोगामिथ्ये अज्ञानसहितादृष्ट्या तत्रसम्यग्दृष्टित्व पतितानाआ-सन्नाम्यासत ज्ञानबाहुल्ययेचमिथ्यात्वनोमिश्रत्वगतानाआसन्नाभ्या-सतो अज्ञानबाहुल्यइति तेनज्ञानाज्ञानेमिश्रजीवापेक्षयागृहीतेवस्तुत-स्तुसम्यग्दृष्टेरेवज्ञानप्रमाणानि सशयत्वात्। अनवधिभगेअवधिदर्शनतत्र जीवाधिगमापेक्षया "समणाजयाट्ठति" इतिय यादीनाइत्यनेनप्रमत्ता-प्रमपूर्वकरणानिवृत्तिवादरसूक्ष्मसपरायोपशान्तमोहक्षीणमोहलक्षणेषुस-प्तगुणस्थानकेषुमन पर्यवयुक्ताइतिसप्तउपयोगा ज्ञानचतुष्कदर्शन-त्रिकरूपाभवन्तिकेवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणोपयोगरूपउपयोगद्वयअ-तिमद्विकेसयोगिकेवलीअयोगिकेवलीलक्षणचरमगुणस्थानकद्विकेभ-वति नशेषा अनमत्यादिज्ञानानावस्तुस्वरूपात् आत्मनिकेवलज्ञान-कालेपिमत्यावरणादीनाक्षयात् तद्ज्ञानानामपिनिरावरणत्वभवनात् मत्यादीनामपिसत्वतयापि सवितुरुदयेतारकादीनासत्वेपितत्प्रभावात् तथैवकेवलज्ञानस्यप्रकटत्वमत्यादिप्रवृत्त्यभावात् "नट्ठम्मिछाउमत्थिए-नाणेकेवलनाणेउवज्झइ" इत्यागमवाक्यात् यवहारनयेनछाद्मस्थिक-ज्ञानाभाव तत्प्रवृत्त्यभावात् ॥ ३८ ॥

टबार्थ —हवे उपयोग बार गुणठाणे कहे छे आदिम बे गुणठाणे मिथ्यात्व सास्वादन ए बे गुणठाणे तीन अज्ञान बे अचक्षुचक्षुदर्शन ए पाच उपयोग छे प्रथम बे गुणठाणे अ विरति समकित १ तथा देशविरति ए बे गुणठाणे ज्ञानत्रिक ३ दर्शन ३ पहिला ए ७ उपयोग छे मिश्र गुणठाणे मिश्रित

उपयोग छे जे जीव तेह समकितथी पडि मिश्रे आवे तेहने पूर्वाभ्यास माटे ज्ञान होये, जे मिथ्यात्वथी आवे तेहने अज्ञान होये अने यति आदीदेइ छट्ठाथी बारमा गुणठाणा पर्यंत मन पर्यवज्ञान भेळीये एतले च्यार ज्ञान, तीन दर्शन, ए सात उपयोग होये अनदुग तेरमे चऊदमे गुणठाणे केवलदुग कहेता केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ ए बे उपयोग होय ॥३८॥

छसुसव्वातेऊतिगं, इगछसु सुक्काअयोगिअलेसा ।
इगचउपणतिगुणेसु, चऊतिदुइगपच्चओबंधो ॥३९॥

टीका—उपयोगाउक्ता, अनुनागुणस्थानकेष्वेवलेश्याअभिधित्सुराह ॥ छसुसव्वाते ॥ ३९ ॥ षट्सुमिथ्यादृष्टिसास्वादनमिश्राविरतदेशविरतप्रमत्तलक्षणेषुसर्वा षट्पिकृष्ण १ नील २ कापोत ३ तेज ४ पद्म ५ शुक्ल ६ लेश्याभवन्ति, ययस्त्वामि अविरतसम्यक्त्वयावदेवषड् लेश्याउक्ता साचमनिपद्यमानकापेक्षया, तेउतिग तेज पद्मशुक्लेश्यालक्षणत्रिक इगिति एकस्मिन्प्रमत्तेभवति विशुद्धत्वात्पद्सुअपूर्वकरणादिसयोगिपर्यंतेषुशुक्लाएवभवति अयोगित्ति अयोगिन योगरहितत्वेनसिद्धा अप्ययोगिनएवेतितेअलेश्यालेश्यारहिता लेश्याचयोगप्रभवा तेननयोगरहितानां इहलेश्यानामप्येकमसंख्येयानिलोकाकाशप्रदेशप्रमाणान्यध्यवसायस्थानानि ततोमदाध्यवसायापेक्षयाशुक्ललेश्यादीनामपिमिथ्यादृष्टया कृष्णलेश्यादीनामपिप्रमत्तगुणस्थानकेपिसंभवोनविरुध्यते इतिनिदेवमुक्तागुणस्थानकेषुलेश्या सांप्रतबंधहेतवोवक्तुमारभ्यते मूलहेतवोचत्वार मिथ्यात्व अविरति कषाया योगाश्च तत्रमिथ्यात्व अयथार्थाववोधपूर्वकतत्त्वनिर्धाररूपतत्पचप्रकार अभिगृहेणेद एव दर्शन शोभन-

नान्यदित्येवंरूपेणकुदर्शनविषयेणानिर्वृत्तमाभिग्रहिकं यद्वशाद्बोटि-
कादिकुदर्शनानामन्यतमद्धठेनगृह्णाति तद्विपरीतमनभिग्रहिकं य-
द्वशात्सर्वाण्यपिदर्शनानिशोभनानीत्येवमीषन्माध्यस्थ्यमुपजायतेत-
दनभिग्रहिकम्, अभिनिवेशकृतात्स्वाभिनिवेशकदाग्रहरूपंयथागोष्ठामा-
हिलादीनां सांशयिकंयच्छंशयेननिर्वृत्तंयद्वशाद्भगवदर्हदुपदिष्टेष्वपि-
जीवादितत्त्वेषुसंशयउपजायते तथानजानेकिमिदंभगवदुक्तं धर्मा-
स्तिकायादिसत्यमुतान्यथेति अनाभोगंयदनाभोगेननिर्वृत्तंशून्यतारूप
तच्चैकेन्द्रियादीनामितिपंचप्रकारंमिथ्यात्वमिति द्वादशप्रकाराअवि-
रति कथमित्याह मन स्यात करणानिइन्द्रियाणिपंचतेषांस्वस्वविषये-
प्रवृत्तमानानां अनियमोऽनियमनं इत्यनेन रसनेन्द्रियाविरतौमृषावाद-
संग्रह मन स्पर्शनेन्द्रियाविरतौस्तेयोपादानं सकलेन्द्रियाविरतौमैथु-
नस्यसंग्रह मनसअविरतौपरिग्रहास्रव रसनेन्द्रियाविरतौरात्रिभोज-
नास्रव तथाषण्णांपृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतित्रसरूपाणांमायाहिंसारू-
पाअविरति षट्एवद्वादशज्ञेया कष संसारस्याय कषाय कषाय
सहचरितानोकषाया कषायतुल्याइत्यर्थ कषाया षोडशअनंता-
नुबन्ध्यऽप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनक्रोधमानमायालोभाख्यास्ते-
षांकषायाणांसदृशा कषायवर्तिनोतीव्रामदेमदास्तेनोकषाया हास्यर
त्यरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीपुनपुंसकरूपानवइत्येवं पंचविंशतियोगा
पंचदशपूर्वव्याख्यातस्वरूपाएवमूलवन्धहेतवश्चत्वार उत्तरत सप्त-
पंचाशत्भवति तन्मूलहेतून्गुणस्थानेषुविभजयन्नाह इगत्ति एक-
स्मिन्मिथ्यात्वेगुणस्थानकेचत्वारोबन्धहेतव अयमर्थ मिथ्यादृष्टि-
गुणस्थानकवर्तिजन्तु ज्ञानावरणीयादिकर्मचतुर्भिर्मिथ्यात्वाविरति
कषाययोगलक्षणैश्चतुर्भि प्रत्ययैर्बध्नातिचतुर्षुसास्वादनमिश्राविरति-
सम्यग्दृष्टिदेशविरतरूपेषुमिथ्यात्ववर्जिताअविरतिकषाययोगलक्षणा-
स्त्रय प्रत्यया सतिभावनाचसास्वादनादिचतुर्षुगुणेषुवर्तमान ज-

तुरविरतिकपाययोगलक्षणैस्त्रिभि प्रत्ययै ज्ञानावरणादिकर्मबध्नाति यद्यपिदेशेस्थूलप्राणातिपातविषयाविरतिरस्तितथापिस्वल्पत्वान्नेहविवक्षिता सर्वविरतावेवसर्वथाऽविरत्यभावइति पणत्ति पचसुगुणस्थानकेषुप्रमत्तापूर्वकरणानिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायलक्षणेषुद्वौप्रत्ययौकपाययोगाभिरूयौयस्यसद्विप्रत्ययोबंधोभवति इदमुक्तंभवतिमिथ्यात्वाविरतिहेतुद्वयस्यैतेष्वभावात् शेषेणकषाययोगप्रत्ययद्वयेनामीप्रमत्तादय कर्मबध्नतिइतियावत् तथात्रिषुउपशातक्षीणमोहसयोगिकेवलिलक्षणेषुगुणस्थानकेषुएकएवयोगलक्षण प्रत्ययोयस्यसएकप्रत्ययोभवति एषुत्रिषुगुणस्थानेषुयोगप्रत्ययएवकर्मबध्नाति साता-वेदनीयाख्यमनदपिद्विसामयिकप्रकृतिप्रदेशलक्षणाद्विविधबधकरोति । योगापयडिपएससठिइ अणुभागकसायाओइतिवचनात् अयोगिगुणे हेत्वभावान्नबधाभावइति ॥ ३९ ॥

टबार्थ —हवे गुणठाणे लेश्या कहे छे गुणठाणे मिथ्यात्वथी माडी छठा पर्यंत छ लेश्या छे सातमे अप्रमत्त गुणठाणे तेजो १ पद्म २ शुक्ल ए तीन लेश्या छे आठमाथी तेरमा पर्यंत [illegible] गुणठाणे एक शुक्ल लेश्या छे अयोगी गुणठाणे लेश्या नथी लेश्या ते योगपरिणाम छे ते योग नथी ते माटे अयोगी ने लेश्या नथी ते योग विना होये नही हवे बध हेतु कहे छे तिहा मूल बधहेतु च्यार छे। मिथ्यात्व १ अविरत २ कषाय ३ योग ४ ए च्यार हेतु छे । ते हवे गुणठाणे कहे छे प्रथम मिथ्यात्व गुणठाणे च्यार बध हेतु छे पछी सास्वादन १ मिश्र १ अविरति १ देशविरति १ ए च्यार गुणठाणे अविरति १ कषाय २ योग ३ हेतु ए तीन छे। पछी पण कहेता पाच गुणठाणे प्रमत्त १ अप्रमत्त १ अपूर्व-

करण १ अनिवृत्तिबादर १ सूक्ष्मसंपराय १ ए पांच गुणठाणे कषाय तथा योग ए बे बंध हेतु छे। पछी तीगुणेसु कहेता तीन गुणठाणे उपशांतमोह १ क्षीणमोह १ सयोगीकेवली १ इणे तीने एक योग प्रत्ययीयो बंध हेतु छे ॥ ३९ ॥

पणपन्नपन्नति(य)छहीय, चत्तगुणचत्तछचउदुगवीसा।
सोलस(दस)नवनवसत्त, हेउणोनउअयोगम्मि॥४०॥

टीका—अथ गुणस्थानेपुत्तरहेतुनाह ॥ पणपन्नेत्यादि- मिथ्यादृष्टौआहारकशरीर आहारकमिश्रलक्षणमिश्रद्वहिता शेषा पंचपंचाशद्धेतव सति तेचामीपंचमिथ्यात्वअविरतिद्वादश कषाय- पंचविंशति योगास्त्रयोदश सास्वादनेपंचमिथ्यात्वोना पंचाशद्धे- तवोभवंति मिश्रेत्रिचत्वारिंशद्वयहेतवोभवति औदारिकमिश्रवैक्रिय- मिश्रलक्षणमिश्रद्विककार्मणशरीर अनन्तानुबंधिनस्त्रिविनाइयमत्र भा- वना "नसम्ममिउोकुणइकालमिति" वचनात् सम्यग्मिथ्यादृष्टौ परलो- कगमनाभावात् औदारिकमिश्रवैक्रियमिश्रकार्मणअनन्तानुबन्ध्युदया- भावात् अनंतानुबंधिचतुष्यनास्ति । अतएतेषुसप्तसुपूर्वोक्तापा पंचाशतोऽपनीतेषुशेषास्त्रिचत्वारिंशद्वयहेतवोमिश्रेभवंति । अविर- तोचपरलोकगमनसंभवात् पूर्वोपनीतमौदारिकमिश्रवैक्रियमिश्रकार्म- णाश्चपूर्वोक्तायात्रिचत्वारिंशन्मध्ये प्रक्षिप्यते ततोअविरतेषट्चत्वा- रिंशद्वयहेतवोभवंति "गुणचत्तेति" देशे देशविरता एकोनचत्वारिंश- द्वयहेतवोभवति, त्रसासयम पाअविरतिऔदारिकमिश्रकार्मणअप्रत्या- ख्यानचतुष्टयंचेति तत्रत्रसासंयमत्तु बहुच्छतकव्रतात्वस्यसकपजत्र- साविरतिगमात् गृहि गामशस्यपरिहारत्वेनशस्यपरिहारत्वेनसत्यप्या- रभजत्रसाविरतौ तथापिनविवक्षिता कार्मणौदारिकमिश्रेतु विग्रहग-

त्यपर्याप्तावस्थायाचदेशविरत्यभावान्नसम्भवत द्वितीयकषायस्याप्य-
भावुदयात् उक्तचावश्यकनिर्युक्तौ बीयकसायाणुदए अपच्चक्खा-
णावरणनामधेज्जाण देसविरइनउलहृति १ तदभावेएवतत्प्रादुर्भाव
तत एवेसप्तपूर्वोक्तायाः पदचत्वारिंशतोऽपनीयते तनएकोनचत्वा-
रिंशद्वंधहेतव शेषा देशविरतेभवति तथाषड्विंशतिबंधहेतव प्र-
मत्तेभवति इदमत्रहृदय प्रमत्तगुणस्थाने एकादशधाअविरति प्र-
त्याख्यानावरणचतुष्टयचनसम्भवति आहारकद्विकचलब्धुपयुक्तस्य-
सम्भवतिअत पूर्वोक्तायाएकोनचत्वारिंशत पंचदशकेऽपनीतेद्विकेच-
तत्रमक्षिप्तेषड्विंशतिर्बंधहेतव प्रमत्तेभवति, तथाऽप्रमत्तस्यलब्ध्य-
नुपजीवनेनाहारकमिश्रवैक्रियमिश्रलक्षणद्विकरहिताश्चतुर्विंशतिबंधहे-
तवो अप्रमादेगुणस्थानकेभवति, अपूर्वकरणेपुन सैवचतुर्विंशति-
र्वैक्रियमिश्रलक्षणद्विकरहिताद्वाविंशति र्बंधहेतवोभवति एतेपूर्वो-
क्ताद्वाविंशति हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सालक्षणारहिता षोड-
शअनिवृत्तिबादरेसम्भवति तेएवषोडशवेदत्रिकस्त्रीपुनपुंसकलक्षणस-
ज्वलनत्रिकसज्वलनक्रोधमानमायालक्षणत्वेनविनादशबंधहेतव सूक्ष्म-
संपरायेभवति तेएवदशलोभरहितानवबंधहेतव उपशांतमोहेक्षीण-
मोहेचभवति कषायोदयरहितत्वमेवानयो तथैदारिकद्विककार्मण-
सत्यमनोयोगअसत्याअमृषामनोयोग सत्यवचनयोग असत्याअ-
मृषावचनयोग एवसप्तहेतव सयोगिनयोदशमेसम्भवति भावनाच-
औदारिकतनुवर्त्तमानऔदारिकमिश्रतुकेवलिसमुद्घाताद्वितीयषष्ठसप्त-
मसमये कार्मणतुसमुद्घातावसरेतृतीयचतुर्थपंचमेमनोयोगाद्वलन-
नतुमन पर्यवज्ञानानाक्षेत्रान्तरस्थितानाक्रुत्तमश्नाना उत्तरदानकालेवा-
ग्योगप्रवृत्तिस्तुप्रसिद्धैवन अयोगित्ति अयोगिगुणस्थानके नसतिबं-
धहेतवइति ॥ ४० ॥

टबार्थ —हवे गुणठाणे उत्तर हेतु छे ते कहे छे, ते मध्ये मिथ्यात्व गुणठाणे ते मिथ्यात्वना ५ भेद छे, अविरतिना १२ भेद छे, कपायना २५ भेद छे, योगना १५ भेद छे, एव सर्व सत्तावन भेद छे ते मध्ये मिथ्यात्व गुणठाणे आहारक २ आहारकमिश्र नथी तेणे पचावन हेतु छे ॥ ५ मिथ्यात्व। अविरति १२, कषाय २५, योग १३ सास्वादन गुणठाणे पचास हेतु छे, पाच मिथ्यात्व नथी, बार अविरति, पचवीस कषाय, १३ योग पचास हेतु छे मिश्रगुणठाणे अनतानुबधी ४ औदारिकमिश्र १ वैक्रियमिश्र १ कार्मण १ ए सात काढीइ तेवारे अविरति १२, कषाय २१, योग १०, ए तेतालीस बन्धहेतु छे चोथे समकित गुणठाणे औदारिकमिश्र १, वैक्रियमिश्र १, कार्मण १ ए तीन मेलीये एतले अविरति १२, कषाय २१, योग १३, ए छेतालीस बधहेतु छे पाचमे गुणठाणे अप्रत्याख्यानीया ४, त्रसनिअविरति १, औदारिकमिश्र १, कार्मण १, ए सात काढिइ तेवारे ओगुणचालीस हेतु छे अविरति ११, कषाय १३, योग १ छे, छट्ठे प्रमत्तगुणठाणे अविरति ११, प्रत्याख्यानीया ४, ए १५ काढीइ तेवारे आहारक बे मेलीये तेवारे छवीस हेतु छे तेर कषाय १३ योग, सातमे गुणठाणे आहारकमिश्र १ ए बे काढीये तेवारे चोवीस बधहेतु छे आठमे गुणठाणे वैक्रिय १, आहारक १ ए बे काढीये तेवारे बावीसबन्ध हेतु छे नवमे गुणठाणे हास्य छ काढीइ तेवारे सोळ हेतु छे पछी दशमे गुणठाणे तीन कषाय तीन वेद काढीये तेवारे दश बधहेतु छे पछी लोभ काढीये तेवारे इग्यारमे बारमे नव बधहेतु छे, तेरमे गुणठाणे सात योगना हेतु छे, तथा अजोगीगुणठाणाने विषे हेतुबन्ध कोइ नथी ॥४०॥

मिच्छेपणमिच्छत्ता, अनिरइसमत्तवारअविरइओ ।
देसेतसवहहीणा, योगापुव्विंवनेयव्वा ॥ ४१ ॥

टीका—अत्रवीर्यस्यशरीरपर्याप्ति भाषापर्याप्ति मनःपर्याप्ति उदयेनगृहीततद्वर्गणावल्लिवित्रकायवागमनोयोगाइति चेतनावीर्यादीनामिथ्यात्वकषायेन्द्रियविषयोदयघाताना तन्मया प्रवृत्ति मिथ्यात्वादिहेतव क्षयोपशमीभ्रनचेतनावीर्यादीना उदयाश्रितप्रवृत्ताना-हेतुत्व यपदेश मिथ्यात्वादीनाप्रकृतीनाबोदयात्वतसम्यग्दर्शनादिरूपाणाउदयत्व यपदेश यास्त्कषायोदयस्तावत्स्थित्यनुभागबंधो यावद्योगप्रवृत्तिस्तावत्प्रकृतिप्रदेशबंधो ॥ उक्तच ॥ योगापयडिपएसठिई अणुभागकसायाओ इतिमिच्छत्ति मिथ्यात्वेपचमिथ्यात्वमेदा नोपरितनेषुगुणेषुद्वादशअविरतय अविरतसम्यक्त्वयावत्नूलभ्यते देशविरतिगुणेत्रसवधरहिताएकादशअविरतय प्राप्यते नोपरिगुणेषुयोगा पूर्वंगुण २१ केषुउक्तास्तद्वदेवज्ञातव्या ॥ ४१ ॥

टबार्थ —मिथ्यात्व गुणठाणे पाच मिथ्यात्व छे, पछी मिथ्यात्व नथी अविरतसमकीत गुणठाणेसीम बार अविरति छे देशविरति श्रावकपणो प्रगटे, थूलप्राणातिपात विरमणव्रत लीधो तेहने त्रसनी हिंसा नथी इग्यार छे तद्वायी पछी अविरति नथी, योग ते पूर्वे कह्या छे तिम जाणवा ॥ ४१ ॥

आइदुगेपणवीस, अणनिणइगचीसमीससम्मंमि ।
देसेसत्तरयियविणु, तिअविणुतेरसगुणतिमंमि॥४२॥

टीका—कषायागुणेषुविभजयन्नाह आइदुगेत्ति॥४२॥आदिद्विकेमिथ्यात्वसास्वादनलक्षणेगुणस्थानद्वयेपचविंशतयस्त्वकषाया.—

सति तथा मिश्रेसम्यक्त्वेचअनंतानुबंधिचतुष्टयरहिताएकविंशतिक षायाभवंति देशे देशविरताख्येसप्तदशकषाया द्वितीयाअप्रत्याख्यानक्रोधमानमायालोभरहितास्त्रयोदशकषाया गुणतिगम्मित्ति गुणतिकेप्रमत्ताप्रमत्तापूर्वकरणलक्षणेसति ॥ ४२ ॥

टबार्थ —आदि बे गुणठाणे पचवीस कषाय छे मिश्र गुणठाणे तथा समकित गुणठाणे अनंतानुबन्धी च्यार विना एकवीस कषाय छे देशविरति गुणठाणे बीजा अप्रत्याख्यानी चोकडी विना सत्तर कषाय छे तीजी चोकडी विना तेर कषाय छट्ठे सातमे आठमे तीन गुणठाणे छे ॥ ४२ ॥

अछहासानवमेसग, वेयसजलणति(हीण)इगसुहुमे।
थोवुवसतखीणा, सखगुणापत्तपिवसता ॥४३॥

टीका—अछहासाइति नवमेअनिवृत्तिबादरे सगत्ति सप्तहास्यषट्करहिताहेतव सति, वेदत्रिकसज्वलनत्रिकहीन इगत्ति एकएव सज्वलनलोभाख्यसूक्ष्मेसपरायेदशमेगुणस्थानेहेतु प्राप्यतेतत्र परकषायोदयाभावात् नैवकषायोदयइति ॥ उक्तच ॥ हेतुस्वामित्व गुणस्थानकेषु सप्रतिगुणस्थानकेषुवर्तमानजंतूनामल्पबहुत्वमाह थोवउवसतत्ति स्तोकाउपशातमोहगुणस्थानवर्त्तिनोजीवा यतस्तेप्रविशन्त प्रतिपद्यमानकाएकस्मिन्समयेउत्कर्षेन चतु पचाशत्प्रमाणाएवप्राप्यते पसत्ति भाषा स्तद्गुणस्थानवर्तिनस्तूत्कर्षत शतपृथक्त्वप्रमाणा प्राप्यतेतेभ्य सकाशात्क्षीणमोहा सख्येयगुणायतस्तेप्रतिपद्यमानका एकस्मिन्समयेअष्टोत्तरशतप्रमाणालभ्यते तत्रस्थास्तुउत्कर्षत सहस्रपृथक्त्वप्रमाणाएवअत्रनतुप्रतिसमयचतु पचाशइपशा तेअष्टोत्तरशतक्षीणप्रतिमानकाभवतितर्हिअसख्येयसमयप्र-

माणाभ्याप्राप्तास्तथाउत्कर्षत असरयेया कथनभवतितनोच्यनेनै-
वयत प्रतिपद्यमानकानाजघन्यन एकसमय उत्कृष्टन अष्टौसमया-
एवप्रतिपद्यमानका प्राप्यते नापरेतन जघन्यनएक उत्कृष्टत
सख्येयाअसरयेया समयाअतरभवति "बत्तीस" इत्यादि गाथा व्या-
रयानेसिद्धदण्डिकासिद्धप्राभृतविशेषणवत्यादिषुज्ञेय तेनात्रसरयेयाए-
वजीवानासरयेयइति । एतच्चोत्कृष्टपदापेक्षयोक्तमन्यथाकदाचिद्वि
पर्ययोपिदृष्टय कदाचित्स्तोका क्षीणमोहा बहवस्तुउपशान
मोहा कदाचित्क्षीणमोहाएवनोपशाता कदाचिदुपशाताएवन-
क्षीणा अनयो सानन्त्वादितिज्ञेयनयानेभ्य क्षीणमोहेभ्य सका-
शात् ॥ ४३ ॥

टवार्थ —हास्य षट्क विना नवमे अनिवृत्ति बादर गुणठाणे
सात कषाय छे वेद ३ सज्वलन तीन उदयमायी गया एटले
दशमे गुणठाणे एक कषाय छे पछी कषायनो हेतु अभाव
छे हवे गुणठाणे अल्प बहुत्व कहे छे, सर्वथी उपशातमोह
गुणठाणे वर्तमान जीव थोडा छे, जे ए गुणठाणे एकसमये
उत्कृष्टा चोपन जीवनी प्रवेशना छे तेमाटे तेहथी क्षीणमोही
जीव सख्यातगुणा छे जे इहा उत्कृष्ट प्रवेशना एकसोआठनी
छे तेणे गुणठाणे प्राप्त जीव तथा पेसना जीव ए रीते छे ॥४३॥

सुहमानियदिअपुवा, समअहिया सेणिदुगलसुविसुद्धा।
उवसामगाकिलठा, जीवालब्भंतितिगुणेसु ॥४४॥

टीका—सूक्ष्मसपरायानिवृत्तिबादरापूर्वकरणवर्त्तिनोजीवाविशे-
षाद्धि स्वस्थानेपुनर्श्रित्यमानास्त्रयोपिसमास्तुल्याइतिकथमित्याह-
एषुजीवास्त्रिप्रकारालभ्यते तेचश्रेणिदुगला श्रेणिद्वयस्थानोपशम-

श्रेणिस्था क्षपकश्रेणिस्थाश्चविशुद्धा इतिश्रेणिमारोहमाणा निर्मलनिर्मलतरपरिणामत्वात् सुविशुद्धाउच्यन्तेपुन उपशामका श्रेणि संक्लिश्यमाना प्रतिपतन्तोप्यत्रप्राप्यते, उपशान्तमोहन प्रतिपातो-द्विविध उपशान्ताद्धाक्षयात् तत्रएकान्शन दशमेदशमातस्मे-नवमादष्टमेएवंयथानक्रमचतुर्थेनन सास्वादनेनन प्रथमेव्रजति यस्तुआयु क्षयात्पततिसएकादशेमृत चतुर्थमेवस्पृशति नान्य । इतिप्रतिपतेअपिउपशामकाजीवा लभ्यते एवंपुनिगुणस्थानेषु-इति, ननअधिकोक्ता विप्रकारत्वेनकथनसर येयगुणा यत अष्टोत्तर-शतक्षपका विशुद्धा चतु पचाशदुपशामका विशुद्धा, पुन संक्लिश्यमानाउपशामकाअपिभवन्तस्तर्हिद्विगुणत्वेनसर येयगुणा स-भवति तत्कथमधिकाइतिउच्यते उपशामका पतन नसर्वे क्रमे-णपतन्ति केचिदुपशान्तेआयु क्षयेत्र्यगुणतजनितेणतेपुनप्राप्यते अतोद्विगुणत्वाभावात् अधिकास्युक्ता ॥ ४४ ॥

टबार्थ — तेहथी सूक्ष्मसंपराय तथा अनिवृत्तिबादर तथा अपूर्वकरण ए तीन गुणठाणे वर्तमानजीव तेहथी पतले खीण-मोहथी ए गुणठाणे माहोमाहे सम छे, अधिकार छे ए गुण-ठाणे उपशमश्रेणि चढना तथा पडना पामीये छे, माहोमाहे सम छे बराबर छे उपसमश्रेणि चढना क्षपकश्रेणि चढना ए बे ते शु विशुद्धजीव कहीये जे निर्मलपरिणाम छे, उपशमश्रे-णियी पडना ए गुणठाणे वर्तमानजीव पिण संक्लेशी कहीये जे शक्ति पल्टे माटे ए तीन गुणठाणे ए रीते जीव पा-मीये ॥ ४४ ॥

योगिअपमत्तइयरे, सखगुणादेससासणामीसा ।
अविरइअयोगीमिच्छा, असखचउरोदुवेणता ॥४५॥

टीका—इतितेभ्य सूक्ष्मादिभ्य सयोगिकेवलिन सख्यातगुणास्तेषा कोटिपृथक्त्वेनलभ्यमानत्वात् प्रतिपद्यमानकास्तुअष्टोत्तरशत अस्मितेनप्राप्यमाणत्वात्तेभ्योऽप्यरत्तिप्रनियोगिन प्रमत्ता सख्येयगुणा प्रमादवतोनिर्ग्रंथानहच कोटिसहस्रपृथक्त्वेनप्राप्यमाणत्वात्, प्रमत्तयावतुसज्ञिकर्मभूमिजमनुष्याणामेवयोग्यत्वात् सख्येयगुणत्वतेभ्य देशविरताजीवाअसख्येयगुणास्तिरश्चामप्यसख्यातानादेशविरतिभावात् तेभ्य सास्वादनाअसख्येयगुणा अनकदाचित्सास्वादना सर्वथानभवति यदाभवति तदाजघन्यत एकोद्वोचउत्कर्षनस्तुदेशविरतेभ्योप्यसख्येयगुणा चतसृषुगतिषुप्राप्यमाणत्वात् अनोपशमश्रेणित प्रतिपतितापेक्षयात्वसख्येय त्वासभवस्तथापिग्रंथिभेदसभवोपशमात्पततोऽसख्येयाभवति, इदकर्मग्रंथबृहट्टीकानोक्षेय तेभ्योपिमिश्राअसख्येयगुणा सास्वादनाद्धायाउत्कर्षत षडावलिकामानतयास्तोकत्वात्मिश्राद्धाया पुनरतर्मुहूर्त्तप्रमाणतयाप्रभुतत्वात् तेभ्योप्यसख्येयगुणाअविरतसम्यग्दृष्य तेषागतिचतुष्टयेपिप्रभुतनयासर्वकालसभवात् तेभ्योप्ययोगिकेवलिन भवस्थाभवस्थभेदभिन्नाअनन्तगुणा सिद्धानामनतत्वात्, भवस्थायोगिनस्तुक्षीणमोहतुल्याएवतेभ्योऽनन्तगुणामिथ्यादृष्य साधारणवनस्पतीनाप्रसिद्धेभ्योप्यनन्तगुणत्वात् तेषाचमिथ्यादृष्टित्वादिति तदेवमभिहितगुणस्थानवर्त्तिजीवानामल्पबहुत्वम् ॥ ४५ ॥

टबार्थ—तेहथी योगी तेरमा गुणठाणानाजीव सख्यातगुणा छे तेहथी इतर कहेता प्रमत्त गुणठाणाना जीव सख्यातगुणा छे ए सर्व गुणठाणे सन्नियापर्याप्ता मनुष्य जीव पामीये छे, ते सख्यातगुणा छे तेमाटे तेहथी देशविरति असख्यातगुणा छे, तिर्यंच मनुष्य ए २ गतिना जीव पामीये छे, तेहथी सास्वा-

दन गुणठाणे जीव असख्याता छे, ए च्यार गतिमे पामीये तेहथी मिश्रगुणठाणे वर्तमान असख्यातगुणा छे, जे कारणे सास्वादनथी मिश्रमूधे रहेवानो काल घणो छे, तेहथी अविरति समकित गुणठाणे वर्तमान जीव असख्यात गुणा छे, जे एहनो उत्कृष्टकाल बासठि सागरोपम छे, तेहथी अयोगीजीव अनन्तागुणा छे जे सिद्ध अयोगी छे ते माहे गण्या छे, तेहथी मिथ्यात्वजीव अनतगुणा छे, जे निगोदीया सर्व मिथ्यात्वि ते सर्व गण्या छे, ए छ मध्ये च्यार सख्यातगुणा छे, अने बे बोल अनता छे ॥ ४५ ॥

तिगपणचउतिगभावा, ति अट इग दोगुणेसुमुलिल्ला।
अन्नाणस्सयउदओ, तिग धार गुणमिमयभेया ॥४६॥

टीका—इहेदानीभावानास्वरूपकथयन्नाह ॥ भावाइतिभवनलक्षणा जतो परिणतिविशेषास्तेमूलत पच सान्निपातकस्तुमयोगजन्यत्वात् उत्तरोपिध्यारयाभेदज्ञापनार्थषष्ठउक्त उपशमक्षायिकक्षायोपशमिकमौदयिकपारिणमिकाश्चपच षष्ट सान्निपातिकइतितत्रउपशमनउपशम कर्मणोऽनुदयावस्थाभस्मपटलच्छन्नाग्निवत् मोहनीयस्यकर्मण त्रिपाकप्रदेशरूपतयाद्विविधस्यापिउदयस्योपशमनउपशम द्विविध, दर्शनचरणभेदात्तत्रानतानुबधिचतुष्टयदर्शनमोहत्रिकस्योपशमनाद्उपशमसम्यक्त्व अत्रकेचित् अनतानुबध्युदयाभावतोअशतश्चारित्रप्राकट्यमिच्छति तदसत् अनतानुबधिविगमेतुचारित्ररुचिरेवन चारित्रचारित्रमोहप्रकृतीनांगृहित तथात्मन स्थैर्यत्वस्वसकारित्वात्नगरद्वारपिधानवद्रोधकत्वाच्चचारित्रमोहोपशमनादुपशमचारित्रमिति तथानन्यात्यनाऽत्यय क्षय घातिकर्मप्रकृतीनायद्यद्-

गुणरोधकानासत्तानोसर्वथाक्षयेयन्निर्वृत्त दर्शनादिगुणव्यूह स क्षायिक नवविध । यथाज्ञानावरणस्यसर्वथाक्षयेकेवलज्ञानजीवादिवस्तुन विशेषधर्मावबोधक दर्शनसप्तकक्षयेक्षायिकसम्यक्त्व तत्त्वरुचिरूपनिरतिचाररूपचारित्रमोहनीयक्षयेक्षायिकचारित्र सत्प्रवृत्तिरूपस्वधर्मैकत्वरूपस्थिरतास्वभावानुभवलक्षणमप्रतिपातिचारित्रदानांतरायादिक्षयेक्षायिकदानादिकपंचमकारदानादिस्वरूपतुविशेषावश्यकतोज्ञेय उदीर्णानाक्षय अनुदीर्णानामुपशम तेननिर्वृत्त क्षायोपशम भावनाचयतस्तनाप्युदितक्षीणअनुदितचोपशांतमित्यनोच्यते क्षयोपशमेप्रदेशोप्यस्मिन्प्रदेशतःपाककर्मणोवेदनानुज्ञानात् नत्वसौगुणविघातायभवतिविपाकवेदनतुनास्येति, उपशमेतुप्रदेशकर्मापिनानुभवति क्षयोपशमेतुप्रदेशवेदनसद्भाव तेनक्षयोपशमेननिर्वृत्त क्षायोपशमिकोभाव तस्यभेदाअष्टादश, ज्ञानचतुष्टयअज्ञानत्रयदर्शनत्रय क्षयोपशमिदानादिपंचक क्षयोपशमसम्यक्त्व देशविरति सर्वविरति क्षायोपशमिकाइत्येवमष्टादश क्षयोपशमसम्यक्त्वादयोहितद्विघातकप्रकृतिप्रदेशोदयेनसातिचारताभवति कर्मणामुदयेननिर्वृत्त औदयिकस्तच्च एकविंशतिप्रकार अज्ञानमसिद्धत्वादसंयमलेसाकषायगइवेआ मिच्छमित्यनोच्यते कर्मणामष्टानांहाविंशशतप्रकृत्युदयोहष्ट सएवएकविंशतिप्रकारेकथसगृहीतइत्युच्यते अज्ञानग्रहणात् ज्ञानदर्शनावरणदर्शनमोहनीयानासग्रह गतिग्रहणान्शेषनामगोत्रवेदनीयायुषिवाक्षिप्तानि भवधारणकारणत्वादेपाकर्मणामितिलिंगग्रहणात्हास्यादिग्रह शेषौदयिकस्यासिद्धत्वेसग्रह , ननुचकर्मप्रकृतिभेदानाद्वाविंशत्युत्तरशतप्रकृतिगणनयाप्रसिद्धमाम्नायेनचतत्रलेश्या परिपठितास्तदेतत्कथमुच्यतेउच्यतेनामकर्मणिमन पर्याप्तिनामपर्याप्तिश्चकरणविशेषोयेनमनोयोग्यान्पुद्गलान्आदायचिंतयन्तितेचमन्यमाना पुद्गला सहकरणान्मनोयोगउच्यतेमनोयोगपरिणामश्चलेश्या,

अत मन पर्याप्तासगृहीतत्वादितिज्ञेय एकेंद्रियादीनाभावयोगा-
पेक्षयालेश्या जोगप्पभवालेश्याइति पचमागवचनात् पारिणामिक-
स्त्रिभेद जीवत्वभ यत्वअभ यत्वभेदात् जीवभावेजीवत्व जीव-
त्वगृहणेनअजीवत्वादीनामग्रह भ यासिद्धिर्यस्यासौ भ य भ य
एवभ यत्व अभ य सिद्धिगमनायोग्य कदाचिदपियोनसेत्स्यत्यभ-
व्यएवत्वभ यत्वइतित्रिपचाशद्भेदा उत्तराज्ञेया । भावानामिति ति-
गपणइति भावाइतिपदसर्वत्रयोज्य तिगभावा पणभावाचउभावा
तिगभावाएवतिअद्दत्तिगुणेसुपदसर्वत्रयोज्य तिगुणेसुइत्यनेनत्रिगुण-
णेषुमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणेषु तिगभावाइतिसत्र त्रयोभावा
क्षायोपशमौदयिकपारिणामिका तत्रक्षयोपशममत्यज्ञानादिक औ-
दयिकमनुष्यगतिमिथ्यामोहमिश्रमोहलक्षणपारिणामिकजीवत्वादिए-
वज्ञेयअट्ठसुगुणेषु अविरतसम्यक्त्वदेशविरतप्रमत्ताप्रमत्ताप्रर्वकरणानिवृत्तिबा-
दरसूक्ष्मसपरायोपशातमोहरूपेषु "पण भवति"पचापिभावा सभवति
तेचानेकजीवापेक्षयाकस्यचित् जीवस्यक्षायिकसम्यक्त्वोपशमचारि-
त्रवत एकस्यापिपचभावा सभवति क्षपकश्रेणौतुचत्वारएवभावा
तस्योपशमाभावात् "इगत्ति" एकस्मिन्क्षीणमोहलक्षणेगुणस्थानेचउ-
भावाचत्वारोभावाउपशमरहिताभवति "दोगुणेसु" द्वयोर्गुणयोरित्यर्थे
द्विवचनेबहुवचनमाकृतत्वात् सयोगिकेवलिअयोगिकेवलिगुणयो
तिगभावा त्रयोभावा क्षायिकौदयिकपारिणामिकयुक्ता भवति
मूलिल्लाइतिदेशीवचन मूलाएवेति अत्राशयभेददर्शयन्नाह अन्नाण-
रसत्ति अज्ञानत्रयक्षयोपशमभावेप्युक्त पुनरौदयिकेभावेअज्ञानस्योपा-
दानअत्रक प्रतिविशेष उच्यते मत्यावरणादीनाक्षयोपशमेनअवबो-
धेजातेपिमिथ्यात्वोदयाद्विपर्यासअयथार्थज्ञानअज्ञान तच्चक्षायोप-
शमिक उपयोगस्यतदावरणकर्मक्षयोपशमोत्पन्नत्वात् विपर्यासश्च-
मिथ्या वसहकारात्यत्पुन अत्राणतच्चज्ञानावरणोदयेनसर्वथाज्ञान-

स्यआवरणरोव अत्यनात्रगोम्भ्पअज्ञाण तत्औदयिकभावेज्ञान-
व्यतेनअज्ञाणसइतिअज्ञानस्योदय निगगुणम्मि निश्रुमिथ्यात्वसा-
स्वादनमिश्रलक्षणेषुअस्ति केचित् पुन केचित्सूक्ष्म यार याकरणकु-
शला क्षीणमोहपर्यतेअज्ञानस्योदयमिच्छन्ति ज्ञानावरणादर्शनाव्रस-
णकर्मोदयाश्च यावन्नूज्ञानदर्शनघेननाशनात् अज्ञाणतद्यकेवलज्ञा-
नप्राकव्येएवसर्वचेतनाप्राग्भावस्ननस्तेनात्रो रूअज्ञानसभवइतिदि-
गूपटाअनसम्रमति तथतेषामेवप्रमटति मयमेअति नेगमनयमते-
सम्यग्ज्ञानेजातेक्षायोपशमिकज्ञानस्याविपर्यासाभावात् सम्यक्त्वेना-
ज्ञानइति एवमूलमतेतुसर्वथाज्ञानावरकपटलाभावेएवअज्ञाणाभाव-
इतिस्वपज्ञम ॥ ४६ ॥

टबार्थ —हवे भाव कहे छे तिहा मूल भाव पाच छे उपशम भावना २ भेद छे उपशमसमकित, उपशमचारित्र क्षायिकभावना ९ भद छे क्षायिकसमकित १ क्षायिकचारित्र १ केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ क्षायिकदानादि ५ लब्धिक्षयोपशम भावना भेद १८, उपयोग १० दानादिलब्धि ५ क्षयोपशमसमकित १ देशविरति १ सर्वविरति १ एव १८ औदयिकभावना भेद २१ अज्ञाणअसिद्धत्व १ असयम १ लेश्या ६ कषाय ४ गति ४ वेद ३ मिथ्यात्व १ एव २१ पारिणामिक भावना भेद ३ भव्यत्व १ अभव्यत्व १ जीवत्व १ ॥ तेपन्न उत्तर भावना भेद थया हवे गुणठाणे मूल भाव कहे छे मिथ्यात्व १ सास्वादन १ मिश्र १ ए तीन गुणठाणे क्षयोपशम १ उदय १ पारिणामिक १ ए ३ भाव छे समकितथी माडी इग्यारमा पर्यन्त आठ गुणठाणे पाच भाव छे एक क्षीणमोहे उपशम विना च्यार भाव छे सयोगी केवली अयोगी केवली

गुणठाणे क्षायिक १ औदयिक १ पारिणामिक १ ए तीन भाव छे औदयिक भावनो भेद जे अज्ञान केइ आचार्य नो तीन गुणठाणा सीम माने छे केटलाएक आचार्य ज्ञानावरणी दर्शनावरणीनो उदय तेहने अज्ञाण कहे छे ते माटे बारमा गुणठाणासीम एहनो उदय माने छे जे क्षीणमोहने अते ए खपे अज्ञान ३ लीधा ते क्षयोपशमभावना भेद छे, ते विपर्यासयुक्त जाणवा अने औदयिक मध्ये जे अज्ञाण ते जे अजाणपो भाव कह्यो ते ज्ञानावरणीना उदय तेहनो भेद औदयिक भावमा कह्यो छे ॥ ४६ ॥

चउदुगदुगपणचउतिग, तीसातीसासगठदुगवीसा।
वीसगुणवीसतेरस, बारसभावा गुणठाणे ॥ ४७ ॥

टीका—अथगुणस्थानेषुउत्तरविपयाशद्भेदान्यथायोगविभजयन्नाह ॥ चउदुगति अत्रतीसाइतिपदानुसरत चउतीसाइतिप्रथमेमिथ्यात्वेगुणस्थानकेचतुस्त्रिंशद्भेदाभावानाभवन्ति अत्रक्षयोपशमस्यअज्ञानत्रिक चक्षुर्दर्शनद्वय इन्द्रियपचक अवधिदर्शन विभगेअधिकृत्नमपिकस्मेय्रमे नाधिकृत अज्ञाणदुदसाआइमदुगेइतिवचनात् दानादिलब्धिपचक एव १० एवंऔदयिकस्यैकविंशति पारिणामिकस्यत्रयोपिएवचतुस्त्रिंशद्भेदामिथ्यात्वेभवन्ति "दुगतीसत्ति" सास्वादनेद्वात्रिंशद्भेदा भावाना क्षयोपशमस्य ते एव दश १० औदयिकस्यमिथ्यात्वरहितानविंशति २० पारिणामिकस्य अभव्यत्वरहितौद्वौअभव्यत्वमिथ्यात्वएवसभवात् एवद्वात्रिंशति पुन दुगतिसत्ति मिश्रेद्वात्रिंशत्ताएवसास्वादनेनोक्ता अत्रकेचितुमिथ्यात्वस्यातेमिश्रोदयेन त्रयोस्त्रिंशदिच्छन्ति तदपिसम्मत, तथापिगाथायामिश्रमोहस्य-

सग्रहात् नेह व्यार यात केचित् ते मीसिर्मासइति वचनमाल्क्य सत्त-त्रिंशद्भेदा मिश्रे वन्ति, तदप्यपेक्ष्यमेव यन श्रुतसम्यग्दर्शनाना-नज्ञान नादसगिरसनाणमिनिउत्तरा यमनताम्याभ्ज्ञेय, अनोद्वात्रिंश-द्भेदाएत अविरतसम्यग्दर्शनगुणे "पणतीमत्ति" पचत्रिंशद्भेदा भा-वाना,तत्रोपशमसम्यक्त्व १ क्षायिकसम्यक्त्व १ क्षयोपशमेतुक्षयो-पशमसम्यक्त्व १ ज्ञानत्रयदर्शनत्रय ६ दानादिलब्धिपचक्तद्गति-द्वादश १२ अज्ञानमिथ्यात्वरहिताएकोनत्रिंशतिरौदयिकस्य, अभ-व्यत्वहीनौद्वौपारिणामिकस्य, एवपचत्रिंशद्भेदाभवति अत्रौदयिके-मिथ्यात्वस्यस्थाने केचित्सम्यक्त्वमोहोदयक्षिपन्ति तदपिसम्मतमिति देशविरतिगुणे "चउत्तीसत्ति" चतुस्त्रिंशद्भेदाभवति,तत्रोपशमसम्यग्-दर्शन १ क्षायोपशमस्य द्वादश ता एवदेशविरतिमिलनेत्रयोदशऔ-दयिकस्य, देवगतिनरकगत्यपगमेसप्तदशपारिणामिकस्य,द्वौइतिप्रमत्ते "तिगतीसत्ति" प्रमत्तेत्रयस्त्रि शद्भेदाभावानाभवन्ति, तत्रप्रोक्तायाः चतुस्त्रिशत देशविरति रसयमतिर्यग्गतिश्चापनीयते पुन मन पर्यवज्ञानसर्वविरति क्षिप्येते तदात्रयस्त्रिंशद्भेदा प्राप्यते, अप्रमत्तेइति-तथाऽप्रमत्तेसप्तमेगुणस्थानेत्रिंशद्भेदा भावाना, अत्रकृष्णनीलकापोत-इतिलेश्यात्रयाभावात्वेनत्रिंशदिति, सगवउगवीसत्ति सप्त तथा अग्रे पदानुर्विंशतिसप्त इत्यनेनअपूर्वकरणेसप्तविंशति भावभेदाइति, अत्रतेज पद्मलेश्याक्षयोपशमापगमेसप्तविंशति, उपशमचारित्रेक्षिप्ते अष्टाविंशति, कर्मप्रकृतिकारस्तु उपशमचारित्रउपशातमोहेएवइ-च्छति, चारित्रमोहनीयप्रकृतीनावेद्यमानानानोपशम किंतुश्रेणाव-पिउपशमकएवगृहीतइ", भाव्रत्रिभग्यातुकडेइति यायात्, उपशा-मकस्तुउपशातइतिग्रहणेनगृहीतन्तदपिदेशमात्रमिति, दशमेसूक्ष्मस-परायगुणस्थाने " दुगवीसत्ति " द्वाविंशतिर्भेदाभावानाभवन्ति, यतश्चवेदत्रिकसज्वलननिकस्यानुदयेशेषा द्वाविंशति भवति, तत्रो-

पशमद्विविधक्षायिकदर्शन १ क्षयोपशमस्यज्ञानचतुष्टयदर्शननिक-सर्वविरति ८ दानादिपचकइतिनयोदशद्वंपारिणामिकामनुष्यगति-सज्वलनलोभशुक्लेश्या सिद्धत्वरुपाओदयिकादतिद्वाविंशति, उप-शातमोहेतुलोभकषायक्षायोपशमिकसर्वविरत्यभावान्त्रिंशतिभेदाभ-वति, क्षीणमोहे " गुणवीसत्ति " एकोनविंशति भावानाभेदाभ-वति, तेचउपशातोक्ता त्रिंशते उपशमभेदद्विकापगमेक्षायिकचारि-त्रेक्षिप्तेभवति, सयोगिगुणस्थानके "तेरसत्ति" नयोदशभेदा भावानाभवति, तेचनत्र क्षायिकोद्भवा मनुष्यगति १ शुक्लेश्याऽ सिद्धत्वचौदयिक जीवत्वचपारिणामिकमितिनयो दश यत प्रज्ञाप-नायाकेवलिन किंभव्या किंअभव्याइतिप्रश्ने नोभवानोअभवाइ-त्युक्तत्वादिति, अयोगिगुणस्थानके बारसत्तिद्वादशभावा भवति शुक्लेश्यापगमात् अलेश्यत्वेनचास्येति, सिद्धानातुक्षायिक भेदा जीवत्वपारिणामिकमितिदशभावाभवति यद्यपिक्षायिकभावभेदनव-केतुघातिकर्मक्षयसमुत्थानामेवगुणानाग्रहण तथाप्यघातिक्षयसमु-त्थानातयाशेपसकारादिगुणानातुपारिणामिकेएवसग्रहइतिपचसग्रह-टीकाशय इतिव्याख्यातागुणेपूत्तरभावभेदा ॥ ४७ ॥

टबार्थ —मिथ्यात्व गुणठाणे चोवीस भाव छे क्षयोपशमना १० औदयिकना २१ पारिणामिकना ३ सास्वादन गुणठाणे बत्रीस भाव छे क्षयोपशमना १० औदयिकना मिथ्यात्वना विना २० पारिणामिकना अभव्यपणा विना २ एव ३२ मिश्रगुणठाणे बत्रीस भाव छे, क्षयोपशमना १० औदयिकना २० मिथ्यात्व विना पारिणामिकना २ अभव्य विना, समकित गुणठाणे पात्रीस भाव छे उपशम समकित १ क्षायिक समकित १ क्षयोपशम समकित १ ज्ञान ३ दर्शन ३ दानादि ५ औदयिकना अज्ञान १ मिथ्यात्व १ विना ओगणीस, पारिणामिक

२ एव पांत्रीस भाव छे देशविरति गुणठाणे चोत्रीस भाव छे ए पांत्रीसमांथी औदयिकनी गति २ नीकली क्षयोपशमनो देशविरति १ मेलवीये एव चोत्रीस छे छठे प्रमत्त गुणठाणे तेत्रीस भाव छे देशविरति १ असयम १ तिरिगति १ ए तीन निकल्या मन पर्यवज्ञान सर्वविरति ए वे मेल्या तेवारे तेत्रीस, अप्रमत्त गुणठाणे त्रीस भाव छे लेश्या तीन नीकली, तथा अपूर्वकरण गुणठाणे सत्तावीस भाव छे, तेजो १ पद्मलेश्या २ नीकल्या क्षयोपशम समकित १ ए एक नीकली तेवारे सत्तावीस छे तेमध्ये उपसमचारित्र १ मेलीये तेवारे नवमे गुणठाणे अठावीस भाव छे इहा कम्मपयडिमध्ये उपशमचारित्र इग्यारमेज गणेल्यो छे पछे वेद ३ सज्वलन ३ ए ■ काढ्या तेवारे दशमे बावीस भाव छे इग्यारमे गुणठाणे वीस भाव छे खीणमोह गुणठाणे उपशमना २ काढीये क्षायिकचारित्र ए एक मेलीये तेवारे ओगणीस भाव छे सयोगि गुणठाणे क्षायिकना नव मनुष्यगति १ शुक्लेश्या १ असिद्धत्व १ जीवत्व ए तेर भाव छे अयोगि चउदमे गुणठाणे शुक्लेश्या विना १२ भाव पामीये, सिद्ध जीवने क्षायिकना नव, जीवपणो पारिणामिकनो ए दश भाव छे ए दशमे आत्मधर्म छे ए गुणठाणे भाव कह्या ॥ ४७ ॥

सम्मत्ताओ पचसु, उवसमसमतिगेसुचरणयु(जु)अ ।
सम्माइ(यण)सुसतेपुण, खायगसमत्तगा हुति॥४८॥

टीका—अथगुणस्थानेषुभावानामल्पानित्वमुच्यते सम्मत्ताओ-इति सम्यक्त्वात्पचसुअपूर्वकरणपर्यंतेषुगुणस्थानेषु उपशम-

सम्यग्दर्शनप्राप्यते "तिगेसु" त्रिकेषु नवमेदशमेएकादशे "चरणजुत" उपशमचारित्रयुत, इत्यनेनउपशमदर्शन उपशमचारित्र एवंभेदद्वयप्राप्यते पुन सम्यग्दर्शनादिउपशममोहयावत् क्षायिक सम्यग्दर्शनभवति यश्चैकचत्वारिंशत्सत्ताकस्तस्यक्षायिकसम्यक्त्वप्राप्यतेइति ॥ ४८ ॥

गुण	भाव	उप	क्षयो	क्षायि	औद	पारि
मि		०	१०	०	२१	३
सा		०	१०	०	२०	२
मि		०	१२	०	१९	२
अ		१	१२	१	१९	२
दे		१	१३	१	१७	२
प्र		१	१४	१	१५	२
ऽप्र		१	१४	१	१२	२
ऽपू		१	१३	१	१०	२
ऽनि		२	१३	१	१०	२
सू		२	१३	१	४	२
उ		२	१२	१	३	२
क्षी		०	१२	२	३	२
स		०	०	९	३	१
अ		०	०	९	२	१

टबार्थ —सत कहेता उपशमश्रेणिवतने समकितथी मांडी इग्यारमा गुणठाणा पर्यंत कोइक जीवने क्षायिकसमकितपणे होये जे एकसो एकतालीस सत्तावालो जीव श्रेणि उपशमचारित्रे

माडे तेहने क्षीणमोहगुणठाणे क्षायिकसमकित, क्षायिकचारित्र ए बे भेद क्षायिकमा पामीये एटले क्षायिकसमकित क्षायिक-चारित्र छे ॥ ४८ ॥

खीणेसम्मचरण, नवमेदसमेदुगटगभयणा ।
नवनवचरिमदुगम्मि, खायगभेया समुद्दिट्ठा ॥४९॥

टीका—"खीणेसम्मचरणइति" क्षीणेक्षीणमोहगुणस्थानेक्षायिकचारित्रमाप्यते, नवमेअनिवृत्तिनादरे दशमेसूक्ष्मसंपराये क्षायिकभाव-स्यद्विकसम्यक्त्वचारित्रलक्षणवदंति केचित्एकक्षायिकसम्यक्त्वमेव-वदंति, एवंभवतिभजनाचसाअपेक्षाभेदएवज्ञेय "चरिमदुगम्मि" चर-मद्विकेसयोगिकेवलिअयोगिकेवलिगुणस्थानेनवनवक्षायिकभेदाउक्ता वीतरागेणेति ॥ ४९ ॥

टबार्थ —नवमे दशमे गुणठाणे क्षायिकना कोईक आचार्य क्षायिकसमकित १ क्षायिकचारित्र ए बे भेद माने छे। अने कोइक आचार्य क्षायिक समकित १ एक भेद माने छे एहवी भजना छे। चरिमदुग कहेता छेहले बे गुणठाणे तेरमे तथा चउदमे गुणठाणे क्षायिकना नव भेद पामीये ए सर्व क्षायिकना भेद कह्या ॥ ४९ ॥

परिणामगस्सभेया, मिच्छे तिगसेसयंसिदुगचेव ।
अभवत्तविहीणपुण, चरिसदुगेएगजीवत्त ॥ ५० ॥

टीका—परिणामगसेत्ति परिणामस्यभेदामिच्छेइति मिथ्यात्वे "तिगत्ति" त्रिकंजीवत्वभव्यत्वाभव्यत्वरूपास्त्रयोभेदा प्राप्यन्तेशेषेषु-सास्वादनमारभ्यक्षीणमोहपर्यंतेषु "दुगत्ति" द्विकमेवजीवत्वभव्यत्व

रूप अभव्यत्वेनहीनरहितद्विकप्राप्यते "चरमदुगत्ति" चरमद्विके नयो-दशगुणस्थानकेचतुर्दशगुणस्थानकेच जीवत्वमस्तिभव्यत्वतुसिद्धि-गमनयोग्यत्व तच्चारित्रनिष्पादेनेनभव्यत्व अभव्यत्तुपूर्वमेवनास्ति अतोजीवत्वमेव,भव्याभव्यत्वस्वरूपत्तुभगवतीसूत्रेजयतीप्रश्नेचभव्य-त्वनकर्मजमिति ॥ ५० ॥

टबार्थ —पारिणामिकभावना भेद तीन छे ते मध्ये मिथ्या-त्वगुणठाणे पारिणामिकना तीन भेद छे सास्वादनथी माडी क्षीणमोह पर्यंत पारिणामिकनाए बे भेद छे । अभव्यपणो नही । अभव्यपणो मिथ्यात्वगुणठाणेज हुवे । चरिम छेहले बे गुण-ठाणे एकजीवपणो छे भव्यपणो निहा हवो योग्यता नीपन्या पछी कहेवाये नही ॥ ५० ॥

मीसेपणलद्धीओ, अन्नाणदसणदुगंचपढमदुगे । ओहीदसणजुत्त, मीसे नाणाइभयणाए ॥ ५१ ॥

टीका—मीसेपणलद्धिओइतिमिश्रेनाम क्षायोपशमिकेभावेपण-लद्धीओपचलब्धय दानलाभभोगोपभोगवीर्यरूपा "अन्नाणत्ति"अ-ज्ञानत्रय मत्यज्ञानश्रुताज्ञानविभंगलक्षण "दसदुगति" दर्शनद्विक च-क्षुरचक्षुर्दर्शनद्वयच प्रथमद्विकेमिथ्यात्वसास्वादनलक्षणेगुणस्थानद्वये-प्राप्यते "मीसेत्ति" मिश्रगुणस्थानेनाणाइ ज्ञानानिभजनात भजना-तुमिथ्यात्वात् मिश्रभागस्याज्ञान, सम्यक्त्वात् मिश्रभागस्यज्ञान, अत्रकेचित्विभंगेदर्शनमिच्छति,तदाशयदीपयन्नाह "ओहीदसणजुत्त" इति अवधिदर्शनेनयुक्तमिति । अवधिदर्शनभवति एतद्वचनस्व-मताविष्करणार्थेनोक्तकिंतुजीवाभिगमादिवृत्तिमनुश्रियंति भावनाच वस्तुधर्मावलम्बनेतुसम्यग्दर्शनिनामेवज्ञानभाव्यकारणापिउक्त श्रद्धा-

विरुद्धानामज्ञान शुद्धश्रद्धावतामेवज्ञान, मिश्रोदयस्तुसम्यग्दर्शन-गुणरोधकएवअतोमिश्रेऽज्ञानमेवेति ॥ ५१ ॥

टबार्थ —मीसे कहेता क्षयोपशमभावना भेद ते मध्ये पाच लब्धि, अज्ञान त्रण ३ दर्शन २ ए दश भेद मिथ्यात्व १ तथा सास्वादन ए प्रथम "दुग" बे गुणठाणे पामीये मिश्रगुणठाणे जे समकितथी पडतो मिश्रेँ आवे तो अवधिदर्शन लेतो आवे तेहने अवधिदर्शन कहीये, अने मिथ्यात्वथी मिश्रे आवे तेहने अवधिदर्शन नहीं, अने मिश्रगुणठाणे ज्ञाननी भजना छे। चोथाथी त्रीजे आवे तेहने ज्ञान कहीये, पहिलाथी त्रीजे आवे तेहने अज्ञान कहीये, ए अज्ञानमानि परिपाटी छे, पर-श्रद्धाशुद्ध विना भाष्यकार प्रमुख अज्ञानज माने छे। मिश्र-मोहनीयनो उदय दर्शन गुणने सर्वथा रोके छे, तेमाटे ज्ञाननी भजना छे ॥ ५१ ॥

दसणनाणतिगपण, लद्धीओमीसगचसम्मत्त ।
बारस्सअविरईसम्मे, देसजुआदेसविरयमि ॥५२॥

टीका—"दसनाणतिगमित्यादि अविरइसम्मे" अविरतिसम्यक्त्वे द्वादशक्षयोपशमभावभेदा प्राप्यते, तेचामीदर्शनत्रिकचक्षुरचक्षुरवधि-दर्शन लक्षण "नाणतिग" ज्ञानत्रिक मतिश्रुतावधिज्ञानलक्षण "पणलद्धीओ" इतिपचदानादयोलब्धय "मीसगच" मिश्रकंमिश्रा-रयक्षयोपशमसम्यक्त्व एवद्वादशक्षयोपशमभावभेदा प्राप्यते, तेएवद्वादशभेदादेशयुक्तादेशविरतियुक्तादेशविरतौपचमेगुणस्थानके त्रयोदशभेदा क्षयोपशमस्यप्राप्यते ॥ ५२ ॥

टबार्थ —चोथे समकितगुणठाणे दर्शन तीन चक्षुदर्शन १

अचक्षुदर्शन १ अवधिदर्शन १ ज्ञान ३ दानादिलब्धि ५ क्षयोपशमसमकित ए अविरति समकित गुणठाणे बार भेद क्षयोपशमना होवे, देशविरति गुणठाणे जे बार कह्या तेमा देशविरति भेळीये तेवारे १३ तेर भाव पामीये ॥ ५२ ॥

देसविणुसव्वविरइ, मणनाणजुआपमत्तजुअलम्मि।
सम्मविणा य अपुवे, अनियट्टिचउम्मिचरणविणा ५३।

टीका—'देसविणुत्ति'देशविरतिंविनासर्वविरतिमन पर्यायज्ञानयुता प्रमत्तेऽप्रमत्तेचतुर्दश क्षयोपशमभावभेदा प्राप्यते, सम्यग्दर्शनइतिक्षयोपशमसम्यग्दर्शन विनाअपूर्वनयोदशक्षयोपशमभावभेदा प्राप्यते, अनिवृत्तिगुणस्थानत "चउक्कम्मि" अनिवृत्तिबादरसूक्ष्मसंपरायोपशातमोहक्षीणमोहलक्षणेषुक्षयोपशमचारित्रविनाद्वादशभेदा क्षयोपशमभावस्यप्राप्यते, कर्मप्रकृतातुनयभेदशमेगुणस्थानेक्षयोपशमचारित्रमिच्छति, तत्र क्षयोपशमभावोनप्राप्यतेइति ॥ ५३ ॥

टबार्थ —देशविरति काढीये सर्वविरति मेलविये । वळी मनपर्यवज्ञान भेलविए तेवारे प्रमत्त गुणठाणे अप्रमत्त गुणठाणे ए बे गुणठाणे क्षयोपशमना चउद भेद छे अपूर्वकरण गुणठाणे क्षयोपशमसमकित विना तेर भेद पामीये, अनिवृत्ति गुणठाणाथी मांडी च्यार गुणठाणे क्षयोपशमचारित्र विना बार भेद छे कम्मपयडीमध्ये दशमा गुणठाणापर्यंत क्षयोपशमचारित्र मान्यो छे ॥ ५३ ॥

मिच्छेदुगअन्नाणदुसणतिगेअभिच्छउदयस्स।
सत्तरसदेसविरए, सुरनिरयअन्नाणरहिआओ॥५४॥

टीका—अथौदयिक विभजयन्नाह ॥ मिछेइगवीसपुणडति । मिच्छेमिथ्यात्वेएकविंशतिभेदा औदयिकस्य प्राप्यते, पुन सास्वादननिकेसास्वादनमिश्राविरतिसम्यक्त्वे 'अमिच्छत्ति' मिथ्यात्वरहिता "उदयस्सेति" औदयिकस्य भावस्यविंशतिर्भेदाभवति, एतद्वाम्यतुद्रादशमगुणस्थानयावत् अज्ञानस्योदय मगृह्यते त मतपुन सूरयस्वेनअज्ञानस्यापगमे अविरतसम्यग्दर्शने एकोनविंशतिरेवमाप्यते देशविरते पचमगुणस्थानकेसप्तदशभेदाऔदयिकस्यप्राप्यते, सुरगति देवगतिनिरयेति नरकगतिअज्ञानरहिता ॥ ५४ ॥

टबार्थ—हवे औदयिकभावना भेद कहे छे मिथ्यात्व गुणठाणे एकवीस भेद छे औदयिक भावना २१ छे, सास्वादनथी तीन गुणठाणे मिथ्यात्व विना २० भेद पामीये, समकित गुणठाणे ज्ञान विना ओगणीस छे, इमज भेद जणाववानु वचन छे देशविरति गुणठाणे सत्तर भेद पामीये, देवगति १ नरकगति १ अज्ञान १ ए तीन मिथ्यात्वे ए च्यार नथी, ए वली मनमेद देखाड्यो छे ॥ ५४ ॥

तिरिअविरयाओहीणा, पमत्तिअपमत्तिलेसत्तिगहीणा।
अदुलेसापुव्वदुगे, अवेअतिकसायसुहुमच(उ)ओ॥५५॥

टीका—तिरिअविरयाओत्ति तिर्यग्गति १ अविरति हीनारहिता पचदशभेदाऔदयिकस्यप्रमत्तेप्राप्यते अप्रमत्ते लेसतिगत्ति लेश्यात्रिकहीना कृष्णनीलकापोतरहिता द्वादशऔदयिकस्यभेदा प्राप्यते, "सुहुमति" सूक्ष्मसपरायलक्षणेगुणस्थानकेवेदत्रिककषायत्रिकरहिता चउत्ति चत्वारऔदयिकभावभेदा प्राप्यते ॥ ५५ ॥

टबार्थ —निर्यचनीगति १ असयम १ ए बे कार्डीये ते-
वारे प्रमत्तगुणठाणे पात्र भेद औदयिकना छे, अप्रमत्त गुण-
ठाणे कृष्णनीलकापोत लेश्या तीन टाळीये तेवारे औदयिकना
१२ भेद छे वे लेश्या, तेजो तथा पद्म कार्डीये तेवारे आठमे
नवमे दश भेद छे औदयिकना वेद ३ कषाय ३ कार्डीये
तेवारे सूक्ष्मसपराय गुणठाणे औदयिकना च्यार भेद छे लो-
भकषाय १ असिद्धपणो १ मनुष्यगति १ शुक्र लेश्या ए च्यार
छे ॥ ५५ ॥

उवसततिगेअलोभा, लेसविणादोअयोगीगुणठाणे।
मिच्छनिगेसन्निवाईय, चउइग(इगचउ)वारसउज-
यतिन्नि ॥५६॥

टीका—उवसन्तत्ति उपशातत्रिके उपशातमोहसयोगिकेव-
लिलक्षणेगुणस्थाननिके अलोभत्ति अलोभालोभरहिता मय-
औदयिकस्यभावभेदा प्राप्यते लेसविणत्ति लेश्या शुक्रलेश्या विना
तद्वर्जितौ द्वौएवभावभेदौ औदयिकस्यायोगिगुणस्थानेप्राप्येते,
इत्युक्त्वाऔदयिकभावभेदागुणस्थानेषु, सामतसानिपातिकभेदानि-
रूप्यते, तत्रयऔपशमिकादिभावानापचानामेकसायोगिका पचभ-
गाभवति, तेचसयोगाभावान् नसानिपातिकेभावे द्विकादिसयोगजा-
भगाःस्वेसानिपातिकभावेसगृह्यन्ते तेचपड्विंशतिर्भवति तनद्विकसयो-
गेअक्षसचारणया दशभगालभ्यते, तेचामी १२।१३।१४।१५।२३
२४।२५।३४।३५।४५ रूपा त्रिकसयोगेपिदश तेचामी । १२३।
१२४।१२५।१३४।१३५।१४५।२३४।२३५।२४५।३४२।एव
रूपादशभगानि, चतुष्कसयोगा पचभगाभवति तेचामी।१२३४।

१२३५।१२४५।१३४५।२३४५। इत्येवपचज्ञेया पचसयोगिकस्त्वेकपुक।१२३४५। एवरूप, एवपइविंशतिभगकेषुयटैवभगा जीवेषुमाप्पते नपरे मेयार्वास असभविणोइत्यागमवास्यात् तनंको-द्विकमयोगोपयाक्षायिकपारिणामिकलक्षण द्वौनिकसयोगिकौतनक्ष-योपशमऔदयिकपारिणामिकलक्षण, मिथ्यादृशा चतुर्गतीना क्षायिकौदयिकपारिणामिकलक्षण, केवलिनाभवस्थानाद्वोचतुष्कसयोगौ तनउपशमक्षयोपशम ओदयिकपारिणामिकलक्षण, प्रथमश्चतुर्गतिषुक्षायिकक्षयोपशम औदयिक पारिणामिकलक्षणोपिचतुर्गतिषु, पचकसयोगिकस्तुक्षायिकमम्यक्त्वोपशमचारित्रवलेनोपशमश्रेण्यारूढता तत्रगाथाचतुर्थकर्मस्तवे चउचउगईसुमीसग परिणामुदएर्हि-चउसुखएहि उवसमजुएहिंवाचउ केवलिपरिणामुदयखईए १ खय परिणामेसिद्धानराणपणजोगुवसमसेढीए इत्यादिज्ञेय, इतिभगक्रमेणक्षायिकसम्यग्दर्शनस्यचतुर्गतित्वनिवेदित, मिच्छतिगत्ति मिथ्यादितिके मिथ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणेगुणस्थानत्रिके मलोभगएक क्षयोपशमौदयिकपरिणामलक्षण सचचतसृपुगतिषुमाप्पते तेनउत्तराश्चतुर्भगाज्ञेया बारसत्ति अयते अविरतेसम्यग्दर्शनारयेगुणस्थानकेमूला तिन्नित्तित्रयोभगा क्षयोपशमौदयिकपारिणामिकलक्षण प्रथम उपशमक्षयोपशमौदयिकपरिणामलक्षणोद्वितीय अपचोपशमकदर्शनिनाक्षायिकोदयिकक्षायोपशमपारिणामिकलक्षण तृतीय क्षायिकदर्शनिनाएतेत्रयोमूलोत्तरास्तुचतुर्गतिषु एवेभवति तेन-चतुर्गतीनाद्वादशभवति ॥ ५६ ॥

टबार्थ —उपशातमोह गुणठाणे खीणमोह सयोगी गुणठाणे लोभ विना तीन भेद छे औदयिकना अने शुक्लेश्या विना बे भेद छे अयोगी गुणठाणे बे भेद छे, मिथ्यात्व

सास्वादनमिश्र ३ ए तिन गुणठाणे सान्निपातिकना मूल १ उत्तर च्यार भागा पामिये, क्षयोपशम औदयिकपारिणामिक ३ ॥ तीननो ए भागो ते च्यार गतिमा गणना चार भागा छे, अविरति गुणठाणे चार भागा सान्निपातिकना छे क्षयोपशम १ पारिणामिक २ औदयिक ३ एक भागो अथवा क्षयोपशम १ उपशम १ पारिणामिक । औदयिक ए च्यार भावनो ए बीजो भागो अथवा क्षयोपशम, क्षायिक, पारिणामिक, औदयिक ए च्यार भावनो तीजो भागो ए तीन भागा च्यार गतिमा छे, तेणे च्यार भागा छे ॥५६॥

छगदेसिपमत्तदुगे, तिगअपुव्वचऊदोदो ॥
खीणाइतिगेटग सभवि, (व)भगायविन्नेया ॥५७॥

टीका—देशेदेशविरतिलक्षणेपचमेगुणस्थानेमूलास्तुपूर्वोक्ताएतत्रय उत्तरास्तुतिर्यग्मनुष्यगतिद्वयगुणनेषड्भवति, प्रमत्तद्विकेप्रमत्ताप्रमत्तलक्षणेगुणस्थानद्वयेनयस्तएवमनुष्यगतिमापोग्याएपसति अपूर्वादिचतुष्केअपूर्वकरणानिवृत्तिकरणसूक्ष्मसपरायोपशातमेहलक्षणेउपशमश्रेणिप्रत्ययेद्वौभगकौ, उपशमक्षयोपशमोदयिकपारिणामिकलक्षण उपशमदर्शनचारित्रपरिणतानाएषपचकसायोगिकस्तुक्षायिकसम्यग्दर्शनोपशमचारित्ररताभवति, क्षपकश्रेणिस्थानानाअपूर्वानिवृत्तिसूक्ष्मसपरायाणाक्षायिकक्षयोपशमोदयिकलक्षणएकएव एवपोज्या क्षीणादित्रिकेक्षीणमोहसयोग्ययोगिलक्षणेगुणस्थानत्रिकेएकएवभगस्तत्रक्षीणमोहेक्षयोपशमक्षायिकओदयिकपरिणामलक्षणश्चतुष्कसयोग सयोग्ययोगिलक्षणेगुणस्थानद्वयेक्षायिकोदयिकपरिणामकलक्षणस्त्रिकसयोगिक. सभवति, सभविइतिपदसभवन्तिजीव-

वर्त्तिनो भगाएवज्ञेया गतिभेदेनविभज्यमानानानाप्रकाराभवति तथा-पिपूरन पद्देवेति ॥५७॥

टवार्थ —देशविरति गुणठाणे सन्निपातना भागा पद छे। मूलभागा तीन वेहने तिर्यंच मनुष्य गति १ ए बे गतिना गणता छ भागा थाय प्रमत्त १ तथा अप्रमत्त गुणठाणे मूल तीन भागा छे, अपूर्वकरणथी माडी इग्यारमा पर्यंत च्यार गुणठाणाने सन्निपातना बे भागा छे, एक उपशम १ क्षयोपशम १ पारिणामिक १ औदयिक ए क्षपकने इहा तीजो भागो पाच सयोगनो छे, ते तीन पण पामीये, क्षीणमोह गुणठाणे क्षायिक औदयिक पारिणामिक क्षयोपशम ए तिम सयोगि गुणठाणे, अयोगी गुणठाणे क्षायिक १ औदयिक १ पारिणामिक १ ए तीन सयोगि एक भागो छे, ए सर्व भागा मूल छ उत्तर १५ ते माहेला जाणवा वीस भागा असभवी छे पर कोई जीवमा पामीये नही ॥५७॥

वीसमसभवि छगपन्नरभगगइविभेएण ।
पणसयपणतीसही मिच्छे, जीवभेयविन्नेया ॥५८॥

टीका—सान्निपातिकभगसख्यामाह वीसत्रिशतिर्भगा असभवि सर्वजीवेषुअप्राप्यभावान्नतनद्‌गवर्त्तिनोजीवा सति, तत्रद्विकसयोगे-नवत्रिकसयोगेअष्टौ, चतुष्कसयोगेत्रय , एतेविंशतिर्भगा असभविनोज्ञेया , सभवित्तिर्जीवेषुप्राप्यमाणा षड्भगास्तेचगतिविभेदेनविभक्ता "पनरत्ति" पचदशभवति इत्युक्त गुणस्थानेषुभावा अर्थविस्तर या-स्यायानिषट्चधिकपञ्चशतजीवभेद' मज्ञापनोक्तास्तेगुणस्थानेषुय-थाप्राप्यते तत्कथयनाह, तत्रप्रथमजीवभेदान्कथयति, तत्रचतुर्दश-

भेदेनिरयकास्तत्रगाथा रयणरय १ सक्क २ पहूरवालयपह ३ पंकपह ४ धूमपहा ५ तमपहा ६ तमतमपहा ७ अपज्जतपज्जतचउहा १ तिर्यग्योनिकाअष्टचत्वारिंशत्, तत्रपृथ्वीकायिका सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदेनचतुर्द्धा, एवमप्कायिकाश्चतुर्विधा तेजस्कायिकाश्चतुर्विधा वायुकायिकाश्चतुर्विधा वनस्पतिकायिका प्रत्येकबादराएवभवन्तितेन पर्याप्तापर्याप्तभेदेनद्विधा साधारणवनस्पतिभेदा षट्द्वित्रिचतुरिंद्रिया- अपर्याप्तपर्याप्तभेदेनषट्प्रकारा पंचेंद्रिया स्थलचरजलचरखेचरउर-परिभुजपरिभेदेनपञ्चप्रकारास्तेसंज्ञ्यसंज्ञिभेदेनदशप्रकारास्तेचापर्याप्त-पर्याप्तभेदेनविंशतिर्भवन्ति, एवंतिर्यग्योनिकाअष्टचत्वारिंशद्भेदास्तत्र-गाथा पुढवाइचउसुचउविह ठगवणविगलाथलजलखयरा उरपरिभु-जपरिसमणा अमणापज्जाअपज्जाय १ मनुष्यभेदास्त्रिभिरधिकानि-त्रीणिशतानि, तत्रपंचभरतपंचैरावतपंचमहाविदेहरूपा पंचदशकर्म-भूमय, पंचहैमवतपंचैरण्यवतपंचहरिवर्षपंचरम्यकवर्षपंचदेवकुरुपंचो-त्तरकुरुरूपास्त्रिंशदकर्मभूमय, षट्पंचाशदन्तर्द्वीपा क्षुल्लहिमवतशिख-रीदाढागताएवएकाधिकशतभेदास्तेसंज्ञिन पर्याप्तापर्याप्तभेदात्द्व्य-धिकद्विशतभेदा तेएवएकाधिकशतभेदास्तेसंज्ञिन पर्याप्तापर्याप्त-भेदेनद्व्यधिकद्विशतभेदा तेएवएकाधिकशतभेदाअसंज्ञिमनुष्याणा-वेचापर्याप्ताएवइंद्रियपर्याप्तिंनीत्वा उच्छ्वासपर्याप्त्यारंभकाएव म्रियंतेमनु-ष्यशरीरोद्भवमलसमुद्भवा, तथाचप्रज्ञापनायां "वंतेसु आ पित्तेसुवा इत्यादिसूत्र जावसव्वासुअसुइठाणेसु इत्यादिएवंसर्वेअधिकत्रिशत-भेदा, गाथाचात्रपन्नरस १५ कम्मभूमिअअकम्मभूमीयतीसछप्प-न्नाअन्तरदीवासमणाइविहा अमणाअपज्जाय १ देवगतिभेदा एक-शतअष्टनवत्यधिकास्तेषाममीयथापंचदशपरमाधार्मिकानरकपाला द-शभुवनपतय असुरकुमाराद्या षोडशव्यंतरभेदा पिशाचादय दशजृंभका कंचनगिरिनिवासिन दशज्योतिष्का चरस्थिरभेदेनत्रय

किल्विषा चडालस्थानीया द्वादशरू पा नवलोकातिका ब्रह्मदेव-
लोकरिष्टप्रस्तरसमासन्नकृष्णराजिपुनत्रविमानवासिन नवग्रैवेयका
पचानुत्तराएतेनवनवति अपर्याप्तपर्याप्तभेदेनाद्विगुणिता अष्टानव-
त्यधिकशतप्रमाणाभवति अपर्याप्तत्वचानोत्पद्यमानकालेअतर्मुहूर्त्त-
यावदेवतेपर्याप्ता च यते, गाथा, पनरसपरमहम्मिअ दसभवणासो-
लर्विनरादेवा दसजभगजोईसीया बारसकप्पानिकिंचसिया १ नव-
लोगतिअभेआ नवगेविज्झाअणुत्तरापच अपज्जत्तापज्जत्ता सुरमे
आठाणमेएण १ यद्यपिसामानिकलोकपालादयोऽनेकभेदास्तथा-
पितेनाधिकृता एतेचभिन्नस्थाननिवासित्वेनोक्ताइत्येवजीवभेदा ।
पचशतत्रिपष्ट्यधिकाज्ञेयाइति तत्रमिच्छेहुतिमिथ्यात्वे प्रथम गुण-
स्थानके पचशतपचत्रिंशदधिकाजीवभेदा सभवति, निर्गतिका
सर्वेपिदेवगतिभेदाना मन्ये सप्ताधिकशत जीवभेदाना मिथ्यात्वे
ज्ञेयम् ॥ ५८ ॥

वीस भागा असभवी छे [illegible] मूल उत्तर १५ पनर भागा
सभवी ते गतिभेदे जाणवा हवे पाचसेनेसठ जीवना भेद छे
ते गुणठाणाने विषे कहे छे तिहा मिथ्यात्व गुणठाणे पाच-
सोपात्रीस भेद जीवना छे नव लोकातिक पाच अनुत्तर ए
चउद पर्याप्ता चउद अपर्याप्ता ए अठ्ठावीस समकिती छे, ते
मिथ्यात्वमा नथी एटले १४ नरकना ४८ भेद तिर्यचना
३०३ भेद मनुष्यना एकसोअठ्ठाणु भेद १९८ देवताना एव
५६३ भेद छे ते मध्ये मिथ्यात्वना १७० भेद छे ॥५८॥

लोगतिकाअणुत्तर सुर, भेयतिणातदेवसासाणे ।
चउसयसगनेरईया, पज्जत्तातीरिअडगवीस ॥५९॥

भेदेनिरयकास्तत्रगाथा रयणरय १ सक्क २ पहरवालुयपह ३ पंकपह ४ धूमपहा ५ तमपहा ६ तमतमपहा ७ अपज्जतपज्जतचउहा १ तिर्यग्योनिकाअष्टचत्वारिंशत्, तत्रपृथ्वीकायिका सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदेनचतुर्द्धा, एवमप्कायिकाश्चतुर्विधा तेजस्कायिकाश्चतुर्विधा वायुकायिकाश्चतुर्विधा वनस्पतिकायिका प्रत्येकबादराएवभवंतितेन-पर्याप्तापर्याप्तभेदेनद्विधा साधारणवनस्पतिभेदा षट्द्वित्रिचतुरिंद्रिया-अपर्याप्तपर्याप्तभेदेनषट्प्रकारा पचेंद्रिया स्थलचरजलचरखेचरउर-परिभुजपरिभेदेनपञ्चप्रकारास्तेसंज्ञ्यसंज्ञिभेदेनदशप्रकारास्तेचापर्याप्त-पर्याप्तभेदेनविंशतिर्भवंति, एवंतिर्यग्योनिकाअष्टचत्वारिंशद्भेदास्तत्र-गाथा पुढवाइचउसुचउविह उगवणविगलाथलजलखयरा उरपरिभु-जपरिसप्पणा अमणापज्जाअपज्जाय १ मनुष्यभेदास्त्रिभिरधिकानि-त्रीणिशतानि, तत्रपंचभरतपंचैरावतपंचमहाविदेहरूपा पंचदशकर्म-भूमय, पंचहैमवतपंचैरण्यवतपंचहरिवर्षपंचरम्यकवर्षपंचदेवकुरुपंचो-त्तरकुरुरूपास्त्रिंशदकर्मभूमय, षट्पंचाशदंतरद्वीपा चुल्लहिमवतशिख-रीदाढागताएवएकाधिकशतभेदास्तेसंज्ञिन पर्याप्तापर्याप्तभेदात्द्व्य-धिकद्विशतभेदा तेएवएकाधिकशतभेदास्तेसंज्ञिन पर्याप्तापर्याप्त-भेदेनद्व्यधिकद्विशतभेदा तेएवएकाधिकशतभेदाअसंज्ञिमनुष्याणा-तेचापर्याप्ताएवइंद्रियपर्याप्तिनीत्वा उच्छ्वासपर्याप्त्यारंभकाएव म्रियंतेमनु-ष्यशरीरोद्भवमलसमुद्भवा, तथाचप्रज्ञापनाया "वंतेसु आ पित्तेसुवा इत्यादिसूत्र जावसव्वासुअसुइठाणेसु इत्यादिएवंसर्वेत्र्यधिकत्रिशत-भेदा, गाथाचात्रपनरस १५ कम्मभूमिअअकम्मभूमीयतीसछप्प-न्नाअंतरदीवासमणादुविहा अमणाअपज्जाय १ देवगतिभेदा एक-शतअष्टनवत्यधिकशतेपामभीयथापंचदशपरमाधार्मिकानारकपाला द-शभुवनपतय असुरकुमाराद्या षोडशव्यंतरभेदा पिशाचादय दशजृंभका कंचनगिरिनिवासिन दशज्योतिष्का चरस्थिरभेदेनत्रय

किंविषा चडालस्थानीया द्वादशकल्पा नवलोकान्तिका ब्रह्मदेव-लोकरिष्टप्रस्तरनव्यसनकृष्णराजिपुनवरिमानवासिन नवग्रैवेयका पचानुत्तराएतेनवनवति अपर्याप्तपर्याप्तभेदेनद्विगुणिता अष्टानव-त्यधिकशतप्रमाणाभवति अपर्याप्तत्वयानोत्पद्यमानकालेअंतर्मुहूर्त-यावद्देववेपर्याप्ता च यते, गाथा, पन्नरसपरमहम्मिअ दसभवणासो-लवेंनरादेवा दसजभगजोईसीया बारमकप्पानिकिंनसिया १ नव-लोगतिअमेआ नवगेविज्झाअणुत्तरपच अपज्झत्तापज्जत्ता सुरमे आठाणमेएण १ यद्यपिसामानिकलोकपालादयोऽनेकभेदास्तथा-पितेनाधिकृना एतेचभिन्नस्थाननिवासित्वेनोक्ताइत्येवजीवभेदा । पचशतनिपण्यधिकाजेयाइति तनभिच्छेदितिमिथ्यात्वे प्रथम गुण स्थानके पचशतपचविंशतिकाजीवभेदा सभवन्ति, निगतिका सर्वेपिदेवगतिभेदाना मध्ये ममाधिकशत जीवभेदाना मिथ्यात्वे ज्ञेयम् ॥ ५८ ॥

, वीस भागा असभवी छे ७ मूल उत्तर १५ पन्नर भागा सभवी ते गतिभेदे जाणवा हवे पाचसेनेसठ जीवना भेद छे ते गुणठाणाने विषे कहे छे तिहा मिथ्यात्व गुणठाणे पाच-सोपाचीस भेद जावना छे नव लोकातिक पाच अनुत्तर ॥ चउद पर्याप्ता चउद अपर्याप्ता ए अठावीस समकिती छे, ते मिथ्यात्वमा नथी एटले १४ नरकना ४८ भेद तिर्यचना ३०३ भेद मनुष्यना एकसोअठाणु भेद १९८ देवताना एव ५६३ भेद छे ते मध्ये मिथ्यात्वना १७० भेद छे ॥५८॥

लोगतिकाअणुत्तर सुर, भेयनिणातदेवसासाणे ।
चउसयसगनेरईया, पज्झत्तातोरिअइगवीस ॥५९॥

टीका—लोगनिकाइइति लोकांतिकानव, पचानुत्तरभेदाश्चतुर्दश-तेपर्याप्ता अपर्याप्तभेदेनाष्टाविंशतिभेदास्तेसम्यक्त्वेएवभवंति न मि-थ्यात्वे, लो कांतिकविचारिणोगृहीत यानशेषा, लोकांतिकपरिवार-श्चज्ञातायाः टीकायाध्ययने सामानिकात्मरक्षकादयोऽभिहिता नवे सर्वेसम्यग्दर्शनिनइति तथैवसास्वादनेचतु र्शनभेदाजीवानामिति तेचसप्तनैरयिका पर्याप्ता तत्रापर्याप्तावस्थायानसम्यक्त्वं, यत सा-स्वादनेनरकानुपूर्वीअनुदयानिरयाणुपविंशइयाइतिकर्मस्तवग्रंथात् तिरियदुगर्वाम, तिर्यग्योनिजाएकविंशतिभेदा सास्वादनेभवंति॥५९

टबार्थ—लोकांतिक नव तथा अणुत्तर ५ ए पर्याप्ता अ-पर्याप्ता ए अठावीस भेद नथी । इहा लोकांति नव अधिप-तिना लीधा छे, परिवारनो एहनो घणो छे । ज्ञातासूत्रे कह्यो छे सामानिक आत्मरक्षकादिक छे ते माटे समकितना सर्वने भजना जाणीये छे, निश्चय तो जिनोवेत्ति, तिमहीज सास्वा-दन गुणठाणे न्यारसे जीव भेद छे, नारकीना भेद सात पर्याप्ता भेद छे अपर्याप्तावस्थाये सास्वादनपणो न होये जे माटे नरकानुपूर्वीनो उदय सास्वादन मानयी ते माटे तिर्यचना एक-वीस भेद छे ॥५९॥

बायरथावरतियग, अपज्जत्तवियलतिअअपज्जत्त ।
अमणापचअपज्जा, समणापज्जाअपज्जाय ॥६०॥

टीका—बायरइति बादरस्थावरत्रिकबादरपृथिवी अपर्याप्त १ बादराप्कायापर्याप्त बादरप्रत्येकवनस्पतिकायापर्याप्तइतिभेदत्रयसास्वा-दनेभवति इयमत्रभावना अत्रकश्चित्संज्ञिपचेंद्रिय तिर्यग्नरामरभेद पूर्वमिथ्यात्वबलेनोत्सूत्रादिप्ररूपणाकरणेनबद्धेकेंद्रियायु पुन कारण-

वशात् । यथाप्रवृत्त्यादिकरणकरणेनग्रन्थिभेदंकृत्वान्तरोपशमसम्यक्त्व-
गन उपशमाद्धायावत् उपशमीभ्यावेसास्वादनमधिगम्यसास्वादन
स्याते अल्पतरकालात्रयेऽपि आयु क्षयेषु वा स्थावरनिके उत्पद्यते, तस्य-
शरीरपर्याप्तस्यनोऽर्वागुणत्रसाम्वान्नदित्वामिथ्यात्वलभते, मनुष्य-
स्तुपूर्वबद्धायुस्तदा पश्चान्ग्रन्थिमेदसभवश्रेणिमभवराउपशमप्राप्यप-
तित सास्वादनेचायुप क्षपकत्वाणबद्धियेषुत्पद्यतेनस्यापिभवति वि-
कलेतिय अनयत्र विकल्पिन्द्र अपर्याप्तसास्वादनेसभवति, अपचातिर्य-
ग्मनुष्यो वापूर्वबद्धायुरुपशमप्राप्यपतनसास्वादनेषून विकलेषु पद्यते-
विकलानातुशरीरपर्याप्तिरनन्तरमिथ्या त्वजति, अमणापत असंज्ञिप-
चेंद्रिया परजलचरस्थलचरखेचर भुजपरिउरपरिरूपाअपया सेषुवि-
कल्पवत्प्राप्यन्ते समणेत्ति समनसो मन सहिता एतेजलचरादय पच-
अपयाप्ता पचपर्याप्तास्तेपुसास्वादनप्राप्यते अपर्याप्तसुग्रन्थिभेदसभ-
वोपशमात्पतित सास्वादनप्राप्यपूर्नस्यसंज्ञिषूत्पद्यमानस्यभवति
पर्याप्तसु तथा थिभेदसमभवोपशमात्पतितेन सास्वादनप्राप्यते, एवस्था-
वरत्रिक अपर्याप्तविकलत्रिक अपर्याप्तअसंज्ञिपचक अपर्याप्तसंज्ञिदशाक
मितिएकविंशतिभेदा तिर्यग्न सास्वादनेप्राप्यते ॥ ६० ॥

टबार्थ —विगळत्रिनअपर्याप्तापृथ्वी १ अप् १ वनस्पति १
ए त्रिन थावर अपर्याप्ता ते बादर छे ए तीन भेद छे असंज्ञि ५
अपर्याप्तासंज्ञि ५ पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मिथ्या दश ए विश
तिर्यचना भेद पामीये ॥ ६० ॥

मणुएसमणाभेआ, देवेनिळुवतउयमीसम्मि ।
सगपणइगहोयम्मय, पणसोईसन्निपज्जत्ता ॥ ६१ ॥

टीका—मणुएसमणा मनुष्याणामध्ये समणत्ति मन सहित
[illegible] देवे देवगति [illegible]

मिथ्यात्वत्रनूसप्ताधिकशतसास्वादनेप्राप्यतेइतिसर्वमिलनेरास्वादनेप्राप्यते तथाचमिश्रेपर्याप्तभेदा एतप्राप्यते, तत्रसप्तभेदा पर्याप्ता रत्नप्रभाया प्राप्यतेतिर्यग्भेदा संज्ञिपर्याप्तरा प्राप्यते ॥ ६१ ॥

ट्वार्थ —मनुष्यना समणा कहेना गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता पर्याप्ता २०८ भेद सास्वादन गुणठाणे पामीये देवनाना मिथ्यात्वनि पेरे अट्ठाविश विना ११७ पामीए, सर्व मील्या च्यारसें थया तथा हवे मिश्रगुणठाणे सात भेद नारकिना पर्याप्ता ७ ते तिर्यच पचेंद्रीसज्ञी पाच पर्याप्ता तथा मनुष्यना एकसोएक भेद गर्भज पर्याप्ता देवना पच्यासी पर्याप्ता एटले एकसो अठाणु भेद मिश्रगुणठाणे पामीये ॥ ६१ ॥

सम्मेसन्नीदुविहा, चउसय तेवीस माघवइपज्जा ।
देसेपणतेरिक्खा, पन्नरसाकम्मभूमिनरा ॥ ६२ ॥

टीका—सम्मेसन्निति सम्यक्त्वेसंज्ञिपचेंद्रियोद्विविध पर्याप्तापर्याप्तभेदभिन्न चतु शतचतुर्विंशतिप्रमाणस्तत्रमानवतीनामतमापृथ्वीपर्याप्तभेदे नैवप्राप्यते। इत्यमुनाप्रकारेण त्रयोविंशत्यधिका चतु शतभेदा प्राप्यते। नैरयिकास्त्रयोदशनैरश्चादश मानुषोद्भवाद्व्यधिकशतद्वय । अष्टानवत्यधिकमेकशतदेवाना, एवचतु शतत्रयोविंशत्यधिकप्राप्यते। ननुपरमाधर्मिकेषुकथसम्यक्त्वमुच्यते। अभ्रपूर्वसगतिकदेवनाशुपदेशेनप्राप्नोति इद्रकृतनदीश्वरोत्सवादिदर्शननिमित्तमपिप्राप्यते। देसेत्ति देशविरतिगुणस्थानकेविंशतिभेदा प्राप्यते, द्विगतिप्रत्यया तिर्यग्मनुष्यगतिप्रत्यया तत्रदेशे विरतारये पचमे गुणस्थानके पचतिरिक्खातिर्यग्योनिजा संज्ञिपचेंद्रिया जलचराद्या पचपर्याप्ता मनुष्यगतिसभवा पचदशकर्मभूमिसभवानरामनुष्योद्भवाएव २० विंशतिभेदा प्राप्यते ॥ ६२ ॥

टबार्थ —समकितगुणठाणे मूल भेद २ सज्ञीपर्याप्तो अपर्याप्तो ए बेना उत्तर भेद च्यारसेने चोवीस थाये ते मध्ये सातमी नारकीना अपर्याप्तो १ भेद ए मध्ये समकित नही एटले च्यारसे तेवीस भेद छे नारकीना १३ तिर्यचना १० गर्भजमनुष्यना २०२ देवनाना १९८ एवं च्यारसे तेवीस पामीये, इहां कोइ पूछे जे परमाधर्मिने समकित केम जडे? तिहां उत्तर जे कोइ प्रवसगति देवनाने कारणे समकित पामे छे, देशविरति गुणठाणे पाच भेद गर्भजतिर्यचना पर्याप्ता पनर कर्मभूमिना मनुष्यना पनर भेद पर्याप्ताए वीस भेद पामीये छीए ॥ ६२ ॥

पन्नरसकम्मभूमि(या), नरभेयासेसएसुठाणेसु ।
समुग्घायायमसत्ते, केवलिवज्जाछग्गहवंति ॥ ६३ ॥

टीका—पन्नरसेत्यादिपचदशकर्मभूमिजा नरभेदा पचभरतैरावतमहाविदेहाख्या पचदशनरभेदा शेषेषुप्रमत्तादिपुनवगुणस्थानकेषुप्राप्यते। सज्ञिपचेंद्रिया पर्याप्ता कर्मभूमिजाएवसर्वविरतिलभते, इत्युक्तगुणस्थानकेपुजीवभेदद्वार। अथगुणस्थानेपुसमुद्घाततद्वारमतन्यते। तनसमुद्घाताना सप्त, वियण १ कसाय २ मरणे ३ वेउविये ४ तेजसे ५ आहारे ६ केवली ७ यसमुग्घायाउछउ मरयाजिणेएग १ ससम्यक्त्वप्रकारेणउत्प्राबल्येनवान वीयमाक्षयेनप्रागतस्यसमुद्घात, सम्यक्त्वप्रकारेणउत्प्राबल्येनवान चैतन्योपयोगादीनावेदनीयायुरुदयेनससमुद्घात सप्तप्रकार, तनवेदनासमुद्घात वेदनीयकर्मोदयेनसातासातयोरुभयोरप्युदयेनचेतनाविपर्ययभवति कषायसमुद्घात चारित्रमोहोदयेनमरणसमुत्थानोपिवेद-

नीयकर्मोदयेनद्दष्ट, सचारानाविशिष्टविपाकेन, वैक्रियसमुद्घान, वैक्रियशरीरनामोदयेन, तैजससमुद्घात तैजसशरीरनामोदयेन, आहारकसमुद्घात, आहारकनामो येन, केवलिसमुद्घात वेदनीयनामगोत्रोदयेन, सयोगिप्रातेएवभवति समुद्घाता समुद्घानाश्चप्रमत्ते केवलिसमुद्घानवर्जा पढभवन्ति ॥ ६३ ॥

ट्यार्थ —शेष छट्ठायी उपरले गुणठाणे पन्नर कर्मभूमिना पर्याप्ता ए पत्र भेद पामीये बीजे क्षेत्रना उपन्या ते विरति धर्मनी प्राप्ति नहीं सामग्रीनो अभाव छे ते माटे जाणवु समुद्घात सात छे ते मध्ये प्रमत्त गुणठाणे एक केवली समुद्घात नथी, शेष छ समुद्घात छे वेदना १ कषाय २ मरण ३ वैक्रिय ४ तैजस ५ आहारक ६ ए छ पामीये ॥ ६३ ॥

पढमेबीयचउत्थे, देसेअणहारमिसिदोचेव ।
केवलीयचसयोगे, खीणअयोगमि नो हुति ॥६४॥

टीका—प्रथमेमिथ्यात्वे द्वितीयेसास्वादने चतुर्थेअविरतिसम्यक्त्वे अनाहारत्तिआहारकसमुद्घातवर्जा पचसमुद्घाताभवति आहारसमुद्घानस्तुचतुर्दशपूर्वधरस्यप्रमत्तगुणस्थानकस्यैवभवतिनशेषेषु। मीसत्ति मिश्रे तृतीयेगुणस्थानकेद्वावेववेदनीयकषायलक्षणौसमुद्घातौप्राप्येते मिश्रेमरणाभावात्नमारणातिक वैक्रियमिश्रयोगाभावान्नवैक्रिय तेजसस्तुतीव्रसक्लिष्टपरिणामस्यभवति तीव्रसक्लेशोनमिश्रस्य शेषपूर्ववदेव । सयोगिकेवलिलक्षणत्रयोदशमेगुणस्थाने, केवलीय केवलिसमुद्घातलक्षणसमयाष्टकपरिमाणभवति । खिणत्ति-मोहाख्येद्वादशे अयोगित्ति अयोगिकेवलिलक्षणेचतुर्दशगुणे नो-

इतिनिषेधेभवति क्षीणेमरणाभावात्मारणांतिक मोहाभावात्कषायःगुण-
जीवन, ध्यानारूढत्वान्नवेदनाकषायौ, छद्मस्थत्वान्नकेवलिसमुद्घात
एवमयोगेपि ननुअयोगेमरणदृश्यतेनतत्कथनमारणांतिकमितिअयो-
गेचेतनावाताभावात् भवक्षयेपि न मरणसमुद्घात ॥ ६४ ॥

टबार्थ —पहिले मिथ्यात्व गुणठाणे हुवे बीजे सास्वादन
गुणठाणे, चोथे समकित गुणठाणे पाचमे देशविरति गुण-
ठाणे, केवली समुद्घात तथा आहारक समुद्घात विना पाच
समुद्घात छे २ नथी आहारक समुद्घात चऊद पूर्विने
होये, मिश्रगुणठाणे वेदनी, कषाय ए बे समुद्घात होवे सयोगी
गुणठाणे एक केवली समुद्घात छे खीणमोह अयोगी केवली
गुणठाणे कोइ समुद्घात नथी ॥ ६४ ॥

सेसेमरण इक, अहरूद्दायपढमपचगुणे ।
अट्टतिगधम्मचउग, पमत्तिअपमत्तिधम्मचउ॥६५॥

टीका—शेषेषुअप्रमत्तादिषुउपशांतमोहपर्यंतेषुएकमरणमरण
समुद्घातलक्षणंप्राप्यत उपशांतस्यआयु क्षयेमरणभवनि, तेनतत्र-
शेषणात्केचिदप्रमत्तादिषुमरणमन्यतेनमारणांतिकसमुद्घात ध्या-
नारूढत्वात् ॥ इत्युक्तं समुद्घातद्वारगुणस्थानेषु ॥ सांप्रतध्यानद्वा-
रगुणस्थानेपूच्यते अदरूपायतिनत्र्यध्यानचतुर्थाआर्तध्यान १ रुद्र-
ध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्लध्यान ४ चेति ॥ उक्तंच ॥

जथिरमज्झवसाण, तझाणजचलतयचित्त ।
तहुज्झभावणावा, अणुप्पेहावाअत्रचिंता ॥ १ ॥

अतर्मुहूर्तप्रमाणकालमेकत्रवित्तावस्थानेध्यानशेषचलनचित्तअथवा
भावना अथवा अनुपेक्षा अथवा चिंतास्मृति ॥ उक्तंच ॥

अनोमुहुत्तमित्त, चिंताबत्थाणमेगवत्थुम्मि ।
छउमत्याणझाण, जोगनिरोहो जिणाणतु ॥ २ ॥

अनमुहूर्तात् परत चिंताभवति अथवा ध्यानातरवाभवति पुन बहुवस्तुसक्रमेसंतानोभवति ॥ उक्तच ॥

अनोमुहूत्तपरओ, चिंताज्झाणनरवदुज्झाहिंसु ।
चिरपिहुज्झवहुवा, धुमक्रमेझाणसंताणो ॥ ३ ॥
अत्तरुदधम्म, सुक्कज्झाणाइत्यअनाइ ।
निव्वाणसाहणाइ, भवकारणमट्टरुद्दाइ ॥ ४ ॥

तत्रार्त्तध्यान चतुर्धा अमनोज्ञानावियोगचिंतनरूपप्रथम अमनोज्ञा अमनोहरा शब्दादयस्तेषावियोगचिंतनकदाएतेवजति अथवा शत्रुप्रमुखाणासयोगेतद्वियोगचिंतनकदाएतेषाक्षय इत्यादि अनिष्टसयोगे आतुरस्तन्निसमुद्भवेतद्वियोगचिंतनेउपयोगस्यैकाग्यअभिनवोपयोगनारूपध्यानप्रथममनोज्ञविषयादिसप्रयोगचिंतारूप, द्वितीयकदाकथवाइष्टा शब्दादय मिलादय सदृश्यते एतचिंतारूपैकाग्र्याऽनन्योपयोगनारूपध्यानद्वितीयइष्टवियोगचिंतासमुद्भव, तथा शूलादिरोगप्रकटनेतद्विगमचिंतारूपतृतीय, एतेरोगामेकथजाता कथगच्छति एतच्चिंतातन्मयत्वरूपोगचिंतारत्ततीय, रोगस्याप्यनिष्टत्वेनप्रथमभेदेएवातर्भावस्तथापि अनिष्ट शत्रुप्रमुखासिन्नक्षेत्रत्वेनरोगाणाचस्वशरीरावगाहात् एकक्षेत्रेणैवभिन्नाभिधान, तथाचक्रवर्त्यादिविषयाणाअभिलाषेणतद्विषयताअनिदानकरणरूपचतुर्थ । एवमार्त्तध्यानचतुष्टयभेदससारवर्धन तिर्यग्गतिमूलज्ञेय, रागोदोसोमोहो जेणससारहेयवोभणिआ अट्टम्मियतेतेनिवि तोतससारतरुबीया १ लेश्याआद्याअप्रशस्तास्तिस्र तस्यक्रदनशोचनपरिवेदनताडनलक्षणानिलिंगानि । पुनरुक्तच सद्दाइविसयगिद्धो सधम्मपरमुहो-

पमायपरो, जिणमणमयमणुविरक्तो वट्टइअट्टम्मिज्झाणम्मि इत्यार्त्त-स्वरूप तथवयवधनवहनमारणप्रनि यान (प्रणिधान?) अनिक्रोधग्रहग्रस्त निर्घृणरुद्रघोरपरिणामरुद्रध्यानचतुर्विध। हिंसानुबंधि १ मृषानुबंधि १ चौर्यानुबंधि १ परिग्रहरक्षणानुबंधिरूप तत्र हिंसाद्र महिंसासाच हिंसाकरणकारणानुमतिचिंतनैकाग्रनारूपमनन्योपयोगनारूप प्रथम एवमृषाभाषणेत्रिकरणैकत्वोपयोगनारूपद्वितीय चौर्याचिंतनैकत्वरूप तृतीय परिग्रहमिलनरक्षणचिंतातन्मयत्वरूपतुर्यरुद्र आर्त्ते लेश्यात्रयरूप, अस्यलिंगानिमरणामिलापमरणेहापरस्य यसनेहर्षनिर्दयत्वपरस्यकष्टकरणे, न अनुतापइत्यादीनिरुद्रध्यानस्वरूप, धर्मध्यानतस्यभावनाज्ञानदर्शनचारित्रवैराग्यलक्षणानि । तत्रगाथा नाणेनिचशासोधुणइमनोधारणविसुद्धिंच नाणगुणमुणीमुणियसारोतोज्झाइमुणिचलमईओ ॥ १ ॥

सकाइदोसरहिओ, पसमथिज्जाइगुणगणोवेओ ।
होइअसमूढमणो, दसणसुद्धत्ताणम्मि ॥ २ ॥
नवकम्मअणायाग, पोरविणिज्जरसुभायाण ।
चारित्तभावणाए, झाणमयत्तेणसमेइ ॥ ३ ॥
सुविइयजगसप्भावो, निस्सगोनिब्भओनिरासोओ ।
वेरग्गभावियमणो, झाणम्मिसुनिचलो होइ ॥ ४ ॥

इत्यादिभावनयाविशुद्धपरिणाम मुनिर्धर्मध्यानमवलम्बते धर्मध्यानस्यालम्बनानिवाचनापृच्छनापरिवर्तनाऽनुपेक्षालक्षणानि धर्मध्यानभेदा, आज्ञाविचय, अपायविचय, विपाकविचय, संस्थानविचयलक्षणा स्तत्रसूनिपुणअनाद्यनिधनसर्वजनहितयथार्थभाव कथनरूप अजितअमितमहार्थमहानुभावमहाविस्तारनिरवद्यजि-

स्तनैकत्वरूपजिनाज्ञास यत्वोपयोगेकत्वप्रथमधर्मध्यान, कदाप्य-
वबोधेजिनाज्ञासत्याइतिचिंतन, अणुवकयपराणुगाढ परायणाज-
किणाणुप्परराजिय रागदोषमोहानद्धाया ईगोसेण १ इत्येक-
त्वरूप प्रथम, अपाया गगद्वेषकषाया एवेममनयुज्यवे, भावनाच
नाहविभावकर्ता नाहविभावभोक्ता नाहविभावाधार नाहविभा-
वरसिक नाहविभावपरिणामी, नचपुद्गलानास्वामीनचाधार नग्रा-
हक नव्यापकोनोपुद्गलानायोगेममसुख परकर्तृत्वमेवदु ख यस्मा-
नतनिर्विकारस्वभावात् अन्यन्ननूनमम, एतेरागद्वेषमिथ्यात्वादयो-
दोषाअपायाएव तेषायोगेममनस्थात य इत्यादिचिंतनेकापतोपयोग-
रूप द्वितीय । विपाकविचयश्चज्ञानावरणादीनामष्टानां कर्मणांविपा-
काज्ञानरोधादय तेषांनिपयश्चिनतज्ञानावरणादीनांनाहकर्त्तानाहभो-
क्तानाह, आदाता नाह कर्मणासमृद्ध इत्युपयोगचिंतनतन्मयत्वतृतीय-
विपाकविचयार य, चतुर्थलोकालोकस्वरूपऊर्ध्वं गस्तिर्यग्लोकास्थान-
चिंतन वस्तुत स्वीयासख्येयप्रदेशगुणपर्यायावस्थानपरिणमनचित-
नतन्मयत्वसंस्थानविचयाख्यधर्मध्यान किंबहुना सव्वविवजीराई पय-
त्थवित्थरोवेय सव्वनयसमूहमयव्भाइज्जासमयस त्र १ सव्वपमायरि-
रया मुणओखीणोवसतमोहाय । झायारोनाणधरा, धम्मज्झाणस्सनि-
द्दिष्ठा २ इत्यनेनधर्मध्यानध्यातारस्तेनिर्ग्रन्था एव, अनविरपदाश्चतुर्थे-
गुणस्थानके आज्ञाविचयाख्यधर्मध्यानमिच्छति तदभिप्रायपरिज्ञा-
नात् आज्ञागीकारतद्भावनादयोभवति आज्ञास्वरूपैकत्वोपयोग-
स्थिरत्वमतर्मुहूर्तप्रमाण अनतानुबधिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानक-
षायोदयाभावेणवभवतिना ? इत्युक्त धर्मध्यानस्वरूप, शुक्लध्यानतु-
निर्मलक्षयोपशमोत्तवयार्थ चेतनामागत्येनिमित्तावलबनप्राप्त
स्वरूपोपयोगीस्वरूपैकत्वपरिणतस्यभवति पूर्वविद आद्येशुक्ले तत्र
तत्कालकृतज्ञानावरणीयक्षयोपशमरूपभावश्रुतापेक्षवचनद्रव्यश्रुता

पेक्ष नोचेन्मरुदेवीमापत्तुषादिषु यमिनाग, तत्तद्गुणस्थानवर्ती पृथक्त्ववितर्कसप्रविचाररूपप्रथम, एकत्ववितर्कअविचाररूपद्वितीय, सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिरूपतृतीय, व्युपरतक्रियानिवृत्तिरूपतुर्य, तद्‌भावे द्वे उपशातक्षीणकषाययोर्भवत, अनोपशान्तक्षीणकषायशब्देन उपशमश्रेणिक्षपकश्रेणीप्रारम्भेवेव एवज्ञेय ध्यानशानकाशनादिनि, तत्रात्मन पुद्गलादिभ्य भिन्नत्वेनस्वरूपोत्पादव्ययध्रौव्यपृथक्त्वचिंतनेन स्वरूपगुणपर्यायपृथक्त्वचिंतनेनवितर्कश्रुतज्ञानावलंबिविचारो अर्थव्यजनयोगसक्राति, अर्थ पदार्थ जीव व्यजनतत्प्रकाशकज्ञानादिगुण यूह तत्पयोगोमनसएकत्वेनवाक्कायचापलरोधलक्षण तद्रूपध्यानद्रव्यात्पर्यायेपर्यायान्द्रव्येएवसामान्यधर्मविशेषधर्मेगुणपर्याययोगपरावर्तनेन सविकल्पनिर्विकल्पपूर्वक श्रद्धानज्ञानस्वरूपैकत्वात् भेदरत्नत्रयरूपप्रथमशुक्लध्यान, अर्थपदार्थे व्यजनेगुणपर्यायेएकत्वोपयोगरूपविनर्कोरूपश्रुतालम्बनेनअविचार उपयोगातरासक्रमणरूपनिर्विकल्पचतेनाविचारनिर्विकल्पत्वेनाभेदरत्नत्रयीरूपद्वितीय, एकत्ववितर्कअप्रविचारलक्षणशुक्लभवति, सूक्ष्मक्रियासूक्ष्मयोगचलनरूपातस्पारोधककालेअप्रतिपातिरूपतृतीय, सर्वथासक्रियत्वक्षेत्रातरगमनरूपक्रियारूपतुर्यव्युच्छिन्नक्रियानिवृत्तिरूप चतुर्थ शुक्लध्यान, एव ध्यानस्वरूप, तच्चगुणस्थानकेषुविभजनाह ॥ अट्टरुद्दाइतिप्रथमेषुपचसख्यालक्षणेषुगुणेषु मिथ्यात्वात् देशविरतिपर्यंतेषु आर्त्तरौद्रे द्वेध्याने, आवश्यकनिर्युक्तौ, तदकियदेशविरया पमायपरसजयाणुगज्झाण भवपमायमूलवज्जेयव्वयपयत्तेण १ इत्यार्तध्याने इयकरणाकारणाणु मइविसयमणुचिंतणचउब्भेओ अविरयदेशासजयजणमणमसेविअमदत्त इतिरुद्राधिकारेमुनीना धर्मध्यानमितिवाक्यात्, तत्त्वार्थेतुअप्रमत्तानाधर्मध्यान, तच्चप्रतिपद्यमानकापेक्षया अप्रमत्ते धर्मध्यानमालम्ब्यपश्चात्प्रमत्तेपिकियत्कालयावत्धर्मध्यानीभवति,

तेनआर्त्तनिकधर्मचतुष्कप्रमत्तेऽप्रमत्तेगुणस्थानकेभवन्ति, निदानार्त्त-स्यमुनीनामसंभवात्अप्रमत्ताख्येसप्तमेगुणेधर्मध्यानस्यैवचत्वारोभेदा-भवंति ॥ ६५ ॥

टबार्थ —शेषगुणठाणे पांचने विषे प्रमत्त १ अपूर्वकरण २ अनिवृत्तिबादर ३ सूक्ष्मसंपराय ४ उपशान्तमोह ५ ने विषे एक मरण समुद्घात छे ॥ हवे गुणठाणे ध्यान कहे छे । मिथ्यात्वथी मांडी पांच गुणठाणा पर्यंत आर्त्त १ तथा रौद्र १ ए बे ध्यान छे, तेहना ८ पाया छे, आवश्यक निर्युक्ते मुनि विना धर्मध्याननी मना छे निदान आर्त्तविना तीन भेद आर्त्तध्यानना च्यार भेद ए सात भेद प्रमत्तगुणठाणे ध्यानना छे । अप्रमत्त गुणठाणे धर्मध्यानना च्यार भेद छे ॥ ६५ ॥

चउधम्म एकसुक्क अपुव्विसेसम्मि एगसुक्कच ।
चरिमे दुसुक्कचरिमा, ज्झाणभेया गुणठाणे ॥६६॥

टीका—चउधम्मइत्यादिअपुव्विइत्यादि, अपूर्वकरणेअष्टमेगु-णस्थानकेचत्वारोधर्मध्यानस्यभेदा, एकश्चशुक्लध्यानस्यपुनःपचभेदा-भवंति "सेसम्मि" शेषेअनिवृत्तिबादरसूक्ष्मसंपरायोपशान्तमोहक्षीण-मोहसयोगिकेवलिपर्यंतेषुएकशुक्लंभवति, तत्रोपशान्तमोहयावत् पृथ-क्त्ववितर्कसप्रविचाररूपक्षीणमोहेएकत्ववितर्कअप्रविचाररूपंप्राप्यते, सयोगिकेवलिचरमभागेयोगनिरोधकालेआवर्जीकरणकेवलिसमुद्घाता-नन्तरसूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाति प्राप्यते, चरिमेचि चरमेअयोगिकेवलि-लक्षणे, दुसुक्कत्ति द्वौशुक्लौचरमौसूक्ष्मक्रियउच्छिन्नक्रियलक्षणौ द्वौशु-क्लभेदौभवत एवध्यानभेदागुणस्थानकेज्ञेया. ॥ ६६ ॥

टबार्थः—च्यार धर्मध्यानना पाया तथा एक पहेलो पृथ-

क्त्ववितर्कसप्रविचारनाम ए पाच भेद ध्याननां अपूर्वकरण गुणठाणे छे, शेष गुणठाणे एक शुक्लध्यान छे, नवमे दशमे अग्यारमे शुक्लनो प्रथम पायो छे, क्षीणमोहे शुक्लनो बीजो पायो छे, तेरमे शुक्लनो त्रीजो पायो छे, तेरमाने अंते छे, तेरमानी आदिध्यान तथा ध्यानांतरिका छे, "चरिम" चौदमे शुक्लना छेहलां बे भेद छे, ध्यानभेद गुणठाणे इम कह्या ॥ ६६ ॥

दंडकभेया सुगमा, वेयतिगजाववायरकसाओ।
चरणे अविरईइक्का, पढमचउठाणगे नेआ ॥६७॥

टीका—अथगुणस्थानकेषुदंडकभेदानाह दंडकभेदा सुगमा सुज्ञेया नेरईया १ असुराइ १० पुढवाई ५ बेन्दिया ३ चेव गंभयतिरि १ नराण १ वनर १ जोइसिअ १ वेमाणी १ इत्येव चतुर्विंशतिदंडकास्तेमिथ्यात्वेचतुर्विंशरपिभवति सास्वादनेतेजोवायूविनाभवतिद्वाविंशति, मिश्रेऽविरतसम्यक्त्वेषोडशपचेंद्रियदंडका, देशविरतिगुणस्थानकेतिर्यगूपचेंद्रियामनुष्यपचेन्द्रिया, एतौद्वौदंडकौभवतः, प्रमत्तादयोगिपर्यंतेषुएकोमनुष्यपचेंद्रियारयोदंडकोलभ्यते, वेदद्वारेवेदनिकपुरुषनपुंसकस्त्रीनेदलक्षणपावद्वादरकषायइति अनिवृत्तिबादरगुणयावत् वेदनिकोदय ।सूक्ष्मसपरायात् उपरिअवेदीएवजीव वेदास्त्रिविधा।द्र पवेदा भाववेदाश्चतत्रद्र पवेदालिंगाकाररूपा, भाववेदा पुरुषाणांरूपमिलापरूप स्त्रीणांपुरूषाभिलाषरूप षंढानांतूभयाभिलाषरूप, पुरुषादिषु तिणफुफुमनगरदाहसमानविषयदाह सचनवमगुणस्थानकयावद्देव लिंगाकाररूपस्तुसयोगिकेवलिपर्यन्तदृश्यते, तत्पाठश्चकर्मग्रंथेवेदनिके, उपयोगद्वादशकथनेनद्रव्यलिंगग्रहणक्रनमिति, अभिलाषापेक्षयातुनवमयावत्, ननुध्यानारूढस्यश्रेणिगतस्य-

कावेदोदयनानात्राभिलापरूप ,तत्कथ तत्रोच्यतेअत्रवेदोदय नविषयाभिलापरूप किंतुपुरुषे धैर्यरूप , स्त्रीवेदस्यकिंचिद्दैन्यतारूप , नपुंसकस्यकिंचिदातुरतारूपएवज्ञेय , वेदोदयाभावेतुतीव्रत्वदैन्यत्वातुरत्वादयोनभवन्ति, उक्ता वेदा समतिचारित्रिकयपनाह, चरणेत्ति चारित्रसमानिपक्षभेदग्रहणेनसप्तविध, तद्यथा सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसपराय, यथाख्यात, देशविरति , अविरतिश्चतत्रसामायिकमिति सर्वसावद्ययोगविरतिलक्षणसामायिक, तद्विशेषाएवछेदोपस्थाप्यादयोविशुद्धतराध्यवसायविशेषा , सावद्ययोगविरतेरेवतत्र व्युत्पत्ति , रागद्वेषविरहित सम , अयो गमनसकलनियोपलक्षणमेतत्सर्वेनक्रिया, साधो अरक्ताद्विष्टस्यनिर्जराफला, समस्याय समाय समायमितिस्वार्थिकप्रत्यय, समायेभवसामायिक, सामायेननिर्वृत्तसमस्यवाविकारस्तन्मय समाय सप्रयोजनमस्येतिनासत्रनयथाभिप्रेतेथैटक्, तद्यसामायिकद्विप्रकार, इत्वरकालयावज्जीविकश्च तत्राद्यप्रथमान्त्यतीर्थकरतीर्थयो , प्रव्रज्याप्रतिपत्त्यानारोपित, शस्त्रपरिज्ञाध्ययनादिविद श्रद्दधत छेदोपस्थाप्यसयमारोपणेनिशिष्टतरत्वाद्विरते सामायिकव्यपदेश जहाति, इत्येतदित्वरकालमध्यमतीर्थकृताविदेहक्षेत्रवर्तिना यावज्जीविक प्रव्रज्याप्रतिपत्तिकालादारभ्यमाणप्रयाणकादवतिष्ठते, प्रथमान्तिमतीर्थकरशिष्याणासामान्ययतिपर्यायछेदोविशुद्धतरसर्वसावद्ययोगविरतावस्थानविविक्ततरमहाव्रतारोपणछेदोपस्थाप्यसयम । छेदोपस्थाप्यमेवछेदोपस्थाप्यपूर्वपर्यायछेदेसतिउत्तरपर्यायेउपस्थापनछेदोपस्थापन, तदपिद्विधा, निरतिचारसातिचारभेदेन, तत्रशिष्यस्यनिरतिचारस्याधीतविशिष्टाध्ययनविद मध्यमतीर्थकरशिष्योवायदोपसपद्यते, चरमतिर्थंकरतीर्थंनशिष्याणाशिष्यत्वेनभवनेभवति, सातिचारस्तुभग्नमूलगुणस्यपुनर्व्रतारोपणेछेदोपस्थाप्यसुभ यचेनत्, सातिचार-

चस्थितिकल्पएवायततीर्थंकरयोरवेत्यर्थ, परिहारस्तपोविशेषस्तेन्- विशुद्धपरिहारविशुद्धमिति, तदपिद्विधा, निर्विश्यमानक, निर्विष्टकायिकच, तत्रनिर्विश्यमानकमासेवमानकपरिभुज्यमानकमित्यर्थ, निर्विष्टकायिकमासेवितमुपभुक्तमस्य योगात्तदनुष्ठायिनोपिनिर्विशमानकास्ताछील्येशक्तीवानिर्वेश उपभोगोनिर्विशमानका तत्रउपभुञ्जानानिर्विष्टकायिका प्रायोयरितिपरिभुक्तनाहृग्विधतपस निर्विष्टकायिकाइत्यर्थ परिहारविशुद्धिश्चनप प्रतिपन्नानानवकोगच्छ, तत्रपरिहारिणश्चत्वार, अनुपरिहारिणश्चत्वार, कल्पस्थितएकएववाचनाचार्य, सर्वेपिश्रुतातिसपन्नास्तथापिस्थापितकल्पस्थितएक कश्चिद्वस्थाप्यते, तत्रयेकालभेदेनविदिनतपोनुतिष्ठतितेपरिहारिण नियताचाम्लभक्ता, स्वनोनुपरिहारिणाग्रीष्मेचतुर्थषष्ठाष्टमभक्तलक्षणजघन्यमध्यमोत्कृष्ट, क्रमेणैवशिशिरकालेपष्टाष्टमदशमानिजघन्यमध्यमोत्कृष्टानि, वर्षास्वष्टमद्वादशभक्तानि जघन्यमध्यमोत्कृष्टानि, पारणाकालेप्याचाम्लमेवपारयति, उक्तविधानतप षण्मासकृत्वापरिहारित्वप्रतिपद्यते, अनुपरिहारिणश्चपरिहारिणोभवति, तेपिषण्मासान्विदधतेतत्तप, पश्चात्कल्पस्थितइति, एवमेपपरिहारविशुद्धसयमोऽष्टादशमासै परिसमाप्तिमुपयातिपरिसमाप्तेतुतस्मिन्पुनस्तदेवकिंचित्परिहारतप प्रतिपद्यते, स्वशक्त्यपेक्षा केचिद्वामिनकल्पमपरेतुगच्छमेवविशति, परिहारविशुद्धिकाश्चस्थितकल्पाएवप्रथमचरमतीर्थयोरेवनमध्यमतीर्थेष्विति, सूक्ष्मसपरायसयमस्तुश्रेणिमारोहत प्रतिपन्नोभवति, श्रेणिरपिद्विप्रकारा उपशमिका, क्षायिकाच, तत्रोपशमिकाअनतानुबंधिनोमिथ्यात्वादित्रय नपुसकस्त्रीवेदौहास्यादिषट्कपुवद अप्रत्याख्याना प्रत्याख्यानावरण सज्वलनाश्चेति, अस्याश्चारंभकोऽप्रमत्तसयत अपरेतुतुवतेऽविरतदेशप्रमत्ताविरतानामन्यतम प्रारभते, सचानतानुबंधिनश्चतुरोपिसमकमेवउपशमयति । अन्तर्मुहूर्तेनततोदर्शनत्रिक

ततोऽनुदीर्णपुमानारोहन्नपुंसकवेदंतत स्त्रीवेदयोपिद्वारोहति भाइन्न-पुंसकवेदं तत पुरुषवेद तृतीय प्रकृतिरधिरोहत्पाङ्स्त्रीवेदंतत पुरु-षवेदंततोपिहास्यादिषट्कंतत पुंवेदंततोऽप्रत्याख्यानप्रत्याख्यान-रूपौद्वौक्रोधौतन सज्वलनक्रोधंशमयति, एवद्वौमानौपश्चात्सज्व-लनमानं पुनर्द्वेमायेपश्चात्सज्वलनमायापुनर्द्वौलोभौपश्चात् सज्वल-नक्रोधोभस्तस्यसंख्येयानिखंडानिकृत्वाक्रमेणचोपशमपश्चिमखंडम-संख्येयानिखंडानिकरोति, तत प्रतिसमयमसंख्येयभागमुपशमयन्-समस्तमतर्मुहूर्तेनशमयति, ताश्चासंख्येयभागानुशमयन्सूक्ष्मसंपराय-संयमीभवति, सविशुध्यमानसूक्ष्मसंपरायीकथ्यते, अत्यंतविशुद्धाध्य-वसायीदशमगुणस्थानवर्त्ती श्रेण्यारोहेचवर्द्धमानविशुद्धाध्यवसायविशु-द्धतर उपशांतमोहाख्यउपशांतसर्वकषाय एकादशगुणस्थानकलभते, सचोपशान्ताद्धाक्षयेणप्रपतन्पुनर्दशमसूक्ष्मसंपरायगुणस्थानलभते, स-चहीयमानपरिणामत्वात् संक्लिश्यमानसूक्ष्मसंपरायीकथ्यते इति, क्षा-यिकीतुश्रेणिमारोहन्प्रथममनंतानुबंधिनोमिथ्यात्वमिश्रसम्यक्त्वानि-अप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरणौनपुंसकस्त्रीवेदौहास्यादिषट्कपुंवेदम् । सज्वलनाश्चअस्यास्त्वारोहक अविरतिदेशविरतिप्रमत्ताप्रमत्तविरती-नामन्यतमोविशुद्धमानाध्यवसाय सचानंतानुबंधिनोयुगपदेवक्षपय-त्यतर्मुहूर्तेन तत क्रमेणदर्शनानिक्ततोऽप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावर-णाश्चयुगपदेवक्षपयितुमारभते, तन्मध्यभागेत्वेषामिमा षोडशप्रकृती क्षपयति, नरकतिर्यग्गतीएतदानुपूर्व्यौएकद्वित्रिचतुरिंद्रियजाती आ-तपोद्योतस्थावरसाधारणसूक्ष्मनामानि, ततोनिद्रानिद्रा १ प्रचलाप्र-चला १ स्त्यानर्द्धी १ ततोष्टानाशेषंततोनुदीर्णवेदजघन्यपूर्ववत्, ततोहास्यादिषट्कं, ततउदितवेदंतत सज्वलनानामेकैकक्रमेणक्षप-यति, सावशेषपर्वसज्वलन कषायेउत्तरक्षपयितुमारभते, सर्वत्रपूर्वशेष-योत्तरेणसहक्षपयति यावत्सज्वलनसंख्येयभाग तमपिअसंख्ये-

यानिखंडानिकृत्वाप्रतिसमयमेकैकखंडक्षपयति, तदपिसूक्ष्मसंपराय-
संयमीभवति, सविशुद्धिमानकएवकथ्यते, अथचक्षीणमोहीनभवति,
यथोक्तोपशमश्रेणिएकादशगुणस्थानप्राप्त , उपशांतकषायोपियथा-
ख्यातसंयमीभवति, तथापुनरयक्षीणमोहीक्षपितकषायोपियथाख्या-
तसंयमीभवति, यथाशब्दार्थेयथाख्यात संयमोभवति, भगवताथा
सर्वैवकथचरणोप्रसिद्ध यथाख्यात सचैकादशगुणस्थानेउपशांत-
त्वात् द्वादशेक्षीणत्वात्सकषायाभाव , एवसयोगिकेवलिअयोगिके-
वलिनोपियथाख्यात , एवपंचचारित्रचारित्र, अष्टविधकर्मचयरिक्तीकरणा-
द्वारिपुलाकादिभेदा अपिअन्तर्लीनाएवज्ञेया , अनुमतिपक्षसा-
हचर्यात्हिंसाप्रत्याख्यानरूपादेशविरति सर्वथाअप्रत्याख्यानरू-
पाअविरति , एवसप्तभेदा संयममार्गणाउक्तचारित्रस्वरूप ततगुण-
स्थानकेषुविभजनाह, चरणेचारित्रेचारित्राधिकारेप्रथमचतुर्षुगुणस्था-
नकेषुअविरति असंयमएवास्ति ॥ ६७ ॥

हवे ५ —टकना भेद सुगम कहेना, तिहां मिथ्यात्व गु-
णठाणे चोवीस दंडक छे, सास्वादन गुणठाणे तेउवाउ विना
बावीस भेद पामीये, मिश्रगुणठाणे सोल पचेंद्रीना भेद पामीये,
समकिते पण सोल पामीये, देशविरति तिर्यंच पचेंद्रि मनुष्य
पचेंद्रि ए बे दंडक पामीये, अने छट्ठा गुणठाणाथी एक मनु-
ष्यनो दंडक पामीये वेद द्वारे बादरसंपराय पर्यंत तीन वेद
पामीये, दशमा गुणठाणाथी मांडी उपरला पांच गुणठाणा अ-
वेदी छे केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ ए उपयोग तीन वेद
मध्ये कर्मग्रंथे मान्या छे, बाह्यद्रव्यनीलिंगनी अपेक्षाये ए मान्या
छे, पर वेद जे अभिलाषरूप ते भाववेदनी अपेक्षाये नव गुण-
ठाणेज छे, चारित्रमार्गणाना भेद सात ७ सामायिक १ छेदो-

पस्थापनीय २ परिहारविशुद्ध ३ सूक्ष्मसंपराय ४ यथाख्यात ५ देशविरति ६ अविरति ७ ए सात भेद तिहां पहिले च्यार गुणठाणे अविरति एकज छे ॥ ६७ ॥

दरविरइदेसविरए, पमत्तिअपमत्तिचरणतिअगच ।
सामाइयछेयपुण, नियट्टिअनियट्टिगे नेय ॥ ६८ ॥

टीका—देशविरतौपचमेगुणस्थानके दरविरति दराईषद्विरति त्रसहिंसारूपादविरतिर्भवति, प्रमत्तेनथाऽप्रमत्तेचरणतियग चरणानाविकचरणत्रिक सामायिकछेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिलक्षणप्राप्यते, सामायिकपुन छेदइतिछेदोपस्थापनीयचारित्रयुग्मअपूर्वकरणे अनियट्टी अनिवृत्तिकरणेभवति ॥ ६८ ॥

टबार्थ—अने देशविरति गुणठाणे एकज देशविरतिज छे प्रमत्त १ अप्रमत्त २ गुणठाणे सामायिक १ छेदोपस्थापनीय २ परिहारविशुद्ध ३ ए तीन होवे, अपूर्वकरण गुणठाणे तथा अनिवृत्तिकरण गुणठाणे सामायिक चारित्र १ अने छेदोपस्थापनीय चारित्र ए बे चारित्र होय ॥ ६८ ॥

सुहमेसुहमचरण, सेसेसु अहक्खायगभवेचरण ।
योणिलक्खाचुलसी, मिच्छेवीये अ गइतसगा ॥६९॥

टीका—सूक्ष्मेसूक्ष्मसंपरायलक्षणे दशमेगुणस्थानके सूक्ष्मचारित्र सूक्ष्मसंपरायलक्षणचारित्रभवति, शेषेषुउपशातमोहक्षीणमोहसयोगिकेवलिअयोगिकेवलिलक्षणेषु चतुर्षुगुणस्थानकेषु अहक्खायग यथाख्यातलक्षणचारित्रप्राप्यते, इत्युक्तचारित्रद्वार, अथयोनिद्वारअभिधित्सुराह तत्रयोनिरुत्पत्तिस्थान तत्रयेजीवा पूर्वभवायुप

क्षयात्‌अमिनदाशुरुदयेनञुगत्यावऋगत्यावाआगत्यप्रथमसमये यत्र-उत्पद्यते तनयद्वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानपरिणता पुद्गलाआहारत्वेन-गृण्हतितस्यजीवस्यनद्रपायोनि, वर्णादीनामम यनमपरावृत्तौअपरा-योनि, एवएकवर्णद्विवर्णत्रिवर्णचतुर्वर्णपचवर्णादिसयोगेभगावर्णस्य ३१ एकत्रिंशत्‌ गधस्यनय ३, रसस्य एकत्रिंशत्‌ ३१, स्पर्शस्य-षट्त्रिंशदुत्तरशत १३६, सस्थानस्यएकत्रिंशत्‌, तेचपरस्परगणितायो-निभेदा भवति, तेचाहारपुद्गलत्रिंशतिगुणास्तथापिथुर यत्वेनग्राह्या-इतिथुर यत्वेनवर्णादीनामेकत्वमेवभवनि, एवयोनय शीतोष्णादिस-वृतादिसचित्तादिभेदात्‌चतुरशीतिप्रमाणा सति ताश्चेमा, पुढविदग-अगणिमारुअ, इक्किक्केसत्तयोणिलक्खाउ, दसपत्तेअ तरूण चउदस-लक्खापइयरेसिं १

दोदोविगलनारय, तिरिदेवेचउरचउरलक्खाइ,
मणुएचउदसलक्खा, सखाजोणीपाचुलसीओ ॥ २ ॥

तत्रमिथ्यात्वेचतुशीतिलक्षायोनय प्राप्यते, नीयेत्ति द्वितीयेसास्वाद-नेअगतिनसका –गतिनसकास्तेजोकायावायुकायिकास्तद्विरहिता सा-धारणरहिता शेष ५६ षट्पचाशल्लक्षायोनीनाप्राप्यन्ते, लक्खाचुल-सीमिच्छे बीएगतसनिगोयविणाइविपाठ ॥ ६९ ॥

टबार्थ —सूक्ष्मसपरायगुणठाणे सूक्ष्मसपरायचारित्र होये, शेष इग्यारमो बारमो तेरमो चउदमो ए च्यारे गुणठाणे यथाख्यात चारित्र छे हवे चोरासी लाख जीवायोनि कहे छे, मिथ्यात्व गुणठाणे चोरासी लाख जीवायोनि छे, सास्वादन गुणठाणे तेउ-कायनी सात लाख वायुकायनीए चउद लाख नथी, चउद लाख साधारणनी नथी ॥ ६९ ॥

मीसदुगेसुरनिरया, तिरिमणुपचेंद्रिसभवाजोणी ।
देसेतिरियनराणा, सेसेसु मणुअयोणीओ ॥ ७० ॥

टीका—मिश्रसम्यक्त्वलक्षणेगुणस्थानद्विकेसुरयोनि , निरयत्ति नारकप्रत्ययायोनि , तिर्यग्पचेंद्रियप्रत्ययायोनि , मनुष्यप्रत्यया-योनि षड्विंशतिलक्षायोनीना प्राप्यते, देशे देशविरतार ये गुणस्थाने-तिर्यग्मनुष्यप्रत्ययाअष्टादशलक्षायोनीनासभवन्ति, शेषेषुप्रमत्तादयो-गिकेवलिपर्यंतेषुमनुष्यप्रत्ययाएवचतुर्दशलक्षाएवप्राप्यते, अनपर्या-प्तापर्याप्तसमूर्छिमादीनायोनिभेद व्याख्यायाअदृष्टत्वान्नइहापिसमुचिता-व्याख्यानाएवेति ॥ ७० ॥

टबार्थ—मिश्रगुणठाणे तथा समकित गुणठाणे पचेंद्रीप-णानीच्यार लाख देवतानी च्यार लाख, नारकीनी च्यार लाख, तिर्यचनी चउद लाख, मनुष्यनी एटली योनि होये, देशविरति गुणठाणे च्यार लाख तिर्यचनी, चउद लाख मनुष्यनी होये, शेष छठाथी माडी सर्व गुणठाणे मनुष्यनी योनि होये, योनि ते वर्ण गध रस फरसमया, जे गर्भ प्रथम समये आहार लेने ते योनि कहीये ॥ ७० ॥

कुलकोडीणएव(सु), धुवबधीमिच्छमाइठाणेसु ।
सगचत्तछचत्तगुणयाल, दुगचपणतीसदुगतीस ॥७१॥

टीका—कुलकोटीनाअपिच्यार याएवमेवयोनिक्रमेणैवज्ञेया, कुलाश्चभिन्नयोनौअपिएककुलत्वभवति, एकयोनावपिअनेककुलत्व-भवति, गतकुलकोटीद्वार, अथध्रुवबधिनीद्वाराण्याह, ध्रुवबधीइत्यादि-तत्रनिजहेतुसद्भावेयासाप्रकृतीनाध्रुवोअवश्यभावीबधोभवतितानाध्रुव-बधिन्य , यासाचनिजहेतुसद्भावेपिनावश्यभावीबधस्ताअध्रुवबधिन्य ,

यदन्नादि, "नियहेतुसमनेनिद्धि, भयणिज्जोजेणहोयपयडीण, वचोता-अनुवाओ धुराअभयणिज्जबजाओ ।१। ध्रुवबंधिन्यश्च वन्नचउतेय-कम्मा गुरुलहुनिमिणो न्वायभयकुछा मिच्छकसायावरणा विग्घधुव-वंधिसगचत्ता । १ । तनवर्णचतुष्कंतैजसकार्मणागुरुलघुनिर्माणो-पघातानिइत्येतानवनामप्रकृतय, भयजुगुप्सामिथ्यात्वकषाया पोडश-इत्येताएकोनविंशतिर्मोहनीयप्रकृतय, आवरणानिज्ञानावरणपञ्चक-दर्शनावरणनवकस्वरूपाणिचतुर्दश विघ्नमन्तरायदानलाभभोगोपभोग-वीर्यान्तरायपञ्चकपर्यायमित्येवंसप्तचत्वारिंशदप्येताध्रुवस्थानारोहेव-र्यनिरोधेऽपिस्वस्वहेतुसद्भावेअवश्यबध्यमानत्वाद्ध्रुवबंधिन्य इति, मिथ्यात्व-मादिर्येषांवेमिथ्यात्वादय तेषुमिथ्यात्वादिगुणस्थानेषु,मिच्छमाइठाणेसु-इत्यनेनमिथ्यात्वादिषुगुणस्थानेषुयथासंभवयोज्य, तत्रमिथ्यात्वे "स-गचत्त" सप्तचत्वारिंशत्ध्रुवबंधिन्य बध्यते द्वितीयेसास्वादनेमिथ्यात्व-नशाभावेषट्चत्वारिंशत्ध्रुवबंधि योनध्यते, गुणयालदुगइत्यनेनमि-श्रगुणस्थानकेसम्यक्गुणस्थानकेऽनन्तानुबंधिस्त्यानर्द्धित्रिकमिथ्यात्वा-नामपगमेएकोनचत्वारिंशद्ध्रुवबंधिन्योबध्यन्ते देशविरतेअप्रत्या-ख्यानाभावेपञ्चत्रिंशत्प्रकृतयोबध्यते, प्रमत्तेप्रत्याख्यानकषायव्या-पगमेएकत्रिंशत्ध्रुवबंधि योबध्यते ॥ ७१ ॥

टवार्थ —धुलत्तोडी पण ए रीते, हवे ध्रुवबंधीनी सडतालीस प्रकृति छे, वर्णादि ४ तेजस १ कार्मण १ अगुरुलघु १ निर्माण १ उपघात १ दुगंछा १ मिथ्यात्व १ कषाय १६ ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ अंतराय ५ एवं सुडतालीस ध्रुवबंधी जाणवी, मिथ्यात्व गुणठाणे सडतालीश ध्रुवबंधी बांधे, सास्वादन गुणठाणे मिथ्यात्व विना छेतालीश ध्रुवबन्धी छे, मिश्रगुणठाणे तथा समकित गुणठाणे ए बे गुणठाणे अनन्तानुबंधी ४ थीणधी ३ मिथ्यात्व १ [illegible] बांधे,

तेणे उगुणचालीस न्यावे, देशविरति गुणठाणे अप्रत्यार यानी ४ न न्यावे ते पांत्रीस, न्यावे छठे गुणठाणे प्रत्यार यानी प्रकृति, ४ न न्यावे तिणे इगतीस ध्रुवनधी प्रकृति न्यावे ॥७१॥

इगतीसगुणतीस, अट्ठारसचउदसचसुहुम्ममिम ॥
अधुवावंधेसेसा, धुवउदयामिच्छिसगवीस ॥७२॥

टीका—अप्रमत्तेपिएकत्रिंशन्नुताएवबध्यन्ते, अपूर्वकरणेनिद्राद्विकापगमेएकोनत्रिंशत् ध्रुवबंधिन्योबध्यते, नवमेअनिवृत्तिनादराख्येभयजुगुप्सानवनामप्रकृत्यपगमेऽष्टादशध्रुवबंधि योबध्यते । सूक्ष्मसपरायेसज्वलनाभावेचतुर्दश ध्रुवबंधिन्योबध्यते, तत परध्रुवबंधिन्योबध्यते, अवेवप्रकृतोशेषा ध्रुवबंधप्रकृत्यपसरेशेषा या प्रकृतयस्ताअध्रुवा ताअध्रुवबंधिन्योज्ञेया ताश्चेमा, तणुवगागिइसघयण जाइगइखगइपुव्विजिणुसास, उज्झोयायवपरघातसवीसागोयवेयणीय १ हासाइजुअलदुगवेअआउतेवत्तरी, अध्रुवबंधस्तनव औदारिकवैक्रियाहारलक्षणास्तिस्र, तेजसकार्मणयोर्ध्रुवबंधित्वेनाभिहितत्वात्, उपांगानित्रीणि, आकृतय षट, सहननानिषट, जातय पंच, गतयश्चतस्र, खगतिद्वय, आनुपूर्व्यश्चतस्र, जिननाम, श्वासोच्छ्वासनाम, उद्योतनाम, आतपनाम, पराघातनाम, त्रसदशक, स्थावरदशकरूप, प्रसर्विंशतिरूप, गोत्रद्विक, वेदनीयद्विक, हास्यादिचतुष्क हास्यरति अरतिशोकलक्षण, वेदत्रिक, आयुश्चतुष्टय एव त्रिसप्तति अध्रुवबंधिन्योभवति, तत्रमिथ्यात्वेसप्तति अध्रुवबंधिन्योबध्यते, सास्वादनेपचपंचाशत्, मिश्रेपचत्रिंशत्, सम्यक्त्वेअष्टत्रिंशत्, देशविरतौद्वात्रिंशत्, प्रमत्तेऽष्टात्रिंशति, अपूर्वकरणेप्रथमत्रिंशति, चरमेभागेषट्, अनिवृत्तिकरणेचतस्र, सूक्ष्मसपरायेत्रिस्र, उपशातेएका, क्षीणेएका,

सयोगिकेवलिलक्षणेएका, एवमनुत्तरभिन्योवन्यते, अनानुबन्ध अना-
द्यनंतभंग, अभव्याना अनादिसानोभंगो, भव्याना सादिसातभंग,
उपशांतयावत्आरूढस्य ध्रुवबन्धकाभावेपुनर्मिथ्यात्वगतेसप्तचत्वारिं-
शद्बन्धकरणेचयोभवति, पुन श्रेण्यारोहेतद्बन्धापगमेनयोन, तेन-
सादिसान्त भंगकोभवति, पुनरनुबन्धप्रकृतिषुएक सादिसान्त भंग
प्राप्यते, निरंतरबन्धात्बन्धकालेसादि बन्धाभावेसान्त इतिभाष्य, या-
साम व्युच्छिन्नस्तुसनन स्वोदय यवच्छेदकालयावदुदयस्ताध्रुवोदया,
यासांतुव्यवच्छिन्नोप्युदयोभूयोपिप्रादुर्भवति तथाविधद्रव्यक्षेत्रकाल-
भावस्वरूपपंचविधहेतुसन्निधाप्यताअध्रुवोदया, यदभाणि, अव्वु-
छिन्नोउदयो जाणपयडीणनाधुवोदइआवुछिन्नो विहुसभवइ जाण-
उदयानाओ १ तत्थ्रुवोदयाइमा, निमिणथिरअथिरअगुरुअसुहअ-
सुहवेयकम्मचउवन्ना नाणनरायदसणमिछधुवउदयसगवीसा १ तत्र-
निर्माणअस्थिरस्थिरअगुरुलघुशुभअशुभतैजसकार्मणद्वेशरीरेवर्णादि-
चतुष्कएताद्वादशनामकर्मणं १२, ज्ञानावरणपचकअंतरायपंचक-
मिथ्यात्वइत्येता सप्तविंशति ध्रुवोदयाज्ञेया, मिथ्यात्वस्यसान्तरोदये-
पिध्रुवोदयस्तासाअनंतकालमिथ्यात्वोन्येनबन्धसहवर्तमानात्, ध्रुवोद-
योमिच्छि, मिथ्यात्वेसप्तविंशतिरपिअस्ति, सतिमिथ्यात्वेकस्यापिनोद-
यव्यवछेद ॥ ७२ ॥

टबार्थ —सातमेपणदगतीम बावे, आठमे गुणठाणे निंद्रा
२ विना ओगणत्रीस बांधे नवमे गुणठाणे भय १ दुगछा
१ नव नामकर्मनी एगुणयार न बांधे तेवारे अढार ध्रुवबन्धी
बांधे सूक्ष्मसंपराय गणठाणे सज्वलना ४ च्यार विना चउद
ध्रुवबन्धी बांधे ध्रुवबन्धीयी काढता शेष रही ते अध्रुवबन्धी जा-
णवी ते इहा मिथ्यात्वे सित्तेर अनुबन्धी छे सास्वादने

५५ छे, मिश्रे ३५ छे, समकिते ३९ छे देशविरते ३३ छे प्रमत्ते ३३ छे अप्रमत्ते २८ अपूर्वकरणे प्रथम ३० पछे आठ ८ अनिवृत्ति ४ तथा सूक्ष्मसंपराये ३ उपशांतमोहे १ क्षीणमोहे १ सयोगि केवलि १ अयोगि केवलिये नथी ॥७२॥

छवीसखीणजा, सयोगीबारसधुवोदयापयडी ।
ओहोदओवसेसा, अधुवदया हुंतिपयडीओ ॥७३॥

टीका—सास्वादनादारभ्यक्षीणमोहपर्यन्त मिथ्यात्वरहिता पड्विंशति ध्रुवोदयाल्पन्ने, क्षीणमोहान्ते ज्ञानावरणदर्शनावरणान्तरायक्षयात् सयोगिगुणेद्वादशनामप्रकृतयध्रुवोदयाउदयत्वेनप्राप्यन्ते अयोगिगुण सर्वा अपिअध्रुवोदयाउदयेवर्त्तते, तत्रषोडशकषायाणामन्येनोत्वादीनाचतुर्णानिकसमयउदय, क्रोधोदयकालेमानादीनामुदयाभाव, मानोदयकालेक्रोधादीनामुदयाभाव, यत्रपिवर्णपंचकेकृष्णादीनामन्येनएवरयवर्णरयननिरन्तरोदय तथापिअन्यनमवर्णोदयेनवर्णइतिसामान्यप्रवृत्तेर्ध्रुवोदय एवन कृष्णादीनामिति, पुन अध्रुवोदया पचनवति, नत्रगाथा थिरसुभिअरविणु अधुवबंधीमिच्छविणमोहधुवबंधी निदोववायमीसं सम्मपणनवइअधुवुदया १ पाअध्रुवबंधिन्य निसप्ततिप्रकृतय तासामध्यात्स्थिरमस्थिरशुभमशुभइतिप्रकृतिचतुष्टयध्रुवोदयेग्रहितत्वात्शेषा एकोनसप्ततिप्रकृतय अध्रुवोदयाभवति, मोहध्रुवबंधिन्यएकोनविंशतिस्तन्मध्येमिथ्यात्वस्यध्रुवोदयातर्गतत्वात्शेषा अष्टादश ध्रुवोदयाभवति, निद्रापंचक उपघातनाममिश्रमोहनीयसम्यक्त्वमोहनीयइतिपंचनवति अध्रुवोदया यद्यपिव्छिन्नस्याप्युदयस्यपुनरुदयसद्भावादिति, यद्येवमिथ्यात्वस्याप्यध्रुवोदयताएवयुज्यते सम्यक्त्वप्राप्तौ व्यवच्छिन्नस्यापितदुदयस्यमिथ्यात्वगमनेपुन सद्भावादिति चेदुच्यते, यासाप्रकृतीनायेषुगुणस्थानकेषु

गुणप्रत्ययनोऽप्यभ्युदय यवच्छेदोनविद्यते, अथद्र यक्षेत्रकालाद्यपेक्षयातेष्वेवगुणस्थानकेषुकदाचिदसौभवति कदाचिन्नभवतिताएव-अध्रुवोदया, यथानिद्रायामिथ्यात्वादीरम्यक्षीणमोहयावदुदयोऽवश्यप्रवर्तते,अथचनसततमसौभवती।निमिथ्यात्वस्यनेदलक्षण, यतस्तस्यप्रथमगुणस्थानकेनाप्यभ्युदय यवच्छेदस्तत्रसननोदय नकदाचित्त्व इतिध्रुवोदयेनैवतग्येति ओघोदयत ध्रुवोदयापट्टारेऽवशेषाअध्रुवोदया प्रकृतयोभवति, तत्रमिथ्यात्वसप्तदशाविकशतनमोयोदयेतत्रसप्तविंशतिध्रुवोदयास्तदपगमेशेषाभवन्ति, मिथ्या वेअध्रुवोदयाभवति, एवसास्वादनेपचाशीति, मिश्रेचतु सप्तति, सम्यक्त्वेऽष्टसप्तति, देशविरतौएकषष्टि, प्रमत्तेपचपचाशत्, अप्रमत्तेपचाशत्, अपूर्वकरणेषट्चत्वारिंशत्, अनिवृत्तिकरणेचत्वारिंशत्, सू मसपराये चतुस्त्रिंशत्, उपशातमोहेत्रयस्त्रिंशत्, क्षीणमोहेएकत्रिंशत्, तथाचरमातेएकोनत्रिंशत् सयोगिकेवलि न्निंशत्, अयोगिकेवलिनिद्वादश, अध्रुवोदयाउदयत्वेनज्ञेया, द ध्रुव, अध्रुवो,यासुप्रकृतिषुअनाद्यनतअनादिसातलक्षणौद्वौभगकौभवत, तत्राभ यानाएता सप्तविंशतिरप्यनाद्यननोदयाएव, भ यानातुअनादिकालीनाअविस्त्वोदय यवच्छेदकालेअध्रुवयात् साताइति, अध्रुवोदयानाप्रकृतीनातुनिरतरउदयाभावद् सादिसाततताएवइत्येकभग ॥ ७३ ॥

ट्यार्थ —हवे ध्रुव उदयी सत्तावीस छे निर्माण १ अथिर १ अशुभ १ शुभ १ अगुरु १ अगुरु लघु १ तैजस १ कार्मण १ वर्णादि ४ ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अतराय ५ मिथ्यात्व १ ए सत्तावीस ध्रुवोदयी मिथ्यात्वे छे सास्वादनथी माडि क्षीणमोह पर्यंत मिथ्यात्व विना छवीस ध्रुवोदयी छे सयोगी गुणठाणे नामकर्मनी बार ते ध्रुवोदयी छे अयोगीमे

ध्रुवोदयी नथी बारनो उदय छे अध्रुवोदयीनो छे ओवोदयपी ध्रुवोदयी टालना शेष रही ते अध्रुवोदयीनी मरया जाणवी, ते अध्रुवोदयी पचाश छे ९५ ते मध्ये मिथ्यात्वे ९० छे सास्वादने ८५ मिश्रे ७४ समकिते ७८ देशविरते ६१ प्रमत्ते ५५ अप्रमत्ते ५० अपूर्वकरणे ४६ अनिवृत्तिकरणे ४० सूक्ष्मसपराये ३४ उपशान्तमोहे ३३ खीणमोहे ३१ ॥७३॥

तीसहीयसयसना, धुवाउवमतमोहठाणजा ॥
खीणेअसईचरिमे, चउसयरिसेसअधुवाओ ॥७४॥

टीका—अथसत्ताध्रुवपणुवदिशाह तीसहियेत्ति तनससारिणाअप्राप्तसम्यक्त्वागुत्तरगुणाना सान येनचतुर्गतिपुसद्भावेनभवतिताध्रुवसत्ताका, यास्तुकदाचिद्भवन्तिकदाचिन्नत्यनरेनभवन्तिनाअध्रुवसत्ताकाज्ञेया, तत्रगाथा तत्रवनवीससगवे अकम्मधुवबधिसेसवेअतिग, आगइतिगरेपणीय हुजुअलसगउरलसासचउ १ खगइनिरिदुगतियधुवसत्तानसदशकस्थावरदशकचोभयमीलनेनतसविंशति नवनीसत्ति, वर्णपचकगधद्विकरसपचकस्पर्शाष्टकमीलनेनविंशति, सगतेयकम्मत्ति, तैजसकार्मणसप्तकतैजसशरिर १ कार्मणशरीर २ तैजसतैजसबंधन १ तैजसकार्मणबंधन १ कार्मणकार्मणबंधन १ तैजससघातन १ कार्मणसघातन १ इतितैजससप्तक धुवबधिशेषेतिवर्णचतुष्कतैजसकार्मणशरीरागुरुलघुपघातनिर्माणरूपाएकचत्वारिंशत्ध्रुवबन्धिन्य, वेदतिक आगइतिगत्ति आगिइसघयणजाइद्दति सस्थानसहननजातिसर्वेमिल्नेसप्तदश १७ वेदनीय सातासातलक्षण हुजुअलत्ति युगद्विकहास्यरतिअरतिशोकलक्षण, सगउरलत्ति औदारिकसप्तक, तद्यौदारिकशरीर १ औदारिकागोपागलक्षण २ औदारिकसघातन १ औदारिकबंधन १ औदारिकतैजसबंधन १ औदारिककार्मणबंधन १ औ-

दारिकतैजसकार्मणबन्धन ७ इतिऔदारिकसप्तक, उच्छ्वासचतुष्क उच्छ्वास १ उद्योत १ आतप १ पराघातलक्षण १ सुरगति १ अशुरगतिद्विक २ तिर्यग्गतितिर्यगानुपूर्वीलक्षणतिर्यग्द्विक २ नीचैर्गोत्रलक्षणएतासांत्रिशदुत्तर शतसंख्या प्रकृतयोऽध्रुवसत्ताकाअभिधीयते ध्रुवसत्ता क्वचिदासम्यक्त्वलाभदर्वाक्सर्वजीवेषुसदासद्भावात्, अथानन्तानुबंधिनाकषायाणामुद्वलनसंभवाद्ध्रुवसत्ताकत्वंयुज्यते, न तु कथमनुवसत्ताकमकृतीनांमिशदधिकशतसंख्यायामगण्यते? सत्रवोच यतोऽवाप्तसम्यक्त्वाद्युत्तरगुणानामेवजीवानामेतद्विसंयोगो नमवंजीवानां अध्रुवसत्ताकत्वं या तथाप्तोत्तरगुणजीवानाचिंत्यते, अतोऽनन्तानुबंधिनाध्रुवसत्ताकत्वंयदिवोत्तरगुणप्राप्तिमपेक्ष्ययाअध्रुवसत्ताकताक्षीक्रियते तदासर्वासामपिप्रकृतीनाम्यातानोऽधुवबंधिनामेव यत सर्वाअपिप्रकृतयोयथास्थानमुत्तरगुणेषुसत्ता यब्छेदमनुभवन्तीति, तत्रोपशमश्रेणिगतमप्तएकादशगुणस्थानकयावन्नूर्निंशदधिकशतप्रसत्तायामाप्यते यद्यपिक्षायिकसम्यक्त्वकनासप्तकादिक्षयरूपोसत्ताभेदोऽस्ति, तदपिगुणस्थानेसामान्यसत्ता विकारेकथितत्वान्नैतद्विवक्षितं तथापिस्वबुध्यावगन्तव्य, क्षीणे असत्त्वेति अष्टचत्वारिंशदधिकशतसत्तापेक्षयामोहनीयषड्विंशति निद्रापंचक आयुस्त्रिक त्रयोदशनामप्रकृतय औदारिकतैजसबन्धन औदारिककार्मणबन्धन औदारिकतैजसकार्मणबन्धन तेजसकार्मणबन्धनएता पंचाशद्व्यवच्छिद्यते, तत अशीतिशतद्वयोसत्तासुरूपाप्राप्यते, अष्टपंचाशतसत्तापेक्षयापडशीति सत्तायांप्राप्यते, "चरिमे" त्रयोदशेचतुर्दशेगुणस्थानेष्वतु सतानि सत्तायांप्राप्यते गुणस्थानोक्तओघसत्तापेक्षयाध्रुवसत्तागणनानुयोया अध्रुवसत्तागुणस्थानकेव्वक्त या, अध्रुवसत्ताअष्टात्रिंशति यास्तुकदाचि कस्यापिनाप्राप्यते कस्यापिप्राप्यते तेनाध्रुवसत्ताका, ताश्च सम्यग्मोह १ मिश्रमोह १ मनुष्यद्विक २ देवद्विक २ नरक-

द्विक २ वैक्रियसप्तकलक्षण, वैक्रियएकादशक, जिननाम, आयुश्चतुष्टय, आहारसप्तक, उच्चैर्गोत्रलक्षणाष्टाविंशति प्रकृतिसमूहरूपाअध्रुवसत्तारूपास्तत्रमिथ्यात्वेऽष्टाविंशतिरप्यध्रुवसत्ता प्राप्यन्ते, जीवभेदापेक्षयासास्वादनेमिश्रेचजिननामरहिता सप्तविंशति सम्यग्दर्शनात् उपशातमोहयावत् अष्टाविंशतिरप्यध्रुवसत्ताका प्राप्यन्ते क्षीणमोहेसयोगिकेवल्ययोगिकेवलिलक्षणेगुणस्थानत्रिके एकविंशतिरध्रुवसत्ताका प्राप्यते, एवध्रुवसत्ताशेषाअध्रुवसता प्रकृतयइति,इत्युक्तअध्रुवसत्ताद्वार ॥ ७४ ॥

टवार्थ —तथा २९ सयोगिये ३० छे अयोगीये १२ अध्रुवोदयी जाणवी ध्रुवसत्ता एकसोतीस छे ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ वेदनी २ मोहिनी २६ नामकर्मनी तिर्यंचगति ४ जाति ५ औदारिक १ तैजसकार्मण ७ सघयण ६ सस्थान ६ वर्णादि २० विहायोगति २ तिरिआणुपूर्वि १ जिननाम कर्मविना प्रत्येक ७ त्रसदश १० थावर १० नीचगोत्र १ अतराय ५ एकसोतीस १३० ध्रुवसत्ता इग्यारमा गुणठाणा पर्यंत जाणवी, नवमाने बीजे भागे क्षपकश्रेणिने तेर नीकले तेवारे नवमाथी क्षीणमोहपर्यंत ऐंसीनी सत्ता छे क्षीणमोहे ऐंसी, तेरमे चउदमे चहुत्तरी ध्रुवसत्ता छे मिथ्यात्वे २८ सास्वादने २७ समकिते २८ अप्रमत्ते २८ अनिवृत्ति २८ सूक्ष्मसपराये २८ उपशातमोहे २८ क्षीणमोहे २१ सयोगि केवली २१ अयोगि केवली २१ ए अध्रुवसत्ता जाणवी ॥ ७४ ॥

मिच्छेविसममिच्छा, योएअणथीणत्तिविणुमीसदुगे ।
घोयतीअकसायहीणा, देसेपमत्त गुअलम्मि ॥७५॥

टीका—साम्प्रतसर्वघातिदेशघात्यघातिद्वारमभिधित्सुराह ॥ तत्रप्रथमघातिलक्षणं, यथाआत्मनोज्ञानदर्शनचारित्रवीर्यलक्षणं गुणचतुष्टयं स्वरूपेणस्वकीयज्ञायकत्वदर्शकत्वस्थिरत्वसामर्थ्यत्वलक्षणस्वकार्यस्वकरकं, तथाशेषाणाञ्च यथाबाधादीनांआत्मगुणानांनिरावरणत्वकरणेकारणरूपमपितेनएतद्गुणचतुष्टयमप्रधानं शेषाअव्याबाधाद्योगुणा स्वरूपत्वे नैकाग्र्यरूपा ना यद्गुणप्राकट्येहेतुत्वमिति, अतोज्ञानादीनांकारणकार्यरूपोभयधर्मघातानन्तज्ञानावरणदर्शनावरणमोहान्तरायलक्षणानिघातिकर्माण्युच्यते, शेषाणिवेदनीयायुर्नामगोत्ररूपाणिअघातीनिअभिधीयते, तत्रघातिषु या प्रकृतय उदिता स्वावार्यगुणसर्वंआहन्त्वितिघातयत्येवशीला सर्वघाति योविंशति भवति, या प्रकृतय उदिता स्वावार्यगुणआवृतमपिदेशेन घातयत्येदेशेनोविरतिगुणप्रत्ययादिनाक्षयोपशमं प्राप्यतद्गुणप्राकट्यंलभते इत्येवशीला देशघातिन्य पंचविंशतिर्भवति, तत्रसर्वघातिन्य केवलज्ञानावरण केवलदर्शनावरण पंचनिद्राद्वादशादिनाअनन्तानुबंधिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरणलक्षणा कषाया मिथ्यात्वंचेतिविंशति, तत्रकेवलज्ञानावरणकेवलदर्शनावरणेक्षपकश्रेण्यादौप्रक्षीयमाणस्थितिरसप्रदेशक्षययात्रसर्वथाक्षयस्तावत्तद्गुणप्रागभावानिक्षयस्तावत्तद्गुणप्रागभाव, सर्वथाक्षये सकलविशेषावबोधसकलसामान्यावबोधरूपोकेवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणोभवत, अतएतेसर्वघाति यो तयानिद्रापंचकानामप्युदयअवबोधसर्वथाघातयन्तितेनसर्वघातिन्य, यद्यपिनिद्राणामपिस्वप्नादीनांदर्शनतदपिनिद्रोदयशैथिल्येनैवेतिद्वादशकषायाणाउदयोपिअनन्तानुबन्ध्युदय शुद्धचारित्रधर्मरुचिघातनरूपं, अप्रत्याख्यानकषायोदयस्त्वहिंसकपरिणामघातनरूपं, प्रत्याख्यानकषायोदय सर्वसावद्यविरतिरूपपरिणामघातक, एतेयथाक्रमसर्वघातित्वात्सर्वघातका, यत्पुनरतेषाप्रबलोदयेपिअयोग्याहारवि-

रमणउपलभ्यते, तन्नारिवाहहष्टातोवाच्य , सुहविमेहदए होईपहा-चदसूराणमित्यादिरोय, अथवानरकादिविपाकभयाद्‌यद्विरमणतर्येद्रि-यसुखाभिलाषे नैवेतितीव्रलोभोदयएग्राह्य , तथामिथ्यात्वतुजिनप्र-णीततत्त्वश्रद्धानस्वरूपसम्यक्त्वसर्वमपिहवीतिसर्वघाति, यत्तुतस्यप्र-बलोदयेपिमनुष्यपश्वादिवस्तुश्रद्धानतदपिस्याद्वादोपयोगाभावात्‌ मि-थ्येवेति ॥ उक्तच ॥ विशेषावश्यके, सदसदविसेसणाओ भवहेउ-जहत्थिओवलभाओ, नाणफलाभाओ मिच्छद्दिट्टिस्सअन्नाण १ इतिमिच्छेवीसममिच्छाइति ॥ मिच्छेइतिमिथ्यात्वेवीसर्विंशतिप्र-कृतय सर्वघातिन्योबवेसति, अमिच्छामिथ्यात्वरहितायकोनविं-शति वीएत्ति द्वितीयेसास्वादनेबवेप्राप्यन्ते, ताएवएकोनविंशति अनतानुबधिचतुष्टयस्त्यानर्द्धिनिकविनाद्वादशसर्वघातिन्य मीसदु-गेत्ति मिश्राविरतिसम्यक्त्वलक्षणेगुणस्थानद्विकेप्राप्यन्ते वीयकसा-यहीणा देसेइतिसप्त द्वितीयकषायहीना देशविरतेऽष्टैसर्वघातिन्य तीयकसायहीणाप्रमत्तयुगलेतृतीयकषायरहिताश्चतस्र प्रकृतय प्रम-त्ताप्रमत्तलक्षणेगुणस्थानद्वयेप्राप्यन्ते ॥ ७५ ॥

टबार्थ —मिथ्यात्वे वीस सर्वघाती छे, सास्वादन गुणठाणे मिथ्यात्वमोहिवी विना १९ सर्वघातिनो बध छे, मिश्र तथा समकित गुणठाणे अनतानुबधी ४ थीणद्धि तिन विना बार सर्व-घाती प्रकृतिनो बध छे, देशविरति गुणठाणे बीजी चोकडी अप्रत्याख्यानीयानी काढीये एटले आठ सर्वघातिनो बध छे, प्रमत्त तथा अप्रमत्त ए वे गुणठाणे सर्वघाति ४ नो बध छे केवलज्ञानावरणी १ केवलदर्शनावरणी १ निद्रा वे ए च्यार बाधे छे ॥ ७५ ॥

केवलजुअलावरण, अपुव्ववीअभागओअसुहुमजा ।
दरघाइमिच्छिसत्ता, नपुविणातेविसासाणे ॥ ७६ ॥

टीका—केवलदुअलावरणमिति ॥ अपुव्विइतिअपूर्वकरणप्रथमभागात्वेनिद्राद्वयबन्धाभावेअपूर्वकरणस्यद्वितीयभागन सूक्ष्मसपरायपावत् केवलयुगलावरण केवलज्ञानावरण केवलदर्शनावरण रूपाप्रकृतिर्बध्यते, तत परबन्धाभाव दरघाइतिदेशघातिन्य पचविंशति मतिज्ञानावरणश्रुतज्ञानावरणमन पर्ययज्ञानावरणरूपज्ञानावरणचतुष्टय चक्षुर्दर्शनावरणाऽचक्षुर्दर्शनावरणावधिदर्शनावरणरूपदर्शनावरणत्रिकसज्वलनाश्चत्वार क्रोधमानमायालोभरूपानोकषायाहास्यरतिअरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीवेदपुवेदनपुसकवेदलक्षणा "नोकषायपत्ति" कषायसहशात्त्वर्य, अन्तरायपचकएता पचविंशतिप्रकृतयोदेशघातिन्योदेशघातनयतीत्येवशीलादेशघातिन्योमतिज्ञानावरणमुदितमपिदेशघातपतिकिंचित्देशक्षयोपशममप्राप्त तथाघातयतिएतसर्वतथा मलयगिरिपज्यास्तुआत्मन सर्वस्वकेवलज्ञानकेवलदर्शनरूपघातयतिना सर्वघातिन्योमतिज्ञानादिकतु आत्मनोदेशरूपगुणघातयतिनादेशघातिन्य तासामध्ये, मिच्छि मिथ्यात्वेसवाइति सर्वा प्रकृतय देशघातिन्योबध्यते तापुवसास्वादनेनपुसकवेदरहिताश्चतुर्विंशतिरेवबध्यन्ते, नपुसकवेदश्च मिथ्यात्वप्रायोग्यएवेति ॥ ७६ ॥

टबार्थ—अपूर्वकरण गुणठाणाना बीजा भागथी दशमा गुणठाणासीम केवलज्ञानावरणी केवलदर्शनावरणी ए बे सर्वघातीनो बध छे पछे नथीज, देशघातीप्रकृति २५ ज्ञानावरणी ४ दर्शनावरणी ३ हास्यादि ६ वेद ३ सज्वलना ४ अतराय ५ एव २५ ते मध्ये मिथ्यात्वगुणठाणे सर्व २५ देशघातीनो बध छे, सास्वादन गुणठाणे नपुसक विना चोवीस देशघातिनो बध छे ॥ ७६ ॥

थीविणुमीसचउके, अपमत्तदुगम्मिसोगदुगहीणा।
हासचउहीणनवमे, अपुरिससजलणदसमम्मि ७७॥

टीका—थीविणुत्ति मीसचउकेत्ति–मिश्राविरतिसम्यग्देशविरतिप्रमत्ताख्येगुणस्थानचतुष्टयेस्त्रीवेदरहितास्त्रयोविंशतिर्बध्यते, अपमत्तदुगम्मि अप्रमत्तापूर्वकरणलक्षणेगुणस्थानद्वयेशोकारतिहीनाएकविंशतिर्देशघातिन्योबध्यते, तथानवमेअनिवृत्तिबादराख्येगुणस्थानेहास्यरतिभयजुगप्साहीना सप्तदशदेशघातिन्योबध्यते, दशमम्मि इतिदशमेसूक्ष्मसंपरायेगुणस्थानेपुरुषवेदसंज्वलनचतुष्टयरहिताद्वादशबध्यते, ताद्वादशज्ञानावरणचतुष्कदर्शनावरणत्रिकान्तरायपंचकमंतरेणसूक्ष्मादेतासामबंधकइतिगतदेशघातिद्वारं ॥ ७७ ॥

टबार्थ—मिश्र १ अविरतिसमकित १ देशविरति १ प्रमत्त १ ए च्यार गुणठाणे स्त्रीवेद काढीये एटले त्रेवीस देशघाती बधाये, अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण गुणठाणे शोकअरति बे न बांधे एकवीस देशघाती बांधे, नवमे अनिवृत्तिकरणे हास्यादिरतिभयदुगंछा ए च्यार विना सत्तर देशघाती बांधे, दशमे सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे पुरुषवेद १ सज्वलना ४ ए पांच काढीये बार देशघाती बांधे, दशमाने अंते ज्ञानावरणी ४ दर्शनावरणी ३ अतंराय ५ ए बार जाये न बांधे ॥ ७७ ॥

सव्वदरघाइसेसा, अघाइपयडीओसव्वगुणठाणे।
पुन्नेनव(ग)अडचउसग, इगइगतिगदुगअहीअतीसा ॥ ७८ ॥

टीका—सांप्रतमघातिस्वरूपकथ्यतेसव्वदरघाइइत्यादि 'स-'

बंधातिदेशादिति शेषाअवशिष्टास्ताअष्टानिप्रकृतय सर्वेषुगुण-स्थानेषुमन्तव्याइतिवेदनीयद्विक, आयुश्चतुष्क, नामसप्तषष्टि, गोत्रद्वय, इत्येता पचसप्ततिरघातिन्योज्ञेया, तत्रमिथ्यात्वेद्वि-सप्तति, सास्वादनेऽष्टपंचाशद्, मिश्रेएकोनचत्वारिंशत्, सम्यक्त्वे-द्विचत्वारिंशत्, देशविरतासप्तयेनय, उपशातमोहक्षीणमोहसयो-गिकेवलिषु एका, सातवेदनीयरूपा, अत्रमुख्यवृत्त्योदयेवाल्यघाति-द्वारेउदयाधिकारोपिस्वबुध्याओगोदयाधिकारतोज्ञात य, पुन्नेइति-पुण्यप्रकृतयोजीवाल्हादजनकायदुदयभुज्यमानआल्हादजनकभवति, ता पुण्यप्रकृतय द्विचत्वारिंशद्भेदभिन्ना सति, तत्रगाथा सुरनरतिगु-च्चसाय तसदसतणुवगवयरचउरस, परघासगतिरिआऊ वणचउप-णिंदिसुभखगइ १ बायालपुन्नपगई अपढमसठाणखगईसघयणा, तिरिदुगअसायनीओ घायइगविगलनरयतिग २ थावरदसवणचउक घाइपणयालसहिअ ऊासीई, पावपयडित्तिदोसुवि वन्नाइगिहासुहाअ-सुहा ३ इत्यादिगाथोक्ता पुण्यपापप्रकृतय मिलिताएकशतचतु-र्विंशत्यधिकभवति एतदपिद्रव्यमाश्रित्येवेतिनोचेत् घातिसमचत्वा-रिंशत्पुणेनेषद्विंशत्यधिकशतभवति, अनबन्धाधिकारेविंशत्यधि-कशतमानेचतुर्विंशत्यधिकतु वन्नाइगदासुहा असुहाइतिवर्णादय वर्णगधरसस्पर्शरूपा पुण्यप्रकृतीशुभाग्राह्या, पापप्रकृतौतुअशुभा-ग्राह्या इत्युभयत्रग्रहणात्चतुर्विंशत्युत्तरशतज्ञेय, तत्रपुण्यप्रकृतिक्रम गुणस्थानेषुविभजन्नाह, पुन्नेनवअट्ठइति नवमिर्गात्रिंशत्मिथ्या-त्वेपुण्यप्रकृतयोबध्यते, इतिजिननामाहारकद्विकरहिता "ताप"आत-परहिता सास्वादनेअष्टाधिकात्रिंशद्बध्यते, ताएवेतितिर्यग्नरदेवायु-रुद्योतहीनामिश्रे चतुस्त्रिंशत्ताएवजिननामनरदेवायुर्युक्ता सम्य-क्त्वेसप्तत्रिंशत्, ताएववज्रऋषभनाराचसहननमनुष्यत्रिकऔदारिक-रहितादेशविरतौएकत्रिंशत्, प्रमत्तेएकत्रिंशत्, ताएवाहारकद्विकयुक्ता-

स्त्रयस्त्रिंशत्, अप्रमत्तेपुण्यप्रकृत्योयत्यते, ताएवदेवायुरहिताअपूर्व-करणेद्वात्रिंशदुच्यते, अत्रगाथाया अठ्ठसुपदअग्रेतनगाथायागतम-नुवर्त्तनीय अष्टसुगुणस्थानकेषुअयमर्थ ॥ ७८ ॥

टबार्थ —सर्वघाती तथा देशघाती टालता शेष रही ते अघाती प्रकृति सर्व गुणठाणे जाणवी अघाती ७५ छे ते मध्ये मिथ्यात्वे ७२ छे सास्वादने २८ छे मिश्रे ३१ छे समकिते ४२ छे देशविरते ३६ छे अप्रमत्त ३४ छे अपूर्व-करणे ३३ छे अनिवृत्तिबादरे ३ छे सूक्ष्मसंपराये ३ छे उपशान्तमोहे १ छे क्षीणमोहे १ छे सयोगिकेवलिये १ बाधे छे इम उदयनो अधिकार जोई कहेवो उदयपिणे पुण्यनरचना भेद ४२ छे सातावेदनी उचगोत्र मनुष्यदुग २ देव २ पचेन्द्रि जाति १ पांचशरीर ५ तीनउपांग ३ वज्रऋषभनाराचसंघयण १ समचउरससंस्थान १ वर्णादि ४ अगुरुलघु १ पराघात १ उसास १ आतप १ उद्योत १ शुभविहायोगति १ निर्माण १ त्रसदश १० देवतानुआयु १ मनुष्यायु १ तिर्यंचनुआयु १ तीर्थंकरनाम १ ए बेतालीसमध्ये मिथ्यात्व गुणठाणे ३९ ओगणचालीस छे जिनआहारक नथी सास्वादन गुणठाणे अडत्रीस छे आतप नथी मिश्र गुणठाणे चोतीस छे तीन आउखा नथी, उद्योत नथी समकित गुणठाणे जिननाम तथा आउखा बे मेलाय तिणे ते सडत्रीस छे देशविरति गुणठाणे इगतीस छे अप्रमत्ते तेतीस छे अपूर्वकरणे बत्तीस छे ॥७८॥

अट्ठसुतिगचदोसु, तिसुसाय बधसेसयापावे ।
चउवीससयओहो, बन्नाइगहासुहाअसुहा ॥ ७९ ॥

टीका—अट्ठसुत्तिगचइत्यादि अष्टसुगुणस्थानकेषुइतिपदपूर्व-

गाथाया सवधित विगचदोसुत्ति द्वयोर्गुणकयोविपर्ये द्विवचनेबहुव-चनमितिप्राकृत्वात्, तिग सातवेदनीय उच्चर्गोत्रयशोनामलक्षण-प्रकृतित्रिक पुण्यप्रकृतीनाबध्यते । तिसुत्तिपुउपशातमोहक्षीण-मोहसयोगिकेवलिलक्षणेगुणस्थानत्रिके "सायावधत्ति"सातस्यैवव ध, अयोगिस्थानेबधाभावात्, सेसयाइत्तिशेषका पुण्यप्रकृतिगणनातरिता पापप्रकृतय सर्वगुणेषुज्ञेया स्तत्रमिथ्यात्वेद्यशीति तासुपचदशा-पसारे सास्वादनेसप्तषष्टि, मिश्रेचतुश्चत्वारिंशत्, सम्यक्त्वेचतुश्चत्वा-रिंशत्, देशविरतौचत्वारिंशत्, प्रमत्तेषट्त्रिंशत्, अप्रमत्तेत्रिंशत्, अ-पूर्वकरणेप्रथमनिद्राद्विकापगमेअष्टाविंशति, अनिवृत्तोएकोनविंशति, सूक्ष्मसपरायेचतुर्दशइतिपापप्रकृतिबधक्रमस्तत्र अत्रपुण्यपापोभय-मीलनेओघेचतुर्विंशतिशतमिथ्यात्वेएकविंशतिशत तथवर्णादयोगृ हीता शुभास्तथाऽशुभा शुभलेश्यावान्शुभानिवर्णादीनिबध्नाति, अशुभलेश्यावान्अशुभवर्णादीनिबध्नाति, तेनोभयग्रहणइतिज्ञेय ७९।

टबार्थ —ए आठ गुणठाणे पुण्यप्रकृति बाधे ते कही, नवमे दशमे गुणठाणे तीन पुण्यप्रकृति बाधे छे साता १ जसनाम १ उचगोत्र १ ए तीन छे, तीन गुणठाणे इग्यारमे बारमे तेरमे सातानो बध छे ए बत्रमा पुण्यप्रकृति गणता शेष रहि ते पाप प्रकृति जाणवी मिथ्यात्वे ८२ सास्वादने ६७ मिश्रगुण ठाणे ४४ समकित गुणठाणे ४४, देशविरति गुणठाणे ४०, प्रमत्त गुणठाणे ३६, अप्रमत्त गुणठाणे ३०, अपूर्वकरण गुण ठाणे २८ अठ्ठावीस, अनिवृत्तिकरण गुणठाणे २३ सूक्ष्मसपराय गुणठाणे १४ पापप्रकृति बाधे छे, उपरले गुणठाणे पापप्रकृ-तिनो बध नथी, इहा किने पुन्यप्रकृति अने किने पापप्रकृति ए बे मेलवता एकसोचोवीसनो ओव थाय छे, जे वर्णादिक

४ त्यार १ शुभ ते पुन्यप्रकृतिमा गण्या छे अशुभ ते पाप-प्रकृतिमे गण्या ते माटे एकसो चोवीस प्रकृति थाय छे ॥७९॥

नामधुवबधिनवग, दसणपणनाणविग्घ(य)परग्घाय।
भयकुछमिच्छसास, जिणगुणतीसाअपरियत्ता ॥८०॥

टीका—अथापरावर्त्तद्वारव्याख्यानयाह, तत्रया प्रकृतय अन्यस्या प्रकृतेर्बंध उदयउभयवाविनिवार्यस्वकीयबंधउदयउभयवा-दर्शयन्तिता परावर्तमाना यास्त्वन्यस्या प्रकृतेर्बंधमुदयमुभयवा अनि-वार्यस्वकीयबंधमुदयमुभयवादर्शयन्तिता नपरावर्त्तन्तेइति कृत्वाअपराव-र्तमानाउच्यते, यतस्तयपादि विणिवारीयजागरईं बंधमुदयच्चअन्नप-गइण, साहुपरियत्तमाणी अणिवारतीअपरियत्ता १ ततस्तयमपरावर्तमाना प्रकृतयस्तासि सहनामधुरबंधिनवगइत्यादि नाम्नो-ध्रुवबंधिनवक वर्णचतुष्कतैजसकार्मणागुरुलघुनिर्माणोपघातलक्षण, दर्शनावरणचतुष्कचक्षुरचक्षुरवधिकेवलदर्शनावरणरूप, पणत्ति पच-नाणज्ञानावरणपचक, विग्घत्तिअनरायपचक परावातनामभयदुगछा-द्विक मिच्छेत्तिमिथ्यात्वश्वासोच्छ्वासनामकर्मजिननामएता एकोनत्रिंशत्प्रकृतय अपरावर्तमानाभवति । इत्येता एकोनत्रिंशत्प्रकृ-तय स्वबंधोदयोभयकालेनान्यस्या प्रकृतेर्बंधमुदयमुभयवानिरुध्य-प्रवर्त्ततेऽतोऽपरावर्त्तमानाइति ॥ ८० ॥

स्वार्थ—अथ हवे अपरावर्त्तमान प्रकृति कहे छे नाम ध्रुवबंधी नव वर्णादिक ४ तैजस १ कार्मण १ अगुरुलघु १ निर्माण १ उपघात १ ए नव, दर्शनावरणी ४ ज्ञानावरणी ५ अंतराय ५ कर्मप्रकृति ५ पराघात १ भय १ दुगछा १ मि-थ्यात्वमोहनी १ सासोसास १ जिननाम ए २९ अपरावर्त्त

छे बन्धमा तथा उदयमा कोइके नहि ते बन्ध तथा उदयपणे आवती नथी पोतापणे बन्ध तथा उदय आवे छे ते बन्ध तथा उदय कोईकनी प्रकृतिनो रोकीने पोतानो बन्ध तथा उदय थाइ ते परावर्त्तमान कहीजे, तेहथी इतर बीजी ते अपरावर्त्तमान कहीजे ॥ ८० ॥

जिणविणुमिच्छिअमिच्छा, सासणमीससुसजिणसम्माई ।
पंचसुनाणनिग्घ, दसणचउनवगदसमम्मि ॥ ८१ ॥

टीका—अथपरावर्त्तमाना गुणस्थानकेषुविभजन्नाह । जिणविणु इत्यादि जिननामबन्धविनामिथ्यात्वेअष्टाविंशति परावर्त्तमानाबध्यते, अमिच्छा मिथ्यात्वबन्धरहिता सास्वादने तथा मिश्रगुणस्थानेसप्तविंशतिरपरावर्त्तमानाबध्यन्ते, सजिणत्ति जिननामसहितास्तापुनअष्टाविंशति सम्यक्त्वादिपंचसुगुणेषुसम्यक्त्वदेशविरतप्रमत्ताऽप्रमत्तापूर्वकरणलक्षणेषु अपरावर्त्तमानाबध्यते, तत्र पञ्चज्ञानावरणपंचक निर्माणविन्ननाम अन्तरायपंचक दसणचउत्ति दर्शनावरणीयचतुष्क, एताश्चतुर्दशअपरावर्त्तमाना नवमेऽनिवृत्तिकरणेन्दशमेसूक्ष्मसपरायलक्षणेबध्यतेऽति ॥ ८१ ॥

टबार्थ — मिथ्यात्व गुणठाणे जिन नाम विना २८ अपरावर्त्तमान बांधे छे सास्वादन गुणठाणे मिथ्यात्व विना २७ अपरावर्त्तमान छे, मिश्रगुणठाणे सत्तावीस २७ बांधे छे समकितथी माडी पांच गुणठाणे समकिते, देशविरते, प्रमत्ते, अप्रमत्ते, अपूर्वकरणे ५ एमाए जिननाम मेळीये तेवारे २८ परावर्त्त

प्रकृति बधाये, नवमे गुणठाणे दशमे गुणठाणे ज्ञानावरणी ५ अतराय ५ दर्शनावरणी ४ एव १४ अपरावर्त्तमान बधाये ॥८१॥

तणुअट्ठवेअदुजूअल, कसायउज्जोअगोअदुगनिद्दा।
तसवीसाउपरित्ता, बधइअपरित्तसेसाउ ॥८२॥

टीका—तणुअट्ठइत्यादि तनुशब्देनोपलक्षितमष्टक तणुवगागिइसघयण जाइगइखगइपुब्विचिगायावयवेनप्रतिपादिततन्वष्टक, तत्रतन तैजसकार्मणयोरपरावर्त्तमानासुप्रतिपादितत्वात् शेषाओदारिकरूपास्तिस्र, उपागानिनिर्माणिआकृतय सस्थानानिषट्, सहननानिषट, जानय पच, चतस्रोगतय, खगतिद्वय, आनुपूर्वीचतुष्क मिति अष्टकशब्देनत्रयस्त्रिंशत्प्रकृतयोगृह्यते, वेदा स्त्रीपुनपुसकरूपा त्रय दुजुअल द्वि युगलहास्यरत्यरतिशोकरूप, कषाया षोडश, उज्जोयदुगति द्विकशब्दस्यप्रत्येकसबधादुद्योतातपारय गोत्रद्विक, गोत्रवेदनीयलक्षणगोत्रउच्चैर्नीचभेदात्, सातासातभेदाद्वेदनीयमपिद्विधा, निद्रापचक, त्रसदशक, स्थावरदशक, आयूषिचत्वारिइत्येताएकनवति प्रकृतय परावर्त्तमानाभवति, तत्रषोडशकषायनिद्रापचकचयद्यपिएता एकविंशतिप्रकृतयोध्रुवबधित्वाद्बधप्रतिपरोपरोधनकुर्वति तथापिस्वोदयेस्वजातीयप्रकृत्युदयनिरोधात्परावर्त्तमानाभवति, स्थिरास्थिरशुभाशुभप्रकृतयश्चतस्रोयद्यपिउदयप्रतिनविरुद्धास्तथापिबधप्रतिपरावर्त्तमाना शेषा पचषष्टि प्रकृतयोबधोदयाभ्यामपिपरस्परविरुद्धा अपिअत परावर्त्तमानागुणस्थानेषुबधक्रमेपूर्वोक्ताऽपरावर्त्तमानेभ्य शेषा परावर्त्तमानाबधेभवति, तत्रमिथ्यात्वेनवाधिकाअशीति, जिननामतुअपरावर्त्तमानेषुगणनात्, परावर्त्तमानतुआहारकद्विकमेवएवनवत्यामपगमेशेषानवाधिकाअशीति बधेप्राप्यते, एवसर्वत्रतेनसास्वादनेचतु सप्तति, मिश्रेसप्त-

त्वारिंशत्, सम्यक्त्वेएकोनपचाशत्, देशएकोनचत्वारिंशत्, प्रमत्ते-पचत्रिंशत्, अप्रमत्तेएकत्रिंशत्, अपूर्वकरणेत्रिंशत्, अनिवृत्तिकरणेऽष्टौ, सूक्ष्मसपरायेतिस्र, उपशातादिष्वेकैकसातमेवएत्रपरावर्त्तमानाना-बधक्रमइति ॥८२॥

टबार्थ—तनुआदिक आठआठ पिंड प्रकृति तनु ३ उपाग ३ सस्थान ६ सघयण ६ जाति ५ गति ४ विहायोगति २ आनुपूर्वि ४ वेद ४ हास्यादि ४, कषाय १६ उद्योत १ आतप १ गोत्र १ वेदनी २ निद्रा ५ त्रस १० थावर दस आऊखा च्यार ए इक्याणु परावर्त्तमान जाणवी मिथ्यात्वे न यासी ८९ सास्वादने ७४ मिश्रे ४७ समकिते ४९ देशविरते ३९ प्रमत्ते ३५ अप्रमत्ते ३१ अपूर्वकरणे ३० अनिवृत्तिकरणे ८ सूक्ष्मसपराये ३ इग्यारमे १ बारमे १ तेरमे १ अयोगि अबधक अपरावर्त्ते जे गाथा माहे नहीं तेह टालता शेष रही ते परावर्त्तमान जाणवी, आवे, हवे विपाक च्यार कहे छे जे मध्ये जे क्षेत्र आकाश तेह फिरता उदय आवे ते क्षेत्र विपाकी ४ आनुपूर्वी छे ते भये मिथ्यात्व गुणठाणे समकित गुणठाणे च्यारे आनुपूर्विनो उदय छे ॥८२॥

मिच्छेसम्मेचउपुवि, निरयविणुदीयएआउचउ(चउरो) देसेनरतिरिसेसा, मणुआमणुआउवेयगाभणिया ।८३।

टीका—अथविपाकद्वारंचिंतयन्नाह, तत्रविपाक कर्मफलानुभव, सचतुर्द्धातत्रप्रथमक्षेत्रविपाका आनुपूर्व्यश्चतस्र, क्षेत्रमाकाशतत्रैव-विपाकउदयोयासाना क्षेत्रविपाकाआनुपूर्व्यश्चनरकोनरकतिर्यग्नराम-रानुपूर्वीलक्षणायनस्तासाचतसृणाममिविग्रहगतावेवोदयोभवतीति ॥

उक्तंच बृहत्कर्मविपाके नरयाउस्सउदए नरएवक्केणगच्छमाणस्स
नरयाणुपुव्वियाए, ताहिंनहिअन्नहिंनात्थित्ति ॥१॥
एवनिरिमणुदेवे, वेसुविवक्केणगच्छमाणस्स
तेसिमणुपुव्वियाण, ताहिंउदयोअन्नहिंनत्थित्ति ॥२॥

ननुवियहगत्यभावेपि आनुपूर्वीणामुदय सक्रमवरणेनविद्यतेऽत्र कथक्षेत्रविपाकित्वमस्ताश्रनुगानिमनो जीवविपाकित्वप्रसङ्गइत्यनोच्यते, विद्यमानेपिसक्रमेयथानासांगनीनांविपाकस्तथाविपाकस्त्वयापियथा- तासाक्षेत्रविधानेनस्वकीयोविपाकोदयोननथाऽन्यासामत क्षेत्रविपाकि- त्वएवेति, तत्रगुणस्थानेक्रमेणविभजन्नाह, मिच्छेसम्मेइत्यादि तत्र- मिच्छेमिथ्यात्वेसम्मेत्ति सम्यक्त्वदर्शनलक्षणेगुणस्थाने चउचतस्र- पुव्वित्तिआनुपूर्व्य उदयेमाप्यते, तीणित्तिद्वितीयेसास्वादनाख्ये गुण- स्थानके नरयविणु नरकानुपूर्वीविनास्तिस्रआनुपूर्व्य उदयेमाप्यते, शेषेषुगुणस्थानेषुस्वप्रकृतिविपाकत्वेनानुपूर्वीउदयएवनास्ति, यत अतरालगतौगुणस्थानत्रिकस्यैवप्राप्यमाणत्वात्, ननुआनुपूर्वीणा- स्थितिवरतुकथवेद्यते, तत्राहप्रदेशोदयेनसक्रातोदयेनवेतिगम्य ॥ उक्तच ॥ कर्मप्रकृतिचूर्णौवित्तागमुज्जाएतिइएसेसापएससक- तादयेणभुजइतिवचनात् अथभवविपाकस्वरूपकथयन्नाह, तत्र- भवतिकर्मवशवर्तिनोअस्मिन्प्राणिनइतिभव नारकादिपर्याय सच- पूर्वायुर्व्यवच्छेदेविग्रहायतरालगतिमारभ्यवेदितव्य, यदाहभगवान्- सुधर्मास्वामी भगवत्या, नेरइएतेरइएउवज्जइइति,तस्मिन्नेवभवेनार- कतिर्यग्नरामररूपेविपाकउदयोविद्यते यासानाभवविपाकित्व तथा- दिभयासभवपूर्वभवव्यमानागामिभवेपिपच्यतेइतिभाव ननुयथा- युपादेवादिभवेऽवश्यविपाकोभवतिनथागतीनामप्यनन्तत्वाअपिभवविपा- पाकित्व प्राप्नुयाति, अतोच्यते आयुर्यद्यस्यभवस्ययोग्यमनिबद्धतत्त-

स्मिन्नेवभवेवेद्यते नान्यभवे इत्यायुषोभवविपाकदानाद्भवविपाकित्व, गत्यस्तुविभिन्नभवयोग्यानिबद्धाअपिएकस्मिन्नपिभवेसर्वा सक्रमेणसवेद्यन्ते, तथाहिमोक्षगामिन अशेषगतय मनुष्यगतौसक्रम्यक्षपयति, अतोविभिन्नोदयभवप्रतिगतीनानियत्यभावान्नभवविपाकिन्य, किंतुजीवविपाकिन्यएवेत्युक्ताआयू षिचत्वारिण्यविपाकिन्य, गुणस्थानक्रमेतु आउचउदनिआयुश्चतुष्क नरकायुस्तीर्यगायुनरायुर्देवायु चउरोत्ति चतुष्केमिथ्यात्वसास्वादनमिश्राविरतिलक्षणेगुणस्थानचतुष्केउदय ,प्राप्यते,तथादेसेदेशविरतिलक्षणेगुणस्थानकेतिरिमणुत्तितिर्यगायुर्मनुष्यायु प्राप्यते, शेषा प्रमत्तादारभ्यअयोगिकेवलिचरमसमयपावन्मनुष्यायुष वेदकाभणिता सप्तकर्मप्रकृतीनामबाधास्वस्वस्थित्यतर्वर्तीन्येव ? यथाज्ञानावरणीयस्योक्तृष्टस्थिति त्रिंशत्कोटाकोटीसागराणाअबाधाचत्रिंशद्वर्षशतानि अबाधा न्यून कर्मनिषेक भावनाचएतानित्रिंशद्वर्षशतानित्रिंश कोटाकोटिसागरान्तर्गतायेबान्यानिसाधि स्तानिआयुषस्तुदेवनारकायुषोरुत्कृष्टस्थिति त्रयस्त्रिंशत्सागरा वेद्यदेवनारकभवेबद्धा, अबाधाचमनुष्यतिर्यगभवत्रिभागप्रमाणात्रयस्त्रिंशत्भागोत्स्येन्तर्भावएवेतिकथमित्युच्यतेआयुष अबाधायाप्रदेशवेदनत्रास्तितेनभिन्नाएव, शेषकर्मणातुअबाधायाप्रदेशोदयताभवति तेनान्तर्गताएवेतितथाआयुष प्रदेशोदयोपिक्रमादिनातद्भवे एवभवति अतआयुषोभवविपाक एवेति ॥८३॥

टबार्थ —सास्वादन गुणठाणे नरकानुपूर्विनो उदय छे नही, शेष तिन आनुपूर्विनो उदय छे, उपरात सर्व गुणठाणे छे, आनुपूर्विनोव्यक्त विपाकोदय नथी तो कोइ पूछे जे आनुपूर्व्विनो थितिनिषेध एटलो किहा भोगवे तेहनो उत्तर कम्मपयडीथी जे प्रदेशोदयपणे भोगवे अथवा गतिनामकर्म मध्ये सक्रभावी भो-

गवे छे, जे नवमे गयाज उदये आवे बीजा भवमे उदय नावे तेमाटे कम्मपयडी मव्ये कह्यो छे, जे बीजा कर्म्मनी अबाधा ते कर्मनी स्थिति मव्ये गणी छे अने आऊखानी थितिचरयीज उदीरणा छे, ते प्रदेशोदय पण थाये नही आऊखा च्यारे ते भव विपाकी छे, अबाधा ते मव्ये च्यार गुणे च्यार आऊखानो उदय छे, देशविरति गुणठाणे नर कहेता मनुष्यनो आऊखो १ तिर्यचनो आऊखो उदय छे, शेष गुणठाणे एक मनुष्यायुनो उदय छे, आऊखा कर्मने सन्क्रमणकरण नथी, प्रदेशोदयपणे मुख्यताये विपाकोदय मेलेइज छे, किहाइक प्रदेशोदय अल्पता रीते भिन्नपणे गवेख्यो छे ॥ ८३ ॥

नामधुवोदयचउतणु, वग्घासाहारणियरुज्जोयतिग।
पुग्गलविवागिमिच्छे, चउत्तीसहारदुगहीण ॥८४॥

टीका—अथपुद्गलविपाकिस्वरूपदर्शयन्नाह, यत्पूर्वबद्धसत्तागतकर्मपुद्गलानाउदयेऽभिनवाऔदारिकादिविंशतिगुणाबादरवर्गणासूक्ष्मवर्गणानामपिआहारत्वेनाङ्गग्रहणेनयासामकृतीनाविपाक उदयोभवतिता पुद्गलविपाकिन्य षट्त्रिंशत्, नामधुवोदयइत्यादि ८४ नाम्न कर्मण ध्रुवोदयानित्योदयानामध्रुवोदयाद्वादशप्रकृतय, तद्यथा निर्माणस्थिरास्थिरागुरुलघुशुभाशुभतैजसकार्मणवर्णचतुष्कइतिच-उतणुत्ति तनुशब्देनोपलक्षितचतुष्कतणुवगाचिचसयणइत्ति तत्रतन-व तैजसकार्मणयोध्रुवोदयमध्येपतितत्वात् तनवऔदारिकवैक्रियाहारकलक्षणास्तिस्र परिगृह्यन्ते, उपागानित्रीणि, आकृतय षट्, सहननानिषट्, तदेवअष्टादशप्रकृतय, उपघातसाधारण उद्योतआतप पराघातलक्षणइत्येता षट्त्रिंशत्प्रकृतय पुद्गलविपाकिन्यइतिअ-

त्ने नसकार्मणवर्गणाप्याहारपर्याप्तिबलेनगृहीतानि नसकार्मणशरीरोद-
यरूपाग्राह्या ॥ उक्तंच ॥ भगवं या जीवाणभंते जे आहारत्ताएपु-
ग्गलागिण्हन्तितेकिंअणुगिण्हतिवायराजणगिण्हन्तिगो० अणुविगि-
ण्हन्तिइवायराइंपिगिण्हन्ति तत्र कार्मणशरीरोपचयहेतवः कार्मणवर्ग-
णापुद्गलाऔदारिकादिशरीरोपचयहेतवो बादरपुद्गलाएवमूह्य अत्र
श्वासोच्छ्वासभाषामनोरूपाअपिअभिनवग्रहणेनैवविपाकेऽपिआहा-
रत्वेनअग्राह्यमाणा नातपुद्गलविपाकेगृहीताइति अथगुणस्थानेषुविभ-
जनाह मिच्छे मिथ्यात्व " चउतीस " चतुस्त्रिंश पुद्गलविपाकिन्य
प्रकृतय उदयेप्राप्यन्ते आहारकद्विकहीनाइति ॥ ८४ ॥

टवार्थ—हवे पुद्गलविपाकी कहे छे नामकर्मनी ध्रुवोदयी
१२ निर्माण १ थिर १ अथिर १ शुभ १ अशुभ १ अगु-
रुलघु १ तैजस १ कार्मण १ वर्णादिक ४ शरीर ३ उपांग ३
संस्थान ६ संघयण ६ उपघात १ साधारण १ प्रत्येक १ उद्योत
१ पराघात ए वत्रीस प्रकृति पुद्गलविपाकी जाणवी बीजे पूर्व-
बंध कर्मपुद्गलसत्तागत तेहने उदयथी नवानवाथी नवा औदा-
रिकादिक वीसगुणा वर्गणा लेईने जे उदय आवे ते पुद्गल-
विपाकी छे, मिथ्यात्वगुणठाणे आहारक विना चोत्रीस पुद्गल-
विपाकी उदय छे ॥ ८४ ॥

आयवनिगोयहीणा, दुगतीससासणाइतियगिम्मि ।
उरलदुगहीणादेसे, छट्ठेमाहारजोयविणा ॥ ८५ ॥

टीका—आयवनिगोयहीणइत्यादिसास्वादनेदुगतीस द्वात्रिं-
शत् आयवनिगोयत्ति साधारणहीनाउदयेप्राप्यन्ते, एवंमिश्रेऽपिद्वात्रिं-
शत्, सम्यक्त्वेऽपिद्वात्रिंशत्, उरलदुगऔदारिकद्विकहीना देशे देश-

विरतौ विंशत्उदयेप्राप्यन्ते, उट्टेदंनिपट्टेप्रमत्ताग्येसाहारत्तिआहार-द्विकसहिताउद्योतनामकर्मरहिताएकत्रिंशत् पुद्गलविपाकेउदयरूपा प्राप्यन्ते ॥ ८५ ॥

टवार्थ —आतपनामकर्म १ निगोद वर्जेता साधारणनाम विना सास्वादन तथा मिश्र तथा समकित एटले गुणठाणे ब-त्रीस पद्गलविपाकनी प्रकृति छे, देशविरति गुणठाणाने विषे औदारिकद्विक विना वीस छे, छठे गुणठाणे आहारक बे २ मेलीये उद्योतनाम कर्म काढीये तेवारे इगत्रीस पद्गलविपाकी उदयपणे ॥ ८५ ॥

अदुहारगअपमत्ते, अतिमसघयणतिगविणाचउसु ।
सघयणदुगविहीण, चउवीसखीणयोगम्मि ॥८६॥

टीका—अदुहारगअपमत्तेअप्रमत्ते गुणस्थानके अदुहारगत्ति आहारकद्विकरहिता एकोनत्रिंशत्उदयेलभ्यन्ते तथाअतिमत्ति अप-सहननत्रिकविनाअर्द्धनाराचकीलिकासेवार्तहीना षड्विंशति अपू-र्वकरणानिवृत्तिबादरसूक्ष्मसंपरायोपशातमोहलक्षणेषुगुणस्थानेषुचतु-र्षुउदयत्वेनप्राप्यन्ते पुद्गलविपाकिन्यप्रकृति संघयणत्ति सहननद्विक-हीनइतिप्रकृतत्वात्हीनाश्चतुर्विंशति पुद्गलविपाकिन्य क्षीणमोहे तथा सयोगिमिति सयोगिकेवलिलक्षणे गुणस्थानकद्विकेमाप्यन्ते, अयोगिगुणस्थानेतुशरीरोन्याभावात् नपुद्गलविपाकिन्युदयइति ८६

टवार्थ —अप्रमत्तगुणठाणे आहारक २ बे विना २९ पु-द्गलविपाकी उदय छे, छेहला संघयण तीन विना आठमे नवमे दशमे इग्यारमे ए च्यार गुणठाणे छवीस पद्गल प्रकृतिविपाकी

उदय छे, ऋपभनाराच १ नाराच २ ए बे संघयण विना क्षीण-मोह गुणठाणे तथा सयोगि गुणठाणे पुद्गलविपाकी चोवीस छे, अयोगी गुणठाणे शरीरनो उदय नथी तेमाटे पुद्गलविपाकिनो पण उदय नथी ॥ ८६ ॥

घणघाइदुगोयजिणा, तसीयरतिगसुभगदुभगचउ-सास ।
जाइतिगजीयविवागा, पणदुगसयरीपढमदुगे॥८७॥

टीका—अथजीवविपाकिप्रकृतीराह घणघाइत्ति, घनघातिन्य सप्तचत्वारिंशत् ज्ञानावरणपंचक दर्शनावरणनवक मोहनीयमष्टाविंशति ॥ अंतरायपंचक दुगोयत्तिगोयवेयणीयइतिगोत्रद्विक वेदनीयद्विक द्दुगोयशद्वेनप्रकृतिचतुष्टयगृह्यतेजिननाम त्रसत्रिक त्रसबादर-पर्याप्तलक्षण इतरत्रिकइतरत्स्यावरत्रिक स्थावरसूक्ष्मापर्याप्तलक्षण सुभगदुभगचउत्ति सुभगचतुष्क सुभगसुस्वरादेययशःकीर्तिरूप दुर्भगचतुष्क दुर्भगदुःस्वरअनादेयायशो रूप, सासत्ति उच्छ्वास जाइतिगत्ति जातित्रिक जातिपंचक गतिचतुष्क स्वगतिद्विक जातित्रिकशब्देनएकादशप्रकृतयोगृह्यते इत्येना अष्टसप्ततिप्रकृतयोजीव-विपाकिन्य जीवविपाकित्वजीवगुणाज्ञानादयोआच्छादयन्तिप्रति यथा-बद्धास्तथाएवकर्मवर्गणाउदयत्वेनभुज्यते वस्तुनस्तुक्षेत्रभवपुद्गलवि-पाकाअपिजीवस्येवपाचपर्यणानगृह्यमुपवानचतुर्वन्तितेनजीवविपाका-एवेतिमिथ्यात्वगुणस्थानेजिननाममिश्रमोहसम्यक्त्वमोहरहिता प-चसप्तति जीवविपाकेप्राप्यते,सास्वादनेताएवसूक्ष्मापर्याप्तमिथ्यात्वो-दयरहिताद्वासप्तति जीवविपाकाउदयेप्राप्यते ॥ ८७ ॥

स्वार्थ —हवे जीवविपाकी कहे छे घनघाति ४५ ते मध्ये

ए विपाक ते उत्पासस्या छे, तेमाट मिश्रमोहनीसमकितमोहनी २ मेळीये पटले ४५, गोत्र २ वेदनी २ जिननामकर्म १ प्रसनीन ३ त्रस १ बादर १ पर्याप्त ३ इत्यादि ... स्थावर तीन स्थावर १ सूक्ष्म २ अपर्याप्त ३ सुभग ४ शुभग १ सुस्वर २ आदेय ३ जस ४ दुर्भग ४ दुर्भग १ दुस्वर २ अनादेय ३ अपश ४ तथा साम करेना नामोच्चार १ नामकर्म १ जातिनिग करेना जाति ५ गति ४ सगति २ एव ७८ जीवविपाकी छे पहला जीवे त्रसशाडे बाध्या तेहज उदयपणे आवे छे, तेमाट निद्रा मिथ्यात्व गुणठाणे जिननाम १ मिश्रमोहिनी १ समकित मोहिनी विना पर्योत्तेर जीवविपाकीनो उदय छे सास्वादन गुणठाणे सूक्ष्म १ अपर्याप्त १ मिथ्यात्व १ ए तीन विना चहुत्तर जीव विपाकी छे ॥ ८५ ॥

दुगिचउसट्ठिपणपन्न, गुणवन्नछपचचत्तगुणचत्ता ।
तिगदुगदुगजूअतीसा, सत्तरइक्कारजीयभुआ(या)८८।

टीका—दुगचि द्विगुणस्थानके मिश्रसम्यक्त्वलक्षणेऽननाज्ञानविचतुष्कस्थावरनामरहितामिश्रमोहयुक्ताश्चतु षष्टि सम्यक्त्वेतु-मिश्राभावेसम्यगमोहनीययुक्ताश्चतु षष्टि जीवविपाकि पञ्चपञ्चाश-त्ते, देशविरतौ द्वितीयकषायचतुष्कदेवगतिदुर्भगानादेयायशइतिनरकापगमेपचपचाशज्जीवविपाकिन्यउदयेमाप्यन्ते, तासुतीर्यग्गतिनीचैर्गोत्रतृतीयकषायचतुष्कापगमेएकोनपचाशत्, देशविरतोउदयेमाप्यन्ते, ताप्रस्त्यानर्द्धित्रिकरहिता पटचत्वारिंशत्प्रमत्ते, ताप्रसम्यगमोहनीयरहिता पञ्चचत्वारिंशत् अपूर्वकरणे, ताएनहास्यादिषट्करहिताएकोनचत्वारिंशत् अनिवृत्तिकरणे, ताएनवेदत्रिकसंज्वलनत्रिकरहितास्र-

यस्त्रिंशत् सूक्ष्मसपराये, ताप्यसज्वलनलोभरहिता द्वात्रिंशत्उपशात मोहे, ताएवद्वात्रिंशत् क्षीणमोऽहेपि, ताएवनिद्राद्विकज्ञानावरणपचकातरायपचकदर्शनावरणचतुष्कमि येव षोडशापगमेजिननामोदयेचसप्तदशप्रकृतय सयोगिकेवल्गिुणस्थाके, ततअयोगिकेवलिगुणेएकादशजीवविपाकिन्य उदयेप्राप्यते इति, इत्युक्ताविपाका ॥ ८८ ॥

टबार्थ —मिश्र गुणठाणे बासठ प्रकृति जीव विपाकी छे, समकित गुणठाणे चोसठ प्रकृति जीव विपाकी छे, देशविरति गुणठाणे पचावन प्रकृति जीव विपाकी छे, प्रमत्त गुणठाणे उगुणपचाश प्रकृति जीव विपाकी छे, अप्रमत्त गुणठाणे बेंतालीस प्रकृति जीव विपाकी छे, अपूर्वकरण गुणठाणे पिस्तालीस प्रकृति जीव विपाकी छे, नवमे अनिवृत्तिकरण गुणठाणे उगुणचालीस छे, सूक्ष्मसपराये तेत्रीस छे, उपशातमोहे बत्तीस छे, सयोगिकेवलिने सत्तर प्रकृति जीव विपाकी उदये छे, अयोगिने इग्यार जीव विपाकी उदय छे, बारमी प्रकृति आउखो ते भव विपाकी प्रकृति छे ॥ ८८ ॥

अट्ठगचउचउरट्ठगाय, चउरोयहुतिचउवीसा।
सोलसभगानवमे, इगभगोसुहमठाणम्मि ॥८९॥

टीका—अथभगाकस्माणमितिविवृणताह गुणट्ठाणेसुअट्ठसुइक्किकमोहबधट्ठाणतु, पचाअनियट्टिठाणेसु बधोपरमोपरततो १ मोहनीयसत्कबधस्थानेषुमध्येएकैकबधस्थानमिथ्यादृष्ट्यादिपुनवसुगुणस्थानकेषुभवति, तत्रमिथ्यादृष्टेद्वाविंशति, सास्वादनस्यैकविंशति, सम्यग्मिथ्यादृष्टे सप्तदश, अविरतसम्यग्दृष्टे सप्तदश, देशविरतस्यत्रयोदश, प्रमत्तापूर्वकरणेषु अगणकलानावनव, एतानिचद्वाविंशत्या-

दीनिनवपर्यंतानिस्थानानि,तनद्वाविंशतिर्भगा, एकविंशतौचत्वारो-
भगा, सप्तदशत्रयोदशनवसुस्थानेषुद्वौद्वौभंगकौ, पंचादीनांनवस्थाना-
नांएकैकएवभंगकः नवस्थानानि च, नवपंचचतुस्त्रिस्त्रिद्वेएका-
प्रकृतिर्यचइति पंचस्थानानिअनिवृत्तिगुणस्थानकेप्राप्यन्ते, अथगुण
स्थानेषुउदयस्थानान्याह नवोदयस्थानानिनवएकद्वेचत्वारि पंच-
षट्सप्तअष्टौनव दशएवंनवस्थानानि तत्रगाथा—

सत्ताइदसओमिच्छे, सासायणमीसएनवुक्कोसा ।
छाइनवअविरये, देसेपंचाइअट्टेव ॥ १ ॥

विरएखओवसमीए, चउराईसत्तछच्चपुव्वम्मि ।
अनियट्टिबायरेपुण, एकोवदुवेवउदयंसा ॥ २ ॥

एगसुहुमसरागे, वेएइअवेयगाभवेसेसा ।
भंगाणंचपमाणं, पुव्वुद्दिट्ठेणनायव्व ॥ ३ ॥

मिथ्यादृष्टौसप्तादीनिदशपर्यंतानित्रीणिपर्यंतानिचत्वार्युदयस्थानानि-
भवंति ॥तद्यथा॥ सप्तअष्टौनवदशसास्वादनेसप्तादीनि दशपर्यंतानि-
त्रीणिउदयस्थानानिसप्तअष्टौनव, एवं मिश्रेपित्रीणिउदयस्थानानि अ-
विरतेषडादीनि नवपर्यंतानिचत्वारिउदयस्थानानि षट्सप्तअष्टौनवइ-
तिचत्वारि,देसेदेशविरतावेपंचादिअष्टपर्यंतानिचत्वारिउदयस्थानानि
पंचषट्सप्तअष्टौएतानिचत्वारिउदयस्थानानि, तथा विरतेक्षयोपशमे-
प्रमत्तेतथाअप्रमत्तेचतुरादिसप्तपर्यंतानिचतु पंचषट्सप्तएतानिचत्वा-
रिउदयस्थानानि, उक्तपुव्विम्मि अपूर्वकरणेचतुरादिषट्पर्यंतानि त्री-
णिउदयस्थानानि, अनिवृत्तिबादरेगुणस्थानकेद्वौएकद्वेउदयस्थाने, सू-
क्ष्मसंपरायेएकमुदयस्थानं, शेषाउपशांतमोहादयोमोहोदयरहिताज्ञेया
अतोगुणस्थानकेषुमोहेभंगचतुर्विंशतिंविभजन्नाह मिथ्यादृष्ट्यादिष्व-

पूर्वकरणपर्यवसानेषुगुणस्थानकेषुप्रत्येकमष्टौअपूर्वकरणेचनसइत्या-
दिचतुर्विंशनयोभवन्ति, तत्रमिथ्यात्वेअष्टौ सास्वादनेचतस्र , मिश्रे-
चतस्र , चउरङ्गाविअविरतादिषुअप्रमत्तपर्यवसानेषुगुणस्थानेषुप्रत्ये-
कचतस्रएताश्चभावयति ततमिथ्यात्वेसप्तोदयेणकाचतुर्विंशति ,
अत्रकश्चिज्जीव अनन्तानुबन्धिचतुष्टयससान अप्रवर्तनाकरणेनउद्वल-
नया यपरस्यप्रतिपतितोमिथ्यात्वेगत तस्यसमविउदय , अन-
तानुबन्धिनासत्ताया भावानूदय , तत्रमिथ्यात्वअप्रत्याख्यानावरण-
प्रत्याख्यानसज्वलनक्रोधादीनामन्यतमे त्रय क्रोधादीनानयाणावेदा-
नाअन्यतमोएकोवेद हास्यरतियुगलारतिशोकयुगलयोरन्यतरयुग-
गलइत्येतासासप्तप्रकृतीनाउदयोधुव मिथ्यात्वे, अत्रहास्यरतियुगले-
एकोभग , सप्तारतिशोकयुगलेद्वितीयोभग, एतभगद्वय वेदैस्त्रिगु-
णेनतेनभगा षड्भगा क्रोधसभवा , षड्भगामानसभवा , षड्भ-
गा मायासभवा ,षड्लोभसभवा , एवचतुर्विंशतिभगा सर्वत्रभगा
चतुर्विंशतिसंख्याकमोऽयमेवतस्मिन्नेवसप्तके नयेवाजुगुप्सायावाअनन्ता-
नुबन्धिनोवाप्रक्षिप्ते अष्टनाउदय अत्रभयदौमत्येकमेककाचतुर्विंशति
प्राप्यते, इतितिस्रश्चतुर्विंशतय , तथातस्मिन्नेवसप्तकेभयजुगुप्स
योरथवाभयानन्तानुबन्धिनोर्यद्वाजुगुप्सानन्तानुबन्धिनो प्रक्षिप्तयोर्नवाना-
मुदय ,अत्राप्येकैकस्मिन्विकल्पेभगानाचतुर्विंशति प्राप्यते, इतितिस्र-
श्चतुर्विंशतय , तथातस्मिन्नेवसप्तकेभयजुगुप्सानन्तानुबन्धिषुयुगपत्
प्रक्षिप्तेषुदशानामुदय अत्रैकाभगानाचतुर्विंशति , सर्वसरव्यामिथ्या-
दृष्टौचतुर्विंशतय , सास्वादनेसप्तअष्टनवत्रीणिउदयस्थानानि, तत्रसा-
स्वादनेऽनन्तानुबन्ध्युदयेनैवआगच्छति, अनन्तानुबन्धादिकषायचतु-
ष्टयानामन्यतमेचत्वार क्रोधादिका , त्रयाणावेदानामन्यतमोवेद द्वयो-
र्युगलयोरन्यतरत्युगलमित्येतासासप्तप्रकृतीनाअवश्य उदय , अत्र-
प्रागेवैकाभगानाचतुर्विंशतिकानन्तोभयेजुगुप्सायावाप्रक्षिप्तायाअष्ट-

नामुदय तत्रद्वेचतुर्विंशतीभयजुगुप्सयो प्रक्षिप्तयोर्नेवोदय, अत्रैका-भगानाचतुर्विंशति, सर्वसंख्ययागास्वादनेचनस्त्रशर्तानिशतय, मिश्रेऽपि सप्तअष्टानवदीणिउदयस्थानानि तत्रअनन्तानुबन्धिवर्जास्त्रयोऽन्यतमे-क्रोधादिका त्रयाणावेदाना अन्यतमोवेद द्वयोर्युगलयोरन्यतरद्युगल-मुता सप्तप्रदोदया, तत्रैकाचतुर्विंशति, ततोभयजुगुप्सायामक्षि-प्तायाअष्टोदय, अत्रद्वेचतुर्विंशतीभयजुगुप्सयोस्तुयुगप प्रक्षिप्तयोर्नवा-नाउदय तत्रैकाचतुर्विंशति, सर्वसंख्ययामिश्रेचतस्त्रश्चतुर्विंशतय अविरतसम्यग्दृष्टौ षट्सप्तअष्टानवपर्याप्तानिचत्वारिउदयस्थानानि, तत्रानन्तानुबन्धिवर्जास्त्रयोऽन्यतमेक्रोधादिका, त्रयाणावेदानामन्यत-मोवेद द्वयोर्युगलयोरन्यतरद्युगल इतिषण्णाप्रकृतीनाउदयोअवि-रतस्यक्षायिकसम्यग्दृष्टेर्वाउपशमसम्यग्दृष्टेर्वाध्रुव अत्रैकाचतुर्विंशति, ततोभयेवाजुगुप्सायासम्यक्त्वमोहेप्रक्षिप्तेसप्तानामुदय अत्रतिस्त्र च-तुर्विंशतय, तथानस्मिन्नेवषट्केभयजुगुप्सयोर्भय सम्यग्मोहयोर्जुगु-प्सासम्यग्मोहयोर्युगपत्प्रक्षिप्तयोरष्टानामुदय, अत्रापितिस्त्रश्चतुर्विं-शतय तथानस्मिन्नेवषट्केभयजुगुप्सासम्यक्त्वमोहानायुगपत्प्रक्षिप्ता-नानवानामुदय अत्रैकाचतुर्विंशति, सर्वसंख्ययाअविरतसम्यग्दृष्टाव-ष्टौचतुर्विंशतय, देशविरतौपञ्चषट्सप्तअष्टानि उदया तत्रप्रत्याख्या-नावरणसंज्वलनक्रोधादीनाअन्यतमौद्वौक्रोधौत्रयाणावेदानामन्यतमो-वेद द्वयोर्युगलयोरन्यतरद्युगलमितिपञ्चानामुदय देशविरतस्यक्षायिक-सम्यग्दृष्टेरौपशमिकसम्यग्दृष्टेर्वा अत्रैकाचतुर्विंशति ततोभयेवाजुगु-प्सायावासम्यग्मोहेवाप्रक्षिप्तषण्णामुदय अत्रतिस्त्रश्चतुर्विंशतय, तथानस्मिन्नेवपञ्चकेभयजुगुप्सयोर्वाजुगुप्सावेदकसम्यक्त्वयोरथवाभ-यवेदकसम्यक्त्वयोर्युगपत्प्रक्षिप्तयो सप्तानामुदय, अत्रापितिस्त्रश्चतु-र्विंशतय, तथानस्मिन्नेवपञ्चकेभयजुगुप्सासम्यग्मोहेष्विप्तेअष्टानामु-दय अत्रैकाचतुर्विंशति, सर्वसंख्ययादेशविरतौअष्टौचतुर्विंशतय,

तत्रश्चप्रमत्तेऽप्रमत्तेचच त्वारिपचपट्सप्तत्येतानिचत्वारि उदयस्थानानि, तत्रक्षायिकसम्यग्दृष्टेरौपशमिकसम्यग्दृष्टेर्वाप्रमत्ताप्रमत्तस्यप्रत्येकसज्वलनक्रोधादीनामन्यतमएक क्रोधादि त्रयाणांवेदानामन्यतमोवेद द्वयोर्युगलयोरन्यतरयुगल इतिचतसृणाप्रकृतीनामुदय अत्रैकाचतुर्विंशति ततोभयेवाजुगुप्सायावासम्यग्मोहेवाक्षिप्तेपचानामुदय अत्रतिस्रश्चतुर्विंशतय भगानातस्मिन्नेवचतुष्केचभयजुगुप्सासम्यग्मोहयो प्रक्षिप्तयो षण्णामुदय अत्रापितिस्रश्चतुर्विंशतय तयातस्मिन्नेवचतुष्केभयजुगुप्सावेदकसम्यक्त्वे क्षिप्तेसप्तानामुदय अत्रैकाचतुर्विंशति सर्वसर यथाप्रमत्तस्याष्टौचतुर्विंशतय, एवमप्रमत्तस्याप्यष्टौचतुर्विंशतय अपूर्वकरणेचतत्र पचषट्सप्तत्येतानित्रीणि उदयस्थानानि, तत्रसज्वलनक्रोधादीनाम यतमएक क्रोधादि त्रयाणावेदानाम यतमोवेद द्वयोर्युगलयोरन्यतरयुगलइत्येतासाचतसृणाप्रकृतीनामुदयोऽपूर्वकरणेऽत्र अत्रैकाचतुर्विंशति, ततोभयेजुगुप्सायावाप्रक्षिप्तायापचानामुदय अत्रद्वेचतुर्विंशती भयजुगुप्सयोर्युगपत्प्रक्षिप्तयो षण्णामुदय अत्रैकाचतुर्विंशति सर्वसर यथाअपूर्वकरणेधनस्रश्चतुर्विंशतय अनिवृत्तिबादरेपुन एकोद्वौवाउदयाशौउदयभेदौअनचतुर्णासज्वलनानामन्यतमएक क्रोधादि त्रयाणावेदानामन्यतमोवेद इतिद्विकोदय, अत्रनिमिर्वेदैश्चतुर्भि सज्वलनैर्द्वादशभेदा ततोवेदोदय यत्रच्छेदेएकोदय सचतुर्विधोद्विविधबधे एकविधबधेप्राप्यते, तत्रयद्यपिप्राक्चतुर्विधबधेचत्वार त्रिविधबधे त्रयोद्विविधबधेद्वौएकविधबधेएक इतिदशभगा प्रतिपादिता तथाप्यत्रसामा येनचतुर्विधैकबधापेक्षयाचत्वारएवभगाविवक्ष्यते तेसपोडशभगकाअनिवृत्तिबादराख्येगुणस्थाने, इगभगोसुहुमठाणम्मि सूक्ष्मसपरायेयथाभानेएककिट्टीकृतसज्वलनलोभवेदयते, अत्रैकएव-

भग शेपाउपरितना उपशांतमोहादय सर्वेप्यवेदकामोहस्येति व्याख्याताचतुर्विंशति भगकाम् ॥ ८९ ॥

टबार्थ —मोहनीकर्मनी उदयभागानी चोविसी गुणठाणे बेंतालीस छे तेमघ्ये मिथ्यात्वे आठ चोवीसी छे, सास्वादनगुणठाणे च्यार चोवीसी छे, मिश्रगुणठाणे च्यार चोवीसी छे, उपरले च्यार गुणठाणे चोथे तथा पाचमे तथा छठे तथा सातमे आठ आठ चोवीसी छे, आठमे गुणठाणे च्यार चोवीसी छे, इंहा चोवीसी सर्वनवेद ३ तेहथी हास्ययुगल्ना तीन भागा अरतिशोकना तीन भागा एव ६ भागा क्रोधथी ६ भागा मानथी ६ भागा मायाथी ६ भागा लोभथी ६ भागा ए चोवीस भागा जाणवा सर्व चोवीसी ए रीते छे, तथा नवमे गुणठाणे सोल भागा छे तथा दशमे गुणठाणे एक भागो छे मोहनीकर्मनी ॥ सर्वे चोवीसीने चोवीसगुणी करीये ॥ ८९ ॥

चउवीसगुणा एए, सोलसनवमे इगंचदसगम्मि ।
वारसपणसट्ठिसया, मोहभगाण सव्वग्ग ॥९०॥

टीका—चउवीसगुणाएएइत्यादि एताद्विपचाशच्चतुर्विंशतय द्विपचाशत चतुर्विंशत्यागुणनेद्वादशशतीअष्टचत्वारिंशतभगाना-भवति, सास्वादनेषड्विंशति , मिश्रेषड्नवति , सम्यक्त्वेद्विनवत्यधिकशत, देशविरतेद्विनवत्यधिकशत, प्रमत्तेद्विनवत्यधिकशत, अप्रमत्तेद्विनवत्यधिकशत, अपूर्वकरणेपड्विंशति , अनिवृत्तिकरणेषोडशभगा , सूक्ष्मसपरायेएकोभग , इत्येवभगनिरूपण अस्मत्कृतसर्वेग-प्रकरणतोज्ञेय द्वादशशतपचषष्टिमोहभगानासर्वाग्रभवति ॥९०॥

टबार्थ—तेवारे २४८ भागा थाय ते मध्ये सत्तर भागा

मेलीये एटला मिल्या १२६५ भागा थाय, ते गुणटाणे तिहां मिथ्यात्वे १९२ भागा छे, सास्वादने ९६ मिश्रगुणटाणे ९६ समकित गुणटाणे १९२ देशविरति गुणठाणे १९२ प्रमत्तगुणठाणे १९२ अप्रमत्त गुणटाणे १९२ भागा, अपूर्वकरण गुणठाणे ९६ अनिवृत्तिकरण गुणठाणे १६ भागा सूक्ष्मसपराय गुणठाणे १ भागो छे, इम भागाना भेद जाणवा ते सर्वेधप्रकरण स्वयणियेज किगो छे, तेहथी जोई लेवा ए मोहनीकर्मना भागानो सरवालो जाणवो ॥ ९० ॥

अडसट्ठीबत्तीस, बत्तीससट्ठीमेवबावन्ना ।
चउयालदोसुवीसा, नवमेअडवीसइगसुहुमे ॥९१॥

टीका—अडसट्ठीबत्तीस अथपदवृन्दचतुर्विंशतिनिरूपणायाह। मिथ्यात्वगुणस्थानकेअष्टपष्टिपदवृन्दचतुर्विंशतय तत्रसप्तोदयेसप्तचतुर्विंशतय अष्टोदयेचतुर्विंशति चतुर्विंशतय नवोदयेसप्तविंशति चतुर्विंशतय दशोदयेदशचतुर्विंशतय, एवअष्टाधिकापष्टिर्मिथ्यात्वेपदानाचतुर्विंशतयोभवन्ति,सास्वादनेद्वात्रिंशचतुर्विंशतय, तत्रसप्तोदयेसप्तअष्टोदये षोडश,नवोदयेनव,एवद्वात्रिंशत्,मिश्रे,सप्तोदयेसप्तअष्टोदयेषोडश नवोदयेनव, एवद्वात्रिंशत्,सम्यक्त्वे,षष्टि, तत्रषड्दयेषट् सप्तोदयेएकविंशति अष्टोदयेचतुर्विंशति नवोदयेनव एवषष्टिर्भवन्ति । देशविरतौद्विपचाशत् तत्रपचोदयेपचषड्दयेअष्टदश सप्तोदयेएकविंशति अष्टोदयेअष्ट एवद्विपचाशत्, प्रमत्तेचतुश्चत्वारिंशत् चतुरुदयेचतस्र पचोदयेपचदश षड्दयेऽष्टादश सप्तोदयेसप्त एवचतुश्चत्वारिंशत् अपूर्वकरणेविंशति, एवत्रीणिशतानि द्विपचाशदधिकानिचतुर्विंशतयोभवति, तेषुचतुर्विंशतिगुणितपदवृन्दसत्रांग्रप्राप्यते नवमेऽष्टाविं-

शनि तथा दशमेएक एतज्ञानानिअंशसहस्राणिचतु शतानिसमाप्तयधिकानिपदवृदानासर्वाग्रभवति एवेचभगत्रयोगादिनागुणितेअनकभगानासर्वाग्रभवति ॥ ९१ ॥

टवार्थ —हवे पदवृन्दनी चोवीसी कहीये छे तिहां मिथ्यात्वे अडसठि चोवीसी छे सास्वादन बत्तीस चोवीसी छे मिश्रे बत्तीस चोवीसी छे समकिते साठ चोवीसी छे देशविरते बावन चोवीसी छे प्रमत्त गुणठाणे चउवालीस चोवीसी छे, अप्रमत्त गुणठाणे चउवालीस चोवीसी छे अपूर्वकरण गुणठाणे वीस चोवीसी छे सर्व मिल्या ५२ चोवीसी छे नवमे गुणठाणे अठावीस भागा छे दशमे सूक्ष्मसपराय गुणठाणे तेने विषे एकज भागो छे ॥ ९१ ॥

उदयपयाओगुणीया, पयवन्नासभवविधाणिज्जा ।
नाणतरायतिनिह, दससुदोहुतिदुन्निम्मि ॥ ९२ ॥

टीका—अथज्ञानावरणादिकर्मणाभगकानिवितन्यन्ते । तत्र ज्ञानावरणे तथा अनरायेनिविहतिनिमकारसभव, प्रथमभगेपचविशेषव पचविधउदय पचविधासत्ता एव निकयोगयुक्त प्रथमोभग, दससु, मिथ्यात्वनआरभ्य दशसुसूक्ष्मसपरायपर्यतेप्राप्यते, दुन्निम्मिदुन्निउपशानमोहक्षीणमोहलक्षणे गुणस्थानद्वयेद्वेउदयसत्तारूपेभवत पचविधउदय पचविधासत्ता एतत्त्रिसयोगलक्षणोद्वितीयभग प्राप्यते ज्ञानावरणातरायर्योभगद्वयमेव ॥ ९२ ॥

टवार्थ —ए चोवीसी सर्व उदय पदथी गणिये तेवारे पद वृन्दनो सर्वाग्रथाये, दसनी चोवीसी दसगुणी करीये, नवनी चो-

वीसी नवगुणी करीये, इम सर्वेने करता ८४७७ भागा थाये, ज्ञानावरणीना भागा २ छे अन्तरायना भागा २ छे पाचनो बंध पाचनो उदय पाचनी सत्ता ए त्रिविध भागो दशमा गुणठाणा पर्यंत छे इग्यारमे बारमे गुणठाणे पाचनो उदय पाचनी सत्ता ए एक भागो छे ॥ ९२ ॥

मिच्छेपुणसासाणे, नवचउपणनवयबधुदयसता ।
मीसाइ नियट्टिओ, छचउपणनवयदुगभगा ॥९३॥

टीका—अथदर्शनावरणीयभगकानगुणस्थानकेषुदर्शयनाह । मिच्छेपुणसासाणेइ यादि मिथ्यात्वेपुन सास्वादनेदर्शनावरणीयस्यद्वौ-भगौ, नवत्ति नवानाप्रकृतीनानव चतुर्णामुदय नवानासत्ताल-क्षण प्रथमोभग , तेषामेवजीवानानिद्रोदये पचानामध्ये एकस्मिन् समये एकाएवनिद्राउदयेभवति नसर्वास्तेननवानाबंध पचानामुदय नवानासत्तारूप द्वितीयएवभगद्वयप्रथमगुणस्थानद्वये प्राप्यते, मिश्रादारभ्यनिवृत्तिबादरप्रथमभागयावत्स्थानद्विनिकस्थाभावेष-ण्णामेवबंध चतुर्णामुदय नवानासत्ता अथवापण्णाबंध पचानामु-दय नवानासत्ताएतद्भगद्वयलभ्यते ॥ ९३ ॥

टबार्थ —दर्शनावरणीना मिथ्यात्व तथा सास्वादने नव बंध च्यार उदय, नव सत्ता ए एक तथा नव बंध पाच उदय नव सत्ताए वीजो ए बे भागा छे मिश्र गुणठाणाथी माडी आ-ठमा गुणठाणाना प्रथम भाग सुधी ६ न्यारनो उदय नव नवनी सत्ता ए एक भागो तथा छनो बंध पाचनो उदय नवनी सत्ता ए वीजो भागो ए बे भागा छे ॥ ९३ ॥

चउवधतिगेचउपण, नवसदुसुजुअल छ सता ।
उवसतेचउ पण नव, खीणेचउदयछचउसता॥९४॥

टीका—चउवधतिगे इत्यादि अपूर्वकरणस्यषट्पचाशद्भवनकभागादारभ्य सूक्ष्मसंपरायपर्यन्त उपशमश्रेणिवन्त चउवधति, च तुर्णांबंध चतुर्णामुदय नवसत्ति नवसत्तालक्षण एकोभग अथवाचतुर्णांबंध पचानामुदय नवसत्तालक्षण द्वितीय निद्रोदयस्तुघोलनापरिणामरूप घोल्नाघर्यांयस्यतीक्ष्णत्यागलक्षणमवसॅनेकिंचित्पुन परावर्त्तलक्षणरूपापरिणति दुसुति नवमेदशमेचघोदयानायुगल चतुर्णांबंध चतुर्णामुदय षट्सत्ता एषक्षपकश्रेण्यारोहवन भग, तथा उवसते उपशातेएकादशेगुणस्थाने चतुर्णामुदय नवानासत्ता अथवा नवानामुदय नवानासत्ताएनद्रूपाभगकौमाप्येते खीणत्ति क्षीणमोहलक्षणेद्वादशेचतुर्णामुदय षण्णासत्ता अथवा चतुर्णामुदय चतुर्णासत्तारूप एवभगद्वयमाप्यते, क्षपकाणामत्यतविशुद्धतयानिद्राद्विकस्यउदयाभावात् उदयभगेषु सकान्तोदयस्यप्रकृत्यतरभवनेननवगवेषणाप्रदेशोदयस्यापि नस्वरूपताक्कचित्ग्रहणमपिकारणिकम् ॥ ९४ ॥

ट्यार्थ—आठमाना उपरला भागे नवमे दशमे ए तीन गुणठाणे च्यारनो उदय नवनी सत्ता ए भागो उपशमश्रेणिमें छे च्यारनो बंध च्यारनो उदय उनी सत्तानो भागो नवमाना तीजा भागथी जाणवो इग्यारमे गुणठाणे च्यारनो उदय नवनी सत्ता अथवा पाचनो उदय नवनी सत्ता ए बे भागा छे क्षीणमोह गुणठाणे च्यारनो उदय उनी सत्ता अथवा च्यारनो उदय च्यारनी सत्ता ए बे भागा छे ॥ ९४ ॥

चउछसुदुन्निसत्तसु, एगेचउगुणेसुवेयणियभगा ।
गोएपणचउदोतिसु, एगट्ठ(सु)दुन्निइक्कम्मि ॥९५॥

टीका--अथ वेदनीयगोत्रभगकानगुणस्थानेषुदर्शयन्नाह । चउछसुदुइत्यादिषुपञ्चसुमिथ्यादृष्ट्यादिषुप्रमत्तसयनपर्यंतेषुगुणस्थानके पुप्रत्येकवेदनीयस्य प्रथमाश्चत्वारोभगा तेचेमेअसातस्यबन्ध असातस्योदय सातासातेसत्ता १ सातस्यबन्ध असातस्योदय सातासातेसत्ता २ असातस्यबन्ध सातस्यउदय सातासातेसत्ता ३ सातस्यबन्ध सातस्योदय सातासातेसत्ता ४ एवभगचतुष्टय प्राप्यते तथाअप्रमत्तसयतादिषुसयोगिकेवलिपर्यंतेषुद्वौभगको सातस्यबन्ध असातस्योदय सातासातेसत्ता १ पुन सातस्यबन्ध सातस्योदय सातासातेसत्ता एवभगकद्वयप्राप्यते, तथाएकस्मिन्नयोगि केवलिनिच द्वावेभगा तेचेमेअसातस्योदय सातासातेसत्ता १ सातस्योदय सातासातसत्ता २ एतौद्वौविकल्पौ अयोगिकेवलिनिद्विचरमसमयपावत प्राप्येते चरमसमयेतु असातस्योदय असातसत्ता १ अथवा सातस्यउदय सातसत्ता एवभगद्वय प्राप्यते द्विचरमसमयस्यसातक्षीणतस्यअसातप्राप्यते यस्यअसातक्षीणतस्यसातप्राप्यते गोएत्तिगोत्रस्यपचभेदामिथ्यादृष्टौ तेचेमेनीचैर्गोत्रस्यबन्धोनीचैर्गोत्रोदय नीचैर्गोत्रसत्ताएकोविकल्प तेजस्कायिकेषुवायुकायिकेषुलभ्यते तद्भवाद्युद्वृत्तेषुचाशेषजीवेषुमिथ्यादृष्टौ नीचैर्गोत्रस्यबन्ध नीचैर्गोत्रोदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ता अथवा नीचैर्गोत्रस्यबन्ध उच्चैर्गोत्रोदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ता अथवा उच्चैर्गोत्रस्यबन्ध नीचैर्गोत्रोदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ता अथवा उच्चैर्गोत्रस्यबन्ध उच्चैर्गोत्रस्योदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ता एवभगपचकभवति तथा सा-

स्वादनेप्रथमभगप्रजंभगचतुष्यप्राप्यते प्रथमभगक्तेजोवायुकायिक-योरनुभ्यत्तेपुनरसास्वादनाभावात्, तथानिश्रुमिश्राविरतिदेशविरतेषु उच्चगोंत्रबन्धद्विभगीभवन मिश्रादयोहि नीचैर्गोत्रनवध्नंति अन्ये-त्वाचार्या देशविरतस्यपचमनभगएक उक्तच सामन्नेणवपजाइए उच्चगोयस्सउदओहोइ इतिवचनात् एवहुप्रमत्तत्तयतप्रभृतिपुअन्-सुगुणस्थानेपुप्रत्येकमेकैकोभग नतप्रमत्तात्सूक्ष्मसपरायपर्यन उच्चै-र्गोत्रस्यवध उच्चगोंत्रस्योदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ता उपशातमोहक्षी-णमोहसयोगिकेवलिनिवधाभावात प्रत्येकउच्चगोत्रस्योदय उच्चनी-चैर्गोत्रसत्तारूप विकल्प "दुन्निइक्कम्मि" एकस्मिनयोगिके-वलिनिद्विभगीउच्चैर्गोत्रस्योदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ताअयविकल्प अ-योगिद्विचरमसमयपावत् चरमसमयेतु उच्चैर्गोत्रस्योदय उच्चैर्गोत्र-सत्ताअयद्वितीयोविकल्प नीचैर्गोत्रस्यगतत्तात्रासत्तिप्रकृतिपुक्षीण-त्वात् इत्युक्तेवेदनीयगोत्रे ॥ ९५ ॥

इहार्थ—वेदनी कर्मना ७ गुणठाणे च्यार भागा छे असातानो बध १ असातानो उदय १ साताअसातानी सत्ता १ असातानो बध १ सातानो उदय १ साताअसातानी सत्ता २ तथा सातानो बध सातानो उदय साताअसातानी सत्ता ३ सातानो बध असातानो उदय साता-असातानी सत्ता ४ ए च्यार छट्टा गुणठाणा पर्यंत छे इहा छट्टाने अंते असातानो बध जाय छे तिणे सातमाथी तेरमा पर्यत सात गुणठाणे सातानो बध सातानो उदय बेनी सत्ता १ तथा सातानो बध असातानो उदय बेनी सत्ता ए बीजो ए बे भागा पामीये छे एक अयोगी गुणठाणे अबधना च्यार भागा छे असातानो उदय, बेनी सत्ता १ सातानो उदय बेनी सत्ता २ असातानो

उदय सातानी सत्ता २ सातानो उदय सातानी सत्ता १ ए
च्यार भागा छे गोत्रकर्मना भागा सात छे तिहा मिथ्यात्वे
पाच भगा छे नीचनो बध नीचनो उदय नीचनी सत्ता १
नीचनो बध नीचनो उदय बेनी सत्ता नीचनो बध ऊचनो
उदय बेनी सत्ता ऊचनो बध नीचनो उदय बेनी सत्ता ए
पाच भागा छे सास्वादन गुणठाणे नीचनो बध नीचनो उदय
नीचनी सत्ता ए भागो नथी तेणे च्यार भागा छे, जे कारणे
उपशमसमकित पडतो सास्वादने आवे उचगोत्र बाधी सत्ताक-
रीज आवे, समकिती ते नावे तो बध नथी, तिहा तीजे तथा
चोथे गुणठाणे ऊच रचना ने भागा छे, जे कारणे सास्वादनने
नीचनो बध टल्यो छे, तेणे नीच रचना तीन भागा टल्या,
पाचमे पण एहज बे भागा छे, छठायी माडी दशमा पर्यंत
ऊचनो बध ऊचनो उदय ऊचनी सत्ता ए एक भागो छे,
इग्यारमे बारमे तेरमे ऊचनो उदय छे बेनी सत्ता एक भागो
छे एक अयोगि गुणठाणे रचना बे भागा छे ॥९५॥

अट्ठाहिगवीसा, सोलसवीसचवारछदोसु ।
दोचउसुतिसुइक्क, मिच्छाइसु आउएभगा ॥९६॥

टीका —सांप्रतमायु कर्मणो भगकान्गुणस्थानेषुदर्शयन्नाह ।
अट्ठाहिगवीसादय दिआयु कर्मण अष्टाविंशतिभगा स्तत्रनरकायु-
ष पच,प्रथमबद्धायुष नरकायुरुदय नरकायु सत्तालक्षण प्रथम
बध्यमानायुषाद्भेभगकेतिर्यगायुर्बध नरकायुरुदय तिर्यग्नरकायु
सत्ताएनद्भगकमिथ्यात्वेसास्वादनेप्राप्यते मनुष्यायुर्बध नरकायुरुदय
नरकमनुष्यायु सत्ता, एषतुमिथ्यात्वेसास्वादनेअविरतेचप्राप्यते

आयुर्बंधकरणानंतरनरकायुरुदय तिर्यग्नरकायु सत्ता, नरकायुरुदय मनुष्यमनुष्यायु सत्ता एतौभगकौनारकस्यचतुर्षुगुणस्थानेषुप्राप्येते एतेपचनैरयिकायुर्भंगका, देवायुपोपिपच, देवायुरुदय देवायु सत्ताबध्यमानायुपातिर्यगायुर्बंध देवायुरुदय देवतिर्यगायु सत्ता मनुष्यायुर्बंध देवायुरुदय मनुष्यदेवायु सत्ता बधाननरदेवायुरुदय तिर्यग्देवायु सत्ता, देवायुरुदय मनुष्यदेवायु सत्ता एव पच, तिर्यगायुरुदयेनवभगका, स्तिर्यगायुरुदय तिर्यगायु सत्ता अयचपचसुगुणेषुप्राप्यते, बध्यमानायुषानरकायुर्बंध तिर्यगायुरुदय नरकतिर्यग्सत्तारूप मिथ्यात्वेएवप्राप्यते, तिर्यगायुर्बंध तिर्यगायुरुदय तिर्यग्तिर्यगायु सत्तारूपस्तुमिथ्यात्वेसास्वादनेप्राप्यते, मनुष्यायुर्बंध तिर्यगायुरुदय मनुष्यतिर्यग्सत्ता अयभग मिथ्यात्वेसास्वादनेमुरयनयाप्राप्यते, सम्यग्दृष्टेरितरश्चोऽपिदेवायुर्बंध तिर्यगायुरुदय सत्तालक्षण मिश्रवर्जमिथ्यात्वादि देशविरतपर्यंतमाप्यते बधाननरातिर्यगायुरुदय नरकतिर्यग्सत्तातिर्यगायुरुदय तिर्यगतिर्यग्सत्तातिर्यगायुरुदय मनुष्यतिर्यगसत्तातिर्यगायुरुदय देवतिर्यगायु सत्ताएतेचत्वारोपिपूर्वमद्धायुषोऽपेक्षयापचस्वपिगुणेषुमाप्यन्ते एवमनुष्यायुर्भंगानव, मनुष्यायुरुदय मनुष्यायु सत्तालक्षण चतुर्दशसुगुणस्थानेषुमाप्यते, बध्यमानानानरकायुर्बंध मनुष्यायुरुदय नरकायुर्मनुष्यायु सत्तारूप मिथ्यात्वेतिर्यगायुर्बंध मनुष्यायुरुदय तिर्यग्मनुष्यायु सत्तालक्षणभगोमिथ्यात्वेसास्वादनेदेवायुर्बंध मनुष्यायुरुदय मनुष्यमनुष्यायु सत्तारूप भगोमिथ्यात्वेसास्वादने, देवायुर्बंध मनुष्यायुरुदय देवमनुष्यायु सत्तालक्षणभग मिश्रवर्जमिथ्यात्वाद्यप्रमत्तपर्यंतेषुप्राप्यनेइति अष्टाविंशतिभगामिथ्यात्वेप्रथमेगुणस्थानेप्राप्यते, सास्वादनेषड्विंशतिभगास्तिर्यगमनुष्ययो नरकायुर्बंधलक्षणौद्वोभगौ न नरकायुपोहिनवोमिथ्यात्वेएवेति छत्ति,

पडपिकाविंशति मिश्रेपोडशभगावध्यमानभगानाद्वादशानामभावात् वीसच अविरतसम्यग्दर्शने " वीसभगा " विंशतिर्भगा कथमितिचेदुच्यते तिर्यग्मनुष्याणाप्रत्येकमायुर्बंधकालेयेनरकतिर्यग्मनुष्यायुर्विषयास्त्रयोभगा यश्चदेवनैरयिकाणाप्रत्येकमायुर्बंधकालेतिर्यग्गतिविषय एकैकोभग तेअविरतसम्यग्दृष्टेर्नसभवति नत शेषाविंशतिरेवभवति, देशविरतेद्वादशभगा, यतोदेशविरतिस्तिर्यग्मनुष्याणामेवभवति, तेचानिर्यग्मनुष्यादेशविरताआयुर्बध्नतोदेवायुरेवबध्नतिनशेषमायुस्ततस्तिरश्चामनुष्याणाचप्रत्येक परभवायुर्बंधकालात्पूर्वएकैकोभग परभवायुर्बंधकालेपिदेवायुर्बंधरूप एकैकोभग बधोत्तरकाल तुचत्वारोभगा, चतुर्णामप्यायुषामन्यतमबद्ध्वातनोदेशविरतिप्रतिपद्यते, ततएवयाचत्वारोभगा प्राप्यन्ते, सर्वसख्यया, द्वादश उक्तोयुक्तिद्वयो प्रमत्ताप्रमत्तयो प्रत्येकषड्भगा, प्रमत्ताप्रमत्तसयतादि मनुष्याएवभवति बधकालात् पूर्वएक बधकालेतुदेवायुर्बंधरूप एक बधोत्तरकालतुचत्वारोपि एवषड्भगा, दोचउमुत्ति चतुर्षुअपूर्वकरणानिवृत्तिकरणसूक्ष्मसपरायोपशानमोहेषुगुणस्थानेषूपशमश्रेणिमधिकृत्यप्रत्येकद्वौद्वौभगौतत्रथा मनुष्यायुरुदय मनुष्यायु सत्ता, अथवा बद्धायुषस्तुमनुष्यायुरुदय देवमनुष्यायु सत्ताइत्याणएवद्वौभगौप्राप्येते एषविकल्प परभवायुर्बंधोत्तरकालएवेद्यायुर्नबध्नाति, अतिविशुद्धत्वात्पर्वबद्धेचायुषि उपशमश्रेणिंप्रतिपद्यते ते, देवायुष्येवतान्यायूषिनदुक्तकर्मप्रकृतौ तिसुआउगेसुनद्वेसु जेणसेढिं नारुहइ, तत उपशमश्रेणिमधिकृत्यएतेषुद्वौद्वौ।एवभगौ पूर्वबद्धायुष्कास्तुनक्षपक श्रेणिप्रतिपद्यते, तत उपशमश्रेणिमधिकृत्येत्युक्त क्षपकश्रेण्यान्वेतेषाएकैकोभग मनुष्यायुरुदय मनुष्यायु सत्ताइत्याणएवनिरूपितचायु कर्मस्वरूपम् ९६॥

यथार्थ —हवे आउखाकर्मना भागा गुणठाणे कहे छे

मिथ्यात्व गुणठाणे नारकीना ५ देवताना ५ तिर्यंचना ९ ए अठावीस भागा छे, सास्वादन गुणठाणे छवीस भागा छे मनुष्यना तथा तिर्यंचना नारकीबंधना २ भागा नथी मिश्र गुणठाणे सोळ भागा छे च्यार गतिमध्ये बध्यमान भागा नथी. बार बध्यमान भागा नथी समकित गुणठाणे वीस ‌.गा छे च्यार अबंधना च्यार बांधी रह्या पछी बध्यमान च्यार छे जे देवता नारकी समकित गुणठाणे मनुष्यायु बांधे तिरि मनुष्य एक देवायु बांधे, समकितीने नरकतिरि आयुबंध नथी छठ्ठाथी मांडी तेरमा पर्यंत उच बंध, उच उदय, उच नीचनी सत्ता, ए एक भागो छे एक अयोगी केवली गुणठाणे अबंधना बे भागा छे सत्ता ए एक भागो पामीये जे कारणे क्षपकश्रेणि अबंधायु चढे परबंधायु चढे नहीं देशविरति गुणठाणे तिर्यंचना छ मनुष्यना छ ए बार पामीये अबंधनो १ बध्यमान एक देवतानो बांधी रह्या पाछल्या च्यार एव ६ तिरिगतिना छ मनुष्यगतिना, छठ्ठे तथा सातमे गुणठाणे मनुष्यगतिना छ भागा पामीये तथा आठमे नवमे दशमे इग्यारमे ए च्यार गुणठाणे मनुष्यायुसत्ता मनुष्यायुउदय मनुष्यायुउदयदेव मनुष्यायुसत्ता ए बे भागा पामीये कोईक जीव आउखो बांधे, उपशमश्रेणि चढे तथा क्षीणमोह गुणठाणे मनुष्यायु उदयसत्ता ए एक भागो पामीये जे कारणे क्षपकश्रेणि अबंधायु चढे परबंधायु चढे नहीं ॥ ९६ ॥

छनवछक्कतिगसत्ता, दुगदुगतिगदुगतिअट्ठचउदुग ।
छचउदुगपणचउ, चउदुगचउपणगएगचउ ॥९७॥

टीका—साम्प्रतनामकर्मस्वरूपविभजन्नाह छनवछक्कइत्यादि-

गायायुग्म तत्व्याख्या तत्रमिथ्यादृष्टेनाम्न षट्बन्धस्थानानि तद्य-थात्रयोविंशति पचविंशति षड्विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिं-शत् त्रिंशत्, तत्रापर्याप्तैकेंद्रियप्रायोग्य बन्धन त्रयोविंशति, तस्या चबध्यमानायां बादरसूक्ष्मप्रत्येकसाधारणैर्भंगाश्चत्वार पर्याप्तैकेंद्रिय प्रायोग्यापर्याप्तद्वित्रिचतुरिंद्रियतिर्यगपचेंद्रियमानुष्यप्रायोग्यबन्धत प-चविंशति, तत्रपर्याप्तैकेंद्रियप्रायोग्यायापचविंशतौबध्यमानायाभगा-विंशति अपर्याप्तद्वित्रिचतुरिंद्रियतिर्यग्मनुष्यपचेंद्रियप्रायोग्यायाबध्य-मानायातुप्रत्येकएकैकोभगइतिसर्वसरयायापचविंशति पर्याप्तैकें-द्रियप्रायोग्यबन्धत पड्विंशति तस्याचबध्यमानायाभगा षोडश, देवगतिनरकगतिप्रायोग्यबन्धन अष्टाविंशति देवगत्यष्टाविंशता अष्टौभगा नरकाष्टाविंशतौएकभग एवनवपर्याप्तद्वित्रिचतुरिंद्रिय-तिर्यग्मनुष्यपचेंद्रियप्रायोग्यानबन्धना एकोनत्रिंशत्, तत्रपर्याप्तद्वित्रि-चतुरिंद्रियप्रायोग्यायाएकोनत्रिंशतिबध्यमानायाप्रत्येकअष्टौभगा । तिर्यग्पचेंद्रियप्रायोग्यायापट्चत्वारिंशत् शतानिअष्टाधिकानिमनुष्य-गतिप्रायोग्यायामप्येतावन्तएवभगा सर्वसरयायाचत्वारिंशदधिकानि-द्विनवतिशतानि ९२४०। यातुदेवगतिप्रायोग्यातीर्थकरनामसहिता एकोनत्रिंशत् साचमिथ्यादृष्टेनबधमायातितीर्थकरनामसम्यक्त्वप्रत्य-यात्, मिथ्यादृष्टेश्चतदभावात्, पर्याप्तद्वित्रिचतुरिंद्रियतिर्यग्पचेंद्रिय-प्रायोग्यबन्धन त्रिंशत्, तत्रपर्याप्तद्वित्रिचतुरिंद्रियप्रायोग्यायात्रिंश-तिबध्यमानायाप्रत्येकमष्टौभगा, तिर्यग्पचेन्द्रियप्रायोग्यायात्वष्टा-धिकानिपट्चत्वारिंशच्छतानि।४६०८ सर्वसख्ययाद्वात्रिंशत् उत्तरा-णिपट्चत्वारिंशत यातुमनुष्यगतिप्रायोग्या त्रिंशत् तीर्थकरनामस-हितायाचदेवगतिप्रायोग्याआहारकद्विकसहितातेउभेअपिमिथ्यादृष्टौ नबधमायात, तीर्थकरनाम्न सम्यक्त्वप्रत्ययत्वादाहारकनाम्नस्तु-सयमप्रत्ययत्वात्, उक्तं च सम्यक्त्वगुणनिमित्ततित्थयर सयमेणआहा-

रमिति तत्र त्रयोविंशत्यादिपुभंगसंख्यामिथ्यात्वमत्यपनिरूपणार्थमाह ॥ गाथा ॥

घउपणवीसासोलस, नवचत्तालसयायपाणउई ।
बत्तीगुत्तरछाया, ल्सयामिच्छरसनरविही ॥ १ ॥

तथामिथ्यादृष्टेर्नवउदयस्थानानि तद्यथाएकविंशति चतुर्विंशति सप्तसहस्राणि सप्तगनानि त्रिसप्तत्यधिकानि तथाहिएकविंशत्युदये एकचत्वारिंशत्, तत्रैकेंद्रियाणामेव अन्यनचतुर्विंशत्युदयस्याभावात्, पंचविंशत्युदयेद्वात्रिंशत् तत्रएकेंद्रियाणासप्तवैक्रियतिर्यग्पंचेंद्रियाणामष्टौ वैक्रियमनुष्याणामष्टौ देवानामष्टौ नारकाणामेक एवद्वात्रिंशत्षड्विंशत्युदयेपञ्चशतानि तत्रैकेंद्रियाणा त्रयोदश १३ विकलेंद्रियाणा नव, तिर्यग्पंचेंद्रियाणाद्वेशतेएकोननवत्यधिके २८९ मनुष्याणामपिद्वेशतेएकोननवत्यधिके ॥२८९॥ सप्तविंशत्युदयेएकविंशत् तत्रएकेंद्रियाणाषट् ६ वैक्रियतिर्यग्पंचेंद्रियाणामष्टौ वैक्रियमनुष्याणामष्टौ देवानामष्टौ नारकाणामेक, अष्टाविंशत्युदये एकादशशतानिनवनवत्यधिकानि, तत्रविकलेंद्रियाणाषट्, तिर्यग्पंचेंद्रियाणापंचशतानिषट्सप्तत्यधिकानि ५७६ वैक्रियतिर्यग्पंचेंद्रियाणाषोडश १६ मनुष्याणापंचशतानिषट्सप्तत्यधिकानि ५७६ वैक्रियमनुष्याणामष्टौ देवाना षोडश, नारकाणाएक, एकोनत्रिंशदुदयेसप्तदश शतानिएकाशीत्यधिकानि ॥१७८१ तत्रविकलेंद्रियाणाद्वादश, तिर्यग्पंचेंद्रियाणामेकादशशतानिद्विपंचाशदधिकानि ११५२ वैक्रियतिर्यग्पंचेंद्रियाणाषोडश १६ मनुष्याणापंचशतानिषट्सप्ततिअधिकानिवैक्रियमनुष्याणामष्टौ ८ देवानाषोडश, नारकाणाएक, त्रिंशदुदयेएकोनत्रिंशत्शतानिचतुर्दशाधिकानि, तत्रविकलेंद्रियाणामष्टादशतिर्यग्पंचेंद्रियाणासप्तदशशतानिअष्टाविंशत्यधिकानि १७२८ वैक्रिय-

देवनैरयिकसत्कोदयस्थानभगा न प्राप्यन्ते; सत्तास्थानानिपचतद्यथा-
द्विनवति अष्टाशीति षडशीति अशीति अष्टसप्ततिश्चतत्रैक-
त्रिंशति चतुर्विंशति पचविंशति षड्विंश युदयेषुपचापिसत्ता-
स्थानानि तत्र पचविंशत्युदयेतेजोवायुकायिकानधिकृत्याष्टसप्तति
प्राप्यते, षड्विंशत्युदयेतेजोवायुकायिकान् तेजोवायुभवाद्दुध्धृत्यवि-
कलेन्द्रियानिर्यक्पचेन्द्रियेषुमध्येसमुत्पन्नान्अधिकृत्याष्टाविंशत्येकोन-
त्रिंशत्एकत्रिंशद्रूपेषुपचसुअष्टसप्ततिवर्जानिशेषाणिप्रत्येकंचत्वारि-
चत्वारिसत्तास्थानानिसर्वसर ययासर्वाण्युदयस्थानानिअधिकृत्यनयो-
विंशतिबधकस्यचत्वारिंशत्सत्तास्थानानि, एवपचविंशति षड्विंशति
वधकानामपिवक्तव्य केवलमिह्देवाअप्यात्मीयेषुसर्वेष्वप्युदयस्थाने-
षुवर्तमानपर्याप्तैकेन्द्रिययोग्यापचविंशति षड्विंशतिंचबध्नति इत्य-
वसेय, नवरपचविंशतिबधेबादरपर्याप्तप्रत्येकास्थिरशुभङ्गभंगानादे-
यपश कीर्तिअयश कीर्तिपदैरष्टौभगा अवसेया नशेषा
सूक्ष्मसाधारणपर्याप्तिषुमध्येदेवस्योत्पादाभावात्, सत्तास्थानभावना
पचविंशतिबधेषड्विंशतिबधेचप्रागिवकर्त्तव्या सर्वसख्यया चत्वारिंशत्
सत्तास्थानानि, अष्टाविंशतिबधकस्यमिथ्यादृष्टेर्द्वेउदयस्थाने तद्यथा-
त्रिंशत्एकत्रिंशत्, तिर्यक्पचेंद्रियमनुष्यानधिकृत्यएकत्रिंशत् तिर्यक्प-
चेंद्रियानेवअष्टाविंशति बधकस्य चत्वारिसत्तास्थानानिद्विनवति
एकोननवति अष्टाशीति षडशीति तत्रत्रिंशदुदयेचत्वार्यपितत्रा-
प्येकोननवतिर्योनामवेदकसम्यग्दृष्टिर्बद्धतीर्थकरनामा परिणामपरिव-
र्त्तनेनमिथ्यात्वेगतोनारकाभिमुखोनरकगतिप्रायोग्यामष्टाविंशतिंब-
ध्नाति, तमधिकृत्यवेदित यानिशेषाणि पुनस्त्रीणिसत्तास्थानान्यविशे-
षेणतिर्यग्मनुष्याणाएकत्रिंशदुदयेएकोननवतिवर्जानित्रीणिसत्तास्था-
नानिएकोननवतिर्हितीर्थंकरनामसहिता नचनीर्थकरनामातिर्यक्षुसभ-
वति सर्वसख्ययाअष्टाविंशति(बधे)सप्तसत्तास्थानानि देवगतिवर्जा-

शेषाण्येव भवन्ति विकलत्रिकैकेन्द्रियतिर्यक्पञ्चेन्द्रियप्रायोग्याणि मनुष्यगतिप्रा-
योग्याणि च, नो मिथ्यादृष्टेः सामान्येन तान्यपि प्राक्तनानि षट्स्था-
नानि, तद्यथा द्विनवतिः एकोननवतिः अष्टाशीतिः षडशीतिः अ-
शीतिः अष्टसप्ततिः तत्र त्रिंशदुदये सर्वाण्यपि स्थानानि प्राप्यन्ते, त-
त्राप्येकोननवतिः तीर्थकरनामसत्कमिथ्यात्विनं नैरयिकमधिकृत्या-
वसेया द्विनवतिः अष्टाशीतिश्च देवनैरयिकमनुजविकलेन्द्रियतिर्यग्-
पञ्चेन्द्रियैकेन्द्रियानधिकृत्य, षडशीतिः अशीतिश्च विकलेन्द्रियतिर्यक्पञ्चे-
न्द्रियमनुष्यैकेन्द्रियानधिकृत्य वेदितव्या, अष्टसप्ततिरेकेन्द्रियतिर्यक्पञ्चे-
न्द्रियानधिकृत्य, चतुर्विंशत्युदये एकोननवतिवर्जानि शेषाणि पञ्च सत्ता-
स्थानानि, तान्येकेन्द्रियानधिकृत्य वेदितव्यानि, अन्यत्र चतुर्विंशति-
रुदयस्याभावात् । पञ्चविंशत्युदयेऽपि षडपि सत्तास्थानानि, तानि
यथैकत्रिंशदुदये भावितानि तथैव भावनीयानि, षड्विंशत्युदये एको-
ननवतिवर्जानि शेषाणि पञ्च सत्तास्थानानि प्राग्वद्भावनीयानि,
एकोननवतिस्तु न लभ्यते यतो मिथ्यादृष्टेः सन् एकोननवतिः
नरकेषूत्पद्यमानस्य नैरयिकस्य प्राप्यते न शेषस्य, न च नैरयिकस्य
षड्विंशत्युदयः संभवति, सप्तविंशत्युदये अष्टसप्ततिवर्जानि शेषाणि
पञ्च सत्तास्थानानि प्राग्वद्भावनीयानि, एकोननवतिस्तु न लभ्यते यतो
मिथ्यादृष्टिः सन् एकोननवतिर्नरकेषूत्पद्यमानस्यैव नैरयिकस्य प्राप्यते
न शेषस्य न चैरयिकस्य षड्विंशत्युदयः संभवति, अष्टाविंशत्युदये अ-
ष्टसप्ततिवर्जानि शेषाणि पञ्च सत्तास्थानानि तत्रैकोननवतिः प्रागुक्तरू-
पं नैरयिकमधिकृत्य, द्विनवतिरष्टाशीतिश्च देवनैरयिकमनुजविकलेन्द्रिय
तिर्यक्पञ्चेन्द्रियैकेन्द्रियाणामातपोद्योतान्यतरसहितानां भवति, नार-
कादीनां च तेषामष्टसप्ततिस्तेषामवश्यमनुष्यद्विकसत्तासंभवात् ए-
तान्येव पञ्च सत्तास्थानानि अष्टाविंशत्युदये नवैकोननवतिर्द्विनवतिर-
ष्टाशीतिश्च प्रागिव भावनीया, षडशीतिरष्टाशीतिश्च विकलेन्द्रियतिर्य-

रपर्येन्द्रियमनुष्यानधिकृत्यवेदित याएवमेकोनत्रिंशदुदयेप्येतानिएव-
पचसत्तास्थानानि भावनीयानि, त्रिंशदुदयेचत्वारिनद्यथानिनवति-
रष्टाशीति पडशीतिरशीतिरेतानिविकलेन्द्रियतिर्यगपचेन्द्रियमनु-
ष्यानधिकृत्यवेदित यानि, एकोननवति पदमुमाप्यते, यत सा
मिथ्यादृष्टे सनोयद्वतीर्थकरनाम्नोमिथ्यात्वगतस्यनरयिकस्यमाप्यते
नर्चनरयिकस्यत्रिंशदुदयोऽस्ति एवंत्रिंशदुदयेप्येतान्येवचत्वारिनानि-
घविकलेन्द्रियतिर्यगपचेन्द्रियानधिकृत्यद्रष्टव्यानि, सर्वसरयामिथ्या-
दृष्टेरेकोनत्रिंशत्त्रिंशतोर्बन्ध पचचत्वारिंशत्सत्तास्थानानि यानुदेवग-
तिप्रायोग्यएकोनत्रिंशत्सामिथ्यादृष्टेर्नबधमायाति कारणप्रागेवोक्त
मनुष्यदेवगतिप्रायोग्यतर्जाशेषात्रिंशत विकलेन्द्रियतिर्यगपचेन्द्रिय-
प्रायोग्याबध्नत सामान्येनप्रागुक्तानिनवोदयस्थानानि, एकोननवति
वर्जानिपचसत्तास्थानानि, एकोननवतिसत्कर्मणास्तिर्यगतिप्रायोग्य-
बधारभात्भावात्तानिपचसत्तास्थानानि, एकविंशतिचतुर्विंशतिपच-
विंशति पडविंशत्युदयेषुप्रागिवभावनीयानि, सप्तविंशत्यष्टाविंशति ए-
कोनत्रिंशद्रूपेषुपचस्वुदयस्थानेषुअष्टसप्ततिवर्जानिप्रत्येकशेषाणिचत्वा-
रि २ भावनीयानि अष्टसप्ततिप्रतिषेधेकारणप्रागुक्तमनुसरणीय सर्व-
सरव्ययामिथ्यादृष्टे त्रिंशतबध्नत चत्वारिंशत्सत्तास्थानानि मनुज-
गतिदेवगतिप्रायोग्यात्रिंशत्मिथ्यादृष्टे नबधमायाति मनुजगतिप्रा-
योग्याहितीर्थकरनामसहितादेवगतिप्रायोग्यात्वाहारकतीर्थकरनामस-
हितात्न साक्षयमिथ्यादृष्टे बधोदयसत्तास्थानसवेध, समतिसास्वा-
दनस्यबधोदयसत्तास्थानान्युच्यते, निगसतद्गुणानि नांणिबधस्थानानि
तद्यथाअष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत्तत्राष्टाविंशतिर्द्धेधा देवग-
तिप्रायोग्यानरकगतिप्रायोग्याचनत्र नरकगतिप्रायोग्या सास्वा-
दनस्यनबधमायाति, देवगतिप्रायोग्यायाश्चनवकास्तिर्यगपचेन्द्रियमनु-
ष्याश्चतस्याचाष्टाविंशतेर्बध्यमानायाअष्टौभगा तथासास्वादनाएके-

न्द्रियविकलेन्द्रियतिर्यग्पचेन्द्रियमनुष्या देवानैरयिकाश्चतिर्यग्पचेन्द्रियप्रायोग्यामनुष्यप्रायोग्यावाएकोनत्रिंशत्त्रन्तिनिशेषा अत्रभगा घतु षष्टिशतानि सास्वादनायादितिर्यग्पचेन्द्रियप्रायोग्यामथवा मनुष्यगतिप्रायोग्या एकोनत्रिंशत्त्वन्ति तथापि न हुडसस्थानसेवार्त्त सहननच बन्नति मिथ्यात्वोदयाभावात् ततश्चतिर्यग्पचेन्द्रियप्रायोग्यामेकोनत्रिंशत्त्वन्नति पचमि सस्थाने पचमि सहनने प्रशस्ताप्रशस्तविहायोगतिभ्यास्थिरास्थिरशुभाशुभसुभगदुर्भगसुस्वरदुःस्वरादेयानादेययशोअयशोभ्याचभगाद्वात्रिंशत्शतानिसर्वबधस्थानसख्ययाअष्टाधिकानिषण्णवतिशतानि ९६०८ अत्रभाष्य गाथा॥

अट्ठसयाचउसट्ठी, बत्तीससयायसासणेभेया ।

अट्ठावीसाइसु, सव्वाणट्ठहियछन्नुइ ॥ १ ॥

सुगमा, तथासास्वादनस्योदयस्थानानि सप्त तद्यथा, एकविंशति चतुर्विंशति पचविंशति षड्विंशति एकोनत्रिंशत् त्रिंशत् एकत्रिंशत् तत्रएकविंशत्युदये एकेन्द्रियविकलेन्द्रियतिर्यग्पचेन्द्रिय मनुष्यदेवानधिकृत्यवेदित या नरकेषुसास्वादनोनोत्पद्यते इतिकृत्वात्द्विपयोएकोभग सइहनसभवति किंतुशेषाएवतेचविकलेन्द्रियाणांद्वौद्वौइतिपञ्चतिर्यग्पचेन्द्रियाणामष्टौ मनुष्याणामष्टौ देवानामप्यष्टौ सर्वसख्ययाएकविंशत्युदयेद्वात्रिंशद्भगा चतुर्विंशत्युदयेएकेन्द्रियेषुउत्पन्नमानस्यअत्रापिबादरपर्याप्तकेनसहयश कीर्त्ययश कीर्तिभ्याद्वौद्वौभगौतावेवसभवत नशेषा, सूक्ष्मेषुअपर्याप्तेषुसास्वादनस्योत्पादाभावात् अतएवविकलेन्द्रियाणा तिर्यग्पचेन्द्रियाणा मनुष्याणा च प्रत्येकमपर्याप्तकेनसह य एकैकोभग सइहनसभवति किंतुशेषपरावर्तेचविकलेन्द्रियाणा द्वौद्वौइतिपञ्चतिर्यग्पचेन्द्रियाणामष्टौ मनुष्याणामप्यष्टौ देवानामप्यष्टौ सर्वसख्ययाएकविंशत्युदयेद्वात्रिंशद्भगा चतुर्विंशत्युदये एकेन्द्रियेषुमध्येउत्पद्यमानस्यअत्रापिबादरपर्याप्तके-

नसहयश कीर्त्ययश कीर्त्तिभ्यायांद्वौभगौनानेनसभवत नशेपा सूक्ष्मेषुसाधारणेषुतेजोवायुषुचमध्येसास्वादनस्योत्पादाभावात्, पञ्चविंशत्युदयो देवेषुमध्येउत्पन्नमात्रस्यप्राप्यतेनशेषम्पनत्रचाष्टौभगा सेचस्थिरास्थिरशुभाशुभयश कीर्त्तिअयश कीर्त्तिपदैरत्रसेया षड्विंशत्युदयोविकलेन्द्रियतिर्यग्पचेन्द्रियमनुष्येषुम येड पन्नमात्रस्यअनाप्यपर्याप्तकेनसहयएकोभग नसभवति, अपर्याप्तकमध्येसास्वादनस्योत्पादाभावात् शेपास्तुसमवति तेचविकलेन्द्रियाणाप्रत्येकद्वांद्वाविंशतिपदैर्तिर्यग्पचेन्द्रियाणाद्वेशतेअष्टाशीत्यधिकेमनुष्याणामपिद्विशते अष्टाशीत्यधिकेसर्वेसर ययापड्विंशत्युदयेपचशतानिद्व्यशीत्यधिकानि ५८२ सप्तविंशत्यष्टाविंश युदयौनसभवत नौदिउ पस्यनतरातमुहूर्तेसतिभवति सास्वादनभावश्चोत्पत्त्यनतरमुत्कर्षेन किंचिदूनपडावलिकामात्र तत्र एतौसास्वादनस्यनप्राप्यत एकोनत्रिंशदुदयेदेवनैरयिकाणास्वस्थानपर्याप्तानामप्रथमसम्यक्त्त्वात् प्रच्यवमानानाप्राप्यते तत्रदेवस्यैकोनत्रिंशदुदयेभगाअष्टौनैरयिकस्यैकइति सर्वसख्यया नव ९ त्रिंशदुदयातिर्यग्मनुष्याणापर्याप्तानाप्रथमसम्यक्त्त्वात् प्रच्यवमानानादेवानामुत्तरवैक्रियेवर्त्तमानानासास्वादनाना तत्रतिरश्चा मनुष्याणाचत्रिंशदुदयेप्रत्येकद्विपचाशदधिकान्येकादशशतानि ११५२ देवस्याष्टौसर्वसख्ययात्रयोविंशतिशतानिद्वादशाधिकानि २३१२ एकत्रिंशदुदयास्तिर्यग्पचेन्द्रियाणापर्याप्ता नाप्रथमसम्यक्त्त्वात् प्रच्यवमानानाअत्रभगाएकादशशतानिद्विपचाशदधिकानि देवस्याष्टौसर्वसख्ययात्रयोविंशतिशतानिद्वादशानि २३१२ एकत्रिंशदुदयेप्रत्येकद्विपचाशदधिकानिएकादशशतानि ॥ गाथा ॥

बत्तीसदुन्निअट्ठ तिप्रायोग्दसामायपचनवउदया
बारद्वियातेवीस, मानायाजेरससपाय ॥ १ ॥

सुगमा, सर्वभगसख्ययासासनवत्यधिकानिचत्वारिंशत्शतानि सास्वादनस्यद्वेसत्तास्थाने तद्यथाद्विनवति अष्टाशीतिश्चनवद्विनवति आहारकचतुष्टयमुद्वाल्योपशमश्रेणिन प्रतिपतन्सास्वादनभावमनुगच्छतिनस्यलभ्यते नशेषस्य, अष्टाशीति चतुर्गतिकानामपिसास्वादनाना, सम्प्रतिसवेधउच्यते तत्राष्टाविंशतिबध्नत सास्वादनस्यद्वेउदयस्थाने तद्यथात्रिंशत्एकत्रिंशत् अष्टाविंशतिर्हिसास्वादनस्यमबयोग्याभवति देवगतिविषयानचकरणापर्याप्त सास्वादन देवगतियोग्यबन्धातिनन शेषाउदयानसभवति, अत्रमनुष्यानधिकृत्यत्रिंशदुदयेद्वेअपिसत्तास्थानेतिर्यग्पचेंद्रियान्सास्वादनानधिकृत्याष्टाशीतिरेवयनोद्विनवतिरुपशमश्रेणिन प्रतिपतनोलभ्यते, नचतिरश्चामुपशमश्रेणिसभव, एकत्रिंशदुदयेप्यष्टाशीतिरेवयनोद्विनवतिरुपशमश्रेणित प्रतिपतनोलभ्यते नचतिरश्चामुपशमश्रेणिसभव एकत्रिंशदुदयेप्यष्टाशीतिरेवयतएकत्रिंशदुदयस्तिर्यग्पचेंद्रियाणानचतिरश्चाद्विनवति सभवति प्रागुक्तयुक्ते एकोनत्रिंशततिर्यग्पचेंद्रियाणामनुष्यप्रायोग्याबध्नत सास्वादनेसप्ताप्युदयस्थानानि, तत्रएकेंद्रियविकलेंद्रियतिर्यग्पचेंद्रियमनुष्यदेवनरयिकाणासास्वादनानास्वीयस्वीयोदयस्थानेषु वर्त्तमानानामेवसत्तास्थानमष्टाशीति नवरमनुष्यस्य त्रिंशदुदयेवर्त्तमानस्योपशमश्रेणित प्रतिपतन सास्वादनस्यद्विनवति पूर्वत्रिंशद्बधकस्यापिवक्तव्य सर्वाण्यप्युदयस्थानान्यधिकृत्यसामान्येनसर्वसख्ययासास्वादनस्याष्टौसत्तास्थानानि, सम्प्रतिसम्यग्मिथ्यादृष्टे बधोदयसत्तास्थानान्यभिधीयते, दुगतिगदुगति मिश्रेगुणस्यानकेद्वेबन्धस्थाने तद्यथा अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् तत्रतिर्यग्मनुष्याणासम्यग्मिथ्यादृष्टीनादेवगतिप्रायोग्यमेवबन्धमायाति तत्र शेषाअष्टाविंशति तत्रभगाअष्टौएकोनत्रिंशतिमनुष्यगतिप्रायोग्याबध्नतादेवैनैरयिकाणा अत्राप्यष्टौभगा तेचउभयत्रापि । स्थिरा-

नि सप्त तद्यथा ॥ एकविंशति पचविंशति षड्विंशति सप्तविं-
शति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् मनुष्याणाएकत्रिंशतभवति
एकैकस्मि नुदयस्थानेद्वेसत्तास्थानेतद्यथात्रिनवति एकोननवतिश्च
मनुष्यगतिप्रायोग्याचैकोनत्रिंशतभवति देवनैरयिकाणाउदयस्थानानि
पचतद्यथा एकविंशति पचविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत्
देवानापचना येतपष्टतुत्रिंशत ? साचउद्योतवेदकानामवगन्तया एकैक-
स्मिन्नुदयस्थानेद्वेद्वेसत्तास्थानेतद्यथाद्विनवतिरष्टाशीतिश्चमनुष्यगति-
प्रायोग्यात्रिंशतविरतमनुष्यगृहस्थदेवानैरयिकाश्चभवति तत्रदेवानामुद-
यस्थानानिपच तान्येवतेषुउदयस्थानेषुप्रत्येकद्वेसत्तास्थानेत्रिनवति-
रेकोननवतिश्चनैरयिकाणाउदयस्थानानिपचतेषुप्रत्येक सत्तास्थानमे-
कोननवतिरेवतीर्थंकराहारकसत्कर्मणोनरकेषूत्पादाभावात् तदेवसा-
मा येनएकत्रिंशत्यादिषुत्रिंशत्पर्यंतेषुउदयस्थानेषुप्रत्येकद्वेसत्तास्थाने-
त्रिनवतिरेकोननवतिश्चनैरयिकाणामुदयस्थानानिपच तेषुप्रत्येकस-
त्तास्थानमेकोननवतिरेवतीर्थंकराहारकसत्कर्मणोनरकेषूत्पादाभावात्
तदेवसामान्येनएकत्रिंश यादिषुत्रिंशत्पर्यंतेषुउदयस्थानेषुसत्तास्थाना-
निप्रत्येकचत्वारि तद्यथात्रिनवति द्विनवति एकोननवतिरष्टाशी-
तिश्चएकत्रिंशदुदयेद्वे द्वेद्विनवतिरष्टाशीतिश्चसर्वसर यत्रिंशत्इति स-
प्तनिदेशविरति तस्यतवादिस्थानान्युच्यते द्वुगढक्कचउक्कइति देश-
विरतस्यद्वेबधस्थाने तद्यथा अष्टाविंशतिरेकोनत्रिंशत् तत्राष्टावि-
शतिर्मनुष्यस्यातिर्यक्पचेंद्रियस्यवादेशविरतस्यदेवगतिप्रायोग्याअष्टौ-
भगा तेचतीर्थंकरसहिताएकोनत्रिंशत् साचमनुष्यस्यैव तिरश्चस्ती-
र्थकर्मसत्कर्मत्राभावात् अत्राप्यष्टौभगा षडुदयस्थानानि तद्यथाप-
चविंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत् तत्राद्या-
निचत्वारि वैक्रियतिर्यग्मनुष्याणाअत्रएकैकोभग तिरश्चामाद्ययोरे-
कैकोअतिमयोस्तुद्वौद्वौसर्वपदानाप्रशस्तत्वात्त्रिंशत्स्वभावस्थानाना-

तिर्यङ्मनुष्याणाअन्भगानाचतुश्चत्वारिंशत्शत १४४ तच्चपाङ्गि स-हनने सुस्वरदु स्वराम्याप्रशस्ताप्रशस्तविहायोगतिम्या चजायते दुर्भगानादेयायश कीर्त्तीनामुदयोगुणप्रत्ययादेवनभवतिइति तद्भिनाविकल्पानमाप्यते, वैक्रियतिर्यग्मनुष्याणाप्रत्ये क्रमेकैकोभग एकोनिशत्तिरथाअनापितश्चभगा, चत्वारिसत्तास्थानानि तद्यथा त्रिनवति, द्विनवति, एकोननवतिरष्टाशीतिश्च तनयोऽप्रमत्तोऽपूर्वकरणोनातीयकराहारकमडूच्चापरिणामह्रासेनदेशविरतोजात तस्य-नवति, सप्तविंशति, अष्टाविंशति एकोननिंशत्त्रिंशत्एतेषुचप्रत्ये-कद्वेद्वेसत्तास्थाने तद्यथा द्विनवतिरष्टाशीतिश्चएवतिर्श्चोऽपि, नवरन-स्यएकोनिशदुदयोपिवक्तव्य, तत्रापिचएतेपुवद्वेसत्तास्थानेएकोनत्रिं-शद्व योमनुष्यस्यैवदेशविरतरयोदयस्थानानिअनतरोक्तान्येवपच, तेषु-प्रत्येकद्वेद्वेसत्तास्थाने, तद्यथात्रिनवतिरेकोननवतिश्च तदेवदेशविर-तस्यपचविंशत्यादिषुनिंशत्पर्यंतेषु चत्वारिसत्तास्थानानि तथाप्रमत्ते-चऽरू नैद्वेतद्यथाअष्टाविंशति एकोननिंशत्एतेचदेशविरतस्यैवभा-वनीये,पचउदयस्थानानि तत्रथापचविंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति एकोनविंशत्त्रिंशदेतानिसर्वाण्यप्याहारकसयतस्यवैक्रियसयतस्यवावे-दितव्यानि, त्रिंशत्स्वभावस्थसयतस्यापितत्रवैक्रियसयतानामाहारक-सयतानाच पृथक्पचविंशति सप्तविंशत्युदययो प्रत्येकमेकोभग अष्टाविंशतावेकोननिंशतिचैकैक सर्वसख्ययाचतुर्दश १४ त्रिंशदुदय स्वभावस्थस्यापिप्राप्यते, तत्रचतुश्चत्वारिंशदधिकशत १४४ तच्चदेशविरतस्यैवभावनीय सर्वसख्यया अष्टपचाशदधिकशत, चत्वारि-सत्तास्थानानि, तद्यथात्रिनवतिरेकोननवति द्विनवतिरष्टाशीतिश्च, त-त्राहारकसयतस्यद्विनवतिरेव, आहारकमत्कर्माह्याहारकशरीरमुत्पाद-यतीतितत्स्यद्विनवतिरेववैक्रियसयतस्यपुनर्द्वेअपितीर्थकरनामस-त्कर्मोचाष्टाविंशतिनिभनातिइतित्रिनवतिरेकोननवतिर्नप्राप्यते, एको-

नर्निशद्वधकस्य,पचस्वपिउदयस्थानेषुप्रत्येकद्वेसत्तास्थानेतद्यथात्रिन-
वतिरेकोननवतिश्च तनाहारकसयतस्यनिनवतिरेवतस्यैकोननिंशद्वध-
कस्यनियमस्तीर्थंकराहारकसद्भावात्, वैक्रियसयतस्यपुनर्द्वेअपितदेव
प्रमत्तसयतस्यसर्वेष्वपिउदयस्थानेषुप्रत्येकचत्वारि २ सत्तास्थानानि-
प्राप्यन्ते, इतिसर्वसख्ययाविंशति इदानीमप्रमत्तस्यबधादीन्युच्यते
चउदुगचवत्ते अप्रमत्तसयतस्यचत्वारि बधस्थानानितद्यथाअष्टाविं-
शति एकोननिंशत् त्रिंशत्एकत्रिंशत्तत्राद्येद्वेप्रमत्तस्यैवभावनीये, सै-
षाष्टाविंशतिराहारकद्विकसहितात्रिंशत्, आहारकद्विकतीर्थंकरसहि-
तात्वेकत्रिंशत् एतेषुचतुर्ष्वपिस्थानेषुभग एकैकएववेदितव्य, अ-
स्थिराशुभायश कीर्त्तीनाअप्रमत्तेबधाभावात् द्वेउदयस्थाने तद्यथा-
एकोननिंशत्त्रिंशत्, तत्रैकोननिंशत्योनामपूर्वंप्रमत्तसयतस्तत्रआ-
हारकवैक्रियघनिवर्त्यपश्चादप्रमत्तभावगच्छतितस्यप्राप्यते, अत्रद्वौभ-
गौएको वैक्रियस्यापरआहारकस्यएव त्रिंशद्दुदयेपिद्वौभगौस्वभावस्य-
स्याप्यप्रमत्तसयतस्यत्रिंशद्दुदयोभवति तत्र भगाश्चतुश्चत्वारिंशदधिक-
शत १४४ सत्तास्थानानिचत्वारितद्यथात्रिनवति द्विनवति एकोनन-
वति अष्टाशीतिश्चसप्रतिसर्वेषुउच्यते, अष्टाविंशतिबधकस्यद्वयोरप्यु-
दयस्थानयोरेकैकसत्तास्थान अष्टाशीति , एकोननिंशद्वधकस्यापिद्व-
योरप्युदयस्थानयोरेकैकसत्तास्थानएकोननवति , त्रिंशद्वधकस्यापिद्व-
योरप्युदयस्थानयोरेकैकसत्तास्थान द्विनवति , एकत्रिंशत्बधकस्या-
पिद्वयोरप्युदयस्थानयोरेकैकसत्तास्थान त्रिनवति , यस्यहितीर्थंकरमा-
हारकवासत्तानियमात्तद्बधाति तेनएकैकस्मिन्बधेएकैकमेवसत्तास्था-
नसर्वसख्ययाअष्टौ, सप्रत्यपूर्वकरणस्यबधादीन्युच्यते, पणगणाचउइति
अपूर्वकरणस्यपचबधस्थानानि, तद्यथाअष्टाविंशति एकोननिंशत्
त्रिंशत्एकत्रिंशत्एकश्चतत्राद्यानिचत्वारिअप्रमत्तसयतस्यैवद्रष्टव्यानि
एकोयुयश कीर्त्ति साचदेवगतिप्रायोग्यबधव्यवच्छेदेसतिवेदितव्या

एकत्रुदयस्थानत्रिंशत् अत्रवज्रऋषभनाराचसंहननपरसस्थानसुस्वरदुःस्वरप्रशस्तविहायोगति भंगाश्चतुर्विंशति अपेत्वाचार्याअबुवे आद्यसंहननत्रयान्यतमसंहननयुक्ताअप्युशमश्रेणिंप्रतिपद्यते, तन्मतेनभंगाद्विसप्तति, एवमनिवृत्तिनादरसूक्ष्मसंपरायोपशांतमोहेष्वपिद्रष्टव्य, चत्वारिसत्तास्थानानि, यथाद्विनवति त्रिनवति एकोननवतिरष्टाशीतिश्चसप्ततिसंवेधउच्यते, अष्टाविंशत्येकोनत्रिंशत्रिंशदेकत्रिंशद्बंधकानात्रिंशदुदयेसत्तास्थानानियथाक्रमअष्टाशीतिरेकोननवति द्विनवतित्रिनवतिश्चएकविधबंधकस्यत्रिंशदुदयेचत्वार्यपिसत्तास्थानानिकथमितिचेदुच्यतेइहअष्टाविंशेकोनत्रिंशत्त्रिंशत् एकत्रिंशद्बंधका प्रत्येकदेवगतिप्रायोग्यबंध व्यवच्छेदेसत्येकविधबंधका भवति, अष्टाविंशत्यादिबंधकानाचस्थानानियथाक्रममष्टाशीत्यादीनिसत्तास्थानानि, ततएकविधबंधेचत्वार्यपिसत्तास्थानानिप्राप्यते संप्रत्यनिवृत्तिनादरस्यबंधस्थानादीन्युच्यते ॥ ९७ ॥

टबार्थ—मिथ्यात्व गुणठाणे नामकर्मना छ बंधथानक, नव उदयस्थानक, ॥ सत्ताना थानक पामीये सास्वादन गुणठाणे तीन बंधथानक, सात उदयथानक ए बे सत्ताना थानक पामीये मिश्र गुणठाणे बे बंधथानक, तीन उदयथानक बे सत्ताना थानक छे समकित गुणठाणे तीन बंधथानक, आठ उदयथानक, च्यार सत्ताना थानक छे देशविरति गुणठाणे बे बंधथानक, च्यार उदयथानक, च्यार सत्ताना थानक छे प्रमत्ते बे बंधथानक, पाच उदयथानक, च्यार सत्ताना थानक छे अप्रमत्ते च्यार बंधथानक, बे उदयथानक, च्यार सत्ताना थानक अपूर्वकरणे पाच बंधथानक, एक उदयथानक च्यार सत्तास्थानक नामकर्मनी नवमे गुणठाणे ॥ ९७ ॥

एगेगमट्ठएगेगमठ, छउमत्थकेवलिजिणाण ।
एगंचउएगचउ, अठ्ठचउदुछक्कमुदयंसा ॥ ९८ ॥

टीका—एगेगमट्ठत्ति । अनिवृत्तिनादरस्यएकनवस्यानयश कीर्ति एकमुदयस्यानत्रिंशत्, अष्टौसत्तास्थानानि तद्यथा त्रिनवति द्विनवतिरकोननवतिरष्टाशीतिरशीतिरेकोनाशीति पदसप्तति पचसप्ततिश्चनवाद्यानिच वार्युपशमश्रेण्यामक्षपकश्रेण्यांवाया-वन्नामत्रयोदशकं नक्षीयते त्रयोदशसुयथाक्रमंत्रिनवत्यादे क्षीणेपूपरितनानिचत्त्वारिसत्तास्थानानित्रयोदयस्थानभेदेनभेदाभावात्ऽनन्तसवेधोभवति इतिनामिवीयते, सूक्ष्मसपरायस्यएकवधस्थान यश कीर्ति एकमुदयस्यानत्रिंशत्अष्टौसत्तास्थानानिनानिवानिवृत्तिवादरस्यैवनवेदित यानि तनाद्यानिचत्वार्युपशमश्रेण्यामेवउपरितनानितुक्षपकश्रेण्या छउमत्थकेवलिजिणाण इत्यादि छद्मस्थजिनाउपशातमोहा क्षीणमोहाश्चकेवलिजिना सयोगिकेवलिनोऽयोगिकेवलिनश्चनेपायथाक्रममुदयसत्तास्थानानि ए गचउ इत्यादि तत्रोपशातमोहस्यएकमुदयस्यान त्रिंशत्, चत्वारिसत्तास्थानानि तद्यथानिनवति द्विनवति एकोननवति अष्टाशीतिश्चक्षीणकपायस्यएकमुदयस्थान त्रिंशत्अनभगाश्चतुर्विंशतिरेववज्रर्षभनाराचसहननयुक्तस्यैवक्षपकश्रेण्यासभवात् तत्रापितीर्थंकरसत्कर्मण क्षीणमोहस्यसर्वस्थानादिप्रशस्तमित्येकएवभग चत्वारिसत्तास्थानानि तद्यथाअशीति एकोनाशीति पञ्चसप्तति पचसप्ततिश्चएकोनाशीति पचसप्तति, अतीर्थंकरसत्कर्मणोवेदितव्ये, अशीति, पदसप्तति, तीर्थंकरसत्कर्मण सयोगिकेवलिनोऽष्टावुदयस्थानानि तद्यथाविंशति, एकविंशति, पड्विंशति, सप्तविंशति, अष्टाविंशति,

एकोनत्रिंशत्, त्रिंशत्, एकत्रिंशत्, एतानिसामान्यतोनाम्नउदय-स्थानचिंतायासप्रपचनिरुत्तानिनभूयोविविच्यते चत्वारिसत्तास्थानानि तद्यथाअशीति, षट्सप्तति, एकोनाशीति, पचसप्तति, सप्रति सनेयउच्यते, सचपूर्वगुणस्थानकापेक्षयास्वतं ऊह्य अयोगिकेवलि-नोद्वेउदयस्थाने तद्यथा नवअष्टौचनवाष्टोदयोअतीर्थकर अयो-गिकेवलिनोनवोदय तीर्थंकर अयोगिकेवलिन, षट्सत्तास्थानानि तद्यथाअशीति एकोनाशीति षट्सप्तति पचसप्तति नवअष्टौ तत्राष्टोदयेनीणिसत्तास्थानानि तद्यथा एकोनाशीति पचसप्तति अष्टौचतत्राद्येद्वेयावद्विचरमसमय तावत्प्राप्यते, चरमसमयेअष्टौ-नवोदयेत्रीणिसत्तास्थानानि, तद्यथाअशीति षट्सप्तति नवचतत्रा-द्येद्वेयावद्विचरमसमय नव चरमसमये इत्यादि गुणस्थानकेषुनाम-भगका उक्ताः कर्मग्रथटीकानुक्रमेणभगोत्पत्तिस्तु स्वोपज्ञसवेध-प्रकरणगाथातोज्ञेया तदेवगुणस्थानकेषुबधोदयसत्तास्थाना यु-क्तानि तत्सुगमावबोधार्थंयत्रकन्यासतोज्ञेयम् ॥ तच्चेदम् ॥९८॥

टबार्थ —एक बधथानक, एक उदयथानक, आठ सत्ता-थानक दशमे गुणठाणे एक बधथानक, एक उदयथानक आठ सत्तायानक छे छद्मस्थजिन इग्यारमो, बारमो केवलिजिन, तेरमो गुणठाणो, चउदमो गुणठाणो इहा बध नथी इग्यारमे गुणठाणे एक उदयथानक, च्यार सत्तायानक बारमे गुणठाणे एक उदयथानक, च्यार सत्तायानक तेरमे गुणठाणे आठ उदय-थानक, च्यार सत्तायानक चउदमे गुणठाणे बे उदयथानक छे छ सत्तायानक नामकर्मना जाणवा ॥ ९८ ॥

गुणठाणा	बन्धस्थान	उदयस्थान	सत्तास्थान
मिथ्यात्व १	२३।२५।२६ २८।२९।३०	२१।२४।२५।२६ २७।२८।२९।३०	९२।८९।८८।८६ ८०।६८
सास्वादन २	२८।२९।३०	२१।२४।२५।२६ २७।२९।३०।३१	८८ ९२
मिश्र ३	२८।२९	२९।३०।३१	९२।८८
अविरत ४	२८।२९।३०	२१।२५।२६।२७ २८।२९।३०।३१	९३।९२।८९।८८
देशविरत ५	२८।२९	२५।२७।२८।२९ ३०।३१	९३।९२।८९।८८
प्रमत्त ६	२८।२९	२५।२७।२८।२९ ३१	९३।९२।८९।८८
अप्रमत्त ७	२८।२९।३० ३१	२९।३०	९३।९२।८९।८८
अपूर्वकरण ८	२८।२९।३० ३१।१	३०	९३।९२।८९।८८
अनिवृत्ति ९	१	३०	९३।९२।८९।८८ ८०।७९।७६ ७५
सूक्ष्मस १०	१	३०	९३।९२।८९।८८ ८०।७९।७६।७५
उपशात ११	०	३०	९३।९२।८९।८८
क्षीणमोह १२	०	३०	८०।७९।७६।७५
सयोगि १३	०	२०।२१।२६।२७ २८।२९।३०।३१	८०।७९।७६।७५
अयोगिके- वलि १४	०	८ ९	८०।७९।७६।७५ ९।८

आसवतिसुइग, चत्ताइरिआवहिणचत्तसम्मत्ते ।
मिच्छविणुदेसेगुण चत्त, अविरइविणुसुजइपणवीस९९

टीका—अथाश्रवादितत्त्वमेदान्गुणस्थानेषुविभजन्नाह ॥ तत्राश्रवमेदाद्विचत्वारिंशत् तत्रगाथा। इदिअकसायअव्वय जोगा-पचचउपचतिन्निकमा किरियाओपणवीस इमाउन्नाउअणुक्कमसो-तत्रेंद्रियाणिपंच स्पर्शनरसनघ्राणचक्षु श्रवणानिनानिचेंद्रियाण्युप-योगरूपाणिमतिज्ञानक्षयोपशमरूपाणि तानिषपुद्गलस्कन्धस्पस्-र्शादिस्थूलपर्यायग्राहकाणितानिचइष्टानिष्टविषयेषुमार्गेषुरागद्वेषप-रिणतानि मनोज्ञेष्वासक्तानि अमनोज्ञेषुजुगुप्सादिपरिणतानि अभिनवकर्मग्राहकाणिभवतितेनकर्मग्रहणत्वात्स्पर्शनादीनि इन्द्रिया-ण्यपिआश्रवाभवन्ति, तानिचरागद्वेषविमुक्तानियथार्थउपयोगेनव-र्णादिगृहतेभावरूपाणीद्रियाणितेमतिज्ञानमेदा आश्रवाइनि-कषाया [illegible]योदयस्तेऽभिनवकर्महेतुत्वादाश्रवा [illegible]तानिप-चप्राणातिपातमृषा [illegible]दत्तादानमैथुनपरिग्रहलक्षणा अभिनवक-र्मग्रहणहेतुत्वादाश्रवा तेषाश्रवाद्विमेदाद्द्रव्याश्रवभावाश्रवमेदात् तत्रद्रव्यन प्राणातिपातलक्षण जीवानाद्रव्यन प्राणाइंद्रि-योच्छ्वासबलायुरूपा तेषाअतिपात द्रव्यप्राणातिपात भावन प्राणा आत्मन ज्ञानदर्शनचारित्ररूपा तेषाअतिपातोघात अ-भिनवकर्मग्रहणेनज्ञानादिगुणानाआवरणलक्षण भावप्राणातिपात सआश्रवइतिआत्मन विशेषस्वभावातर्गनकर्तृत्त्वपरिणामरूपस्वभा-वाज्ञानादयस्तेषास्तृत्त्वस्वभावस्यनदकरणेनपुद्गलग्रहणक्रियाकर्तृत्त्वेन विपर्यस्तपरिणत्यापरभावकर्तृतारूप परिणाम भावप्राणातिपातपरि-णाम मृषाअलीकतस्यवाद तद्द्रव्यन सांसारिकाणाभावानावितथा भाषणरूप भावन मृषाजीवादीनापदार्थानानित्यानित्यैकानेका-

स्तिनास्तिनाभेदाभेदवक्तव्यावक्तव्यपरिणतानां गुणपर्यायण्यपरिणि-
तानाअयथार्थपरिज्ञान जिनोक्ततत्त्वविरुद्धभाषण भावमृषा-
वाद, आत्मन स्वरूपग्रहणताशक्तिमत स्वरूपाप्राप्तौपरभाव-
ग्रहणतापरिणति अभिमधिवीर्यादिनाभावादत्तादान, तस्यचप्रवृत्ति-
बाहुल्येनपरणलोभोदयात्स्वायत्तीकृतान्गंधन्यान्यादीनाग्रहणद्रव्या-
दत्तादान, स्वरूपानतज्ञानानन्दादिस्तद्धर्मभोक्तु जीवस्यस्वरूपभोग-
प्राप्तौपरभावानारागादीनावर्णादीनासयोगीकृतानाभोग आस्वादन-
भावमैथुन तस्यैवअत्यतपरिणतौइन्द्रियायतचेतनायायावैषयिकाप-
रिणतिस्तयाइन्द्रियविषयग्रहणद्रव्यमैथुन, स्वभावानाचिदानदादीना
गुणानास्वामीपति ईश्वरआत्मातेषाचावरणेनवर्णादिगुणपरिणता-
नापुद्गलस्कन्धानाचिदानदादीनागुणानास्वामित्वेनाधिपत्यरूपापरि-
णति भावपरिग्रह, तत्प्राबल्येन धनधान्यादीनास्वामित्वरक्षणता-
परिणति द्रव्यपरिग्रह, इत्यादि स्वरूपधर्मसग्रहणीतोज्ञेय योगा.
परायत्तचलवीर्यपरिणतिरूपा कर्मग्रहणहेतव भावयोगा परिणामाल-
बनादिरूपा द्रव्ययोगास्तदवष्टंभकपुद्गलपरिणामामनोवाक्कायरूपाएव
सप्तदशक्रिया पचविंशतयस्तत्रचतुर्विंशति सांपरायिकीक्रिया
सांपरायिकीनामसपरायेणकषायेणसहपरिणतानासापरायिकीक्रिया ए-
काइर्यापथिकीनतसपरायेणकषायेणसहपरिणतानाजीवानायथायो-
गानाप्रवृत्तिः सासांपरायिकाक्रिया चतुर्विंशतिविधाकायेननिवृत्ता-
कायिकाकायव्यापाररूपाक्रियाकायिकीक्रिया १ अधिकरणभावनो-
गुणघातनद्रव्यनोमाणधानन कारणअधिकरण तत्प्रवृत्तिरूपाक्रिया-
अधिकरणिकीक्रिया २ प्रकृष्टोद्वेष परजीवेषु स्वदानरूपामनोयोग-
परिणति प्राद्वेषिकीक्रिया ३ परेपातापनरूपापरिणति पारिताप-
निकी ४ प्राणानाद्रव्यभावरूपाणाअतिपात प्राणातिपात तद्रूपा-
क्रियाप्राणातिपातिकी ५ परमाणत्वेनजीवानाइनस्ततः प्रचालन-

नाअनाहतानाजतुवानादिनिवृत्ताक्रियाप्रातीत्यकीक्रिया, अथवापर-कृतारभादिगृहाणाप्रशसनतत्प्रातीत्यकीक्रिया, सामनोपनिपातिकी-क्रिया समतात्अनुप्राप्तो सामतोपनीपात स्त्रीपुरपनपुसकपशुस-पातात् उज्झनीयवस्तुत्याग साचगृहस्थानाभवति, तत्त्वार्थवृत्तोतु-प्रमत्तसयताना भक्तपानादिअनाहत्तेअवश्यत्याज्येसमनाहतुपानो-भवति, सपातिमसत्वानामिति नेरात्यिरिदेशीभापा पग्हस्त-क्रनजतुवातादिनाक्रिया नसात्थिर्कीक्रिया अथवानैसर्गिकक्रियाचि-रकालप्रवृत्तपरदर्शिनपापार्थभावानायदनुज्ञानसानिसर्गक्रियाइति त-त्वार्थवृत्तो आणवणीत्ति क्षेवानरानुस्वेप्सितवरनुआनयनरपाक्रिया विदारणकी विदारणजीवाजीवानाद्वेधीकरण तत्प्रायोग्यकीक्रिया अथवाविदारणपराचरित प्रकाशनीयसावद्यप्रकाशीकरण विदारण-तत्प्रत्ययाक्रिया अथवा वितारणक्रियाइत्यपितत्त्वार्थभाप्यपाठात्-भापाद्वयाभिज्ञ पुरुपोयथैकवितारयतिअर्हत्प्रणीताज्ञोल्घनेनस्व-मनीपिकयाजीवादिपदार्थप्ररूपणस्वयनयनक्रिया अन्यैर्वानयनरच्छ-दतोनयनक्रियास्याद्वादानपेक्षितकायकारणेपयोगमतरेणस्वच्छदोप-देशरूपाइतिस्थानागवृत्तो अनाभोग अज्ञान तत्प्रत्ययाक्रिया अथवा अनाभोग अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितेदेशेशरीरोपकरणनिक्षेप अनवकाक्षिकीक्रिया, आज्ञाप्रयोगिकीक्रिया आज्ञाबलात्कारेणआ-देश तत्प्रयुजनारूपानृपामात्यादीनाभवति, समुदाणत्ति समुदाय रूपाचौरादिमारणेझटितितदास्वकायार्थेवजामद्दयादिसरूरपोत्था-सामुदायिकीक्रिया, पेज्जत्तिप्रेमराग अभिष्वगरूप प्रीतिपरिणाम स्तत्प्रत्ययाप्रेमक्रिया, दोसात्ति द्वेष द्विष्टताअनभिष्वगरूपोऽप्रीति-परिणाम तत्प्रत्ययिकीक्रियाइतिष्वभेता क्रिया सापरायेणकषा-येणसहवर्त्तमानस्यजीवस्य यापाररूपा क्रिया ताअपिप्रशस्ताप्र-शस्तभेदात् तत्रमिथ्यात्वाप्रत्याख्यानानाभोगरूपा क्रिया अप्रश-

स्नाअवशेषास्तुप्रशस्ना पुण्यप्रकारिण्योऽप्रशस्ता पापप्रकारिण्य
उभयत्रापिप्रकारण तान् जास्रवरूपाण्येतिनाअपितीव्रमन्दज्ञाना-
ज्ञानभाववीर्याधिकरणकारणविशेषेस्युस्तद्विशेष उक्त, साम्परा-
यिकीभेदाश्चतुर्विंशति, ईर्यापथिकीच द्रणकपनचत्वीर्यत्वेनाविप-
यक्षायरहितएकक योग यापारस्न प्रत्ययिकींक्रिया प्रदेशप्रकृति-
बन्धकारणरूपाईर्यापथिकींक्रिया साअकषायमुनीनामेव, उपशान्तमो-
हक्षीणमोहसयोगिकेवलिचरमसमययावत् भवति, एवमुक्ताआस्र-
वभेदा तान्चगुणस्थानेषुविभजनाह ॥ आसवात्तिसुद्दत्यादि ९९ ॥
आस्रवाअमिनव कर्मग्रहणहेतव तिसु इतित्रिषुमिथ्यात्वसास्वादन-
मिश्रलक्षणेषुगुणेषु इगचत्ता एकचत्वारिंशद्भेदा प्राप्यते तत्रमि-
श्रगुणस्थानेमिथ्यात्वभावेपिसम्यग्दर्शनाभावान्मिथ्यात्विकींक्रियासद्भाव-
एवउक्तचभगवत्या नेरयियाणभंतेसव्वेसमकिरिया गो० नोतिणट्ठे-
समट्ठेसेकेणट्ठेणगो० नेरईआतिविहापन्नत्तासम्मदिट्ठीमिच्छादिट्ठी०
सम्मामिच्छादिट्ठी तत्थणं जेतेसम्मदिट्ठीतेसिणचत्तारिकिरियाओपन्न-
त्ताओ तजारम्भियापरिग्गहियामायावत्तिआपच्चक्खाणीया तत्थणं जे
ते मिच्छादिट्ठीतेसिणपंचकिरियाओपन्नत्ताओ तंआरम्भिया परि-
ग्गहिया जावमिच्छादसणवत्तीआ एवंसम्मामिच्छादिट्ठीणपिऔवे-
मानिकपर्यन्तसूत्रालापकइतितेनमिश्रगुणस्थानकेपिमिथ्यात्विकींक्रिया
सद्भाव एव एकचत्वारिंशद्भेदा इरियावहिहीण ईर्यापथिकींक्रिया
हीनाचि रहिताल्भ्यते चत्तइतिचत्वारिंशत्आस्रवभेदा सम्मत्तेइति
सम्यग्दर्शनलक्षणेगुणस्थानके पूर्वोक्ताईर्यापथिकींक्रिया मिथ्या-
त्विकींक्रियाविनाभवन्ति, देसि देशविरतौ गुणचत्त एकोनचत्वा-
रिंशद्भेदा अप्रत्याख्यानिकीक्रियारहिताआस्रवाणामिति अत्रनसा
विरतिरेवनास्ति शेषाएकादशविरतय सर्वेषनाहिंकथसर्वेअविरते-
रभाव अत्रस्थावरादिअविरतिसद्भावेपिसापेक्षत्वेनतनमलोहपदवृत्ति-

सनिभइन्द्रियविषयरोऽत्त्वेननाप्रत्यारयानक्रीक्रियाइति अथवा परि-
सिताश्रवत्त्वेननाप्रत्याख्यानक्रीयति सुजइति सुइत्ति शोभन यति
सुयति प्रमत्तमुनि गुणस्थाने पचविंशनिरास्रवभेदाभवनि ॥९९॥

टवार्थ —आश्रवतत्वना ४२ भेद छे इन्द्रिय ५ कषाय ४ अव्रत ५ योग ३ किरिया २५ एव ४२ छे इनमध्ये मिथ्यात्व सास्वादन मिश्र ए तीन गुणठाणे इक्तालीस आश्रव छे, इरियावही क्रिया नथी, ते अकषाय वेहवे तेणे सकलापी थानके ए नथी समकित गुणठाणे च्यालीस आश्रव छे एक इंरियावही किरिया नीकली हती वली मिथ्यात्वकी किरिया नीकली एतले च्यालीस छे देशविरति गुणठाणे च्यालीस आ-श्रव छे अपचरकाणकी क्रिया नथी सुयति–छट्ठे गुणठाणे पचवीस आश्रव छे ॥ ९९ ॥

पाणाइवायपरिग्गह, मिच्छअपचरकआणपाओगी।
पाडुचोअसामतो, वणीअनेसत्थीसाहत्थी ॥१००॥

टीका—प्राणातिपातिकीक्रिया १ परिग्रहिकीक्रिया २ मि-थ्यात्विकीक्रिया ३ अप्रत्यारयानिकीक्रिया आज्ञाप्रयोगिकीक्रिया प्राडुचीक्रिया प्रातित्यक्रिया सामतोपनिपातिकीक्रिया नेसत्थीक्रिया साहत्थीक्रिया ॥१००॥

टवार्थ —प्राणातिपातकी क्रिया १ परिग्रहकी क्रिया २ मिथ्यात्वकी क्रिया ३ अपच्चरकाणकी क्रिया ४ अन्नापायोगकी क्रिया ५ पाडुचिय क्रिया ६ सामतोवणी क्रिया ७ नेसत्थी क्रिया ८ साहत्थीकी क्रिया ॥१००॥

परायेनवआस्रवा प्राप्यते, इत्यनेनलोभकषाययोगत्रिककायिकीदृष्टि-कीस्पृष्टिकीअनाभोगिकीरागप्रत्ययिकीइतिनवास्रवभेदादशमेप्राप्यन्ते दोसविहीणत्ति द्वेषाभावकथनेनअधिकरणप्राद्वेषिकीपारितापनिकीप्रमुखा सर्वाअपिक्रियानिरस्ताभवति, शेषेउपशान्तमोहक्षीणमोहसयोगिकेवलिलक्षणेगुणस्थानत्रिकेईर्यापथिकीक्रिया १ योगत्रिकचएते-चत्वारआस्रवभेदा प्राप्यते, अयोगीनिराश्रवइतिश्रीप्रज्ञापनायालोभस्यरागांशत्वात् रागिकीक्रियादशमेप्राप्यते, इतिउक्ताआस्रवभेदा ॥ १०२ ॥

टबार्थ—ते मध्येथी आरभकी क्रिया हीण करीये तेवारे सातमे गुणठाणे ओगणीस आश्रव छे, माया प्रत्ययिकी क्रिया विना आठमे नवमे गुणठाणे अढार आश्रव छे, दशमे गुणठाणे द्वेष प्रत्ययिकी क्रिया नथी, लोभ ते मुख्यवृत्ते रागमा गण्यो छे, पन्नवणानी टीका मध्ये शेष इग्यारमे बारमे तेरमे गुणठाणे एक इरियावहीकी क्रिया रूप एक आश्रव योग छे, चऊदमे गुणठाणे आश्रवनवनो भेद नथी ॥१०२॥

अजयदुगिवारभावण, दुपमत्तेपचवन्नअदुचरणा ।
चउपन्नापुव्वदुगे, तेवन्नाखीणमोहजा ॥१०३॥

टीका—अथसवरभेदान्गुणस्थानेषुकथयन्नाह तत्रसवरभेदा सप्तपचाशत्,तत्रअपूर्वोक्त आश्रव पोरुषेयः सचकदाचित् केनचित् अत्यन्तमुच्छिद्यतेऽपिपुंसासमाससादितनदुच्छेदसाधनात्यतिकक्षयमापद्यते तत्रपूर्वोपार्जितकर्मजालविच्छेदायतपसोनिर्जराचेतिवक्ष्यति, अभिनवकर्मोपचयनिवारणायसवरमेवतावद्वक्ष्याम आस्रवनिरोध सवर, आस्रवतेसमादीयतेयै कर्माएक(मिति)आस्रवा कर्मणाप्रवेशवीथय-इन्द्रियकषायादय तेषानिरोध सवर आत्मन कर्मोपादानहेतुभूत-

परिणामाभाव संवर सचसर्वदेशानद्विधा बादरसूक्ष्मयोगरोधकाले-सर्वसंवर शेषकालेचरणप्रतिपत्तेरारभ्यदेशसंवर ससंवर केनोपायेन कर्त्तव्य इत्युपायदर्शनार्थनरयार्योक्तमूत्र सगुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षापरीपहजयचारित्र त्रिपचदशद्वादशद्वाविंशतिभेदैर्यथाक्रमसप्तपचाशद्भवति, तत्रसम्यगप्रशस्तमयुक्षोर्योगनिग्रहोगुप्ति, आत्मसरक्षणयोगा मनोवाक्कायलक्षणा स्तेषानिग्रहो निगृहीति प्रवचनविधिनामार्ग यवस्थापनउ मार्गगमननिवारणसम्यग्आगमोक्तानुसारेणरक्तद्विष्टपरिणनिरहचरिणो मनोवाक्काय यापारनि यापारतागुप्ति त्रिप्रकार मन सव परपस्तरयगोपन मनोगुप्ति, वाक्सत्यादिभेदातस्यगोपनवाग्गुप्ति, काय चलतारूपयोगरयऔदारिकादे गोपनकाययुप्ति, योगानामप्रवृत्ति अथरससरत चेष्टावतोपिसवरसिध्यर्थमिमा पचईयाभाषणादाननिक्षेपोत्सगा समितय तत्रईरणईर्यागतिपरिणाम आवश्यकार्यआगमोदिते विहारजिनसद्मआहारोगोचरीविहारेवपडिरयग्रामानुगमनचइत्यादिकार्ये आगमोक्तविधिनारागद्वेषाकुलतादिरहितेनेति सगतासाध्यत्वेनगमनईर्यासमिति, आहच उपयोगोगोतालंबनमार्गविशुद्धिभिपतेश्वरत सूत्रोदितेनविधिनाभवतीर्यासमितिरनवद्या १ आ मनेपरस्मैहितमायत्या-मुपकारकमुखवसनावाहितस्यनीतिवहप्रयोजनमावसायक मितमसंदिग्धसूत्रोक्तमर्थवर्णप्रतिपत्तौनानसदेहकारिनिरवद्यार्थमनुपघातकपृथ्वीजीवकायानाएवविधनियमितवसर्वदेवभाषण भाषासमिति, आहचरयस्त्यानृतादिदोषसत्यमसत्त्वानृतचनिरवद्य सूत्रानुविधिवदतो भाषासमितिर्भवतिसाधो ॥ १ ॥ अथैषणामाह आहारचतुर्भेदउपकरणानिरजोहरणमुखवसनपटीचोलपट्टादिचतुर्दशप्रकाराणिस्थविरकल्पजिनकल्पयोग्योपधि

परायेनवआस्रवा प्राप्यते, इत्यनेनतत्रेभवगापयोगत्रिकरूपायिर्दृष्टि-कीस्पृष्टिकीअनाभोगिकीरागप्रत्ययिक इतिनवास्रवभेदादशमेप्राप्यते दोसविहीणत्ति द्वेषाभावकथनेन अधिकरणप्राद्वेपिकीपारितापनिकीप्रमुखा सर्वाअपिक्रियानिरस्ताभवति, शेषेउपशांतमोहक्षीणमोहसयोगिकेवलिलक्षणेगुणस्थानत्रिकेईर्यापथिकीक्रिया १ योगत्रिकएते-चत्वारआस्रवभेदा प्राप्यन्ते, अयोगीनिराश्रवइतिश्रीप्रज्ञापनायालोभस्यरागांशत्वात् रागिकीक्रियादशमेप्राप्यते, इतिउक्ताआस्रवभेदा ॥ १०२ ॥

टबार्थ —ते मध्येथी आरंभकी क्रिया हीण करीये तेवार सातमे गुणठाणे ओगणीश आश्रव छे, माया प्रत्ययिकी क्रिया विना आठमे नवमे गुणठाणे अढार आश्रव छे, दशमे गुणठाणे द्वेष प्रत्ययिकी क्रिया नथी, लोभ ते मुरव्यवृत्ते रागमा गण्यो छे, पन्नवणानी टीका मध्ये शेष इग्यारमे बारमे तेरमे गुणठाणे एक इरियावहीकी क्रिया रूप एक आश्रव योग छे, चऊदमे गुणठाणे आश्रवनवनो भेद नथी ॥१०२॥

अज्जयदुगिचारभावण, दुपसत्तेपचवन्नअदुचरणा ।
चउपन्नापुव्वदुगे, तेवन्नारवीणमोहजा ॥१०३॥

टीका—अथसवरभेदान्गुणस्थानेषुकथयन्नाह तत्रसवरभेदा सप्तपचाशत्,तत्रअपवर्गोक्त आश्रव पौरुषेय सचकदाचित् केनचित् अत्यन्तमुच्छिद्यतेऽपिपुसारासासादितनदुच्छेदसाधनात्यतिकक्षयमापद्यते तत्रपूर्वोपार्जितकर्मजालविच्छेदायनपसोनिर्जराचेतिवक्ष्यति, अभिनवकर्मोपचयनिवारणायसवरमेवतावद्वक्ष्याम आस्रवनिरोध सवर आस्रूयतेसमादीयतेयै कर्माष्टक(मिति)आस्रवा कर्मणांप्रवेशर्वीयय इन्द्रियकषायादय तेषांनिरोध- सवर आत्मन कर्मोपादानहेतुभूत-

परिणामाभाव सत्वर सधसर्वदेशानुद्धिया नादरक्ष्मपोगरोवकाले-
सर्वसत्वर शेषकालेचरणप्रतिपत्तेराग्म्यदेशसत्वर ससत्वर केनोपाये-
नकर्तव्य इत्युपायदर्शनार्थंतत्त्वार्थोक्तसूत्र सगुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षा-
परीषहजयचारित्रै त्रिपञ्चदशद्वादशद्वाविंशतिभेदैर्यथाक्रमसप्तप
ञ्चाशत्भवति, तत्रगम्यगुप्रशस्तमुमुक्षोर्योगनिग्रहोगुप्ति , आत्मस-
रक्षणयोगा मनोवाक्कायलक्षणा स्तेषानिग्रहो निगृहीति प्रवचन
विधिनामार्गे यवस्थापनउन्मार्गगमननिवारणसम्यगुआगमोक्तानुसा-
रणरक्ताद्विष्परिणामनिग्रहचरिणो मनोवाक्काय यापारनि यापारनागुप्ति
स्त्रिप्रकारा मन सङ्कल्पस्यसम्यग्गोपन मनोगुप्ति , वाक्सत्यादि-
भेदानरयगोपनवाग्गुप्ति , काय चलतारूपयोगस्यऔदारिकादे गो-
पनकायगुप्ति , योगानामप्रवृत्ति अथयमसरन चेष्टवनोपिसत्वर
सिध्यर्थमिमा पञ्चर्ईयाभाषणादाननिक्षेपोत्सर्गा समितय तत्रई-
रणईर्यागतिपरिणाम आवश्यककार्येआगमोदिते विहारजिनसद्मआ-
हारोगोचरीविहारे थण्डिलग्रामानुगमनचङ्क्रमणादिकार्ये आगमो-
क्तविधिनायुगमात्रावलोकनादिस्वरणानि सगतासाध्यस्येनगमनईर्यास-
मिति , आह न उपयोगोयोनाल्पनमार्गविशुद्धिमियतेश्वरन सूत्रो-
दितेनविधिनाभवतीर्यासमितिरनवद्या १ आ मनेपरस्मैहितमायया-
सुपकारकसुखवमनाद्यहितस्यनीनिर्ल्प्रयोजनमात्रसाधक मितमस-
न्दिग्धसूत्रोक्तमथचर्णप्रतिपत्तावानसन्देहकारिनिरवद्यार्थमनुपघातकप-
रुणाजीवकायानाण्वरिचनियमितचसर्वदेवभाषण भाषासमिति ,आ-
हचरयस्त्वानृतादिदोषसत्यमसत्यानृतनचनिरवद्य सूत्रानुविधिवदतो
भाषासमितिर्भवतिसाधो ॥ १ ॥ अथैषणामाह आहारचतुर्भे-
दउपकरणानिरजोहरणमुखवमनपट्टीचोलपट्टादिचतुर्दशप्रकाराणिस्थ-
विरकल्पजिनकल्पयोग्योपधि औपग्रहिकाणाश्रुतधर्मचरणधर्मसाध-
नार्थंपात्राणियननायाहारग्रहणार्थं पुस्तकस्वाध्यायादिनिमित्तउद्गमो-

त्पादनैषणादोषरहितआगमोक्तविधिनाभूमागारादिदोषरहिताएषणा-गवेषणासमिति, यद्यपिनिर्ग्रंथानाहारार्थिनस्तथापिवाचनादिकरणे-प्युपयोगस्यावातकरस्तुनशीतादिमालोकयद्विदोषरहितअदान उ-त्पादक असमान अगत्तनयाआहारादिकरोति तदनेषणास-मिति, तथादाननिक्षेपणासमितिमाह रजोहरणादिचतुर्दशोपकर-णानापीठफलकशय्यादीनाआदानग्रहणनिक्षेपणमुचन । तदजी-वादिरहितमन्यस्यादिरनपाकरणप्रमार्ज्यआदाननिक्षेप कर्तव्य इत्यादाननिक्षेपणासमिति, पारिष्ठापनिकासमितिमाह स्थडिल उज्झित यत्रस्तुपरिष्ठापनक्षेत्र तत्रस्थावरजगमजंतुवर्जितचक्षुषानिरी-क्ष्यउपयुक्त पुद्गलेषुअक्षेपनो दोषाभावन जातरुच्चवारणाय वस्त्रपात्राहारशिष्यमलादीनाउत्सर्गं परिष्ठापनासमिति इतिपचस-मितय, तत्रार्थमात्मनायार्थंतेइतियम सयतगविज्ञस्तन प्राधान्येन-निर्ग्रंथानातेन मनिधर्मेदेशन श्रावकाणामपिक्षमादिरहितापरेति क्षमणक्षमाक्रोधत्याग इत्यनेनप्रशसानिंदावदनछेदनादिभासौसम-परिणामरूपाक्षमा अत्यनाशुभशुभोदयेस्वकृतविपाकवेदनेऽविक-त्पइतिक्षमा नहिक्रोधीममस्वभाव नाहक्रोधस्यकर्त्ताइत्यादिभा-वनायास्तथ्यपरिणति क्षमा १ मार्दवमस्तब्धपरिणाम नीचैर्वृ-त्ति अभ्युत्थानासनदानाजलिप्रग्रहयथार्हविनयकरणरूपानीचैर्वर्तन उत्सेकश्चित्तपरिणामोगर्वरूपस्तद्विपर्ययोऽनुत्सेक अनगतससारस्व-भाव विशिष्टजातिकुलसपद कदाचिदेवसपद्यते, कदाचिद्धीना-स्ततोनगर्वपरिणाम मदनिग्रहोमानविघातश्चेत्यर्थ, जात्यादिकसर्व-मपिऔदयिकऐश्वर्यादिकक्षणभंगुरत्वेनतत्रकोमद, अहतुनिर्मलानद-स्वभाव अतोमानकषायोनममकार्य सम्यग्दर्शनादयोममकार्य न-मदादिममकार्य इत्यादिभावनयामदत्यागीमार्दवमिति, आर्जवस्वरूप-तुमायात्याग आर्जवमृजुभावइत्यर्थ मायाकापट्य दुह्यनानि-

वृति साचपरकीयवस्तुग्रहणार्थभवति परवस्तुग्रहणम ममतासयु- ज्यते नाहपरभोगीतिनेमायाक करोति अतोमायायाग आर्जवमम- धर्मइति ३ अलोभ शौचलक्षणलोभस्तुभावत परमार्थतोऽभिष्वग चेतनाचेतनमिश्रवस्तुविषय लोभस्तेपाथक्रोधमानमायाहिंसानृतस्ते यावृत्रपरिग्रहासंनमलजालेनोपचीयमान आत्माभवति अशुचि वैनभावविशुद्धि ममत्वाभावो नि सगता अपरक्रोधाद्यात्मार्थानुश नति कमयतानिर्मलताभावसामनजरजोहरणादिपुविगतपृष्ठे मुनि शुचि तैनएतशौच अपरनामभुक्तिइत्यादि ४ विद्यमानेअर्थेभव- स यसतोजीवादिपदार्था वेनहितअनेकान्तनयप्रमाणसमभगेनिश्चे पानुगनमत्य श्रुताभ्यासपर्वकअविसंवादिअर्हच्छासनानुगतज्ञान सत्यनदुपयुक्तवाक्यमपिसत्यमन्यदसत्य धर्म आ माहियथार्थोपयो- गीपयार्थोपयोगितोममप्रयोगयोपयोगिनाएसत्य तन्नुगनअपरस्य- असमानरागद्वेषविमुक्तमोनु धर्मप्रापकद्रव्यभावाहिंसामूलवाक्य नदपिधर्म ॥ ॥ अथसयमयोगनिग्रह सयम सचसप्तदशविध स्थावरपचत्रसचतुष्काकारूप योगत्रयगुणसरक्षणमवर्तनरातु- यायिप्रवृत्तिवारणरूप योगसयम प्रेक्ष्यचक्षुपादव्वारपडिलादिवर- प्रवर्तनादिकरणेप्रेक्षासयम यत औदयिकभावचारयादिप्रवृत्त्यातुग्र- हणतदुपेक्षऔदासीन्यभजन अपेक्षासयमोभवति अपहृत्यपरि- वर्ज्यउपकरणादीनालाघवकुर्वन सयमोभवति तदपहृत्यसयम भक्तपानाद्यर्थपथिगच्छन सचित्तरजोनुरजितचरणस्यस्थडिलात् स्थडिलसक्रामन प्रमार्जनसंयम उपकरणसयम अथवाअ- जीवकायसयम अजीवकायानापुस्तकादीनाअन्यतरेषुरागद्वेषरूप परिणामयागअजीवकायसयम इतिसप्तदशविधसयमआत्मन धर्मो भवति यत परमात्मानुयायिप्रवर्तनअधर्म तत्परित्यागोधर्म इति- सयम यारयांत तपोधर्म तपनपतितापयतिइतितप तदतिइति-

स्वयउद्विग्नोभवतिसयोगजसुखात् तापयतिआत्मप्रदेशेस्थितान् कर्मदलिकानितितप शरीरेंद्रियतापात् कर्मदहनाद्यतप भावनअनन्तज्ञानानदादितत्त्वेस्वस्वरूपेभोगतोआनदेनस्वरूपेकाग्र्यसगरतप परभावत्याग परभावानमिलापस्ततसकोचादिरूपनिर्जरातप तच्चद्वादशविध बाह्याभ्यातरभेदात्तचनिर्जराधिकारतोज्ञेयत्यागस्वरूपतुआत्मन शरीरोपध्याहारोपाश्रयादिषुअभिष्वगहेतुभूतआत्मन परभावानुगत्वरूपोभावदोष तस्यत्यागपरिणाम आत्मन धर्मोभवति आकिंचन्यतुस्वात्मन सत्तारूपस्याद्वादपरिणतिपरिपाट्यास्यात् अस्तिपक्षग्रहीतात्मभावस्यआत्मत्वेनोपादेयनयान्तरत्वाशेषस्यान्नास्तिना पक्षभ्रतपर यूह नतानिर्ममत्वआकिंच यथनुमदीयसत्तानोअन्यन् नाहअहतुस्वस्वभावगुणपर्यायवान्चिदानदस्वरूपस्यकर्त्ताभोक्ताविलसिताव्यभावानारागद्वेषादीनाअभोक्ताअतस्तद्वा मकत्वमवेक्ष्य । ततनिर्ममत्वआकिंचन्य ॥ ९ ॥ ब्रह्मचर्यस्वरूपतुब्रहत्वादात्माब्रह्मतनावृत्ति आत्मनिउपयोगरमणभोगतयावर्त्तनब्रह्मचर्यब्रह्मणिआत्मनिचरण एकीभावेनअवस्थान ब्रह्मचर्यतद्रक्षणाय परभावाभोगात्मकभावमैथुन स्त्रीशरीरस्पर्शादिद्रव्यमैथुनत्याज्य आत्मस्वरूपैकत्वरूपब्रह्मचर्यरूपदृढीकरणार्थं गुरुकुलवासेवसितव्य गुरुश्चात्मतत्त्वज्ञापकात्मतत्त्वरमणना सरक्षणकोपयोगदाता स्वयमपिस्वतत्त्वविलासी न पुद्गलाशी गुरु स्तस्यातेवासित्व परमात्मतत्त्वमाग्भावहेतुत्वात् यावज्जीवसेव्य आचार्योपाध्यायादीनाससर्ग तत्त्वोपदेशकारणमितिब्रह्मचर्यस्यैर्यार्थस्त्रीससक्तवसत्यादित्यागरूपाभावना श्रीउत्तराध्ययनोक्ता श्रयतिनिग्रथा एवविधब्रह्मचर्यआत्मधर्मएवव्याख्यात दशविधोयतिधर्म स्तद्दृढीकरणार्थंभावनाभावनीया ताश्चद्वादशअनित्याअशरणाद्या इतितत्रसर्वसयोगाअनित्या सयोगोवियोगयुक्तएवअनस्तन कोराग इत्यादिअनुपेक्षाअशरणोऽय आत्मा-

ससारेनहिधनस्यजनादयोस्वात्मगुणरक्षका शरणेस्वरूपरुचिपरिणते । स्वरूपज्ञातास्वरूपरमणीआ माण्वनिमित्तास्तुअर्हंत्सिद्धाचार्यादिनिर्ग्रंथा यमात्म्यआत्मास्वरूपविश्रामीभवति अत्यनानद-भोगीभवति एवजन्मादित समुद्भवेन दु खेनालीढस्यज मवत शरणनास्ति इत्यालोचयन सर्वदाहमशरण इतिनित्यमेवमीतस्य-सासारिकेषुभावेषुमनुजसुरसुरेषु हस्त्यश्वादिषुहिरण्यसुवर्णादिषु-धनामिष्वगोनप्रीतिर्भवति किंतुपरमर्षिप्रणीतशासनामिहितएव-विधोज्ञानाचरणादिषुप्रवर्त्ततेभावार्थ अहममशरणनान्येआत्मार्यो-पासनेनममसुखइतिससारेससरत अनतपुद्गलपरावर्त्तपरिवर्त्तनेन-प्रातस्यममकाकावस्थानप्राप्ता व्यवहारराशिमाप्तानन्तकालस्य केन-सहनसबध कृतइति अत्रसमरतोनसुख सुखतुममस्वरूपोपयो-गैकत्वपरिणमनेनएकतानुप्रेक्षाएकएवाहनाह परसगी वीतराग-द्वेषस्वभावस्यमम क सगी ॥ ४ ॥ अन्यत्वभावनातुसर्वमपि-धर्मास्तिकायादिअजीवद्र यसमूहमत्तोअन्यजीवा । सर्वेमत्तोभि-न्नाइतिअशुचिभावनातुसर्वेपिपुद्गला एकैकेनजीवेनअनतवारभुक्त-पूर्वास्तेनात्यतशुचय तनरक्तत्वेनाहमपित्वस्यु १ शुचिअन अशु-चिस्पक्त्वाशुचिरूपोचिद्रूपेरमणमिति ६ आस्रवभावनामिथ्या-त्वाविरतिकषाययोगा आस्रवास्तेचत्याज्या नाहआस्रवस्यकर्त्ता नाप्यास्रवोममस्वभावइति ज्ञानदर्शनचारित्ररूपोपरिणाम सवर सवरश्चममधर्म सवरीचाह इतिनिर्जरापूर्वबद्धकर्मक्षपणरूपानिर्ज-रास्वरूपमुच्यते नममगृहीतामिनवकर्मण तत्क्षपणायकरणाय इति लोकस्वभावाश्चसालोकस्पर्शनाअजावाटकन्यायेनानतवारस्कृता-अनोलोकपरिभ्रमणेनममधर्मोमद्दीयलोकश्चासर येयप्रदेशानतज्ञानपरि-णतिपरिणाम तद्यथार्थोत्पाद यय ौ यसकरसहकारसहजवृत्या-भृतलोरू सचममउसेडति ॥ १० ॥ ओ प्रसस्यकत्वयथा-

र्थप्रतीतिरूपनस्त्वश्रद्धासाचदुर्लभा लम्भइसुरसामितलम्भइपहुअत्त-
णनसदेहो इक्कोनवरिनलम्भइ जिणवरदेसिओधम्मो ।१। धर्म-
आत्मस्वभावरूपस्तत्कारणरूपधर्मं श्रुतचारित्ररूपनस्यसाधकानि-
ग्रंथादयोतदहायोग्यादेशविरतादयोभावा परिणामादुर्लभा इतिद्वादश-
भावना आत्मधर्मसाधनकारणत्वात् धर्मरूपा सवरभेदाइतिसप्रति-
परीषहान्वक्ष्याम प्रतिजानीतेमार्गेअच्यवनार्थंनिर्जरार्थपरिषोढ या
परीषहसहनासमर्थमार्गात् च्यवतेमार्गार्थीपरिषहजये एवमवर्त्ततेते-
परीषहा कर्मोदयविपाका तेषुअनाकुलत्वेनरागद्वेषरहितरूपोजय
रूपवसवर तेचक्षुत्पिपासाशीतदशमशकनग्नतारतिस्त्रीचर्यानिषद्या-
शय्याआक्रोश वध याचनअलाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारप्रज्ञाअ-
ज्ञानदर्शनइतिद्वाविंशति उदयप्राप्ता सहनीया सहनचसमपरि-
णाम अनाकुलत्वेनआत्मनश्चसाधनपरिणामो जय ४ यथाक्षुत्-
परिषहोदयेमुनिश्चिन्तयति असद्वेदनीयोदयेनक्षुदुदय साचक्षत या
तन्नक्ष्मेनिर्जरातर्हितदुपशमनायक स्वाध्यायाध्ययनादिक परित्य-
ज्यआहारार्थप्रयतनते शुद्धात्मसाधनक्रियाविमुच्य अनतकालपुन
पुन ग्रहणेनआहारार्थक स्वीयवीर्यप्रवर्त्तयति अतोनाहममकार्य
आहारश्चप्राप्ति कोहिपुद्गलग्रहणायप्रवर्त्तते इत्यादिभावनयापरीषह-
क्षमणाययतिनय इति चारित्रभेदा सामयिकछेदोपस्थापनीयप-
रिहारविशुद्धिसूक्ष्मसपराययथाख्यातरूपा पूर्वव्याख्यातिता तेचसवर-
भेदा सप्तपचाशत्गुणस्थानेषुविभजन्नाह तत्र आद्येषुनिगुणस्था-
नेषुसवरभेदानसभवति मिथ्याश्रद्धावत नस्वरूपग्राहकत्व इति
तथा अजयदुगिइत्यादि ४ अजयदुगिअविरतदेशविरतलक्षणेगु-
णस्थानद्वये द्वादशभावना एवप्राप्यते शेषभेदानातुसर्वविरतौ ए-
वप्राप्यमाणत्वात् तेननात्रसगृहीता दुपमत्ते प्रमत्ताप्रमत्तलक्षणेपच-
पंचाशत्भेदा अडुचरणाइतिसूक्ष्मसपराययथाख्यातरूपचारित्रद्वय-

रहिता तथा पुव्वदुगेत्ति अपूर्वकरणानिवृत्तिकरणलक्षणेगुणस्थान-द्वये परिहारादिचारित्ररहिताश्चतुष्पचाशन्भेदा सवरस्यउपशातमो-हक्षीणमोहलक्षणेगुणस्थानद्वये एकस्ययथारयानस्यैवसभवान्त्रिप-चाशद्भेदा सवरस्येति ॥ १०३ ॥

टबार्थ —हवे सवरतत्त्वना भेद गुणठाणे कहे छे मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ए गुणठाणे सवरतत्त्वनो भेद कोई नथी अविरति समकित तथा देशविरति गुणठाणे बार भावना कोइक जीवने कोइक वेलाइ होइ ते माटे १२ भेद छे प्रमत्त तथा अप्रमत्त गुणठाणे सवरना पचावन भेद छे सूक्ष्म सपराय १ यथारयान २ ए वे चारित्र विना अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण ए वे गुणठाणे परिहार विशुद्ध विना चोपन सवरना भेद छे अने सूक्ष्मसपराये शेष चारित्र विना त्रेपन सवरना भेद छे इग्यारमे बारमे गुणठाणे एक यथारयान चारित्र छे, शेष च्यार चारित्र छे नहीं ॥१०३॥

सेसेसुएक्कखायग, चरणखवगत्तणेणनोअन्ने ॥
परिसहजयोअसवर, तेणसव्वथ्यतेगहीया ॥१०४॥

टीका—सेसेसुएगखायग ४ शेषेषुसयोगिकेवल्ययोगिकेवलि-लक्षणेएकक्षायिकयथारयातचारित्रसवरभेदेषुप्राप्यते शेषाषट्पचा-शद्भेदा क्षयोपशमरूपानप्राप्यते यद्यपिक्षायिकत्वेपरीषहजय सभाव्यते तथापिवीर्यानन्त जातसहननविकल्पाभावान्नापेक्षते अन्न-चपरिषहोदयस्तुगुणस्थानेषुअल्पोनास्ति तथापिपरीषहजयस्तुसर्व-गुणस्थानेषुअस्तितेनसर्वेत्रतेपरीषहजयरूपाद्वाविंशतिभेदा गृहीता इत्युक्ता सवरभेदागुणस्थानेषु ॥ १०४ ॥

टबार्थ—चोथे नेपथ्र भेद छे शेष कहेता शेष रह्यो जे तेरमो तथा चऊदमो गुणठाणो तेहने विषे एक यथाख्यात चारित्र छे बीजा सवरना भेद सर्व क्षयोपशमी छे ते तेरमे चऊदमे गुणठाणे क्षयोपशमी भाव नथी ते माटे क्षायिक चारित्र छे, अन्यभाव नथी ते माटे सुमति गुपतिक्षायिक चारित्रमाज गवेषी छे बावीस परिसह तेतो उपरले गुणठाणे नथी, पर बावीस परिषहनो जीपनो ते सवर छे परिसह तो कर्मना उदयथी छे ते माटे इम कह्यो छे ॥१०४॥

पढमतिगुणेअकामा, सम्मत्ताओसकामछट्ठाओ ।
वारविहनिज्जराओ, ज्झाणदुगचरिमदुगुणुम्मि॥१०५॥

टीका—अथगुणस्थानकेपुनिर्जराभेदाउच्यते तेषतपोभेदाद्वादशपद्बाह्यतपोभेदाअनशनअवमोदर्यवृत्तिसक्षेपरसत्यागकायक्लेशसलीनतालक्षणा बाह्यत्वतुयत्तपोदर्शनेनलोकाअपिप्रमोदते आश्चर्यलभते नबाह्या अभ्यतराश्चप्रायश्चित्तविनयवैयावृत्यस्वाध्यायध्यानकायोत्सर्गलक्षणास्तेनिर्जराहेतुत्वात् निर्जराभेदा वस्तुतोनिर्जराभेदौद्वौ सकामाकामाभ्यातत्रसकामानिर्जरार्थिना अकामातुनिर्जराभिलापरहितानां तत्रपढमतिगुणेसुइत्यादि प्रथमेषुत्रिपुगुणस्थानेषुअकामाएवनिर्जराप्राप्यते अकामतण्हाएअकामछुहाए अकामसेयमल्लइत्यादि आगमपाठात्ज्ञेयासम्यक्त्वादिगुणस्थानात अयोगिपर्यंतसकामानिर्जराप्राप्यते छठाओत्ति षष्ठात्गुणस्थानानूआरम्यद्वादशनिर्जराभेदा प्राप्यते चरमगुणस्थानद्वयेध्यानद्वयसूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाति उच्छिन्नक्रियालक्षणपूर्ववर्णितस्वरूपभवति ॥१०५॥

टबार्थ—निर्जरातत्व आश्रयी पहिले तीन गुणठाणे अ-

कामनिर्जरा छे सकाममणाना अभावथी समकित गुणठाणाथी सकाम निर्जरा छे छठा गुणठाणाथी बारमा पर्यंत बार भेद निर्जराना छे ॥ रीते तेरमे गुणठाणे एक शुक्लध्याननो त्रीजो पायो छे अने चउदमे गुणठाणे शुक्लध्यानना बे छेल्ला पाया छे निर्ज्जरा स्वरूप कह्यो ॥१०५॥

आसुहुमचउबधो, उवसमतिसुपगईपएसबधदुग ।
मुक्काजीवाभेया, गुणठाणेसु नसभवई ॥१०६॥

टीका—अथबधनस्वरूपगुणस्थानेषुविभजन्नाह बधश्चतुर्धा प्रकृतिबध स्थितिबध रसबध प्रदेशबधइति तत्रप्रदेशादीनासमुदाय स्वस्वविपाकस्वभाव प्रकृतिबध स्थिति कालावधारणरूपतमया बद्धाप्रकृति इयत्कालयावद्भुज्यतेइतिनिर्धारणात्मिकास्थिति अनुभागोमदतीव्रादिविपाकहेतुमतोरस आर्द्रनाकपायप्रत्ययोत्पन्नाएकद्विनिचतु स्थानरूपा तस्याबध अनुभागबध प्रदेशा पुद्गलपरमाणुनिचयरूपास्तेषाबध प्रदेशबध कार्मणवर्गणायोग्यपुद्गलद्रव्यसमूह तस्यबध प्रदेशबध उक्तच ठिईबधोदलस्सठिई पयसबधोपएसगहण जताणरसोअणुभागो तस्समुदाओपगइबधो १ विस्तारस्तुशतकादितोऽवसेयइति आसुहाति ६ आइतियावत्सूक्ष्मसपरायगुणस्थानकतावत्चतुर्विधोपिबध प्रकृतिप्रदेशौयोगहेतुकौस्थितिरसौतुकषायप्रत्ययौउभयोरपिसद्भावात्उपशातमोहात्उपरिगुणस्थानकेषुप्रकृतिबधप्रदेशबधौएवयोगप्रत्ययत्वात् योगानाचतत्र सत्वात्इत्युक्त सक्षेपेणबध तीव्रमदादिविस्तारस्तुकर्मप्रकृत्यादितोज्ञेयइतिकृत्स्नप्रकर्मक्षयोमोक्ष सचसर्वगुणस्थानातीतत्वात्गुणस्थानेषुनसभवनिअजीवभेदाश्चतुर्दश धर्मास्तिकायस्कधादयस्तेपिगुणस्थानेषुनसभवति अतोनोक्ता ॥१०६॥

टबार्थ—सूक्ष्म संपराय गुणठाणा पर्यंत च्यार बंध छे १ स्थितिबंध २ रसबंध ३ प्रदेशबंध ४ च्यार बंध छे उपशांत प्रमुख तीन गुणठाणे प्रकृतिबंध प्रदेशबंध ए बे बंध छे मोक्ष-तत्वना भेद तथा अजीव तत्वना भेद गुणठाणे सभने नहीज ॥ १०६ ॥

भगासवेहाओ, गुणठाणसयंचदेवचंदेण ।
अणियविणयावणय, सतिदाससस्सवयणेण ॥१०७॥

टीका—भगासवेहाओ इत्यादि १०० मोहादिकर्मणाभ-गास्तेषाक्रमस्तुसवेहाओत्ति कर्मसंवेधनाम्नास्वकृतपूर्वग्रंथस्तस्मादव-सेया स्तनसविस्तरेकथितत्वेनविचारसारप्रकरणेनोक्ता इतिइदगु-णस्थानशतयद्यपि अष्टगाथाधिकमपिशतमेवेतिरपाति श्रीमत्स-धर्मप्रभृतिवाचकवशावच्छिन्नपरपरायातसंवेगशालादिग्रंथेनोद्धारिता-नेकभव्यसंघातसत्पद्मरूपणाबलेनप्राप्तखरतरबिरुद श्रीमज्जिनेश्वर-सूरिवशपूर्वाचलभानुस्वरूपश्रीमदभयदेवसूरि नवागउपपातिक पंचाशकादिवृत्तिप्रकाशकपरपराश्रीमत् खरतरान्वयेश्रीजिनचद्र-सूरिशिष्यश्रीमत्पाठकपुण्यप्रधानाच्छिष्या पाठका श्रीसुमतिसागरा चिंतामणिटिप्पनादिग्रंथकरणप्राप्तन्यायभारतीअवदाता तच्छिष्या-वाचका बृहत्कल्पादिछेदग्रंथलघुभाष्यादिटिप्पनकरणविमलावदाता श्रीसाधुरंगा तच्छिष्यानेकतीर्थप्रतिष्ठादिकृतशुभाचारा पाठकाराज-सारास्तच्छिष्या पाठका श्रीज्ञानधर्मास्तच्छिष्या पाठका श्रीशत्रु-जयेसमवसरणमेरुप्रमुखानेकतीर्थराजनगरादिषुसहस्रफणादिप्रतिष्ठा-करणकृतशासनोद्दीपना श्रीमद्दीपचद्रास्तेषाशिष्येनजैनागमाम्भ्या सरसिरुनगुणस्थानरेणुद्वाराभिधानपुर्वकविरचितगुणस्थानशतक । श्रीमद्राधनपुरवास्तव्य विनयेनअवनत नम्र शान्तिदासइति श्राद्ध-

स्नस्यवचनानुग्रहेणगाथारचितास्तन सूक्ष्मान्नायावबोधार्थं पण्डित देवचन्द्रगणिनाएव यार यानावृत्ति श्रुतिरसिकानानभोगाय अन- सधिसमासायकरणतु यल्वुद्धिना यामोहनिवृत्यर्थंअनभमादादिदोष- श्रुतुर्थैनभेदय सनोहिगुणज्ञाभवति ॥ इतिश्री विचारसारप्रकरणे श्रीदेवचन्द्रगणिविरचितेस्वोपज्ञगुणस्थानशतकेस्वोपज्ञाटीका लिखि- ता श्रीमति [१] वीरनन्दनात्तुयावर्द्धीरजिनराणानम श्रीवर्द्धमानायगोत- मायप्रुनमेणेवाथवोत्तरमवशापसिद्धापगुणशालिने ॥ १ ॥ तद्गे- खरतरगच्छे कुले वाद्देगुणाकरा श्रीजिनचन्द्रसूरीशा सममूवन्मुनि- नायका ॥ २ ॥ तदन्वयाब्धिसद्वृत्ताराजमाराह्नकनाथर। ज्ञान- धर्मादीपचन्द्राश्चद्वोज्ज्वलगुणोज्ज्वाला ॥३॥ जगज्जनिनयोयानाते- पासवेगपक्षिणाविनेया समजायन्देवचन्द्र शुभालया ॥४॥ स्वा- न्ययोरुपकाराय । देवचन्द्रेणधीमना । गुणस्थानशतेटीका । चक्रे- स्वोपज्ञसज्ञका ॥ ५ ॥ तन्वाचयतुसद्रूपा ज्ञानस्वादपरायणा पयार्यमार्गरसिकाभवतुभाविका सदा ॥६॥ इतिश्रीविचारप्रकरणे- गुणस्थानशतटीकासपूर्णा ॥ शुभभवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥

॥ अथ श्री विचारसार प्रकरणसटीक ॥

नमिउ वीरजिणंद, मग्गणठाणेसु पुव्वभणीयाइं ।
दाराइं चउनवइं, भणामि नियपरविबोहत्थं ॥१॥

टीका—श्रीवर्द्धमानमानम्य केवलज्ञानभास्करं जीवाजीवादिभावानां सर्वेषांमप्रकाशकं ॥ १ ॥ नत्वा वाचकवंशं गुरून् सिद्धांततत्त्वकरंपदान् । गत्यादिमार्गणानां करोमिस्वोपज्ञसद्वृत्तिं ॥२॥ इहादिपूर्वं गुणस्थानेषु पूर्वोक्तद्वारविभजनाकृता । तदनंतरमार्गणाभेदेषुनान्येनद्वाराणिविभजन्प्रथममिष्टदेवनमस्कारपूर्वकं अभिधेयादिप्रकाशनार्थं प्रथमागाथामाह ॥ नमिउवीरजिणंद इत्यादि नमिउइति नत्वा वीरजिनेंद्रमार्गणास्थानेषु पूर्वंभणितानि * चतुर्नवति द्वाराणिभणामिकथयामि इतिसंबंधः । नत्वानमस्कृत्य वीरंचतुर्विंशतितमतीर्थनाथं श्रीइंद्रभूत्यादिचतुर्दशसहस्र श्रमणचंदनादिषट्त्रिंशत्सहस्रसाध्वीशंखशतकादिएकलक्षैकोनषष्टिश्रमणोपासकसुलसारेवत्यापिअष्टादशसहस्राधिकत्रिलक्षश्रमणोपासकारूपसंघस्यचतुर्वर्ग्यपार्थरत्नत्रयीरूपात्मधर्मदेशनामृतदायकं रागद्वेषमोहादिकन्तारवैरिवारंजेतृत्वात्जिनाः वीतरागाः क्षीणमोहाद्यस्तेषामिंद्र परमार्हन्त्यमहिमालंकृतत्वात् तंनत्वाइतिनमस्कृत्यमार्गणास्थानेषुमूलोत्तरभेदादिद्वारकद-

* अहिं मूळ गाथाने अनुसार "चतुर्नवतिद्वाराणि" पाठ शुद्ध समज छे अने पूर्वार्धनी तथा उत्तरार्धनी टीकामा "एकशत द्वाराणि" एवो पाठ हस्तलिखित प्रतमा छे ते मूळ गाथाने अनुसार समजतो नथी

वक्र -अभिधेयभणामिकथयामित्यर्थ प्रयोजनघानियपरविबोहृत्य-
निज आत्मापराययथार्थभावजिज्ञासारसिकासम्यग्दृष्टिदेशविरत-
सर्वविरतादिजीवास्तेषाविशिष्टेबोव ज्ञानविबोवस्तदेवअर्थ प्रयो-
जनयस्यस तनिजपरविबोवार्थ आत्मनोज्ञाननिर्मलाय परस्या-
पिश्रोतु ज्ञानप्रकाशाय ॥ १ ॥

टबार्थ —नमस्कार करीने वीरवर्द्धमानजिनेंद्र सामान्य के-
वलीमा इद्रसमान तेह प्रत्ये मार्गणास्थानकने विषे पूर्वे कह्या
जे बधादिकद्वार घोराणु तेभणामि क० कहु छु निज आत्माने
तथा परने प्रति बोधवाने ज्ञान जाणवा प्रकाशने हेते अर्थ
करीने ॥ १ ॥

गईइंदिएकाए, जोएवेएकसायनाणेसु ।
सयमदसणलेसा, भविसम्मेसन्निआहारे ॥२॥

टीका—मार्गणानामभिधायिका गाथामाह । गइइंदिएकाए
इत्यादि ॥ २ ॥ गम्यतेतयाविधकर्मसचिवैर्जीवै प्राप्यतेइति-
गति नारकत्वादिपर्यायपरिणति साचतुर्द्धानारकतिर्यग्नरसुररूपा
इद्रनादीद्र आत्माज्ञानैश्वर्ययोगात्तस्यइदद्रद्रियतानिविद्यतेयेषाते-
तद्मार्गणापचप्रकारा एकेन्द्रियद्वीद्रियत्रींद्रियचतुरींद्रियपचेन्द्रियभे-
दात्पचधा चीयतेयथायोगत्रगणागणैरितिकाय तद्वत्ता जीवा
काया पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतित्रसभेदात्षोढा ॥ ६ ॥ युज्य-
तेप्रयुज्यतेतेयोगामनोवाक्कायलक्षणास्तद्वनोजीवाणुवगृहीता वेद्य-
तेअनुभूयते इद्रियोद्भवसुखमनेनेतिवेद पुरुषवेदस्त्रीनपुसकभेदात्
त्रिविध कषशिषजघादिसाया इतिदडकधातु कष्यतेहिंस्यते अ-
स्मिन्परस्परप्राणिन इतिकष तस्यआयोलाभ येभ्यस्तेकषाया

क्रोधमानमायालोभाख्या चत्वार ज्ञप्तिर्ज्ञान यद्वाज्ञायतेपरिच्छिद्य-
तेवस्तुअनेनेतिज्ञानसामान्यविशेषात्मकेवस्तु निर्विशेषधर्मग्रहणात्म-
कोबोध ज्ञानमतिश्रुतावधिमन पर्यायकेवलभेदात् पचप्रकार तदेव-
ज्ञानमिथ्यात्वसहकारेणविपर्यस्तमत्यज्ञानश्रुताज्ञानविभगभेदात् त्रि-
प्रकारमज्ञान विशेषस्यपर्यायाधिकत्वादेकान्तरूपेणकुग्रहग्रस्तानान-
तादृक् बोधस्तेनअज्ञान ज्ञानाज्ञानयोरुभयोरपिविशेषग्राहकत्वात्
ज्ञानावरणीयक्षयोपशमोद्भूतत्वादात्मन ज्ञानरूपस्यस्वपर्यायस्व-
भावस्यमप्रवृत्तिशक्तिरूपत्वात् अष्टानामपिज्ञानमार्गणायांसग्रह ॥८॥
ससम्यग्प्रकारेणयमन उपरमणसावद्ययोगादितिसयम यद्वासमम्यते
नियम्यते आत्मापापव्यापारसभाराद्नेनेतिसयम । अथवा शुभो
भनायमा प्राणातिपातविरमणा अस्मिन्नितिसयमश्चारित्रसामायिकछे-
दोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसपरायययाख्यातलक्षणपचधा ।
विरतिसाम्यात्देशविरति ग्रहण विरतमंस्यप्रतिपक्षभूतत्वादवि-
रतिस्तस्याऽपिग्रहण एव ससवासयममार्गणा दृश्यते अनेनेतिद-
र्शन यद्विवादृष्टिर्दर्शन सामान्यविशेषात्मकेवस्तुनिसामान्यमात्रबोध
दर्शनइत्यर्थ तच्चतुर्विधचक्षुरचक्षुरवधिकेवलदर्शनभेदात् अनदर्शन-
स्यसामान्यबोधरूपत्वात् सामान्यबोधस्यपिंडरूपवस्तुग्राहकत्वात् ।
नहिपिंडरूपवस्तुनिविपर्यास तेनदर्शनोपयोगेनत्वविपर्यतापरिणति
इति लिश्यतेश्लिष्यते कर्मणासहआत्माअनयाइतिलेश्या कृष्णनील-
कापोततेज पद्मशुक्लभेदात्षोढा तत्रभावलेश्या परिणतिरूपायोग-
वीर्यसहकारिचेतनायावाअप्रशस्ताप्रशस्तापरिणति । बलवीर्यवत
प्रशस्ताप्रशस्तकार्यपरिणामप्रवर्त्तनरूपाभावलेश्या द्रव्यलेश्यातुवै-
क्रियशरीरधारिणोतत्तद्वर्णादिपुद्गलपरिणमनरूपा नौदारिकाणामि-
तिउत्तराध्ययने शातिवादिकृतबृहद्वृत्तौ । भवति परमपदयोग्यता-
माराधयतिइतिभव्य 'सिद्धिगमनयोग्ये भव्य नभव्य नसिद्धग

मनयोग्य अभव्य इतिसम्मतिसम्यग्प्रशस्तार्थे अविरुद्धार्थो सम्यग्जीवस्तद्भाव सम्यक्त्वमोक्षाभिलाषरूपा या आत्मपरिणति तत्त्वेतत्त्वनिर्द्धाररूपपरिणमनसम्यक्त्व तच्चत्रिविध उपशमक्षयोपशमक्षायिकभेदात् सास्वादनस्योपशमातर्भावात् । मिश्रस्यक्षयोपशमसहचारात् मिथ्यात्वस्यनत्प्रतिपक्षत्वात् सम्यक्त्वमार्गणायाअतर्भाव अननानुबधिचतुष्कस्य दर्शनमोहनीयत्रिकस्यविपाकप्राप्तस्य क्षयगतस्य उदययोग्यस्य प्रदेशविपाकतोऽनुदितस्य उपशातस्य यत्दर्शन उपशमदर्शन सप्तकस्यविपाकप्राप्तस्य क्षयगतस्य उदययोग्यस्य विपाकतोउपशातस्य प्रदेशत उदयतयावेद्यमानस्य दर्शनक्षयोपशमसम्यग्दर्शन सम्यक्त्वस्य दीनयस्य ? विपाकोदयेपि मिथ्यात्वप्रदेशत्वात् प्रदेशग्रहण दर्शनसप्तकस्य सत्तात सर्वथा क्षीणम्यनिर्मल निरतिचार अप्रतिपातिदर्शन क्षायिकसम्यग्दर्शन इति मिथ्यात्वादयोगुणस्थानाधिकारेव्याख्यातापव ॥१२॥ सनिति सज्ञानसज्ञाभूतभवद्भाविभावस्वस्वभावपर्यालोचन सा सज्ञाविद्यतेयेपातेसज्ञिन मनोविज्ञानयुक्तादीर्घकालिकीसज्ञायुक्तासज्ञिन तदितराअसज्ञिन इति ॥१२॥ ओजोलोमकावलिकादिआहाराणा अन्यतमाहारयुक्ताआहारका तद्रहिताअनाहारका वेविग्रहगतिसमापन्ना केवलिसमुद्घात अयोगीकेवलिन सिद्धाअनाहारका शेषाआहारका एतेचतुर्दशमूलमार्गणाउत्तरद्विषष्टिमार्गणारूपाभेदाउक्ता ॥ २ ॥

टबार्थ —हवे ६२ मार्गणा नाम कहे छे वेद ३ कषाय ४ गति ४ इद्री ५ काय ६ योग ३ ज्ञान ८ ज्ञान ५ तीन अज्ञानमाहे गण्या माटे मार्गणा ते सर्व जीवनी विचारणा तेमाटे ७ प्रकृति गणी छे. सयम ७ पाच चारित्र ५ देश-

विरति ६ अविरति ७ दर्शन ४ चक्षुआदिक, लेश्या ६ कृष्णादि, भव्य तथा अभव्य २ समकित ६ उपशम १ क्षयोपशम २ क्षायक ३ मिथ्यात्व ४ सास्वादन ५ मिश्र ६ सन्नी तथा असन्नी २ तथा आहारक तथा अनाहारक ए ६२ मार्गणा जाणवी ॥२॥

पणतिरिचउसुरनिरये, नरसन्निपणेंदिभवतसिसव्वे । इगविगलभूदगवणे, दुदुएगगईतसिअभवे ॥ ३ ॥

टीका—अथमार्गणासुगुणस्थानानिकथयन्नाह ॥ पणतिरि इत्यादि३॥तिरित्ति तिर्यग्गतिविषये पणत्ति मिथ्यात्वा१ देशविरतिपर्यंतपंचगुणस्थानानि चउइत्तिसुरगतौनरकगतौमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रअविरतसम्यग्दर्शनरूपा चत्वारो गुणस्थानकाप्राप्यते नरइतिमनुष्यगतौ संज्ञिमार्गणाया पंचेंद्रियमार्गणायाभव्यमार्गणाया त्रसकायमार्गणाया एतेपंचमार्गणायांसवेतितिसर्वेमिथ्यात्वत अयोगिपर्यंताश्चतुर्दशगुणस्थानका प्राप्यते इगत्ति एकेंद्रियेषुसामान्यत विगलत्ति विकलेंद्रियेद्विनिचतुरिंद्रियेषुभुत्ति पृथिवीकायेषु उदगत्तिअप्कायेषु वणत्ति वनस्पतिकायेषु दुदुद्वेद्वेमिथ्यात्वसास्वादनलक्षणेगुणस्थानकेभवत तत्रमिथ्यात्वसर्वेनसास्वादनतुकरणपर्याप्त्या पर्याप्तकेषुपूर्वभवेपूर्वबद्धएकेंद्रियाद्यायु उपशममप्राप्यएततप्राप्त सास्वादन मृत्वाएकेंद्रियादिषुउत्पद्यतेतस्यअपर्याप्तावस्थायासास्वादनभवति एवंभावनीय एगगईतसित्ति गत्यात्रसा गतित्रसस्तेजोवायुकायलक्षणा तेषुएव मिथ्यात्वगुणस्थानलक्षणमाप्यते ॥ ३ ॥

टबार्थ—तिर्यंचगतिमध्ये पांच पहिला गुणठाणा छे देवगति नरकगतिने विषे ४ मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ३ अविरति ४ ए ४ गुणस्थाना छे मनुष्यगति १ संज्ञीमार्गणा २

पचेंद्रीमार्गणा ३ भव्यमार्गणा त्रसकायमार्गणा विषे सर्वेक० मिथ्यात्वयी मांडी अयोगी पर्यंत चउदे गुणठाणा पामीये एकेंद्री १ विगलेंद्रिक ३ पृथ्वीकाय १ अप्काय २ वनस्पतिकाय ३ सात मार्गणाने विषे मिथ्यात्व १ तथा सास्वादन गुणठाणा बे छे गतित्रसन्वेक० तेउकाय १ वाउकाय तथा अभव्य १ ए तीन मार्गणाने विषे १ मिथ्यात्वगुणठाणो पामीये ॥ ३ ॥

वेयतिकसायनवदस, लोभेचउअजयदुतिअणाणतिगे।
वारसअचक्खुचक्खुसु, पढमाअहक्खायचरमचउ ४॥

टीका—वेअतिकसायत्ति ॥ ४ वेदेषु त्रिषुकषायेषु त्रिषुक्रोधमानमायालक्षणेषु मिथ्यात्वत आरभ्य अनिवृत्तिबादरयावत्नवगुणस्थानकानिप्राप्यते दसत्ति लोभाख्येकषायेगुणस्थानकदशप्राप्यते चउअजयत्तिअविरतिमार्गणायाचउ चतुर्मिथ्यात्वसास्वादनमिश्र अविरतसम्यग्लक्षणानिचत्वारिगुणस्थानकानिप्राप्यतेइति सम्यक्त्वदर्शनत मनिपतत मिश्रेपूर्वाभ्यासबाहुल्येनज्ञानेनन्मतापेक्षयाअज्ञाननिकमार्गणाया मिथ्यात्वसास्वादनलक्षणगुणस्थानद्विकमाप्यते मिथ्यात्वात्समागच्छत कश्चित्विभंगारधैरपिमिश्रेभवति तेनमिश्रमपिप्राप्यते तेनअज्ञाननिकप्राप्यते अनेकस्मिन्मतेविभंगात मिश्राभाव उक्त तत्पनत्त्वतुकेवलिनोजानति अचक्षुदर्शनेचक्षुदर्शने- बहुवचनप्राकृतत्वात् द्वादशगुणस्थाना प्राप्यते पढमेत्ति पदसर्वेनयोज्यवेदत्रिकेनत्रतेषि प्रथमत मिथ्यात्वत आरभ्यअनिवृत्तिबादरयावन्नवइत्यनेनेनसर्वत्रगन्तव्गाथातमार्गणासुएवज्ञेय अचक्षुचक्षुदर्शने द्वादशप्रथमामिथ्यात्वत आरभ्यक्षीणमोहाता प्राप्यते सयोगिकेवल्यादिषुकेवलदर्शनस्यैवप्राप्यमाणत्वात् अहखायत्ति यथाख्यात-

ाचरमाअन्या चउत्तिन्न बारगुणस्थानकं उपशांतमोहक्षीण-
योगिकेवलिअयोगीकेवलिरूपामवनि एपुकषायोदयाभावा
॥ ४ ॥

र्थार्थ—वेद तीन, क्रोध मान माया ए ६ मार्गणाने विषे
त्वथी मांडी अनिवृत्तिकरण पर्यंत नव गुणठाणा छे लोभने
मिथ्यात्वथी सूक्ष्मसंपराय पर्यंत १० गुणस्थानक छे अविरति-
ा विषे मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ३ अविरति ४ ए
णठाणा छे अज्ञान तीन मार्गणाने विषे ये अथवा तिन
णा के परकोइ जीव समकितगुणठाणाथी पडतो मिश्र
ो तेहने नजिक अभ्यासे नथा मिश्रना अल्पकाल माटे
पल्टे नहीं तिगे ज्ञान कहीये इत्यर्थ अचक्षुदर्शन १
चक्षुदर्शनविषे मिथ्यात्वथी मांडी क्षीणमोह पर्यंत १२
णा पामीये छे यथाख्यातचारित्रे चरिमक० छेहला ॥११॥
१३।१४। ए ४ गुणठाणा छे ॥४॥

राणसगजयाइ, सामाइयछेयचउदुन्निपरिहारे ।
ठदुगिदोचरमा, जयाईनवमईसुओहिदुगे ॥५॥

टीका—मणनाणसगजयाई । इत्यादि मन पर्यवज्ञाने सप्तनि-
तिनामनिर्ग्रंथमन्दादीनिटयनेन प्रमत्ताप्रमत्तापूर्वकरणानिवृत्ति-
सूक्ष्मसंपरायोपशांतमोहक्षीणमोहलक्षणानि सप्तगुणस्थानानि-
सामायिकछेदोपस्थापने च चारित्रयोश्चत्वारि प्रमत्ताप्रमत्तापूर्व-
निवृत्तिनामकाणीत्यर्थ द्विनित्ति द्वेप्रमत्ताप्रमत्तरूपेपरिहारविशु-
ेनेप्राप्येते नोत्तराणिपरिहारस्यग्रहीनक्रियानिवाहणात्रिकल्प
श्रेणिमारोह केवलद्विकेकेवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणे मार्ग-

णाद्विके द्वौचरमोत्रयोदशचतुर्दशमल्क्षणोगुणस्थानकोभवत अज-याइतिअयतादिअविरतसम्यग्गुणस्थानन क्षीणमोहपर्यंतनवगुण-स्थानकानिप्राप्यते मनिज्ञानश्रुतज्ञाने ओहिदुगेत्तिअवधिद्विके अवधिज्ञानअवधिदर्शने प्राप्येते । नशेषाणितयाहि मतिज्ञानश्रुत-ज्ञानावधिज्ञानानि मिथ्यादृष्टिसास्वादनमिश्रेपुनभवन्ति तद्वानेज्ञान-त्वस्यैवायोगात् यत्तुअवधिदर्शनत कुतश्चिदभिप्रायाद्विशिष्टश्रुतविदो मिथ्यादृष्टीनानेच्छतित मतमाश्रित्य स्वामिरपितत्तेपानभणित अथ-चसूत्रेमिथ्यादृष्ट्यादीनामप्यवधिदर्शनप्रतिपाद्यते ॥ यदाह ॥ श्रीसु-धर्मास्वामी पचमागे " ओहिदसणअणगारोवउत्ताणभतेकिंनाणी ? अन्नाणीगोयमा नाणीवि अन्नाणी वि जईनाणीनोअत्थेगइयातिनाणी-अत्थेगइयाचउनाणीजेंतिनाणीतेआभिणिबोहीयनाणी सुअनाणी ओ-हिनाणीजेचउनाणीतेआभिणि ओहिनाणी सुयनाणी ओहीनाणी मणप-ज्जवनाणी जेअन्नाणीतेनियमाइमअन्नाणी सुअअन्नाणी विभगनाणी" इत्यादिअत्रहियेअज्ञानिनस्तेमिथ्यादृष्टयएवेतिमिथ्यादृष्ट्यादीनामप्य-वधिदर्शनसाक्षादत्रसूत्रेप्रतिपादितयएवविभगज्ञानी य सास्वादन-मिश्रेवर्तते तत्रापितदानीमवधिदर्शनप्राप्यतेइति ॥ ९ ॥

टबार्थ —मन पर्यायज्ञानने विषे यति आदिक सात गुण-ठाणा छे छट्ठाथी बारमा पर्यंत छे सामायिकचारित्र तथा छेदो-पस्थापनीय चारित्रने विषे छठो, सातमो, आठमो, नवमो, ए च्यार गुणठाणा छे परिहारविशुद्धि गुणठाणाने विषे छठो सा-तमो ए बे गुणठाणा छे केवलज्ञानने विषे ॥ १३ । १४ मो ए बे गुणठाणा पामीये अजनक० अविरतिथी माडी बारमा पर्यंत नव गुणठाणा छे मतिज्ञान १ तथा श्रुतज्ञान २ अवधि-दर्शन अवधिज्ञान ए ४ मार्गणामे पामीये छे ॥ ९ ॥

अडउवसमिचउवेयगि, खइएइक्कारमिच्छतिगदेसे।
सुहमिसट्ठाणतेरस, योगआहारसुक्काए ॥ ६ ॥

टीका—अडउवसमित्यादि ॥ काकाक्षिगोलुकन्यायादिहा-यनादितिसर्वत्रयोज्यते अयतादी युपशातमोहान्तान्यष्टौगुणस्थानानि उपशमसम्यक्त्वेभवति अयतानुर्पूर्वानुगुणस्थानकान् अप्रमत्तपात्रत्न चत्वारिवेदके अपरपर्याये क्षयोपशमेसम्यक्त्वेप्राप्यते खइएइक्कारत्ति क्षायिकसम्यक्त्वेअयतादीन्ययोगिकेवलिपयवसानान्यकादशगुणस्थानानिभवति, तथामिथ्यात्वत्रिकेमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणेगुणस्थानत्रिकलक्षणेदेशविरते सुहमि, सूक्ष्मसपरायचारित्रेसट्ठाणस्वस्थान स्वनामस्थानकप्राप्यते इत्यनेनमिथ्यात्वेमिथ्यात्व सास्वादनेसास्वादन मिश्रेमिश्र देशविरतौदेशविरत सूक्ष्मसपरायेसूक्ष्मसपराय इतियावत् । योगनिकमार्गणाया आहारकमार्गणाया शुक्लेश्या-मार्गणाया तेरसत्तिमिथ्यात्वत सयोगिकेवलिपर्यन्तत्रयोदशगुणस्थानिप्राप्यते ॥ ६ ॥

टबार्थ—उपशमसमकितने विषे आठ गुणठाणा छे चौथाथी माडी इग्यारमा पर्यंत क्षयोपशमसमकितमध्ये चोथो, पाचमो, छठो, सातमो, ए ४ गुणठाणा, क्षायिकसमकिते चोथाथी चौदमा पर्यंत इग्यार गुणठाणा छे मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ३ ए तीनने विषे तथा देशविरतिने विषे तथा सूक्ष्मसपरायने विषे सट्ठाणक० पोताना नामनाज गुणठाणा छे मिथ्यात्वने विषे, मिथ्यात्व, सास्वादनने विषे सास्वादन मिश्रने विषे मिश्र, देशविरतिने विषे देशविरति, सूक्ष्मसपरायने विषे सूक्ष्मसपराय छे तीन योगने विषे आहारकमार्गणाने विषे शुक्ले श्याने विषे तेर गुणठाणा छे ॥ ६ ॥

असन्निसु पढमदुग, पढमतिलेसासु छच्चदुसुसत्त ।
पढमतिमदुगअजया, अणहारेमग्गणासुगुणा ॥७॥

टीका—असन्निसुपढमदुग । इत्यादि ॥ असन्निष्वसंज्ञिषु प्रथमद्विक मिथ्यात्वसास्वादनलक्षण गुणस्थानद्वयमाप्यते प्रथमलेश्यात्रयेमिथ्यादृष्ट्यादीनिप्रमत्तान्तानि षड्गुणस्थानानि भवन्ति कृष्णनीलकापोतलेश्यानांहिप्रत्येक सख्येयलोकाकाशप्रदेश प्रमाणान्यध्यवसायस्थानानि तत्रोमदसङ्क्लेशेषु तदध्यवसायस्थानेषु तथाविधसम्यक्त्वदेशविरतिसर्वविरतीनामपि सद्भावोनविरुध्यते ॥ उक्तंच ॥ सम्यक्त्वदेशविरतसर्वविरतीनाप्रतिपत्तिकालेशुभलेश्यात्रयमेवभवति उत्तरकालेतुसर्वाअपिलेश्या परावर्तन्ते इति श्रीमदाराध्यापादाअप्याहु "सम्मत्तसुअसव्वासु लहइसुद्धासु तिसुअचरित्त-पुव्वपडिवन्नओपुण अन्नयरीए छ लेसाए" ॥ १ ॥ श्रीभगवत्याच "सामाइयसजमणभतेकइलेसासुहोज्जा गो० । छसुलेसासुहोज्जाए-वछेओवट्ठावणीयेसजयाएवि" इत्यादि तथा तेजोपद्मलेश्ययो सप्तगुणस्थानानिभवन्ति अप्रमत्तान्तानामप्रमिथ्यादृष्ट्यादीनाअप्रमत्ताना तेजोपद्मलेश्यास्तारतम्येनभवति तथाअनाहारकेपचगुणस्थानानिभवति कमित्याह प्रथमान्तिमद्विकायतानिइतिद्विकायतानिइति द्विकशब्दस्यप्रत्येकयोगात् प्रथमद्विकमिथ्यादृष्टिसास्वादन अतिमद्विक-सयोगिकेवलयोगिकेवलिलक्षण अयतइति अविरतिसम्यग्दृष्टिश्चेति तत्रमिथ्यात्वसास्वादन अविरतसम्यग्दृष्टिलक्षणगुणस्थानत्रय अनाहारकेविग्रहगतौप्राप्यते सयोगिकेवलिगुणस्थानत्वनाहारके समुद्घातावस्थायातृतीयचतुर्थपंचमसमयेदृष्टव्य । अयोगिकेवलयवस्थायातुयोगरहितत्वेनौदारिकादिशरीरपरिपोषकपुद्गलग्रहणाभावादनाहा-

रकत्व औदारिकवैक्रियाहारकशरीरपरिपोषकस्तुपुद्गलोपादानमाहा-
रकइतिमार्गणासु गुणागुणस्थानकाउक्ता ॥ ७ ॥

टबार्थ—असज्ञिमार्गणाने विषे मिथ्यात्वसास्वादन ए बे गुणठाणा छे कृष्ण १ नील १ कापोत १ ए लेश्यामार्गणाने विषे ६ गुणठाणा छे तेजो १ पद्म १ ए बे लेश्याने विषे पहिला सात गुणठाणा छे । १ । २ । ३ । ४ । ५ । ७ । पढमदुगमिथ्यात्व १ सास्वादन २ अतिमदुग तेरमो चउदमो अजयाक० अविरतिक० समकित ए पाच गुणठाणा छे अनाहारकमार्गणामे तेमध्ये पहिलो बीजो चोथो ए तीन गुणठाणे विग्रहगति वर्त्तमान जीवने अनाहारकपणो पामीये तेरमे गुणठाणे केवलीसमुद्घातकरताअना-हारक छे चउदमो अशरीरी छे तिणे अनाहारी छे ॥ ७ ॥

नरगइपणिंदितसयोग, नाणचउतिदससुक्कभविसन्नी। खायगदारेचउठाण, अणहारेसत्तइगबध ॥ ८ ॥

टीका—अथमार्गणास्थानेषु मूलबंधस्थानानि वेदयन्नाह ॥ नरगइपणदि ॥ नरगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, योगत्रय, मत्यादिज्ञानचतुष्टय, चक्षुरचक्षुरवधिरूपदर्शनत्रिक, शुक्लेश्या १ भव्य सज्ञा, क्षायिकसम्यग्दर्शनी आहारक एतासु, अष्टदशमार्गणासुमू-लत चत्वारिबंधस्थानानि सप्तविधबधकाअपि एतेअष्टविधबधकाअपि एतेषड्विधबधकाअपि एकबधकोऽपि एतेएवचत्वारिबंधस्थानकानि तत्रसर्वेभत्रआयुर्वर्जसप्तकर्मबधकास्तेएवआयुर्बंधकालेअष्टविधबधकाले एकसूक्ष्मसपरायभाक्ता मोहायुर्वर्जा षड्विधबधका तेचसातवेद-नीयबधकालेएकविधबधका एवचत्वारिबंधस्थानानिप्राप्यते अना-हारकमार्गणायासप्त एकरूपेद्वेबधमूलस्थाने ॥ ८ ॥

टबार्थ —मनुष्यगति १ पचेन्द्रिजाति २ त्रसकाय १ तीनयोगमनवचनकाया ए३ ३ ज्ञान ४ मति १ श्रुत २ अवधि ३ मनपर्यव ४ दर्शन ३ चक्षु १ अचक्षु २ अवधिदर्शन ३ शुक्ललेश्या १ भव्यसज्ञी क्षायिकसमकित १ आहारक १ ए अढार मार्गणाने विषे च्यार बधस्थानक सात। आठ। छ। एकनो छे

इगविणुलोभेअडतिणु, उवसमिकेवलदुगेअहक्खाए।
*एगापयडीबधे, सेसेसुसगट्ठबधाइ ॥ ९ ॥

टीका—इगविणुलोभेइत्यादि। लोभकषायमार्गणाया इग-विणु एकविधबधकत्व विनासप्तअष्टौषट्लक्षणानित्रिणिबधस्थानानि अनप्रथमगुणस्यदेशकत्वात् उपशमसम्यक्त्वमार्गणाया अष्टविधबध-कत्व विनासप्तषट्एकरूपाणिनीणिबधस्थानानि परसुनसमिनहृता-आउनबधेतिइत्यायुष अबधकत्वात् केवलदुगि केवलज्ञान केवल-दर्शनलक्षणे मार्गणाद्वये यथाख्यातचारित्रे एका सातावेदनीया-ख्याप्रकृतिर्बध्यते इत्यनेनएकविधबधक सूक्ष्मसपरायेषड्विधबध मिश्रेसप्तबधेप्राप्यते शेषा उक्तशेषा षड्विंशत्मार्गणा गति-त्रिकइद्रियचतुष्ककायपचकवेदत्रिककषायत्रिक अज्ञानत्रिक स-यमलेश्यापचअभव्यक्षयोपशमसास्वादनपचमिथ्यात्वअसज्ञिलक्षणा सप्तअष्टौएवेद्विबधस्थानेप्राप्यते इत्येवउक्तामार्गणासुमूलप्रतिबध-भेदा ॥ ९ ॥

टबार्थ —लोभकषाये एकनो थानक नथी ८ नो ७ नो ६ नो ए तीन बधथानक छे उपशमसमकितमार्गणाने विषे

* पाठान्तर
" एगासुहमिच्छमीसे, सगसेसासत्तअडबंधा "

आठनो जयथानक नथी ७।६।१। नो छे परमुवसमिवहना-आउनबधतिइतिवचनात् केवलज्ञान, केवलदर्शन, यथार यातचारित्र ए तीन मार्गणाने विषे एक सातावेदनी प्रकृति बाधे शेष ३९ मार्गणाने विषे सातनो तथा आठनो जयथानक छे हवे मार्गणाये बध स्वामी कहे छे ॥ ९ ॥

इगसत्तरवीसचउअहिय, सयनरगाइगइचउक्केसु जाइचउतिन्निथावरि, नवसयसयपचतेउदुगे॥१०॥

टीका--इगसत्तरवीसचउअहियाइत्यादि । अथमार्गणासुउत्तरबधस्वामित्वकथयन्नाह एक विकलननरकेओघबध तत्रसुरद्विक, वैक्रियद्विक, आहारकद्विक, देवायु नरकत्रिक, विकलत्रिक, सूक्ष्मत्रिक, एकेन्द्रियस्थावर, आतप, एता एकोनविंशतय नैरयिका न बध्नति यत नैरयिका मृत्वानैरयिकेषुनोत्पद्यते तेननरकत्रिकबध देवत्वेपिनोत्पाद्या तेननदेवत्रिक वैक्रियद्विकबध आहारकद्विकस्यमुनि बधश्च तेननबध एकेन्द्रियादिषतुपुउत्पादाभावात् ननत्रस्तदुदया प्रकृतीरपिनबध्नति अनएकाधिकशत ज्ञानावरणपचक, दर्शनावरणनवक, वेदनीयद्विक, मोहनीयस्य षड्विंशति, आयुष, द्वय नाम्न पचाशत, गोत्रद्वय, अतरायपचक, एव एकाधिक शतरत्नप्रभादिषुत्रिषुबध्यते पचकादिषुत्रिषुजिननामरहित एकशतबध्यते तमतमायाजिननाममनुष्यायूरहितान्नवनवति बध्यते तत्ररत्नप्रभादिषुत्रिषुओघवत एकाधिकशत मिथ्यात्वेजिननामरहित शतबध्यते सास्वादनेनपुसकवेद, मिथ्यात्वमोहनीय, हुडकसस्थान, सेवार्त्त, एव चतुष्टयवर्जयित्वाषण्णवति बध्यते तेषुअनतानुबधिचतुष्टय मध्यसस्थानचतुष्टय मध्यसहननचतुष्टय कुखगति ... दुभगत्रिक स्त्यानर्द्धित्रिक उद्योतनाम

तिर्यग्द्विक तिर्यगायुर्नरायु एतत्पञ्चविंशतिरहितासप्तति मिश्रेने-रयिकाबध्नाति, अविरत सम्यग्दर्शने जिननामनरायुर्युक्ताद्वि सप्त-ति बध्यते एवसर्वत्रयथायोग्ययोज्य सप्तमपृथिव्यानवबध्नातिओर । जिननाम्न संक्लेशत्वेअभावात्मनुष्यायुस्तुसप्तम्याउद्वृत्त तिर्यक्षुसमु-त्पद्यतेइतिनियमात्नचब नरद्विकउच्चैर्गोत्रमन्तरेणमिथ्यात्वेपञ्चनवति सास्वादनेतिर्यगायु नपुंसकचतुष्कवर्जएकनवति मिश्रेअनन्तानुब-न्ध्यादिचतुर्विंशतिरहितानरद्विके उच्चैर्गोत्रयुक्तासप्ततिर्बध्नाति एव सम्यक्त्वेऽपि अत्रमिश्राविरतौनरायु स्तानबध्यते तथापिनरद्विक उच्चैर्गोत्रबध्यते तेनसप्ततिर्बध्यते अयमर्थ नरद्विकस्यनरायुषा सा-स्वादनावश्यमविरत आयुर्बन्धमन्तरेणापिगत्यानुपूर्वीबन्धोभवति । आयुर्बन्धकालेतुअवश्यगत्यानुपूर्वीबध इतिअन्तर्मुहूर्तान्तरउर्ध्वेपुपर-वद्धगत्यानुपूर्वीणाचबन्धसक्रमणात्भवति । नरगाइतिनिरकादिनरक-तिर्यग्मनुष्यदेवगतिचतुष्केषुयथानुक्रमयोज्य तत्रनरकगतौएका-धिकशतओघ तिर्यग्गतौसप्तदशाधिकशतओघ बवस्यमनुष्यगतौ-विंशत्याधिकशतमथ ओघत देवगतौचतुरधिकशतओघत नव तत्रतिर्यग्गतौजिननामाहारकद्विकरहित सप्तदशाधिकओघत बधो-भवति तत्राहारकमुनित्वाभावात् जिननामचसत्यपिसम्यक्त्वे तथा विधविवेचकबुद्धिमतरेणअर्हद्भक्त्यादिषुएकत्वासभवानबध मि-थ्यात्वेऽपिसप्तदशाधिक सास्वादनेएकाधिकशत नरकत्रिकादियोडश-प्रकृत्यबधात् तत अणमझोगइसवयण कुखगइनियइत्थि दुहे-गर्याणतिग उज्झोयतिरिदुगतिरि नराउनरउरलदुगरिसह ॥ इति गाथोक्त ॥ एकत्रिंशत्सुरायु इतिद्वात्रिंशत्वर्जाएकोनसप्तति मिश्रे बंधोभवति । तत्रायमर्थ आयुर्बन्धस्तुमिश्रेनास्ति अनतानुबधि-पचविंशति स्वभावादेवमिश्रेनास्ति तिर्यगमिश्रस्यस्यदेवप्रत्ययिक प्रकृतिबधात् नरद्विकौदारिकद्विकवज्रऋषभनाराचबधाभाव, साए-

कोनसप्तति सुरायु सहितासम्यक्त्वेसप्ततिर्भवति सा सप्ततिर्द्वितीय-
कषायैरप्रत्याख्यानकोधमानमायालोभैर्विनाषट्षष्टिर्देशविरतिगुणस्था-
नेज्ञेया इतितिर्यग्गतिबंधस्वामित्वं मनुष्यगतौओवतोविंशो-
त्तरशतंसास्वादने एकोत्तरशतमिश्रेअनंतानुबंधिप्रमुखैकत्रिंशत्सु-
रायु एतद्वात्रिंशत्प्रकृतीनामभावेएकोनसप्तति सापुनःजिननामसुरायु स-
हितात्एकसप्तति सा चाप्रत्याख्यानचतुष्टयवर्जादेशेसप्तषष्टि प्रमत्ते-
त्रिषष्टि अप्रमत्तादिकओघवत्तेन देवगतौचतुराधिकशतबंधेय
भवति तत्रनरकत्रयोग्य एकाधिकशतमानेएकेन्द्रियनामस्थावरनाम
आतपप्रक्षेपेचतुरधिकशतबंधेभवति यत भवनपति व्यन्तरज्योतिष्
सौधर्मेशानपर्यन्तमिथ्यात्वोदयोत्म्भूतप्रकृपणादिनाएकेन्द्रियत्वबंधति।
तेनैवज्ञेय मिथ्यात्वे जिननामवर्जंत्र्युत्तरशतंसास्वादनेनपुंसकचतु-
ष्ककेन्द्रियस्थावरातापप्रकृतिसप्तकरहितापण्णवति मिश्रेअनंतानु-
बंधिषड्विंशती रहितासप्तति सम्यक्त्वे सा एवनरायुर्जिननाम-
सहिताद्वासप्तति बंधेभवति सौधर्मेशानकल्पेएववाच्य भवनपति-
व्यंतरज्योतिषचलयोगित्वात् न तादृक् शासनभक्त्यादिषु परिणम-
नात् तीर्थंकरनामकर्मण बंधेनभवति तेनओघेमिथ्यात्वे त्र्युत्तरशत-
भवति सास्वादनेषण्णवति मिश्रेसप्तति सम्यक्त्वे जिननामबंधा-
भावात् एकसप्तति बंधेभवति सनत्कुमारादीनां एकाधिकशत ।
यत आनतादीनातिर्यग्गतौगमनाभावात् तिर्यक्त्रिकस्यउद्योत-
स्यनबंध शेषरत्नप्रभावत् आनतादिषुउद्योतनामतिर्यक्त्रिकस्य-
बंधाभावेओघत षण्णवतिर्भवति पंचउत्तरेत्वेकगुणस्थानवर्तित्वात्
द्वासप्ततिबंध शेषपूर्ववत् देवगतिबंधस्वामित्वंज्ञेय जाइचउत्ति जा-
तिचतुष्केपृथिवीअप्वनस्पतिलक्षणस्थावरत्रिके एव सप्तमार्गणा-
याजिननामसुरद्विक २ वैक्रियद्विक २ आहारकद्विक २ देवायु
१ नरकत्रिकादि एकादशप्रकृतिवर्जनवाधिक शतओघत भवति

ओघेमिथ्यात्वेच सास्वादनेसूक्ष्मत्रिक विकलत्रिक एकेंद्रियनाम, स्थावरनाम, आतपनाम, नपुंसकवेद मिथ्यात्वहुंडसेवार्त्तइति त्रयोदशनामकर्माणांनेपणबंधाति सास्वादनेनबध्यन्ति मतान्तरेतु सास्वादनेचतुर्णवतियेनआयुर्नयस्तुशरीरपर्याप्त्यनन्तरभवति सास्वादनस्तुशरीरपर्याप्तिन अर्वाग् एवसास्वादनत्वापगम तेननरतिर्यगायु नवध्नाति एतासुमार्गणासु आयुर्बंधोमिथ्यात्वेभवति न सास्वादने तेनचतुर्णवतिर्भवति अपर्याप्तेषुतिर्यक्ष्वपिनवाधिकशतमेवबध्नाति अपर्याप्तेषुमनुष्येष्वपि असंज्ञिमनुष्येष्वप्येवनवाधिकशत ओघवत एवगुणस्थानद्वय अत्रगन्तव्यइति तेउलुगे तेजस्कायवायुकायलक्षणेमार्गणाद्वयेपृथिवीकाय प्रायोग्येनवाधिकशते मनुष्यत्रिकउच्चैर्गोत्रलक्षणप्रकृतिविनापचाधिकशतओघेमिथ्यात्वेभवति सास्वादनादिभावस्तुनैषासभवति इतित्रयोदशमार्गणासुबन्धस्वामित्व उक्त ॥ १० ॥

टबार्थ —नरकगतिनेविषे सुरवैक्रिय २ आहारक २ देवतानोआयुष १ नरकत्रिक ३ सूक्ष्म ३ विगल ३ एकेन्द्रि १ थावर आतप १९ नारकी न बांधे जे माटे नारकीने एकेन्द्रि तथा विगल तथा देव नारकीमे जावु नथी तिणे १०१ नो बध छे तिर्यंचगतिमे ११७ नो बध छे जिननाम १ आहारक २ न बांधे मनुष्यगति एकसोवीसनो बंध छे देवगतिमे एकसोच्यारनो बंध छे एकेन्द्रि ३ बांधे एकेन्द्रिमे जाइ तेमाटे नरकादि च्यार गतिने विषे बंध जाणवो जाति ४ थावर ३ पृथ्वी अपवनस्पतिने विषे एकसोनव प्रकृतिनो बंध छे जिननाम सुर २ वैक्रिय २ आहारक २ देवायु १ नरक ३ ए ११ विनातेउवायुकायने १०५ नो बंध छे ए ११ पूर्वकमनुष्यत्रिकउचगोत्र ए १५ विना जाणवो ॥ १० ॥

**नाणतिगओहिदसण, सम्मदुगे इगुणसीइवधति ।
उवसमगेसगसयरि, केवलहरकायगे एगा ॥ ११ ॥**

टीका—नाणतिगइत्यादि ज्ञानत्रिकमार्गणाया अवधिदर्शने-सम्यक्त्वद्विकेक्षयोपशमदर्शनेक्षायिकसम्यक्त्वेएकोनशीति ओघेन-बोभवति तत्रसप्तसप्तति अविरतसम्यग्दर्शनगुणस्थानेत्रप्रायोग्या-आहारकद्विकचअप्रमत्तेगत वन्नाति वेनएकोनाशीतिर्वंधेभवति साएकोनाशीति आहारकद्विकरहितासप्तसप्तति अविरतिसम्यग्दर्शनेभवति देशविरतौसप्तषष्टि प्रमत्तेत्रिषष्टि अप्रमत्तेएकोनषष्टि अपूर्वकरणे-अष्टपचाशत् अनिवृत्तिकरणेद्वाविंशति सूक्ष्मसपरायेसप्तदश उप-शातमोहक्षीणमोहेएकावन्नाति उपशमदर्शनेसाएकाशीति मनुष्यायु-तथादेवायुर्वर्जाभवति ओघेन उपशमस्यायुर्वंधमेवनभवति तत्र-अविरतेपचसप्तति देशविरतौपट्षष्टि प्रमत्तेद्वाषष्टि अप्रमत्तेअष्ट-पचाशत् अनिवृत्तौद्वाविंशति सूक्ष्मसपरायेसप्तदश उपशातमोहे एकावधेभवति केवलद्विकेयथाख्यातचारित्रे एकासातावेदनीयरूपा-वंधेभवतिएवमार्गणादशकेत्रम उक्त ॥ ११ ॥

टवार्थ—मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ अव-धिदर्शन १ क्षयोपशमसमकित १ क्षायिक समकित १ ए ७ मार्गणाए इगुण्यासी प्रकृति वाधे ते ७७ सत्तहत्तरि समकित गुणठाणे छे ते अने आहारक २ अप्रमत्तगुणठाणे जईने वाधस्ये ते सर्व मिली ओघेएगुण्यासीनो छे उपशमसमकितने विषे मनु-ष्यायु तथा देवायुनो बध नथी तिणे सत्तहत्तरि प्रकृतिनो ओघे बध छे केवलद्गुगयथाख्यातचारित्रने विषे एक प्रकृतिनो बध छे बीजा नथी ॥ ११ ॥

मणनाणचरणतियगे, पणसट्ठीदेससासणेमीसे ।
मिच्छेसुहमेनियआ, अभवअन्नाणअमणेसु ॥१२॥

टीका—मणनाणइत्यादि मन पर्यवज्ञानेसामायिकछेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिरूपे चारित्रत्रयेपचषष्ठिनाओघ बंधेभवति तत्रत्रिषष्टि प्रमत्तप्रायोग्याआहारकद्विकएवपचषष्टि तत्रप्रमत्तेआहारकद्विकाभावेत्रिषष्टि अप्रमत्तेएकोनषष्टि अपूर्वेअष्टपचाशत् एवयावत्तोगुणस्थानकाभवतिनावज्ञेय देशइतिदेशविरतौमार्गणाया सास्वादनमार्गणाया मिश्रमार्गणाया मिथ्यात्वमार्गणाया सूक्ष्मसपरायमार्गणाया नियमेति निजकास्वनामगुणस्थानप्रायोग्यवत्प्रकृतिर्बधाति तत्रदेशेसप्तषष्टि सास्वादनेएकोत्तरशत मिश्रेचतु सप्तति मिथ्यात्वे सप्तदशाधिकशत सूक्ष्मसपरायेसप्तदशबंधेभवति तथा अभव्यमार्गणाया अज्ञानत्रिकमार्गणायाअमणेसुअसज्ञिमार्गणाया॥१२॥

टबार्थ —मन पर्यवज्ञान १ सामायिक १ छेदोपस्थापनीयचारित्र १ परिहारविशुद्धि ए च्यारे मार्गणाये पासठ प्रकृतिनो ओघ छे तेसठीछगगुणठाणेनव छे ते आहारकदुगसातमे जे नाधस्ये तेमाटे पासठीनो ओघ छे देशविरतिगुणठाणे ते गुणठाणानी सडसठीप्रकृतिनो ओघ छे सास्वादनगुणठाणे १०१ प्रकृतिनो ओघ छे मिश्रगुणठाणे ७४ नो ओघ छे मिथ्यात्वगुणठाणे एकसो सत्तरनो ओघ छे सूक्ष्मसपरायगुणठाणे ते गुणठाणे प्रत्ययी १७ प्रकृतिनो बाधे तथा अभव्य १ अज्ञान ३ असज्ञी मार्गणाने विषे एकसोसत्तर प्रकृतिना बधनो ओघ छे ॥१२॥

सत्तरससयबंधे, अजयतिलेसेअट्ठारसयगतु ।
एगारसयतेउ, अडचउसयपउमसुकमि ॥ १३ ॥

टीका—सत्तरससयबंधे जिननामाहारकद्विकरहित सप्तदशा-

शतओघ प्राप्यते तत परगुणस्थानोक्तवज्ज्ञेय तया अजयति अविरतमार्गणायातिलेसेइनिकृष्णानीलकापोतलेश्यापा आहारकद्विक्रहित अष्टादशाधिकशतओवेभवति जिननामरहितसप्तदशाधिकशतमिथ्यात्वे सास्वादनेएकोत्तरशत मिश्रेचतु सप्तति एव प्रमतेनिषष्ठिंयावनुवक्तव्य, तेजोलेश्यायानरकत्रिकसूक्ष्मत्रिकविकलत्रिकरहित एकादशोत्तरशत प्राप्यते तत्रमिथ्यात्वे अष्टोत्तरशत सास्वादनेएकाधिकशतयावत् अप्रमत्तेएकोनषष्टिवज्ज्ञेय तयापद्मलेश्यामार्गणाया नरकत्रिकसू.मत्रिक विकलत्रिकेकेन्द्रियातपस्थावरइतिद्वादशाऽनवेअष्टाधिकशतओव प्राप्यते, मिथ्यात्वेपचोत्तरशत सास्वादनेएकाधिकशत एवयावत् अप्रमत्तएकोनषष्टि शुक्ललेश्यायानरकत्रिकसूक्ष्मत्रिकविकलत्रिक एकेन्द्रियस्थावरातपोद्यततिर्यग्त्रिकमितिषोडशरहितचतुरधिकशत ओघेप्राप्यतेमिथ्यात्वेजिनाहारकद्विकरहित एकाधिकशतभवतिसास्वादनेनपुसकचतुष्कापगमेसप्तनवति मिश्रेअनतानुबध्याद्येकविंशति नरामरायुश्चएवत्रयोविंशतिविगमेचतु सप्तति एवयावत् सयोगिगुणस्थानतावज्ज्ञेय॥ १३ ॥

टवार्थ —अविरतिमार्गणाये कृष्ण १ नील २ कापोत ३ ए मार्गणाये ११८ नो ओघ छे एकसोसत्तर मिथ्यात्व गुणठाणे पावे ते एक जिननाम एन ११८ नो छे तेजोलेश्याये नरकत्रिक ३ सूक्ष्म ३ विगल ३ नव ए बाचे एकसोअगीयारनो ओघ छे पद्मलेश्या ३ सूक्ष्म २ विगल ३ एकेन्द्रि १ थावर १ आतप १ ए बार विना एकसोआठ १०८ नो ओघ छे नरक तथा ए बार उद्योत ४ ए सोल विना शुक्ललेश्या ए १०४ एकसो च्यारनो ओघ छे ॥ १३ ॥

वारसयमणाहारें, सेसासुअजीसअहियसयपयडी ।
वधुत्तरपयडीण, ओहो एसोसमासेण ॥ १४ ॥

टीका—बारसयमणाहारे इत्यादि । अनाहारेअनाहारकमार्गणायाआहारकद्विकदेवायुर्नरकत्रिकतिर्यगायु मनुष्यायु इत्यष्टौविनाद्वादशाधिकशतओघ प्राप्यते मिथ्यात्वेजिननामरहित एकादशाधिकशतमाप्यते सास्वादनेजातिचतुष्क स्थावरचतुष्कहुडातपसेवार्तनपुसकवेदमिथ्यात्वप्रकृतीनामवाभावेअष्टनवति सम्यक्त्वे पचसप्तति सयोगिकेवलिगुणस्थानेएकाइतिबन्ध शेषासुपचेन्द्रिय १ त्रस १ योगत्रिकवेदत्रिककषायचतुष्क ४ चक्षुरचक्षुदर्शनभव्यसज्ञिआहारकलक्षणासुसप्तदशमार्गणासुविंशोत्तरशतमेवेमाप्यते गुणस्थानकमश्चओघबन्धाधिकारवत्वक्तव्य उत्तरोत्तरप्रकृतीनाएषओघ समासेनेतिसक्षेपेणउक्त ॥ १४ ॥

टबार्थ—अनाहारकमार्गणाए एकसो बारनो ओघ छे शेष मार्गणा १८ नरगति १ पचेन्द्रीजाति २ त्रसकाय ३ योग ३ वेद ३ कषाय ४ चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन २ भव्य १ सज्ञीआहारकमार्गणाये एकसोवीस १२० प्रकृतिनो बध छे सर्वमार्गणाए जेटला कह्या तेटले गुणठाणे बधप्रकृति कहेवी बधनी उत्तरप्रकृतिनो ओघ सक्षेपे कह्यो ॥ हवे बधस्वामीपणोकर्मनो कहे छे ॥ १४ ॥

केवलदुगअहक्खायग, रहियावधतिनाणविग्घाइ ।
तेउससुहमासाय, सेसादुगवेयणीकुणगा ॥ १५ ॥

टीका—अथमार्गणासु ज्ञानावरणादिकर्मप्रकृती विभजन्नाह ॥ केवलद्दुगइत्यादि केवलद्विकयथाख्यातचारित्रमार्गणारहिताएकोनपष्टि मार्गणा नाणविग्घाइइतिज्ञानावरणपचकअतरायपचकरूपा दशप्रकृती नियमेनबधतिबध्नुवति वेदनीयेकर्मणिकेवलद्विकयथाख्या-

तल्लक्षणापूर्वोक्तास्तिस्रो मार्गणा सूक्ष्मसंपरायमार्गणासहिताश्चतस्र एकसातवेदनीयवन्धकर्तृ निशेषा अष्टपञ्चाशन्मार्गणा वेदनीयद्विकस्य द्वयगा वेदनीयद्विकबन्धकर्त्र्यः ॥ इति ॥ १५ ॥

टबार्थ —केवलज्ञान केवलदर्शन यथाख्यातचारित्र ए तीन मार्गणा विना सर्वमार्गणाइ ज्ञानावरणी ५ अंतराय ५ दानलाभ भोगउपभोग वीर्यांतराय एव ५ नो बंध छे तथाकेवलदुगयथाख्यातसूक्ष्मसंपराय ए च्यार मार्गणाए एकसाता वेदनी बांधे शेष अठावनमार्गणा साता तथा असातावेदनी बांधे छे ॥१५॥

नाणचउओहिदसण, चरणतिगेदेससम्मतिगमीसे।
दसणछगचबधइ, केवलहक्खायगे नत्थि ॥ १६ ॥

टीका—अथदर्शनावरणीयमार्गणासुविभजन्नाह ॥ ज्ञानचतुष्क अवधिदर्शने चरणत्रिके देशविरतिमार्गणाया सम्यक्त्रिकमार्गणाया मिश्रदृष्टि ट्पा५ त्रयोन्शमार्गणाया दर्शनावरणीयषट्कस्त्यानर्द्धिनिकरहि तबंधप्राप्यते नेत्र द्विक यथाख्यातरूपायामार्गणाया दर्शनावरणीयवंधेनास्ति तेषुगुणस्थानेषुतद्बंधाभावात् ॥१६॥

टबार्थ —हवे दर्शनावरणीकर्मनो मार्गणाये बंध कहे छे ज्ञान ४ अवधिदर्शन, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, देशविरति, समकित तीन उपशम १ क्षयोपशम १ क्षायिक १ तथा मिश्रमार्गणा एतली मार्गणाये दर्शनावरणीकर्मनी छ प्रकृति बांधे, थीणर्द्धीतीन न बांधे, केवल दुग तथा यथाख्यातचारित्रे दर्शनावरणीकर्मनो बंध नथी ॥ १६ ॥

सुहमेदसणचउग, सेसानववधगायगोयम्मि ।
तेउवाउनीय, सम्मत्तपराउउच्चच ॥ १७ ॥

टीका—सुहमेइत्यादि ॥ सूक्ष्मसपरायगादिनै दर्शनावरणीय चतुष्कबंधेभवति शेषा. ४५ बाविंशत्मार्गणा दर्शनावरणीयनवानां बवकानवबंधका ज्ञान या ५ निगोद्यादे कर्मनिषेजसायवायुकाय-रूपेद्रिमागणेण्वनीचैर्गोत्रबंधेकुर्वति सम्यक्त्वपराउग्रचइनि सम्यक्त्वं परा सम्यगसहिता मार्गणाज्ञानचतुष्कसयमचतुष्कदेशवि-रतावधिदर्शनसम्यग्दर्शनत्रिकमिश्रस्तु गासु चतुर्दशमार्गणासु उच्चैर्गोत्रएवनबंधेभवति ॥ येचउइकरयारयातेअरन ॥ १७ ॥

टबार्थ—सूक्ष्मसपरायगुणठाणे दर्शनावरणी ४ बांधे शेषमार्गणा ४५ ते दर्शनावरणीनी नव प्रकृति बांधे हवे गोत्रनो बंध कहे छे तेउकाय तथा वाउकाय एकनीच गोत्रनो बंध करे सम्यक्त्व उपरली मार्गणाओ ज्ञान ४ अवधिदर्शन ६ सयमसमकित तीन मिश्रमार्गणाए एक उच्चगोत्रने बांधे छे ॥१७॥

सेसादुविहबंधइ, मोहेतिगनाणओहिदसेसु । सम्मतिगेगुणवीसंति, चरणमणनाणइक्कारा ॥१८॥

टीका—सेसादुविहइत्यादि ॥ शेषा मार्गणा त्रिचत्वारिंशत्मार्गणा द्विविधउच्चैर्गोत्रनीचैर्गोत्रद्वयबंधकुर्वति मोहमोहनीयारवेकर्मणिज्ञानत्रयेत्रिके अवधिदर्शने सम्यक्त्वत्रिकमोहनीयस्यएकोनविंशतिर्बंधेभवति अनतानुबंधिचतुष्टय मिथ्यात्वमोहनीय नपुसकवेदस्त्रीवेदइतिसप्तनबंधेभवति तिचरणत्ति सामायिकछेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिरूपे चारित्रत्रिके मन पर्यवज्ञानमार्गणाया मोहनीयस्यएकादशप्रकृति बंधेभवति ताश्चेमा सज्वलनचतुष्टहास्यादिषट्क पुरुषवेद एवएकादशबंधेभवति शेषा द्वादशकषायस्त्रीनपुसकवेदमिथ्यात्वलक्षणा पचदशनबंधेभवति ॥१८॥

टवार्थ —सेसाक० शेषमार्गणाए उच्चगोत्र १ नीचगोत्र २ ए बे प्रकृति जावे मोहनीकर्मनो ज्ञ गुणठाणे कहे छे, ज्ञान ३ अवधिदर्शन सम्यक्त्व ३ उपशमक्षयोपशम २ क्षायिक ३ ए ॥ मार्गणाए मोहनीकर्मनी १९ प्रकृति जावे अनन्तानुबन्धी ४ मिथ्यात्वमोहनी, नपुंसकवेद, स्त्रीवेद ॥ सासननो ज्ञ नथी सामायिक छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, मन पर्यवज्ञान एटली मार्गणाए मोहनीनी ११ प्रकृति जावे चार कषाय, २ वेद मिथ्यात्व १ ए पतर न जावे ॥ १८ ॥

केवलदुगेहरवाए, सुहमेनोव गईउमोहस्स ।
सासणमीसेदेसे, नीअठाणठीआओपयडीओ॥१९॥

केवलदुगेहखाए इत्यादि । केवलद्विके केवलज्ञान केवलदर्शनलक्षणे तथा यथाख्यातचारित्रे सूक्ष्मसपराये मोहस्यमोहाख्यस्यकर्मणः प्रकृतिर्बन्धेनभवति, नवमगुणस्थानादेवमोहस्यबन्धव्यवच्छेदात् यदुक्तमदनिवारकात् सास्वादने तथा मिश्रे तथा देशेदेशविरतारये मार्गणास्थाने नियठाणठीयाओइति निजस्थानतनामगुणस्थानतनस्थिता प्रकृतय बन्धेभवति सास्वादनेमिथ्यात्वमोहनपुंसकवेदविनाचतुर्विंशति बन्धेप्राप्यते मिश्रेएकोनविंशति प्राप्यते अनन्तानुबन्धिस्त्रीनपुंसकवेदमिथ्यात्वमोहरहिता देशविरतौअनन्तानुबन्धिचतुष्टयअप्रत्याख्यानचतुष्टयस्त्रीनपुंसकवेदमिथ्यात्वरहिता पचदशबन्धेप्राप्यते ॥ १९ ॥

टवार्थ —केवलदुगयथाख्यातचारित्रे सूक्ष्मसपरायचारित्रे मोहकर्मनी प्रकृतिनो बन्ध नथी सास्वादन गुणठाणे २४ बान्धे मिश्रे इगुणीस बान्धे १९ देशविरते १५ प्रकृति बान्धे ॥ पोताने थानकनी प्रकृति जाणवी ॥ १९ ॥

सेसासुमग्गणासु, छवीसपयडीओमोहकम्मस्स ।
गुणठाणसभवाओ, आउभेया य नायव्वा ॥ २० ॥

टीका—सेसासुइत्यादि । शेषासु चतु चत्वारिंशत्मार्गणासु पड्विंशति प्रकृतय मोहकर्मण लभ्यन्ते समुदायकसनएकैकस्यजीवस्यस्वस्वाध्यवसायविशेषात् न्यूनाधिकलीनमप्रकृतय चवे भवति गुणठाणसभवाओ गुणस्थानशनके यथागुणस्थानेउक्ता तथामार्गणास्थानेपिआयुष भेदा ज्ञानया तननरकगतौदेवगतौ तिर्यगमनुष्यरूपेद्वेआयुपायवेभवत मनुष्यगतौतिर्यग्गतौ पचेन्द्रिये त्रसकाये योगत्रये वेदत्रये कपायचतुष्टये अज्ञानत्रये अविरतिमार्गणाया दर्शनत्रये लेश्याया आवनिके भव्याभव्यद्विके मिथ्यात्वेमार्गणाया आहारकमार्गणाया एतएतासुआयु चतुष्टयमपिबधे प्राप्यते तथा एकेन्द्रियविकलेन्द्रियपृथिव्यप्वनस्पतिलक्षणासु तिर्यग्मनुष्यरूपौद्वौआयुर्भेदौभवत । तेजस्कायवायुकायमार्गणाया एकतिर्यगायुरेवबधेभवति ज्ञानत्रिकशुक्लेश्याक्षयोपशमक्षायिकसम्यक्त्वलक्षणासु मार्गणासु मनुष्यदेवरूपौद्वौआयुर्भेदौप्राप्येते । तथा मन पर्यवज्ञानसामायिक छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धि देशविरतिलक्षणासु एकदेवायुरेवलभ्यते केवलज्ञानकेवलदर्शनसूक्ष्मसपरायथयाख्यातोपशमसम्यगदर्शनमिश्रअनाहाररूपासु आयुर्बंधेनास्ति तेज पद्मलेश्यासास्वादनरूपासुतिर्यग्मनुष्यदेवारूपा । त्रयआयुर्भेदा बधेभवति एवसर्वत्रज्ञेय ॥ अथनामप्रकृतिमार्गणास्थानकेपुविभजन्नाह ॥ २० ॥

टबार्थ—शेष जे मार्गणा रही जे चोमालीस तेहने विषे मोहनीनी २६ प्रकृति मोहकर्मनी पावे आउखाना बधनी प्रकृति नरकगति २ देवगति २ मनुष्यतिर्यचने ४ एकेन्द्रि,

विकलेन्द्रि ने पचेंद्रि ४ पृथिवी अप्वनस्पतीने ३ तेउवाउने ४ योग २ वेद ३ कषाय ४ ए च्यार आउखा बाधे तीन ज्ञानदेवना मनुष्यना २ आउखा बाधे मनपर्यव ज्ञानदेवतानो आउखो बाधे केवलज्ञानको आउखो न बाधे तीन अज्ञान ४ आयु बाधे सामायिक छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि एक देवायु बाधे सूक्ष्मसपराय यथाख्यात ए कोई आउखो न बाधे देशविरति देवायु बाधे अविरति तीन दर्शन ४ आयु बाधे केवलदर्शन न बाधे तीन लेश्या ४ आयु बाधे तेजोपद्म ३ आयु बाधे शुक्लेशी २ आयु बाधे भव्य अभव्य ४ आयु बाधे उपशमी न बाधे मिश्र न बाधे क्षायिक क्षयोपशमी २ आयु बाधे सास्वादन ३ आयु बाधे मिथ्यात्वी सज्ञीअसज्ञी आहारी ४ आयु बाधे अनाहारी न बाधे एव प्रकारे आयु कर्मनो बध मार्गणाये जाणनो मार्गणाये जे गुणठाणे ते प्रमाण लेवा ॥ २० ॥

पन्नासाचउसट्ठी, सगसट्ठीतिपन्ननिरयमाईसु,
अडवन्नाचउजाईसु, थावरतिसुछपन्नतेउदुगे ॥२१॥

टीका—पन्नासाचउसठी इत्यादि । तत्रनिरयमाइसुत्ति नरकादिषु, चतुर्षु गतिषु यथाक्रमयोज्य नरकगतौपचाशन्नामप्रकृतिर्बध्यते सुरवैक्रियाहारकनरकद्विकसूक्ष्मविकलत्रिकएकेंद्रियस्थावरातपलक्षणा सप्तदशानबंधेभवति तिर्यग्गतौजिननामाहारकद्विकरहिताचतु षष्टि बधे लभ्यते मनुष्येसप्तषष्टि देवगतौपचाशन्नरकप्रायोग्याएकेन्द्रियस्थावरातपसहितात्रिपचाशद्देवगतौबधेप्राप्यते । तथा जिननामसुरद्विकवैक्रियद्विकआहारकद्विकनरकद्विकलक्षणानव-नबध्यते शेषाअष्टपचाशन्नामप्रकृतिएकेन्द्रियादिजातिचतुष्कपृथि-

व्यपूवनस्पतिलक्षणासु सप्तमार्गणासु नवेप्राप्यते तेजस्कायवायुकायमार्गणाया तासुअष्टपचाशत्तु मनुष्यद्विकाभावेषट्पचाशत्प्रबंभवति ॥ २१ ॥

टबार्थ —हवे नामकर्मनी प्रकृति मार्गणाये कहे छे नरकगते नामकर्मनी ५ प्रकृति बाधे सुर २ वैक्रिय २ आहारक २ नरक २ सूक्ष्म ३ विकल ३ एकेन्द्रिय थावरातप ए सतर न बाधे तिर्यच जिननाम आहारक २ विना चौसठी बाधे जिननामसुर २ वेक्रीय २ आहारक २ नरक २ ए नव न बाधे ५८ प्रकृति च्यार जातिना जीव एकेन्द्रिय विगलेन्द्रि ३ ए जीव न बाधे तीन थावर पृथ्वी पाणी वनस्पतिविण ५८ बाधे ते उकाय १ वाउकाय मनुष्यद्रुग विना छप्पन प्रकृति बाधे ॥ २१ ॥

सम्मत्तमग्गणासु, गुणयालचरणमग्गणाठाणे ।
चउत्तीसचोसठो, मिच्छत्तठिया(उ)सुनामस्स॥२१॥

टीका—सम्मत्तमगाणासुत्तिगाथा २२ सम्यक्त्वेनयुक्तामार्गणासम्यक्त्वमार्गणा मतिश्रुतावधिज्ञाननिकेअवधिदर्शनेवेदकउपशमक्षायिकदर्शनेएकोनचत्वारिंशत्तुबंधेभवति तत्रमिथ्यात्वातेत्रयोदश सास्वादनातेपचदश एवअष्टाविंशति बंधेनभवति चरणमार्गणायाचारित्रयुक्तमार्गणायामन पर्यवज्ञानसामायिकादिचारित्रत्रयेचतुस्त्रिंशत्प्रकृति षष्ठसप्तमगुणस्थानप्रायोग्याबध्यन्ति मिच्छत्तठियासु मिथ्यात्वस्थितामिथ्यात्वगुणस्थानयासु मार्गणासु प्राप्यते ता मार्गणा मिथ्यात्वाभ्यासत्रिलक्षणासुजिननामाहारकद्विकविनाचतु षष्टि बंधेप्राप्यते । नामकर्मण ॥२२॥

टबार्थ —समकीत वीज जे मार्गणाये ३ ज्ञान अवधि-

दर्शन क्षयोपशम क्षायिक सम्यक्त्व ए मार्गणाये ३९ ओगण-चालीस प्रकृति बांधे तेर प्रकृति सास्वादन आश्रवना तथा १५ मिश्र आश्रवना ते न बांधे उपशम समकिती आहारक २ न बांधे अने जे चारित्र प्रत्ययी मार्गणा मन पर्यव सामायिक छेदोपस्थाननीय परिहार ए ४ मार्गणाये चौवी प्रकृति छठी सातमी प्रत्ययी छे ते बांधे मिथ्यात्व प्रत्ययी मार्गणा मिथ्यात्व १ अज्ञान त्रिक अभव्य असन्नी ए मार्गणाये जिननाम कर्म आहारक विना ६४ नो बंध छे नाम कर्मनी प्रकृतिनो ॥२२॥

सपमत्तसन्नुआमग्गण, जानबधईपचसठीयो,
अणहारेतेसट्ठी केवलहस्सायनोजयई ॥ २३ ॥

टीका—सपमत्तसन्नुआदृत्यादि ॥२३॥ मिथ्यात्वन प्रमत्तपर्यंतगुणस्थानायासुमार्गणासुप्राप्यते कृष्णादिलेश्यानयेआहारकद्विकरहितापचषष्ठि नवेप्राप्यते तूषगुणस्थानातजिननामयुक्तापधषष्टि बवेभवति अनाहारकेआहारकद्विकनरकद्विकानवेनिपष्ठिनाम-प्रकृतय बनेभवति । केवलद्विकयथाख्यात नामप्रकृति न अजयति । नवगतिदृत्यय ॥२३॥

टबार्थ —प्रमत्त गुणठाणा पर्यंत जे मार्गणा छे कृष्णनीलकापोतादि ते पासठी प्रकृति पर्यंत बांधे आहारक २ न बांधे अविरति मार्गणा पण आहारक न बांधे ए भावना पद् छे प्रमत्तर्थी अगाव् छे पासठि बांधे अनाहारक मार्गणाये आहारक २ नरक बे विना ६३ प्रकृति बंधाय छे केवलज्ञान मार्गणाये तथा यथाख्यान चारित्र मार्गणा नामकर्मनी प्रकृति न उपार्जे न बांधे ॥२३॥

मिच्छतिगदेससुहम्मे, ठाणभवासेसयासुसगसट्ठी, अविरइतिलेसपणसट्ठी, नवछतिगपन्नतेउतिगे ।२४।

टीका—मिच्छतिगइत्यादि ॥२४॥ मिथ्यात्वत्रिके मिथ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणे देशविरतौसूक्ष्मसपरायचारित्रे स्थानभवाप्रकृति न्वेभवति मिथ्यात्वेचतु षष्टि सास्वादनेएकपचाशत् मिश्रेषट्त्रिंशत् देशविरतौद्वात्रिंशत् सूक्ष्मसपरायेएकानामप्रकृति बधेमाप्यते शेषापचेन्द्रियत्रसयोगत्रिकवेदत्रिककषायचतुष्टयदर्शनद्वयभ यसज्ञीआहारकलक्षणासुमार्गणासुसप्तषष्टि नामप्रकृतिर्बंधेमाप्यते अविरतिकृष्णनीलकापोतलक्षणासुमार्गणासुआहारकद्विकमार्गणाशनकविनापचषष्टि न पते तेजोलेश्यायानवाधिकापचाशत्इत्यनेनएकोनषष्टि पद्मलेश्यापाषडधिकापचाशत् शुक्ललेश्यायात्रिपचाशत्नामप्रकृति बधेभवति इत्येवनामकर्मप्रकृति मार्गणासुविभक्ता तदेवविभक्ताअष्टकर्मबंधप्रकृतय इत्यनेनमार्गणासुउक्तबधस्वामित्व अथमार्गणासुउदयस्वामित्वकथयनप्रथमद्विषष्टिमार्गणासु मूलउदयस्थानानिकथयितुमाह । मूलकर्माणित्रीणि उदयस्थानानितान्याह ॥२४॥

टबार्थ—मिथ्यात्व गुणठाणे चोसठि सास्वादने एकावन ५१ मिश्रे छत्तीस ३६ देशविरते ३२ सूक्ष्म सपराये एक ठाणे जे गुणठाणो तिहा औपन्या जे ते प्रकृति बाधे शेष मार्गणा पचेन्द्री त्रसकाय १ योग तीनवेद ३ कषाय ४ दर्शन २ भन्य १ सज्ञी १ आहारक १ एटली मार्गणाते सत्तसठि ६७ प्रकृति बाधे अविरति मार्गणा तथा तीन लेश्या मार्गणाने विषे आहारक द्विक विना ६५ बाधे ते जो लेश्याए ५९ गुणसठि

याचे पद्मलेश्याए ५६ बाचे शुक्ललेश्याये नेपन बाचे ए मार्गणाये नाम प्रकृति वेद्‍चीने कही ॥२४॥

अट्ठसगचउरउदया, नरपणतसयोगसुकभविसु, ग्वगाहारगसन्निसु, अडचउअणहारगेउदया ॥२५॥

टीका—अट्ठसगचउरउदयाइत्यादि । तत्रज्ञानावरणादिसर्वकर्मणाउदयनेश्वरूप अष्टानासमकालविपाकत्वात् अष्टोदयरूपप्रथमस्थान तत्र सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रमाप्त परभावारोचकस्वभावानुभव तदेकाग्रनादितत्त्वपरिण यासकलपरभावेष्वानासक्तोपयोग अरक्तद्विष्टयासर्वविभावत्यजनस्वभावरमणानुभवैकत्वेनप्राप्तशुक्लध्यान उपशमश्रेणिं क्षपकश्रेणिंनागत उपशातमोहरूपएकादशमक्षीणमोहरूपद्वादशमगुणस्थानमधिरूढ आत्मामोहोदयरहितोभवति तदासप्तकर्मरूपद्वितीयस्थानकभवति सप्तक्षीणमोहीएकत्ववितर्कअप्रविचाररूपशुक्लध्यान यायनज्ञानावरणदर्शनावरणातरायरूप कर्मनय सर्वथा-य कृत्वा प्राप्तमत्रभावावभासरूप केवलज्ञानदर्शना तधीर्यशेषमवानिकर्मचतुष्टयेवेदयति तस्यचतु कर्मोदयरूपतितयस्थानकभवतिनवमार्गणासु मार्ग्यतेनरइतिपचेन्द्रियजातो त्रसकायमार्गणापायोगनिकशुक्ललेश्याभ पक्षायिकाहारकसज्ञालक्षणा मार्गणा अडसगचउरुदयाइतिसनत्र इत्यनेनएतासुमार्गणासुअष्टसप्तचतूरूपाणि त्रीणि स्थानानिप्राप्यते अनाहारकमार्गणाउपशातमोहक्षीणमोहगुणस्थानाभावात् सप्तोदयरूपस्थानाभावात् अष्टचतु रूपौद्वौस्थानकौप्राप्येते ॥२५॥

टबार्थ—हवे मार्गणाये उदयस्थानक कहे छे आठनो उदय तथा सातनो उदय मोह विना तया घनघातीकर्म खपे च्यारनो उदय ए ३ थानक छे मनुष्यगतिपचेन्द्रिय जाति

प्रसक्षायोग २ शुक्ल लेश्याए विषे क्षायिक समकितीने आहारक मार्गणाये सज्ञा मार्गणाये एटली मार्गणाये ८।७।४ नो उदय छे अनाहारक मार्गणाये आठ तथा च्यार ॥ ए थानक छे ॥ २५ ॥

उवसमदंसणतियगे, नाणचउक्केसुअट्टसगउदयो ।
सगचउरअहक्खाए, केवलिचउअट्ठसेसासु ॥ २६ ॥

टीका—उवसमदंसण इत्यादि । नवोपशमसम्यक्त्वे चक्षुरचक्षुरवधिरूपे दर्शनत्रिके मत्यादिमनःपर्याये ते ज्ञानचतुष्टये अष्टौ सप्तएतौद्वौउदयस्थानौचतुःस्वप्यकेवलिन सभवात् यथाख्यातचारित्रेसप्तचत्वारएतौद्वौउदयस्थान उपशान्तमोहादिष्वेव यथाख्यात स्यसभवात् केवलज्ञानकेवलदर्शनमार्गणायां चउत्ति चतुरुदयरूप उदयस्थान अत्यात्युदयस्यैवसभवात शेषासुमार्गणासुअष्टोदयरूपे भवति ॥ सूक्ष्मातउपरितनगुणस्थानाभावात ॥ २६ ॥

टबार्थ—उपशमसमकितदर्शन ३ ज्ञान ४ एहने विषे आठ तथा सातनो उदय छे यथाख्यातचारित्रमार्गणाये सातनो उदय तथा च्यारनो उदय केवलज्ञान केवलदर्शन ते च्यारनो उदय छे शेषमार्गणा जे रही तेहने आठ कर्मनो उदय छे ॥२६॥

निरएगुणसीउदओ, देवेचुलसीअसीइएगिंदि ।
तिरीएनवअहीसेय, मणुएचउअहीअम्मयउदओ॥२७

टीका—इत्येवउक्तानिमूलोदयस्थानानिमार्गणासुसाम्प्रतमुदयोत्तरप्रकृतीनाउदयस्वामित्वकथयन्नाह । निरएगुणसीउदओइत्यादि ॥२७॥ नरकगतिमार्गणायाएकोनाशीति कर्मप्रकृति उदयस्वामि-

त्वओघत भवति ताश्चइमा ज्ञानावरणीयपचक दर्शनावरणनवक वेद-
नीयद्विक मोहनीयषड्विंशति स्त्रीपुवेदस्योदयाभावात्नरकायु नीचै
र्गोत्रअनरायपचक एवसप्तकर्मणाएकोनपचाशत् नाम्नस्तुनरकगति
१ नरकानुपूर्वीद्विक पचेंद्रियजाति १ वैक्रियागोपागद्वय तैजस-
कार्मणशरीरद्वयहुडकसस्थानवर्णादिचतुष्क ४ अशुभविहायोगति १
उच्छ्वास निर्माण अगुरुलघु उपघात त्रसबादरपर्याप्त ३ प्रत्येक १
स्थिर २ शुभरूपा अपर्याप्तास्थिरषट्रूपात्रिंशनइतिसर्वेन एकोना-
शीति ओघोदय तत्वसिद्धानापेक्षया कर्मग्रथापेक्षयातुअपर्या-
प्तनामोदयनारकाणानेच्छन्ति पराघातचेच्छन्तितथापिएकोनाशीति
ओघोदय मिथ्यात्वेचसम्यक्त्वमोहमिश्रमोहविनासप्तसप्ततिरुदयेभवति
सास्वादनेमिथ्यात्वापर्याप्तनरकानुपूर्वीरूपाणाप्रकृतीनाअनुदयेचतु
सप्तति उदयेभवति मिश्रेअननानुबंधिचतुष्टयापगमेमिश्रमोहनीउद-
येचएकसप्ततिरुदयेप्राप्यते एवचमिश्रमोहनीयापगमेसम्यग्मोहनीय
नरकानुपूर्वीमीलनेद्वासप्तति अविरतसम्यग्गुणस्थानेप्राप्यते इति
नरकगतिउदयस्वामित्व देवेत्तिदेवगतिविषयेपुनुलसीत्ति चतुरधिका-
शीतिचतुरशीति उदयेओघ प्राप्यते ज्ञानावरणीयपचकदर्शना-
वरणीयनवक वेदनीयद्वय नपुसकवेदविनासप्तविंशति मोहनीय-
देवायु गोत्रद्वयेउच्चैर्गोत्रयद्यपिकिल्बिषादीनानीचैर्गोत्रतथापिउच्छि-
ष्टत्वाद्यभावान्नापेक्षित। अनरायपचकएवसप्तकर्मणापचाशत् नाम्न-
स्तुदेवगतिदेवानुपूर्वीद्वयपचेंद्रियजाति १ वैक्रियद्विक तैजसकार्मण
समचतुरस्रसस्थानवर्णादिचतुष्क ४ शुभविहायोगति पराघात-
नाम १ उद्योतनाम १ अगुरुलघुनाम १ निर्माणनाम १ उप-
घातनाम १ त्रसदशक अस्थिर १ अशुभदुर्भग १ अनादेय १
अयश इतिचतुर्त्रिंशत्नाम्न सर्वमीलिनेचतुरशीति प्राप्यते।
केचितुइ स्वरापर्याप्तरूपोदयइच्छन्ति तदपिकर्मग्रथेनाधिकृत नीचै-

गोत्रस्यविपाक अष्टत्रामप्रज्ञापनोक्तस्यदेवेष्वदर्शनात् तेननाधिकृत उपघातोदय सुशरीरस्वकुक्षेपघातस्य यूनाधिकस्येनगणनानुगृहीतमच-तुरशीतिओव लब्धिपर्याप्त नदेवानानास्तितेनापर्याप्तइतिनापेक्षित कार्मग्रंथीकेसिद्धातेत्वपेक्षित "देवापद्यनात्तिअपत्रतात्तिगतिपाटात्" कर्मग्रंथेपिदेवगतौजीवस्थानद्वयमितिवाक्येनगृहीतमपिअत उत्प-त्तिकालपर्याप्तनामोदयेपचाशीति सम्यग्मोहनीय १ मिश्रमोहनी-यस्योदयाभावेमिथ्यात्वगुणस्थानेऽशीति सास्वादनेमिथ्यात्वमोह नी-यापर्याप्तमतरेणएकाशीति मिश्रअनतानुबंधिदेवानुपूर्व्योउदयाभावे-पदसप्ततिर्भवति तत्रमिश्रमोहनीयक्षेपेसप्तसप्तति अविरतसम्यग्दर्श-नेमिश्रमोहापगमेसम्यग्मोहनीयदेवानुपूर्व्योक्षेपेअष्टसप्ततिरुदयेभवति-इतिदेवगत्याउदयस्वामित्व अथाइएगिंदीएकेंद्रियमार्गणायाअशीतिरु-दयेओव भवति तत्रज्ञानावरणीयपचक दर्शनावरणीयनवक वेदनी-यद्विक मोहनीयस्यचतुर्विंशति मिश्रमोहनीयसम्यग्मोहनीयस्त्री-वेदपुरुषवेदोदयाभावात् तिर्यगायु १ नीचैर्गोत्रअत्रकल्पवृक्षादीना-उच्चैर्गोत्रोदय कथन १ इत्यत्रोच्यतेयद्यपिशुभगोत्रोदयेनइष्टत्वेपि-प्रज्ञापनोक्तोच्चैर्गोत्रविपाकानामन्यैकस्याप्यसभवात् नीचैर्गोत्रमेव-अतरायपचरूएवसप्तकर्मणासप्तचत्वारिंशत्नामकर्मण त्रयस्त्रिंशत्ति-र्यग्द्विक एकेंद्रियजाति आहारकवर्जतेशरीरचतुष्टय हुडकसस्थान वर्णादिचतुष्टय उच्छ्वासनाम १ आतपोद्योतेनिर्माणेअगुरुलघु १ उपघात १ पराघात १ बादर १ पर्याप्तप्रत्येकस्थिरशुभयशोरूपप-दक दुस्वरविनास्थावरदशनवक एवत्रयस्त्रिंशत् एवसर्वाग्रेअशीति अतसेवार्तसहननक्वचित्गृह्यते तथापिकार्मग्रंथिकैरगृहीतत्वान्नोपात्त पराघातोदय कार्मग्रंथ्यामगृहीतेपिप्रज्ञापनायागृहीतत्वात् एकेंद्रि-याणाद्वद्वरेवन्तुदेवाभियोगात् तेननोपात्त तयोग्रहणेद्वाशीतिरप्य-न्येइसीइएगेदिइत्यपिपाठान्तर उपागोदयस्तुनैकेंद्रियाणामिथ्यात्वे-

प्यशीतिरेव सास्वादनेसूक्ष्मनिकमिथ्यात्वातपानुदयेपचसप्ततिरुदये
भवति गुणस्थानद्वयस्यसभवान् तिर्यग्गतिविपयेनवाधिकशतउदये-
भवति ज्ञानावरणपचक दर्शनावरणनवक वेदनीयद्विक मोहनीया-
ष्टाविंशति तिर्यगायु नीचैर्गोत्र १ अन्तरायपचक एवएकपचाशत्
सप्तकर्मणानाम्न अष्टपचाशत् तिर्यग्द्विक २ जातिपचक शरीर-
माहारकमनरेणचतु औदारिकवैक्रियोपागद्वय सहननपट्क सस्था-
नपट्क खगतिद्वय जिननामविनाप्रत्येकसप्तक वर्णादिचतुष्य त्रस-
दशक स्थावरदशकमिति अष्टपचाशत्उभयमीलनेननवाधिकशतओघे
मिथ्यात्वेसम्यग्मोहमिश्रमोहविनासप्ताधिकशत । सास्वादनेसूक्ष्म
निकातापमिथ्यात्वविनाद्व्याधिकशत मिश्रेजातिचतुष्क अनतानु-
बधिचतुष्कस्थावरनाम १ तिर्यगानुपूर्वीमनरेणमिश्रमोहोदयेननिन-
वतिरुदयेभवति अविरतसम्यग्दर्शनेमिश्रमोहापहारेसम्यग्मोहनीय-
तिर्यग्गानुपूर्व्योउदयेचतुरशीति देशविरतौअप्रत्याख्यानचतुष्टयवै-
क्रियद्विकदुर्भगानादेयायश तिर्यगानुपूर्वीलक्षणदशप्रकृत्यपगमेच-
तुरशीति उदयेप्राप्यते सप्ततिग्रयेअनादेयोदय विवक्षितोपि
" आइइज्जासन्वढोगगिऊनउ " वाग्योगप्रत्ययोदयत्वेनयोगरोध-
कालेगृहीतत्वात् वाग्योगरहितानभवति सप्ततिवान्याशयोपृज्यएन
जानति मणुएतिमनुष्यगतौचतुराधिकशतउदयेभवति तत्रज्ञानाव-
रणादिसप्तकर्मसुतिर्यग्नरकदेवायुरतरेणाद्विपचाशत् नाम्नस्तुनरग-
त्यानुपूर्वीलक्षणद्वयपचेंद्रियजाति शरीरपचक उपागत्रयसहननपट्क
वर्णादिचतुष्य खगतिद्विक आतपस्यपृथिवीकायोदयात् उद्योत-
स्यतिर्यग्प्रत्ययत्वात् तयोरभावेप्रत्येकषट्क त्रसदशकस्थावरसूक्ष्म-
साधारणवर्जप्रकृतिसप्तक एवद्विपचाशत्उभयमीलनेचतुरधिकशत
उदयेओघ सभाव्यते तत्रमिथ्यात्वे आहारकद्विकजिननाममिश्र-
मोहसम्यग्मोहाभावेनननवतिरुदयेभवति सास्वादनेमिथ्यात्वापर्याप्त

विनासप्तनवतिरुदयेभवति मिश्रेअनंतानुबंधिचतुष्टयमनुष्यानुपूर्वी-
मिश्रोदयेनचनिनवतिरुदयेभवति सम्यक्त्वेमिश्रभावेसम्यग्मोहमनु-
ष्यानुपूर्व्योर्युक्तेषुचतुर्नवतिरुदयेभवति देशविरतेद्वितीयकषायचतुष्क
मनुष्यानुपूर्व्यौ १ वैक्रियद्विकदुर्भगानादेयायशलक्षणदुर्भगत्रिक एव
१० दशप्रकृत्यपगमेचतुरशीतिरुदयेभवति प्रमत्तेतृतीयकषायच-
तुष्कनीचैर्गोत्रइतिपंचकापगमेआहारकद्विकोदयेचएकाशीति उदये-
प्राप्यते अप्रमत्तेपंचसप्तति अपूर्वेद्वासप्तति अनिवृत्तौषट्षष्टि एव-
यावत्अयोगिगुणेद्वादशओघोदयवत्भावनीय ॥ २७ ॥

टबार्थ —नारकीनीमार्गणाए छुगुण्याएंसीनो उदय छे देव-
गतिमार्गणाये चोरासीनो उदय छे, एकेंद्रीयमार्गणाये ऐंसीप्रकृ-
तिनो उदय छे, तिर्यंचगतिमार्गणाये एकसोसातनो उदय छे,
मनुष्यगते एकसोवेनो उदय छे ॥ २७ ॥

विगलेदुसईचउदससय, पंचेंदिएसुपुढविवणे । ७
गुणसीईतेउदुगे, सगसयरिजलमिअडसयरी ॥२८॥

टीका—विगलेदुसीइ इत्यादि । विकलेद्रिनिचतुरिन्द्रियल-
क्षणेमार्गणात्रयेद्व्यशीतिरुदयेओघ भवति ज्ञानावरणपंचकदर्शना-
वरणनवक वेदनीयद्विकमोहनीयस्यचतुर्विंशति सम्यग्मोहमिश्र-
मोहपुरुषस्त्रीवेदलक्षणप्रकृतिचतुष्टयवर्जातिर्यगायु नीचैर्गोत्रअन-
रायपंचकनाम्नस्तुतिर्यग्द्विकद्वींद्रियजातिऔदारिकतैजसकार्मणलक्ष-
णशरीरत्रिकऔदारिकोपांग सेवार्त्तहुडकसंस्थानअशुभविहायोगति

* पाठांतरे

गणसीदगीसयरिगइतसिसयत्रिसगसयरि

वर्णादिचतुष्टयउच्छ्वासोद्यतागुरुलघुनिर्माणोपघातपराघातपटक सु-
भगेआदेयमतरेणत्रसषट्कस्थावरसूक्ष्मसाधारणत्रयविनास्थावरसप्तक
मितिपचविंशतमीलनेद्व्यशीति ओघोदय प्राप्यते अत्रमिथ्यात्वे-
द्व्यशीति सास्वादनेमिथ्यात्वापर्याप्तद्वयविनाअशीति एवत्रींद्रि-
येतुत्रींद्रियजाति चतुरिन्द्रियेतुचतुरिन्द्रियजातिग्रहणेनशेष द्वीं-
न्द्रियवत्वाच्य चउदशसयपचेन्द्रियेसूत्तिपचेन्द्रियमार्गणाया चतुर्द-
शाधिकशतउदयेभवति तत्रसप्तकर्मणा पचपचाशत्नाम्नस्तु एकेन्द्रि-
यादिजातिचतुष्टयाभावेस्थावरसूक्ष्मसाधारणातपाभावेचशेषैकोनषष्टि-
रुदयेप्राप्यते तदुभयमीलनेचतुर्दशाधिकशतभवतिओघत मि-
थ्यात्वेआहारकद्विकमिश्रमोहसम्यग्मोह जिननामलक्षणप्रकृतिप-
चकाभविनद्वाधिकशतसास्वादने मिथ्यात्वापर्याप्तनरकानुपूर्वीलक्षण-
प्रकृतित्रयमतरेणषटधिकशतभवतिमिश्रेतुअनतानुबधिचतुष्कानुपू-
र्व्वीत्रिकापगमेमिश्रमोहमीलनेचशतमेवोदयेप्राप्यते अविरतिसम्यग्-
दर्शनेचतुरधिकशतदेशविरतेसप्ताशीति एवसर्वेगुणस्थानकेषुओघो-
दयवद्वाच्य पुढविवणेगुणसीई तत्रपृथ्वीकायमार्गणाया एकोना-
शीति ज्ञानावरणीयपचकदर्शनावरणीयनवक वेदनीयद्विकमोहनीय-
चतुर्विंशति तिर्यगायु नीचैर्गोत्रअतरायपचकनामकर्मण तिर्य-
ग्द्विक एकेन्द्रियजाति १ शरीरत्रिकहुडकसस्थानवर्णादिचतुष्टय
प्रत्येकसप्तकत्रसदुस्वादेयविशेषपदक साधारणदुस्वरविनास्थावरसूक्ष्म-
एवद्वात्रिंशत् अत्रपरघातोदयागीरस्तु कर्मग्रथाशयापेक्षयाज्ञेय ।
वणेत्तिवनस्पतिकायेपिएकोनाशीतिरेवोदयस्तथाप्ययमेद सप्तक-
र्मणासप्तचत्वारिंशत्नाम्नःआतपोदयाभावेसाधारणोदयेचद्वात्रिंशत् ।
आतपोदय पृथिव्यामेवभवति मिथ्यात्वेएकोनाशीति सास्वादने-
सूक्ष्मअपर्याप्तमिथ्यात्वाभावेपचसप्तति प्राप्यते अत्रापर्याप्ताभा-
वस्तुलब्ध्यपर्याप्तापेक्ष्य आतपोदयस्तुपर्याप्तानांतत्पर्याप्तत्व सास्वा-

दनेनभवति तेनतत्पाणम वनस्पतिकायप्रत्ययेऽक्कोनाशीतिमि-
थ्यात्वेएकोनाशीति सास्वादनेसूक्ष्मत्रिकमिथ्यात्वाभावेपंचसप्तति
एवगुणस्थानद्वयपतुय येऽनरपत्याखाधारणवनस्पत्यातुमिथ्यात्वमे-
घभवति सपरीऽपकायेसप्तसप्ततिसप्तसप्ततिरहवेभवति तत्रसप्त-
कर्मणासप्रथ यांरिशन्नाम्नस्तुतिर्यग्द्विक एकेन्द्रियजातिशरीरत्रिक
हुडकसंस्थानवर्णादिचतुष्टयप्रत्येक पञ्चक प्रसगुरुस्वरसुभगादेय-
विनाशेषपदक साधारणदुस्वरत्रिकविनाशेषसप्तक एवमकोनशित्सर्व-
मीलनेसुसप्तति मिथ्यात्वेसप्तसप्तति सास्वादनेसूक्ष्मापर्याप्तमिथ्या-
त्वविनाचतुसप्तति तेजस्कायलक्षणामार्गणायासप्तकर्मणा सप्तचत्वा-
रिंशन्नाम्नस्तु तिर्यग्द्विक एकेन्द्रियजातिशरीरत्रिक हुडकवर्णादि-
चतुष्टयउच्छ्वासागुरुलघुनिर्माणोपघातपराघातबादरपर्याप्तप्रत्येकस्थि-
रशुभलक्षणपचक साधारणदुःस्वरविनाशेष स्थावरपदकएवउभयमील-
नेपदसप्तति मिथ्यात्वेनुषट्सप्तति अनिलतिवायुकायलक्षणामार्गणा-
या वैक्रियशरीरोदयवर्णनेकोनत्रिंशत्सप्तसप्तति प्राप्यते ॥२८॥

टवार्थ —विकलेन्द्रिनो ब्यासीनो उदय छे पचेन्द्रिमार्ग-
णाये एकसोचोंदनो उदय छे पृथ्वीकाय तथा वनस्पतिकायने
इगुण्यासीनो उदय छे तेउकाय वाउकायने सत्तहत्तरिप्रकृतिनो
उदय छे अपकाये अठहत्तरिप्रकृतिनो उदय छे ॥ २८ ॥

सत्तरससयतसमि, इगलाअभव्वदुअणाणमि ।*
मणयोगकसाएसु, विभंगचखूसुनवगसयं ॥ २९ ॥

---

* (पाठांतरे)

अभव्वअन्नाणसतरअहिअसय ।

टीका—सत्तरससय इत्यादि । त्रसकायलक्षणमार्गणायासप्त-दशाधिकशतप्रकृतिनाओघेउदयोभवति तत्रसासकर्मणापचाशन्यूना-न्यस्तु एकेंद्रियजातिआतपस्थावरसूक्ष्मसाधारणलक्षणप्रकृतिपंचक नास्तिशेषाद्वापष्टि उभयमीलनेसप्तदशाधिकशतउदयेओघत प्रा-प्यते तत्रमिथ्यात्वेजिननामाहारकद्विकमिश्रसम्यग्मोहाख्यप्रकृतिपं-चक विनाद्वादशाधिकशतसास्वादनेतुमिथ्यात्वापर्याप्तनरकानुपूर्वील-क्षणत्रयमनरणनवाधिकशतउदयेभवति मिश्रेअनन्तानुबंधिचतुष्टयानु-पूर्वीत्रिकविकलत्रिकाभावे मिश्रमोहनीयप्रक्षेपेचप्रकृतीनांशतउदये-प्राप्यते अविरतसम्यग्दर्शनेचतुरधिकशतदेशविरतेसप्ताशीति एव ओघोदयवत्यावत्अयोगगुणस्थानकतावज्ज्ञेय अभयमार्गणायाअज्ञा-नत्रिकमार्गणायासप्तदशाधिकशतओघेउदयोभवति मिश्रमोहसम्य-ग्मोहजिननामाहारकद्विकविनासप्तदशाधिकशतउदयेप्राप्यते मन योगानिमनोयोगमार्गणाया एकेन्द्रियादिजातिचतुष्क स्थावरचतुष्क आनुपूर्वी चतुष्कातपलक्षणत्रयोदशविनानवाधिकशतओघोदयेभ-वति मिथ्यात्वेजिननामाहारकद्विकमिश्रसम्यग्मोहविनाचतुरधिक-शतभवति सास्वादनेमिथ्यात्व विनाअधिकशतभवति मिश्रेत्वन-तानुबंधिचतुष्कविनामिश्रमोहनीयप्रक्षेपेचशतउदयेभवति सम्यग्गुणे-तुमिश्रमोहानुदये सम्यग्मोहोदये शतमेवदेशविरतेतुअप्रत्याख्यानच-तुष्टयनरकगति नैरकायुर्देवगति देवायुर्दुर्भगानेयोपशोलक्षणप्रकृति त्रयोदशकमनरेणसप्ताशीतिरुदयोभवति प्रमत्तेत्वेकाशीति अप्रमत्ते-पट्सप्तति एवयावत्सयोगिगुणस्थानकेद्विचत्वारिंशदुदयेप्राप्यते । इति । कपायचतुष्टयेतुक्रोधकपायेमानचतुष्क लोभचतुष्क जिन-नामलक्षणप्रकृतिनयोदशाभावेनवाधिकशत मिथ्यात्वेआहारद्विक-मिश्रसम्यग्मोहविनापचाधिकशतसास्वादनेसूक्ष्मत्रिकातपमिथ्यात्व-नरकानुपूर्वीविनानवनवति प्राप्यते एव गुणस्थानकेषुअनिवृत्ति-

थावरयावत्नरक्तचयमानकषायेप्येवमायाकषायेप्येवगुणस्थानदशकपा-
वनुवाच्य रसनामकपायनोअन्येनिरायातेचक्षुर्दर्शनमार्गणायाचजा-
तिचतुष्क स्थावरचतुष्कानुपूर्वीचतुष्कानप जिननाममतरेणचक्षु-
दर्शनेनवाधिकशन मिथ्यात्वेआहारकद्विकसम्यक्त्वमोहनीयमतरेणप-
श्चाधिकशतनगारवादनेमिथ्यात्वविनाचतुरधिकशत मिश्रेअननानुबन्धी
चतुष्कचतुरिन्द्रियजातिलक्षणपचकापहारेमिश्रमोहक्षेपेशत सम्यग-
दर्शनेमिश्राभावेसम्यगमोहनीयउदयेशत देशेसप्ताशीति एव क्षीण-
मोहपावत्रान्य विभगज्ञानेसम्यगमोहनीयजातिचतुष्क स्थावरच-
तुष्काहारकद्विकातपजिननामरूपत्रयोदशविनानवाधिकशत-
ओघेभगवत्यामनुष्यनिर्यगानुपूर्व्योउदयकालेविभगप्रतिपेत्र कर्म-
ग्रथेतुआहारिकमिश्रयोगोदयज्ञानेनअनभिज्ञित मिथ्यात्वेमिश्रमोह-
नीयविनाअष्टाधिकशत मिथ्यात्वनरकानपूर्वीविनापड्विकशत मि-
श्रेअननानुबन्धीचतुष्कयावत्पूर्वीनयाभावे मिश्रमोहनीयक्षेपेशतउदये-
भवति ॥ २९ ॥

स्वार्थ —एकसो सत्तरनो उदय यसने विषे एकेंद्रियआतप थावर सूक्ष्म साधारण विना एकसो सत्तरनो उदय छे, त्रसकाय-मिथ्यात्व अभव्यमार्गणाये वे अज्ञानमार्गणाये एकसो सत्तरनो उदय छे, मिश्रमोहनी १ सम्यक्त्वमोहनी २ जिननाम १ आहारक १ आहारकमिश्र २ ए पाच नथी मनोयोगने विषे कपाय ४ ने विषे विभगने विषे चक्षुदर्शनने विषे पद्मलेश्याने विषे एकसो नवनो उदय छे तिहा मनोयोगमे जाति ४ थावर ४ आनुपूर्वी ४ आतप ए तेरनो उदय नथी, कपाय ४ मे अत बार कपाय जिननाम विना विभगने चक्षुदर्शनने पद्मले-श्याने जाति ४ थावर ४ आनुपूर्वी ४ आतप विना ॥२९॥

वयणेनारहीयसय, थ्थीतिनाणेसुओहिदसेअसम्म। दुगिच्छसयउदओ, उवसमगेतिगसयउदओ ॥३०॥

टीका—वयणेनारहीयसय । वचनयोगेसप्तकर्मणापचपचा शनूनामकर्मणस्तुगतिचतुष्टय एकेन्द्रिय विनाजातिचतुष्कशरीरोपागसह सस्थानवर्णादिचतुष्कखगतिद्विकआनपमनरेणप्रत्येकसप्तक त्रसदशक लब्ध्यपर्याप्तापेक्षयाम्थावरचतुष्कमनरेण स्थिरादिपदक एनसप्तपचाशत् एकेन्द्रियजात्यानपानुपूर्वीस्थावरचतुष्कमनरेणगर्वमीलनेद्वादशाधिकशत तनोमिथ्यात्वेजिनाहारक द्विकमिश्र "सम्यगमोहपचरहित सप्ताधिकशत तत् मिथ्यात्वरहित षटधिकसास्वादनेतदेवानतानुबन्धिविकलत्रिकरहित मिश्रमोहयुक्तचमिश्रेनदेवमिश्रमोहरहित सम्यग्मोहयुक्त शत सम्यग्दर्शने तदेवाप्रत्याख्यानचतुष्टयदेवगत्यायु नरकगत्यायु वक्रियशरीरोपागलक्षणपदक दुर्भगानादेयायशोरूपनिकमिनित्रयोदशापगमेसप्ताशीति साएवतिर्यग्गत्यायुर्नीचैर्गोत्रोनप्रत्याख्यानप्रपाएकानुदये आहारकद्विकोदयेएकाशीति, एनत्रयोदशापावज्ज्ञेय तथा थ्थीतिनाणेसुओहिदसे असम्मदुगिच्छसयउदओइतिस्त्रीवेदेज्ञानत्रिकेअवधिदर्शनेक्षयोपशमक्षायिकलक्षणेसम्यग्दर्शनद्वयेएवमार्गणासप्तक, उअहीयसिपटअधिकशतउदयेओत्र प्राप्यते तनस्त्रीवेदमार्गणायासप्तकर्मसुपुरुषनपुसकवेदनरकायुर्विनाद्विपचाशत्, नामकर्मणस्तुनरकगत्यानुपूर्वीद्वय एकेन्द्रियादिजातिचतुष्टयस्थावरसूक्ष्मसाधारणत्रिक आनपनामजिननामाहारकद्विकत्रयोदशक विनाचतु पचाशत्उभयमीलनेषटधिकशतउदयेओय तदेवमिश्रसम्यग्मोहद्वयापगमेमिथ्यात्वचतुरधिकशतनदेवमिथ्यात्वापर्याप्तद्वयाभावेसास्वादनेद्वचधिकशतनदेवानतानुबन्धिआनुपूर्वीत्रयानुदयेमिश्रोदयेचएणवतिरुदयोमिश्रेप्राप्यते।

साएवमिश्रमोहापगमेसम्यग्मोहानुपूर्व्यविपोदयेचनवनवति सम्यग्दर्शनेसाएवाप्रत्याख्यानचतुष्टयदेवत्रिकदुर्भगानादेयाकीर्तिवैक्रियद्विकनरतिर्यगानुपूर्वीलक्षणचतुर्दशापगमेपचाशीति देशविरतिगुणस्थानकेउदयोभवति । साएवप्रत्याख्यानचतुष्कनीचैर्गोत्रोद्योततिर्यग्गतितिर्यगायुर्लक्षणाष्टकानुदयेसप्तसप्तति प्राप्यते, अप्रमत्तेस्त्यानर्द्धित्रिकाभावात्चतु सप्तति अपूर्वकरणेअतिमसंहननत्रिकसम्यग्मोहनीयापगमेसप्तति, अनिवृत्तिबादरेहास्यषट्काभावात्चतु षष्टिरुदयेभवति तत्र परेवेदत्रिकाभावेत्वष्टसप्तति स्तथा ज्ञानत्रिकावधिदर्शनक्षयोपशमक्षायिकमार्गणासुज्ञानचतुष्कस्थावरचतुष्कातपजिननामाननानुबंधिमिथ्यात्वमिश्रलक्षणषोडशाभावेपडधिकशतओघोदय अविरतसम्यग्दर्शनेआहारकद्विकाभावेचतुरधिकशत, देशेसप्तदशाभावात्सप्ताशीति, एवंक्षीणमोहयावत्वाच्य क्षयोपशमेअप्रमत्तयावत्, क्षायिकेतुजिननामक्षेपेसम्यग्मोहनीयवर्जनेषडधिकशतअयोगिगुणयावत्वाच्यम् ॥ उपशमेउपशमसम्यक्मार्गणायाक्षयोपशमप्रायोग्यषडधिकशतेआहारकद्विकसम्यग्मोहनीयाभावेअधिकशतओघेप्राप्यते, देशेऽशीति प्रमत्ततस्त्यानर्द्धित्रिकापगमेपचसप्तति एवउपशातमोहयावत्वाच्यम् ॥ ३० ॥

टबार्थ —वचनयोगे एकसोबारनो उदय जातिएकेन्द्रि १ थावर ४ आनुपूर्वीआतप एहनो उदय नथी स्त्रीवेदने विषे वेद २ जाति ४ आहारक २ आनुपूर्वी ४ थावरसूक्ष्म साधारण ३ आतप एव १६ प्रकृति विना एकसोछनो उदय छे. तीन ज्ञान, अवधिदर्शन, क्षयोपशमसमकित १ एटली मार्गणाये जाति ४ थावरसूक्ष्म अपर्याप्तनाम साधारण ३ आतप १ जिननाम १ अनतानुबधि ४ मिथ्यात्व १ मिश्रए १६ विना १०६ प्रकृ-

निनो उदय छे इहा अपर्याप्तपणो काढीए ते लब्धिअपर्याप्तो-गवेष्यो छे उपशम समकित एकसोछ मध्येथी स्त्रीवेद १ आ-हारकद्विक २ ए तीन काढीये तेवारे एकसोतीननो १०३ नो उदय छे ॥ ३० ॥

मिच्छतिगिदेससुहमे, सठाणुदओअपुरिसिअट्ठसय*
मणनाणेइगसीई, केवलिजुअलेवयालीस ॥ ३१ ॥

टीका—मिच्छतिग इत्यादि ॥ मिथ्यात्वेसम्यग् मिश्रमोह-जिनाहारकद्विकोदयाभावेसप्तदशाधिकशतउदयेप्राप्यते, सास्वादने-एकादशाधिकशतउदयेप्राप्यते, मिश्रेशतप्राप्यते देशेसप्ताशीति उद-येप्राप्यते, सूक्ष्मसपरायेषष्टिरुदयेप्राप्यते, सगत्तिस्वकइतिस्वस्वगुण-स्थानप्रायोग्योदया प्राप्यते, पढेनपुंसकवेदलक्षणेसोलइतिषोडशा-धिकशतउदयेओघ प्राप्यते, देवत्रिक वेदद्विक जिननामोदयरहित भवति, मिथ्यात्वेसम्यगमिश्रमोंहाहारकाद्विकरहितद्वात्रिंशाधिक शत-प्राप्यते, तदेवसूक्ष्मत्रिकातपमिथ्यात्वनरकानुपूर्वीविनाषडधिकशत-सास्वादनेप्राप्यते, अनन्तानुबंधिस्थावरकेंद्रियादिजातिचतुष्कानु-पूर्वीतिर्यगानुपूर्वीत्रिकानुदयेमिश्रमोहोदयेपचनवति साएवमिश्र-मोहानुदये सम्यग्मोहोदये आनुपूर्वीप्रक्षेपेचअष्टनवनवति प्राप्यते द्वितीयकषायमनुष्यानुपूर्वीतिर्यगानुपूर्वी नरकत्रिकवैक्रियद्विकदुर्भ-गत्रिकाभावेचतुरशीति प्राप्यते एवप्रमत्तेएकोनाशीति अप्रमत्ते-सप्तति अपूर्वेएकोनसप्तति अनिवृत्तौतुषष्टि एवत्राच्य पुरिसित्ति-पुरुषवेदमार्गणाया जातिचतुष्कस्थावरसूक्ष्मसाधारणातपनरकत्रिक-

* (पाठांतरे)

सगसढेसोलपुरिसेअ ।

जिननामअन्यवेदद्वयाभावेअष्टाधिकशतओघोदय प्राप्यते, गुणस्थानक्रमश्चमिथ्यात्वे आहारद्विकसम्यग्मोहमिश्रमोहाभावेचतुरधिकशतसास्वादनेमिथ्यात्वापर्याप्त त्रिनाख्यत्रिकशतमिश्रअनन्तानुबंधिआनुपूर्वीत्रिक विनामिश्रमोहक्षेपेचषण्णवति सम्यग्दर्शनेमिश्रमोहाभावेसम्यग्मोहानुपूर्वीत्रिकक्षेपेनवति, देशविरतौअप्रत्याख्यानीयवैक्रियद्विकदेवत्रिकमनुष्यतिर्यगानुपूर्वी दुर्भगत्रिकरूपचतुर्दशप्रगमेपचाशीति प्रमत्तेएकोनाशीति अप्रमत्तेचतु सप्तति अपूर्वेसप्तति अनिवृत्तिबादरेचतु षष्टि इतिनेय मणनाणेत्ति मन पर्यवज्ञाने एकाशीति प्रमत्तगुणस्थानोदययोग्यातन क्षीणमोहयानज्ञेय केवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणेमार्गणाद्वयेद्विचत्वारिंशत् त्रयोदशगुणस्थानोदयेचतुर्दशेतुद्वादश ॥ ३१ ॥

टबार्थ —मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र १ देशविरति १ सूक्ष्मसपराय एटली मार्गणाए नामगुणठाणे जे कही ते प्रकृतिनो उदय छे, मिथ्यात्वे ११७ एकसो सत्तरनो सास्वादने एकसो अगीयार १११ उदय छे, मिश्रे १०० नो प्रकृति उदय छे, देशविरतीमें ८७ सत्यासी प्रकृतिनो उदय छे, सूक्ष्मसपराये ६० साठ प्रकृतिनो उदय छे, पुरुषवेद एकसो आठनो १०८ उदय छे, जाति ४ थावर ४ आतप १ जिननाम १ नरक ३ वेद २ ए १५ प्रकृति नथी मन पर्यवज्ञाने एक्यासी प्रकृतिनो उदय छे, जे छटा गुणठाणे छे ते लेवी केवलज्ञान केवलदर्शननी बेतालीस प्रकृतिनो उदय छे, तेरमा सयोगी गुणठाणा मध्ये उदय छे ते लेवी ॥ ३१ ॥

परिहारेअडसयरि, सामईयछेएसु हुतिइगसोइ ।
सट्टीओअहक्खाए, इगवीससयअचक्खुम्मि ॥३२॥

टीका—परिहारेअडसयरित्यादि परिहारविशुद्धिचारित्रेअष्टसप्ततिस्तत्रप्रमत्तयतिप्रायोग्यैकाशीतिन स्त्रीवेदाहारकद्विकापगमे- अष्टसप्तति साएवस्त्यानर्द्धित्रिकापगमे त्रिसप्ततिरप्रमत्तेभवति, सामाइयछेएसुत्ति सामायिकेछेदोपस्थापनीयचारित्रद्वयेएकाशीति प्रमत्तयतिप्रायोग्याउदयेभवतिओघ प्रमत्तेचअप्रमत्तादौओघोदयवत् सट्ठीओइतियथाख्यातचारित्रेषष्टिप्रकृतीनामुदयेओव तत्रएकोनषष्टि- रुपशातमोहप्रायोग्याजिननामयुक्ताषष्टिर्भवतिओघेतत्रोपशातमोहे- एकोनषष्टि क्षीणमोहेसप्तपंचाशत् सयोगिकेवलिगुणेद्वाचत्वारिंशत् अयोगिगुणेद्वादशउदयेभवन्ति अचक्षुर्दर्शनेजिननामाभावात् एकविंशत्यधिकशत ओघ उदयेभवतिमिथ्यात्वादारभ्यक्षीणमोहपर्यंन- ओघोदयवद्भावनीयम् ॥ ३२ ॥

टवार्थ—छठा गुणठाणाप्रत्ययी ८१ इक्यासी प्रकृतिनो छे ते मध्ये स्त्रीवेद १ आहारक काढीए तेवारे परिहारविशुद्धिचारित्रमे अठहत्तरि प्रकृतिनो उदय छे, सामायिक १ छेदोपस्थापनीयचारित्रे छठा गुणठाणावालाने इक्यासीनो उदय छे, यथाख्यातचारित्रे साठ प्रकृतिनो उदय छे, इग्यारमे उदय छे, ते मध्ये एक जिननाम मेलिये तेवारे साठ थाइ, अचक्षुदर्शनमे जिणनामकर्म विना एकसो एकवीसनो उदय छे ॥ ३२ ॥

अजए इगुणीससय, आइतिलेसेगवीसयुअसयग।
एगारनवयदसहिय, सयचतेउतिगेनेय ॥ ३३ ॥

टीका—अजएइगुणीससयइत्यादि अजयेअविरतिमार्गणाया- आहारकद्विकजिननामोदयरहिता एकोनविंशत्यधिकशतप्रकृतय

ओघोदयेभवति, मिथ्यात्वेमिश्रमोहसम्यग्मोहविनासप्तदशाधिक-सास्वादने १११ मिश्रे १०० अविरते १०४ भवति आदिलेश्या-त्रयेकृष्णनीलकापोतलक्षणेजिननामोदयाभावात् एकविंशत्यधिक-शतप्रकृतीनाओघ एवप्रमत्तयावत्राच्यएगारेत्यादितेजस्त्रिकेतेजो-लेश्यामार्गणायानरकायु विनाचतु पचाशत्सप्तकर्ममकृतय नाम्न-स्तुनरकद्विकविकलत्रिकापर्याप्तसूक्ष्मसाधारणातपजिननामरहिता सप्त-पचाशत्उभयमीलनेएकादशाधिकशतओघोदय मिथ्यात्वेमिश्रमो-हसम्यग्मोहाहारकविनासप्ताधिकशतसास्वादनेमिथ्यात्वविनापडधि-कशतमिश्रे अनतानुबधिचतुष्कानुपूर्वीत्रिकैकेंद्रियजातिस्थावरनामा-भावेमिश्रोदयेचअष्टनवति अपतेमिश्रमोहानुदयेसम्यग्मोहानुपूर्वी-त्रिकमीलनेएकाधिकशत देशविरतौचतुर्दशापगमेसप्ताशीति प्रमत्ते-एकाशीतिरप्रमत्तेपटसप्ततिरितिज्ञेय पद्मलेश्यायातेजोलेश्याप्रायोग्ये-कादशाधिकशतप्रकृतीएकेंद्रियजातिस्थावरनामाभावेनत्र्यधिकशतओ-घेमिथ्यात्वेपचाधिकसास्वादनेचतुरधिकशतमिश्रेअष्टनवति अवि-रतसम्यग्दर्शनेएकाधिकशतदेशविरतेसप्ताशीति , प्रमत्तेएकाशीति अप्रमत्तेपटसप्तति इतिवाच्य शुक्ललेश्यायादशाधिकशतओघत उद-योभवति जातिचतुष्कस्थावरचतुष्कातपनरकत्रिकविनादशोत्तरशत-ओघेमिथ्यात्वेसम्यग्मिश्रमोहाहारकद्विकजिननामविनापचोत्तरशत-सास्वादनेमिथ्यात्वविनाचतुरधिकशतमिश्रेअनतानुबधिचतुष्कानुपू-र्वीत्रिकाभावेमिश्रमोहक्षेपेचअष्टनवतिर्भवति सम्यग्दर्शनेमिश्रमोहा-भावेसम्यग्मोहानुपूर्वीत्रिकप्रक्षेपेएकाधिकशतदेशविरतौचतुर्दशाभा-वेसप्ताशीति प्रमत्तेएकाशीति एवसयोगिगुणस्थानयावज्ज्ञेय ३२॥

टबार्थ —अविरतिमार्गणाये एकसो ओगणीसनो उदय छे, आहारकजिन नाम विना ए तिन विना आदि तीन लेश्याने विषे जिन नाम विना एकसो वीसनो उदय छे, नरक ३ विकल

३ सूक्ष्म ३ आतप १ जिन नाम ए विना तेजोलेश्यामे एकसो इग्यारनो उदय ए इग्यार तथा एकेंद्रीथावर १ ए विना एकसो नवनो उदय छे, शुक्ललेश्याने विषे जाति च्यार थावर ४ आतप १ नरक ३ ए बार विना एकसो दसनो उदय छे ॥३३॥

चउदससयचसन्निसु, अट्ठारसअहीयसयतुआहारे।
तणुभविदुवीससय, अणहारेअसीईनवअहीया* ३४॥

टीका--चउदससयचसन्निसुइत्यादि सञ्ज्ञिमार्गणायाएकेंद्रियादिजातिचतुष्कस्थावरसूक्ष्मसाधारणातपलक्षणाष्टकोदयविनाचतुर्दशाधिकशतओघेभवति मिथ्यात्वेपचकमतरेणनवाधिकशतसास्वादने अपर्याप्तमिथ्यात्वनरकानुपूर्वींविनाषट्ाधिकशतमि ेअनन्तानुबन्ध्यानुपूर्वींनिकाभावेमिश्रक्षेपेचशतउदयेभवतिनिन अयोगिपर्यंतओघोदयवत्भावनीयसञ्ज्ञिमार्गणायाअपर्याप्तोदयग्रहणत्तु सुक्तासन्नीसुसन्निदुग इत्याशयानुरू ।अट्ठारसत्तिआहारकमार्गणाया आनुपूर्वींचतुष्टयोदयाभावात् अष्टदशा उदयेभवति मिथ्यात्वेपचकाभावात् नयोदशाधिकशतसास्वादनेसूक्ष्मनिकातपमिथ्यात्वाभावात् अष्टाधिकशतमिश्रेअनन्तानुबंधिजातिचतुष्कस्थावराभावेमिश्रक्षेपेचशतसम्यक्त्वे-मिश्रेनानुदयेसम्यग्मोहोदयेचशतमेवेतिनन नयोदशाभावेसप्ताशीतिएवप्रमत्तादिषुसयोगिपर्यंतेषुभाव्य तणुत्ति तनुयोग काययोग भव्वत्ति भवसिद्धिकलक्षणेमार्गणाद्वयेद्वात्रिंशत्यधिकशत ओघेभवतिमिथ्यात्वादिषुओघोदयवत् अनाहारकमार्गणायाऔदारिकवैक्रियाहारकशरीरोपागसहननसस्थानविहायोगतिपराघातोच्छ्वासातपोद्योतो-

* (पाठांतरे)
नवहिअदुग

पघातसुस्वरदु स्वरप्रत्येकसाधारणमिश्रमोहलक्षणप्रकृतिनिंशदनुदये-द्विनवति ओघेउदय सभा यतेआदेयानादेयोदयस्तुस्वरोदयेप्रोक्त-वाक्यस्यपरेश्रुतस्यादेयताभवतिवक्त यत्काळेतुआहारकत्वपश्चात्सम-यान्तरे अनाहारकत्वमप स्यादेयनानादेयताचोदये भवति अयोगि-गुणस्थानके च स्वरनामोदयाभावेप्यादेयनामोदयउक्तइतिनिदर्शनात मिथ्यात्वेसम्यग्मोहजिननामानुदयेनवनिर्भवति, सास्वादनेसूक्ष्मापर्याप्तमिथ्यात्वनरकानुपूर्वीसम्यग्मोहोदयेएकोनाशीति सयोगिगुणे-मनुष्यगतिअयोगिगुणेद्वादशपर्चेद्रियजाति १ त्रसत्रिकसुभगत्रिक-ध्रुवोदयीद्वादशजिननामवेदनीयद्वयउच्चैर्गोत्रमनुष्यायु एतन्पचविंशति ॥ ३४ ॥

टबार्थ —सज्ञीमार्गणाए जाति ४ थावर ३ आतप ए आठ विना एकसो चौदनो उदय छे, च्यार आनुपूर्वी विना एकसो अढारनो उदय छे, आहारकमार्गणामे काययोगभ यमार्गणामे एकसो बावीसनो उदय छे, आहारकमार्गणामे काययोग भ य-मार्गणामे एकसोबावीसनो उदय छे अनाहारकमार्गणाए गुणनि-वेनो (बाणुनो) उदय छे शरीर ३ उपाग ३ सघयण ६ सस्थान ६ वर्णादि ४ वययोगति १ पराघात १ उच्छ्वास १ आतप १ उद्योत १ उपघात १ सुस्वर १ दुस्वर १ ए विना ॥३४॥

चउनवईअसन्निसु, उदयसामित्तमग्गणाठाणे ।
केवलदुगवज्झासु, सव्वासुनाणविग्घुदयो ॥३५॥

टीका—चउनवइअसन्निसु इत्यादि । असज्ञिमार्गणायाज्ञा-नावरणीयपचकदर्शनावरणीयनवक वेदनीयद्विकसम्यग्मोहमिश्रमोह पुरुषवेदस्त्रीवेदोदयविनाचतुर्विंशति नरकायुर्देवायुर्द्वयविनाआयुर्द्वय

नीचैर्गोत्रअंतरायपंचक एएअष्टचत्वारिंशत्नाम्नस्तु तिर्यग्मनुष्यग-त्यानुपूर्वीचतुष्क जातिपंचकवैक्रियाहारकविनाशरीरऔदारिकोपांग त्रयमेवार्त्त १ हुंडकवर्णादिचतुष्कअशुभविहायोगति सत्रसतीर्थं-करविनाप्रत्येकत्रसस्थावरदशकएवंपंचचत्वारिंशत् वैक्रियशरीरेचगृ-हीतेचतुर्नवति असज्ञिमार्गणायामिथ्यात्वेपिचतुर्नवति सूक्ष्मत्रि-कातपमिथ्यात्वविनाएकोननवति सास्वादनेप्राप्यतेइति प्रोक्त-उदयस्वामित्वमार्गणास्थाने,मार्गणासुकर्मोदयविवरण माहकेवलदुगत्ति-केवलज्ञानकेवलमार्गणावर्जयित्वाशेषासुपष्टिमार्गणासु ज्ञानावरणी-यातरायदशकस्योदय प्राप्यते ॥ ३५ ॥

टबार्थ —चउनवई चोराणनो उदय छे, असज्ञीमार्गणामे उदय छे, समकितमोहनी १ मिश्रमोहनी १ पुरुषवेद १ स्त्रीवेद १ नरकायु १ देवायु १ नरकगति १ देवगति १ आहारक २ संघयण ५ संस्थान ५ देवानुपूर्वि १ नरकानुपूर्वि १ शुभवि-हायोगति १ पराघात १ तिर्थंकरनाम १० तथा ए मार्गणाए स्वामी कह्यो, केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ मार्गणामे ज्ञानाव-रणी ५ अतराय ५ नो उदय नथी शेष सर्व मार्गणाए ज्ञाना-वरणी ५ अतराय ५ ए दश प्रकृतिनो उदय छे ॥ ३५ ॥

दसणरोहकम्म, सुहुमाइखायगेसुछगुदओ ।
केवलदुगेअभावो, सेसासुनवेवउदयंमि ॥ ३६ ॥

टीका—दसणरोह इत्यादि दर्शनेसामान्योपयोगरूपगुणरोध-यतीत्येवंशीलंदर्शनरोधदर्शनावरणीयकर्म सुहुमाइक्खायगे सूक्ष्म-संपराययथाख्यातलक्षणमार्गणाद्वये दर्शनावरणीयचतुष्कनिद्राप्रच-लाद्वयप्रकृतिषट्क उदयेप्राप्यते केवलदुगेकेवलज्ञानकेवलदर्शनल-

क्षणायामार्गणायादर्शनावरणीयस्योदयाभाव सेषासुअष्टपचाशत्‌मार्गणासुदर्शनावरणीयकर्मणोनवप्रकृतय उदयेप्राप्यते ॥ ३६ ॥

टवार्थ —दर्शनावरणीयकर्म सूक्ष्मसपरायगुणठाणे यथाख्यात मार्गणाये दर्शनावरणी ४ चक्षु १ अचक्षु २ अवधिकेवल ४ ए च्यार आवरण निद्रा १ प्रचला १ ए ६ नो उदय छे, केवलदुगने विषे दर्शनावरणीकर्मनो अभाव छे, शेष अठावनमार्गणाए नवनो उदय छे, दर्शनावरणीये नवे प्रकृतिनो उदय लाभे ॥ ३६ ॥

सव्वासुवेअणीए, उदयदुगनीअगोअउदयं च।
निरएथावरतिरिए, चउजाईअसन्निठाणेसु ॥ ३७ ॥

टीका—सव्वासुत्ति सर्वासुद्विपष्टिमार्गणासु वेदनीयकर्मप्रत्ययाइतिवेदनीयकर्मण प्रकृतिद्विकउदयेप्राप्यते, नीचैर्गोत्रउदयचेनिचपुन नरकगतिमार्गणायापृथिव्यादिपचस्थावरकायमार्गणायातिर्यग्गतिमार्गणायाएकेंद्रियविकलेंद्रियजातिचतुष्कमार्गणाया असज्ञिमार्गणायाएवद्वादशमार्गणास्थानेपुनीचैर्गोत्रस्यउदय प्राप्यते, नउच्चैर्गोत्रोदय उच्चैर्गोत्रविपाकस्तुअष्टप्रकार प्रज्ञापनोक्तस्तस्यतत्राभावात्नीचैर्गोत्रवि पाकस्यतत्रप्राप्यमाणत्वात् ॥ ३७ ॥

टवार्थ —सर्वमार्गणाए वेदनीयकर्मनी बे प्रकृतिनो उदय छे, शाता १ अशाता २ ए वे जाणवी, नीचगोत्रनो उदय छे ए मार्गणाए ते कहे छे, नरकगतिथावर पाचमे तिर्यंचगति एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चौरेंद्री ए कहीये, च्यार जाति असज्ञिमार्गणा विषे एक नीचगोत्रनो उदय छे एव ॥ ३७ ॥

**मणनाणकेवलिदुगि, संजमपणगेसुउच्चउदयोत्ति ।
सेसासुगोयजुअलं, देसअसन्नीसुआउदुगं ॥ ३८ ॥**

टीका—मणनाण इत्यादि मनःपर्यवज्ञानकेवलद्विकसंयमपंचक-लक्षणासुमार्गणासुउच्चैर्गोत्रोदयः नीचैर्गोत्रोदयस्यपंचमेगुणस्थाने प्राप्यतेसर्वथैवनिवृत्तत्वात् शेषासुद्विचत्वारिंशन्मार्गणासुगोत्रयुगल-उच्चैर्गोत्रनीचैर्गोत्रलक्षणप्रकृतिद्वयउदयेप्राप्यतेइति आयुःकर्मविषयेतु देशविरतिमार्गणाअसंज्ञिमार्गणासुआउदुगतिर्यग्मनुष्यायुःरूपआयु-र्द्विकउदयेप्राप्यते ॥ ३८ ॥

टबार्थ—मनःपर्यवज्ञान १ केवलज्ञान १ केवलदर्शन पांच संयम एटली मार्गणाए एक उच्चगोत्रनो उदय छे एवं १९ शेष मार्गणाइ उचगोत्र नीचगोत्र बे कर्मनो उदय छे, देशविरति मार्गणाइ तथा असंज्ञिमार्गणाइ आऊखा २ नो उदय छे, एक तिर्यंचनो एक मनुष्यनो ए बे आऊखानो उदय छे ॥ ३८ ॥

**गईजाईचउसुथावरि, संयममणनाणकेवलदुगंमि ।
एगतेउतिगेसु, वेयतिगेतिन्निउदयाई ॥ ३९ ॥**

टीका—गईजाईचउसु इत्यादि गतिर्नरकादिस्तत्रएकेकआयु उदयेप्राप्यते, तत्रनरकगतौनरकायु तिर्यग्गतौतिर्यगायु मनुष्यगतौ-मनुष्यायु देवगतौदेवायु उदयेप्राप्यते जातिषुएकेंद्रिय द्वींद्रियत्रीं-द्रिय चतुरिंद्रियलक्षणासुचतसृषुस्थावरेतिपृथ्व्यादिपंचस्थावरकायमा-र्गणासुएकतिर्यगायु उदयेप्राप्यते, संयमपंचकेसामायिकादिकेमनःप-र्यवज्ञानेकेवलज्ञानदर्शनद्विकाष्टमार्गणासुएकमनुष्यायुर्लक्षणउदयेप्रा-प्यते तेउत्रिगेतेजोपद्मलेश्याशुक्लेश्यालक्षणेलेश्यात्रिकेनरकायुर्वि-

नारीणिनरतिर्यग्देवलक्षणान्यायूषिउदयेप्राप्यन्तेवेयतिगोत्तिवेदत्रिवे-
नीणिनीणिआयू षिउदयेभवन्तिनपुंसकवेदेदेवायुर्विनात्रीणिस्त्रीवेदेपुरु-
षवेदेनरकायु विनात्रीणिआयू षिउदयेप्राप्यते ॥ ३९ ॥

टबार्थ —गति च्यार ने पोना २ नो एक आउखानो उदय छे जाति च्यारे एकेन्द्रि, विकलेन्द्रि, एहने विषे एक तिर्यंच आउखानो उदय छे थावर पाचमे एक तिर्यंचायुनो उदय छे सयम ५ मनपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, केवलदर्शन एटली मार्गणाये एक मनुष्यायु उदय छे तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ल-लेश्यामे नारकायु विना तीन आऊखानो उदय छे. वेदनीने तीन आऊखानो उदय नपुंसकवेदे देवायु विना २ नो उदय स्त्रीवेदे पुरुषवेदे नरकायु विना तीन आऊखानो उदय छे ॥३९॥

चत्तारियसेसासु, तिरिनिरियचेंदियोगत्तसअजये ।
चरकुदुहारगलेसे, भवसन्नीसुअडवीस ॥ ४० ॥

टीका—चत्तारिअ इत्यादिशेषासुत्रयस्त्रिंशत्मार्गणासुचत्वारि-आयूषिउदयेभवति जीवभेदेनएकजीवस्यएकस्मिन्भवेएकस्यैवायुष उदयोभवतिआयु कर्मण प्रदेशोदय विपाकोदयविनानास्ति-सक्रमोपिनास्तिएवज्ञेय अथमोहोदयविभजनाह तिरिइत्यादि ति-र्यग्नरगतिपचेन्द्रियजातियोगत्रिकत्रसकायाविरतिचक्षुरचक्षुर्दर्शनाहा-रकलेश्यापट्कभव्यसज्ञिलक्षणासुएकोनविंशतिमार्गणासुमोहनीयक-र्मण अष्टाविंशतिप्रकृतय उदयेप्राप्यते मार्गणोदयश्चमार्गणागना-'नेकजीवापेक्ष एकजीवोदयस्तु उदयभगकात्ज्ञेय ॥ ४० ॥

टबार्थ —शेषमार्गणाये च्यार आऊखानो उदय छे. हवे

मोहमार्गणा कहे छे तिरिगति मनुष्यगति पचेन्द्रि मार्गणाये तीन योग त्रसकायमार्गणाने विषे अविरतिमार्गणाइ चक्षु १ अचक्षुदर्शनमार्गणाइ आहारकमार्गणाये लेश्या ६ ने विषे भव्यमार्गणाये पुरुषवेदइ सज्ञीमार्गणाइ मोहनीकर्मनी अठावीस प्रकृतीनो उदय छे ॥ ४० ॥

नपुविणुदेवगईए, निरएपुरसित्थिहीणइगविगले।
थावरअसन्निएसु, असम्ममीसायचउवीस ॥४१॥

टीका—नपुविणु इत्यादि ॥ देवगतौनपुंसकवेद विनासप्तविंशतिर्मोहप्रकृतय उदयेप्राप्यते निरएत्तिनरकगतौपुरुषवेदस्त्रीवेदविनाषड्विंशति उदयेइगत्तिएकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय स्थावरपचकासज्ञिलक्षणासुदशसुमार्गणासुपुरुषस्त्रीवेदविनाषड्विंशति असम्यक्त्वसम्यग्मोहमिश्रमोहविनाचतुर्विंशति उदयेप्राप्यते ॥ ४१ ॥

टबार्थ—देवगतिमार्गणाये नपुसकवेदनो उदय नथी नरकमध्ये पुरुषवेद १ स्त्रीवेदविना २६ प्रकृतिनो उदय छे, मोहनिनो एकेंद्रिय १ विकल ३ थावर ५ असज्ञीमार्गणाये नपुसकवेदनो उदय छे, स्त्रीवेद पुरुषवेद ए बे वेदनो उदय छे नही, अने समकीतमोहनी १ मिश्रमोहनी १ ए ४ विना चोवीस प्रकृतिमोहनीनो उदय छे ॥ ४१ ॥

वेएदुवेअहीणा, अवारकमायाकसायचउगेसु।
मणनाणदुसामईए, चउदसथीहीणपरिहारे॥४२॥

टीका—वेएदुवेअहीणा इत्यादि ॥ वेदत्रिकेवेदद्वयहीनात्रपुरुषवेदेस्त्रीनपुसकवेदविनाषड्विंशति स्त्रीवेदेपुरुषस्त्रीवेदविनाषड्-

विंशति नपुंसकवेदेपुरुषस्त्रीवेदविनाषड्विंशति उदयेभवति क-
षायचउगेत्तिकषायचतुष्टेषु क्रोधमानमायालोभलक्षणेषुअनंतानु-
बंधिकषायद्वादशविनाषोडशउदयेप्राप्यन्ते मन पर्यवज्ञानसामायिक-
छेदोपस्थापनीयचारित्रेसज्वलनचतुष्कहास्यषट्कवेदत्रिकसम्यग्मोह-
लक्षणचतुर्दशप्रकृतय उदयेप्राप्यते परिहारविशुद्धौस्त्रीवेदविनाता-
एवत्रयोदशभवन्ति ॥ ४२ ॥

टबार्थ —पुरुषवेदमध्ये स्त्रीवेद नपुंसकवेदनी २६ नो उदय छे स्त्रीवेदमध्ये पुरुष नपुंसक विना २६ नो उदय छे नपुंसक-वेदमध्ये स्त्रीवेद पुरुषवेद विना २६ नो उदय छे क्रोधकषाय-मध्ये मान ४ माया ४ लोभ ४ ए बार विना १६ नो उदय छे मानमध्ये क्रोध ४ माया ४ लोभ ४ ए बार विना १६ नो उदय छे इम मायामध्ये १६ उदय इम लोभमध्ये १६ उदय छे मन पर्यव ज्ञानमध्ये सामायिकना भेद जाणवा १५ उदय छे परिहार विशुद्धिमध्ये स्त्रीवेद विना १४ उदय छे ॥४२

नाणतिगओहिदसे, वेअगसम्मेअमिच्छअणमीसा।
सम्मविणुदुसम्मत्ते, मीसजुआतेउमोस्सम्मि॥४३॥

टीका—तथांज्ञानत्रिकेअवधिदर्शनेवेदगत्तिवेदके क्षायोपशमसम्य-ग्दर्शने अमिच्छत्तिनविद्यन्ते मिथ्यात्वानंतानुबंधिमिश्रा इत्यनेनमि-थ्यात्वेमोहनीयअनंतानुबंधिचतुष्टयमिश्रमोहविनाद्वाविंशति उदयेप्रा-प्यन्ते,दुसम्मत्तेइतिद्विसम्यक्त्वेक्षायिकोपशामलक्षणेसम्यक्त्वद्विकेसम्म विणुइतिसम्यग्मोहनीयविनाइत्यनेनवेदकसम्यग्प्रायोग्याद्वाविंशति । सम्यग्मोहनीयरहिताएकविंशति उदयेप्राप्यते उभयोरपिनिरतिचा-रित्वात् जातिचारिताचक्षयोपशमगुणत्वतएवभवति मिसजुआइति-

वेउत्तिताएकविंशतिर्मिश्रमोहोदयेनयुक्ताद्वाविंशतिर्मोहस्यउदय मिश्रेप्राप्यते ॥ ४३ ॥

टवार्थ —मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान १ अवधिज्ञान अवधिदर्शन वेदक समकित ए मार्गणाए मिश्र १ अनंतानुबंधि ४ मिश्रमोहनी विना बावीस प्रकृतिनो उदय छे, वे समकितमध्ये उपशम तथा क्षायिकमध्ये समकितमोहनी विना २१ प्रकृति मोहकर्मनी उदय छे, मिश्रदृष्टिमार्गणाए मिश्रमोहनी मेलीइ तेवारे बावीसनो उदय छे ॥ ४३ ॥

केवलिदुगहरकाए, उदयाभावोअनाणतिगेसु ।*
छगसगवीसदेसे, अट्ठारसगवीसमणहारे ॥४४॥

टीका—णोकेवलिहरखाए इत्यादि केवलत्तिकेवलज्ञानकेवलदर्शनयथाख्यातचारित्रेणोनमोहोदय उपशांतमोहगुणस्थाने यथाख्यातचारित्रजनो। नमोहोदय सर्वथोपशात चातूमनिपातश्चरित्यद्वाक्षयकारणेनसत्ताभ्यिनत्वेनपुन प्रादुर्भाव क्षीणमोहादिषु मोहस्यचयोदयोदीरणसत्ताया सर्वथाअभावात्प्रतिपात इति सुहमिगलोभोत्ति, सूक्ष्मसंपरायचारित्रेइगत्तिएकएवसंज्वलनलक्षणस्य लोभस्यउदय, अज्ञानत्रिके उगसगवीसत्तिषड्विंशति सप्तविंशतिर्वाउदयेभवन्ति, तत्रयेषामतेमिश्रेज्ञानमिच्छंतितन्मतेसम्यग्मोहमिश्रमोहोदयविनाषड्विंशति, येचमिश्रेअज्ञानमिच्छंतितन्मतेमिश्रेसम्यग्मोहविनासप्तविंशति उदयेभवन्ति, देसेत्तिदेशविरतोअननातु-

* पाठांतरे ... सुमिगलोभोअनाणतिगेसु ।

यन्यप्रत्याख्यानद्वयकषायाष्टकमिश्रमिथ्यात्वोदयविनाशेया अष्टादशउदयेभवति, सप्तवीसत्ति, अनाहारकमार्गणाया मिश्रमोहोदय विनासप्तविंशति उदयेभवति ॥ ४४ ॥

टबार्थ —केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ यथाख्यातचारित्रे मोहनीकर्मना उदयनो अभाव छे, अज्ञानतीनने विषे केटलाएक आचार्यमते समकितमोहनी १ मिश्रमोहनी १ ए बे विना छवीसनो उदय छे, केटलाएक आचार्य मिश्रगुणठाणे अज्ञान तीन माने तेहने समकितमोहनी विना सत्तावीसनो उदय छे, अढारसगदेसविरतिमध्ये अढारनो उदय छे, अनंतानुबंधि ४ अप्रत्याख्यानी ४ समकितमोहनी १ मिश्रमोहनीए १० उदय नथी तिणे १८ नो उदय छे, अनाहारकमार्गणाये मिश्रमोहनी विना सत्तावीसनो उदय छे ॥ ४४ ॥

सासाणेपणवीस अभवमिच्छेसमिच्छछवीस ।
नामस्सपयडीओ, गुणठाणविहीउनायव्वा ॥ ६५ ॥

टीका—सासाणे इत्यादि सास्वादने दर्शनमोहनीयत्रयोदयविनापंचविंशति उदयेभवन्ति, सास्वादनस्योपशाताद्धाशत्वात्, अनंतानुबन्ध्युदयेदर्शनमोहत्रिकानुदयेचसास्वादनस्वापत्ति । अभव्यमार्गणायामिथ्यात्वोदयसहिता षड्विंशति मिथ्यादर्शनमार्गणायामिथ्यात्वोदयसहिता षड्विंशति इत्युक्तमार्गणासुउदयस्वामित्वमोहस्य, सांप्रतनामप्रकृती मार्गणासुउदयत्वेनविभजन्नाह ॥४५॥

टबार्थ —दर्शनमोहनी तीन विना सास्वादनगुणठाणे २५ पचवीसनो उदय छे, दर्शनमोहनी अभव्यमार्गणाये तथा मिथ्या-

त्वमार्गणाये मिथ्यात्वमोहनी मेळीये तेवारे २६ नो उदय छे, हवे नामकर्मनी बासठी मार्गणाये उदयनी प्रकृति कहे छे, गइइंदिय ए गाथाने अनुक्रमे तीस ऊप्पन्नपन्नास एगाथा जोडीने अर्थ करवो ॥ ४५ ॥

तीसअडदुपन्नासा, दुसुतीत्तीस(चउतिगतीस)तिगे-
सुपणतीस ।
गुणसट्ठीदुगतीस, इगतीसदोसुतीसच ॥४६॥

टीका—तिसअडत्ति ॥४७॥

टबार्थ —नरकगतिए तीस प्रकृतिनो उदय छे तिर्यंचगतिए अट्ठावन नामकर्मनो उदय छे मनुष्यने पचाश नामप्रकृतिनो उदय छे, देवगतिए तेत्रीस प्रकृतिनो उदय छे बेन्द्री, तेन्द्री, चोरेन्द्रीय ए तीन मार्गणाए ३५ प्रकृतिनो उदय छे पचेन्द्रिने गुणसठिनो उदय छे पृथ्वीकायने बत्तीसनो उदय छे, अपकायने इगतीसनो उदय छे तेउकायने वाउकायने तीस प्रकृतिनो उदय छे ॥ ४६ ॥

बत्तीसा(दुगतीसा)बासट्ठी, चउसगसट्ठी(पन्ना)त-
हेवसगसट्ठी ।
छपन्नाचउपन्ना, चउसट्ठीचउसुछासट्ठी ॥४७॥

टीका—दुगतीसा ॥ ४७ ॥

टबार्थ –वनस्पतीकायमध्ये बत्तीस प्रकृतिनो उदय छे, त्रसकायने बासठी प्रकृतिनो उदय छे, मनोयोगमध्ये चउपन्ननो

उदय छे वचनयोगे सत्तावननो उदय छे तिमज काययोगे सडसठीनो उदय छे, पुरुषवेदने छप्पननो उदय छे स्त्रीवेदने चोपन्ननो उदय छे, नपुसकवेदने चोसठीनो उदय छे कषाय ४ ने छासठीनो उदय छे ॥ ४७ ॥

तिसुसगवन्नाचोयाल, अडतीसदोसुदुतिचोसठी ।
पणपन्नदुचउचत्ता, चायालीदोसुगुणचत्ता ॥४८॥

टीका--तिसुसगवन्ना ॥ ४८ ॥

टबार्थ —मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधि ३ ए तीन मार्गणाने विषे सत्तावननो उदय छे मन पर्यवज्ञाने ४४ नो उदय छे केवलज्ञाने ३८ नो उदय छे मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान १ बे मार्गणाये चोसठीनो उदय छे विभगे पचावननो उदय छे चारित्र बेमध्ये सामाइक छेदोपस्थापनीयमध्ये चौमालीस प्रकृतिनो उदय छे परिहार विशुद्धिमध्ये ४२ प्रकृतिनो उदय छे सूक्ष्मसपराय १ यथाख्यात ए बेमध्ये ३८ नो उदय छे ॥ ४८ ॥

चोयालाचोसट्ठी, चउपन्नछसट्ठिसत्तपन्नाय ।
अडतीसतिलेसासु, चउसट्ठिछसट्ठिंभयणाए ॥४९॥

टीका--चोयालाचो इत्यादि ॥ ४९ ॥

टबार्थ —देशविरते चौमालीसनो उदय छे अविरतिमध्ये चोसठीनो उदय छे चक्षुदर्शने चोपन्ननो उदय छे अचक्षुदर्शने छासठीनो उदय छे अवधिदर्शनमध्ये सत्तावननो उदय छे,

केवलदर्शनमध्ये अटतीसनो उदय छे कृष्णनीलकापोत ए तीन लेश्यामध्ये च्यार गुणठाणा मानिये तो आहारक २ जिन विना चोसठीनो उदय छे अथवा [illegible] गुणठाणा मानिये तो जिननाम विना छासठीनो उदय छे एमजना जाणवी ॥ ४९ ॥

सगपणछपन्नासा, सगचउसट्ठीतहेवपणपन्ना ।
दुसुसग(सगअडवन्ना)नन्नाइगपन्न, गुणवन्ना(सट्ठी) तहयचउसट्ठी ॥ ५० ॥

टीका—सगपणछपन्नासा इत्यादि ॥ ५० ॥

टबार्थ—तेजोलेश्याए सत्तावननो उदय छे, पद्मलेश्याए ५५ नो शुक्ललेश्याए ५६ प्रकृति नामकर्मनो उदय छे भव्यने सडसठीनो उदय छे अभव्यने चोसठीनो उदय छे उपशमने पचावननो उदय छे क्षायिकने क्षयोपशमने सत्तावननो उदय छे सास्वादन गुणे इगुण पचासनो उदय छे तिम वळी मिथ्यात्व गुणठाणे चोसठीनो उदय छे ॥ ५० ॥

अडवन्नाठयाला, तिसट्ठीपण(अड)तिसनामकम्मस्स।
उदओमग्गणठाणे, गईआईकमेणणेयवो ॥५१॥

टीका—अडवन्ना इत्यादि । एव गाथाषट्कस्यसमुदिताएव-व्याख्या तत्रनरकगतौनाम्नस्त्रिंशत्, तिर्यग्गतौअष्टपचाशत्, मनुष्यगतौद्विपचाशत्, देवगतौचतुस्त्रिंशत्, एकेन्द्रियेत्रयस्त्रिंशत्, विकलत्रिकेपचत्रिंशत्, पचेन्द्रियेएकोनषष्टि पृथ्व्यांद्वात्रिंशत्, अप्कायेएकत्रिंशत्, अग्निकायेएकोनत्रिंशत्, वायुकायेत्रिंशत्,

वनस्पतिकायेद्वात्रिंशत्, त्रसेद्विपष्टि मनोयोगेचतु पचाशत्, वचनयोगेसप्तपचाशत्, काययोगेसप्तषष्टि पुरुषवेदेषट्पचाशत्, स्त्रीवेदेचतु पचाशत्, नपुसकवेदेचतु षष्टि कषायचतुष्केषट्षष्टि, त्रिषुमत्यादिज्ञानेषुसप्तपचाशत्, मन पर्यवज्ञानेचतुश्चत्वारिंशत्, केवलज्ञानेअष्टत्रिंशत्, दोसुचि, द्वयोर्मतिज्ञानश्रुतज्ञानयोश्चतु षष्टि विभगेपचपचाशत्, दुईत्तिसामायिकच्छेदोपस्थापनीयेप्रत्येक चतुश्चत्वारिंशत्परिहारेद्विचत्वारिंशत, सूक्ष्मसपराययथाख्यातयो एकोनचत्वारिंशत्, चत्वारिंशद्देशविरताचतुश्चत्वारिंशत्, अविरतौचतु - षष्टि चक्षुर्दर्शनेचतु षष्टि, अचक्षुर्दर्शनेषट्षष्टि अवधिदर्शनेसप्तपचाशत्, केवलदर्शनेअष्टत्रिंशत्, तिलेसासुत्तिकृष्णनीलकापोतलक्षणासुतिसृषुलेश्यासुयदिगुणस्थानचतुष्टयमगीक्रियते तदाजिननामाहारकद्विकोदयविनाचतु षष्टि अथवाप्रमत्तयावत् षड्गुणस्थानकानिमन्यन्तेतदा जिननामविनापट्षष्टि एवभजनाभवति, अन्येचतुष्टयइच्छति तेप्रतिपद्यमानकायलेश्या नयतुगुणस्थानचतुष्टयेभवति, पूर्वप्रतिपन्नाश्चलेश्यान्यतुप्रमत्तयावत्प्राप्यते, यद्यपिविशुद्धिवशताहीयमानाप्रतन्वीतथापिसत्वेनगृहीतस्याइतिपूर्वप्रतिपन्नापेक्षया " छिज्जमाणेछिन्ने " एतद्वचनापेक्षयागत्वरत्वान्नागीकार, यथासास्वादनस्याज्ञानकर्मग्रथिकानामिति भावनयापेक्षया तुसूक्ष्माशस्यापिसत अग्रहणेदोष तेनग्रहणयथासिद्धावेसास्वादने ज्ञानइति तेजोलेश्यायासप्तपचाशत् पद्मलेश्यायापचपचाशत्, शुक्ललेश्यायापट्पचाशत्, भव्येसप्तसप्ति, अभव्येचतु षष्टि उपशमेसम्यग्दर्शनेपचपचाशत्, वेदकेसप्तपचाशत्, क्षायिकेअष्टपचाशत्, मिश्रेएकपचाशत् सास्वादनेएकोनषष्टि मिथ्यात्वेचतु षष्टि, सज्ञिमार्गणायाअष्टपचाशत्, असज्ञिमार्गणायापट्चत्वारिंशत्, आहारकेत्रिषष्टि अनाहारकेअष्टत्रिंशत्, एवनामकर्मण उदय मार्गणा-

स्थानकेगत्यादिक्रमेणज्ञातव्य इत्युक्तमुदयस्वामित्वमार्गणासु, सा-प्रतमुदीरणास्वरूपनिदर्शयन्नाह ॥ ५१ ॥

दवार्थ —सज्ञीनेजाति ४ आनुपूर्वी ४ आतपविना अठावननो उदय छे, असज्ञिने छेतालीसनो उदय छे, आहारकने त्रेसठीनो उदय छे, अनाहारकने पात्रीसनामकर्मनी प्रकृतिनो उदय छे, उदयनि प्रकृतिमार्गणाने विषे गति आदिकने अनुक्रमे जाणवी ते समजी लेज्यो ॥ ५१ ॥

मूलोदीरणठाणा, सडअडछपचदुन्निनेयव्वा ।
उत्तरउदीरणाए, उदयसमापयडिसरााय ॥ ५२ ॥

टीका—मूलोदीरण इत्यादि तत्रमूलोदीरणास्थानानिपच, प्रथमसप्तकर्मोदीरणारूप तत्रयेजीवाभवान्त्येएकावलिकाशेषेमातमासस्यप्रथमप्रमुदीरितस्योदयात् शेषस्याभावात् नउदीरणातेनआयुर्वर्जसप्तकर्मोदीरणारूप प्रथमस्थानसर्वससारिणासर्वमपिभवयावत् अष्टाना उदीरणातत्रअमितत्वायुरुदयेतुउदीरणोदयश्चैकमेवसमयतसमयातरयदाचअप्रमत्तामिधानेगुणस्थानेप्राप्तस्तदाविशुद्धिमाधल्येनवेदनीयायुष नोदीरणा, तेनपण्णामेवोदीरणा, सूक्ष्मसपरायेतुसज्वलनलोभस्यचरमग्रासोदयात् तेनवेदनीयायुर्मोहनीयोदीरणाभावात्, पचानामेवोदीरक क्षीणमोहस्यप्रथमासरयेयसमयपयावत् पचानामुदीरणाक्षीणमोहस्यावलिकाशेषे सतिज्ञानावरणीयदर्शनावरणीयातरायस्योदीरणा व्युच्छिन्ना, तेननामगोत्रयोर्द्वयोरुदीरणाभवति, मार्गणासुउदीरणास्थानानिगुणस्थानकवत्भावनीयानि, तत्रमनुष्यगतौपचेंद्रियेत्रसकायेयोगत्रयेमत्यादिज्ञानचतुष्ट्ये दर्शनत्रिकेशुक्लेश्यायाभव्यक्षायिकाहारकसज्ञिलक्षणासुअष्टादशसुसर्वाण्यप्युदीरणा-

स्थानानि, नरकादिगतित्रिकइंद्रियचतुष्ककायपचकअज्ञानत्रिकदे-शविरताविरतिलेश्यात्रिकभावमभव्यसास्वादनमिथ्यात्वासंज्ञिलक्षणा-सुसप्तअष्टौद्वेउदीरणास्थानेवेदत्रिककषायत्रिकसामायिकछेदोपस्थाप-नीयतेज पद्मवेदकमार्गणासुसप्तअष्टौपदइति त्रीणिउदीरणास्थानानि, सञ्ज्वलनलोभेसप्तअष्टौपदपच, परिहारेअष्टौपट्, सूक्ष्मसपरायेषट्पच, यथाख्यातेपचद्वेउपशमेअष्टौपचषट्, मिश्रेअष्टौ, अनाहारे द्वेकेवल-द्विकेद्वयोरेवउदीरणास्थानानिउत्तरोदीरणाया संक्षिप्तन्नाह ॥ ५२ ॥

टबार्थ—उदीरणाना मूलथानक ५ छे सातनो आऊखा विना आऊखा सहीत आठनी उदीरणा आऊखावेदनी विना सातमे गुणठाणे आठमे नवमे गुणठाणे ६ नी उदीरणा छे, मोहनी विना दशमे इग्यारमे बारमाने प्रथमभाग पर्यंत पाचनी उदीरणा, ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ अतराय विना बेनी उदीरणा तेरमे गुणठाणे छे, प्रकृति उत्तर तेहनी सख्या १२२ नी उदयनी रीते जाणवी ॥ ५२ ॥

मणुआउवेयणीय, अपमत्ताओपरलुनोदीरइ ।
बारसअयोगिपयडिनो, दीरइअकरणोवीरीओ ॥५३॥

टीका—मणुआऊ इत्यादि मनुष्यायुर्वेदनीयद्वयअप्रमत्तात् परउपरिनउदीरयति, अप्रमत्तादिषुविशुद्धवीर्यत्वात्घ्यानाद्यालंबक-त्वाच्चपूर्वस्वतएवोदयावलिकाक्षिप्तवेदनीय तथा मनुष्यायु उदये-लभ्यतेनोदीरणाकरणेन तथा द्वादशअयोगिगुणस्थानस्या प्रकृतय-उदयेसतिनोदीरणाया येनकरणवीर्येणनामचलवीर्येणोदीरणाभवति, अयोगिगुणस्थानकेकरणवीर्यस्याभावात् अकरणवीर्यत्वेनोदीरणा-इति तथाचचरमप्राप्तत्वात्नोदीरणाभवति ॥ ५३ ॥

टवार्थ —मनुष्यआयुवेदनी २ प्रमत्तगुणठाणा सुधी उदीरे, अप्रमत्तथी पछी उदीरे नही, अयोगिगुणठाणे बार प्रकृतिनो उदय छे वेमाटे उदीरणा नथी ॥ ९३ ॥

सेसासवापयडी, आवलियसेसगाओउदयम्मि।
नोदीरइअपडीगाही, पडिग्गहीउदयतुछाओ ॥५४॥

टीका—सेसासवा इत्यादि । शेपा सर्वा सत्ताधिकशतरूपा प्रकृतय यावत्त क्षपककालात् आवलीभोगयोग्यादलिका अवशेषा-उदयरूपेभवन्ति तदानोदीरणाचरमग्रासत्वात्द्रुतिना वा अपतद्ग्रा-हिण्य अपतद्ग्राहित्वतुयासामप्रकृतीनाचरमोंश अ यप्रकृतिपुनस-ग्रामतिनाअपतद्ग्राहिण्य सज्वलनलोभप्रमुखा पुन यासामप्रकृ-तीनाचरमोंश अन्यासुप्रकृतिपुसक्रम्यक्षपयति, पुरिसोकोहेकोहं-माणेचमाणमायाएमायलोभेणतद्रूपेणना प्रकृतय पतद्ग्राहिण्य-इत्युच्यते, ता ाचरमोग्रास अ यसक्रमणेनअन्यप्रकृतित्वमाप्यउदय-त्वेनावलिकाशेषेउदीरणाऽभाव किंतुउदयोदीरणायां समकालमे-वाभाव अत्र अपतद्ग्राहीचरमावलिकायाउदय भवतिपरनउदी-रणाभवतिया पतद्ग्राहिण्य तासाउदयोदीरणा समकालएवव्युच्छि-द्यते, एतउत्तरोदीरणास्वामित्वस्वत उदयस्वामित्वतत्वभा य अय-मार्गणासुचतुरशीतिलक्षयोनिसख्याविभजनाह ॥ ९४ ॥

टवार्थ —शेष जे प्रकृति रही ते जेवारे उदयमध्ये एक आवली शेष रहे तेवारे उदयपणे छे, परउदीरणा नथी, जे ते काले सत्तामध्ये अनुदितदल रह्या नथी जे उदीरे तेमाटे आव-लीका शेषकाले उदीरणा पण नथी, अपडीगाहि (अप्रतिग्राही) प्रकृतिने ए रीते छे — अपडिगाहीनो छेहलो अश कोई मे न-

सक्रमे तेमाटे इम छे, अने पडिगाहिप्रकृतिने तो उदय तथा उदीरणा भेलीज छे उदयनो अनतमो भाग सवली प्रकृतिमे भेली खपावे छे तेमाटे हवे चोरासीलाख जीवाजोनीउ स्वरूप कहे छे ॥ ५४ ॥

पुढवाईसुपत्तेय, सगवणपत्तेयणतदसचउद ।
विगलेसुदुदुसुरनारय, तिरिचिउचउदसनरेसु ॥५५॥

टीका—पुढवाईसुपत्तेय इत्यादिपूर्वव्याख्यातायुत ॥५५॥

टबार्थ—पृथिवीकायनी सातलाख योनि छे, अप्कायनी सातलाख योनि छे, तेउकायनी सातलाख योनि छे, वाउकायनी सातलाख योनि छे, वनस्पतिकायमध्ये प्रत्येक वनस्पतिनी १० लाख योनि छे, साधारण वनस्पतिनी १४ लाख जीवायोनि छे, बेन्द्री, तेन्द्री, चौरेन्द्री एहनी प्रत्येके बे ने लाख योनि छे, देवताने च्यार लाख, नारकीने च्यार लाख, तिरियचने ४ लाख तथा मनुष्यने १४ लाख योनि छे ते मिल्याथका चोरासी लाख जीवायोनि छे गतिच्यारमाहे २६ लाख जीवायोनि इद्रीमार्गणाये सवली लाभे काय ६ माहे सघली लाभे मनोयोगे २६ लाख, वचनयोगे ३२ लाख, काययोगे सरव लाभे, पुरुषवेदे २२ लाख लाभे, स्त्रीवेदे २२ लाख लाभे, नपुसकवेदे ८ लाख लाभे, कषाय ४ माहे सरव लाभे ॥५५॥

एगिंदिएसुपचसु, बारसगतिसत्तअट्ठवीसाय ।
विगलेसुसत्तअडनव, जलखहचउपयउरगभुयगे ५६॥

टीका—एगिंदिएसुइत्यादि अथकुलकोटिमानमाह, एकेंद्रियेषु

पचसुपृथिव्यादिषुपृथिवीकायेद्वादशलक्षा कुलकोटीना, आप्कायेसप्तलक्षा कुलकोटीना, अग्निकायेत्रयोलक्षावायुकायेसप्तलक्षा वनस्पतिकायेअष्टाविंशतिलक्षा विगलेत्ति, द्वीन्द्रियादिद्वीन्द्रियेसप्तलक्षा त्रीन्द्रियेअष्टौलक्षा चतुरिन्द्रियेनवलक्षा कुलकोटीना जलचरेसार्द्धद्वादशलक्षा, खचरस्यद्वादशलक्षाश्चतुष्पदस्यदशलक्षा कुलकोटीनाभवन्ति, उरपरिसर्पस्यदशलक्षा भुजपरिसर्पस्यनवलक्षा अमरस्यषड्विंशतिलक्षा नारकस्यपचविंशतिलक्षा कुलकोटीनाभवति सर्वत एकाकोटिसप्तनवतिलक्षा पचाशत्सहस्राणिकुलानाभवन्ति, एवगाथाद्वयवाच्यम् ॥ ५६ ॥

टबार्थ—हवे कुल कोडी कहे छे, एकेन्द्रिमे प्रथविनी बारलाख कुल कोडी, अपकायने सातलाख कुल कोडी, तेउकायनी तीनलाख कुल कोडी, वायुकायने सातलाख कुल कोडी, वनस्पतिने अट्ठावीसलाख कुल कोडी, बेन्द्रीने सातलाख कुल कोडी, तेन्द्रीने आठलाख कुल कोडी, चौरेन्द्रीने नवलाख कुल कोडी, जलचरमे साढीबारलाख कुल कोडी, खेचरने बारलाख कुल कोडी जाणवी ॥ ५६ ॥

अड्ढतेरसबारस, दसदसनवगनरामरेनिरए।
बारसछवीसपणवीस, हुतिकुलकोडिलरकाइं ॥५७॥

टीका—अथमार्गणासुयोनिसख्यामाह । नरकगतौचत्वारोलक्षामनुष्यगतौचतुर्दशलक्षा, देवगतौचतस्त्रस्तिर्यग्गतौद्वाषष्टि योनय, एकेन्द्रियाणाद्विपचाशत्, द्वीन्द्रियेद्वे, त्रीन्द्रियेद्वे, चतुरिन्द्रियेद्वे, पचेन्द्रिये षड्विंशति, पृथिव्यादिषुचतुर्षु सप्तसप्त, वनस्पत्याचतुर्विंशति, त्रसेद्वात्रिंशत्, मनोयोगेषड्विंशति, वचनयोगेद्वात्रिंशत्,

काययोगेचतुरशीति, पुरुषस्त्रीवेदेद्वाविंशति, नपुंसकेअशीति कषायेषुचतुरशीति, रूपत्रयेषड्विंशति, मन पर्यवकेवलेचतुर्दश, अज्ञानद्वयेचतुरशीति, विभंगेषड्विंशति, संयमपंचकेचतुर्दश, देशविरतौअष्टदश, अविरतोचतुरशीति, चक्षुर्दर्शनेअष्टाविंशति, अचक्षुर्दर्शनेचतुरशीति, अवधिदर्शनेपड्विंशति, केवलदर्शनेच-तुर्दश, आद्यलेश्यात्रयेचतुरशीति, तेजोलेश्यायापट्चत्वारिंशत्, पद्मशुक्लयोर्द्वाविंशति, भव्येअभव्येचचतुरशीति, दर्शनत्रयेमिश्रेच-षड्विंशति, सास्वादनेपदपचाशत्, मिथ्यात्वेचतुरशीति, संज्ञि-मार्गणायापड्विंशति, असंज्ञिमार्गणायापदसप्तति, आहारका-नाहारकयोश्चतुरशीति, एवंकुलकोडीसंख्या अपियथासंभवंयुक्त्या तथाविज्ञेयाइति । सामान्येनयथागमंच अन्यथासंभवमिति अन-योनिरुत्पत्तिस्थलेप्रथमाहारपुद्गलानां स्वरूपेणभाविना तेनअपर्याप्त पर्याप्तापेक्षयाभेदोनापेक्षित, मनुष्येपुकर्मभूम्यकर्मभूमिभेदोऽपिनापे-क्षित । प्रथमाहारयोग्यपुद्गलानांवर्णादितुल्यत्वेनयोनिस्तेनभेद-ताऽभवतिकुलकोटीकथंचिन्भेदतासंभवेपिआगमेभिन्नत्वेनोक्तत्वात् अत्रापिनोक्त इतिउक्तेयोनिकुलकोटिद्वारे ॥ ५७ ॥

टबार्थ —चौपदने दस लाख कुल कोडि, उरपरिसर्पने दस लाख कुलकोडि, भुजपरिसर्पगोहनोलीयाप्रमुखनी नवलाख कुल कोडी जाणवी, मनुष्यने बार लाख कुल कोडी, देवताने छवीस लाख कुल कोडी, नारकीने पचवीस लाख कुल कोडी, मिल्या सर्वे एक कोडी साडासत्ताणुलाख कुल कोडी छे ॥ ५७ ॥

जोणीकुलकोडीओ, मग्गणठाणेसु जत्थसंभवइ ।

विज्ञे सामन्नेणजहासंख ॥ ५८ ॥

टीका—अथमार्गणासुसचाद्वार मूलोत्तरभेदेनकथयन्नाह, अन-सत्ताद्वारस्यप्रथमवक्त येऽपियोनिकुलकोटिद्वारेपूर्ववर्णिते सूचीकटा-हन्यायेनचपृच्छकम्याशयक्रमेणवेति ॥ ५८ ॥

टबार्थ —योनि तथा कुल कोडी मार्गणास्थानके जे जिहा जिम सभवे ते तिहा तिम कहेवा सामान्ये विशेष एहना यनकथी जोइ लेवा ॥ ५८ ॥

तसनरपणिंदियोगे, हरकाएसुकभवसन्नीसु ।
आहारेतिगसत्ता, दुगसत्तानाणदसेसु ॥ ५९ ॥

टीका—"तसनर" इत्यादि त्रसकायमनुष्यगतिपचेन्द्रियजा-तियोगनय यथाख्यानशुक्ललेश्याभव्यक्षायिकसज्ञिआहारकलक्षणासु-तिगसत्ता त्रीणिसत्तास्थानानि, अष्टोउपशातमोहयावत् क्षपकश्रे-णौसूक्ष्मसपरायपर्यंतेमोहस्यसत्त्वेयाक्षयात्, क्षीणमोहेसप्तकर्मणासत्ता सयोगि अयोगिगुणस्थाने अघातिचतुष्टयसत्ता, दुगसत्ताइतिज्ञान-चतुष्केमत्यादिकेदर्शनत्रिकेद्वेसत्तास्थाने, अष्टौनयासप्त नचतूरूपासा-यकेवलिनाआसाचसप्तानामागणानाछेद्म(छद्म)स्थत्वात् ॥ ५९ ॥

टबार्थ —त्रसकायमनुष्यगति पचेंद्रिजातियोग ३ यथा-ख्यात चारित्रशुक्लेश्याभव्य १ सज्ञीमार्गणाये आहारकमार्ग-णाये तीन सत्तास्थानक छे ८ तथा मोह विना ७ तथा घाति विना ४ नी सत्ता छे ज्ञान ४ दर्शन ३ ने विषे ८ तथा ७ ये सत्ताथानक छे ॥ ५९ ॥

अट्ठचउअणहारे, केवलदुगिचउरसेसअडसत्ता ।
निरएदेवाउविणा, तिरिएजिणहीणसत्ताओ ॥६०॥

टीका—अट्टचउ इत्यादि । अनाहारकमार्गणायाद्वेसत्तास्थाने तत्रअष्टानासत्ता अंतरालगतिकानाचतसृणासत्ता, केवलिसमुद्घातायोगिगुणेप्रतीत्य केवलद्विगं, केवलज्ञान केवलदर्शनलक्षणासुमार्गणासुअघातिचतसृणासत्ता, शेपासुमार्गणासुअष्टौसत्ता, इत्युक्ता मूलसत्ता, अथोत्तरसत्तास्थानान्याह, निरए नरकगतौनैरयिकाणादेवायुरहिता सप्तचत्वारिंशत्शतसत्तायामवत्तस भवतिइतिसबन्ध, तिर्यग्गतौ जिनहीनात्ति, जिननामरहिता सप्तचत्वारिंशच्छतसत्ताप्राप्यते, भवस्वभावादेवनहिजिननामसत्ताक तिर्यग्गनावुत्पद्यते ॥ ६० ॥

टवार्थ —अनाहारकिमार्गणाए आठ तथा ४ ए २ सत्तास्थानक छे केवलज्ञान १ केवलदर्शनमार्गणाये ४ सत्ता छे शेपमार्गणाये सर्वने आठनी सत्ता छे नरकगतिमध्ये देवनाला आउखानी सत्ता नथी शेप १४७ नी सत्ता निरिपचगतिमध्ये जिननाम सत्ता नथी शेप १४७ नी सत्ता छे ॥ ६० ॥

निरयाउविणादेवे, थावरतिगिजाईचउसुअजिणाय। देवनिरयाउहीणा, तेउजुयलेनराउविणा ॥ ६१ ॥

टीका—निरयाउविणादेवेइत्यादि ॥ निरयाउविणादेवे नरकायुर्विनासप्तचत्वारिंशत्शतदेवगतौसत्ताप्राप्यते, स्थावरत्रिकेपृथ्वीअपवनस्पतिरूपेजातिचतुष्के एकेंद्रियादिलक्षणेअजिणाय इतिजिननामरहिताचपुन देवनरकायुर्हीनापचचत्वारिंशत्शतसत्तायाभवति, तेउजुअले तेजोवायुकायलक्षणेनरायुविणाइति मनुष्यायुर्विनाचतुश्चत्वारिंशत्शतसत्तायामाप्यते, अनदेवद्विकनरकद्विकमनुष्यादिकवैक्रियचतुष्काहारकचतुष्कजिननामइतिपचदशनामप्रकृतीनाआयु निकसि-

असम्यग्मोहसत्ता तेजोवायुकायेनास्ति तथापिकर्मप्रकृतीसत्त्वप्रदे-शसत्ताकस्यचित्अक्षपितकर्मांशस्यभवति तेनोक्तापिप्रवाहव्या-ख्यायातुअष्टाविंशत्युत्तरशतसत्ताप्राप्यते गइतसिवेउविहारनर-हीणातनवैक्रियोपलक्षितदेवनिकनरकत्रिकेवैक्रियचतुष्कआहारकच-तुष्कमनुष्यत्रिकउपलक्षणेनउच्चैर्गोत्रमित्यादिग्रहणम् ॥ ६१ ॥

, टबार्थ—देवगतिमध्ये नरकायु विना १४७ नी सत्ता छे, थान २३ पृथिवी १ अप २ वनस्पतिमध्ये जिननाम विना देवायु १ नरकायु विना एकसोपिस्तालीसनी सत्ता छे । तेउ-कायवाउकायमध्ये देवतानो आऊखो १ नरकायु १ मनुष्यायु १ जिननाम एटलानी सत्ता नथी १४४ नी सत्ता छे ॥ ६२ ॥

सासणमीसअसन्निसु, जिणविणुआहारसम्मीसविणा॥
अभवेरक्खायगसम्मे, सत्तविणु हुंति इगचत्ता ॥६२॥

टीका—सास्वादने तथा मिश्रेअसंज्ञिषु जिननामविनासप्त-चत्वारिंशत्शतअभव्येजिननामाहारकचतुष्कसम्यग्मोहविनाएकच-त्वारिंशत्शतसत्ताप्राप्यते स्वयमेति क्षायिकसम्यग्दर्शनेसत्तविणु-अनन्तानुबंधिचतुष्कदर्शनमोहत्रिकलक्षणसप्तकविनाएकचत्वारिंशत्श-तसत्ताप्राप्यतेइति ॥ ६२ ॥

टबार्थ—सास्वादन १ मिश्र १ तथाअसंज्ञीनेविषेजिननाम-विना १४७ नी सत्ता छे । आहारक ४ समकितमोहनी विना अभव्यमार्गणाये एकसो एकतालीसनी सत्ता छे । क्षायिकसमकि-तमध्येअनंतानुबंधी ४ मिथ्यात्वमोहनी १ मिश्रमोहनी १ सम-कितमोहनी १ ए सात विना एकसो एकतालीसनी सत्ता छे॥६२॥

केवलदुगिपणसीइ, खवगसुहुमेदुसयदुक्खाए ।
एगसयसेसासुअ, अट्ठाउसयचसतंसा ॥ ६३ ॥

टीका—केवलदुगिइत्यादि केवलज्ञानकेवलदर्शनेपचाशीति सत्तायामाप्यते त्रयोदशगुणस्थानप्रायोग्या सूक्ष्मसंपरायचारित्रेक्षपकश्रेणिगतसूक्ष्मसंपरायस्यद्व्यधिकशत सत्तायामाप्यतेऔपशमिकसूक्ष्मसंपरायस्यअष्टचत्वारिंशत्शतसत्तायामाप्यते तथाहन्खाएत्तियथाख्यातचारित्रे क्षपकश्रेणिगतस्यएकाधिकशत औपशमिकयथाख्यातस्यअष्टचत्वारिंशत्शत सेसासुअ शेषासुमार्गणासुअष्टचत्वारिंशत्शतसत्तायाभवति ॥ ६३ ॥

टबार्थ—केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ मध्ये पचाशीनी सत्ता छे, क्षपकश्रेणि सूक्ष्मसंपरायने एकसोदोय १०२ नी सत्ता छे, उपशमश्रेणि सूक्ष्मसंपरायने एकसो अडतालीसनी सत्ता छे, यथाख्यातचारित्रेक्षपकश्रेणीने एकसो एकनी सत्ता छे, उपशमश्रेणीने एकसो अडतालीसनी सत्ता छे, शेषमार्गणाये एकसो अडतालीसनी सत्ता छे ॥ ६३ ॥

सवासुगोयवेयणीय, केवलदुगिहीणनाणविग्घाण ।
बीएकम्मे एव, नव छ सताअहक्खाए ॥ ६४ ॥

टीका—इत्युक्तासर्वमार्गणासुसत्ता सांप्रतज्ञानावरणादिकर्मणासत्तामार्गणासुविभज्यदर्शयन्नाह । सवासुगोयइत्यादि सर्वासुद्विषष्टिलक्षणासुमार्गणासुगोत्रवेदनीयस्यद्वयद्वयमसत्तायामाप्यते तेजोवायुकायेनीचैर्गोत्रएकाएवसत्त्वप्राप्यतेगाथयानुक्तमपि समतिकातोवाच्य केवलद्विणत्ति केवलज्ञानदर्शनद्वयरहितासुशेषासुषष्टिमार्गणासुज्ञाना-

रणीय अनरायसत्तायामाप्यते केवलद्विके नमाप्यते ॥ बीएकम्मे- एउनीएत्ति द्वितीयेकर्मणिदर्शनावरणीयेएवज्ञानावरणीयवत्नवरयथा- ख्याते औपशमिकयथाख्याते दर्शनावरणादिनवकस्यसत्ताक्षपकय- थाख्याते दर्शनावरणीयस्यमत्यानर्द्धिनिरहिनाषट्प्रकृतिसत्ताएवसू- क्ष्मसपरायेऽपि ॥ ६४ ॥

टबार्थ —कर्मनी भिन्न भिन्न सत्ता कहे छे। गोत्रकर्म १, वेदनीकर्मनी सत्ता सर्व मार्गणा विषे छे। केवलज्ञान केवलदर्शन- मध्ये ज्ञानावरणीय २ अनगयनी सत्ता नथी, बीजी सर्व मार्ग- णाये ए बे कर्मनी सत्ता छे बीजो कर्मदशनावरणीयनी सत्ता, पिण केवलदुगमध्ये तथा यथाख्यातचारित्रमध्ये उपशमश्रेणिने नवनी सत्ता छे ॥ ६४ ॥

केवलदुगिहक्खाए, खीणेनोसत्तमोहकम्मस्स। सुहुमेअडवीसया, हुंगंचअभवेअडवीस ॥ ६५ ॥

टीका—अथ [illegible] या ॥ केवलदुगित्यादि केवल- ज्ञानकेवलदर्शने तथा यथाख्यातेक्षीणेत्तिक्षपकेमोहस्यसत्तानभवति; औपशमिकेयथाख्यातेअष्टाविंशति, सत्कर्मा "सुहमे" सूक्ष्मसंपरायेवा- इतिपक्षांतरेअष्टाविंशतिसत्कर्माउपशमश्रेणिमपेक्ष्यक्षपकसूक्ष्मसंपरा- येएकः सज्वलनलोभ सत्तायामाप्यते अभवेय अभव्येसम्यग्मोहमिश्र- मोहविनापड्विंशतिसत्तायन मिथुजकरणेकृतेअष्टाविंशति सत्कर्मा- भवति तच्चभव्यानामेवभवति अभव्यस्यानादयनंतमिथ्यात्वंभवनि- यथाप्रवृत्तिकरणयावत् नअपूर्वकरणादिनाग्रंथिभेद अभिनग्रंथिकः एवअभव्या अत षड्विंशतिरेवसत्ताभवति ॥ ६५ ॥

टबार्थ —केवलदुगने विषे केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ ए

केवलद्विक तथा क्षपकश्रेणि यथाख्यातमे मोहनीकर्मनी सत्ता नथी, सूक्ष्मसपराय उपशमश्रेणिने मोहनीकर्मनी अटावीसनी सत्ता छे, क्षपकसूक्ष्मसपरायने एक लोभसज्वलननी सत्ता छे, अभव्यने छवीसनी सत्ता छे, जे कारणे ग्रथिभेदी थई त्रिपुजीकरण कर्यां पछी मिश्रमोहनी १ समकितमोहनी १ ए बेनी सत्ता थाये तेतो ग्रथीभेद तो भव्यनेज थाये, अभव्यने अनादिअनत मिथ्यात्व छे तिणे छवीसनी सत्ता छे समकितमोहनी मिश्रमोहनीनी सत्ता नथी ॥ ६५ ॥

सेसासुअट्ठवीस, इगवीसतिसतनिरयदेवेसु ।
पणिंदियविगलेसु, थावरतिगितिरियनरसत्ता ॥६६॥

टीका—सेसासुइत्यादि शेषासुमार्गणासुअष्टाविंशति मोहस्यसत्ताभवति, क्षायिकेसम्यक्त्वेएकविंशतिर्मोहसत्ताभवति, आयुत्रिकनरकगतौनरकतिर्यग्मनुष्यायुर्लक्षणसत्तायाभवति, देवगतौदेवायुस्तिर्यगायुर्मनुष्यायुस्त्रयसत्तायालभ्यते, एकेंद्रियमार्गणायाविकलत्रिकमार्गणायापृथिवीअप्वनस्पतिरूपेस्थावरत्रिकेतिर्यगायु नरायुर्लक्षणआयुर्द्वयसत्तायाप्राप्यते ॥ ६६ ॥

टबार्थ—शेषमार्गणा जे रही तेहने विषे अटावीसनी सत्ता छे आयुखाकर्मनी नरकगति तथा देवगतिमध्ये तीन आऊखानी सत्ता छे नरकने देवायु सत्ता नथी देवताने नरकायु सत्ता नथी किम जो नरकथी नीसर्यो देवता न थाये अने देवताथी नीसर्यो नारकी न थाय तिणे नरकगतिमध्ये ने देवगतिमध्ये तीन आऊखानी सत्ता छे, एक जे देवगतिमा देवायु, नरायु, तिर्यचायु ए ३ लाभे नरकगतिमध्ये नरकायु, नरायु, तिर्यचायु ए ३ लाभे

इत्यर्थ एकेन्द्रियमार्गणाये विकल तीनमध्ये पृथिवी, अप् वनस्पति ए तीनमध्ये तिर्यंच १ मनुष्यायु सत्ता छे २ नी देवताना आउखानी नरकना आउखानी सत्ता नथी जे ए मार्गणावाला मरी देवता नारकी न थाये ते माटे ॥ ६६ ॥

गइतसितिरियकेवल, दुगिमणुआउसुहुमअहक्खाए।
खीणेमणुअसते, चउसेसासुचउगति ॥ ६७ ॥

टीका—गइतसितिरिय इत्यादि । गतित्रसेतेजोवायुकायलक्षणेएकतिर्यगायु प्राप्यते, केवलद्विगि केवलज्ञानदर्शनलक्षणेमनुष्यायु प्राप्यते, सूक्ष्मसंपरायेयथाख्याते क्षपकेएकमनुष्यायु , उपशमेसूक्ष्मसंपरायेयथाख्यातेदेवायुमनुष्यायु सत्तायाभवति, अत्र कर्मग्रथासिमायेतुदेवायु सत्ताक एवमनुष्य उपशमश्रेणिंअधिरोहतिनतिर्यग्नरकायु सत्ताक उपशमश्रेणिंअधिरोहति, शेषासुमार्गणासुचउगतिआयुष चतुष्कप्राप्यते इत्युक्तमायुष स्वरूपम् ॥ ६७ ॥

टबार्थ—गतित्रस तेउकाय वायुकायने एकतिर्यंचायुसत्ता छे केवलज्ञान, केवलदर्शनमध्ये एक मनुष्यायु सत्ता छे सूक्ष्मसपराय १ यथाख्यात १ क्षपकने १ एक मनुष्यायु सत्ता छे उपशमश्रेणी सूक्ष्मसपराय १ तथा यथाख्यातने च्यार आउखानी सत्ता छे शेषमार्गणा जे रही तेहमध्ये चार आउखानी सत्ता छे ॥ ६७ ॥

नामेतिरिचउजाईसु, थावरि(सासाण)मीसे(मीस)
तहेवसासाण(अमणेसु) ।
असन्निसुदुगनवई(दुनवइयसेसासु), जिणविणुसे-
सासुतिगनवई ॥ ६८ ॥

टीका—अथनामकर्मण सत्तामार्गणासुविभजराह ॥ नामेनिरि इत्यादि नामेइतिनामकर्मण तिर्यग्गतौआनिषु घनसुपुण्यावरेषु पृथ्वीअपतेजोवायुवनस्पतिरूपणासु । असंज्ञिमार्गणायाह्निनवति जिननामरहितासत्तायाप्राप्यते, आहारगत्तगति सासणे-इतिवचनात् जिननाममत्ताचतिर्यग्गतौनभवत्येव सास्वादनमिश्रयोरपिजिननामसत्ताभवति मेसासुशेषासुमार्गणासुत्रिनवति नामकर्मण सत्ताभवति ॥ ६८ ॥

टबार्थ—नामकर्मनी सत्ता विचारता तिर्यंचगतिजाति ४ तेमध्ये थावर ५ मिथ्यादृष्टिमध्ये तथा सास्वादनमध्ये तिम असंज्ञी मार्गणामध्ये त्राणुनी सत्ता छे जिननामविना शेषमार्गणाये त्राणुनी सत्ता छे ॥ ६८ ॥

अडसीई अभवेसु, हारगजिणहीणकेवलदुगमि ।
सुहुमदुगेखवगाण, असीइतिरिनिरयजोगचिणा॥६९॥

टीका—अडसीईअभव्वेसु-इत्यादि अभव्यमार्गणासुअशीनि सत्तायाप्राप्यते, आहारकचतुष्कजिननामरहिताअष्टाशीति प्राप्यते, केवलदुगम्मि इत्यादि केवलज्ञानकेवलदर्शनमार्गणायासुहुमदुगे सूक्ष्मसंपरायथाख्यातचारित्रलक्षणमार्गणासु क्षपकश्रेणिगतासु अशीति सत्तायाप्राप्यते, तिर्यग्गतिनरकगतिप्रायोग्यानयोदशानवमगुणस्थानेद्वितीयभागेक्षीणत्वात् अशीति सत्तायाप्राप्यते, उपशान्तसूक्ष्मसंपराये तथा यथाख्याते त्रिनवतिरेवसत्तायाप्राप्यते ॥ ६९ ॥

टबार्थ—अभव्यने आहारक ४ जिननाम विना अठ्यासी प्रकृतीनी सत्ता छे आहारक १ आहारकांगोपांग २ आहारक-

नधन ३ आहारासघान ४ केवलज्ञान १ केवलदर्शनमध्ये तथा क्षपकश्रेणि सूक्ष्मसंपराय यथाख्यातचारित्रमध्ये ऐसीनी सत्ता छे तेरनी नथी तिर्यंच तथा नारकीयोगे प्रकृति नीकली थावर १ सूक्ष्म १ साधारणजाति ४ तिरि २ नरक २ आतप १ उद्योत ए तेर नथी, ए सत्ताऽधिकार संपूर्ण ॥ ६९ ॥

चउदसजिआण भेया, सुरनरविभगमईसुओहिदुगे। सम्मत्ततिगेपम्हा, सुकासन्निसुसन्निदुग ॥७०॥

टीका—इत्युक्त सत्तास्वरूप, अथमार्गणासुजीवभेदान्दर्शय-न्नाह ॥ चउदसजिआणभेआइत्यादि ॥ तत्रजीवभेदा चतुर्दशएकेंद्रियसूक्ष्मएकेंद्रियबादरद्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिंद्रिय असंज्ञिपचें-द्रियसंज्ञिपचेंद्रियपर्याप्तापर्याप्तभेदात् चतुर्दश तत्रसुरनरत्ति ॥ सुरगतौनरकगतौचसंज्ञिद्विक पर्याप्तापर्याप्तलक्षणभवति अपर्याप्त-श्चेहकरणापर्याप्तोगृह्यतेनलब्ध्यपर्याप्तस्तस्यदेवनरकगतौउत्पादाभावात् विभंगेविभंगज्ञानेमनिज्ञानेश्रुतज्ञानेओहिदुगत्ति अवधिद्विके अवधिज्ञानदर्शनलक्षणे सम्यक्त्वत्रिकेक्षयोपशमिक क्षायिकउपशम लक्षणेपद्मलेश्याया शुक्ललेश्याया संज्ञिनिचसंज्ञिद्विकमपर्याप्त पर्या-प्तलक्षणभवति नशेषाणिजीवस्थानानितेषुमिथ्यात्वादिकारणनोमति-ज्ञानादीनामसंभवात्, अतएवचहेनोरिहापर्याप्तक करणापर्याप्तको-गृह्यतेनलब्ध्यपर्याप्तस्तस्य मिथ्यादृष्टेरशुभलेश्याकत्वादसंज्ञित्वाच्चेति आह क्षायिकक्षायोपशमोपशमिकेषु कथसंज्ञिअपर्याप्तकोल-भ्यते उच्यतेदृहय कश्चित्पूर्वबद्धायुष्क क्षपकश्रेणिमारभ्यानन्तानु-बंधिदर्शनत्रिकरूप सप्तकक्षयकृत्वाक्षायिकसम्यक्त्वमुत्पाद्ययदिगति-चतुष्टयस्यान्यतरस्यांगतावुत्पद्यते तदासौऽपर्याप्तक क्षायिकसम्य-

त्त्वेप्राप्यते, क्षायोपशमिकयुक्तश्चदेवादिभवेभ्योअनन्तरमिहोत्पद्य-
मानस्तीर्थंकरादिरपर्याप्तक सुप्रतीत एवऔपशमिकसम्यक्त्वपुन-
रपर्याप्तावस्थायामनुत्तरसुरस्यदृष्ट य, इहौपशमिकस्य सम्यक्त्वमूअ-
पर्याप्तस्यकेचिन्नेच्छति तथाचतेमाहु नतावदस्यामेवापर्याप्तास्था
यामिदसम्यक्त्वमुपजायते तदानस्यतथाविधविशुद्धयभावात् अथैत-
त्तिदानीमोहोदयत्तुपारभविक तद्वयत्तुकेनतन्निवार्यते इतिमन्येथा
तदपिनयुक्तियुक्तमुत्पश्याम यतोयोमिथ्यादृष्टि स्तत्प्रथमतयासम्य-
क्त्वमौपशमिकमवाप्नोतिसनावत्तद्भावमापन्न सन्कालनकरोत्येवयदु-
क्तमागमे अणवगोदयमाउगवधकालचसासणकुणइउवसम्मसम्मदि-
ट्ठिचउन्हमि ? कालनोकुणइ ? उपशमश्रेणैर्मृत्वाऽनुत्तरसुरेपूत्पन्नस्या-
पर्याप्तकस्यैतत्लभ्यतेइति चेन्नत्वेनदपिनयहम यामहेतस्यप्रथमसमये-
एवसम्यक्त्वमोहपुद्गलोदयात् क्षायिकौपशमिकसम्यक्त्वभवति नत्वौ-
पशमिकम् ॥ उक्तच ॥ शनकगृहच्चूर्णौ जोउवसमसम्मदिट्ठी उप-
समसेढीएकालकरेइ सोपढमसमएचेवसम्मत्तपुञ्जउदयावलिकाए पड-
णमम्मत्तपुग्गले वेअइ तेणनउवसम्मदिट्ठी अपज्जत्तगोलभइ इत्यादि
तस्मात्पर्याप्तसज्ञिलक्षणमेकमेवजीवस्थानमत्रप्राप्यते इतिस्थितअ-
परपुनरगहुभवत्येवापर्याप्तावस्थायामप्यौपशमिकसम्यक्त्वसप्ततिचूर्ण्या-
दिषु नथाभिधानात् सप्ततिचूर्णौहि गुणस्थानकेषुनामकर्मणोबन्धो-
दयादिमार्गणावसरेऽविरतिसम्यग्दृष्टेरुदयस्थानचिंतायां पचविंशत्युद-
यश्च देवनारकानधिकृत्योक्ततन्ननारका क्षायिकवेदकसम्यग्दृष्टय ।
देवेषुनिवि धसम्यग्दृष्टयोपितथाच तद्ग्रथ पणवीससत्तवीसोदयो-
देवनेरइए पडुचनेरइगोखवगसम्मदिट्ठीवेयगसम्मदिट्ठी देवोतिविह-
सम्मदिट्ठी तथापचसग्रहेऽपिमार्गणास्थानेषु जीवस्थानचिंतायाऔ-
पशमिकस्यजीवभेदद्विक उवसम्मिसम्मिसन्नी इत्यनेनग्रथेनसज्ञि-
द्विकमुक्तनन सप्ततिचूर्णिअभिप्रायेणपचसग्रहकर्तृग्रथाभिप्रायेणचा-

स्माभिरपिउपशमसम्यक्त्वेसञ्ज्ञिद्विकमुक्तमत्वतुकेवलिनोविशिष्टबहु-
श्रुतायानिदिति ॥ ७० ॥

टबार्थ —हवे चौद भेदे जीव मार्गणा कहे छे सूक्ष्म एकेंद्री १ बादरएकेंद्री २ बेंद्री ३ तेंद्री ४ चोरंद्री ५ सञ्ज्ञीपचेंद्री ६ असञ्ज्ञीपचेंद्री ७ अपर्याप्ता ए सात पर्याप्ता ७ हवे ६२ मार्गणाइ भेद कहे छे देवगति १ नरकगति २ विभगअज्ञान ३ मतिज्ञान ४ श्रुतज्ञान ५ अवधिज्ञान ६ अवधिदर्शन ७ उपशम ८ क्षायिक ९ क्षयोपशम १० ए तीन समकित पद्मलेश्या शुक्ललेश्या १२ सञ्ज्ञी १३ ए तेर मार्गणाने विषे सञ्ज्ञीपचेंद्री पर्याप्तो अने सञ्ज्ञीपचेंद्री अपर्याप्ता ए बे जीव स्थानक लाभे बीजा नहीं ॥ ७० ॥

तमसन्निअपज्जअ, नरेसबायरअपज्जतेऊए ।
थावरइगिदिपढमा, चउबारअसन्निदुदुविगले ॥७१॥

टीका—तमसन्निइत्यादि ॥ तत्पूर्वोक्तसञ्ज्ञिद्विकअपर्याप्तासञ्ज्ञिरूपनरमनुष्यगति मार्गणायाल्भ्यते,इहयेमनुष्यागर्भजास्तेषुसञ्ज्ञिद्विकलभ्यतेयेतुवान्तपित्तादिषुसमूर्छंतितेऽन्तर्मुहूर्त्तायुष असञ्ज्ञिनोलब्ध्यपर्याप्तकाश्चदृष्टव्या यदाहु श्रीमदार्यपादा प्रज्ञापनाया कहिणभंतेसम्मुच्छिममणुस्सासम्मुच्छति गोयमा, अतोमणुस्सखित्तस्सपणयालीसाएजोयणसयसहस्सेअड्ढाइजेसुदीवसमुद्देसु पन्नरससुकम्मभूमिसु तीसाए अकम्मभूमीसुछप्पनाए अंतरदीवेसुगम्भवक्कंतियमणुस्साणचेवउच्चारेसु पासवणेसुवा खेलेसुवा सिंघाणेसुवावंतेसुवापित्तेसुवासुक्केसुवासोणीएसुवासुक्कपुग्गलेसुवासुक्कपुग्गलेपरिसाडेसुवाविगयकलेवरेसुवायीपुरुससयोगेसुवा नगरनिद्धमणेसुवासव्वेसुचेवअसुइट्ठाणेसु इत्थ

णराभृणि अामणुस्मात् ... अंगुलस्स असंखभागमित्ताए ओगाहणाए असनिमि उदिट्टी अ ॥गीसन्वाहिंपज्जत्तीहिं अपज्जत्ताअनमुहूत्ताउया चेव काल करतित्ति तान् सम्मूर्छिममनुष्यानाश्रित्यतृतीयमप्यसंज्ञ्यपर्याप्तलक्षण जीवस्थानमाप्यते, इतिसंमर्थ्यात्ति तदेनपर्योक्तमसंज्ञिकमद्यबादरापर्याप्तेनवर्त्तते इतिसबादरापर्याप्तजोलेश्यायालभ्यते एतदुक्तंभवनितेजोलेश्यायांप्राणिजीवस्थानानिभवति, संज्ञ्यपर्याप्तापर्याप्त बादरैकेंद्रियापर्याप्तश्चबादरोऽपर्याप्त कथमवाप्यते इतिचेत्तूउच्यते इहभवनपति वनव्यंतरज्योतिष्कसौधर्मेशानदेवा पृथिवीजलवनस्पतिषुमध्येउत्पद्यते, यतः ... इ समाश्रकारनिमप्रजिनप्रवचनमदीपोभगवानजिनभद्रगणिक्षमाश्रमण पुढवीआउवणस्सइज्झेपज्जत्त सखजीवेसुसग्गचुआणं ... गोभेगायदिसंहीयाठाणा १ तेचतेजोलेश्यावन्त यदभाणि किण्हानील काउतेउलेसाभवणवंतरायाजोइससोहम्मीसाणाणितेउलेसाभ्णं, यत्रा यल्लेश्यो ... ष्यतेतल्लेश्यएवअग्रेऽपिसमुत्पद्यते जल्लेसेमरइ त ... स ... वज्जइइतिवचनात्, अनन्तेजोलेश्यानाबादरपर्याप्तावस्थायाकियत्कालमवाप्यते, स्थावरपचकमार्गणासुमथमानिचत्वारि जीवस्थानानिसूक्ष्मैकेंद्रियापर्याप्तसूक्ष्मैकेंद्रियपर्याप्तबादरैकेंद्रियापर्याप्तपर्याप्तलक्षणानिभवन्ति। ... ज्ञिनिसज्ञि पर्यतिरिक्तेकोलिकलिकल्पायेनाश ... ... इमानिआदिमानिद्वादशजीवस्थानानिसर्वेपामपिविशिष्टमनाविकल्पतयासंज्ञिमतिपक्षत्वादसंज्ञिइति यपदिश्यते, द्वित्रिचतुरिन्द्रियकेषु द्वींद्रियत्रींद्रियचतुरिंद्रियेषुद्वेद्वेजीवस्थानेभवत तद्वीन्द्रियोऽपर्याप्त पर्याप्त इतिद्वींद्रियेषु एवत्रींद्रियेषु त्रींद्रियोऽपर्याप्त पर्याप्त चतुरिंद्रियेषुचतुरिंद्रियोऽपर्याप्त पर्याप्त ... ॥ ७१ ॥

टवार्थ —अने मनुष्यगतेमार्गणामे होय तेहज असज्ञी-

पचेंद्री मेळीने तेवारे सज्ञी पचेंद्रीपर्यात्तो १ अपर्याप्तो २ असज्ञीपचेंद्रीअपर्यात्तो ए ३ जीवना भेद लाभे छे, मनुष्य असज्ञीपर्यात्तो नथाइ १४ थानके उपजे पण अपर्यात्तोईज मरे तिणे ३ जीवभेद कह्या । तेजाले [illegible] १ अपर्यात्तो २ ए दोय अने बादरपु [illegible] तिणे अपेक्षाये तेजोलेश्यामे [illegible] ५ स पृथ्वी-अप, तेऊ, वाउ, वनस्पतिमे [illegible] १ पर्यात्तो २ बादरएकेंद्रीपर्यात्तोअपर्यात्तो ४ ए च्यार जीवस्थानक लाभे अ-सज्ञीमार्गणामे पहेला बार जीवस्थानक लाभे बेंद्रीमार्गणा २ बेंद्रिरा जीवस्थान छे, तेंद्रीमे तेंद्रीरा जीवस्थान छे, चोरेंद्रीमे चोरेंद्रीना जीवस्थान छे ॥ ७१ ॥

दसचरमतसेअजया, हारगतिरितणुकसायदुअनाणे
पढमतिलेसाभविअर, अचक्खुनपुमिच्छसव्वेवि ७२।

टीका—दसचरमत इत्यादि ॥ त्रसेत्रसकायेचरमाण्यतिमानि-पर्याप्तापर्याप्तद्वित्रिचतुरसज्ञिसज्ञिपचेंद्रियलक्षणानिदशजीवस्थानानि भवनि, द्वींद्रियादीनामेवत्रसत्वात् । तया अयते, अविरतेसर्वाण्यपि जीवस्थानानिभवति, तथा [illegible] तिर्यग्गति [illegible] योगे-कषायचतुष्टयेद्वयोर [illegible] प्रथमतिलेश्यासु भव्येइतरस्मिन् [illegible] सर्वाण्यपि जीवस्थानानिभवनिसन [illegible] दीनामिति ७२

टबार्थ—बेंद्री तेंद्री २ चोरेंद्री ३ असज्ञी ४ सज्ञी ५ ए पाच अपर्याप्ताने ५ पर्याप्ता ए दस जीवस्थानक त्रसकायमे लाभे, अव्रतमार्गणामे १४ जीवस्थानक छे आहारकमार्गणामे २

तिर्यंचगति ३ काययोग ४ कषाय ४ मार्गणामे ८ मतिअज्ञान ९ श्रुतअज्ञानमे १० कृष्णलेश्या ११ नीललेश्या ११ कापोत लेश्या १३ भव्यमार्गणामे १४ अभव्यमार्गणा १५ अचक्षुदर्शन-मार्गणा १६ नपुसकवेदमार्गणा १७ मिथ्यात्वमार्गणा १८ ए अढारमार्गणामे सर्व १४ जीवस्थानक छे ॥ ७२ ॥

पज्जसन्निकेवलदुग, संजममणनाणदेसमणमीसे ।
पणचरमपज्जवयणे, तिअछचपज्जीयरचक्खुम्मि॥७३॥

टीका—पज्जसन्नी इत्यादि । पर्याप्तसज्ञिलक्षणमेकमेवजीव-स्थानभवति ॥ क्वइत्याह ॥ केवलद्विके केवलज्ञान केवलदर्शने सयमपचके मन पर्यवज्ञानेदेशविरते च एकजीवस्थानसज्ञिपर्याप्त-लक्षणजीवस्थानभवतिनान्यत्, तथापचजीवस्थानानि चरमाणि-अतिमानिपर्याप्त्यपर्याप्तानि द्वींद्रियपर्याप्तत्रींद्रियपर्याप्तचतुरिंद्रिय-पर्याप्तासज्ञिपचेंद्रियपर्याप्तसज्ञिपचेंद्रियपर्याप्तलक्षणानि पचस्थाना-निप्राप्यते, वयणत्ति वचनयोगेकुत्रचित् एएअपर्याप्तेप्वपिवचन-योगसभव भाविनिभूतोपचारात् इति यायात् तेपामतेदशजीवभेदा प्राप्यते ॥ तीयछचपज्जायरतिचक्खुम्मि चक्षुर्दर्शनेत्र्यत्रयद्वादिनय-क्रमेणत्रीणि चतुरिंद्रियपर्याप्तअसज्ञिपर्याप्तसज्ञिपर्याप्तलक्षणानित्रयो जीवभेदामनातरेनैगमनयापेक्षयाछचपटजीवस्थानानितान्येवचतुरिं-द्रियादीनि त्रीणिपर्याप्तापर्याप्तलक्षणानिचक्षुर्दर्शनेभवति ॥७३॥

स्वार्थ —केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ मार्गणामे सामायिक १ छेदोपस्थापनीय २ परिहारविशुद्धि ३ सूक्ष्मसपराय यथाख्यात-चारित्र एव ५ सयममे मन पर्यवज्ञानमे देशविरतिमे १ मनो-योगमे १ मिश्रदृष्टिमे ए ११ मार्गणामे १ पर्याप्तासज्ञी जीव-

स्थानलाभे, वचनयोग छेहला पाच पर्याप्ता जीवस्थानलाभे, बेन्द्री १ तेन्द्री २ चौरेन्द्री ३ असज्ञीपचेन्द्री ४ सज्ञीपचेन्द्री ५ पर्याप्तो ए पाचमे भाषा छे भाषापर्याप्त कीवा पछी चक्षु-दर्शनमे तीन अथवा ७ जीवस्थान छे चोरेन्द्री १ असज्ञीप-चेन्द्री २ सज्ञीपचेन्द्री ३ ए तीन पर्याप्ता छे अथवा पहिज तीन अपर्याप्ता अने पर्याप्ता ए ६ पण जीवस्थानलाभे चक्षु-दर्शनमे ॥ ७३ ॥

थीनरपणिदिचरमा, चउअणहारेदुसन्निछअपज्जा।
तेसुहुमअपज्जविणा, सासणगुणठाणपुविन ॥७४॥

टीका—थीनरपणिं इत्यादि। स्त्रीवेदे तथा पुरुषवेदे पचेन्द्रिय-प्रायोग्यानिचरमाणिचत्वारिजीवस्थानानि भवति, यद्यपिचसिद्धान्तेअ-सज्ञिपर्याप्तोऽपर्याप्तश्चएकान्तेनपुसकएवउक्त तथोचोक्तभगवत्याते-णभतेअसन्निपचेंदियतिरिक्खयोणीयाकिं इत्थिवेयगा पुरिसवेयगा नपु-सगवेयगा? नोइत्थिवेयगानोपुरिसवेयगा नपुसगवेयगाइति तथापिइह-स्त्रीपुसलिंगाकारमात्रमगीकृत्यस्त्रीवेदेपुरुषवदेनिर्दिष्ट लिंगाकारग्रह-णद्रव्यनिक्षेपत अभिलापरूपतुभावनिक्षेपापेक्षयाभावनीयम् , अना-हारके दुसनिछअपज्जत्ति अनाहारकेद्विविध सज्ञिपर्याप्तपर्याप्तलक्षण षट्अपर्याप्ता अपर्याप्तसूक्ष्मकेंद्रिय अपर्याप्तबादरेकेंद्रिय अपर्याप्त द्वीद्रिय अपर्याप्तत्रींद्रिय अपर्याप्तचतुरिंद्रिय अपर्याप्तासज्ञिपचेंद्रिय एता यष्टौप्राप्यते तत्रसप्तपर्याप्तकानिअन्तरालगमनावेत्रसज्ञिपर्याप्तलक्षण केवलिसमुद्घातकालेतृतीयचतुर्थपचमसमयेएवकार्मणयोगिन एव-लभ्यनेसुहुमअपज्जविणासासण,तायेवपूर्वोक्तानिषट्अपर्याप्तपर्याप्तम-ज्ञिद्विकलक्षणान्यष्टौजीवस्थानानिसूक्ष्मापर्याप्त विनासप्तभवति ।

एतदुक्तंभवतिपर्याप्तसूक्ष्मैकेंद्रियापर्याप्तलक्षणजीवस्थानसास्वादनेगम्य त्वेनभवति, सास्वादनस्यशुभपरिणामत्वात् सूक्ष्मस्यमहासंक्लिष्टस्य परिणामस्यसूक्ष्मैकेंद्रियमध्येउत्पादः । अत बादरपर्याप्तद्वींद्रिया-पर्याप्तत्रींद्रियापर्याप्तचतुरिंद्रियापर्याप्तअसंज्ञिपचेंद्रियापर्याप्त संज्ञिपचें-द्रियापर्याप्तभेदात् सप्तजीवस्थानानिप्राप्यन्ते इत्युक्तानिमार्गणास्था-नेषुजीवस्थानानिगुणस्थानानितुपूर्वमेवोक्तत्वात् नतत्रएवज्ञातव्यानि गुणस्थानानिमार्गणासुपूर्ववत् ज्ञातव्यानि ॥ ७४ ॥

इत्यर्थ —स्त्रीवेदमे १ पुरुषवेदमे १ पचेंद्रिमे १ छेहल्या ४ जीवस्थान छे, असज्ञीपचेंद्री अपर्याप्तोपर्याप्तो २ सज्ञीअपर्याप्तो-पर्याप्तो ए ४ छे स्त्रीवेदमे, पुरुषवेदमे, असज्ञीमे नजाइ, असज्ञिमे नपुसकवेद छे, पर इहा मान्यो छे, ते अभिप्राय आचार्य जाणे अनाहारकमार्गणाये सज्ञीअपर्याप्तो १ पर्याप्तो २ सूक्ष्मअपर्याप्तो ३ बेंद्रीअपर्याप्तो ४ तेंद्रीअप० ५ चौरिंद्रीअप० ६ असज्ञीअप० ७ बादरअप० ८ ए आठ जीवस्थानक छे । ए आठमे सूक्ष्म-अपर्याप्तो काढीए जेवारे सास्वादने सात जीवस्थानक छे । बादरअपर्याप्तो १ बेंद्रीअप० २ तेंद्रीअप० ३ चौरिंद्रीअप० ४ असज्ञीअप० ५ सज्ञीपर्याप्तो ६ सज्ञीअप० ७ ए सात प्रकारे जीवस्थानक पामीये गुणठाणामार्गणाए पूर्वे कह्या ते रिते गुण-ठाणा कहिवा ॥ ७४ ॥

सच्चेयरमीसअसच्चमोस, मणवयविउविआहारा ।
उरलमीसाकम्मण, इययोगाकम्मअणहारे ॥७५॥

टीका—सच्चेयरेति पचदशयोगाभिधायिकागाथा ॥ इहयोग शब्दस्यसर्वत्रसमनर युज्यतेकर्मणाअनेनेतियोग अलब्धस्यलभन-

योग घटवीर्यस्यऔदयिकानुयायिप्रवर्त्तनयोग अभिनवकर्मग्रहण-हेतु इतिनमनोयोगश्चतुर्द्धातत्रयासत्यमनोयोग असत्यमनोयोग सत्यासत्यमनोयोग असत्यामृषामनोयोग तत्रसनोमुनय पदार्था-वातेपुयथासर यमुक्तिपदप्रापकत्वेनयथावस्थित तत्त्वचिंतनेनचहित सत्य यथाअस्तिजीव अस्तिनास्तिपरिणाम कायप्रमाण लोकप्रमा-णासरयेयप्रदेशात्मक यथावस्थितवस्तुविकल्पनपर सत्यमनोयोग तथाअसत्य विपरीत अयथार्थ नास्तिजीव इत्याद्युत्सूत्रचिंत-नरूप असत्यमनोयोग तथामिश्र सत्यासत्यमनोयोग यथाइह-धवखदिरपलाशादिमिश्रेपुवहुत्वअशोकवृक्षेषुअशोकवनमेवेदइतियदा-विकल्पयतितत्राशोकवृक्षाणासद्भावात् सत्य अयेषामपिधवखदिरप-लाशादीना तत्रसद्भावादसत्य इतिसत्यासत्यविकल्परूप, मिश्रम-नोयोग इति व्यवहारनयमतापेक्षया परमार्थतस्तुपुनरयमसत्य-एवयथाविकल्पितार्थायोगात् नविद्यतेसत्ययत्रसअसत्य नविद्यते-मृषायत्रसअमृष असत्यश्चासौअमृष अनादिभि र्नैरिनिकर्मयस्य असत्यामृषश्चासौमनोयोगश्च असत्यामृषामनोयोग अनस्याद्वादा-नेकांतनयनिक्षेपविनायद्लोकव्यापाररूपघटपटादिचिंतन तत् व्यव-हारतोमृषापिनपरमार्थत आगमोपयोगरहितत्वात् सत्यमपिनइदग्-विकल्परूप असत्यमृषामनोयोग मुनीनाचआहारादियाचनेआहा-रयाचनरूप व्यवहारतोनमृषापरमार्थत आहारमकाय(?)मितिविकल्प-रहितत्वात्नसत्य अत्रसमिश्रमनोयोग असत्यामृषामनोयोगयो क्र-मनिविशेष ततोच्यतेमिश्रमनोयोगवनोअशोकवने अशोकस्यएका-न्तग्रह धवखदिराणाग्रहणेच्छापिनतेनमिश्रत्व अन्यत्तु अपिनानार्पित-तयासापेक्षनयापेक्षाणामाभावात् अगृहीतत्वात् तेनसर्वथानअसत्य इतिनसत्य नमृषाइति यपदिश्यते एवचारयोगोपिचतुर्विध अत्र-तुनीयचतुर्थातुपरिस्थूल व्यवहारनयमतेनदृष्ट यानिश्चयनयेनस्याद्वाद-

सापेक्षमेतस्य अयनुसमेसत्यट्निकर्मप्रयटीकाकार विक्लेन्द्रि-
याणाम यक्तत्वेनअसत्यअमृषावचनयोग नत्रुअपिमृषावादेएवम-
न्तर्भवति ॥ कायथोग सप्तधा वैक्रियकाययोग औदारिककाय-
योग आहारककाययोग मिस्सत्तिएतेएवमिश्रवैक्रियमिश्र औ-
दारिकमिश्र आहारकमिश्र कम्माणत्तिकार्मण एव सप्तकाययोगा
भावार्थस्तुविविधाक्रिया विक्रियातस्याभववैक्रिय तथाहिएकभूत्वा-
अनेकभवति अणुभूत्वामहद्भवति महद्भूत्वाअणभवति दृश्य-
भूत्वाअदृश्यभवति इत्यादिविक्रियाप्रयोजनवैक्रिय स्पर्शवैक्रिय वैक्रिय-
मिश्र यत्रकार्मणेन औदारिकेणसहवैक्रियमिश्र तत्रकार्मणेनामिश्र
देवनैरयिकाणाअपर्याप्तावस्थाया प्रथमसमयाम्नतर पचेन्द्रियतिर्यग्-
मनुष्याणावैक्रियलब्धिमतावैक्रियारकालेवैक्रियपरित्यागकालेवाऔ-
दारिकेणमिश्रभवति ततुवैक्रियमिश्रकाययोग २ चतुर्दशपूर्वविद
तथाविधकार्योत्पन्नविशिष्टलब्धिवशादाह्रियते निर्वर्त्यतेइत्याहा-
रक अथवाआह्रियतेगृह्यतेतीर्थकरादिसमीपेसूक्ष्माजीवादिपदार्था
अनेनेत्याहारकयदनादिपूज्य कज्जम्मिसमुपज्ज तेसुअकेवलिणा-
विसिट्ठद्धीएजइञ्जआहरिज्जइभणति आहारगतसु ॥ १ ॥
पाणिदयरिद्धिदसणत्यमत्थोग्गहणहेउवासस्सयवुछेयत्थगमणजिणपा-
यमूलम्मि तदेवकाययोग आहारककाययोग आहारकमिश्र आ-
हारकप्रारभकालेत्यागकालेऔदारिकेणसहभवति आहारकमिश्रकाय-
योग तथा औदारिककाययोग इहप्रसिद्धसिद्धान्तसदोहविवरण-
प्रकरणकरणप्रमाणग्रथनानासुप्राथावामधरल्यश प्रसरधवलितस-
कलत्रभुवनवलयप्रभुश्रीहरिभद्रसूरिदर्शिनाव्युत्पत्तिर्लिख्यतेतत्थतार-
ल्हारउरालउरालचातित्यकरगण रसरीराइपडुचउदारवुचइनतओउदी-
रनरमामच्छित्तिकाउउदारनामप्रधानउरालनामविस्तरालविशालनाजभ-
णीयहोद कहसातिरेग जोयणसहस्स वनस्पत्यादीनामितिउरालना-

मरवत्पप्रदेशोपचितत्वाच्चार्डिभवनस्थलवर्गणानिष्पन्नत्वात् श्रीपूज्या-
अप्याहु न चोदारमुरालउरालमहामहमहत्तेणउगलायत्तिपढमपट्टच-
निव्वेसरसरीर ॥ १ ॥

भणइयनहोराल, वित्यरवतजणसइ पप्प ।
पयईईनत्थिअन्न, इहमिचविसालत्ति ॥ २ ॥
उग्लथेवपएसो, वचियपिमहरलगजहामिट्ट ।
मसट्टिएहारनद्ध, उराग्समयपरिभासा ॥ ३ ॥

उदारेणभवऔदारिक औदारिककाययोग तथा औदारिकमिश्र यत-
कार्मणेनेति गम्यतेसऔदारिकमिश्र उत्पत्तिदेशेहिपूर्वभवादनन्तर-
मागतोजीव प्रथमसमये कार्मणेनैवकेवलेनाहारयतितत परऔदा-
रिकस्याप्यारब्धत्वादौदारिकेण कार्मणमिश्रेणयावच्छरीरस्यनिष्पत्ति
यदाहसकलश्रुताभोनिधिपारदृश्वाविश्वानुग्रहकाम्ययानिर्मितानेक-
शास्त्रसदर्भ श्रीभद्रबाहुस्वामी जोएणकम्मएण आहारेईअणतर
जीवोवेणपरमीसेणजावसरीरस्सनिप्पत्ती ॥ १ ॥ तथा केवलिस-
मुद्घातावस्थायाद्वितीयषष्ठसप्तमसमयेषु कार्मणेनमिश्रमोदारिक
मतीतमेवऔदारिकमिश्रकाययोग तथा कर्मणोविकार कार्मण-
कर्मैवकार्मण कर्मपरमाणव एवात्मप्रदेशै सहक्षीरनीरवदन्योन्या-
नुगता सत कार्मणशरीर उक्तच कम्मविगारोकम्म कम्मणमट्ठ-
विहविचित्तकम्मनिप्पन्नसव्वेसिंसरीराणकारणभूयमुणेयव्व अत्रसर्वे-
सिमितिसर्वेषा औदारिकादीनाशरीराणा कारणभूतबीजभूतकार्मण-
शरीरनखलु आमूलमुच्छिन्नेभवप्रपचप्ररोहबीजभूतेकार्मणेवपुषिशे-
षशरीरप्रादुर्भावसभवद्दचकार्मणशरीरजतोर्गत्यन्तरसक्रातौसाधकतम
करण तथाहिकार्मणेनैववपुषापरिकरितोजतुर्मरणदेशमपहायोत्पत्ति-
देशमुपसर्पतिननुयदिकार्मणवपु परिकरितोगत्यतरसक्रामति तर्हि-

[illegible] ॥ ७४ ॥

अर्थ — इन १५ [illegible] सत्यमनोयोग १ अस- [illegible] ४ [illegible] ५ [illegible] ६ मिश्र [illegible] ७ [illegible] ८ [illegible] ९ [illegible] १० [illegible] ११ [illegible] १२ [illegible] १३ [illegible] १४ [illegible] काययोग १५ ए १५ [illegible] ॥ ७५ ॥

नरगइपणदितससतणू, अचक्खुनरनपुकसायसम्मदुगं। सन्निछलेसाहारग, भवमइसुओहिदुगिसवे ॥७६॥

टीका—नरगइपणदि इत्यादि ॥ नरगतौपचेंद्रिये त्रसकाये तनुयोगेअचक्षुर्दर्शनेनरेपुरुषवेदेनपुंसकवेदेकषायेषु क्रोधमानमायालोभेषुसम्यक्त्वद्विकेक्षायोपशमेक्षायिकेसंज्ञिनिषण्णस्वपिलेश्यासुआहारकेमतिज्ञानेश्रुतज्ञानेअवधिद्विकेअवधिज्ञानावधिदर्शनेसर्वपंचदशापियोगाभवंति एतेषुसर्वेष्वपिमार्गणास्थानेषुयथासंभवसर्वयोगा पंचदशभवंति ॥ ७६ ॥

टबार्थ—मनुष्यगति १ पचेंद्री २ त्रसकाय ३ अचक्षुदर्शन पुरुषवेद नपुंसकवेद कषाय ४ क्रोध मान माया लोभ। क्षायिकसमकित १ क्षयोपशमसमकित १ सज्ञीमार्गणामे १ लेश्या ६ कृष्णनीलकापोत तेजोपद्मशुक्ल ६ लेश्या आहारक १ भव्य १ मतिज्ञान १ श्रुतज्ञा २ अवधिज्ञान ३ अवधिदर्शन एटली मार्गणामे सर्व पनर योग पामीये छे ॥ ७६ ॥

तिरिइत्थिअजयसासणि, अनाणउवसमअभवमिच्छेसु तेराहारदुगुणा, तेउरलादुगुणसुरनिरए ॥ ७७ ॥

टीका—तिरिइत्थि इत्यादि ॥ तिरित्तितिर्यग्गतौस्त्रीयांस्त्रीवेदे अयतेविरतिहीनेसास्वादनसम्यक्त्वेअज्ञानत्रिकेउपशमसम्यक्त्वेअभव्येमिथ्यादृष्टौत्रयोदशयोगा भवंतिआहारकद्विकहीनादित्यर्थ आहारकद्विकसर्वविरतौचतुर्दशपूर्वधरस्यापिकस्यचितुलब्धिमतोभवति। यद्यपिस्त्रीवेदेसर्वविरतिसद्भावेऽपिस्त्रीणांपूर्वगतत्वाभावात्। यदाह। भाष्यसुधानिधि तुच्छागारवबहुलाचलेंद्रीयाडु बलाधिइएपइयअइसेसज्झ-

यणामृआदोनइत्यीण ॥ १ ॥ तेननाहारस्य प्रभावनीय तथा-तेएवनयोदशप्रयोक्तायोगाऔदारिकद्विकोना औदारिककायपोगऔ-दारिकमिश्रकाययोगरहितापृकादशयोगा सुरतिदेवगतौनिरतिनर-कगतौप्राप्यते मनस चत्वारोवचनस्यचत्वारोवक्रियद्वय कार्मणएव-एकादशनत्र कार्मणमपान्तरालगतौ तथा प्रथमसमये पद्यमानस्यवैक्रि-यमिश्रअपर्याप्तावस्थाया वैक्रियमनोयागयोगीपर्याप्तावस्थायासर्वोपु यावत् ॥ ७७ ॥

रसार्थ —-निर्यगति १ स्त्रीवेद १ अविरति १ सास्वादन १ अज्ञान ३ कुमतिकुश्रुतिभगरूप एहनी मार्गणामे उपशम-सम्यक्त्वमार्गणामे १ अभव्यमार्गणामे १ मिथ्यात्वमार्गणामे १ पहली मार्गणामे १३ योग पामीये। आहारकशरीर १ आहा-रकमिश्र २ ए काढीए तेवार हुए तेरमाहे औदारिकद्विक, औदा-रिकशरीर, औदारिकमिश्र ए दोय काढीए तेवारे देवगति १ नर-कगति १ ए मार्गणामे ११ योग छे ॥ ७७ ॥

कम्मुरलदुगथावरि, तेसनिउव्वदुगपचइगपवणे ।
छअसन्निचरमवयजुअ, तेविउव्विदुगुणचउविगले७८॥

टीका—कम्मुरलदुगइत्यादि ॥ स्थावरचतुष्टयेपृथिव्यपतेजो-वनस्पतिलक्षणेषु कार्मणऔदारिकद्विकऔदारिककाययोग औदारिक-मिश्रकाययोगलक्षणयोगत्रयप्राप्यते, तत्रभावना॥ थावरेत्ति स्थावर-पृथ्वीकायाप्कायतेजोवनस्पतिकायरूपपूर्वोक्तयोगत्रयभवतिकार्मण-मन्तरालगतौ औदारिकमिश्रअपर्याप्तकालेपर्याप्तकालेऔदारिकतेपूर्वो-क्तास्त्रय योगा सवैक्रियद्विका सहवैक्रियद्विकेनवैक्रियवैक्रियमिश्र-लक्षणेनवर्त्तन्तेइतिसवैक्रियद्विका सत पचभवतिकेइत्याह इगत्ति

सामा यतएकेंद्रियेपवनेवायुकायेचतत्कार्मणौदारिकद्विकलक्षणयोग-
त्रयभावनाप्राग्वत्वैक्रियद्विकभावनात्वेवं इहकिलचत्वारोवायवो-
वातितद्यथासूक्ष्माबादरा पर्याप्ता अपर्याप्तकाश्चतत्रबादरवायुकाय-
पर्याप्तानांकेषांचिद्वैक्रियलब्धिसंभवोऽस्तितानधिकृत्यवैक्रियमिश्रल-
लभ्यते ननुकथमुच्यतेकेषांचिद्वैक्रियलब्धिसंभवोऽस्तियावतासर्वेऽपि-
बादरपर्याप्तावायव सर्वेक्रियाएवअवैक्रियाणांचेष्टाएवासंभ त्त उक्तंच-
कइणभंतेसव्वेवेउव्वियाबायावायंति ? अविउव्वियाणचिट्ठाचेवनपवत्त-
इतितदयुक्तसम्यगसिद्धांतापरिज्ञानात्अवैक्रियाणामपितेषांस्वभाव-
तएवचेष्टोपपत्ते यदाहभगवान्श्रीहरिभद्रसूरिपूज्योऽनुयोगद्वारटी-
कायां बाउकाइयाचउव्विहासुहुमापज्जत्ता अपज्जत्ताबादरापज्जत्ताअप-
ज्जत्तातत्थतिन्निरासीपत्तेयं असंखिज्जलोगप्पमाणप्पएसरासिपमाण-
मित्ताजेपुणबादरापज्जत्ता तेपयरासंखेज्जइभागमित्ता तत्थतावतिण्हरा-
सीणवेउव्वियलद्धिचेवनत्थिबायरपज्जत्ताणपिअसंखेज्जइभागमित्ताण-
अत्थितेसिंपिलद्धिअत्थितउविपलिओवमासंखिज्जभागसमयमित्तास-
पयपुच्छासमएवेउव्वियवत्तिणो तम्हाजेणसव्वेसुचेवउड्ढलोगाइसुच-
लावायवोविज्जंति तम्हाअविउव्विआविवायावायंतित्ति । नित्त नस-
भावेणतेसिंवाय त्वनिवानाद्वायुरितिकृत्वातिण्हरासीणवयाणाराशीना-
पर्याप्तापर्याप्तासू मानादरापर्याप्तवायुकायिकानांतथावेएवपूर्वोक्ता प-
चकार्मणौदारिकद्विकवैक्रियद्विकलक्षणयोगाश्चरमाचतुर्थी असत्या-
मृषारूपावाक्वचनयोगाश्चरमवाक्तयायुक्ता षड्योगा भवतीत्ये-
इत्याह । असज्ञिनिसज्ञि यतिरिक्तेजीवेतत्कार्मणमपान्तरालगतानु-
त्पत्तिप्रथमसमयेचऔदारिकमिश्रमपर्याप्तावस्थायांपर्याप्तावस्थायांऔ-
दारिकबादरपर्याप्तवायुकायिकानांवैक्रियद्विकचरमभवोचरम वाग्योग
असत्यामृषालक्षण तेनयुक्तावैक्रियद्विकेनऊनाहीना त्वारोभवति-
धेर ... ...ारदिये ... तत्कार्मणौदारिक-

द्विकभावनायामेव असत्यामृषाभाषाशरादीनाभवति । शेषाणां विगलेअसत्त्वमोसत्रयइति ॥ ७८ ॥

टवार्थ ---पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय ३ वनस्पतिकाय ४ ए ४ थावरमार्गणामे कार्मण १ औदारिक २ औदारिकमिश्र ३ वैक्रिय ४ वैक्रियमिश्र ५ ए पाच योग छे । असज्ञीमार्गणामे चरमवचन योग १ असत्याअमृषा मेलीजे तेवारे पाच योग वेहीज एव ६ योग छे । ए ६ योगमाहे वैक्रिय १ वैक्रियमिश्र २ ए द्विक काढीए तेवार कार्मण १ औदारिक २ औदारिकमिश्र ३ असत्याअमृषाभाषा ए ४ योग छे, विकलत्रयी १ तेंद्री २ चौरेंद्री ३ ॥ ७८ ॥

कम्मुरलमीसविणुमण, वयसमईछेयचक्खुमणनाणे उरलदुगकम्मपढम, तिमणवयकेवलदुगमि ॥७९॥

टीका---कम्मुरलमीसइत्यादि ॥ कार्मणमौदारिकमिश्रविना-शेषास्त्रयोदशयोगाभवति कइत्याह मनोयोगेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयसयमेचक्षुर्दर्शनेमन पर्यवज्ञानेत्रयोदशयोगा भावनाइकारयौतु-कार्मणौदारिकमिश्रौतातेपुसर्वथानसभवनएवनयोरपर्याप्तावस्थायाभा-वात् मनोयोगादिमार्गणायातु तस्यामवस्थायामसभवात् तथा उरल-दुगत्ति औदारिकद्विककार्मण प्रथम तथा अतिम मनोयोगद्वय एव वचनयोगद्वय एवयोगसप्तक केवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणमार्गणाया-प्राप्यते तत्रभावनाऔदारिकमिश्रकार्मणयोगौसयोगिकेवलिसमुद्घात गतस्यभवति मनोयोगौतुअविकल्पसकलविमलकेवलज्ञानकेवलदर्शन-विलोकितनिखिललोकालोकस्यभगवत मन पर्यवविज्ञानिनोऽनुत्तरसुरादिभिर्वामनसापृष्टस्यसतोमनसैवदेशनातुतेहिभगवत्प्रयुक्तानिमनो-द्रव्याणिमन पर्यवज्ञानेनपश्यतिवाग्योगस्तुदेशनावसरेभवति॥७९॥

टबार्थ —कार्मण १ औदारिकमिश्र २ ए दोय विना बाकी १३ योग छे, मनयोगमाहे १३ वचनयोगमाहे १३ सामायिकमे १३ छेदोपस्थापनीयमा १३ चक्षुदर्शनीयमे १३ मन पर्यायज्ञानमे १३ ए छ मार्गणामे १३ योग लाभे छे, उरलदुग औदारिक २ कार्मण १ पहिलो अतिममनोयोग १ असत्यमनोयोग २ पेहलो अतिमवचन १ सत्यवचनयोग १ असत्यवचनयोग १ ए ७ योग छे, केवलज्ञान केवलदर्शनमे सात योग छे ॥ ७९ ॥

मणनयउरलापरिहार, सुहुमेनवतेडमीसिसविउवा। देसेसविउविदुगा, सकम्मुरलमीसअहक्खाए ॥८०॥

टीका—मणनयइत्यादि ॥ परिहारविशुद्धिकेसूक्ष्मसंपरायेच नवयोगा केवेइत्याहमनोयोगश्चतुर्द्धावाग्योगश्चतुर्द्धाऔदारिकचेति आहारकद्विकचतुर्दशपूर्वविद लब्धिप्रारभकालेभवतिनचात्रनभवति वैक्रियद्विकमपिलब्धिमत तदप्यत्रनभवतिऔदारिकमिश्रकार्मणच गृहगतिमतरेणासभवात् तेनतावपिनभवन असत्यवाग्योगमनोयोगवस्तुउन्मार्गापेक्षयापरालवनचेतनापरिणामेनैवज्ञेय तेपुन पूर्वोक्तानवयोगा सवैक्रिया सहवैक्रियेणवर्त्तनइतिसवैक्रियावैक्रियसहिता सनोदशयोगामिश्रेसम्यग्मिथ्यादृष्टौभवन्ति,तत्रवैक्रिय देवनारकापेक्षयायत्तुतनवाना पवेतस्यापर्याप्तावस्थायामावित्वात् मिश्रभावस्यचनसम्ममिच्छोकुणइकालमितिवचनप्रामाण्यादपर्याप्तावस्थायामसभवात् स्यादेतवैक्रियलब्धिमतामनुष्यतिरश्चासम्यग्मिथ्यादृशासतावक्रियारभसभवेन कथवैक्रियमिश्रनावाप्यते इतिउच्यते तेषावैक्रियारभासभवात्अ पनोन्नात्तुनश्चितकारणात्पूर्वाचार्यस्त नाभ्युपगम्यतेइतिनसम्यग्अवगच्छामस्तथाविधसप्रदायाभावादतोऽस्माभिरपितनेष्टमितिदेशो-

देशविरतेसवैक्रियद्विका वैक्रियवैक्रियमिश्रसहिता सत एकादशयोगा भवतिदेशविरतानामम्बडादीनां वैक्रियलब्धिमनावैक्रियद्विकसंभवात् । तथातेएवनवपूर्वोक्ता सकार्मणौदारिकमिश्रा सहकार्मणौदारिकमिश्राभ्यावर्त्तते इतिसकर्मणौदारिकमिश्रा सत एकादशयोगायथाख्यातसयमेभवंति अयमर्थ मनोयोगचतुष्टयवाग्योगचतुष्टयकार्मणौदारिकाद्विकलक्षणाएकादशयोगायथाख्यातसयमेभवति तत्रमनोवाग्चतुष्कोदारिकयोगास्तुज्ञानेएवकार्मणमौदारिकमिश्रतुयथाख्यातसयमआकुलस्यगृहस्यभगवत केवलिन संभवति तस्यहिसमुद्घातस्यतृतीयचतुर्थपचमसमयेषु कार्मणकार्मणशरीरयोगीचतुर्थेपचमेतृतीयेचेतिवचनात् द्वितीयषष्ठसप्तमसमयेषु औदारिकमिश्रमिऔदारिकयोक्तासप्तमषष्ठद्वितीयेष्वितिवचनादवाप्यते इतियथाख्यातसयमेद्वयोरपिसंभवात् इतिप्रोक्तामार्गणास्थानेयोगा सांप्रतमार्गणासुउपयोगस्वरूपनिरूपणपूर्वकमुपयोगानभिधित्सुराह ॥८०॥

टबार्थ —मनोयोगना भेद ४ वचनयोगना ४ भेद औदारिककाययोग ॥ नव योग परिहारविशुद्धिसयममे ९ सूक्ष्मसपरायसयममे नव योग छे, तेहिजमनना ४ वचनना ४ औदारिक १ अने एक वैक्रियकाययोग मेलीइएने ए १० योग छे मिश्रदृष्टिमे देशविरतिमे नव योग छे तेहीजवैक्रिय २ भेळी जे ए ११ योग छे यथाख्यातचारित्रमे ९ योग छे नव ते तेहीजकार्मण ३ औदारिकमिश्र २ ए २ मेलीजे तेवारे ११ योग छे यथाख्यातमे ए बासठीमार्गणामे योग कह्या ॥ ८० ॥

तियनाणनाणपणचउ, दसणवारजिअलखणुवओगा।
विणुमणनाणदुकेवल, नवसुरतिरिनिरयअजएसु८१॥

टीका—तिअनाणनाण इत्यादि ॥ त्रीण्यज्ञानानि मत्यज्ञान-श्रुताज्ञानविभङ्गरूपाणि ज्ञानानि मति श्रुतावधिमन पर्यवकेवलल्लक्षणानि पञ्च एतत्स्वरूपविशेषावश्यकभाष्यविवरणतोज्ञेयं चत्वारिदर्शनानि-चक्षुरचक्षुरवधिकेवलदर्शनलक्षणानित्येवं द्वादशोपयोगा जियलक्खणत्ति जीवस्यात्मनोलक्षणलक्ष्यतेज्ञायतेतदन्यनावच्छेदेनेतिलक्षण-मसाधारणस्वरूपं अनएवोक्तम् यनापिउपयोगलक्षणोजीव इतितेच-द्विधासाकाराअनाकाराश्चतत्रपञ्चज्ञानानित्रीण्यज्ञानानीत्यष्टाउपयोगा साकारा चत्वारिदर्शनानानाकाराउपयोगा यदाह्मनवचनार्थसार्थसर-ससरोरुहसमूहमकाशनसहस्रभानुश्रीमदार्यश्याम प्रज्ञापनायाउपयो-गपदेकंतिविहेणभतेउवओगेपन्नत्ते ॥तत्तहा॥ आभिणिबोहियनाणे-सागारोवओगे सुअनाणेसागारोवओगे ओहिनाणेसागारोवओगे मण-पज्जवनाणेसागारोवओगे केवलनाणेसागारोवओगे मइअन्नाणेसागारो-वओगे सुअअन्नाणेसागारोवओगे विभंगनाणेसागारोवओगे अणागारो-वओगेणंभंतेकतिविहेपन्नत्तेगोयमाचउव्विहेपन्नत्तेतंजहा चक्खुदंसण-अणागारोवओगे अचक्खुदंसणअणागारोवओगे ओहिदंसण अणा-गारोवओगे केवलदंसणअणागारोवओगे ॥ इत्यादि अज्ञानस्य-मिथ्यात्वोपहतचेतनाविपर्यासेनअज्ञानत्वंभवति नदर्शनस्यपन दर्शनस्यसामान्यग्राहकत्वेनपदार्थमात्रावबोधकत्वान्नविपर्यासतावे नचक्षुर्दर्शनत्वंभेदा नभवति । मणनाणेत्ति विनामन पर्यवज्ञान केवल-द्विकंच केवलज्ञान केवलदर्शन लक्षणशेषानवोपयोगाभवति, सुरे-सुरगतौ निरित्ति, तिर्यग्गतौनिरयात्ति नरकगतौ अनयत्तिअविरति-मार्गणायाभवन्ति । एवंशुद्धिसत्वविरत्यसंभवेनमन पर्यवज्ञानकेवल-द्विकंचेति ॥ ८१ ॥

टबार्थ —हवे बार उपयोग कहे छे ३ अज्ञानमतिअ-ज्ञान १ श्रुतअज्ञान २ विभंगअज्ञान ३ पाचज्ञानमतिज्ञान

१ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मन पर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५ च्यार दर्शन ४ चक्षुदर्शन १ अचक्षुदर्शन २ अवधिदर्शन ३ केवलदर्शन ४ ए बारे जीव लक्षणउपयोग छे मन पर्यवज्ञान १ केवलज्ञान २ केवलदर्शन ३ ए तीन विना बाकी तीन ज्ञान तीन अज्ञान तीन दर्शन ए ९ उपयोग छे देवगति १ तिरिगति २ नरकगति ३ विक कहीजे अविरति ४ ए च्यार मार्गणामे नव उपयोग छे ९ ॥ ८१ ॥

तसयोअवेअसुका, हारनरपणिदिसन्निभविसव्वे।
नयणेयरपणलेसा, कसायदसकेवलदुगुणा ॥८२॥

टीका—तसयोअ इत्यादि ॥ त्रसेषुयोगेषुमनोवाक्कायरूपेषु वेदेषुद्र्यकारलक्षणस्त्रीपुनपुंसकलक्षणेषु शुक्लेश्यायाआहारकेषु नरगतौपंचेन्द्रियेषुसंज्ञिषुभव्येषुसर्वेद्वादशाप्युपयोगा संभवंति । वेदेष्वभिलापरूपेषुकेवलद्विकहीनादशैवोपयोगा लिंगाकारमानेषुद्रव्यवेदेषुद्वादशोपयोगा कथ्यते नयणेत्ति नयनेचक्षुर्दर्शनेइयरत्ति इतरे अचक्षुर्दर्शनेपंचसुलेश्यासुचतुर्षुकषायेषु क्रोधमानमायालोभेषु केवलद्विकेनऊनादशउपयोगा भवंति नतुकेवलद्विकचक्षुर्दर्शनादिसद्भावेअनुत्पादात्तस्य ॥ ८२ ॥

टबार्थ—त्रसकाय १ तीनयोग ३ मनोयोग १ वचनयोग २ काययोग ३ वेद ३ पुरुषवेद १ स्त्रीवेद २ नपुंसकवेद ३ शुक्लेश्या आहारक १ मनुष्यगति २ पंचेन्द्रि १ सन्नी १ भव्य १ ए १३ मार्गणामे सर्व १२ उपयोग छे चक्षुर्दर्शनमे १ अचक्षुर्दर्शनमे १ पांच लेश्यामे कृष्ण १ नील २ कापोत ३ तेजो ४ पद्म ५ कषायमे १० उपयोग छे केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ ए दोनु ओछाकीजे इत्यर्थ ॥ ८२ ॥

चउरिंदिअसन्निदुअन्नाण, दसड्गवितिथावरिअचक्खु
तिअनाणदसणदुग, अन्नाणतिगभवमिच्छदुगे ॥८३॥

टीका—चउरिंदिअसन्निइत्यादि चतुरिंद्रियेअसज्ञिनिचत्वार-उपयोगाभवतिकेनइत्याहद्यज्ञानदर्शनद्वेअज्ञानेमत्यज्ञानश्रुताज्ञान-रूपेद्वेदर्शनेचक्षुर्दर्शनाचक्षुर्दर्शनलक्षणइत्यर्थ तथानएवपूर्वोक्ताश्च-त्वारउपयोगाअचक्षुरिति चक्षुर्दर्शनरहिता सन्त त्रयोभवन्तिके-त्वित्याह ॥ इगत्तिसामान्यत एकेंद्रियेषुद्वींद्रियेषु त्रींद्रियेषुस्थाव-रेषुमत्यज्ञानश्रुताज्ञानेअचक्षुर्दर्शनेचेतित्रयउपयोगा भवन्तिशेषा विभंगतुनभवप्रत्ययन शेषास्तुसम्यक्त्वादिअभावात् नप्राप्यतेअज्ञा-नत्रिकचक्षुरचक्षुरूपदर्शनद्वय एवपंचोपयोगाभवन्तिअज्ञानत्रिकेअ-भव्यमार्गणायामिथ्यात्वद्विकेमिथ्यात्वसास्वादनेपंचोपयोगा अज्ञान त्रिकदर्शनद्विकरूपानशेषा ज्ञानदातमम्यक्त्व विरत्यभावादितिपद्मा-ज्ञानत्रिकेअवधिदर्शनेपूर्वाचार्यै केनचित्कारणान्नेष्यतेतन्नसम्यगवग-च्छाम इतिदेवन्द्रसूरिनाम्न्य ॥ ८३ ॥

टबार्थ—चौरेंद्रीमे १ असज्ञिमे १ मतिअज्ञान १ श्रुतअ-ज्ञान १ ए २ अज्ञान चक्षुदर्शन १ अचक्षुदर्शन २ ए दोय दर्शनमे ४ उपयोग छे। एकेंद्रीमे बेंद्रीमे तेंद्रीमे पाच थावरमे ए ८ मार्गणामे २ अज्ञान १ अचक्षुदर्शन ए ३ उपयोग छे चक्षुदर्शन विना तीन अज्ञान मतिअज्ञान १ श्रुतअज्ञान २ विभगअज्ञान ३ दोय दर्शन चक्षुदर्शन १ अचक्षुदर्शन २ ए ५ उपयोग छे। ए मार्गणामे तीन अज्ञानमे ३ अभव्यमेमिच्छ द्विकमे मिथ्यात्व १ सास्वादने [illegible]
छे ॥ ८३ ॥

केवलदुगेनियदुग, नवतिअन्नाणविणुखइअअहखाए।
दसणनाणतिगदेसि, मिसिअन्नाणमीसत ॥ ८४ ॥

टीका—केवलदुगेनियदुग इत्यादि ॥ केवलद्विके केवलज्ञानदर्शनरूपेणे निजद्विकके केवलज्ञानकेवलदर्शनरूपभवतिनशेषादश-अत्रलब्ध्युपयोग यत्रच्छेदेपत्र केवलज्ञानदर्शनोत्पाद नट्ठम्मिछाउमत्थिएनाणे केवलनाणोउवनज्जइइतिनिषधनात् इति पवहारनयमतनिश्चयनयेनआवरणक्षयेआचार्य्यप्राकट्यनियमात् तथापिकेवलज्ञानप्रकाशेमत्यादीनामुपयोगानातत्रान्तर्भावात् यथासवितु प्रकाशेतारादीनासद्भावेऽपिनप्रत्यक्षदर्शनात् एवतेनशेषाइतिनवतिअन्नाणविणुअज्ञानत्रिकविनाशेषानवोपयोगा क्षायिकसम्यक्त्वेयथाख्यातचारित्रेप्राप्यते अज्ञानत्रिकस्यमिथ्या त्वसद्भावेभावात् नअनयोरिति ॥ तथादेसिइतिदेशविरतौ ज्ञानत्रिकमतिश्रुतअवधिलक्षणदर्शनत्रिकचक्षुरचक्षुरवधिदर्शनरूपप्राप्यते । नशेषास्तत्राज्ञानत्रिकस्यमिथ्यात्वप्रत्ययात्मनःपर्यवकेवलद्विक सर्वविरत्यभावान्नतत्र मिश्रे नदेवषट्क अज्ञानमिश्रितभवति तत्रसम्यक्त्वात् पतितस्यमिश्रभावगतस्यज्ञानत्रिकदर्शनत्रिकरूपउपयोगपट्कप्राप्यते मिथ्यात्वात् मिश्रमार्गगतस्यअज्ञानत्रिकदर्शनत्रिकरूपउपयोगपट्कप्राप्यते अत्रावधिदर्शनमार्गणाऽभिप्रायेणोच्यते इति ॥ ८४ ॥

टबार्थ—केवलदुगे केवलज्ञान १ केवलदर्शनमे आपआपणाएहीज केवलज्ञान केवलदर्शन ए बे उपयोग छे तीन अज्ञान विना बाकी नव उपयोग पाच ज्ञान च्यार दर्शन ए समीलने नव उपयोग छे क्षायिकसमकितमे यथाख्यातचारित्रमे दर्शन ३ चक्षु १ अचक्षु २ अवधिदर्शन ३ तीन ज्ञान

मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान ए ६ उपयोग छे, देशविरतिमे अने एहीज ६ उपयोगज्ञानसुमिश्र न कीजे ज्ञान काढीजे एटले २ अने दर्शन ३ अज्ञान ए ६ उपयोग मिश्रमे छे ॥८४॥

मणनाणचरवुवज्जा, अणहारेतिन्निदसचउनाणा ।
चउनाणसजमोवसम, वेअगेओहिदसेअ ॥८५॥

टीका—मणनाणचरवुवज्जा इत्यादि ॥ मन पर्यवज्ञानचक्षुदर्शनवर्जा शेषान्शोपयोगाअनाहारकेभवति, यत्तुमन पर्यवज्ञानेचक्षुर्दर्शनमधानाहारकेनसभवति अनाहारकोविग्रहगतिकेवलिसमुद्घातायोगिसिद्धावस्थायानचमनानयो सभव तथा त्रीणिदर्शनानि चक्षुरचक्षुरवधिदर्शनरूपाणिचत्वारिज्ञानानि मतिश्रुतावधिमन पयवलक्षणानीत्येवसप्तोपयोगाभवति, चतुर्षज्ञानेषु मतिश्रुतावधिमन - पर्यायलक्षणेषु तथा चतुर्षुसयमेषु सामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिकसूक्ष्मसपरायेषु औपशमिकेसम्यक्त्वे तथा वेदकेक्षायोपशमिके अत्रविदर्शनेचसप्तुपयेनगेपाइहाप्यवधिदर्शनेमत्यज्ञानाद्युपयोगप्रतिपेधोवृद्धश्रुताचार्याभिप्रायापेक्षयाद्रष्टव्य इतिमार्गणासुप्रोक्ताउपयोगा मतातरेआपेक्षिकप्रतिपादिकागाथामाह॥

दोतेरतेरबारसमणेकमा, अट्ठदुचउचउवयणे ।
चउदुपणतिन्निकाए, जीअगुणयोगोवओगन्ने ॥१॥

अत्रमुख्यस्वरयमनापेक्षयामित्रयोगमुर यत्व याख्यारूपागाथास्वनोव्यार येयाइतिसाप्रतमार्गणासुलेश्या निरूपयन्नाह ॥ ८५ ॥

टबार्थ —मन पर्यायज्ञान, चक्षुदर्शन ए दोय काढीजे अनाहारकमे १० उपयोग छे तीन दर्शन ३ चक्षु १ अचक्षु २ अवधि च्यार ज्ञान ४ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यायज्ञान,

ए ४ उपयोग छे च्यार ज्ञानमे सजममे उपशमसमकिनमे क्षयोपशम समकितमे अवधिदर्शनमे ए इग्यार मार्गणामे सात उपयोग छे ॥ ८५ ॥

छसुलेसासुसट्ठाण, एगिंदिअसन्निभूदगवणेसु ।
पढमाचउरोतिन्निउ, नारयविगलग्गिपवणेसु ॥८६॥

टीका—छसुलेसासुसट्ठाण इत्यादि ॥ पट्सुलेश्यासुस्वस्थान स्वा स्वा लेश्याभवति यथाकृष्णलेश्याया कृष्णलेश्यानीललेश्यापानीललेश्या इत्यादि सामान्यत एकेन्द्रियेपुअसज्ञिभूदकवनेपुपृथिव्यबुवनस्पतिपुमथमा कृष्णनीलकापोततेजोलेश्याश्चतस्र भवति भवनपति यतरज्योतिष्कसौधर्मेशानदेवाहिस्वस्वभवच्युताएतेपुमध्ये समुत्पद्यते तेचतेजोलेश्यावन्त समुत्पद्यते नारकेपु विकलेन्द्रियेपु (द्वीन्द्रियेपु त्रीन्द्रियेपु चतुरिन्द्रियेपु) अग्निपु वायुकायिकेपु प्रथमास्तिस्त्र कृष्णनीलकापोतलेश्याभवति नान्यामायोऽमीषामप्रशस्ताध्यवसायस्थानोपेतत्वात् ॥ ८६ ॥

टबार्थ—हिवेबासठ मार्गणामे लेश्या कहे छे, तिहा छ लेश्यामे आपआपणी लेश्या छे कृष्णलेश्यामे कृष्ण छे नीललेश्यामे नील छे, तेजोमे तेजो कापोतमे कापोत एकेन्द्रीमे असज्ञीमे २ पृथिवीकाय अपकाय वनस्पतिकाय ए पाच मार्गणामे पहिली कृष्ण नील कापोत तेजो ए च्यार लेश्या छे नारकीगतिमे बेन्द्रीमे तेन्द्रीमे चौरेन्द्रीमे अग्निकायमे वायुकायमे ए [illegible] मार्गणामे पहिली तीन लेश्या छे ॥ ८६ ॥

अहरकायसुहुम्मिकेवल, दुगिसुकाछाविसेसठाणेसु।
वधाचउसवत्थवि, अकसाएपगइदलवधो ॥८७॥

टीका—अहक्कारएसुहुम्मि इत्यादि ॥ यथार यानसयमेसु-क्ष्मसपरायसयमे केवलद्विके केवलज्ञान केवलदर्शनरूपेशुक्ललेश्या-एवनशेषा एतासुअत्यनविशुद्धपरिणामत्वात्, शेषासुमार्गणासु एकचत्वारिंशत् सर यासुपडपिलेश्या प्राप्यते ॥ उक्तामार्गणासुलेश्या सप्रतिबधनच्चविभजन्नाह॥ बराचउसबत्थवि इत्यादि मिथ्यात्वादि-हेतुभि आत्मप्रदेशेकर्मपुद्गलानालोलीकरणबंध सचतुर्द्धाप्रकृतिबध स्थितिबध रसबध प्रदेशबध तनयोगापयडिपएसठिइअणुभाग-कसायाओइतिवचनात् प्रकृतिप्रदेशबधौयोगानुभवन स्थितिबध-रसबधौकषायातभवन, तबनत्त्वार्यतोज्ञेय ज्ञानेषु त्रिषुअज्ञानेषु षट्-सुसयमेषु त्रिषुदर्शनेषु षट्सुलेश्यासुभव्याभव्येषु षट्सुसम्यक्त्वेषु सज्ञि असज्ञि मार्गणासु आहारकानाहारकमार्गणासु चतुर्विधोपिऽबंध तेनसर्वनापिसर्वास्वपिमार्गणासु बधभेदाश्चत्वारोपिप्राप्यते अकसाए कषायरहितासुकेवलद्विकयथाख्यातलक्षणासुत्रिषुमार्गणासु पगइ इतिप्रकृतिबध तथा दलत्ति प्रदेशसमुदयोदल प्रदेशबंध इति-बधद्वयप्राप्यते योगरूपस्यहेतो सद्भावात् द्वारायानबन्धकमसक्षे-पार्थ ॥ ८७ ॥

टबार्थ—यथाख्यानचारित्रमे सूक्ष्मसपरायचारित्रमे केवल-ज्ञानमे केवलदर्शनमे एक शुक्ललेश्या छे। बीजी मार्गणा १२ गतितेंद्री १ त्रस १ योग ३ वेद ३ कषाय ४ ज्ञान ७ सजम ५ दर्शन ३ भव्यसमकित ६ सज्ञी १ आहारक २ इकतालीस मार्गणामे ६ लेश्या छे। बधना ४ भेद छे, सर्वमार्गणाये च्यार प्रकारनो बध छे, जिहा कषायोदय नही तिहा प्रकृतिबध तथा प्रदेशबध छे ॥ ८७ ॥

पणतसनरयोएसु, कसायलेसाअचक्खुभवेसु ।

चउमूलउत्तरापुण, सगवन्नाहेयवोभणिया ॥ ८८ ॥

टीका—अथचत्वदेनसोमूलोत्तरमार्गणासुनिरूपयन्नाह ॥ तत्र मूलहेतवोमिथ्यात्वाविरतिकषाययोगलक्षणाश्चत्वारउत्तरहेतव मिथ्यात्वपंचकअविरतिद्वादशककषायपंचविंशतय योगा पंचदशमर्वमीलनेसप्तपंचाशत्, तत्रपर्याप्तपंचेंद्रियमार्गणाया त्रसकायमार्गणाया नरगति मनुष्यगतिमार्गणाया काययोगमार्गणाया कृष्णादिलेश्यासुषट्सुअचक्षुर्दर्शनेभव्यमार्गणाया संज्ञिमार्गणाया आहारकमार्गणाया एव चतुर्दशमार्गणाया मूलहेतवश्चत्वार उत्तरहेतव सप्तसप्तपंचाशत्भणिता प्ररूपितासतीर्थंकर इतिमनोयोगेवाग्योगेचक्षुर्दर्शनमार्गणाया औदारिकमिश्रकार्मणयोगविनापंचपंचाशद्धेतव प्राप्यते । ॥ ८८ ॥

टवार्थ —पंचेंद्रीमार्गणाये त्रसकायमार्गणाये मनुष्यगतिमार्गणाये योग तीनने विषे कषाय ४ लेश्या ६ अचक्षुदर्शन १ भव्य एटली मार्गणाये १८ मूल च्यार बन्धहेतु छे, मिथ्यात्व १ अविरति १ कषाय १ योग १ ए च्यार छे, उत्तर सत्तावन छे, मिथ्यात्व ५ अविरति १२ कषाय २५ योग १५ ए सत्तावन छे ॥ ८८ ॥

तिरिगईअन्नाणतिगे, अजयअभवेमिच्छिअणहारा ।
थीएदुवेयहीणा, साहारापुरिससढंमि ॥ ८९ ॥

टीका—तिरिगईअन्नाणइत्यादि ॥ तिरिगईति तिर्यग्गतौअज्ञानत्रिकमार्गणासु अजयत्ति अविरतिमार्गणाया अभव्यमार्गणाया मिथ्यात्वमार्गणाया अणहारात्ति आहारकशरीरआहारकमिश्ररहिता पंचपंचाशत्हेतव प्राप्यते थीएस्त्रीवेदेतेपूर्वोक्ता पंचपंचाशत्पुरुषवेदनपुंसकवेदहीनात्रिपंचाशत्हेतव संभवन्ति ॥ वेएवंतिपंचाशत्-

साहाराआहारकद्विकसहिता पचपचाशत्हेतव पुरुपवेदेनपुसकवेदेचप्राप्यते अन्यतरवेदद्वयहीनाभवतिपुरुपवेदेस्त्रीनपुसकेनस्त्रीपुरुपेनइतिहेतवोहि उदयरूपाज्ञेया उदयरूपा परिणामविशोषिसक्लेशहेतवोज्ञेया ॥ ८९ ॥

टवार्थ —तिरिगति १ अज्ञानतीन अविरति १ अभव्य १ मिथ्यात्व ए सात मार्गणाने विपे आहारक २ विना ५५ बध हेतु छे मूल ४ छे, स्त्रीवेदमार्गणाये पुरुपवेद तथा नपुसकवेद ए विना ५३ हेतु छे, ते तेपनमव्ये पुरुपवेद तथा नपुसकवेदमव्ये आहारक वे मेळीये तेवारे ५५ हेतु छे ॥ ८८ ॥

देवेउरलाहारग, सढविणानारगेअथीपुरिसा । सढयुआयगिंदिसु, चउछत्तीसचमूलियरा ॥ ९० ॥

टीका—देवेउरलाहत्यादि ॥ देवगतिविषये औदारिकद्विकाहारकसढइतिनपुसकवेदविनाद्विपचाशत्बधहेतवोभवति । भवप्रत्ययादेवनसभव नारकेनारकगतोस्त्रीवेदपुरुपवेदविनातेएवदेवप्रत्यया एकपचाशत्बधहेतवोभवति षढयुआइतिषढनपुसकवेदयुक्ताइत्यनेन नरकगतौनपुसकवेदएवउदयेप्राप्यते एकेंद्रियेपुमूलहेतव चउत्तीचत्वारइतरेउत्तरभेदा छत्तीस इतिषट्‌त्रिंशत्भेदा तेचअग्रेतनगाथोक्ता ज्ञेया ॥ ९० ॥

टवार्थ —देवगतिमव्ये औदारिक २ आहारक २ नपुसकवेद १ ए पाच विना ५२ बवहेतु छे । नरकगतिमव्ये आहारक २ औदारिक २ स्त्रीवेद १ पुरुपवेद ए ६ विना ५१ हेतु छे । एक नपुसकवेद मेळीये एकेंद्रीयमव्ये मूल च्यार उत्तर छत्तीस बवहेतु छे, ते सर्वे आगळी गाथाये कह्या छे ॥ ९० ॥

इगमिच्छसत्तअविरय, कसायतेवीसपचयोगाय ।
पवणेवचउथावरि, अविउव्वाहेउचउत्तीस ॥ ९१ ॥

टीका—तेचउच्यते ॥ इगमिच्छइत्यादि ॥ तत्रएकेंद्रियेषुमिथ्यात्वअनाभोगएकअविरतय सप्त तत्रषट्कायवधस्पर्शनेंद्रियविषयरूपा सप्तअविरतय कषाया त्रयोविंशति स्त्रीपुरुषवेदहीनायोगा औदारिकद्विकवैक्रियद्विककार्मणयोगलक्षणा पचपत्रनेवायुकायेप्येवपदत्रिंशत्भेदा प्राप्यतेचउथावरिस्थावरचतुष्केपृथिव्यप्वनस्पति तेजोलक्षणासुचतसृपु अविउव्वित्तिवैक्रियद्विकहीनाश्चतु त्रिंशत्हेनव प्राप्यते पृथिव्यादिपुवैक्रियद्विकनसभवति ॥ ९१ ॥

टबार्थ —एक अनाभोगमिथ्यात्व १ छकाय ६ फरसनेंद्रियनी अविरति ए सात अविरतिकषाय बे वेद विना तेवीस योगा पाच योग औदारिक २ वैक्रिय २ कार्मण १ ए पाच बधहेतु छे । वायुकायमध्ये ३६ बधहेतु छे । पृथिवी १ अप २ तेउ ३ वनस्पतिए ४ थावरमध्ये वैक्रिय २ विना ३४ बधहेतु छे ॥ ९१ ॥

विगलेइन्दिअवुड्ढी, वयणयुआछसत्तअट्ठतीसाय ।
नाणतिगओहिदसे, वेअगखवगेसुअडचत्ता ॥९२॥

टीका—विगलेइन्दिअवुड्ढी इत्यादि॥ विगले द्वीद्रिय त्रींद्रिय चतुरिंद्रियलक्षणमार्गणात्रिकेइद्रियाणा द्वीन्द्रिये रसनेन्द्रियवृद्धि त्रीन्द्रिये घ्राणेन्द्रियवृद्धि चतुरिन्द्रिये चक्षुरिन्द्रियवृद्धि वयणत्तिवचन असत्यामृषारूप तेनयुनाइत्यनेन येपूर्वोक्ता पृथ यादिपुचतुस्त्रिंशत्हेनत्रस्तेअसत्यामृषावाग्योगारसनेन्द्रियाविरतियुक्ता छइतिपद्-

युक्ताख्रिंशत् षड्विंशत् त्रीन्द्रियेषु तेएव घ्राणेन्द्रिययुक्ता सप्तत्रिंशत् हेतव भवंति ते एव त्रीन्द्रियप्रत्यया चक्षुरिन्द्रियाऽविरतियुक्ताअष्टत्रिंशत् चतुरेन्द्रियेषुप्राप्यते तथा ज्ञानत्रिकेमतिश्रुतावधिलक्षणेअवधिदर्शनेवेदकेक्षयोपशमसम्यक्त्वेक्षायिकसम्यक्त्वे अष्टचत्वारिंशत्हेतवस्तत्रमिथ्यात्वपंचकाननानुबंधिचतुष्टयरहिता षट्चत्वारिंशत्, अविरतिसम्यग्गुणस्थानप्रायोग्या,आहारकद्विकचप्रमत्तानुदयप्रायोग्यमेव अष्टाचत्वारिंशत् हेतवोज्ञानत्रिकादिमार्गणासुप्राप्यते ॥ ९२ ॥

टबार्थ—विकल्पने विषे इंद्रियवृद्धि करवी अने वचनयोग असत्याअमृषाए मेळीये तेवारे बेन्द्रियने मिथ्यात्व १ अविरति ८ कषाय २३ योग ४ ए छत्तीस हेतु छे तेन्द्रि ने घ्राणेन्द्रिनी अविरति मेळीये तेवारे सडतीस बन्धहेतु छे चउरेन्द्रि ने चक्षुइन्द्रिनी अविरति मेळीये तेवारे अडतीस बन्धहेतु छे ज्ञान ३ तीन अवधिदर्शन क्षयोपशमसमकित क्षायिकसमकित एटली मार्गणाये अडतालीस बन्धहेतु छे ॥ ९२ ॥

मिच्छअणहीणउवसमि, हारगहीणाछचत्तसासाणे।
मिच्छाहारगहीणा, मीसेदेसेगुणप्पभवा ॥ ९३ ॥

टीका—मिच्छअणहीण इत्यादि ॥ उवसमिउपशमसम्यक्त्वे मिथ्यात्वपंचकअनतानुबंधिचतुष्टयरहिता आहारकद्विकहीना छचत्तइति षट्अधिकाश्चत्वारिंशत् षट्चत्वारिंशत्हेतव प्राप्यते तथा सास्वादनेमिथ्यात्वपंचकाहारकद्विकहीना पचाशत्हेतव प्राप्यते मिथ्यात्विना मिथ्यात्वएवोदयात् आहारकस्यप्रमत्तादौउदयात् तथा मीसेदेसेतिमिश्रे तथा देशेदेशविरतौ गुणप्रभवामिश्रेमिश्रगुणस्था-

नप्रायोग्या निचत्वारिंशित् देशविरतेदेशविरतिगुणस्थानप्रायोग्या एकोनचत्वारिंशत्हेनत्र प्राप्यते ॥ ९३ ॥

टबार्थ—मिथ्यात्व ५ अनन्तानुबंधि ४ ए नव विना उपशमसमकितमध्ये आहारक २ ते अडनालीसथी काढीये तेवारे छेतालीस बंधहेतु छे सास्वादनगुणठाणे मिथ्यात्व ५ आहारक २ ए ७ विना पचास बंधहेतु छे मिश्रे तेतालीस तथा देशविरते इगुणच्पालीस बंधहेतु छे जे गुणठाणे कही ते ॥९३॥

केवलदुगिसगयोगा, जोगाइक्कारशुद्धचरणमि ।
नवयोगिककसाओ, सुहुमेदसहेयवोभणिया ॥९४॥

टीका—केवलदुगिसगयोगाइत्यादि ॥ केवलद्विकेकेवलज्ञानदर्शनलक्षणेसप्तयोगा प्रथमान्तिममनोवाग्योगरूपा औदारिकद्विककार्मणकाययोगरूपा प्राप्यतेमोहोदयाभावात् मिथ्यात्वाविरतिकषायभेदानामनुदय शुद्धचारित्वात्असत्यमिश्रमनोवाग्योगाभाव निर्मोहत्वातसशयवाक्यादिकरणाभावात् नवक्रियाहारकोइति मनोयोगवाग्योगाष्टकऔदारिककाययोगएतेनवयोगाउपशांतयथाख्यातस्य तथाक्षीणमोहस्यभवतिऔदारिकमिश्रकाययोगकार्मणयोगौतुकेवलिसमुद्घातावस्थायायथाख्यातचारित्रेनभवत एवएकादशयोगा भवति सुहुमेसूक्ष्मसंपरायचारित्रेनवयोगा चत्वारोमनोयोगा चत्वारोवाग्योगा औदारिककाययोगलक्षणा एकसूक्ष्मसंज्वलनलोभरूप कषाय । एवदशहेतव भवतिशेषकषायाणाउदयाभावात्तद्भावेवाविरतेरप्यभाव मिथ्यात्वोदयस्तुप्रथम एवगुणस्थानकयावत्नपरतेननप्राप्यते ॥ ९६ ॥

टबार्थ—केवलज्ञान १ केवलदर्शन एने विषे सात योग

छे । मनना ४ वचनना ४ औदारिक २ कार्मण ए ११ योग-बंधहेतु, यथाख्यातचारित्रने विषे मनना ४ वचनना ४ औदारिक १ नव योग तथा एक सज्वलन लोभ ए दश बंधहेतु छे ॥ ९४ ॥

सजलणनोकसाया, कम्मणओरालमीसविणुयोगा।
सामाइयछेएअण, हारथ्थीविउविपरिहारे ॥९५॥

टीका—सजलणनोकसाया इत्यादि ॥ तत्रसामायिकचारित्रे-छेदोपस्थापनीयचारित्रेषड्विंशति हेतव प्राप्यते तत्रद्वादशकषायानुदयेसर्वविरतिप्रादुर्भाव सर्वविरतिप्राकस्येचमिथ्यात्वाविरतिध्वंस-एवअत्र सज्वलनचतुष्टयनवनोकषाया एवत्रयोदशकषायभेदा कार्मणौदारिकमिश्रयोगाभावेशेषास्त्रयोदशयोगा एवंपड्विंशतिबंध-हेतव प्राप्यते, सामायिकच्छेदोपस्थापनीयेप्राप्यन्ते तथापरिहारविशु-द्धिचारित्रेस्त्रीवेदरहिताद्वादशकषाया मनोयोगवाग्योगाष्टकऔदारिक-चेतिनवयोगा एतेनवयोगाएवंएकविंशतिहेतव प्राप्यते वैक्रिया-हारकलब्धीच वनवासित्वात् अभिगृहीततपोविशेषयुक्तत्वान्नभवन ॥ ९५ ॥

टबार्थ —सज्वलनना ४ नोकषाय नव कार्मण २ औदारिकमिश्र ए वे विना १३ योग छवीस बंधहेतु छे सामायिक छेदोपस्थापनीय चारित्रने विषे आहारक २ स्त्रीवेद २३ बंध हेतु छे ॥ ९५ ॥

तेरसकसायजोगा, मणनाणेविंतिकेइमणवयणे ।
योगातेरसतोहिं, उज्जुसुअनयविहींगहिआ ॥९६॥

टीका—तेरसकसायजोगा इत्यादि ॥ मणनाणेमन पर्यव-ज्ञाने तेरसत्तित्रयोदशकषाया सज्वलनचतुष्टयनवनोकषायलक्षणा त्रयोदशयोगाऔदारिकमिश्रकार्मणयोगद्वयरहिता पड्विंशतिहेतव । प्राप्यते, अत्रमनातरेकेचित्तुवति मनोयोगे वचनयोगे पूर्व-पचदशयोगा उक्तास्तेचनैगमनयेअतीतनैगमापेक्षयाएपाजीवाना-मनोयोग वचनयोगस्तस्यपचदशयोगा प्राप्यते, केचित्मनोयोगे-पर्याप्तावस्थापेक्षयाओदारिकमिश्रकार्मणयोगरहितास्त्रयोदशयोगा भवति, नेच ऋजुसूत्रनयापेक्षयाऔदारिकमिश्रकार्मणयोगद्वयअपर्या-प्तावस्थायापयाप्तावस्थायातुष्णीननेनत्रयोदशैरयोगागृहीता कषाय चतुष्टयेद्वादशकपायहीना पचचत्वारिंशद्‌त्रहेतव प्राप्यते ॥९६॥

टबार्थ—तेर योग औदारिकमिश्र १ कार्मण ए २ विना सज्वलनना ४ नवनोकषाय ए छवीस बन्धहेतु छे तथा पूर्वे मनोयोगने तथा वचनयोगने सत्तावन्न बन्धहेतु ग्रह्या तेमध्ये योग पनरगवेख्या तेसञ्ज्ञी अपर्याप्तो १ पर्याप्तो २ जीवभेदनी अपे-क्षाये नैगमनयगवेख्यु छे तथा केइक आचार्य पर्याप्ति कर्या पछी मनवचन थाय तेमाटे ते ३ योग गवेषे छे औदारिक-मिश्र १ कार्मण २ ए बे नथी गवेषता ते ऋजुसूत्रनय गवेषे छे ऋजुसूत्रनय वर्तमानकालग्राही छे तेमाटे ते ग्रह्यु छे एम बन्धहेतु अधिकार कह्यो छे ॥ ९६ ॥

चउदसयोगाविहीणा, अणहारेअसन्निएसुइगचत्ता। वयतिवणमिच्छेचउ, पुरिमथ्थीहारदुगहीणा॥९७॥

टीका—चउदसयोगविहीणा इत्यादि ॥ तथा अनाहारक-मार्गणायाचतुर्दशयोगान भवति कम्मअणहारेइतिवचनात् शेषामि-

थ्यात्वादयोद्विचत्वारिंशत्कार्मणयुक्तास्त्रिचत्वारिंशत् हेतव प्राप्यते असन्नीएसुत्ति असज्ञिमार्गणाया एगचचत्ति एकचत्वारिंशत्हेतवोभवति, तत्रसप्तपचाशत्लक्षणेषु वचनयोगनयमनोयोगचतुष्टयमिथ्यात्वचतुष्टय अभिग्रहादिक मनोयुक्तस्यैवामनस्कस्यानाभोगमिथ्यात्वमेववतेनाभिग्रहादयश्चत्वारिमिथ्या त्वानि, पुरुषस्त्रीवेदौआहारकद्विकमनस अविरति एतपोडशहेतवोनभवति शेषाएकचत्वारिंशत्भवति थीनरपणिंदि चरमाचउइतिगाथालिंगाकारमाननवस्तुगत्याइति ।। इत्युक्ता मूलोत्तरबधहेतव मार्गणासु यत्अपेक्षाभेदेनोक्त तत्सर्वमपिसापेक्षमेवनोत्सूत्रबुद्धिकार्यादक्षैरिति ।। साम्प्रतमाश्रवभेदान्मार्गणासुनिरूपयन्नाह ।। ९७ ॥

- टबार्थ —

नरपंचिदियतसभव, योगआहारसुकसन्निसु ।
बायालीसआसव, केवलदुगअहखायगेचउग ॥९८॥

टीका—नरपचिदियतसभव इत्यादि ।। तत्राश्रवभेदाद्विचत्वारिंशत् इदिअकसाय अव्रतयोगापचचउपचतितिकम्माकिरीयाओपणवीसकाइअमाइयाभेया ।। ततनरमनुष्यगतौपचेन्द्रियेत्रसकाये भव्येयोगत्रिकेआहारकेशुक्ललेश्याया सज्ञिमार्गणाया द्वाचत्वारिंशत् आश्रवभेदा प्राप्यते एतासुमार्गणासु जीवभेदेन कालभेदेन सर्वे आश्रवभेदा प्राप्यते तथा केवलज्ञानकेवलदर्शने उपयोगद्वये यथाख्यातचारित्रेचउगत्तिचतुष्क योगत्रिकेयापथिकाक्रियारूपआश्रवचतुष्कमाप्यते निर्मोहस्यइन्द्रियकषायअव्रतादीनाअभावात । कायिक्यादिसपरायिकिक्रियायाअभावात् आश्रवचतुष्कमेवभवति एव त्रयोदशमार्गणा उक्ता ॥ ९७ ॥

टवार्थ—हवे मार्गणाये आश्रवना भेद कहे छे मनुष्य पचेंद्रिय त्रसकायभव्य १ योग ३ आहारक शुक्ललेश्या सञ्ज्ञी एटली मार्गणाये इन्द्रिय ५ कषाय ४ अव्रत ५ योग ३ क्रिया २५ ए ४२ नेतालीस आश्रव छे केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ यथाख्यातचारित्र ए त्रीने मार्गणाये इरियावही क्रियारूप एक आस्रवनो भेद पामीये तीन योग एव ४ पामीये ॥ ९७ ॥

एगिंदिथावरेसु, तीसरसणाइइंदियानथ्थी ।
मणवयणयोगवययोग, पच्चइयानत्थिकिरियाओ९८॥

टीका—एगिंदिथावरेसु इत्यादि ॥ एकेन्द्रियमार्गणायास्थावरपंचकमार्गणायांत्रिंशतआस्रवभेदा प्राप्यते रसनादीन्द्रियाणिनसंति आसुस्पर्शनेन्द्रियस्यसद्भावात् कषायचतुष्क अव्रतपंचक एक काययोग चक्षुरिंद्रियाभावात्दृष्टिकी क्रियाभवति पाडोच्ची १ सामतोवणी १ आनयनी क्रिया १ आज्ञाप्रत्ययिकी क्रिया एता चतस्र क्रिया वचनयोगवतएवभवति स्थावरेषु वचनयोगाभावात् न एता क्रियाइरियावहीविहिणा इतिपदअत्रयोज्यतेनइर्यापथिकी क्रियाक्षीणकषायाणाभवति एकेन्द्रियादिपदमार्गणासु कषायोदय अस्त्येवतेननेर्यापथिकी क्रिया ॥ शेषा कायिक्यादय एकोनविंशतिभेदा प्राप्यते इत्येवत्रिंशत् ॥ ९८ ॥

टवार्थ—एकेन्द्रिमार्गणाये थावर ५ मार्गणाये त्रीस आस्रव छे रसनादिक इन्द्रिय नथी एटले एक फरसन इन्द्रिय छे कषाय ४ अव्रत ५ मनोयोग वचनयोग नथी एक काययोग छे वचनयोगथी उपनी जे क्रिया ते नथी दृष्टिकी १ पाडोच्ची

१ सामनोवणी १ आणवणी १ आज्ञाप्रत्ययकी १ ए वचन-
योगनी क्रिया नथी ॥ ९८ ॥

इरियावहीअभावो, वेइंदिसुरसणवयणसजुत्तं ।
तेइंदिएसुनासा, चउरिंदिसुचक्खुदिट्ठीअ ॥९९॥

टीका—इरियावहीअभावो इत्यादि ॥ द्वींद्रियेषुत्रेएवत्रिंशत्-
भेदा रसनेन्द्रियवचनयोगसयुक्ता द्वात्रिंशत्योगा भवति, नदुवच-
नयोगोदयेपाडोघ्री इत्यादिकाक्रियाकथन तनोन्यते पाडोघ्रामुखा-
क्रियापूर्वापरकालपावत्तत्वान्यस्मरणवत् भवतिस्मरणचदीर्घकालिक-
सज्ञाधारकस्यदीर्घकालिकीसज्ञा तु समनस्कस्यैवतेनद्वींद्रियादीनान-
भवति ॥ त्रींद्रियेषुरसनेंद्रियघ्राणेंद्रिययोगात्त्रयस्त्रिंशत्आस्रवभेदा
सभवति। चतुरिंद्रियेषुचक्षुरिंद्रियेतथादिट्ठि इतिदृष्टिकीक्रियाएवद्वयो-
र्मीलनेपचत्रिंशत्आस्रवाभवति।अत्रएकेंद्रियविकलेंद्रियेषुमृषावादादि-
अनता वचनयोगादिअभावेकथप्राप्यन्ते तनोच्यते द्र यास्रवत्वतुका-
रणरूपभावास्रवोह्यास्रवत्वनथात्मज्ञानाभावात् सर्वेषाभावास्रवास्सत्ये-
व अशुद्धविभावपरिणतिपरिणमनेनात्मन परकर्तृत्वपरिणत्याभावप्रा-
णातिपात १ जीवाजीवादिपदार्थानास्याद्वादयथार्थाऽनवबोधप-
रिणामोमृषावाद सारशुद्धयापुद्गलग्राहकतापरिणतिरदत्तादान, पौ-
द्गलिकवर्णादीनाअनुभूति भावमैथुन, पुद्गलसुखेषुसरक्षणापरिणाम
परिग्रह इत्यनेनपरभावकर्तृताहिंसाविपयस्तज्ञान मृषापरभावग्रा-
हकतादत्तादान परभावास्वादनमैथुन परभावरक्षणापरिग्रह एतेभा-
वास्रवा सर्वजीवेष्वविरतेषुसदाप्राप्यते एवएवसर्वत्रयोज्यम् ॥९९॥

टवार्थ—इरियावहीक्रिया एटलानो अभाव शेष इगुणीस
क्रिया छे मीलया तीस आश्रव छे, बेंद्रिय ने रसनइंद्रिय तथा

वचनयोग ए बे मेळीये तेवारे ३२ आश्रव छे, तेंद्रियने एक नासिका इंद्री मेळीये तेवारे तेतीस आश्रव छे, चौरिंद्रिय ते चक्षुदर्शन एकमे दृष्टिकी मेळीये तेवारे ३५आश्रव भेद छे ९९॥

पाणाइवायपरिग्गहम्मि, च्छअपच्चरकतहरिआवहिया, इंदियअव्वयहीणा, मणनाणेचरणतिअगेअ ॥१००॥

टीका—पाणाइवायपरिग्गहम्मि इत्यादि ॥ तत्र मन पर्यवज्ञानेचारित्रत्रिकेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिलक्षणेप्राणातिपातिकीक्रिया १ परिग्रहिकीक्रिया, मिथ्यात्विकीक्रिया, अप्रत्याख्यानिकी, तथाईर्यापथिकीक्रियाहीना, शेषाविंशति क्रिया कायिक्यादिका प्रशस्ता, अर्हत्भक्त्यादौशासन पाघातवारणेविष्णुकुमारादीनामिवविंशति क्रिया सामायिकचारित्रेप्राप्यते, प्रशस्तप्रवृत्तिरिवप्रशस्ताविप्रवर्तंतेएवनन्तुयदिप्रशस्ताप्राद्वेषिक्यादिनियामुनीनाप्रवृत्तेनयाप्रशस्ताप्राणातिपातिक्यपिकथनसपृच्छते, तत्राह ॥ प्राणातिपातास्त्रवस्यसर्वथाप्रत्याख्यानत्वात्तद्धेतुभूतद्वादशकषायोदयाभावात्नभवति, योगचापल्यादिद्वेषरागादिपरिणामस्यसत्वात्, अप्रशस्तनावारणेनप्रशस्तताप्रवृत्तिरूपालभ्यते, नन्वक्रियाया आस्रवभेदत्वात् प्रशस्तादिक्रिया प्रशस्तपुण्याद्यास्रवकारणत्वेनकथनिर्ग्रंथ नत्यजति, निःकर्मताःसाध्यरुचिपरिणतस्यकर्महेतुक्रियाप्रवृत्तौकिंप्रयोजन तत्राह ॥ निकाचितबद्धसञ्ज्वलनकषाययोगानामवश्योदितत्वात् यथोदयभोग्येचाशुभबंधप्राप्तगुणविनाशकत्वेनपरावृत्तादोषक्षय ज्ञानादीनाचवृद्धि शुभकृत्य वचनगुप्तिवत् अवश्योदयत्वेनाभाषणेचनिर्जरानभवतितेनयथार्थोपदेशादिस्वात्यापकरणेनिर्जराउक्ता एवमप्रशस्तक्रियापिज्ञेया । इंद्रिय-

पचकाऽननपचकहीना सप्तविंशतिरास्रवभेदा प्राप्यते, इद्रियोपयोगेसत्यपिमिथुनास्रवस्याभावात् ाद्रियविषयताते नेंद्रियास्रवाभाव ॥ ॥ १०० ॥

टवार्थ —प्राणातिपातिकी क्रिया १ परिग्रहिकी क्रिया १ मिथ्यात्विकी क्रिया १ अपचरकाणी क्रिया १ तथा इरियावही क्रिया १ ए पाच क्रिया विना २० क्रिया इद्रिय ५ विना अव्रत ५ विना एटले कषाय ४ योग ३ क्रिया २० ए सत्तावीस आश्रव भेद छे, मन पर्याय ज्ञान १ तथा सामायिक १ छेदोपस्थापनीय १ परिहार विशुद्धि १ ए तीन चारित्रने विषे सत्तावीस आश्रव भेद छे ॥१००॥

नाणतिगओहिदसे, अमिच्छदेसिमिच्छइरिअहीणाय, मणइरिअविणाअमणे, अणहारेहुतितित्तीस ॥१००॥

टीका—ना० ।ग० ।ओहिदसे इत्यादि ज्ञानत्रिकेमतिश्रुतावधिलक्षणेअवधिदर्शनेमार्गणाचतुष्ये अमिच्छत्ति मिथ्यात्विकीक्रियारहिताएकचत्वारिंशत आस्रवभेदा प्राप्यतेअविरतिसद्भावात्, देसित्ति देशविरतिमार्गणायाअमिच्छइरियत्ति मिथ्यात्विकीतथाईर्यापथिकीक्रियारहिताश्चत्वारिंशत् आस्रवभेदा प्राप्यते, मिथ्यात्वोदयस्यचतुर्थगुणस्थानेएवगतत्वात्ईर्यापथिकीतुअकषायस्यभवति देशविरतस्यकषायाष्टकोदयेवर्तमानत्वात्, तथानतुदेशविरतस्यत्रसहिंसानिवृत्तावपिस्थावरहिंसासद्भावेप्राणातिपातिकीसद्भाव इच्छापरिमाणादिकृतेलोकप्रमाणाविरतिनिवृत्तिरितिसिद्धाताशयेऽपिएवदेशविरतिर्नीलपडितवीर्यसद्भावात्, , अप्रत्याख्यानिकीक्रियासद्भावस्तेनचत्वारिंशदास्रवा मणइरिअविणा अमणेत्ति असज्ञिषुमनोयोगीर्यापथिकीक्रियाविना-

अमणेअसज्ञिमार्गणायाचत्वारिंशद्भेदा प्राप्यतेतत्मत्ययपरत्वतत्रसद्भा-
वात , अणहारेचिअनाहारकमार्गणायान्त्रयस्त्रिंशत्आस्त्रवा तत्रेंद्रिय-
पचकतुभाविंद्रियसद्भावेप्याद्यत्रयाचभगवत्याजीवेणभतेगम्भवक्कवेकिं
सइंदीयेआणिंदीयेवक्कमनि १गो० सइंदीयेवक्कमनिसेणकनिइंदीयेवक्कम-
निपचेंदियेवक्कमतिइनिवचनात इंद्रियपचकअत्रतपचककषायचतुष्टयम-
नोयोगवाग्योगरहितएक कायोगस्त्वथापचविंशति क्रियामाहिष्टि
कीनियानभवति, यद्यपिपचेन्द्रियस्यविग्रहगतिकस्यचक्षुरिंद्रियास्त्रवस-
द्भावेऽपिरूर्पादिग्रहणरूपलब्धिमनरेणनदृष्टिकीक्रिया, पाडोच्चीया सा-
मतोवणीयातु दीर्घकालिकसज्ञायुक्तस्यवचनयोगवत भवतितेनना-
नाहारकस्य नेसत्थीसाहत्थीतुओदारिकादिस्थूलशरीरव्यापारवत भ-
वति, आणवणीआज्ञाप्रायोगिक्यपिवचनयोगयुक्तस्यकायादिव्यापार-
तोभवति, विदारणिक्यपिओदारिकवैक्रियशरीरपर्याप्तस्य भवति, इत्य-
ष्टक्रियारहिता सप्तदशक्रिया कायिक्यादिका प्राप्यन्तेकाययोग-
स्यसद्भावात् अधिकरणादिकचारमगुणघातादिपरिणतया विज्ञेयएवते-
नानाहारकमार्गणायात्रयस्त्रिंशत्आस्त्रवा प्राप्यते ॥१०१॥

टबार्थ —मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान १ अवधिज्ञान अवधिदर्शन १ ते एकतालीस मिथ्यात्विकी क्रिया विना देशविरति मार्गणाये मिथ्यात्विकी क्रिया १ तथा इरियावहीकि क्रिया ए बे विना चालीस आश्रवना भेद छे, मनोयोग १ इरियावही २ ए बे विना ४० आश्रव भेद असज्ञीने विषे छे, अनाहारक मार्गणाये तेत्रीस आश्रव छे, दृष्टिकी १ पाडोची २ सामतोवणी १ सच्छीसाहच्छी १ आणवणी १ विदीरणा १ आज्ञाप्रायोगिकी १ ए क्रिया मनोयोग १ वचनयोग १ ए बे योग नथी बाकी तेत्रीस छे ॥१०१॥

वेयगियमिच्छइरिया, उवसमसनगेतेइरीअजुत्ता,
सुहमेयोगतिलोहो, काइयअणभोगपिज्जाय ॥१०२॥

टीका—वेयगियमिच्छा । वेदकेक्षयोपशमेसम्यक्त्वे मिथ्यात्विकीक्रियाईर्यापथिकीक्रियारहिताश्चत्वारिंशदास्रवभेदा प्राप्यते, अविरतादिदोषसद्भावात मिथ्यात्वास्रवविगमेसम्यक्त्वदर्शनमाप्रादुर्भाव तथाउपशमसम्यक्त्वेक्षायिकेसम्यक्त्वेतेचत्वारिंशउईर्यापथिकीक्रियायुक्ता एकचत्वारिंशदास्रवाभवति, मिथ्यात्विकीक्रियायाअभाव । सूक्ष्मसपरायचारित्रे योगतित्ति, योगामनोवाक्कायरूपास्त्रय लोहोत्ति लोभ सज्वलनलोभ कायिकीक्रिया, अनाभोगिकीक्रिया साच्ज्ञानावरणकर्मोदयसत्वात् यावत् ज्ञानावरणनावत् किंचित्अज्ञानपदार्थजानमस्त्येवेतितेनअनाभोगिकीक्रियासभव इति पिज्जत्ति रागप्रत्ययिकीक्रियालोभस्यरागागत्वात् क्रोधोदयाभावात् नद्वेषिकीक्रियाअनइत्येव सप्त आस्रवा प्राप्यते, केचित् ॥१०२॥

टबार्थ —वेदग कहेता क्षयोपशम समकितने विषे मिथ्यात्विकी तथा इरियावहीक्रिया विना च्यालीस भेद आश्रव ना पामीये, उपशम समकित तथा क्षायिक समकित मार्गणाये इरियावही क्रिया मेळीये एटले ४१ आश्रव छे, सूक्ष्मसपराय चारित्रे योग तीन, लोभ कषाय तथा कायिकी क्रिया अनाभोगिकी क्रिया तथा रागकी क्रिया एटला सात आश्रव पामीये सूक्ष्मसपराय मध्ये ॥१०२॥

अहिगरणदुगसुआ नव, केइभन्नतिसेसेइगुयाला,
इरियावहीविहोणा, चरकूअचरकुम्मिचायाला॥१०३

टीका—अहिगरण इत्यादि ॥ अधिकरणीपाउसीइतिक्रिया-द्वयंवदतितत्रापिप्राद्वेष्यातुनसभवति, तथापिप्रज्ञापनाटीकायाचतु-र्णामपिकषायाणारागद्वेषोभयरूपत्वात् प्राद्वेषिकीक्रियाभवति १ इ-त्याशयभेदात्नवआस्रवभेदाल्लभ्यते (इति) केइनवभनंति, सेस-त्तिशेषमार्गणायामनुष्यविनागतितिकवेदत्रिककषायचतुष्टयअज्ञान-त्रिकलेश्यापंचक अभव्यत्वमिथ्यात्वसास्वादनमिश्र अविरतिश्चेति-त्रयोविंशतिमार्गणासु "इरियावहीविहिणत्ति" ईर्यापथिकीक्रियारहित एकचत्वारिंशत्आस्रवा प्राप्यते, एताश्चमार्गणानियमात्सकषायाएव भवंति, तेनसांपरायिकीक्रिया प्राप्यतेनेर्यापथिकी, चक्षुर्दर्शनेअचक्षु-र्दर्शनेद्विचत्वारिंशदास्रवा लभ्यतेइत्युक्ता आस्रवामार्गणास्थाने-पुसांप्रतमार्गणासुसंवरभेदान्दर्शयन्नाह ॥ तेच

समिइगुत्तिपरीसह, जइधम्मोभावणाचरित्ताणि,
पणतिगदुवीसदसबार, पचभेएहि नायवा ॥१॥

तेचगुणस्थानशतकटीकायाव्याख्यातातएवज्ञातव्या ॥१०३॥

टबार्थ—केइक आचार्यो नव भेदे अधिकरणी क्रिया तथा पाउसी क्रिया बे संयुक्त करी नव आश्रव भेद माने छे सू-क्ष्मसंपराय भव्ये शेष थाकती रही जे २५ मार्गणा मनुष्य विना तीनगति वेद ३ कषाय ४ अज्ञान ३ लेश्या ५ अ-भव्य १ मिथ्यात्व १ सास्वादन १ मिश्र १ ए सर्व मार्गणाये इरियावही विना ४१ आश्रव भेद पामीये, एटले बासठी मा-र्गणाये आश्रवना भेद कह्या ॥१०४॥

नरतसपणिदिजोए, नाणचउगेतिदंससुक्कासु,
भवेउवसमिखायग, सन्निआहारेसुसव्वेवि ॥१०४॥

टीका—नरतस इत्यादि नरत्तिमनुष्यगतौत्रसकाये पञ्चेन्द्रियेमनोवाक्कायरूपेयोगत्रयेमतिश्रुतावधिमन पर्यवलक्षणेज्ञानचतुष्के तिदसत्ति चक्षुरचक्षुरवधिलक्षणेदर्शनत्रिकेशुक्लाइतिशुक्ललेश्यायामवनिभव्ये भव्येउवसमेत्ति उपशमक्षायिकलक्षणेसम्यक्त्वद्वयेसंज्ञिमार्गणायाआहारकमार्गणायाएवएकोनविंशतिमार्गणासुसर्वेसप्तपञ्चाशत्सवरभेदा प्राप्यते चारित्रभेदानासर्वेषासत्त्वात् त सत्त्वेचसवरभेदा सर्वेऽपिप्राप्यते इति ॥१०४॥

टबार्थ—हवे बासठि मार्गणाने विषे संवरतत्वना भेद कहे छे, मनुष्य गति १ त्रसकाय १ पचेंद्रीय १ योग ३ ज्ञान ४ ए च्यार दर्शन तीन चक्षु १ अचक्षु २ अवधिदर्शन ३ शुक्ललेश्याने विषे भव्य मार्गणाने विषे उपशम समकित सज्ञा मार्गणाये आहारक मार्गणाये १९ मार्गणा तेने विषे सर्व भेद संवरना सत्तावन पामीये ॥१०४॥

वेयतिकसायलेसा, वेअगिहरकायसुहमजईहीणा,
लोभेतेउससुहमा, चउचरणविणायचरणमि॥१०५॥

टीका—वेयतिकसायलेसा इत्यादि ॥ तिइतिडमरुकमणिन्यायेनोभयपार्श्वसबध वेदत्रिके, तिकसायत्ति कषायत्रिकेक्रोधमानमायालक्षणे लेसाइति कृष्णादिलेश्यापचके वेयगि, वेदकेक्षयोपशमे सम्यक्त्वेयथाख्यातचारित्र सूक्ष्मसपरायचारित्रलक्षणभेदद्वयाभावात् पचपचाशत्सवरभेदा प्राप्यते, सम्यग्दर्शनत सर्वचारित्रपर्यतएतेषु

परस्थापनीयादिचारित्रचतुष्टयाभावात् त्रिपञ्चाशत्संवरभेदा प्राप्यते, छेदोपस्थापनीयेऽपित्रिपञ्चाशत् सामायिकादिपरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसंपरायययाख्यातचारित्ररहिता परिहारेऽपिचारित्ररहितास्त्रिपञ्चाशत् सूक्ष्मेऽपित्रिपञ्चाशत्,यथाख्यातेऽपिअन्यचारित्ररहितास्त्रिपञ्चाशत्संवरभेदा प्राप्यते, अत्रसूक्ष्मसंपराययथाख्यातयोर्भावनाद्वादश नमाप्यते, ध्यानारूढत्वात् तेनएकचत्वारिंशत्भेदाभवंति, सूक्ष्मसंपराये-यथाख्यातेऽपिएकचत्वारिंशत्भेदाअनमोहोदयप्रायोग्या परीषहान-भवंति, ततस्तत्सहनरूपा परिषहा कुतोभवति तत्रोच्यतेपरी-षहजय संवरस्तेनपरिषहजयरूपस्यात्मपरिणामस्यसद्भावात् एते-भेदा प्राप्यते,उक्त"चतत्त्वार्थभाष्ये"परीषहजय संवर परिषहास्तु-वेदनीयादिकर्मप्रभवास्तेचभगवत्यादर्शिताएव । गाथायांतुभावना-अपहारोनोक्त सतुचकारान्ग्राह्य केचित्तुप्रशमरत्यादौतुभावना-सत्त्वमपिवदंति भावनापूर्वकज्ञानमेवध्यानेपरिणमति तेनभावना-सत्त्वमपिज्ञेयम् ॥ १०५ ॥

टबार्थ—वेद ३ तीनमध्ये स्त्रीनपुंसकमे कषाय ३ तीन-मध्ये क्रोधमानमायामाहे लेश्या पांच शुक्ल विना क्षयोपशमसम-कितने विषे यथाख्यातचारित्र तथा सूक्ष्मसंपरायचारित्र ए भेद विना ५५ संवरभेद पामीये, लोभकषाय मार्गणाये सूक्ष्मसंप-रायचारित्र संयुक्त ५६ संवरभेद छे चारित्र पांच मार्गणाने विषे जे चारित्र गवेषीये तेहथी बीजा चारित्र ४ विना ५३ भेद संवरना पामीये ॥ १०५ ॥

केवलदुगेअणहारे, चउसयमभावणाविणातिगई ।
अविरईदेसेभावण, सेसासुअसंवरोनत्थि ॥१०६॥

टीका—केवलदुगेअणहारे इत्यादि ॥ केवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणे मार्गणाद्वयेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसपरायचारित्ररहिताद्वादशभावनारहिताएकचत्वारिंशतसवरभेदा प्राप्यते, समितिगुप्तिस्थितनवर्मपरीपहजयादिपरिणामानाक्षायिकत्वावस्थाप्राप्ताइतिगम्यसर्वेषामपिसावनवर्माणासपूर्णत्वेन भवनात् ॥ तथा अनाहारकमार्गणाया सामायिकादिचारित्रचतुष्काभाव द्वादशभावनाअपिनभवतिपन अन्तरालगतौक्षयोपशमचारित्राणाभावनानाचनसभव केवलिसमुद्घातावस्थायातुएतेपाषोडशभेदानामसभवएव समित्यादीनातुकेवलिसमुद्घातकालेक्षायिकत्वेनसगृहीतत्वात् ॥ तथा नरकतिर्यग्देवगतौअविरतिमार्गणाया देशविरतौद्वादशभावनाएवसभवतिनशेपा सर्वविरत्यभावात्, ननुदेशविरतस्यपौपधादिकालेसमितिगुप्त्यादयोभवति ता कथनगृहीता तत्रोच्यते देशविरतस्यसमित्यादयोऽभ्यासरूपा नक्षयोपशमरूपा अनवस्थायित्वेनप्रवृत्तिरूपत्वात्नानुमोदना दोषस्यसर्वतोनिवृत्तेन समित्यादयोगुणा श्रावकस्य इति ॥ सेसासु शेषासुजातिचतुष्कस्थावरपचकाज्ञानत्रिकाऽभव्यमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रासज्ञिलक्षणासुसप्तदशमार्गणासुसवरस्याभावएवसम्यक्दर्शनगुणप्राग्भावमतरेणनसवरभाव तेनसवरोनास्ति इतिदर्शितसवरतत्वस्वरूप मार्गणासु साम्प्रतनिर्जरातत्त्वविभजन्नाह ॥ १०६ ॥

टबार्थ—केवलज्ञान केवलदर्शन अनाहारक मार्गणानेविषे च्यार चारित्रभावना बार ए सोल विना ४१ सवरना भेद पामीये छे तीन गतिनरक १ तिर्यंच २ देवगति ३ अविरति १ देशविरति मार्गणाये १२ भावनाना बार भेद छे शेपमार्गणाये सवरनो भेद नथी बासठि मार्गणाये सवरना भेद कह्या. ॥ १०६ ॥

सम्मदिट्ठीमग्गणासु, सकामइयरायमिच्छमग्गणाए।
नरतिरयदेवतिरिया, थोवादुसंखणंतगुणा ॥१०७॥

टीका—सम्मदिट्ठीमग्गणासु इत्यादि ॥ मूलभेदत निर्जरा-पूर्वोपचितकर्मपरिपट्टलक्षणा अथवा देशत कर्मक्षयलक्षणाद्विधाए-कासकामाऽपराअकामा, तत्राकामामदेशविपाकतोभुज्यमानकर्मदं-लिकक्षरणरूपाअस्यनिर्जरातोपरम्पनाहल्प उक्तचावश्यकनिर्यु-क्तौप लेमहेमहल्ले सुभपक्खिवइ सोहइनालिइयमिच्छत्तीजीवोधइ-बहुअ खवइअप्प ॥ १ ॥ इयसम्यग्दर्शनादिगुणरहितस्यमिथ्यादि गुणस्थानविके एवभवति ॥ सकामातुमदेशविपाकतोभुज्यमान-कर्मानुभवे अरक्तद्विष्टतयामाध्यस्थ्यवृत्त्याभुज्यमानस्यतद्विपाकस्व-स्वरूपतोभिन्न इति मन्यमानस्य नाह क्रोधादिमान् नाह शरीरी, नाह आहारी, नाह ससारी अहतु शुद्धचिद्रूपानन्तस्वरूपभारानदभोगी इति स्वरूपालम्बनदृष्टिस्तस्य भुज्यमानकर्मत रसशोषणेनअसरयेयगुणा-निर्जराभवतितेनसकामाअस्यच आरपनानिर्जरामहत्ता उक्तचावश्यक-निर्युक्तौ पल्लेमहेमहल्ले कुभसोहेइपक्खिवईनालि, इयसम्मत्तिजीवोय-धइ। अप्पखवइयहुअ॥ १॥ सासकामा सम्यग्दर्शनगुणयुक्तासु मार्ग-णासु मतिज्ञानादि ज्ञानपचकेवेदकसम्यग्दर्शनादि मार्गणासु सामा-यिकादि चारित्रमार्गणासु सकामानिर्जराभवति, इतराअज्ञानादि सम्यक्त्वगुणवियुक्तासु मग्गणाएमिथ्यात्वमार्गणासु एकातेनमि-थ्यात्वएवतासु अकामनिर्जरा चशब्दात्यासुगत्यादिमार्गणासुयेषा-जीवानासम्यक्त्वतेषा सकामायेषा मिथ्यात्वतेषा अकामासकाम-निर्जराभेदाद्वादशतपोलक्षणास्तेचविनयवैयावृत्तिस्वाध्यायरूपा अवि-रतसम्यग्गुणेदृश्यते परतेचकेचित् आचार्या सवररूपा मन्यतेय-तिधर्मभेदेषुतपस सवरा तर्गतत्वात्भगवतीटीकायादेवानाविनयादि

तपोगुणेनिर्जरालक्षणेऽपिगृहीतमिति याख्यातानिर्जरा, साम्प्रतमार्गणासुअल्पबहुत्वदर्शयन्नाह ॥ नरनिरयेत्यादि । इहययासरयेनयोजनाकर्त्तव्या साचैवनिरयदेवतिर्यग्योनिकेभ्य सकाशान्नरामनुष्या स्तोका यत द्विविधानरा सम्मूर्छजा गर्भजाश्चनरसम्मूर्छजा कदाचिन्नभवतियन एषाविरहोजघन्यत समयमुत्कृष्टत चतुर्विंशतिमुहूर्त्ता येनोत्पन्नानाजघन्यत उत्कृष्टतश्चान्तर्मुहूर्त्तस्थितिकत्वेन परत सर्वेषानिर्लेपात्यदातुभवन्तितदाजघन्यत एकोद्वौवायोत्कृष्टतस्तुसख्याता असख्याताइतरेतुसर्वेदेवसख्येयाभवति । तत्रसख्येयकस्यसख्यानभेदत्वान्नज्ञायतेकियदपिसख्येयक तदुच्यते-इहपष्ठ वर्ग पचमवर्गेणयदागुणितोभवति तदागर्भजमनुष्यसख्याभवतिनन्वद्वयोस्तुवर्गश्चत्वारोभवतिएषप्रथम वर्ग (४) चतुर्णा वर्ग षोडशइतिद्वितीयोवर्ग (१६) षोडशानावर्गोद्विशतेषट्पचाशदधिके (२५६) अस्यराशेर्वर्ग पचषष्टिसहस्राणिपचशतानिषट्त्रिंशदधिकानिचतुर्थोवर्ग (६५५३६) अस्यराशेर्वर्गं सार्थगाथयाप्रोच्यते । "चत्तारियकोडिसयाउणतिसचहुतिकोडीओअउणावन्नलरकासत्तट्ठिंचेवयसहस्सा ॥१॥ दोसयछन्नुयापचमवग्गोइमोविणिद्दिट्ठो ॥ अकस्थापना ॥ ४२९४९६७२९६ अस्यापिराशेर्वर्गोगाथात्रयेणप्रतिपाद्यते । लरकंकोडाकोडीचउरासीइहभवेसहस्साइ, चत्तारियसत्तट्ठाहुनिसयाकोडीकोडीण ॥१॥ चोयाणलरकाइकोडीणसत्तचेवयसहस्सीनिन्नीयसयायसयरी कोडीणहुनिमायवा ॥२॥ पचाणउइलरकाएगावन्नभवेसहस्साइछसोलसुत्तरसयाएसोछट्ठोहवइवग्गो ॥३॥ १८४४६७४४०७३७०९५५१६१६ तदयषष्ठोवर्ग पूर्वोक्तेनपचमवर्गेणगुण्यतेतस्याचसतियासख्याभवतितन्सख्याजघन्यपदिनोगर्भजमनुष्यास्तत्तेसाचेय ७९२२१६२५१४२६-४३३७५९३५४३५४३३६ अयचराशिनिश्चयार्थगाथाद्वय छग-

तिन्नितिन्निसुन्नपचेवयनन्नयातिन्निचत्तारिपचेवयातिन्निनवपघपचसगतिन्नेवतितेव ॥१॥ चउच्छदोचउइक्कोपणदोछक्किक्कगोयअट्ठेवदोदोनवसत्तेवय अक्कठाणापराहुति । तदेवमेतेषुअक्कस्थानेषुगर्भजमनुष्या भवति । उत्कृष्टपदेमनुष्याअसंख्येयोत्सर्पिण्यवसर्पिणीमि भवति इत्यादि अनुयोगद्वारतोज्ञेयनरेभ्य नैरयिकाअसंख्येयगुणाउक्तंचानुयोगद्वारे नेरइयाणभंतेकेवइयावेउविपशरीरापन्नत्तागोयमा, दुविहाबद्धल्लयामुक्केल्लयातत्यणजेतेबद्धिल्लियातेण असंखिज्जा । असंखिज्जाहिंओसप्पिणीहिंअनसप्पिणीहिंअवहीरांति खेत्तओअसंखेज्जाओसेढीओपयरस्सअसंखेज्जोभागोतासेणसेढीणविरकंभसूईअंगुलपढमवग्गमूलबीजवग्गमूलपडिपुन्नइत्यादिप्रमाणा नारका नरेभ्य असंख्यातगुणानारका तेभ्य देवा असंख्यातगुणाअनसकलभुवनपत्यादिसमुदायापेक्षयाचिंत्यमानादेवानारकेभ्योऽसंख्यातगुणाएव । तेभ्योऽपिचदेवेभ्यस्तिर्यंचोऽनंतगुणा तत्रानंतसंख्योपेतस्यवनस्पतिकायस्यसद्भावात्उक्तंचएएसिणभंतेनेरईयाणतिरिक्खजोणियाणमणुस्साणदेवाणसिद्धाणयकपरेकयरे हिंतो अप्पावाबहुआवातुल्लावाविसेसाहियावागो० सव्वथोवामणुस्सानेरइयाअसंखेज्जगुणादेवाअसंखिज्जगुणगुणासिद्धाअणतगुणातिरिक्खजोणियाअणतगुणा । सांप्रतमिंद्रियद्वारेकायद्वारेतदभिधित्सुराह ॥१०७॥

टबार्थ —निर्जरा ते कर्मनु परिशाटन अथवा कर्मक्षरण ते निर्जराना मूल २ भेद छे, एक सकाम निर्जरा तथा बीजी अकाम निर्जरा छे, तिहा जेटली समकित सहित मार्गणा मति ज्ञानादिक तिणमाहे सकाम निर्जरा अने अभव्यादिक तेहने इतरक० अकाम निर्जरा छे, जे मार्गणा मध्ये समकित तथा मिथ्यात्व बे भेद छे ते मार्गणा मध्ये अकाम सकाम बे निर्जरा-

छे निर्जराना १२ भेद तपना छे ते बार भेद तो जे जीव देशविरति तथा सर्वविरति परिणम्या हवे तेहने चारित्र विना तपनी आगममध्ये ना कही छे तिणे देशविरति तथा सर्वविरतिने छे तथा भगवतीसूत्रे प्रायश्चित्त १ विनय २ वैयावच्च ३ तथा सज्झाय ए च्यार तप, समकितीने कह्या छे देवता समकितीने अधिकारे इम आगमथी जाणवो हवे अल्पबहुत्व कहे छे, मनुष्य थोडा छे, संख्याता छे, उत्कृष्टे २९ आंकताइ छे मनुष्यथी नारकी असंख्यात गुणा छे नारकीथी देवता असंख्यात गुणा छे देवताथी तिर्यंच अनंत गुणा छे, जे सूक्ष्मबादर एकेन्द्रिय सर्वमाहि गणवा तेवारे थाय ॥ १०७ ॥

पणचउतिदुएगिंदि, थोवातिन्निहीअअणंतगुणा ।
तसथोवअसंखग्गी, भूजलनिलअहीअवणणंता॥१०८

टीका—पणचउतिदुएगिंदि ॥ इत्यादि ॥ इन्द्रियमार्गणाया सर्वस्तोका पंचेन्द्रियास्तेभ्यश्चतुरिन्द्रियाविशेषाधिका तेभ्यस्त्रीन्द्रियाविशेषाधिका तेभ्योद्वीन्द्रियाविशेषाधिका यद्यपिघनीकृतस्य लोकस्यउर्ध्वायतआयतनाएकप्रादेशिक्य श्रेणयोऽसंख्याता असंख्यातयोजनकोटाकोटीप्रमाणाकाशप्रदेशसूचिगतप्रदेशराशिप्रमाणास्तावत्प्रदेशराशि तावत्प्रमाणाद्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रिया पंचेन्द्रिया अविशेषेणसूत्रेनिर्दिष्टा तेभ्य एकेन्द्रिया० अनंतगुणावनस्पतिकायजीवराशेरनंतगुणा एएसिणभंते एगिंदिय बेंदिय तेंदिय चउरिंदिय पंचेंदियाणय कयरेकयरेहिंतो अप्पावा बहुआवातुल्लावाविसेसाहियावा गोयमा सव्वत्थोवापंचेंदिया चउरिंदिया विसेसाहिया तेंदिया विसेसाहिया बेंदिया विसेसाहिया एगिंदिया अणंतगुणा इत्यादि कायमार्ग-

णाऽल्पबहुत्वैस्तोकास्त्रसा द्वीन्द्रियान्य पूर्वनिर्दिष्टास्तेभ्यस्त्रसेभ्य ऽसंख्यानगुणा अग्नित्ति अग्निकायिका सूक्ष्मबादरभेदभिन्ना असंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात्, तेभ्योभूत्ति पृथिवीकायिकाविशेषाधिकास्तेभ्योजलत्ति अप्कायिकाविशेषाधिकास्तेभ्योऽनिलत्तिवायुकायिकाविशेषाधिका तेभ्य अकायिका सिद्धाअनन्तगुणास्तेभ्योपिवनस्पतिकायिकाअनन्तगुणा । यद्यपिचएतेषामपिपृथिवीकायिकादीनामसंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वाद्भेदऽविशेषेणनिर्देश कृत तथापिलोकानामसंख्यातस्वरूपाने कभेदभिन्नत्वात् इहविशेषाधिकत्व अन्यथाचतुर्णांस्थावराणा सूक्ष्माणा सर्वलोकव्याप्यत्वात् अवगाहनाया सूक्ष्मत्वेजीवानाविशेषाधिकत्व अग्निकायेतुबादरराशेरत्यन्तमल्पत्वात् स्तोकत्वमितिशेष एतेषा चसर्वेषा असंख्येयत्वात्, अकायिकानातुअतीतकालसमयेभ्य संख्येयगुणत्वात् तेभ्य वनस्पतिकायिकाअनन्तगुणा यत एकस्मिन्निगोदशरीरे अतीतानागतकालसिद्धेभ्योऽनन्तगुणत्वात् तादृग्निगोदानामसंख्येयत्वात् उक्त श्रीप्रज्ञापनाया, एएसिणभते तसकाइयाण पुढविकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण अपकाइयाण कयरे२हिंतो अप्पावा बहुआवा तुल्लावा विसेसाहियावागोयमासव्वत्थोवातसकाइया तेउकाइया असंखिज्जगुणा पुढविकाइयाइयाविसेसाहिया अपकाइयाविसेसाहिया वाउकाउकाइयाविसेसाहीया अकाइयाअणतगुणा वणस्सइकाइया अणतगुणा ॥ १०८ ॥

टबार्थ —सर्वथी पचेन्द्री थोडा, पचेन्द्रीथी चौरन्द्री अधिका, तेहथी तेरिन्द्री अधिका, तेहथी बेन्द्री अधिका, बेन्द्रीथी एकेन्द्री अनन्तगुणा छे एव पचेन्द्री जाणवा त्रसकाय थोडा

छे तिणसु अग्निकाय असख्यातगुणा, अग्निकाययी पृथिवीकायना जीव अधिका, पृथिवीकायसु अप्कायना जीव अधिका, अप्कायसु वाउकाय अधिका, वाउकायसु वनस्पतिकाय अधिका ॥ १०८ ॥

मणवयणकाययोगा, थोवाअसखगुणअणतगुणा ।
पुरिसाथोवाइत्थी, सखगुणाणतगुणकीवा ॥ १०९ ॥

टीका—मणवयण इत्यादि ॥ मनोयोगिन स्तोका सज्ञिपचेंद्रियाणामेवमनोयोगित्वात्तेभ्य वाग्योगिनोऽसख्येयगुणा द्वींद्रियादीनामक्षेपात्, तेभ्योऽपिकाययोगिनोऽनतगुणा स्थावराणा तत्रक्षेपात् । आहचप्रज्ञापनाया एएसिणभतेजीवाण मणयोगीण वागयोगीण काययोगीण अयोगीणयकयरेरहिंतो अप्पावा बहुआवातुल्लावाविसेसाहियावा गो० सव्वत्थोवामणयोगीवययोगीअसखिज्जगुणा, अयोगीअणतगुणा, काययोगीअणतगुणा, सयोगीविसेसाहिया इत्यादि वेदमार्गणाया अल्पबहुत्वेसर्वत पुरिसापुरुषवेदा स्तोका तेभ्य स्त्रिय सख्यातगुणा ॥ उक्तच ॥ तिगुणातिरूव अहियातिरीयाण इत्थियामुणेयव्वा सत्तावीसगुणा पुणमत्तावीसहीआनराणच ॥ १ ॥ बत्तीसगुणाबत्तीसरूव अहिआउतहयदेवाणदेवीओपन्नत्ता जिणेहिंजिअरागदोसेहिं ॥ २ ॥ स्त्रीभ्य क्लीबा नपुसकाअनतगुणा अनतगुणनाच वनस्पत्यपेक्षया ॥ उक्तच प्रज्ञापनाया एएसिण भतेजीवाण सवेयगाण इत्थीवेयगाण पुरुसवेयगाण नपुसकवेयगाण अवेयगाणकयरेकयरेहिंतो अप्पावाबहुआवातुल्लावाविसेसाहिया ॥ गो० ॥ सव्वत्थोवाजीवापुरिसवेयगा इत्थीवेयगासखिज्जगुणा अवेयगाअणतगुणा नपुसकवेयगाअणतगुणा सवेयगाविसेसाहीया ॥ १०९ ॥

ठवार्थ —मनयोगी थोडा छे, सज्ञी जीव थ्रह्या छे वचनयोगी असख्यातगुणा छे बेन्द्रियादिक सर्व जीव ग्रह्या छे वचनयोगीयी काययोगी अनतगुणा छे एकेन्द्रिय सर्वगणा वेमाटे पुरुषवेदी थोडा छे पुरुषवेदीयी स्त्रीवेदी सख्यातगुणा छे तिर्यंचमे त्रिगुणा छे तीने वलि अधिका मनुष्यमे २७ गुणा छे २७ वली अधिका छे देवतामे ३२ गुणा ३२ अधिका छे, स्त्रीवेदियी नपुसकवेदी अनतगुणा छे एकेन्द्रियादिक सर्व लीधा ॥ १०९ ॥

माणीकोहीमाई, लोभीअहियमणनाणिणोथोवा।
ओहिअसखामइसुअ, अहोअसमअसखविभगा११०॥

टीका–माणीकोही इत्यादि कपायमार्गणामासर्वस्तोकामानिन., मानपरिणामकालस्यक्रोधादिपरिणामकालापेक्षया सर्वस्तोकत्वात्, तेभ्य क्रोधिनोविशेषाधिका क्रोधपरिणामस्यमानपरिणामकालापेक्षयाविशेषाधिकत्वात्, तेभ्योऽपिमायिनोविशेषाधिका तद्भूयस्त्वेनजतूनामभूतकालचमायाबहुलत्वात्, ततोऽपिलोभिन विशेषाधिका सर्वजीवानालोभबाहुल्यत्वेनवर्त्तनात् अथवा क्रोधानाचताहगूकारणेनभवनात् लोभस्यअकारणेकारणेऽपिवर्तमानत्वात् ॥उक्तच॥ एएसिणभतेजीवाण सकसाईण कोहकसाईण माणकसाईण मायाकसाईण लोभकसाईण अकसाइणयकयरेकयरे अप्पावा बहुआवा तुल्लावाविसेसाहीआ ॥गो॰ सव्वत्थोवाजीवा अकसाइमाणकसाइ अणतगुणा कोहकसाईविसेसाहीया मायाकसाईविसेसाहीया लोभकसाइविसेसाहीया सकसाइविसेसाहीया इत्यादि ज्ञानमार्गणायामणनाणिणोमन पर्यवज्ञानिन सर्वस्तोका तद्धिगर्भजमनुष्याणामतोऽपिसम-

तानाविविधामर्पौषध्यादिल्॥धियुक्तानाउपजायते ॥उक्तंच॥ तस्स-जयस्ससस्वपमानरहीयस्स विविहरिद्धिमइअअस्स इत्यादि तेचस्तोकाएवसंख्यातत्वात्, तेभ्योऽसंख्येयगुणा अवधिज्ञानिन सम्यग्दृष्टिदेवादीनामप्यवधिज्ञानभावात्भ्योऽसंख्येयगुणत्वात्, ततोऽवधिज्ञानिभ्योमतिज्ञानश्रुतज्ञानिनोविशेषाऽधिकाअवधिज्ञानरहितसम्यग्दृष्टिनरतिर्यक्प्रक्षेपात्, एताचमतिज्ञानिश्रुतज्ञानिनौस्वस्थानेचिंत्यमानौद्वावपिसमौतुल्यौमतिज्ञानश्रुतज्ञानयोरन्तरायकत्वात् यदाहुर्नंद्याद्वेवर्द्धिवाचका॥ जत्थमईनाणतत्थसुअनाणजत्थसुअनाणतत्थमईनाणदोविएयाइं अन्नुन्नमणुगयाइति । तेभ्योमतिश्रुतज्ञानिभ्योविभंगज्ञानिनोअसंख्यातगुणा मिथ्यादृष्टिसुरादीनाविभंगज्ञानवत्वातेभ्योऽसंख्येयगुणत्वात् ॥७॥ ११०

भावार्थ—कषायमे मान कषाई थोडा छे, मान कषायथी-क्रोधी अधिका छे, क्रोधी थीमायाकपटी अधिका छे, माया कपडी थी लोभी अधिका छे, मन पर्यवज्ञानी थोडा छे, जे मन पर्यवज्ञान मानुष्य मांहिजे होवे, मन पर्यवज्ञानीथी अवधिज्ञानी असंख्यात गुणा जे च्यार गतिमे समकिती जीव कर्ता छे अवधिज्ञानी थी मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी अधिका छे, जे च्यारे गतिना समकितो सर्वे लेगा अने मतिश्रुति बेहु बराबर छे, तिणथी विभंग ज्ञानी असंख्यात गुणा छे, मिथ्यात्व देवना थीज्ञा पिण तिणे थकी ॥११०॥

केवलिणोणंतगुणा, मइसुअअन्नाणणंतगुणतुल्ला।
सुहमायोवापरिहार, सस्वअ ्रकायसखगुणा॥१११॥

टीका—केवलिणोणंतगुणा इत्यादि तेभ्योविभंगेभ्य केवलिन. अनंतगुणत्वात् सिद्धानांतेभ्योऽनंतगुणत्वात् तेषाचकेव-

लज्ञानयुक्तत्वात् तेभ्योऽपिचकेवलज्ञानिभ्योमत्यज्ञानश्रुताज्ञानिन' अनतगुणा सिद्धेभ्योऽपिवनस्पतिकायिकानाअनतगुणत्वात् तेषाचमिथ्यादृष्टित्यामत्यज्ञानश्रुताज्ञानयुक्तत्वात्, एतेचोभयेऽपिमत्यज्ञानिन श्रुताज्ञानिन स्वस्थानेचिंत्यमानास्तुल्या मत्यज्ञानश्रुताज्ञानयो परस्परमविनाभावित्वात् ॥ उक्तच ॥ एएसिणभवेजीवाण आभिणी बोहीअनाणीण सुअनाणीण ओहिनाणीण मणपज्जपनाणीण केवलनाणीण मइअनाणीण सुअअन्नाणीण विभगनाणीणयकयरेकयरे हिंतोअप्पावा बहुआवातुल्लावाविसेसाहीवा गोयमा सव्वत्थोवामणपज्जवनाणी ओहिनाणी असखिज्जगुणाआभिणिबोहीअनाणीसुअनाणीदोवितुल्लाविसेसाहीआविभगनाणी असखिज्जगुणाकेवलनाणी अणतगुणाइअन्नाणी सुअन्नाणीयदोवितुल्लाअणतगुणा इत्यादि । सयममार्गणायासूक्ष्मसापरायसयमिन सर्वस्तोका शतपृथक्त्वमानसभवात्, तेभ्य परिहारविशुद्धिका सख्यातगुणा उत्कर्षेन सहस्रपृथक्त्वसभवात्, तेभ्योऽपि यथाख्यातचारित्रिण सख्यातगुणा कोटिपृथक्त्वेनप्राप्यमाणत्वात् इति ॥१११॥

टबार्थ —केवलि अनत गुणा छे, जे सिद्ध भगवत माहि गण्या तेवारे तिणथी मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी अनत गुणा छे, एकेंद्रीय आदिक सर्व लेवा माहोमाहि बराबरी छे, सूक्ष्मसपराय चारित्रीया थोडा-था उत्कृष्टा एकसो बासठी छे, परिहार विशुद्धि सख्य गुणा छे, उत्कृष्टा नवसो छे, यथा ख्यात चारित्रीया सख्यात गुणा उत्कृष्टा नवक्रोडि छे ते माटे ।१११।

छेअसमईयसखा, देसअसखगुणअणतगुणअजया । थोवाअसखदुअणता, ओहिनयणकेवलिअचक्खू११२॥

टीका—छेअसमईसखा इत्यादि तेभ्योयथार यातचारित्रिभ्य छेद्रोपस्थापनीयचारित्रिण सख्येयगुणा कोटिशतपृथक्त्वेनलभ्यमानत्वात, तेभ्योऽपिसामायिकसयमिन सरयेयगुणा कोटिसहस्रपृथक्त्वेनप्राप्यमाणत्वात इतितेभ्योऽपिदेशविरता असरयातगुणाअसरयातानानिरश्चादेशविरतसभवात्, तेभ्योअयताअविरताअनतगुणासयमहीनाद्यगुणस्थानकचतुष्टयवर्त्तिन इत्यर्थ मिथ्यादृशामनतानतत्वात् दर्शनमार्गणायायथाक्रमपदयोजना स्तोकाअवधिदर्शनिन चक्षुर्दर्शनिन असरयातगुणा चतुरिंद्रियपचेंद्रियाणाततसभवात्, तेभ्य केवलदर्शनिन अनतगुणा सिद्धानामनन्तत्वात्, तेभ्य अचक्षुर्दर्शनिन अननगुणा सर्वससारिजीवानासिद्धेभ्योअनतगुणत्वात् तेषा चनियमादचक्षुर्दर्शनोपेत वात् यदाहु परममुनय, एएसिण भतेजीवाण चक्खुदसणीण अचक्खुदसणीण ओहिदसणीण केवलदसणी ग कयरेकयरेहिंतो अप्पा वा बहुआवा। गोयमासव्वथोवाओहि तिगाथ॰ ३ रुणी असखिज्जगुणाकेवलदसणी अणतगुणा अचक्खुदस णी अणतगुणा ति ॥११२॥

टबार्थ—तिगस्स छेद्रोपस्थापनीय सख्यातगुणा उत्कृष्टा नव कोडीसो छे, सामायिक सरयातगुणा छे, नवसहस्र कोडी छे देशविरति असख्यगुणा तिर्यचगतिना मेलिये अविरति अनन्तगुणा छे, दर्शन च्यारनो अल्पबहुत्व कहे छे अवधिदर्शनी थोडा छे, तिणसु चक्षुदर्शनी असरयातगुणा छे, केवलदर्शनी अनतगुणा छे अचक्षुदर्शनी अनतगुणा छे एकेन्द्रिय सर्व लेवा तेवारे अनतगुणा थाइ ॥ ११२ ॥

पच्छाणुपुविलेसा, थोवादोसखणतदोअहीया ।
अभविअरथोवणता, सासणियोवोवसमसखा ॥११३

टीका—पच्छाणुपुव्वि लेसा इत्यादि ॥ लेश्याद्वारे पश्चानुपूर्वी-लेश्यावाच्या तद्यथाशुक्ललेश्यावत सर्वस्तोका निर्मलपरिणामत्वात् मुरपत्वेनवैमानिकलांतकादिष्वनुत्तरसुरपर्यंतसानेयुकेषुचिदेवकर्मभू-मिजेषु मनुष्यस्त्रीपुंसेषु तिर्यग्स्त्रीपुंसेषु । केपुचित्सख्यात-वर्षायुष्केषु शुक्ललेश्यासंभवात् । तत सख्यातगुणा पद्मलेश्यावत सनत्कुमारमाहेंद्रब्रह्मलोकेषु देवेषु पूर्वोक्तेषु मनुष्यतिर्यक्षुपद्म-लेश्यासंभवात् सनत्कुमारादिदेवानांलांतकादिदेवेभ्य सख्येयगुण-त्वात्, तेभ्योऽपितेजोलेश्यावत सख्येयगुणत्वात् सौधर्मेशानादिदे-वेषुकेपुचित्तिर्यग्मनुष्येषु तेजोलेश्यासद्भावात् तेषांचसकलपद्म-लेश्यासहितप्राणिगणापेक्षयासख्येयत्वात्, तत कापोतलेश्यावत अनन्तगुणाअनंतकायिकेष्वपि कापोतलेश्यासद्भावात्ततोऽपिविशेषा-धिकानीललेश्यावतो नारकादीनांतल्लेश्यावतोऽत्रप्रक्षेपात्, तत कृ-ष्णलेश्यावतोविशेषाधिका भूयसांतल्लेश्यासद्भावात्, यदभ्यधायि परमगुरुणा, एएसिण भंतेजीवाण स.लेसाण.किह्नलेसाण नीललेसाणं-काउलेसाण पउमलेसाण सुक्कलेसाण अलेसाणयकयरेकयरेहिंतो अ-प्पावा बहूआवातुल्लावाविसेसाहीयावा गोयमा सव्वत्थोवाजीवासुक्क-लेसा पउमलेसा सखिज्जगुणातेजोलेसासखिज्जगुणा अलेसाअणंतगुणा काउलेसाअणंतगुणा नीललेसाविसेसाहीया किह्नलेसाविसेसाहीया स-लेसाविसेसाहीआ भव्यद्वारे अभव्यास्तोका वक्ष्यमाणस्वरूपज-घन्ययुक्ताऽनंततुल्यत्वात् तेभ्योभव्या सिद्धिगमनार्हाअनंतगुणा आहच एएसिण भंतेजीवाण भवसिद्धीआण अभवसिद्धीयाणं नोभवनोअभवसिद्धीयाण कयरेकयरेहिंतो अप्पावा बहुआवागो-यमासव्वत्थोवाअभवसिद्धिआनोभवानोअभवाअणंतगुणाभवसिद्धि-आअणंतगुणा सम्यक्त्वमार्गणायासास्वादनसम्यग्दृष्टय स्तोकाऔ-पशमिकसम्यक्त्वात्केषांचिदेवप्रच्यवमानानांसास्वादनत्वात्तेभ्य-औपशमिकसम्यग्दृष्टय सख्यातगुणा ॥११३॥

टबाय —लेश्यानो अल्प बहुत्व पश्चानपूर्वी कहीये, शुक्ल-लेशी थोडा छे तेथी पद्मलेश्यामे असख्य गुणा छे, तेजोलेशी असरव्य गुणा छे, तेथी कापोत लेश्या असख्यगुणा, नीललेशी अधिका, तेथी कृष्णलेशी अधिका, अभव्य थोडा, भव्य अनन-गुणा छे, सास्वादन सम्यक्त्वी थोडा तिणथकी उपशम सम-किती सख्यानगुणा छे, तिणसु मिश्र असंख्यानगुणा छे ॥११३॥

मीसासखावेअग, असखगुणखइअमिच्छदुणता ।
सन्नियरथोवणता, अणहारथोनिअरअसखा ॥११४॥

टीका—मीसासखावेअग इत्यादि ॥ औपशमिकसम्यग्दृष्टि-भ्य मिश्रा सख्यानगुणास्तेभ्य क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टय असख्यातगुणास्तेभ्य क्षायिकसम्यग्दृष्टय अनन्तगुणा, क्षायिकस-म्यक्त्ववतासिद्धानामानन्त्यात्तेभ्योऽपिमिथ्यादृष्टयोऽनन्तगुणा सिद्धे-भ्योऽपिवनस्पतिजीवानामनन्तगुणत्वात्,सज्ञिमार्गणायासज्ञिनोजीवा स्तोका, देवनारकसमनस्कपचेंद्रियतिर्यग्मनुष्याणामेवसज्ञित्वात्, तेभ्यइतरेअसज्ञिनोऽनतगुणा एकेंद्रियाद्यसज्ञिपचेंद्रिया तजीवाना-मानन्त्यात् । यदागमेप्यगादि । एएसिणभते जीवाण सन्नीण असन्नीण नोसन्नीण नोअसन्नीण य कयरेकयरे हिंतो अप्पावाबहु-आवातुल्लावाविसेसाहीया गोयमा सव्वत्थोवाजीवासन्नीनो असन्नीनो असन्नी अनतगुणा तथाआहारकमार्गणायाअनाहारका स्तोका विग्रहगत्यापन्नसमुद्घातेकेवलिसमुद्घातनावस्थाया अयोगिकेव-लिनासिद्धानाअनाहारकत्वात्, तेभ्य इतरेआहारकाअसख्यातगु-णा, ननुसिद्धेभ्योअनन्तगुणा ससारिजीवास्तेचप्राय आहारकास्तत कथअसख्यातगुणा अनाहारकेभ्य आहारकाइतिचेद्दोष यत प्र-

तिसमयएकैकस्यनिगोदस्यअसंख्येयतमभागस्यसर्वदापिविग्रहगत्या-समापन्नत्त्वेनप्राप्यमाणत्वात्, अत अनाहारकेभ्य आहारकाअ-संख्येयगुणा इतिचिंतितगत्यादिष्वल्पबहुत्वइदानीमार्गणासुमूलभा-वान्विभजन्नाह ॥११४॥

टबार्थ —तिणसु क्षयोपशम समकिती असंख्यात गुणा छे, तिणसु क्षायिकसमकिती अनंतगुणा छे, तिणसु मिथ्यात्वी अनंतगुणा छे, संज्ञी थोडा, असंज्ञी अनंतगुणा छे, अना-हारक थोडा छे आहारक असंख्यातगुणा मार्गणाये अल्पबहुत्व कह्यो निगोदनो असंख्यातमो भाग सदा विग्रहगतिमे छे तिणे ॥ ११४ ॥

गइपचिंदितसमि, जोएवेएकसायचउनाणे ।
संयमतिदसलेसा, भवखायगसन्निहारदुगे ॥११५॥

टीका—गइपचिंदि इत्यादि ॥ गतिचतुष्केपचेन्द्रियजातौत्रस-काये योगत्रये वेदत्रये कषायचतुष्के मतिश्रुतावधिमन पर्यवलक्षणे ज्ञानचतुष्टये संयमसप्तके चक्षुरचक्षुरवधिदर्शनेलेश्यापट्के भव्येक्षा-यिकसम्यक्त्वे संज्ञिपंचेन्द्रिये आहारके अनाहारके एवएकचत्वा-रिंशन्मार्गणापा पणभावाइतिमूलभावाउपशमक्षायिकक्षयोपशमऔ-दयिकपारिणामिकलक्षणा पंचभावा प्राप्यन्ते ओघतइतिज्ञेयं ॥ ११५ ॥

टबार्थ —गति ४ पंचेन्द्रिपणो १ त्रसकाय १ योग ३ वेद ३ कषाय ४ ज्ञान ४ संयम ७ दर्शन ३ लेश्या ६ भव्य १ क्षायिकसमकित १ संज्ञी १ आहारक १ अनाहारक २ एव मार्गणा ६२ ॥ ११५ ॥

पणभावाउवसमगे, खइगविणासेसआसुसमहीणा।
केवलदुगिउदय, खयपरिणामभावाय ॥ ११६ ॥

टीका—पणभावा इति उपशमसम्यक्त्वेक्षायिकभावमंतरेण-श्चत्वारोभावा प्राप्यते, उपशांतदर्शनस्यक्षायिकभावभेदोनभवति, शेषकासुजातिचतुष्के स्थावरपचके, अज्ञानत्रिके, अभव्यमार्गणाया क्षयोपशमसम्यक्त्वेमिथ्यात्वेसास्वादनेमिश्रेअसंज्ञिलक्षणासुअष्टादश-मार्गणासुक्षायिकउपशमरूपभावद्वयरहिता क्षयोपशमौदयिकपारि-णामिकलक्षणास्त्रय भावाभवति, केवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणासु-मार्गणासु औदयिकपारिणामिकक्षायिकलक्षणास्त्रयोभावाभवति । इत्येवद्विषष्टिमार्गणासु मूलभावाउक्ता ॥ ११६ ॥ सांप्रतमार्गणा-सुउत्तरभावान्दर्शयन्नाह ।

टबार्थ—पीसनालीस मार्गणाये पाच भाव छे, उपशम-समकिते क्षायिकभाव विना ४ भाव छे, शेषमार्गणाइंद्रि ४ थावर ५ तीन अज्ञान ३ अभव्य १ क्षयोपशमसमकित १ मिथ्यात्व १ सास्वादन १ मिश्र १ असज्ञी ए १८ मार्गणाये क्षायिक १ उपशम १ ए बे विना त्रण भाव छे, केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ ए बे मार्गणाये औदयिक १ क्षायिक १ पारिणामिक १ ए तीन भाव छे इहले बासठि मार्गणाये मूल भाव कह्या ॥ ११६ ॥

उत्तरभावापणतस, जोएसन्नीतहेवआहारे।
सव्वेअभवहीणा, भवेमणुएतिगईहीणा ॥ ११७॥

टीका—उत्तरभावापणतस इत्यादि ॥ पंचेंद्रिय

त्रसकायमार्गणायां, योगत्रिकमार्गणायां, संज्ञिमार्गणायां, आहारक-मार्गणायां, सर्वेऽपिपञ्चाशन्भेदाभावानांभवन्ति । चतुर्गतिषु सर्वभा-वानांप्राप्यमाणत्वात् पञ्चेन्द्रियादिभावानां सर्वगतिषुसद्भावात्, तथा अभव्यमार्गणायां अभव्यत्वहीनाद्विपञ्चाशत्भेदाः प्राप्यते, तथाम-नुष्यगतौ, मनुष्यगतौ, तिर्यग्हीनत्वेन, त्रिषु गतयः नारकामरति-र्यग्लक्षणानप्राप्यते, शेषा पञ्चाशन्भेदाभावानांप्राप्यते, औद-यिकस्यअष्टादश शेषा सर्वेऽपिअत्रमदेशोदयसङ्क्रान्तोदयत्वेनापेक्षि-तमुदयत्वेनमनुष्यगतौसर्वेऽपिमिति ॥ ११७ ॥

टबार्थ —हवे बासठिमार्गणाये उत्तरभाव कहे छे । पचें-द्रिनेत्रसकायने योग ३ ने सञ्ज्ञीमार्गणाये तिमहीज आहारक मार्गणाए सर्वभाव ५३ छे, अभव्य विना ५२ भाव छे, भव्य-मार्गणा विषे मनुष्यगतिमार्गणाये तीन अन्यगति विना ५० भाव छे ॥ ११७ ॥

उवसममीसचरण, मणपज्जवदेसचक्खुदिट्ठिअ ।
अहहारेएहिविणा, खायगसगहीणचक्खुदुगे ॥११८॥

टीका—उवसममीसइत्यादि ॥ अनाहारकमार्गणायां सप्तच-त्वारिंशत्भेदाः प्राप्यते, उपशमसम्यक्त्वेआयुर्बन्धाभावात्नमरणमपि, मरणाभावेविग्रहगतित्वमपिनइतिहरिभद्राशयस्तन्मतेसप्तचत्वारिंशत्, कार्मग्रन्थिकास्तुउपशमसम्यक्त्वेन संज्ञिद्वयलक्षणजीवभेदाङ्गीकारे-कश्चित्पूर्वबद्धायु प्रान्ते उपशमदर्शनंकृत्वातस्य एवायु क्षये-मृत देवादिषूत्पद्यमानस्तस्यउत्पद्यमानस्यसंज्ञिअपर्याप्तलक्षणोजीव-भेदोलभ्यते, तदपेक्षयाविग्रहगतौउपशमसम्यग्दर्शनंभवति, तेना-ष्टचत्वारिंशत्भेदाभवन्ति, उपशमचारित्रतुपर्याप्तकस्य, मीस नामक्ष-

पोपशमचारित्रमपिपर्याप्तकस्यमन पर्यवज्ञानस्यापिपर्याप्ता[illegible]
मेवदेशविरतस्यापिपर्याप्ताऽवस्थायाचक्षुर्दर्शनमपिमु[illegible]
स्येव तेनएभिभावेर्विनाअष्टचत्वारिंशत्भेदाभवति । [illegible]
केवलिसमुद्घातावस्थायाअनाहारक वेप्राप्यते । क्षयोप[illegible]
ज्ञानत्रिकदर्शनद्विकअज्ञानत्रिकलब्धिपचकक्षयोपशमसम्यक्त[illegible]
ग्रहणनोप्राप्यमाणत्वात् । औदयिकपारिणामिकानाममि[illegible]
प्राप्यमाणत्वात्प्राप्यतेअनाहारकेएतेभावाभवन्ति । [illegible]
श्चचरणच उपशममिश्रचरणइतिसमास अथवा [illegible]
उपशममिश्रतदेवचरणइत्यनेनउपशमचरणमिश्रक्षयोपशम[illegible]
ध्यार यामेदेनोभयमनदर्शनकृतमितिज्ञेय । [illegible]
खायगसगहीणत्ति, क्षायिकभावस्यलब्धिपचकवे[illegible]
लक्षणभेदसप्तकमन्तरेणपट्चत्वारिंशत्भेदाभावानाप्रा[illegible]
गुणस्थानयावत् चक्षुरचक्षुर्दर्शनद्वयभवति, क्षीण[illegible]
क्त्वचारित्रेभवत , शेपा क्षायिकस्यसप्तभेदा [illegible]
गिगुणस्थानादिष्वेवभवति । अतश्चक्षुरचक्षु[illegible]
सति ॥ ११८ ॥

टबार्थ —उपशमसमकितमिश्र चारि[illegible]
मन पर्यवज्ञान विना देशविरति विना [illegible]
रकमार्गणाए ४८ भाव छे, क्षायिकना [illegible]
ज्ञान १ केवलदर्शन १ ए सात विना [illegible]
१ ए बेने ४६ भाव छे ॥ ११८ ॥

वेअकसायेतिउदय, अडगायग[illegible]गुरहिदसं
विणुखायसगअन्नाण, मि[illegible]अन्नाणा

टीका—वेयकसायइत्यादि वेदत्रिके औदयिकभावस्यतिइतित्रि-कभेदा क्षायिकस्यलब्धिपंचक केवलज्ञानकेवलदर्शनक्षायिकयथा-रूपातचारित्ररहिताद्विचत्वारिंशत्भावभेदा प्राप्यते । तत्रपुरुषवेदे-स्त्रीवेदेनपुंसकवेदेनरकगतिलक्षणऔदयिकत्रिकरहिता पूर्वोक्तक्षा-यिकाष्टकरहिताद्विचत्वारिंशत्भेदा, स्त्रीवेदेपुरुषवेदेनपुंसकवेदेनरक-गतिरहिता द्विचत्वारिंशत्, नपुंसकवेदेपुरुषवेदेस्त्रीवेदेदेवगतिरहिता-द्विचत्वारिंशत्, क्रोधेक्रोधकषायलक्षणायामार्गणायामानमायालोभ-रहिता अष्टादशऔदयिका शेषा पूर्वोक्ताद्विचत्वारिंशत्, एवमाने-क्रोधमायालोभरहिता मायायाक्रोधमानलोभरहिता लोभेक्रोधमान-मायारहिता द्विचत्वारिंशत्भेदाभावानाप्रत्येक वाच्या क्रोधादीनाचतु-र्णांमध्ये अन्यतमस्यएकस्यैवोदयात् नान्येषामिति, नाणत्तिज्ञानत्रिक-यमार्गणायाअवधिदर्शनमार्गणाया क्षायिकस्यसप्तभेदा सयोगिकेवलि प्रत्ययानभवति । एतासाक्षीणमोहयावदेवसत्त्वात्, अज्ञानत्रिक-मिथ्यात्वमभव्यत्वअज्ञानऔदयिकभावस्यप्रथमभेदरूपएवत्रयोदश-भावरहिता शेषाउपशमस्यद्वेक्षायिकदर्शनक्षायिकचारित्रचेतिद्वौ-क्षयोपशमिका पंचदश, औदयिका एकोनविंशति, पारिणामिकौद्वौ-भेदौ एवचत्वारिंशत्भेदाभवति । अनखायगसगतिसमासेविणइति-पदसयोजयएतेनत्रयोदशभिर्विनाइत्यर्थः ॥ ११९ ॥

टबार्थ—वेद तीनने विषे कषाय ४ मे ४२ भाव छे, तीन औदयिकना ८ क्षायिकना तेहना भावना जे पुरुषवेद-मध्ये स्त्रीवेद नपुंसकवेद नरकगति ए तीन नथी। स्त्रीवेदमध्ये, पुरुषवेद नपुंसकवेद नरकगति नथी । नपुंसकवेदमध्ये, पुरुषवेद स्त्रीवेदेदेवगति नथी । कषाय ४ मध्ये क्रोधमध्ये मानादि ३ नथी, मानमध्ये, क्रोधादि ३ नथी । मायामध्ये, बीजा तीन कषाय

नथी । लोभमध्ये, अन्य तीन कषाय नथी । तथा क्षायिक-सम्यक्त्व छे, शेष अन्य नथी ए अगीयार विना ४२ भाव छे । क्षायिकना सात भेद, पाचलब्धि केवल २ अज्ञान १ मिथ्यात्व १ अभव्यपणो अज्ञान ३ एटले १३ भाव विना ४० भाव छे ॥ ११९ ॥

साभव्वातेअजएतेमिच्छ, तिगिदेसिसुहमेगुणप्पभवा।
अडखायगपणलेसा, समचरणनिणातिलेसासु १२०॥

टीका—साभव्वातेअजए इत्यादि॥ अजएअविरतिमार्गणाया उपशमस्यएक क्षायिकस्यएक देशसर्वविरतिमन पर्यवविना पच-दशक्षायोपशमिका औदयिका सर्वेपारिणामिकास्त्रयइति, साभव्वा-अभव्यत्वलक्षणेनपारिणामिकभेदेनयुक्ताएकचत्वारिंशत्भेदा भा-वानामविरतिमार्गणायाप्राप्यते इति, मिच्छतिगि मिथ्यात्वत्रिकेमि-थ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणेगुणस्थानत्रयेदेशविरतिमार्गणाया सुहु-म्मि सूक्ष्मसपरायलक्षणेपचमार्गणास्थानेगुणप्रभवास्तन्नामगुणस्थान-कस्याभावा भवति। इत्यनेनमिथ्यात्वेचतुस्त्रिंशत्, सास्वादनेद्वात्रिं-शत्, मिश्रेद्वात्रिंशत्, देशविरतौचतुस्त्रिंशत्, सूक्ष्मसपरायेद्वात्रिंशति, एवज्ञातव्य तथातिलेसासु इतिलेश्यात्रये कृष्णनीलकापोतलक्षणे-अष्टौक्षायिकभेदा क्षायिकसम्यक्त्ववर्जिता स्वनामलेश्यातोअन्या पचलेश्यास्तथासमशब्देनउपशमचारित्र एवचतुर्दशभेदान्मुक्त्वा-शेषाएकोनचत्वारिंशत्भेदा भावानाकृष्णादिप्रथमलेश्यात्रयेभवति। ॥ १२० ॥

टबार्थ —अविरतिमार्गणाये अभव्य मेळीये तेवारे ४१ भाव पामीये, मिथ्यात्वे ३४ सास्वादने ३२ मिश्रे ३२ देशविरते

विंशतिभावा भवन्ति, देवानाण्वेप्यनागमनात्, तेनचचक्षुर्दर्शनयुक्त चतुरिन्द्रियमार्गणायां पंचविंशतिभावाभवंति । नाणदुगजानादिक सास्वादनकालेविकलानामूएसुत्तेभगवत्यादौसमारयान यदाह सुध-र्मास्वामी–वेन्दीयाणभंते किंनाणी किंअनाणीगोयमानाणीविअना-णीविजेसिणनाणीते आभिणिबोहीअनाणीसुअनाणीजेअनाणीतेमई-अन्नाणीसुअअन्नाणी सूत्रवाक्यप्रामाण्यात् अनाम्नाय सूक्ष्मतत्त्व-सूत्रस्यसमयमात्रस्यग्राह्यत्वात् वर्त्तमानकालेसास्वादनस्यस्यमिथ्या-त्वस्यअनुदयात् उपशानाद्धागताचलिकायावर्त्तमानत्वात् ज्ञानद्वय-मोक्तकार्मग्रंथिकैस्तुकडेमाणेकडेइति भगवन्वाक्यानुगमनेनामिथ्या-त्वोदयसन्मुखीमतपरिणामत्वात् नियतमज्ञानत्वेनभवनात् अज्ञान-मेवेतिअगीकृतम् ॥ १२३ ॥

टबार्थ —तेमध्ये तेजोलेश्या गतित्रसरू० तेउकाय १ वाउ-काय १ बेन्द्रि १ तेन्द्रि १ एहने विषे २४ भाव छे चौ-रिंद्रिमार्गणामध्ये चक्षुदर्शन मेळीये एटले भाव २५ पामीये, तथा भगवतीसूत्रे विकलेन्द्रिने २ ज्ञान मान्या छे, बेंदीयाणभ-तेनाणीअनाणी गो० नाणीविअनाणीविइतिवचनात् ए सूत्रवचन पण प्रमाण छे ॥ १२३ ॥

सम्मदरसव्वविरई, अवहिदसणनाणचउहीणा ।
अन्नाणेचउतीस, भावातिगभावपच्चईया ॥ १२४ ॥

टीका—सम्मदरइत्यादि ॥ सम्मेतिक्षयोपशमसम्यग्दर्शन दरतिईषत्वाचकोऽव्ययं ईषत्विरति देशविरति सर्वविरति क्षयोपशमचारित्र अवधिदर्शन १ ज्ञानचतुष्टयहीना शेषादशक्षयो-पशमभेदा, औदयिकाएकविंशति, पारिणामिका त्रय, एतेचतु-

क्षिशत्भावाअन्नाणेअज्ञानिकमार्गणायामाप्यते । भावामूलापेक्ष-यात्रिकभावप्रत्ययिकाज्ञेया , उपशमक्षायिकभावानामसंभवात् तेषासम्यक्त्वमूलत्वात् ॥ १२४ ॥

टवार्थ —समकित १ देशविरति १ सर्वविरति १ अवधि-दर्शन १ ज्ञान ४ विना शेषक्षयोपशमना १० उदयना २१ पारिणामिकना ३ ए चौतीसभाव छे, अज्ञान ३ मध्ये मूल तीन भाव माहियी जे भेद समवे ते कहिवा ॥ १२४ ॥

दोउवसमखयसम्म, मीसेअन्नाणदेसविणुउदए ।
तिगईअन्नाणअजई, मिच्छविणुदोन्नीपरिणामी१२५॥

टीका—दोउवसमइत्यादि ॥

टवार्थ —उपशमना भेद २ क्षायिकसमकितनामिश्रना १४ भेद विना अज्ञान ३ देशविरति विना उदयना १९ तीन गति-मिथ्यात्वविरतिअन्नाण १ असयम १ ना शेप १९ पारिणामिक २ जीवत्व १ भव्यत्व ॥ १२५ ॥

सामाइदुगेपरिहारगेअ, सम्मचरणइथिवेयविणा ।
इक्खाएउवसमखय, मीसेलद्धीसुउवओगा ॥१२६॥

टीका—सामाइदुगेइत्यादि गाथाद्वयस्यसबन्ध तत्रसामायिक-द्विकेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयलक्षणेचारित्रद्विकेदोउवसमत्तिद्वौभे-दावुपशमभावस्य, क्षायिकभावस्यएकक्षायिकसम्यक्त्वनथामिश्रेना-मक्षयोपशमेभावस्यज्ञानत्रिकदेशविरतिविणुत्तिरहिता शेषा चतुर्दश-उदयेऔदयिकेभावेनरकामरतिर्यग्गतिलक्षणेत्रिके अज्ञानविरतिमि-

ध्यात्वरूपमेदपञ्चविनाशेषा पचदश द्वौभ य नजीरत्वलक्षणौद्वौ-पारिणामिकौत्दूत्यनेनद्वौउपशमौएक क्षायिकः चतुर्दशक्षयोपशममेदा पचदशऔदयिकाद्वौपारिणामिकौ एवचतुस्त्रिशत्भावभेदा सामायिकेछेदोपस्थापनीयेचारित्रेप्राप्यते ॥ परिहारविशुद्धिचारित्रेउपशमचारित्रनभवति । अनिवृत्तियादरगुणस्थानसभावात् । तथास्त्रीवेदस्याप्यभाव मनोवचनसासीनिग्गयाण इत्यादरपकर्चागाथास्यात् ज्ञातायामपिनिषिद्धत्वात । परिहारसमयश्रवणवासिनाभेदोक्तत्वात । अत्र सामायिकोक्तचतुस्त्रिशत्भावानाम चेउपशमचारित्रस्त्रीवेदरहिताद्वात्रिंशत्भेदाभवति इत्त्याण्डुनियथार यातचारित्रेउपशमस्यद्वौभेदौखयत्ति क्षायिकस्यनवमीसेत्ति क्षयोपशमेरद्वीत्तिलद्धिपचकसुइतिसुत्तइशोभनाउपयोगा क्षायोपशमिकाज्ञानचतुष्टयदर्शनात्रिकरूपाद्वादशइति ॥ १२६ ॥

टवार्थ —एटले उपशम २ क्षायिक १ क्षयोपशम १४ औदयिकना १५ पारिणामिकना २ ए ३४ भाव छे । सामायिक १ छेदोपस्थापनीय ए बेन परिहारविशुद्धिमध्ये उपशमचारित्र स्त्रीवेद विना ३२ भाव छे, कोइक आदि तीन लेश्या च्यार गुणठाणा पर्यंत माने तेहने मते २९ भाव छे, यथारव्यातचारित्रमध्ये २८ भाव छे, उपशमना २ क्षायिकना ९ क्षयोपशमना १२ लब्धि ५ सुउवओगाकहेता सम्यग्ज्ञान एटले च्यार ज्ञान त्रण दर्शन एव १२ ॥ १२६ ॥

उदएअसिद्धनरगई, सुक्काभवत्तजीयचपरिणामा ।
अडवीसमभवेसु, मीसादसदुन्निपरिणामा ॥१२७॥

टीका—उदएअसिद्धइत्यादि॥ औदयिकस्यअसिद्धत्वनरगति

शुक्लेश्याइतिनयोभेदाभव्यत्व जीवत्वचपारिणामिकौ एवंअष्टाविंशतिभावभेदायथाख्यातचारित्रे अष्टाविंशतिभावभेदा माप्यते । अभव्येषुअभव्यमार्गणायामीसाक्षयोपशमस्यदश इन्द्रियौपारिणामिकौअभव्यत्वजीवत्वरूपौ ॥ १२७ ॥

टवार्थ —औदयिकना ३ असिद्धपणे मनुष्यगति १ शुक्लेश्या १ भव्यपणो जीवपणो ए २ पारिणामिक सर्व मिल्या २८ भाव छे, यथाख्यातचारित्रे अभव्यमार्गणाए क्षयोपशमना १० पारिणामिकना २ अभव्यपणो जीवपणो ॥ १२७ ॥

उदयाउवसमसम्मे, खयअन्नाणचमीससम्मविणा ।
उदयेअमिच्छावोहा, भवजीयत्तेणसगतीस ॥१२८॥

टीका—उदयाउवसमसम्मेइत्यादि उदयाऔदयिका सर्वेभेदा इतिनयस्त्रिंशत्भावभेदाअभव्यमार्गणायाभवति । उपशमसम्यक्त्वेक्षयविणात्तिक्षायिकभावभेदानभवति । अन्नाणचमीससम्मविणाइति अज्ञानत्रिक क्षयोपशमसम्यक्त्वविनाचतुर्दशउदयेऔदयिकेअमिच्छावोहा मिथ्यात्वअज्ञानरहिताएकोनविंशतिभेदा भव्यत्वचजीवत्वचएवंसप्तत्रिंशतभावभेदा उपशमसम्यक्त्वेमाप्यते । उपशमश्रेणांतुउपशमचारित्रेक्षायिकदर्शनभवतितोपशमदर्शनेक्षायिकदर्शनादिकनभवति ॥ १२८ ॥

टवार्थ —औदयिकना २१ एटले तेत्रीस भाव छे भव्यने विषे उपशमसमकित मार्गणाने विषे क्षायिकनो भेद कोई नथी क्षयोपशमना अज्ञान ३ क्षयोपशमसमकित विना १४।५ लब्धिज्ञान ४ दर्शन २ देशविरति सर्वविरति औदयिकना मिथ्यात्व

१ अज्ञान विना १९ पारिणामिकमध्ये भ पपणो जीवत्वपणो ए सर्व मीत्यासी भांग भाव छे ॥ १२८ ॥

खवगेस्वायगजुत्ता, समदिट्ठीनिणायमिसगेसम्मे ।
उवसमखयविणुमीसग, सम्मजुआइतिच्छत्तीस१२९॥

टीका—खवगेस्वायगजुत्ता ॥ खवगेत्ति–क्षायिकेसम्यग्दर्शनमार्गणायां क्षायिकयुक्तास्तेपूर्वोक्ता सप्तविंशतनवक्षायिकभेदा सयुक्तास्तेचयथ उपशमदृष्टि दर्शनविनापनचयोरिंशत्भावास्तत्रोपशमचारित्रक्षायिकभावस्यनवक्षयोपशमस्यचतुर्दशऔदयिकस्यैकोनविंशति पारिणामिकस्यद्वौ।एवंपंचचत्वारिंशत्भावानामेदा भवति, मीसगेसम्मेक्षयोपशमेसम्यग्दर्शनेउपशमभावविना क्षायिकभावविना इत्यनेनपूर्वोक्तपंचचत्वारिंशत उपशमचारित्रक्षायिकनवापगमेपंचत्रिंशत, मीसगसम्मजुआइतिमिश्र क्षयोपशमसम्यग्दर्शनतेनयुना सयुक्ता षड्त्रिंशत्भवति, इत्यनेनक्षयोपशमस्यपंचदशऔदयिकस्यैकोनविंशति पारिणामिकस्यद्वौएवषट्त्रिंशत्भावा क्षयोपशमदर्शनेप्राप्यते, क्षयोपशमेक्षायिकोपशमदर्शनाऽभाव एव ॥ १२९ ॥

भावार्थ —क्षायिकसमकित मार्गणामध्ये क्षायिकना नव उपशमसमकित विना एटले उपशमचारित्र १ क्षायिकना ९ क्षयोपशमना १४ औदयिकना १९ पारिणामिकना २ ए ४५ भाव छे, क्षयोपशमसमकित तेहना उपशमनो भेद नथी क्षायिकनो भेद नथी. क्षयोपशमना १४ भेद छे, क्षयोपशमना १४ भेद छे, तेमध्ये क्षयोपशमसमकित मेळीये एटले १५ क्षयोपशमना १९ औदयिकना २ पारिणामिकना ए ३६ भेद पामीये ॥१२९

उवसमखवगेएग, मीसेमणनाणदेससव्वविणा ।
उदएतिगइतिलेसा, दुवेयविणुमेसयानिरए॥१३०॥

टीका—उवसमखवगेएग इत्यादि ॥ निरये नरकगतिमध्ये उपशमदर्शनलक्षण एकमुपशमस्यक्षायिकसम्यक्त्वरूपएकक्षायिक-स्यमीसे क्षयोपशमे मन पर्यवज्ञान देशविरतिसर्वविरतिलक्षणभेद-त्रिकविनापंचदश, औदयिकभावेतुमनुष्यतिर्यग्नरगतित्रिक विना-तेज पद्मशुक्लेश्यालक्षणलेश्यात्रिक विनावेदद्विक स्त्रीनपुंसकलक्षण विनानपोदशपारिणामिकास्त्रय एवमपत्रिंशत्भावानामेदा नरक-गतौनारकाणांप्राप्यते ॥ १३० ॥

टवार्थ—नरकगतिमध्ये उपशमसमकित १ क्षायिकसमकित ए २ मिश्रभावना १८ भेद छे, तेमध्ये मन पर्यवज्ञान १ देश-विरति १ सर्वविरति विना शेष १५ औदयिकना २१ मध्ये तीन गति तीन लेश्या पुरुषवेद १ नपुंसकवेद इटला विना ३३ मात्र छे नरकगतिमध्ये ॥ १३० ॥

देवेतिलेसथीपुस, सयुआसटसंखिराईआ ।
गइगुणठाणप्पभवा, मग्गणठाणेसु नेयवा ॥१३१॥

टीका—देवेतिलेसयी इत्यादि ॥ देवगतौपूर्वोक्तासुनयास्त्रिं-शत्सुतेज पद्मशुक्लेश्यात्रय स्त्रीवेद पुम्पवेदसयुक्ता असहनपुंसक-वेदरहिता सप्तत्रिंशत्भावानामेदा भवन्ति, भावनाचस्वगोगम्यादत्यु क्तामार्गणासुउत्तरभावा सामतसान्निपातिकभगानदर्शयति, सन्निपा-ईयागतिप्रभवागुणस्थानप्रभवास्तेएवमार्गणास्थानेषुज्ञातव्या उप-योगेन विभज्यवाच्या तत्रयासान्निपातिकाभगा षड्विंशति-नरपञ्चसभविजीवेप्राप्यमाणालभ्यते, तेचगतिभेदेनपंचदशभवति ।

नरकगतौदेवगतौतिर्यग्गतौमत्ये कर्मोणिर्वाणि-क्षयोपशमपारिणामिकौ-
दयिकलक्षण प्रथम एषएवउपशमयुक्त चतुष्कसयोग द्वितीय
सएवक्षायिकदर्शनयुक्त इतितृतीय मनुष्यगतौसिद्धप्रत्ययक्षायि-
कपारिणामिकलक्षणभंगैकरहिता पंचभगा प्राप्यते एकेन्द्रिय
द्वीन्द्रियत्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रियस्थावरपंचकमार्गणाया क्षयोपशमपारिणा-
मिकौदयिकलक्षण एकभग पंचेन्द्रियत्रसकायययोगत्रिकेभव्ये-
सज्ञ्याहारकलक्षणासुचतुर्दशभगा सिद्धप्रत्ययिकभगासत्त्वात् कषाय-
चतुष्टये मत्यादिज्ञानचतुष्ये दर्शनत्रिके केवलिप्रत्यय सिद्धप्रत्य-
यभगद्वयाभावात् शेषाभगा केवलद्विकेक्षायिकौदयिकपारिणामिक-
स्तथाक्षायिकपारिणामिकलक्षण एतौद्वौभगौअज्ञानत्रयेमूलत्रिक-
सयोगिक एकभग स एवगतिचतुष्येनच वारोभगा सामायिक-
च्छेदोपस्थापनीयचारित्रद्वयेक्षयोपशमपारिणामिकोदयरूप एक क्षयो-
पशमदर्शनचारित्रवता क्षयोपशमपारिणामिकौदयिकोपशमलक्षण
उपशमदर्शनोपशमचारित्रवता अपक्षयोपशमदर्शनक्षयोपशमचारित्रवता-
मपिभवति। इतिद्वितीय क्षयोपशमक्षायिकपारिणामिकौदयिकलक्षण
दर्शनक्षायिकक्षयोपशमोपशमचारित्रवताभवति, पंचभावसयोगप्र-
त्ययै पंचम क्षायिकदर्शनोपशमचारित्रवतस्य एव चत्वारोभगाभवति,
परिहारेत्रयोभगा एक क्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्षण एष-
एवोपशमयुक्त द्वितीय एषएवक्षायिकयुक्तस्तृतीय मूलत्रय
उत्तरतद्वातिसूक्ष्मसपरायेत्रयोभगा चतुष्कसयोगाद्वौपंचसयोगलक्षण
एक यथाख्यातेक्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्षणवर्जिता पंच-
भगास्तत्रद्वौउपशमश्रेणिसमर्थौ, एक क्षपकश्रेणिप्रायोग्य, एक
केवलिभवस्थप्रायोग्य, एक सिद्धप्रायोग्य, देशविरतौषट्भगा,
गतिद्वयेएवप्राप्यमाणत्वात् । अविरतौद्वादशभगाश्चतुर्गतिकालभ्यते,
लेश्यापंचकेद्वादश,शुक्लेदश, अभव्येक्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्ष-

णचतुर्गतिकत्वेनचत्वारोभंगा क्षयोपशमदर्शनेक्षयोपशम पारिणामिकौदयिकलक्षणएकएवउपशमदर्शनेक्षयोपशमपारिणामिकौदयिकौपशमलक्षणएक क्षायिकेच चारोभंगा क्षयोपशमपारिणामिकऔदयिकक्षायिकलक्षण प्रथम पचकसयोग द्वितीय केवलिसयोगिप्रत्यय तृतीय, सिद्धप्रत्ययश्चतुर्थ मिथ्यात्वसास्वादनमिश्रमार्गणासुक्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्षण, चतुर्गतिकाश्चत्वार, असंज्ञिषुक्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्षणएक नरतिर्यग्गतिद्वयेनोद्भंगौ अनाहारकेपचकसयोगलक्षणैकभगवर्जनात्मूलत पच उत्तराश्चतुर्दशभंगा भवन्ति, तत्रद्वादशवियहगत्यपेक्षयाएक केवलसमुद्घाताऽवस्थ एक सिद्धाऽपेक्षयाएवसर्वेमार्गणासुभावनाभाव्या ॥१३१॥

टवार्थ —देवगतिमध्ये उपली तीन लेश्या स्त्रीवेद ए च्यार मेलीये तेवारे सर्वसंभावना भेद छे, सन्निपातिकभावना भागा २६ छे, गतिना गुणठाणे पूर्व कह्या छे ते अनुसारे मार्गणाये पण जाणवा तेमध्ये सन्निपातिकभावना संभवी भागा ६ छे ते माहिला लेज्यो, नरकगतिदेवगतिमध्येतिरियचगतिमध्ये ३ भागा औदयिक १ पारिणामिक १ ए एक तथा ए मध्ये उपशम मेलीये ए बीजो अथवा क्षायिक भेलीये ए त्रीजो मनुष्यगतिमध्ये ६ संभवामाहियी एक सिद्धनो क्षायिक पारिणामिक ए भागो नथी बीजा सर्व ५ छे, च्यार इंद्री पाच थावर मध्ये १ त्रिकसयोगी भग छे, पचेंद्री १ त्रसकाय १ योग ३ तीन शुक्ललेश्या १ भव्य १ सज्ञी १ आहारी १ अनाहारी १ एटली मार्गणाये १४ भागा ए सिद्धप्रत्ययी भागो नथी ॥ १३१ ॥

पणसयतेसट्टिया, जीअभेआउत्तरागुणठाणे ।
जहतहमग्गणठाणे, लोगतियणुत्तरीसम्मे ॥१३२॥

टीका—अथमार्गणासुउत्तरजीवभेदान्दर्शयन्नाह ॥ पणसयते-सट्ठीया इत्यादि ॥ तत्रजीवभेदा पचशतानित्रिषष्टिप्रमिताग्गुणस्था-नशतकेदर्शितापूर्व उत्तराजयिगुणस्थानेउक्तास्तथामार्गणास्थानेज्ञा-तव्यास्तत्रलोकान्तिकभेदाअनुत्तरभेदा सम्मेत्तिसम्यक्त्वेप्राप्यते तत्र-लोकांतिकाना अधिपत्वय एवप्राप्ताअनुत्तरास्तुसर्वेपिसम्यग्दृष्टयएव तथा नरकगतौचतुर्दश तिर्यग्गतौअष्टचत्वारिंशत्, मनुष्यगतौ त्रीणि-शतानि अधिकानि देवगतौअष्टनवत्यधिकशत एकेन्द्रियेद्वाविंशति द्वित्रिचतुरिंद्रियाणाद्वौद्वौजीवभेदौस्वनामकौ पचेन्द्रियाणापचशतपच-त्रिंशदधिक, पृथिव्यादिषु चतुर्षुचत्वारोभेदा , वनस्पतिकायेषड्भेदा त्रसेपचशतएकचत्वारिंशदधिक, मनोयोगेसंज्ञिमार्गणाया पर्याप्ताऽपे-क्षयाद्वादशाधिकद्विशत, अपर्याप्तगणने चतुर्विंशत्यधिकानिचत्वारिश-तानिभवति, वचनयोगेपर्याप्ताऽपेक्षयात्रिंशत्यधिक द्विशत,अपर्याप्ताऽ-पेक्षयाएकचत्वारिंशदधिक चतु शत काययोगेसर्वेपि, पुरुषवेदेनार-केन्द्रियविकलाऽसज्ञितिर्यग्मनुष्यवर्जिता शेषा ४१०, स्त्रीवेदेवप-वसनत्कुमारादिदेवभेदवर्जिता ३४०, नपुसकेयुगलमनुष्यदेवभेदव-र्जिता १९३, कषायचतुष्टयेसर्वेमत्यादिज्ञानत्रयेसम्यक्त्वगुणस्थान-प्रत्यया २३, अवधिद्विकेतिर्यगपर्याप्तानानिषेधएवमन पर्यायकेव-लज्ञानकेवलदर्शनेपचदशकर्मभूमिजा १५। अज्ञानत्रिकेलोकाति-काऽनुत्तरसुरभेदरहिता ५३५, छेदोपस्थापनीयपरिहारयोर्भरतैरावत-पर्याप्तकादश, सामायिकसूक्ष्मसपराय यथाख्याताना पचदशकर्मभू-मिजाऽपर्याप्तका देशविरतौत्रिंशति , सज्ञितिर्यक्कर्मभूमिनरपर्या-प्तका अविरतौसर्वे, चक्षुर्दर्शनेएकेंद्रियद्वीन्द्रियत्रीन्द्रियवर्जा ५३७, असज्ञिमनुष्याणापचेंद्रियगत्त्वात्अचक्षुर्दर्शनेसर्वेअवधिदर्शनप्रतिज्ञा-नवत्केवलदर्शनकेवलज्ञानवत् कृष्णादिलेश्यात्रयेनारका षट्तिर्यग्-प्रत्ययाअष्टचत्वारिंशत्मानुष्या सर्वेदेवभेदा तिर्यग्जृंभकपर्यंताश्च-

पिकशनतेजोलेश्यायाबादरपृथिव्यप्वनस्पतिबादराद्वय सज्ञितिर्यग्-
प्रत्यया १० मानुष्यमायोग्याद्यधिकद्विशतदेवभेदाईशानयावत्
अष्टाविंशत्यधिकशत, पद्मलेश्यायामज्ञितिर्यग्पंचेंद्रियादश, मानुष्या-
भेदा देवभेदसनत्कुमारमाहेंद्रब्रह्मलोकानिकविसागराद्यु किल्विपि-
का पर्याप्ताऽपर्याप्तकभेदातषड्विंशति , शुक्ललेश्यायातिर्यग्मनुष्या
पद्मलेश्यावत् देवभेदास्तुलोकातसर्वार्थसिद्धपर्यन्तत्रयोदशसागराद्यु
किल्विषिका पर्याप्ताऽपर्याप्तभेदानचतुश्चत्वारिंशत, भव्येसर्वेअभव्येलो-
कांतिकानुत्तरभेदरहिता पचशतपचविंशतरूपाअनपरार्धमिका कर्म-
भूमिनराणाअभव्यत्वप्रतिपेधः श्रुतचितृष्टोपिभगवत्यादौनत्यागद-
र्शनात्रनागीकृतदृतिउपशमेसज्ञिभेदेपुनारकतिर्यग्मनुष्यभेदा सर्वे-
सम्यक्त्वस्था देवभेदेपुल्लोकातिकाऽनुत्तरभेदरहिताभवति । एतेषुपूर्व-
ग्रथिभेदात्नानोपशमसम्यग्दर्शनाभाव , क्षायिकेतुनारका पढ़तिर्य-
ग्मत्ययादशपर्यप्तद्वाऽपेक्षयाकेचितुतिर्यगुक्षायिकनेच्छतिमनुष्यभेदे-
पुभवति । तथ्रयुगलिकानातुपूर्वकर्मभूमौबद्धयुगलायु पश्चात्युग-
लेपुआगच्छतितत देवेपूत्पद्यनत मनुष्यत्वमापन्न सिध्यतिउक्त-
पकर्मग्रथटीकाया, तसिपनईयघउत्थेभवमिसिज्जातिखइयसम्मत्ते, सु-
रनारएपुयुगलसुगइपतुजिणकालियनराण इतिवचनात् एतद्गाथा-
प्रमाणातिर्यग्गतौनसमर युगलसुगइपइतिवचनात्यत अन्तर्द्वीप-
का क्षायिकानभवतितेनमानुष्याभेदाद्विशतकर्ममुमिजा पष्टिकर्म-
भूमिजा एवनवतिर्मानुष्याभेदा पद्नेरमिका किल्विपवर्जितार्वैमा-
निका सप्तति एववाच्य ॥ क्षयोपशमेतुचतुर्थगुणस्थानप्रत्यया
केचित्तुमर्यसिद्धौक्षायिकसम्यक्त्वमेवइच्छन्तितथाप्येतन्प्रायिक-
मिवभासतेइतिज्ञेय॥ मिश्रे १९८ सास्वादने ४०० मिथ्यात्वे ५३५
गुणस्थानोक्ताभेदा वाच्या सज्ञिमार्गणायामनोयोगवत् असज्ञि-
षुअष्टत्रिंशत् तिर्यग्प्रत्ययाएकाधिकशत (मनुष्याणा) प्राप्यते ।

आहारकस्यसर्वेअनाहारकस्यते नैरयिका सप्ताऽपर्याप्तकारितिर्यग्योनिजाश्चतुर्विंशतिरपर्याप्तकादेवभेदा नवनवतिरपर्याप्तका मनुष्यभेदा असज्ञिमत्यपाएकाधिकशतमपर्याप्तसज्ञिमनुष्या एकाधिकशतपर्याप्तका केवलिसमुद्घातेचपचदशकर्मभूमिजाअप्यनाहारकालम्यते अत त्रीणिशतानिसप्तचत्वारिंशनूअधिकानिभाष्यते ॥ इत्युक्ताविस्तारत जीवभेदामार्गणासु ॥ १३२ ॥ साम्प्रतमार्गणासुसमुद्घातभेदान्दर्शयन्नाह ॥

टबार्थ —पाचसे तेसठ जीवभेद छे। उत्तर गुणठाणे जिम छे ते मार्गणाये जाणवो, तेमध्ये लोकातिकना भेद अनुत्तर देवताना भेद ए समकितीनेज होय नरकगति १४, तिर्यंचगति ४८, मनुष्यने ३०३, देवतागति १९८, पचेंद्रीयने २२, विकलने पोताना २ ना पचेंद्रीने ५३५, पृथिवीकायने ४, अप्कायने ४, तेउकायने ४, वाउकायने ४, वनस्पतिने ६, त्रसने ५४१, मनोयोगे २१२, अपर्याप्ता गिणता ४२४, वचनयोगे ४४१, काययोगे ५६३ इत्यादिक सर्वयन्त्रथी जाणवो एकलोकातिक तथा अनुत्तर विमानना भेद सर्वसमकितीने होय, ए रीते जाणवो ॥ ॥ १३२ ॥

मणुएसगसमुग्घाया, देवेतिरएअपचचउनिरए।
सेसासुमग्गणासु, गुणठाणविहीओनेयव्वा ॥१३३॥

टीका—मणुएसगसमुग्घाया इत्यादि ॥ मनुष्यगतौसप्तसमुद्घाता प्राप्यतेवेदनादय देवगतौतिर्यग्गतौ वेदना १ कषायमरण १ वैक्रियतैजस १ लक्षणा पचसमुद्घाता चउनिरयेनारकगतौवेदनाकषायमरणवैक्रियलक्षणाश्चत्वार समुद्घाता शेषा-

सुमार्गणासु गुणस्थानविधिरनुज्ञातव्या । त्रसकायेयोगत्रयेशुक्ल-लेश्यायाभव्यत्वेक्षायिकसम्यग्दर्शनेसंज्ञयाहारकपंचेंद्रियलक्षणासुदश-मार्गणासुसप्तसमुद्घाताभवन्ति, पुरुषनपुंसकवेदे कषायचतुष्टये-ज्ञानचतुष्टयेदर्शनत्रिकेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयचारित्रद्वयेलेश्यापं-चकेक्षयोपशमसम्यक्त्वलक्षणेएकविंशतिमार्गणासुकेवलिसमुद्घाता-ऽभावात्षट्समुद्घाताभवंति, स्त्रीवेदअज्ञानत्रयअविरतिदेशविरति-अभव्योपशमसास्वादनमिथ्यात्वलक्षणासुदशमार्गणासु आहारक-केवलिवर्जाः पंचसमुद्घाता भवंति । एकेंद्रियवायुकायअसंज्ञि-अनाहारकमार्गणासुवेदनाकषायमरणवैक्रियलक्षणाश्चत्वारः समुद्घा-ताः, विकलत्रिकस्थावरचतुष्कमार्गणासुवेदनाकषायमरणलक्षणास्त्रय समुद्घाताः, परिहारविशुद्धिमिश्रमार्गणासुवेदनाकषायरूपौद्वौसमु-द्घातौ, सूक्ष्मसंपराये नसमुद्घातः, मरणेऽपिसमुद्घातमन्तरेणैवके-वलिद्विकेयथाख्यातचारित्रेचैककेवलिसमुद्घातलक्षणंभवति इत्यु-क्तामार्गणासुसमुद्घाता ॥ १३३ ॥ अथमार्गणासुध्याना याह ॥

टबार्थ—हवे समुद्घात कहे छे, मार्गणाये मनुष्यगति मार्गणाये सात समुद्घात हुवे, देवगति तिर्यंचगतें पांच समु-द्घात छे । वेदना कषाय मरण वैक्रीय तैजस ए पांच समुद्घात छे । नारकीने ४ समुद्घात छे । वेदना कषाय मरण वैक्रिय ए ४ शेषमार्गणाये समुद्घात गुणठाणाने अनुक्रमे मार्गणाये पिण जाणवो ॥ १३३ ॥

इगविगलथावरेसु, असन्नीएसुनझाणममणत्ता ।
नरतसपणिंदिखवगे, सव्वेजोएअसुकाए ॥ १३४ ॥

टीका—इगविगलथावरेसु इत्यादि ॥ एकेन्द्रियविकलेंद्रिय-

स्थावरपचकमार्गणासु असज्ञिलक्षणासुनव्यान अमनस्कत्वात्मनो-रहितत्त्वात्, अतोमुहुत्तमित्तचित्तावत्थाणएगवत्थुम्मि छउमत्थाण-झाण इतिवचनात्अत मनोरहितत्वात् नव्यानसद्भाव नरतिमनु-ष्यगतौत्रसकायेपचेन्द्रियमार्गणाया क्षायिकसम्यग्दर्शनेसर्वेआर्तरौद्र-धर्मशुक्लक्षणानिचत्वारिध्यानानितेषाषोडशापिपादालभ्यते सर्वगु-णस्थानकसभवात्, गुणस्थानकाऽपेक्षयाध्यानभेदावक्तव्या योग-त्रिकेशुक्ललेश्याया ॥ १३४ ॥

टबार्थ —एकेन्द्रियमार्गणाये विकलेन्द्रियमार्गणाये थावरमा-र्गणाये असज्ञीमार्गणाये ध्यान नथी स्येमाटे जे एटली मार्ग-णाये मन नथी मनविना ध्यान थाय नही ध्यान ४ प्रकारना छे, आर्त्तध्यान १ रौद्रध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्लध्यान ४ ए ४ ध्यान छे तेमध्ये आर्त्तध्यानना पाया ४ इष्टवियोग १ अ-निष्टसयोग १ रोगचिंता १ निदान १ ए ४ रौद्रध्यानना पाया छे ४ हास्यानद १ मृषानद २ चोर्यानद ३ परिग्रहरक्षणानद ४ धर्मध्यानना पाया ४ आज्ञाविचय १ अपायविचय २ विपाक-विचय ३ सस्थानविचय ४ शुक्लध्यानना पाया ४ पृथक्त्ववित-र्कसप्रवीचार १ एकत्त्ववितर्कअप्रविचार २ सूक्ष्मक्रिया प्रति-पाति ३ पृछन्नक्रिया निवृत्ति ४ सर्व १६ भेद थया, मनुष्यगति १ त्रसकाय १ पचेन्द्री १ क्षायिकसमकित ४ ए चार मार्गणाये ध्यानना १६ भेद छे योग ३ शुक्ललेश्या तथा ॥ १३४ ॥

आहारेचरमस्स, सुक्कस्सविणाकसायवेएसु ।
उवसमितिसुक्कहीणा, तिनाणदसेसमणभवे॥१३५॥

टीका—आहारकमार्गणाया चरमशुक्लव्युपरतक्रियलक्षण वि-

नापचदशध्यानभेदा प्राप्यते । अस्यायोगिकालेप्राप्यमाणत्वात् अयोगित्त्वतुआसु मार्गणासुनास्ति तथा कषायमार्गणासु घनसृषु-वेदत्रिकमार्गणासु उपशमसम्यग्मार्गणासु, तिसुक्रक्षीणा, इतिनय शुक्लाएकत्ववितर्काऽप्रविचार १ सूक्ष्माक्रियाप्युपरत २ उच्छिन्न-क्रियाऽनुवृत्ति ३ क्रियालक्षणाना क्षीणमोहादिषुप्राप्यमाणत्वात् तेनैनासुनभवति, निनाणदसेसमणभव्वे मत्यादिज्ञानत्रिके चक्षुरादि-दर्शनत्रिकेसमणत्ति समनस्काना संज्ञिनाभव्येभ यमार्गणाया अग्रे-तनगाथागनाध्यानभेदा वाच्या ॥ १३५ ॥

टबार्थ —आहारकमार्गणाये शुक्लध्याननो चरम छेहलो पायो नथी ते शुक्लनो चोथो पायो अयोगी गुणठाणे छे तेमाटे नथी कषायमार्गणाये उपशमसमकितमार्गणाये वेद तीन ३ मार्गणाये आर्त्तना ४ रुद्रना ४ धमना ४ शुक्लनो १ एव १३ भेद छे तीन शुक्ल ते क्षीणमोह गुणठाणे पछी थाये तेमाटे नथी तीन ज्ञान ३ तीन दर्शनसज्ञी एव ७ भव्य मार्गणाने विषे छे ॥ १३० ॥

चरमदुसुक्कविहीणा, अणहारदुकेवलेसुदोचरिमा ।
पणलेसवेयगेसु, असुक्कपरिणामभेएण ॥ १३६ ॥

टीका—एतासुमार्गणासुक्षीणमोहपर्यंत गुणस्थानकप्राप्तौचतु-र्दशध्यानभेदा भवन्ति चरमौद्वौशुक्लौसूक्ष्मक्रियाप्युपरतक्रियौताभ्या-हीनाभवति । अनाहारकमार्गणाया विग्रहगतौसिद्धानाध्यानाभा-वात्, अयोगिस्यानाहारकस्यतुचरमौद्वौशुक्लौप्राप्येते, तयाकेवलद्वि-केऽपिचरमौद्वौशुक्लभेदौप्राप्येते तथा पचसुअन्त्यासुलेश्यासु तथा क्षयोपशमेसम्यग्दर्शनेअसुक्क, शुक्लध्यानरहिताद्वादशभेदाभवति । अप्रमत्तपर्यंतगुणस्थानकानासद्भावात् । शुक्लस्य अपूर्वकारणादौ-

प्राप्यमाणत्वात् नात्रसर्वत्रध्यानभेदा येउक्ता तेसर्वेपरिणामभेदेन-भवति । अत्यतविशुद्धौविशुद्धा अत्यतसक्लेशेसक्लिष्टा सर्वजी-वानामप्रायोध्यानकालश्चाऽप स्मृतिचिंताभावनाकालस्तुबहुतरइति ॥ ॥ १३६ ॥

टबार्थ—छेहला शुक्लध्यानना २ पायाविना चउदे पाया छे ए अत्ये २ पाया ते अयोगी गुणठाणे छे तेमाटे ओछा गण्या छे अनाहारकमार्गणाये केवल २ ने विषे शुक्लध्यानना छेहला २ पाया छे पाच लेश्याने क्षयोपशमसमकितने विषे शुक्लध्यान विना ३ ध्यानना १२ पाया छे जे कारणे परि-णामने भेदे आठमा गुणठाणा पछी शुक्लध्यान होवे ए मार्गणा ७ गुणठाणा सीम छे ॥ १३६ ॥

सुहुमेपढमसुक, हरकाएसुक्कचउरपरिहारे ।
अट्ठतिगधम्मचउग, इगसुक्कयुअदुसामईए ॥१३७॥

टीका—सुहुमेपढमसुक्क इत्यादि ॥ सूक्ष्मसपरायेचारित्रेप्र-थमआद्य शुक्लपृथक्त्ववितर्कसमवीचारलक्षणएकशुक्लध्यानलभ्यते हरकायेयथाख्यातचारित्रेशुक्लचउरशुक्लध्यानस्यचत्वारोभेदा भवति तत्र उपशातमोहेपृथक्त्व क्षीणमोहेएकत्वसयोगेसूक्ष्मक्रियालक्षण अयोगिकेवलिगुणस्थानेव्युपरतक्रियालक्षण परिहारविशुद्धौआर्त्त-निक निदानार्त्तरहितमुनीनामभवति । आचार्यादिइष्टवियोगादौरोग-चिंतादिकारणेचआर्त्तत्रयसभवात्, स्वाध्यायादौतुधर्मध्यानचतुष्टयस्य-सद्भावात् प्रमत्ताप्रमत्तगुणस्थानप्रायोग्यत्वात् । दुसामईएत्ति, सा-मायिकछेदोपस्थापनीयलक्षणेचारित्रद्वयेएकप्रथमशुक्लध्यानपृथक्त्व-वितर्कलक्षणतेनयुक्तइत्यनेनप्रमत्तेआर्त्तनिकधर्मचतुष्टयस्यसद्भावात् ।

प्रमत्तेउर्मध्यानचतुष्टयसद्भावात् । अपूर्वोऽनिवृत्तौसमयमशुक्लचारित्र-
द्वयेप्रमत्तादिअनिवृत्तिपर्यंतगुणस्थानसद्भावात् ॥ १३७ ॥

दवार्थ —सूक्ष्मसंपरायचारित्रे पहिलो शुक्लध्याननो पायो छे यथाख्यातचारित्रमध्ये शुक्लध्यानना ४ पाया छे परिहार विशुद्धिमध्ये आर्त्तध्यानना तीन भेद धर्मध्यानना ४ भेद छे सामायिक छेदोपस्थापनीय विषे आर्त्तध्यानना तीन भेद धर्मना ४ भेद शुक्लनो १ भेद पहिलो ए भेद छे ॥ १३७ ॥

सुदुसुक्कमणनाणे, सेसेसुअट्टरुद्दझाणाइं ।
दडगतेरसदेवे, नवतिरियेइगेगनरगनिरए ॥ १३८ ॥

टीका—सुदुसुक्कमणनाणे इत्यादि ॥ मन पर्यवज्ञानेप्रमत्तन क्षीणमोहयावत्गुणस्थानसत्वे आर्तनिकधर्मचतुष्कशुक्लद्वयसद्भा वात् मन पर्यवज्ञाने नवध्यानभेदा भवति शेषासुगतिनिकअज्ञान-निक अविरतिदेशविरति अभव्यमिथ्यात्व सास्वादनमिश्रलक्षणा-सुद्वादशमार्गणासुआर्त्तरौद्र झाणाइ ध्यानभेदानपुमकत्वप्राकृतत्वात्-अष्टौभवंति । इत्युक्ताध्यानभेदा मार्गणासु, सांप्रतचतुर्विंशति-दडकान्मार्गणासुदर्शयन्नाह देवेदेवगतौत्रयोदशदडकाभुवनपतिदशा-व्यतरज्योतिष्क वैमानिकरूपणा प्राप्यते, नवत्ति, दडका स्थावर-पचकविकलत्रिकतिर्यक्पचेंद्रियलक्षणानवदडकास्तिर्यग्गतिमार्गणा-याएकोनरगतिलक्षण नरगतौएकोनैरयिकगतिलक्षण नरकगतौ-भवति ॥ १३८ ॥

दवार्थ —मन पर्यवज्ञानमध्ये आर्त्तना ३ भेद धर्मना ४ शुक्लना २ एटला भेद छे । शेषमार्गणाये आर्त्तध्यानना रुद्रना

१

४ भेद पामीए, ए मार्गणाए ध्याननना भेद कह्या, हवे २४ दंडक बासठ मार्गणाये कहे छे । तेर दंडक देवतानी गतिमव्ये छे, तिर्यंच गतिमव्ये नव दंडक छे । नारकीने एक दंडक छे, मनुष्यने दंडके एक दंडक छे ॥ १३८ ॥

पणएगिंदियविगले, थावरपणगेनियचमणयोगे ।
पचेंदिसुतिगनाणे, विभगेओहिदसेय ॥ १३९ ॥

टीका——पणएगिंदियविगले इत्यादि॥एकेन्द्रियमार्गणायापणत्ति पच पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिलक्षणा पचदंडका भवति, विकलेस्वका स्वनामकादंडकाभवति । पृथि-यादिषुपचसुस्वनामका एवदंडका, तथामनोयोगेपचेंद्रियमार्गणायाज्ञानत्रिकेमत्यादिकेविभगेअवधिदर्शनेचशब्द समुच्चयार्थं ॥ १३९ ॥

टबार्थ —एकेंद्रियमार्गणाये पाच दंडक छे । पृथिवीअपतेउवाउवनस्पति एव ५ विकल्नेविषे पोताना दंडक बेंद्रीने बेंद्री, तेंद्रीने तेंद्री चौरिंद्रीयने चौरिंद्रीनो दंडक छे, थावर पाचमव्ये थावरना दंडक पोताना जाणवा । पृथिवीकायमव्ये पृथिवीनो दंडक, अप्कायमव्ये अपकायनो दंडक, तेउकायमव्ये तेउनो दंडक, वाउकायमे वाउनो दंडक, वनस्पतिकायमे वनस्पतिनो दंडक छे । मनोयोग वचनयोग १ पांचेंद्रिय मार्गणाये १ मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ तथा विभगज्ञान तथा अवधिदर्शनने विषे ॥ १३९ ॥

सम्मतिगेमीससमि, सन्निसुसालसयमेपणगे ।
मणनाणकेवलदुगे, एगनरदंडगहोइ ॥ १४० ॥

टीका—सम्यक्त्वत्रिके उपशमक्षयोपशमक्षायिकेमिश्रेसंज्ञि-मार्गणायांप्रोक्तेच षोडशदंडकानामेकदेवप्रत्ययाख्योदशानिर्यग्मनु-ष्या एतेभवन्ति संयमपंचकेमनःपर्यवज्ञानेकेवलज्ञानेकेवलदर्शने एकमनुष्यगतिलक्षणदंडकंभवति, वचनयोगेविकलत्रिकसहितषोडश-युक्ताएकोनविंशतिदंडकाभवति ॥ १४० ॥

टबार्थ—उपशम १ क्षयोपशम २ क्षायिक १ मिश्रदृष्टि ते संज्ञीमार्गणाए सोल दंडक छे, देवनाना १३ नारकीनो १ तिर्यंचपचेंद्रीय १ ए सोल छे, पांच संयममन पर्यवज्ञान १ केव-लज्ञान १ केवलदर्शन १ एटली मार्गणाए एक मनुष्यनो दंडक होवे, ए मनुष्य विना न पामीये ॥ १४० ॥

इगुणिसतसेपुरिसे, थीजेएपनरससढिइकारा ।

देसेतिरिमणुअदुग, चउकुसुइगिविर्तिविणासत्तर १४१॥

टीका—इगुणिसनमेट्यादि तेएवएकोनविंशतिदंडका त्रस-कायेपुरिसेपुम्यवेदेतथास्त्रीवेदेनारकवर्जा पंचदशासंज्ञिदंडका स-ढिनपुंसकवेदेनारकस्थावरविकलतिर्यग्मनुष्यलक्षणाएकादशदंडकाभ-वन्ति । देशविरतिमार्गणायांतिर्यग्गतिमनुष्यगतिलक्षणौद्वौदंडकौच क्षुदर्शनेएकेंद्रियापंच त्रिनि द्वींद्रिया त्रीन्द्रियादंडकरहितविनासप्त-दशदंडका भवति ॥ १४१ ॥

टबार्थ—त्रसकायमार्गणायेविकल ३ देवना १३ नारकी १ तिरियचपचेंद्रीय १ मनुष्यपचेंद्रीय १९ दंडक छे, पुरुषवेदे स्त्रीवेदे देवनाना १३ तिर्यंचपचेंद्रीय १ मनुष्यपचेंद्रीय १ ए १५ दंडक छे । नपुंसकवेदमध्ये नारकी १ थावर ५ विकल ३ तिर्यंचप

चेंद्रीय मनुष्यपचेंद्रीय ए ११ दंडक छे । देशविरतिमध्ये तिर्यंच १ मनुष्य १ ए बे दंडक छे । चक्षुदर्शनमध्ये एकेंद्रीना ५ दंडक छे, बेंद्रीनो १ तेंद्रीनो १ ए सात विना शेष १७ दंडक पामीये छीए ॥ १४१ ॥

वावीसकिण्हतिगे, अट्ठारस तेउएअ पउमदुगे ।
तिगदसगच्चअसन्नी, सासाणेदुतिवावीस ॥ १४२ ॥

टीका—वावीसकिण्हतिगे इत्यादि कृष्णनीलकापोतलक्षणासुलेश्यासुज्योतिष्कवैमानिकवर्जा द्वाविंशतिदंडका तेजोलेश्यायानारकतेजस्कायवायुकायविकलत्रिकवर्जाअष्टादशदंडकाभवन्ति॥ पउमदुगेपद्मशुक्लेश्याद्वयेतिर्यगपचेंद्रियमनुष्यपचेंद्रियवैमानिका नयोदंडकाभवन्ति । दसगच असन्नी, असंज्ञिमार्गणायास्थावरविकलतिर्यग्मनुष्यलक्षणा दशदंडका भवन्ति, तथासास्वादनमार्गणाया तेजोवायुकायरहिताद्वाविंशतिदंडका लभ्यन्ते ॥ १४२ ॥

टबार्थ—कृष्णलेश्या १ नीललेश्या २ कापोतलेश्या ३ ए तीनने विषे ज्योतिषी १ वैमानिकविना बावीस दंडक छे तेजोलेश्याने विषे नारकी १ विकल ३ तेउकाय वायुकाय विना १८ दंडक पामीये छे पद्म तथा शुक्लेश्याने विषे ३ दंडक छे एक वैमानिकनो १ एक तिर्यंचनो १ एक पचेन्द्रि मनुष्यनो १ एव ३ छे, तथा असंज्ञिमार्गणाये १० दंडक छे थावर ५ विकल ३ तिर्यंचअसज्ञी १ मनुष्यअसज्ञी १ एव १० दंडक लाभे सास्वादनमा २२ दंडक छे, तेउकाय वाउकाय नथी ॥ १४२ ॥

सेसासुमग्गणासु, चउविसदटगानिरयविगले ।
थावरिइगिनपुंसो, देवाथीपुरिसवेआय ॥१४३॥

टीका—सेसासुमग्गणासु इत्यादि ॥ शेपासुमार्गणासु काययोगकषायचतुष्कअज्ञानद्वयाविरति अचक्षुर्दर्शनभव्याऽभव्यमिथ्यात्वाहारकानाऽहारकलक्षणासु चतुर्विंशतिदंडका भवति । निरयविगलेत्ति, नरकगतिविकलत्रिकस्थावरपंचकएकेन्द्रियलक्षणासुएक नपुंसकवेदलक्षणोवेद भवति । देवगतौस्त्रीवेदपुरुषवेदौप्राप्येते ॥ ॥ १४३ ॥

टबार्थ—शेपमार्गणाये काययोगे कषाय ४ अज्ञान ३ अविरति चक्षुदर्शन १ भव्य १ अभव्य १ मिथ्यात्व १ आहारी १ अनाहारी १ एटली मार्गणाये २४ दंडक छे हवे बासठ मार्गणाये कहे छे वेद तीन वखाणे छे, नारकीनी मार्गणाये विकल ३ थावर ५ एकेन्द्रिय १ एटलाने नपुंसक वेद छे तथा देवगतिमध्ये स्त्रीवेद पुरुषवेद ए बे वेद पामीये छे ॥१४३॥

सुहमअहरकायदुकेवलि, वेअरहीआनपुंसगाअमणा।
परिहारगादुवेया, सेस तिवेया मुणेयवा ॥ १४४ ॥

टीका—सुहमअह इत्यादि ॥ सुहमत्तिसूक्ष्मसंपरायचारित्रेयथाख्यातचारित्रे केवलिद्विकेण्ता मार्गणावेदरहिताज्ञातव्या ॥ अमणाअसंज्ञिन नपुंसकवेदाभवति । परिहारविशुद्धिका पुरुषवेदनपुंसकवेदाभवति । जननपुंगवा त्रिमाणनाद्या भगवत्यापंचविंशतिनमशतकान्नेय। सेसाशेषा सर्वमार्गणास्त्रिवेदका भवति ।

इत्युक्तमार्गणासुवेदद्वार ॥ १४४ ॥ साम्प्रतमार्गणासुध्रुवबंधिद्वारं दर्शयन्नाह ॥

टबार्थ —सूक्ष्मसंपराय १ यथाख्यातचारित्र १ केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ एटली मार्गणाये कोई वेद नथी कर्मग्रंथमध्ये केवलज्ञानोपयोगे वेद ३ ने कह्यो छे, ते आकाररूपवेद गवेष्या छे, परविकाररूप नथी गवेष्यो, असंज्ञीने एक नपुंसकवेद छे परिहारविशुद्धिने पुरुष तथा नपुंसकवेद छे शेष जे मार्गणा रही ते सर्वने तीन वेद लाभे छे ॥ १४४ ॥

वन्नचउतेअकम्मा, गुरुलहुनिमिणोवघायभयकुच्छा।
मिच्छकसायावरणा, विग्घाधुवबंधिसगचत्ता ॥१४५॥

टीका—वन्नचउतेअकम्मा इत्यादि ॥ गाथा प्राग्व्याख्याता वर्णादीनां ध्रुवबंधित्वंस्वस्वजातिषु एकस्यावश्यबंधात् । ननुचैवंस्वजात्यन्यतमबंधेध्रुवबंधित्वंतर्हिसातासातयोरन्यतमस्यावश्यबंधात्ध्रुवबंधित्वमाप्नोति, तत्राह सातासातयोर्हेतुभेदोवर्णादीनांतु सएवहेतु तेनध्रुवबंधित्वमितिएवंगत्यादिष्वपिहेतुभेदबंधात् अध्रुवबंधाज्ञेया ॥ १४५ ॥

टबार्थ —हवेध्रुवबंधी कहे छे वर्ण ४ तैजस १ कार्मण १ अगुरुलघु १ निर्माण नामकर्म १ उपघात १ भय १ दुगछा १ मिथ्यात्व १ कषाय १६ आवरण १४ ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ एवं १४ आवरणअंतराय ५ ए ध्रुवबंधीनी सडतालीस प्रकृति जाणवी ॥ १४५ ॥

अणमिच्छथीणतिग, विणुनाणतिगओहिदससम्मतिगे
मीसेदेसविरए, अवीअकसायायधुवबंधी ॥ १४६ ॥

टीका—तत्रमार्गणासुअनंतानुबंधिचतुष्टयमिथ्यात्वमोहनीयस्त्यानर्द्धित्रिकलक्षणाष्टकप्रकृतिवर्जा शेषाएकोनचत्वारिंशत्ध्रुवबंधिन्य मत्यादिज्ञानत्रिकावधिदर्शनउपशमक्षयोपशमक्षायिकलक्षणसम्यक्त्वत्रिकेमिश्रेभवन्ति ॥ ताएवपूर्वोक्ताद्वितीयकषायरहिता पंचत्रिंशत्देशविरतावधयान्ति ॥ १४६ ॥

टबार्थ—अनंतानुबंधि ४ मिथ्यात्व १ थीणद्धी ३ ए आठ विना ज्ञान ३ अवधिदर्शन १ समकित तीनने विषे एटली मार्गणाये इगुणचालीस ध्रुवबंधी मिश्रदृष्टिनेविषे ३९ चालीस ध्रुवबंधी छे, देशविरतिनेविषे ए ३९ चालीसम ये कषाय बीजानी चोकडी काढीये तेवारे पांत्रीस ध्रुवबंधी छे ॥१४६॥

तीअकसायविणाते, मणपज्जवनाणचरणतिगसुहुमे। चउदससासाणेते, मिच्छविणाछचत्तधुवबंधी॥१४७॥

टीका—तीअकसाय इत्यादि॥ ताएवपूर्वोक्तास्तृतीयकषायचतुष्टयरहिताएकत्रिंशत्, मन पर्यवज्ञानेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिलक्षणेचारित्रत्रिकेबध्नति । हेतुभावनापूर्ववत् । तथासुहमे सूक्ष्मसंपरायचारित्रेज्ञानावरणीयपंचकदर्शनावरणीय चतुष्टय अंतरायपंचक एव चतुर्दशध्रुवबंधि य बंधेभवति । तथा सास्वादने, तेइति, ताध्रुवबंधि य मिथ्यात्वविनाषट्चत्वारिंशत्ध्रुवबंधेप्राप्यते मिथ्यात्वस्यमिथ्यात्वेएवबंधात् ॥ १४७ ॥

टबार्थ—ते पांत्रीस माहियी तीजी चोकडी विना इकतीस ध्रुवबंधी बांधे । मन पर्यवज्ञानी सामायिक, छेदोपस्थापनीय १ परिहारविशुद्धिने विषे ३१ ध्रुवबंधी प्रकृति छे । सूक्ष्मसंप-

राप गुणठाणे ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अन्तराय ५ ए १४ ध्रुवबंधी जाने । गाणागणयेमिथ्यात्व विना छेतालीस ध्रुवबंधी बांधे छे ॥ १४७ ॥

केवलदुगिहरकाण, अनघम्मेराउसवधुववधो ।
धुववधहीणचओद, सगाअधुववधीण ॥ १४८ ॥

टीका—केवलदुगिहरकाण इत्यादि ॥ तयाकेवलज्ञानकेवलदर्शनयपारयानल अणासुनिसूपूननवधिम तीनारसासाअनर नवधोभवनिशेपासुगतिइन्द्रियकायपोगवेदकषायाऽज्ञानयाऽविरतिचक्षुरचक्षुर्दर्शनलेश्यावटकभ याऽभव्यामिथ्यात्वमज्यसज्ञि आहारकाऽनाहारकलक्षणासुचतुश्चत्वारिंशत्मार्गणासुसमचत्वारिंशत्ध्रुवबधिन्य अनेभवन्ति ध्रुवबधिहीना। शेपामार्गणाच र्याभिवोक्ता गहनय अनषनधिन्य प्रतिमार्गणासुवक्त याम्नाश्चेमानरकगतौचतु पचाशत् अध्रुवबधिन्य, तिर्यग्गतौसप्तति, मनुष्येत्रिसप्तति, देवे ५७ सप्तपचाशत्, एकेंद्रियेत्रि त्रैंद्रियेद्विपष्टि, पचेंद्रियेत्रिसप्तति, पृथिव्यब्वनस्पतिसुद्विपष्टि, तेजोवायकायेअष्टपचाशत्। त्रसेयोगत्रयेवेदत्रयेकषायचतुष्टयेत्रिसप्तति । मत्यादिज्ञानत्रयेअवधिदर्शनेचत्वारिंशत् केवलज्ञाने केवलदर्शनेएका मन पर्यवज्ञानेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धौचतुस्त्रिंशत् । अज्ञानत्रयेमिथ्यात्वेसप्तति । सूक्ष्मसपरायेतिस्र, यथाख्यातेएकादशानिगतौद्वात्रिंशत् । अविरतौएकसप्तति । चक्षुरचक्षुर्दर्शनेत्रिसप्तति कृष्णनीलकापोतेएकसप्तति तेजोलेश्यायाचतु पष्टि, पद्मलेश्यायाएकपष्टि, शुक्ललेश्यायासप्तपचाशत् भव्येत्रिसप्तति । अभव्येसप्तति, उपशमेअष्टात्रिंशत् । क्षायिकक्षयोपशमेचत्वारिंशत्, मिश्रेपचत्रिंशत् । सास्वादने पचपचाशत्,

मिथ्यात्वेसप्तति, संज्ञिमार्गणायानिसप्तति । असंज्ञिमार्गणायासप्तति । आहारकेत्रिसप्तति अनाहारके ६५ पंचषष्टि, अध्रुवबंधिय भवति ॥ १४८ ॥

टबार्थ —केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ ने विषे यथाख्यातचारित्रने विषे ध्रुवबंधी प्रकृतिबंधीय नहीं शेष जे मार्गणा चौवालीसवें ध्रुवबंधी सर्व ४७ सुडतालीस जावे ध्रुवबंधी काढीये शेष रहे ते अध्रुवबंधी प्रकृतिनो बंध छे। नारकीने ५४ तिर्यंचने ७० मनुष्यने ७३ देवगतिने ५७ एकेंद्रीविकलेंद्रीने ६२ पंचेंद्रीने ७३ पृथ्वीअप्तेउवनस्पतिने ६२ तेउवाउने ५८ असयोग ३ वेद ३ कषाय ४ ने ७३ ज्ञान ३ ने ४० मन पर्यवज्ञानने ३४ केवलज्ञानने १ लेश्या ३ ने ७१ तेजो ६४ पद्म ६१ शुक्ल ५७ भव्य ७३ अभव्य ७० उपशम ३८ क्षायिक ४० क्षयोपशमे ४० मिश्रे ३५ सास्वादने ५५ मिथ्यात्वे ७० संज्ञी ७३ असंज्ञी ७० आहारीने ७३ अनाहारीने ६५ अध्रुवबंधीनो बंध छे ॥ १४८ ॥

निमिणथिरअथिरअगुरुअ, सुहअसुहतेअकम्मचउवन्ना।
नाणंतरायदंसण, मिच्छधुवउदयसगवीसा ॥१४९॥

टीका—निमिणथिरअथिर इत्यादि गाथा मार्गणासु ध्रुवोदयिनी प्रकृती मार्गणासुविभजयन्नाह ॥ १४९ ॥

टबार्थ —ध्रुवोदयी २७ छे, निर्माण १ थिर १ अथिर १ अगुरुलघु १ शुभ १ अशुभ १ तैजस १ कार्मण १ वर्णादिक ४ ए १२ नामकर्मनी ज्ञानावरणी ५ अंतराय ५ दर्शना-

वरणी ४ मिथ्यात्व १ ए सत्तावीस ध्रुवउदयी जाणवी प्रकृति स्वरूप ए रीते छे ॥ १४९ ॥

नामधुवोदयकेवलि, सम्मत्तपरासुमग्गणासुच ।
मिच्छविणासेसासु, सगवीसहुतिधुवउदया ॥१५०॥

टीका—नामधुवोदयकेवलि इत्यादि । केवलित्ति भीमोभीमसेनइतिन्यायात् केवलज्ञान केवलदर्शनमार्गणाद्वयेनामकर्ममत्यया ध्रुवोदयिन्योद्वादशप्रकृतय प्राप्यते, तथा सम्मत्तपरासु सम्यक्त्वसहितासु मार्गणासुमत्यादिज्ञानचतुष्टयेअवधिदर्शनेमयमपट्के उपशमादिसम्यक्त्वत्रयेचशब्दात्सास्वादनेमिश्रेमिथ्यात्वोदयविनाषट्विंशतिध्रुवोदया भवनि, शेषासुमार्गणासुसप्तविंशति ध्रुवोदया प्राप्यते, भावनागुणस्थानाधिकारवत्ज्ञेया ॥ १५० ॥ अध्रुवोदयिप्रकृतिदर्शनार्थमाह ॥

ठयार्थ—केवलज्ञान १ केवलदर्शनमध्ये नामकर्मनी १२ ध्रुवोदयी उदय छे समकितसहित जे मार्गणाज्ञान ४ अवधिदर्शनसमकित तीन इत्यादिक मार्गणाये मिथ्यात्व विना २६ ध्रुवउदयी उदय छे, शेषमार्गणाये सत्तावीस ध्रुवोदयी छे ॥१५०

धुवउदयहीणउदओह, सेसा(सखा)अधुवोदयाणनेयवा
धुवसताकेवलदुगि, चउसत्तरिसेससव्वाओ ॥१५१॥

टीका—ध्रुवउदयहीणउदओ इत्यादि। उदयेमार्गणासुउदयस्यओघ सद्ध्रुवोदयहीन शेषाउदयोवसख्यासाअध्रुवोदयसख्याज्ञातव्या, नरकगतो एकोनाशीति उदयसख्या तनसप्तविंशतिध्रुवोदया शेषा-

द्विपंचाशत्अध्रुवोदयाज्ञानया एवंसर्वेष्वभाय, विचारसारयनर्क-स्त्रोपज्ञतन ज्ञानया इति ॥ अथध्रुवसत्तात्रिंशदधिकशतमानासा-चसप्त (अष्ट) [१] पंचाशदधिकशतप्रकृत्यपेक्षयागृहीतानदपेक्षयाकेवल-ज्ञान केवलदर्शनमार्गणायाचतुस्सप्तति ध्रुवसत्ताल्भ्यतेशेषासुषष्टि-मार्गणासुसर्वाअपिध्रुवसत्ता लभ्यतेभावनाचस्वत ज्ञेया ॥ १५१ ॥ अध्रुवसत्तादर्शयन्नाह ॥

टवार्थ —ध्रुवउदयथी हीन करता उदयनो जे ओघ छे ते मध्ये ध्रुवोदयी काढता रही जे प्रकृति ते अध्रुवोदयी जाणवी, नरगनी ११ प्रकृति उदय छे, तेमध्ये २७ ध्रुवोदयी ५२ अ-ध्रुवोदयी इमज सर्व यत्रकथी जाणज्यो, हवे ध्रुव सत्ता कहे छे केवलज्ञान केवलदर्शनने विषे चिहुत्तरि ध्रुव सत्ता छे, शेष साठ मार्गणाये सर्व एकसोतीसनी ध्रुव सत्ता छे ॥ १५१ ॥

अधुवेतिरियाअजिणा, देवनिरयाइगाउविणुविगला।
थावरइगअजिणाओ, दुगअतिगाऊतेउदुगे॥१५२॥

टीका—अध्रुवेतिरियाअजिणा इत्यादि॥ अध्रुवेअध्रुवसत्ताया तिर्यग्योनिकानाअजिनाजिननामरहिता सप्तविंशति अध्रुवसत्ताका लभ्यते, देवगनात्रमिनरकायूरहिता सप्तविंशतिरध्रुवसत्ता नरक-गतौदेवायूरहिता अध्रुवसत्ता प्राप्यते, विकलेंद्रियत्रिके स्थावरत्रिके पृथिव्यप्वनस्पतिलक्षणे इगत्तिएकेंद्रियमार्गणाया जिननामदेवायु नरकायु इतिप्रकृतित्रयरहिता पंचविंशति अध्रुवसत्ताभवति । अतिगाउत्तिनरकदेवमनुष्यायूरहिताश्चतुर्विंशति अध्रुवसत्ताल्भ्यते, एताश्चमनुष्यत आगत्यतेजस्कायवायुकायनात्कालिंकानाभवति ।

तेजस्कायिकोदयेआवलिकानतरमनुष्यगतिमनुष्यानुपूर्वी देवगतिदे-वानुपूर्वी नरकगतिनरकानुपूर्वी वैक्रियसप्तकाहारकसप्तलक्षणसत्ताया उद्वलतिजिननामसत्तातुनास्त्येवेतिएवमदनाहसूत्रकार ॥१५२॥

टवार्थ —अनुसत्तामध्ये तिर्यंचगतिमध्ये जिननामनी सत्ता नथी शेष २७ नी सत्ता छे देवगतिमध्ये नरकनो आऊखो सत्तामध्ये नथी नरकगतिमध्ये देवायु नथी, विकल ३ थावर ३ एकेन्द्रियमार्गणाये जिननाम तथा देवतानारकीनो आऊखो काढीये तेवारे २५ अनुवसत्ता छे अने तेउकाय १ वाउकाय १ ने मनुष्यना आऊखा विना २४ सत्ता छे ॥ १५२ ॥

नरअणुपुवि (वेउवि) विणावा, केवलदुगिमीससम्म-निरयदुग।
तिगआउहीणसत्ता, सासणमीसेअअजिणाय ॥१५३॥

टीका—नरआणुपुवि (नरवेउवि) विणावा इत्यादि ॥ अत्रनरोमनुष्य वैक्रियाहारकदेवनरकप्रायोग्यप्रकृतिविनातेजस्काय-वायुकाय लक्षणमार्गणायाभवति वाइतिपदेनसर्वकर्मप्रकृत्यादिनोज्ञेय शास्त्रसंक्षेपार्थनोक्त । केवलद्विकमिश्रसम्यक्त्वमोहनरकद्विकआयु-त्रिकदेवायु नरकायु तिर्यगायु इतिप्रकृतिसप्तकविनाएकविंशति अनुवसत्ताकालभ्यते ॥ सास्वादनेमिश्रेजिननामरहिता सप्तविंशति अनुवसत्ताका लभ्यते, विजिणुवायनइयत्यादिवचनात्। एतद्द्वुभा-भ्यामपि जिननामसत्तारहिताना अथवोद्वलितजिनसत्तावताभवति ॥ १५३ ॥

टवार्थ —केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ ने विषे मिश्रमो-हनीय १ सम्यक्त्वमोहनीय नरकनीनआऊपादेवायु १ नरकायु-

विना २१ अध्रुवसत्ता छे । किहां एक नरानुपूर्विविना २० नी सत्ता छे । सास्वादन तथा मिश्र ए बे मध्ये जिननाम सत्ता नथी शेष २७ अध्रुवसत्ता छे, शेषमार्गणाए २८ अध्रुवसत्ता छे ॥ १५३ ॥

सेसासुसव्वसता, चरणापणमणुअमग्गणाठाणे । ⊛
पचविदितिनरेसु, देसोअजओअसव्वत्थ ॥ १५४ ॥

टीका—सेसासुसवसनाद्त्यादि ॥ शेषासुमार्गणासुअध्रुवसत्ता सर्वा प्राप्यन्तेइतिभाव ॥ इत्युक्त अध्रुवसत्ताद्वार साम्प्रतचारित्रद्वार-मार्गणासुदर्शयन्नाह ॥ नरनसदृत्यादिगाथा प्रथमदर्शिनास्तितथापि-प्रक्षेपत्वेनन्यस्ता यार यावतेनरगतो त्रसेयोगत्रिकेमत्यादिज्ञानचतु-ष्टये दर्शनत्रिके शुक्ललेश्यायाभव्येउपशमेक्षायिकेसंज्ञिषु आहारक-लक्षणासुमार्गणासुसप्तचरणाश्चारित्रा पचचारित्रदेशविरत्यविरतिल-क्षणा प्राप्यन्ते ॥ १५४ ॥

टबार्थ —मनुष्यनी मार्गणाए ५ चारित्र छे, सामायिक १ छेदोपस्थापनीय २ परिहारविशुद्धि ३ सूक्ष्मसंपराय ४ यथाख्यात-चारित्र ए पांच चारित्र मनुष्यमार्गणामध्ये पामीये । पंचेंद्रीति-र्यंच तथा मनुष्यमध्ये देशविरति पामीये । अविरतिसंयमसर्वमे पामीये । इहां मार्गणाये संयमयन्त्रकथी जोईलेज्यो एहनो यन्त्र पिण ग्रंथकर्त्तानो कृत छे ॥ १५४ ॥

---

* (पाठान्तरे)
सेसासुसव्वसता, नरतसजोगनाणदसेसु ।
सुक्कभविसत्तखायग, सन्नीहारेसुसगचरणा ॥

लोभेअहक्खायविणा, तेसुहुमनिणाकसायवेएसु ।
लेसपणवेयगम्मि, केवलदुगिसुद्धचरणच ॥१५५॥

टीका—लोभेअहइत्यादि ॥ लोभमार्गणायायथाख्यातचारित्र विनापञ्चभेदा तेएतपञ्चसूक्ष्मसंपरायविनाकषायत्रिके । वेदत्रिके लेश्यापञ्चकेक्षयोपशमसामायिकादिसमभेदेपुनिजकचारित्रसामायिके सामायिकछेदेछेदपरिहारेपरिहार इत्यादिज्ञेय देवादिअविरताविरहिता मार्गणासुसम्यक्त्वेपञ्चभेदा भवति । तथाकेवलद्विकेएकशुद्धयथाख्यातलक्षणचारित्रमाप्यते ॥ १५५ ॥

चरणेसुनायचरण, देवाइअजयमग्गणेअजय ।
तिरएसदेसविरइ, साहक्खायअणाहारे ॥ १५६ ॥

टीका—एकेंद्रियेविकलद्रियेदेवगतौनरकगतौस्थावरपञ्चकेमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणेत्रिके अविरतिमार्गणायाअज्ञानत्रिके अभव्यमार्गणायाएकअविरतिलक्षणमाप्यते । तिर्यग्गतौसदेसत्तिदेशविरतियुक्तौद्वौभेदौप्राप्येते । अविरतिदेशविरतचेतिसाहक्खायतियथाख्यातसहित इत्यनेनअविरति यथाख्यातचएवचारित्रभेदद्वय अनाहारकमार्गणायाभवति । तत्राऽविरतिविग्रहगतौयथाख्यात केवलसमुद्घाताऽयोगिकेवलिगुणाऽवस्थायाभवति । इत्युक्तचारित्रद्वारमार्गणासु, सांप्रतसर्वघातिद्वारदर्शयन्नाह ॥१५६॥

सम्मत्तमग्गणासु, मीसेअणथीणमिच्छविणुघाई ।
सजईयमग्गणाए, सव्वघाईअचउपयडी ॥ १५७ ॥

टीका—सम्मत्तमग्गणासु इत्यादि॥ सम्यक्त्वशुद्धयथार्थश्रद्धा-

तयासहिता या मार्गणा मत्यादिज्ञानत्रितयदेशविरतिअवधिदर्शन उपशमक्षयोपशमक्षायिकलक्षणासुमार्गणासु तथा मिश्रमार्गणासु । अणत्तिअनन्तानुबंधिचतुष्टयस्त्यानर्द्धित्रिकमिथ्यात्वविनाद्वादशसर्वघातिय बन्धेभवति । सजइयत्ति सयतिसयमसहिता या मार्गणा मन पर्यवज्ञानसामायिकादिचारित्रनिकमार्गणासुसर्वघातिन्य केवलज्ञानावरणीय केवलदर्शनावरणीयनिद्राद्विकरूपाश्चतस्र प्रकृतयो बन्धेप्राप्यतेमुक्ष्मसपरायेच केवलज्ञानाऽऽवरणीय केवलदर्शनावरणीय बन्धेप्राप्येते ॥ १५७ ॥

टबार्थ —हवे सर्वघाती प्रकृतिने बन्धमार्गणाये कहे छे । समकित सहित मार्गणा मतिज्ञानादिक तेमध्ये अनन्तानुबंधि ४ थीणद्धी तीन ३ मिथ्यात्वमोहनीय ए आठ विना १२ सर्ववातिनो बन्ध छे, सयममार्गणा मन पर्यायादिक तेहने विषे सर्वघाति च्यार प्रकृतिनो बन्ध छे । केवलज्ञानावरणी १ केवलदर्शनावरणी १ निद्रानिद्रा १ ए चार छे ॥ १५७ ॥

सेसासुसव्वघाईय, वीसकेवलदुगेनदेसेनि ।
सम्मत्तमग्गणासु, मीसेअदुवेयसासाणे ॥ १५९ ॥

टीका—सेसासुसव्वघाईय इत्यादि ॥ शेषासुमार्गणासु सर्वघातिय विंशतिप्रकृतय बन्धेभवन्ति । चउअन्धान सास्वादनस्य- मिथ्यात्वविनाएकोनविंशति सर्ववाति योवन्धेभवति इत्युक्ता सर्वघातिन्य । साम्प्रतदेशघातिनी दर्शयन्नाह ॥ नदेसेत्ति इत्यादि अत्र- डमुरुकमणि पायेनकेवलद्विकेदेशघातिय पचविंशतिप्रकृतय नद्दितिवधे तथा उदयेसत्तायानभवन्ति । सम्मत्तमग्गणासुसम्यक्त्वशुद्धतत्वप्रतीतिलक्षणतद्युक्तासुमार्गणासुप्रोक्तासु तथा मिश्रमार्ग-

टवार्थ —-मनुष्यगति १ पचेन्द्रि १ त्रसकाय १ योग ३ वेद ३ कषाय ४ चक्षुर्दर्शन १ अचक्षुदर्शन १ तेजोलेश्या १ भव्यमार्गणामे सन्नीमार्गणाये आहारकमार्गणाये पुन्यना सर्व ४२ छे ॥ १६० ॥

तिरिआउविणापउमे, हारदुगहीणकिण्हतिगअजये। अजिणाहारातिरिए, अन्नाणतिगअभव्वमिच्छेसु॥१६१

टीका—तिरियाउविणा इत्यादि । पद्मलेश्यायातिर्यगायुर्विना एकचत्वारिंशत्बंधेभवति । तया कृष्णनीलकापोतेअविरतिमार्गणाया आहारकद्विकविनाचत्वारिंशत् ४० पुण्यभेदा बंधेभवति। एतासांयस्यामित्येवत्रसाऽभावात् तद्भावनानयोक्ता।। तिरीएइति-तिर्यग्गतौअज्ञानत्रिकेअभव्यमार्गणायामिच्छेइतिमिथ्यात्वेअजिणाहारा, जिननामकर्मआहारकद्विकविनाएकोनचत्वारिंशत्पुण्यप्रकृतिर्बंधेभवति ॥ १६१ ॥

टवार्थ —-पद्मलेश्याने विषे तिर्यचायु विना ४२ पुण्यप्रकृति छे आहारक बे विना ४० पुण्यप्रकृतिनो बंध छे, कृष्णनील कापोतलेश्याये अविरतिमार्गणाने विषे ४० पुण्यना भेद छे, तिर्यंचगते जिननाम १ आहारक २ ए त्रीन विना ३० प्रकृति पुन्यनो बध छे अज्ञान ३ अभव्यने मिथ्यात्वने विषे ३९ गुणचालीस प्रकृति पुण्यनी बांधे ॥ १६१ ॥

असन्निएविएव, नाणतिगेओहिदससुक्काए । खायगमीसेसम्मे, तिरिआओयोगदुगहीणा ॥१६२॥

टीका—असन्निमार्गणायामपिएवमेवएकोनचत्वारिंशत्पुण्यभेदा-

भवति, तथा ज्ञानत्रिकेमतिश्रुतावधिलक्षणे तथा अवधिदर्शनेशुक्ल-लेश्यायाक्षायिकसम्यग्दर्शनेमीसेसम्मेइतिमिश्रशब्देनक्षायोपशमस-म्यग्दर्शनतत्रतिर्यगायु योगदुगइतिउद्योतद्विकेनहीनाएकोनचत्वा-रिंशत्पुण्यभेदा बधेलभ्यते, एतेषामेऽगनाआद्यगुणस्थानद्वयेतद्ब-धात् ॥ १६२ ॥

टबार्थ —असज्ञी तेपण ३९ गुण चालीस पुण्यप्रकृति बाधे छे। ज्ञान तिनने विषे अवधिदर्शनशुक्ललेश्याने विषे क्षायिक-समकित कहेता क्षायोपशम समकित ए तीनने विषे तिर्यचनो आऊखो तथा उद्योत १ आतप १ ए तीन विना ३९ गुण-च्यालीसनो बध छे ॥ १६२ ॥

जाइचउथावरतिगे, सुरतिगवेउविहारदुअजिणा ।
जिणजुअआयावविणा, निरएदेवेसआयावा ॥१६३॥

टीका—जाइचउथावरतिगे इत्यादि ॥ एकेंद्रियद्वींद्रियत्रींद्रिय-चतुरिंद्रियलक्षणेस्थावरत्रिकेपृथिव्यप्वनस्पतिलक्षणेमार्गणासप्तकेदेव-गतिदेवानुपूर्वदेवायुरूपदेवत्रिक वेउविदुग वैक्रियशरीर वैक्रियोपाग-रूपआहारकद्विकआहारकशरीराऽऽहारकागोपागलक्षणजिननामवि-नाद्रत्यनेनप्रकृत्यष्टकविनाचतुस्त्रिंशत्पुण्यप्रकृतीनाबधोभवति। नरके-नरकगतौ अपिदेवत्रिकवैक्रियद्विकाऽऽहारकद्विकविनाजिननामयुक्ता आतपचविनाचतुस्त्रिंशत्प्रकृतय बधेभवति। देवगतौआतपनामस-योगात्पचत्रिंशत्पुण्यभेदा बधेभवति। देवानापृथ्वीकायत्वेनभव-नात् ॥ १६३ ॥

टबार्थ —जाति ४ एकेंद्री १ बेंद्री २ तेंद्री ३ चौरेंद्री ४

तथा थावर तीन प्रथवी १ अप २ वनस्पति ३ एटली मार्गणाये देवत्रिक देवगति १ देवानुपूर्वी १ देवायु ३ वैक्रिय २ आहारक २ जिननाम विना ८ चोत्रीस पुण्यप्रकृतिनो बंध छे। तथा नरकगति मार्गणाने विषे जिननाम मेलीये अने आतप नाम काढीइ एटले ए पिण ३४ पुण्यप्रकृति बांधे, नारकी देवगते आतप भेलीये ३५ प्रकृति पुण्यनी बांधे छे, जे कारण देवता मरी प्रथविकायमध्ये जाय ते माटे आतपनो बंध छे॥१६३॥

सुरनरतिगहारदुग, विउविदुगउच्चजिणविणातीस ।
गइतसेसुहुमेदेसे, मिच्छतिगेनीयगुणपयडी॰ ॥१६४॥

टीका—सुरनरतिगहारदुगइत्यादि ॥ गइतसे, गतिनसेतेजोवायुलक्षणेमार्गणाद्वयेदेवत्रिकनरत्रिकाऽऽहारकद्विकोच्चैर्गोत्र जिननामविनात्रिंशत्पुण्यप्रकृतीनांबंधोभवति । तथासूक्ष्मसंपरायचारित्रेतथादेशविरतिमार्गणायांसास्वादनेमिश्रमार्गणायांनिजगुणा स्वस्वगुणस्थानेतत्रसूक्ष्मसंपरायेतिस्र प्रकृतय देशविरतौएकत्रिंशत्सास्वादनेअष्टत्रिंशत्मिश्रेचतुस्त्रिंशत्इतिस्वस्वगुणस्थानप्रत्यया प्रकृतय बंधेभवन्ति ॥ १६४ ॥

स्वार्थ —देवत्रिक, मनुष्यत्रिक, आहारक २ वैक्रिय २ उच्चगोत्र १ जिननाम ए १२ विना ३० प्रकृति पुण्यनी बांधे गतित्रस कहेता तेउकाय १ तथा वाउकाय मार्गणाये सूक्ष्मसंपराय १ देशविरति १ मिथ्यात्व १ सास्वादन १ मिश्र १ एटली मार्गणामध्ये ते गुणठाणानी प्रकृति बांधे देशविरति ३१ बांधे मिथ्यात्वे ३९ सास्वादने ३८ मिश्रे ३४ पुण्यनी प्रकृति बांधे छे ॥ १६४ ॥

॰ सासणमीसेसुनियगुणाइतिपाठान्तरम्

आउतिगहारहीणा, अणहारगिजोयदुगतिआउविणा
सगतीसवधति, उवसमिमणनाणतिगचरणे ॥१६५॥

टीका—आउतिगहारहीणा इत्यादि॥ तत्रदेवायु मनुष्यायु तिर्यगायु आहारकद्विकहीना सप्तत्रिंशत् पुण्यप्रकृतय अनाहारकमार्गेणवर्तंति, तथा उपसमिइतिउपशमेसम्यक्त्वे सगती सबधति । सप्तत्रिंशत्भेदा बधेभवति, द्विचत्वारिंशत्पुण्यप्रकृतीनामध्ये उद्योतातपदेवायु नरायु तिर्यगायुर्विनासप्तत्रिंशत्बधेभवति, ततोमन पर्यवज्ञानेचारित्रत्रिके सामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धौअग्रे तनगाथोक्ता प्रकृतय अपहीयतेतत्शेषाभवति इत्यनेनत्रयस्त्रिंशत् पुण्यभेदा लभ्यते ॥ १६५ ॥

टबार्थ—आउखा ३ देवनानो १ मनुष्यायु २ तिर्यचायु ३ ए ३ विना पुण्यमे तीनज छे तेमाटे आहारक २ ए पाच प्रकृति विना अनाहारक मार्गणाये शेष पुण्यप्रकृति ३७ बाधे तथा उद्योत १ आतप १ तीन शुभायु ३ ए पाच विना ३७ बाधे छे पुण्यनी उपशमसमकितीने तथा मन पर्यायज्ञानने विषे चारित्र तीनने विषे ॥ १६५ ॥

नरउरलयोयदुगवयर, आउदुगहीणसुद्धचरणमि ।
केवलदुगिसायेग, सेसावधोहपावस्स ॥ १६६ ॥

टीका—नरउरलसपोयदुगवयर इत्यादि ॥ तत्र पूर्वगाथोक्तासुमार्गणासुमन पर्यवज्ञानसामायिकादिचारित्रत्रिकलक्षणासुनरद्विकगति नरगतिनरानुपूर्वीलक्षणनरद्विक औदारिकशरीरौदारिकागोपागलक्षण औदारिकद्विक तथा उद्योतातपलक्षण उद्योतद्विक वज्र-

ऋषभनाराचसंहननआयुर्द्विकमनुष्यायु तिर्यगायुरूपप्रकृतिनिरव-त्यज्यते तदात्रयस्त्रिंशत्शेषाभेदा बंधेभवंति। शुद्ध्यश्रणमिइतिशुद्ध अकषाय चरणचारित्र शुद्धचारित्र यथाख्यातलक्षण तथा केवलद्वुगि केवलज्ञानदर्शने पुण्यप्रकृतिसप्तविनीएकासातांएवबंधेभवति। इ-त्युक्तपुण्यप्रकृतिद्वारसेसान मोइतिशेषाच बोधेमार्गणासुबंधस्वामित्वे। पुण्यप्रकृतिनि शेषाउद्धरितसर यासापापस्यसर याज्ञेया, नरकगतौपुण्य-स्य चतुस्त्रिंशत्पापस्यएकममानि उभयमीलनेजातपचोत्तरशत अ-थनरकस्यबंधेौर एकोत्तरशत नतिकमित्याह अवरणादिचतुष्क पुन्यपापयोर्मध्येउभयग्रहणात् जीवमेदेचतद्ग्रहस्यात्पचोत्तरशत-भवति। एवसर्वत्रज्ञेय तिर्यगगतौ मनुष्यगतौ पचेन्द्रिये त्रसकाये योगत्रये वेदत्रये कषायचतुष्टये मत्याद्यज्ञानत्रये अविरतौचक्षुर-चक्षुर्दर्शने कृष्णादिलेश्यात्रये भव्ये अभव्ये मिथ्यात्वेसज्ञि असज्ञि-आहारकलक्षणासु मार्गणासुद्व्यशीति पापस्य, देवगतौतेजोले-श्यायांत्रिसप्तति, जातिचतुष्टये स्थावरपचकेएकोनाशीति, मत्या-दिज्ञानत्रये अवधिदर्शनेउपशमादिसम्यक्त्वत्रिके मिश्रेचतुश्चत्वारिं-शत, मन पर्यवज्ञाने सामायिकादिचारित्रत्रये पट्त्रिंशत्, सूक्ष्म-सपरायेचतुर्दश, केवलज्ञान केवलदर्शनयथाख्यातेन, देशविरतौ-चत्वारिंशत, पद्मलेश्यायांएकोनसप्तति, शुक्ललेश्यायांएकोनसप्तति, सास्वादनेसप्तषष्टि, अनाहारकेएकोनाशीति, इतिवाच्यदृत्युक्त-पापप्रकृतिद्वारम् ॥ १६६ ॥

टबार्थ — मनुष्य २ औदारिक २ उद्योत २ वज्ररुषभ-नाराचसंघयण १ मनुष्य तथा तिर्यंचनो आऊखो एटला विना ३३ नो बंध छे शुद्धचारित्रयथाख्यात तथा केवलदुगने विषे एक सातानो बंध छे शेष पुण्यप्रकृति जे मार्गणा कही तेहथी

शेष रही जे मार्गणाना बन्धनी प्रकृति ते पापप्रकृति मार्गणाये जाणवी ते सर्वे यन्त्रकथी जोज्यो ॥ १६६ ॥

अपरियत्तापयडी, सुहमेचउदसतहाअहरकाए। केवलदुगेअभावो, सासणमीसेअजिणमिच्छा॥१६७॥

अपरियत्तापयडी इत्यादि ॥ ज्ञानावरणीयपंचकांतरायपंच-कदर्शनावरणीयचतुष्टयरूपा सूक्ष्मसंपरायेचतुर्दश, तथा यथाख्याते केवलद्विके अपरावर्त्तानबध्यते । तथा सास्वादनेमिश्रेअजिणमि-च्छाजिननाममिथ्यात्वविनासप्तविंशति अपरावर्त्तावबंधेभवति॥१६७

टबार्थ —हवे परावर्त्तमानप्रकृति कहे छे परावर्त्तमानप्र-कृति १४ छे, सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ५ अन्तराय ५ तथा यथाख्यातचारित्रे केवलज्ञाने केवलदर्शने परावर्त्तप्रकृतिनो बन्ध नथी सास्वादन गुणठाणे मिश्र गुणठाणे जिननाम तथा मिथ्यात्व विना २७ परावर्त्तमाननो बन्ध छे ॥ १६७ ॥

तिरिजाइचउसुथावरि अन्नाणअभवेअसन्निमिच्छेसु। जिणविणुनाणचउक्के, ओहिदुसेतिसम्मम्मि ॥१६८॥

टीका—तिरिजाइचउसुथावरि इत्यादि ॥ तिर्यग्गतौजाति-चतुष्के स्थावरपंचके अज्ञानत्रिके अभव्येअसंज्ञिमार्गणाया मिथ्या-त्वेविंशतिशु, जिननामविनाअष्टाविंशति बंधेभवति । नाणचउक्के ज्ञानचतुष्के मत्यादिके अवधिदर्शनेउपशमादिसम्यक्त्वत्रिके॥१६८

टबार्थ —तिर्यचगति १ जाति ४ एकेंद्रिय १ बेंद्री २ तेंद्री

३ चौरिंद्री ४ थावर ते मार्गणाये अज्ञान ३ मार्गणाये अभव्य मार्गणाये असन्नीमार्गणाये मिथ्यात्वमार्गणाये जिननाम विना २८ अपरावर्त्तमाननो बंध छे, ज्ञान ४ मार्गणाये अवधिदर्शन मार्गणाये उपशम १ क्षयोपशम २ क्षायिक ३ ए तीन समकित मार्गणाये चारित्र ३ सामायिकादि ॥ १६८ ॥

चरणतिगदेसविरए, मिच्छविणासेसएसुगुणतीस ।
अपरियत्तसेसयाओ, परावत्ताओवबधंति ॥ १६९ ॥

टीका—चरणतिग इत्यादि ॥ चारित्रत्रिके सामायिकादिलक्षणेदेशविरतौ मिथ्यात्वविनाऽष्टाविंशति अपरावर्त्तमाना बध्नंति । सेसयाइइतिशेषकासु अनुक्तमार्गणासु एकोनत्रिंशत्अपरावर्त्तमाना बध्नंति अपरियत्तिसेसाओइतिअपरावर्त्तमानत शेषा परावर्त्तमाना बंधेभवंति इतिज्ञेय ॥ अथविपाकचतुष्टयेक्षणादिलक्षण पूर्वव्याख्यातस्वरूपत्वेनमार्गणासुनिभजनाह ॥ तत्रप्रथमक्षेत्रविपाकितीरानुपूर्वीबंधस्वोदर्शयति ॥ १६९ ॥

टबार्थ—देशविरति १ एटली मार्गणाये मिथ्यात्व विना २८ परावर्त्तमानप्रकृति बांधे छे शेषमार्गणाये २९ परावर्त्तमानप्रकृति बांधे ए परावर्त्तमान कही छे, तेहथी शेष रही जे बंधनी प्रकृति ते परावर्त्तमान जाणवी ते यत्रकथी जोई लेज्यो ते यत्रकमे सर्व लाभे छे ॥ १६९ ॥

मणवयणकेवलदुगे, मणनाणेचरणछक्किचरकुम्मि ।
मीसाहारिपुवि, उदओनोदुन्निअमणेसु ॥ १७० ॥

टीका—मणवयणकेवलदुगे इत्यादि ॥ मनोयोगमार्गणाया

वचनयोगमार्गणाया केवलज्ञाने केवलदर्शने तथा मन पर्यवज्ञाने सामायिकादिदेशविरतिपर्यवेचारित्रषट्के चक्षुर्दर्शनेमिश्रेआहारकमार्गणाया पूर्वीउदयोनोऽस्तिनास्तिएतत् मार्गणासु पर्याप्तावस्थायाप्राप्यमाणत्वात्, अमणेसु असज्ञिमार्गणाया द्वित्रिद्वे तिर्यगमनुष्यरूपेआनुपूर्व्योउदयेप्राप्येते गतित्रयेएवामनस्कत्वात् ॥ १७० ॥

व्यार्थ —हवे कर्मना विपाक ४ क्षेत्रविपाक २ च्यार आनुपूर्वि वेहना उदय ६२ मार्गणाये कहे छे मनयोग १ तथा वचनयोग २ तथा केवलद्विक १ केवलदर्शन २ मन-पर्यवज्ञान १ चारित्रपट्क ६ सामायिक १ छेदोपस्थापनीय २ परिहार ३ सूक्ष्मसंपराय ४ यथाख्यात ५ देशविरति ६ चक्षुदर्शन १ मिश्रदृष्टि १ आहारक १ मार्गणाये एटली मार्गणाये आनुपूर्वीनो उदय नथी, जे कारणे आनुपूर्वीनो उदय अनरालगति वहता ते होवे, ते अनरालगतिमे ए मार्गणा न होवे, असज्ञीमार्गणाये बे आनुपूर्वीनो तिर्यचानुपूर्वी १ तथा मनुष्यानुपूर्वीनो उदय छे ॥ १७० ॥

वेएतेउतिगम्मि, सासणिपुविवितिगचचउजाई ।
गईथावरेसुएगा, सेसासुपुविचउउदओ ॥ १७१ ॥

टीका—वेएतेउ इत्यादि ॥ वेदत्रये आनुपूर्वीत्रिकउदयेभवति । तत्रपुरुषवेदे स्त्रीवेदे नरकानुपूर्व्या अनुदयेशेषास्तिस्र, नपुंसकवेदेदेवानुपूर्व्यनुदयेशेषास्तिस्र आनुपूर्व्य उदयेभवति तेउतिगइतितेज पद्मशुक्ललक्षणासुतिसृषुलेश्यासु तथा सास्वादनेचनरकानुपूर्व्या अभावे आनुपूर्वीत्रिकउदयेप्राप्यते चशब्द पूर्वपरामर्शार्थे एकेन्द्रियादिजातिचतुष्टये स्थावरपचकेपुकाआनुपूर्वी-

उदयेभवति । तत्रजातिचतुष्के स्थावरपचके एकातिर्यगानुपूर्वी प्राप्यते । गतिचतुष्टयेतुनरकेनरकानुपूर्वी देवेदेवानुपूर्वी मनुष्ये मनुष्यानुपूर्वी तिरश्चितिर्यगानुपूर्वी उदयेभवन्ति, शेषासु मार्गणासु पुनिचउउदओपूर्व्ये श्चतस्र अपिउदयेप्राप्यते ॥ इत्युक्तक्षेत्रविपाकीद्वार ॥ १७१ ॥ अथभवविपाकिआयुश्चतुष्टयमार्गणासुदर्शयन्नाह ॥

टवार्थ —तीन वेदमध्ये तीन आनुपूर्विनो उदय छे, तिहा पुरुषवेदे स्त्रीवेदे नरकानुपूर्विनो उदय नथी, नपुसकवेदे देवानुपूर्विनो उदय नथी तेजोलेश्या १ पद्मलेश्याने विषे शुक्ललेश्याने विषे नरकानुपूर्वि विना तीन आनुपूर्विनो उदय छे सास्वादनमध्ये पण नरकानुपूर्वि विना तीन आनुपूर्विनो उदय छे जाति ४ एकेन्द्रियादी ४ तथा गति ४ मध्ये थावर पाच मध्ये एक आनुपूर्विनो उदय छे च्यार गतिमध्ये पोतानी गति नेटामनो आनुपूर्विनो उदय जाणवो बीजा सर्वने तिर्यचानुपूर्विनो उदय छे शेप मार्गणाने विषे आनुपूर्वि ४ नो उदय छे ॥ १७१ ॥

मणवयणेचउआउ, मणपज्जवकेवलेयपुणचरणे ।
मणुआउदेसिसतिरि, सेसापुव्विवआउआ ॥१७२॥

टीका—मणवयणे इत्यादि ॥ मनोयोगे वचनयोगे आयुश्चतुष्टयउदयेभवति, चतुर्गतिषुमनोवाग्योगस्यसद्भावात् । तथामन पर्यवज्ञाने केवलद्विके चारित्रपचके मणुआउइति एकमनुष्यायु उदयेभवति । देसीनामदेशविरतौसतिरित्तिदेवमनुजायु तिर्यगायुर्युक्त आयुर्द्वयउदयेप्राप्यते, शेषासुमार्गणासुएकपचाशल्लक्षणासु

पुर्विन, आनुपूर्वीवनूआयुर्वनूउदयेवक्त य इत्युक्तभवविपाकिद्वार ॥
॥ १७२ ॥

टबार्थ —मनोयोग तथा वचनयोगमध्ये च्यार आऊखानो उदय छे मन पर्यवज्ञानमध्ये केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ चारित्र पाचने विषे एक मनुष्यायुनो उदय छे देशविरतिमध्ये मनुष्यायु १ तथा तिर्यंचायुनो उदय छे शेष मार्गणाये जिम आनुपूर्विनो उदय छे, तिमहीज आऊखानो उदय जाणवो॥१७१

जिअपुग्गलाविवागा, पयडीओउदयसभवानेया ।
भगाणचपमाण, नेयवसभवपप्प ॥ १७३ ॥

टीका—जिअपुग्गलाविवागा इत्यादि ॥ जीवविपाका अष्टसप्ततिपुद्गलविपाका षट्त्रिंशत्प्रकृतय उदयसभवाउदयस्वामित्वसभवाज्ञेया सात्रसुखावत्रोवार्थलिरयते तत्रजीवविपाकेनारकेएको-नपष्टिस्तिर्यक्षिनिसप्तति इत्यादि पुद्गलविपाके अष्टादश तिरश्चिनि-सप्तति, देवगतौअष्टादश मनुष्येएकत्रिंशत् इत्यादि योज्य, उदय-स्वामित्वमोचन ज्ञेयअयमार्गणासुकर्माष्टकभगानूदर्शयन्नाह ॥ भगा-णचभगकानाप्रमाणज्ञान यसभवप्राप्ययत्रमार्गणायायेभगका सभ वति तेयथायोगवाच्या ॥ १७३ ॥

टबार्थ —जीवविपाकि तथा पुद्गलविपाकी प्रकृति सर्व उदयीयी सभव घटे तिम जाणवो जीवविपाकी ७८ छे, नारकीने ५२ तिर्यंचमध्ये ७३ मनुष्यमध्ये ६९ देवनामध्ये इम सर्वत्र जोडी लेज्यो, १ पुद्गलविपाकी नारकीने १८ तिर्यंचने ३२ मनुष्यने ३१ देवताने १८ इत्यादि यथासभव जोई लेवो हवे

वासठीमार्गणाये भगानो प्रमाण जिहा जिम सभवे तिहा ते कहेवा सवेधादिक ग्रथथी विस्तारे जोई कहेवा ॥ १७३ ॥

नाणतरायदोदोभगा, इकारदसणावरणे । गोएसगवेयणीए, अडआउम्मिअअडवीसा ॥१७४॥

टीका—नाणतरायदोदोभगा इत्यादि ॥ ज्ञानावरणीयेद्वौ-भगौपचानाबन्ध पचानाउदय पचानामेवसत्ताइतिप्रथम, सूक्ष्म-सपराययावत् पचानाउदय पचानासत्ताइतिद्वितीय उपशातमोह-क्षीणमोहयावत्प्राप्यते एवमतरायस्यापिद्वौभगौ प्रथमभगोअभ पा-नाअनाद्यनत भयाना अनादिसातउपशातमोहात् पतिना-नामादिसान जवन्यन अतमुहूर्तउत्कर्षत देशोनपुद्गलपरावर्त-द्वितीयभग सादिसान्तोजवन्यतएकसमये उपशातेगतस्य समयातरे आयु क्षयात् पचविधनधकत्वेनभवनात्उत्कर्षत अतर्मुहूर्तइति-दर्शनावरणीयस्यनवभगा तदर्थयन्नाह सप्ततिभाष्यकार नवस्सय-सतस्सयपनइठाणाणितिन्नितुल्लाणि उदयठाणाणिदुवेचउपणगदसनाव-रणे ॥ १ ॥ व्यारयापिश्रीमलयगिरिवाक्यात् दर्शनावरणीयाख्ये-द्वितीयकर्मणिनधसत्ताया परस्परतुल्यानित्रीणिप्रकृतिस्थानानि-तद्यथानवपट्चतस्र तत्रसर्वप्रकृतिसमुदायोनवस्त्यानर्द्धित्रिकहीना पट्एताश्चप्रनिद्राप्रचलाहीनाश्चतस्र तत्रनवप्रकृत्यात्मकनधस्थान-मिथ्यात्वेसास्वादनेतत्रमिथ्यात्वेअभव्यानाअनाद्यपर्यवसान कदाचि-दपि यवच्छेदाभावात्, भ यानधिकृत्यानादिसपर्यवसान कालान्तरे-व्यवछेदसभवात् सम्यक्त्वात् प्रतिपत्यमिथ्यात्वगताना सादिस-पर्यवसानतत्रजवन्यतोअतर्मुहूर्तकालयावत्उत्कर्षत अपार्द्धपुद्गल-परावर्त्तषट्प्रकृत्यात्मक बधस्थानसम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्थानकादार-

म्यापूर्वकरणसप्रथमभागयावत् तद्यजघ यतोअंतर्मुहूर्तकालउत्कर्षतो-
द्वेषट्षष्टिसागराणासम्यक्त्वस्यापातरालेसम्यग्मिथ्यात्वातरितस्यैना-
धन्तकालतयास्थानसभवात्तत ऊर्द्ध्वतुकश्चित्क्षपकश्रेणिमतिपद्यते-
कश्चित्पुनर्मिथ्यात्वमिथ्यात्वेचप्रतिपन्नेसतिअवश्यनवविधोबध चतु
प्रकृत्यात्मकतुच स्थानमपूर्वकरणाद्वितीयभागादारभ्यसूक्ष्मसपरायया-
वत्जघन्येनकसमयउत्कर्षेत अन्तर्मुहूर्तएकसमययावत्कथमाप्यते-
इतिचेत्उच्यते । उपशमश्रेण्यामपूर्वकरणस्यद्वितीयभाग प्रथम-
समयेचतुर्विधबधमारभतेअनतरसमयेकश्चित्कालकरोतिकालचकृत्वा-
दिवगत सन्अविरतोभवति, अविरतस्त्वेचषड्विधोबधइत्येकसाम-
यिकीचतुर्विधस्याऽवस्थिति अतर्मुहूर्ततुगुणस्थानक्रमेणज्ञेय ।
तथानवप्रकृत्यात्मक सत्तास्थानदर्शनावरणस्यकालमधिकृत्यद्विधा-
अनाद्यपर्यवसित अभ यानां । अनादिसपर्यवसित भ याना,
सादिपर्यवसानतुनभवति, नवप्रकृत्यात्मकसत्तास्थानव्यवच्छेदोहि-
क्षपकश्रेण्यामभवति, नचक्षपकश्रेणित प्रतिपातोभवति, एतच्चस-
त्तास्थानमुपशमश्रेणिमधिकृत्योपशातमोहगुणस्थानकयावदवाप्यते,
क्षपकश्रेणिमधिकृत्यपुनरनिवृत्तिबादरसपरायगुणस्थानकस्य प्रथम-
भागतयाषट्प्रकृत्यात्मकसत्तास्थान जघन्येनोत्कर्षेणचातर्मुहूर्तप्रमा-
णतश्चानिवृत्तिबादरसपरायगुणस्थानकस्यद्वितीयभागादारभ्यक्षीणमो-
हगुणस्थानकस्यद्विचरमसमययावत् अवसेय, चतु प्रकृत्यात्मकत्वे-
कसामायिकक्षीणकषायचरमसमयभावित्वादितिउदयस्थानेपुनर्द्वे भव-
त । तद्यथाचतस्र पचचतत्र चतस्रश्चक्षुर्दर्शनावरणाचक्षुर्दर्शनाव-
रणावधिदर्शनावरणकेवलदर्शनावरणरूपा एतासाचउदयोध्रुवोदय
इतिएकप्रकृतिस्थानएतासुचपचसुमध्येनिद्रादीना पचानाप्रकृती-
नामन्यादयतमस्याप्रकृतेप्रक्षिप्तायापचविध उदय नहिनिद्राद्धि-
निरूपसमकालउदयेभवति एकसमयएकजीवस्यएकाएवनिद्राउदये-

भवति ॥ तदेवमुक्तानिदर्शनावरणीयस्यबन्धोदयसत्तास्थानानि । भगाइक्कारदसणावरणे, दर्शनावरणीयेकर्मणिएकादशभगाभवतितत्प्रतिपादिकागाथामाह ॥ बीयावरणेनवबन्धएसुचउपचउदयनवसता, चउबन्धे चेवचउबन्धुदयेचलसाय ॥ १ ॥ उवरयबन्धचउपणनवसचउरुदयछच्चउसता ॥ द्वितीयावरणेदर्शनावरणेनवबन्धकेषुमिथ्यादृष्टिसास्वादनेषुचउपचउदयत्तिउदयश्चतुर्विध पचविधोवातत्रचतुर्विधश्चक्षुर्दर्शनावरणावधिदर्शनावरणकेवलदर्शनावरणरूप सएवनिद्रापचसत्कान्यतमप्रकृतिप्रक्षेपात्पचविध सत्तामधिकृत्यपुन प्रकृतिस्थाननवनवप्रकृत्यात्मकमेवनवविधबन्धकेषुद्वौविकल्पौदर्शितौतद्यथानवविधोबन्ध चतुर्विध उदय नवविधसत्ताएवविकल्पोनिद्रोदयाभावेनिद्रोदयेतुनवविधोबन्ध पचविध उदय नवविधासत्ताछच्चउबन्धेचेवति, षड्विधबन्धेचचतुर्विधबन्धेचएवपूर्वोक्तप्रकारेणउदयसत्तास्थानानिवेदित यानिइदमुक्तभवतियेषड्विधबन्धका सम्यग्मिथ्यादृष्ट्यविरतिसम्यग्दृष्टिदेशविरतिप्रमत्ताप्रमत्ता कियत्कालमपूर्वकरणाश्चतेषाचतुर्विध पचविधोवाउदय नवविधासत्ताएतेनद्वौविकल्पौदर्शितौतद्यथाषड्विध बन्धश्चतुर्विध उदयोनवविधासत्ताअथवाषड्विधोबन्ध पचविधोदय नवविधासत्ता एतौचद्वौविकल्पौक्षपकमुक्त्वा ऽ न्यत्रसर्वत्रापिप्राप्यतेक्षपकेत्वेकएवविकल्पस्तद्यथाषड्विधोबन्ध चतुर्विध उदय नवविधासत्ताक्षपकस्यहिअत्यतविशुद्धत्वेननिद्राप्रचलयोर्नोदय सभवति तदुक्तजिनवल्लभसूरिसत्ककर्मग्रथे, निद्दादुगस्सउदउखीणमखवगेपरिच्चज्ज तथाचतुर्विधबन्धकेतुकियत्कालमपूर्वकरणमनिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायेषुचोपशमश्रेणिप्रतीत्यचतुर्विधबन्ध चतुर्विध पचविधोवाउदय नवविधासत्ताक्षपकश्रेणिमधिकृत्यपुनरुदयश्चतुर्विध एतत्कारणमनन्तरमेवोक्तकेचित्पुन क्षपकक्षीणमोहेष्वपिनिद्राप्रचलयोरुदयमिच्छन्तितत्कर्म-

प्रकृत्यादिग्रंथ सहनिरुद्धयतेइत्युपेक्षते, यावच्चक्षपकश्रेण्यामपिस्त्या-
र्नद्धिनिकनक्षीयते तावत्सत्तानवविधा स्त्यानर्द्धिनिकेतुक्षीणेषड्विधा-
तथाचाहचउवउदयेछस्सायत्ति, चतुर्विधेबंधेचतुर्विध उदय अनिवृ-
त्तिबादरसंख्येयेभोगेगतिपरत स्त्यानर्द्धिनिकेक्षीणेषड्विधासत्ताएपच-
विकल्पस्तावत्प्राप्यतेयावत्सूक्ष्मसंपरायाद्धायाश्चरमसमयपरतस्तुनप्रा-
प्यतेबंधाऽभावात्तदेवंचतुर्विधबंधकस्यत्रयोविकल्पास्तद्यथाचतुर्विधो-
बंध चतुर्विध उदय नवविधासत्ताएपउपशमश्रेण्या क्षपकश्रेण्या
वायावत्स्त्यानर्द्धिनिकनक्षीयतेचतुर्विधोबंध पचविध उदय नव-
विधासत्ताएपउपशमश्रेण्या क्षपकश्रेण्यातुपचविधोदयस्यासंभवात्
तथाचतुर्विध बंध चतुर्विध उदय षड्विधासत्ताएषविकल्प
क्षपकश्रेण्यास्त्यानर्द्धिनिकक्षयानन्तरऽवसेय उत्तरपदबंधेइत्यादिउपन्ते-
ष्वबंधविच्छिन्नेबंधेचतुर्विध पचविधोवाउदय नवविधासत्ताएतौद्वौ-
विकल्पौउपशांतमोहगुणस्थानकेप्राप्येते उपशमश्रेण्याहिनिद्राप्रच-
लयोरुदय संभवतिस्त्यानर्द्धिनिकचनक्षयमुपगच्छति, ततश्चतुर्विध
पचविधउदयोनवविधासत्ताप्राप्यतेतथाचतुर्विध उदय षड्विधा-
सत्ताएपविकल्प क्षीणकषायद्विचरमसमयादर्वागेवप्राप्यते । तथा-
चतुर्विध उदय चतुर्विधासत्ताएष विकल्प क्षीणकषायस्यचरम-
समयेभवतिनिद्राद्विकस्यसत्तायाक्षपकत्वात् तदेवंदर्शनावरणेसर्वसं-
ख्ययाएकादशविकल्पा, यदिपुन क्षपकक्षीणकषायेष्वपिनिद्राप्र-
चलयोरुदयइष्यते तर्हिचतुर्विधोबंध पचविध उदय षड्विधा-
सत्ताबंधाभावेपचविध उदय षड्विधासत्ताइत्येतौद्वाविकल्पौअधि-
कौप्राप्येते इतित्रयोदशजात या सांप्रतवेदनायुर्गोत्रेषु संवेधविक-
ल्पोपदर्शनार्थमाहगोएसमनेयणीये । तथागोत्रेसामान्येनएकबंध-
स्थानतथाउच्चैर्गोत्रनीचैर्गोत्रवापरस्परविरुद्धत्वेनयुगपद्बंधाऽभावात् उ-
दयस्थानमप्येकतदपिद्वयोरप्यनयो परस्परविरुद्धत्वेनयुगपद्द्वयोरुदयाऽ-

भावात्द्वेसत्तास्थाने, द्वेएकचउच्चैर्नीचैर्गोत्रेसमुदितेद्वेतेजस्कायिक-
वायुकायिकयधायाउच्चैर्गोत्रसत्तायाउद्धलितेएकअथवाअयोगिद्विचरम-
समयेनीचैर्गोत्रसत्तायाक्षीणायाएकउच्चैर्गोत्र, समतिसंवेधउच्यतेनी-
चैर्गोत्रस्यबंध नीचैर्गोत्रस्योदय नीचर्गोत्रेसत्ताएषविकल्प तेज-
स्कायिकवायुकायिकेषुलभ्यते, तद्भवाद्वृत्तेषुवाशेषजीवेष्वेकाद्वि-
त्रिचतुस्तिर्यक्पचेंद्रियेषुकियत्कालनीचैर्गोत्रस्यबंध नीचैर्गोत्रस्यो-
दय उच्चैर्नीचगोत्रेसत्ताअथवानीचैर्गोत्रस्यबंध उच्चैर्गोत्रस्योदय
उच्चनीचैर्गोत्रेसत्ताएतौचद्वौविकल्पो मिथ्यादृष्टिषुसास्वादनेषुवानस-
भ्यग्मिथ्यादृष्ट्यादिषुतेषानीचैर्गोत्रबंधाभावात्ऽन्यथाउच्चैर्गोत्रस्यबंध
नीचैर्गोत्रस्योदय उभयस्मिन्सत्ताएषविकल्प मिथ्यादृष्टिगुणस्था-
नकादारभ्यदेशविरतिगुणस्थानकयावत्प्राप्यतेनपरत । परतोनी-
चैर्गोत्रस्योदयाऽभावात् तथा उच्चैर्गोत्रस्यबंध उच्चनीचगोत्रेसत्ताएष
विकल्पोमिथ्यात्वादारभ्यसूक्ष्मसंपरायगुणस्थानयावत् नपरत परतो-
बंधाऽभावात्बंधाभावेतुउच्चैर्गोत्रस्योदय उच्चनीचगोत्रेसत्ताएषविक-
कल्प उपशांतमोहगुणस्थानकादारभ्यायोगिकेवलिद्विचरमसमय
यावदवसेय उच्चैर्गोत्रस्योदय उच्चैर्गोत्रेसत्ताएषविकल्प अयोगि-
केवलिचरमसमयेभवतितदेवमेतेगोत्रस्यसर्वसंख्ययासप्तभंगा ॥ अ-
थवेदनीयस्याष्टौभंगा तत्रवेदनीयस्यसामान्येनैकबंधस्थानतद्यथासा-
तमसातवाद्वयो परस्परविरुद्धत्वेनयुगपत्बंधाऽभावात् उदयस्थानम-
प्येकतद्यथासातमसातवाद्वयोर्युगपदुदयाऽभावात्। सत्तास्थानेद्वेतद्य-
थाद्वेएकचयावत् अयोगिद्विचरमसमयाद्वर्वाक द्वेएवसत्तेतत चरम-
समयेएकस्या अन्यतरस्याक्षीणायाएकइति संप्रतिसंवेध उच्यतेअ-
सातस्यबंध असातस्यउदय साते़ऽसातेसत्ताअथवाअसातस्यबंध
सातस्योदय सातासातेसतीएतौद्वौविकल्पौमिथ्यादृष्टिगुणस्थानका-
दप्रमत्तगुणस्थानकयावत्प्राप्यतेनपरत परत असातस्यबं-

घाऽभावात् तथा सातस्यैव असातस्योदय सातासातेसती अथवा सातस्यैव सातस्योदय सातासातेसतीएतौद्वौविकल्पौमिथ्यात्वादारभ्यसयोगिकेवलिचरमसमययावत्प्राप्येतेनपरत एतेचत्रभंगा, अथच-भंगा, असातस्योदय सातासातेसतीसातस्योदय साताऽसातेसतीएतौद्वौविकल्पौअयोगिद्विचरमसमययावत्। तथाअसातस्यउदय असातस्यसत्ताएतत्सुकुमालादीनामपिअयोगिचरमसमयेभवति । अथवा सातस्योदय सातस्यसत्ताएषविकल्प तीर्थंकरादीनाअयोगिचरमसमये एतौद्वौविकल्पौअयोगिचरमसमये एकमेवसमयभवति,सर्वे सर्वे यथावेदनीयस्याष्टौभंगास्तथाआयुषिसामान्येनएकत्रस्थानउदयस्थानमप्येक सत्तास्थानेद्वेतथ्याद्वेएकचत्वारिंशचतुर्णाम यतममूपावदन्यनरपरभवायुर्नबध्यते परभवायुषिबद्धेयावदन्यत परभवेनो पद्यतेतावद्द्वेसती-समनिसनेत उच्यते तत्रायुष्यस्मित्र अबन्धावस्थायापरभवायुर्बन्धकालात् पूर्वावस्थापरभवायुर्बन्धकालावस्थापरभवायुर्बंधोत्तरकालावस्थाघतनत्तैरयिकस्यपरभवायुर्बंधकालात् पूर्वंनरकायुष उदयोनरकायुष सत्ताएषविकल्पआद्येषुचतुर्षुगुणस्थानकेषुशेषगुणस्थानकस्य नरकेष्वसंभवात् परभवायुर्बन्धकालेतिर्यगायुषोबन्धोनरकायुषउदयोनारकतिर्यगायुष सत्ताएषविकल्पोमिथ्यादृष्टिसास्वादनयोर्द्वयोरेवाद्ययोर्गुणस्थानकयोर्भवति । अन्यत्रतिर्यगायुषोबन्धासंभवात् । अथवा मनुष्यायुषोबन्धोनारकायुष उदय नारकमनुष्यायुष सत्ताएषविकल्प मिथ्यात्वसास्वादनाऽविरतिसम्यग्दृष्टिषुबन्धोत्तरकालनरकायुष उदय नारकतिर्यगायुष सत्ताएषविकल्प आद्येषुचतुर्ष्वपिगुणस्थानकेषुतिर्यगायुर्बन्धानन्तरकस्यापिसम्यक्त्वे सम्यगमिथ्यात्वेवागमनात् । अथवा नारकायुष उदय मनुष्यनारकायुष सत्ताइह देवानारकायुर्भवप्रत्ययादेवनबध्नाति तत्रोत्पत्त्यभावात् ॥ यदुक्तं ॥ देवानेरईयादेनेसुनारकेसुविभउववज्जति । अनन्तप्रत्ययविकल्पाभा-

वात् सर्वसख्ययापचैत्रविकल्पाभवति । एवदेवानामपिपचविकल्पा तद्यथादेवायुपउदय देवायुप सत्ता इत्यादि ॥ तिर्यगायुप उदय तिर्यगायुप सत्ताएपविकल्प आद्येपुपचसुगुणस्थानकेपुशेषगुणस्थानकस्य निर्यगुअसभवात्एपविकल्प परभवायुर्बधकालेतुनारकायुप बध तिर्यगायुप उदय नारकतिर्यगायुप सत्ताएपविकल्प मिथ्यादृष्टेरेवतिर्यगायुप बध तिर्यगायुप उदय तिर्यग्तिर्यग्आयुप सत्ता ॥ एप विकल्प मिथ्यात्वसास्वादनस्य अथवा मनुष्यायुप बध तिर्यगायुपउदय मनुष्यतिर्यगायुप सत्ताएपविकल्प मिथ्यादृष्टे सास्वादनस्यवासम्यग्दृष्टेर्देशविरतस्यातिरश्च देवायुपएवबधात्, अथवा देवायुप बधस्तिर्यगायुप उदय देवतिर्यगायुप सत्ताएपविकल्पोमिथ्यादृष्टे सास्वादनस्यअविरतसम्यग्दृष्टे देशविरतस्यवानसम्यग्मिथ्यादृष्टे तस्यायुर्बधाभावात् ॥ बधानतरतिर्यगायुप उदय नारकतिर्यग्सत्ता इति प्रथम । तिर्यगायुप उदयस्तिर्यग्तिर्यग्सत्ता इतिद्वितीय । तिर्यगायुप उदय मनुष्यतिर्यगायुप सत्ता अथवा तिर्यगायुप उदय देवतिर्यगायुप सत्ताएपविकल्प प्रथममिथ्यात्वादिषु आयुर्बधकत्वानत परगुणस्थानकारोहवता पचमगुणस्थानकयावत्भवति, सर्वसख्ययातिरश्चानवविकल्पाश्चनरसुगतिपु तिरश्चामुत्पादसभवात । तथा मनुष्यायुपउदय मनुष्यायुप सत्ताएपविकल्प अयोगिकेवलिनयावत् तथा नरकायुपोबध मनुष्यायुप उदय नारकमनुष्यायु सत्ताएपविकल्प मिथ्यादृष्टेर्भवति । तथा तिर्यगायुपोबध मनुष्यायुप उदय स्तिर्यग्मनुष्यायुप सत्ताएपविकल्प मिथ्यादृष्टे सास्वादनस्य वा तथा मनुष्यायुप बधोमनुष्यायुप उदय मनुष्यमनुष्यायुप सत्ताएप विकल्प मिथ्यादृष्टे सास्वादनस्यवादेवायुप बध मनुष्यायुप उदय देवमनुष्यायुप सत्ताएपविकल्प अप्रमत्तगुणस्थानकयावत् एतेचत्वारोविकल्पा

परभवायुर्बंधकाले नवेतु यवच्छिंनमनुष्यायुपउदयोनारकमनुष्यसत्ता-मनुष्यायुप उदय निर्यगमनुष्यसत्तामनुष्यायुप उदय मनुष्य-मनुष्यायुप सत्ताएतेत्रयोविकल्पा अप्रमत्तगुणस्थानयावत् । आ-युर्बंधाननरगुणस्थानारोहात् मनुष्यायुप उदय देवमनुष्यायुप सत्ताएपविकल्प उपशांतमोहयावत्प्राप्यते, देवायुपिबद्धेष्युपशम-श्रेण्यारोहसभवात सर्वसरययामनुष्याणा नवभगास्तदेवआयुप सर्वसरययाअष्टविंशतिभगा ॥ इत्येवगाथायासुभगका सप्तनिकातो-ऽवसेया ॥ १७४ ॥

टबार्थ—ज्ञानावरणीना बे भागा छे अतरायना बे भागा छे दर्शनावरणीना ११ भागा छे गोत्रना ७ भागा छे वे दनीकर्मना ८ भागा छे आउखा कर्मना २८ भागा छे हवे सर्व कर्मना भागा मार्गणाये कहे छे ॥ १७४ ॥

नाणतरायतिगयोग, भगोसवासुमग्गणासुत्र (सेढि-यासुदुग) ।
केवलदुगेअभावो, वेयणसताअहरकाए ॥१७५॥

टीका—अथज्ञानावरणीयातरायभगान्मार्गणासुदर्शयन्नाह ॥ नाणतरायतिगयोगइत्यादि । ज्ञानावरणीयस्यतथाअतरायस्यत्रिक-संयोगज भग पचविधबध पचविधउदय पचसत्तालक्षण सर्वा-सुमार्गणासुप्राप्यते, तथासेढिया श्रेणि उपशमक्षपकउक्षणानत्पर्यंत उपशांतमोहक्षीणमोहगुणस्थानकपर्यंतयामार्गणामनुष्यगति १ प-चेंद्रियजाति १ त्रसकाय १ योगात्रिक ३ भयादि ज्ञानचतुष्टय-चक्षुरादिदर्शनत्रिकशुक्लछेदपाभव्यउपशमसम्यक्त्वक्षायिकसम्यक्त्व-सज्ञिआहारकलक्षणाएकोनविंशतिमार्गणासु द्विगतिज्ञानावरणातराय-

स्यद्वौभगौप्राप्येते । तथाकेवलद्विके केवलज्ञान केवलदर्शने ज्ञानावरणातरायस्यभगानभवति, यथाख्यातेवेदनउदय सतासत्ता इत्यनेनपचविधउदय पचविधसत्तालक्षण एकएवभग प्राप्यते, भगभावनागुणस्थानक्रमतोज्ञेया ॥ १७५ ॥ अथदर्शनावरणीयकर्मण भगान्मार्गणासुदर्शयन्नाह ॥

टवार्थ —ज्ञानावरणीय तथा अतरायकर्मनो पाचनो बध, पाचनो उदयनी सत्ता एनिकसयोगी एकभगो सर्वमार्गणाने विषे, केवलज्ञान १ केवलदर्शनने विषे ज्ञानावरणीय अतरायनो भग नथी, यथाख्यातचारित्रमध्ये ज्ञानावरणीय तथा अतराय ए बे कर्मनो पाचनो उदय पाचनी सत्तानो एक भागो छे ॥१७५॥

नाणचउओहिदसे, खायगसम्मेयदसणावरणा ।
नवभगपढमदुविणा, वेयकसाएसुसगभगा ॥१७६॥

टीका—नाणचउइत्यादि ॥ ज्ञानचतुष्टयेमत्यादिलक्षणेअवधिदर्शनेक्षायिकेसम्यक्त्वेदर्शनावरणीयस्यनवभगा प्राप्यते, प्रथमेद्वेनवविधबधप्रत्ययेतेमिथ्यात्वसास्वादनगुणस्थानकेसभवात् । एतासुमार्गणासुतदसभवात्नभवति । पदविधबधत उपरिसर्वेभवति । तथावेदत्रिकेकषायचतुष्टयेसप्तभगा बन्धोपरताभगा चत्वारोनभवतितेचउपशातमोहेक्षीणमोहेभवतितयोश्चतत्राभावात्॥१७६॥

टवार्थ —ज्ञान च्यार मति, श्रुत, अवधि, मन पर्याय, अवधिदर्शने क्षायिकसमकिते ए मार्गणाये दर्शनावरणियकर्मना नव भगा पामीये । पहेला नव बध पाच उदय नव सत्ता १ तथा नव बध च्यार उदय नव सत्ता ए बे भागा विना नव भगा पामीये, वेद ३ कषाय ४ ए सात मार्गणाये सात भागा छे, अबधना च्यार भगा नथी ॥ १७६ ॥

सामाइयछेएपण, परिहारेदुन्निकेवलेनत्थि ।
उवसमिछगहस्साए, चउसुहमेतिन्निदुगदेसे॥१७७॥

टीका—सामाइयछेएपण इत्यादि । सामायिकचारित्रेच्छेदोपस्थापनीयचारित्रेपञ्चविधोबन्ध प्रत्ययोद्वौचतुर्विधबन्ध प्रत्ययाश्रय एवंपंचभंगा प्राप्यते । तथापरिहारविशुद्धौपञ्चविधबन्धसभवोद्वौकेवलद्विकेनस्त दर्शनावरणीयभंगा उवसमिछग इतिउपशमसम्यग्दर्शनेषद्भंगास्तत्रद्वौपडविधबन्धसभवौद्वौचतुर्विधबन्धसभवोद्वौअबन्धप्रत्ययौउपशातमोहगुणस्थानसभवौएवंषड्भंगा यथाख्यानेचत्वारोभंगा अबन्धसभवा, सूक्ष्मसपरायेचतुर्विधबन्धप्रत्ययाश्रय दुगदेसे देशविरतौपड्विधबन्धसभवौद्वौ ॥ १७७ ॥

टबार्थ —सामायिक १ छेदोपस्थापनीयने विषे पाच भागा छे । छविधबन्धना २ च्यारविधबन्धना २ च्यारविधबंध च्यारनो उदय छनी सत्ताए एक एवं पाच भंगा छे, परिहारविशुद्धि ने दर्शनावरणीयना २ भंगा छे, छनो बंध पाचनो उदय नवनी सत्ता तथा छनो बंध च्यारनो उदय छनी सत्ता ए २ भंगा छे, केवल २ ने विषे दर्शनावरणीयनो भागो नथी, उपशमसमकितमध्ये ६ भंगा छे, छबन्धना च्यारबन्धना २ इग्यारमा अबधना २ एवं यथाख्यातचारित्रे अबन्धना च्यार भंग छै। सूक्ष्मसंपरायना तीन भंगा छे २ उपशमना १ क्षायिकनो देशविरतिमध्ये छविध बंधना २ भागा छे ॥ १७७ ॥

वेयगेमीसेपत्र, कायपणजाइचउअसन्निसु ।
मिच्छेसासाणेपुण, अभविनवबंधगादुन्नि ॥१७८॥

टीका—वेयगेमीसेएवइत्यादि ॥ अनडमरुकमणिन्यायेनेंद्रि-कपदअनुवर्त्तनीयवेदकसम्यक्त्वेमिश्रेदर्शएवदेशविरतिनिवत्पद्दविकबन्ध-सभवांद्वौभगो कायपणत्ति पृथिव्यादिकायपचके एकेंद्रियादिजाति-चतुष्टये असंज्ञिमार्गणायामिथ्यात्वेसारवादनेअभव्येनवविधबधसभ-वौद्वौभगौशेपगुणस्थानकानातनाऽसभवात् ॥ १७८ ॥

टवार्थ—वेदकसमकितमिश्रने एव छ बधना २ भागा छे। अज्ञान ३ लेश्या ५ ने विषे अनाहारकमार्गणाये देवनीगति १ नरकगति, तिर्यचगति, अविरतिमार्गणाये च्यार भगा छे, नव बधना २ छे, शेपमार्गणाये सर्व कहेना अगीयार भागा छे, दर्शनावरणीयना ॥ १७८ ॥

नवछवधाभगा, तिन्निअन्नाणपचलेसासु ।
अणहारतिगइअजये, चउरोसेसासुसव्वेवि ॥ १७९ ॥

टीका—नवछनवाभगाइत्यादि ॥ तिन्निअन्नाणत्तिअज्ञानत्रये-लेश्यापचकेकृष्णादिकेअनाहारकेनरकतिर्यग्देवगतौ अविरतिमार्ग-णाया नवविधबधसभवौद्वौ पड्विधबधसभवौद्वौ एवचत्वारोभगा, शेषानतत्प्रत्ययगुणस्थानाऽभावात् । सेसासुइतिशेषासुमनुष्यगति पचेंद्रियत्रसकाययोगनिकचक्षुरचक्षुर्दर्शनेशुक्ललेश्यायाम ये संज्ञिमार्ग-णायाआहारकेदर्शनावरणीयस्यसर्वेऽपिभगाएकादशअपिभगा प्राप्यते ॥ इत्युक्तादर्शनावरणीयभगा ॥ १७८ ॥ अथवेदनीयभगान् मार्गणासुदर्शयन्नाह ॥

वेयणीएनरपणतस, खायगअणहारगेसुअडभंगा ।
केवलदुगिहरकाए, छसुहसेदुसेसिचउभगा ॥१७९॥

टीका—वेयणीएनरपणनस इत्यादि ॥ वेदनीयस्यभगा मनुष्यगतौपचेन्द्रिये त्रसकाये क्षायिकसम्यग्दर्शनेअनाहारकेअष्टौ-भगा प्राप्यते । केवलद्विकेयथाख्यानचारित्रेपट भगास्तनद्वौभगौ-सातात्रसभवौचत्वारोभगा अन्यप्रत्यया एवंमसूक्ष्मसूक्ष्मसप-रायेसातात्रसभवौद्वाभगौ सेसितिशेषासुगतिनिकद्रियचतुष्टयकाय-पचकयोगनिकवेदनिकमत्यादिज्ञानचतुष्टय अज्ञाननिकसयमपच-कदर्शननिकलेश्यापन्कभ यअभ यक्षायिकवर्जसम्यक्त्वपचकसज्ञयस-ज्ञिद्विकाहारकलक्षणासुनिपचाशन्मार्गणासुचत्वारोभगा, तनद्वौ-असातात्रसभवौद्वौसानात्रसभवौण्वचत्वारोभगाभवति, सर्वेनद्विव-चनेबहुवचनप्राकृतत्वात्, शेषमार्गणासुभगसभवाभावनागुणस्थान-शल्कनोनेया ॥ १७९ ॥ उक्तावेदनीयभगा साम्प्रतमायुर्भगान्-दर्शयन्नाह ॥

टबार्थ —वेदनीकर्मना ८ भागा छे, तेमध्ये मनुष्यगति १ पचेन्द्रियजाति १ त्रसकाय १ क्षायिकसम्यक्त्व १ अनाहारक मार्गणाये सद [illegible] गा छे केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ यथाख्यातचारित्रने विषे ३ भागा छे सातानाबधना २ अने च्यार अन्यना एव ६ सूक्ष्मसपरायमध्ये बे भागा साताना बधना छे, शेष रही जे ५२ मार्गणा तेहने विषे ४ भागा छे असातावधना २ सातावधना २ एव ४ ॥ १७९ ॥

निरतिरिदेवेमणुएसु, पणनवपणनवगजाइचउगेसु ।
तिगथाउरेपणभगा, सुरनारयभग(त्रिणतिरिया)व-ज्झाय ॥ १८० ॥

टीका—निरतिरि इत्यादि ॥ नरकादिगतौपचादिभगास्तन-नरकगतौपचभगास्तिर्यग्गतौनवभगादेवगतौपचभगामनुष्यगतौनव

भगा पूर्वोक्ताज्ञान या , एकेन्द्रियादिजातिचतुष्के पृथिव्यादिस्थावरत्रयेतिर्यगायुरुदयरूपा पचभगा । सुरनारयत्ति देवायुर्नधसभवोच्चोनरकायु सभवोद्वोएतेचत्वारोवर्जनीया शेषा पचनिर्मगप्रत्यया भवन्ति ॥ १८० ॥

टवार्थ —आऊखाना २८ भागा छे, तेमव्ये नरकगतिमव्ये नरकायुना ५ भगा छे तिर्यचगतिमव्ये तिर्यचना ९ भगा छे, देवगतिमध्ये देवायुना ५ भागा छे, मनुष्यगतिमव्ये मनुष्यायुना ९ भगा छे, तथा जाति ४ थावर ३ पृथिवी अपवनस्पतिमव्ये पच भगा छे, तिर्यचायु उदय तिरियचायु सत्तानो १ तिर्यचायुनव तिरियचायु उदयेतिरि २ आयुसत्तानो मनुष्यायुब धतिरि आयु उदयतिरियमनुष्यसत्ता ३ तिरिउदय तिरितिरिसत्तातिरि उदय मनुष्यतिरिसत्ता इहा देवनाना २ नारकीना २ एव ४ भगावर्जित करवा ॥ १८० ॥

अनरातेउवाउ, केवलदुगिएगदेसविरयम्मि ।
वारसमणसामाईयतिगमि, छगरगईप्पभवा ॥१८१॥

टीका—अनरातेउवाउइत्यादि ॥ तेषुपचसुमव्येनरायु प्रत्ययौद्वौतौवर्ज्यौ शेषास्त्रयोभगास्तेजस्कायवायुकायमार्गणायातिर्यग्प्रत्यया त्र्योभगा केवलद्विकेएकोनरायुरुदय नरायु सत्तारूपोभवति देशविरयम्मिदेशविरतावारसइतिद्वादशभगा भवतितेचपटतिर्यग्गतिप्रत्यया , पट्मनुष्यायु प्रत्यया , नरकतिर्यग्मनुष्यायुर्वध्यमानास्त्रयस्त्रयोनप्राप्यंते । देशविरतौदेवाणऐव त्वध्यते । मन पर्यवज्ञानेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धौ छगत्ति पट्भगामनुष्यायुरुदयरूपानारकतिर्यग्मनुष्यायुर्वधवर्जा नरायुरुदय नरायु सत्ता-

देवायुर्बंध नरायुरुदय देवनरायु सत्तावत्वानतराश्चत्वारोऽपिएव-षद्भवन्ति ॥ १८१ ॥

टवार्थ —तेऊवाऊकायने मनुष्यने जातो नथी तेमाटे तीन भगा छे। तिरिउदय तिरिसत्तातिरिउवंतिरिउदयतिरि २ सत्ता २ तिरिउदयतिरितिरिसत्ताए ३ छे, केवलदुगने नरायुउदयनरायु सत्ता ए एक भगो छे देशविरतिमध्ये १२ भगा छे मनुष्यना ८ तिर्यंचना ६ भगा छे बयमध्ये देवायुबंधे सामायिक १ छेदोपस्थापनीय परिहार विशुद्धिमध्ये आऊखाना ६ भगा छे मनुष्यायुना देवायुबंध छे तेमाटे मनुष्यायुउदय मनुष्यायु-सत्ता २ देवायुबंध मनुष्यदेवायुसत्ता २ मनुष्यायुउदयनरक मनुष्यायुसत्ता ३ मनुष्यायुउदय मनुष्यमनुष्यायुसत्ता ४ मनुष्यायु-उदय मनुष्यमनुष्यायुसत्ता ५ मनुष्यायुउदय देवमनुष्यायुसत्ताए छ भगा छे ॥ १८१ ॥

सुहमाहक्खाएदो, अणहारेचउअवधपद्मइया ।
मीसेवसमेसोलस, चउदसअसन्नीएसुच ॥१८२॥

टीका—सुहमाहक्खाएदो इत्यादि ॥ सूक्ष्मसपराये तथा यथाख्यातचारित्रे द्वौभगौनरायुरुदय नरायु सत्ताऽपौक्षपकस्य-नरायुरुदय नरायु सत्तातथापूर्वबद्धदेवायु यत्तुपशमश्रेणीआरोह-तितदानरायुरुदय देवनरायु सत्ताएतौद्वौउपशमश्रेणिगनसूक्ष्म-सपरायययाख्यातानामवत शेषगतिनिबद्धायु नोपशमश्रेणिमा-रोहति अणहारेत्तिअनाहारकमार्गणाया चतुर्गतिप्रत्ययाश्चत्वारो-अवद्धायूरूपाश्चत्वारोभगालभ्यतेयन विग्रहगतौएतेचत्वारोभगाएव-स्वस्वगतिसभवाभवन्ति, केवलिसमुद्घातेऽपिनरायुरुदय नरायु

सत्तारूप एवभग सचप्रथमएवनत्रांतर्गतत्वान्नाधिक तथा मिश्रे तथा उपशमसम्यग्दर्शनेषोडशभगा भवति, तनचतुर्गतिषुअष्टाविंशतिभगा येषुबद्धयमानायुरूपाद्वादश द्वीनारकोद्वौदेवायु प्रत्येचत्वारोमनुष्यायु सभवा चत्वारस्तिर्यगायु सभवा एवद्वादशनभवति, शेषाश्चत्वारोअबद्धायुष द्वादशवर्जननरसभवाएवषोडशप्राप्यते ॥ असज्ञिमार्गणायाचतुर्दशभगास्तनवतिर्यगायु सभवा यत असज्ञितिरश्च चतुर्गतिषुगमनात् पचनरायु सभवास्तननरायुरुदयो नरायु सत्ता तथा तिर्यगायुर्बंध नरायुरुदय तिर्यग्नरायुष सत्तानरायुर्बंध नरायुरुदय नरनरायु सत्ता नरायुरुदय तिर्यग्नरायु सत्ता अथवा नरायुरुदय नरनरायुष सत्ताएव पचमनुष्यायु सभवाएवचतुर्दश असज्ञिमनुष्याणानरकदेवेष्वगमनात् ॥ १८२ ॥

टबार्थ —सूक्ष्मसपराये तथा यथाख्यातमध्ये २ भगा, नरायुउदय नरायुसत्ता १ नरायुउदय देवनरायुसत्ता २, अनाहारकमार्गणाए च्यार भगा च्यारे गतिना अबधना पामीये मिश्रमध्ये तथा उपशममध्ये १६ भगा, इहा पिण नवा आउखानो बध नथी तेमाटे बधना भगा १२ नथी असज्ञीमार्गणामध्ये १४ भगा छे तिहा तिर्यचना तो नव छे, मनुष्यना ५ छे मनुष्यअसज्ञी मरी देवना नारकी थाय नही तेमाटे बध्यमान तथा बधी रह्या पछीना च्यार नथी ॥ १८२ ॥

सासाणेछवीस, नाण तिगवेयगेअवहिदसे ।
वीसपुणसेसाण, अडवीसआउभगाण* ॥१८३॥

* पाठा तरम्
(वीसतेउतिवेए, तिगेसअडवीससेसासु)

टीका—सासाणेछवीस इत्यादि ॥ सास्वादनेषड्विंशतिभगा, नरकायुर्बंधरूपोभगौद्वौनप्राप्येते, सास्वादनेनरकायुषः बधाभावात्। तथा ज्ञानत्रिके मतिश्रुतावधिलक्षणेवेदकेक्षयोपशमेसम्यक्त्वेअवधिदर्शनेक्षायिकसम्यक्त्वेवीसविंशतिभगा, नरकगतौतिर्यगायुर्बंधरूपा देवेषुतिर्यगायुर्बंधरूप तिर्यक्षुनारकतिर्यगायुर्बंधरूपौमनुष्येषुनारकतिर्यगायुर्बंधरूपोद्वोद्वौएवभगाष्टकरहिताविंशतिभगाभवति । वेउतिइति तेज पद्मशुक्ललक्षणासुतिसृषुलेश्यासु तिवेए वेदत्रिके तनमशस्तलेश्यानये पुरुषवेद स्त्रीवेदलक्षणेवेदद्वयेपचनरकायु सभवान्भगान् वर्जयित्वाशेषातिर्यग्नरदेवसभवा त्रयोविंशतिभगाभवति । नपुसकवेदेदेवायु सभवभगपचकविनात्रयोविंशतिभगाभवति । शेषासुपचेन्द्रियत्रसकाययोगत्रयकषायचतुष्टय अज्ञानत्रिक अविरतिचक्षुरचक्षुर्दर्शनद्विकमशस्तलेश्यात्रये भव्यअभव्यमिथ्यात्वासज्ञि आहारकलक्षणासुत्रयोविंशतिमार्गणासु आयु कर्मण अष्टाविंशतिभगा भवति । एतासामार्गणानाचतुर्गतिषुप्राप्यमाणत्वात्। ॥ इत्युक्ताआयु कर्म भगका मार्गणासु ॥ १८३ ॥

टबार्थ—सास्वादनने छवीस भागा छे तिर्यंच तथा मनुष्यना नरकायु बधना २ भग नथी ज्ञान ३ क्षयोपशमसमकित अवधिदर्शनमध्ये समकित गुणठाणावाला वीस भगा छे शेष मार्गणा जे रही तिहा आऊखाना २८ भागा छे. ए आयुभग मार्गणामे कह्या ॥ १८३ ॥

गोएसगनरपणतस, योगभविसमणहाररहीएसु ।
चरखुरचरएसुसुक्का, हारगिछगकेवलेदुन्नि ॥१८४॥

टीका—गोएसगनरपणइत्यादि ॥ गोत्रकर्मण सप्तभगा नर-

गतौपचेंद्रियेत्रसकायेमनोवाक्कायलक्षणेयोगत्रयेच पमार्गणायासमग्-सिसंज्ञिमार्गणायाआहारकरहिता युक्ति, अनाहारकमार्गणायासप्त-भगा तथाचक्षुरचक्षुर्दर्शनेशुक्ललेश्यायाआहारकमार्गणायागोत्रस्य-षट्भगा उच्चैर्गोत्रउदय उच्चैर्गोत्रसत्तालक्षण सवअयोगिचरमस-मयेतस्यात्रासभवात् केवलज्ञानेकेवलदर्शनेगोत्रस्यद्वौभगौअयनम-त्ययो ॥ १८४ ॥

नाणतिगओहिदसे, उवसमितिगदेवसासाणे ।
चउदुवेयगिमीसे, देसेसुहमिगसेसासुपणभगा १८५॥

टीका—नाणतिगओहिदसेइत्यादि । मत्यादिज्ञानत्रयेअव-धिदर्शनेउपशमसम्यक्त्वेउच्चैर्गोत्रबंध उच्चैर्गोत्रोदय उच्चैर्नीचै सत्ता-लक्षण एक द्वौअबधजौ एवत्रयोभगाभवति देवगतौ सास्वादने-नीचैर्गोत्रबंधनीचैर्गोत्रउदयनीचैर्गोत्रसत्तालक्षणभगवर्जयित्वानीचैर्गो-त्रबधसभवौद्वौउच्चैर्गोत्रबधसभवौद्वौ एवचत्वारोभगा भवति, वेदके-मिश्रेदेशेउच्चैर्गोत्रबधसभवौद्वौभगौभवत , सूक्ष्मसपरायेएकएवउच्चै-र्बंध उच्चैरुदय उच्चनीचसत्तालक्षण माप्यते । शेषासुवेदत्रिककषाय-चतुष्टय अज्ञानत्रयकृष्णादिलेश्यापचकअभव्यमिथ्यात्वअ(जय?)य-तलक्षणासुअष्टादशमार्गणासुबधप्रत्यया पचभगा भवतिइत्युक्ता-गोत्रकर्मण भगामार्गणासु, अथमोहनीयकर्मभगानदर्शयन्नाह ॥ तत्रप्रथममोहनीयस्यबधभगाद्द्वाविंशतिबधेषट्तत्रषोडशकषाया भय-जुगुप्सामिथ्यात्वएवएकोनविंशतौत्रयाणावेदानामध्येएकवेद हास्य-रतियुगलअथवाअरतिशोकयुगलएव प्रकृतिनयेक्षिप्तेद्वाविंशतिस्तत्र त्रयाणावेदानात्रयोभगा तेचान्यतरयुगलगुणिता षट्एवएकविंशति बधेमिथ्यात्वरहितेचत्वारोभगा नपुसकवेदस्याबधात् अनतानुबधि-

बन्धरहितेसप्तदशनवरहितेपुरुषवेदबन्धसमत्वोद्वौभंगौएवअप्रत्याख्यान-बन्धरहितेनयोदशनवेद्वौप्रत्याख्यानबन्धरहितनवनवकबन्धेद्वौनन भय-जुगुप्साअरतिशोकवर्जितेपचविधबन्धेपुरुषवेदरहितेचतुर्विधबन्धेसंज्वल-नक्रोधरहितेत्रिविधेबन्धेसंज्वलनमानरहिते द्विविधबन्धेसंज्वलनमायार-हिते एकविधबन्धेएककएवभग, एवएकत्रवभगाएकविंशति वेच-नरकगतौदेवगतौद्वादशमिश्रगुणस्थानभगद्वयस्यमिलगणनात् चतु-र्दशतिर्यग्गतौचतुर्दशषोडशावामनुष्यगतौसर्वेएकेंद्रियेविकलेंद्रियेस्था-वरपचकेदश, मत्यादिज्ञानेसम्यक्त्वादिषुनव, मन पर्ययचारित्रादि-मार्गणासुसप्त, सूक्ष्मसपरायेएक केवलद्विकेयथाख्यातेनभवति । बन्धाभावात्मनुष्यपचेंद्रियत्रसयोगादिषुसर्वे, वेदत्रयेकषायत्रयेविं-शति, लोभेएकविंशति इत्यादिगुणस्थानक्रमनोज्ञेय उदयचतु-र्विंशतिकागुणस्थानशतके सविस्तरलिखितास्ताएवमार्गणासुविभज-यन्नाह ॥ १८५ ॥

उवसामगखवगेसुण, वीसचोवीससत्तरभगाय ।
वेयगिसोलसकेवल, दुगेअहक्खायगेनत्थि ॥१८६॥

टीका—उवसामगखवगेसुणइत्यादि ॥ अनउपशमेक्षायिके-सम्यग्दर्शनेवीसति विंशतिश्चतुर्विंशनय सम्यक्त्वमोहनीयउदयरहि-ताअविरतिसम्यक्त्वेचतस्रोदेशविरतौचनस्र प्रमत्तेचतस्र अप्रम-त्तेचनस्र अपूर्वकरणेचतस्र एवविंशति सप्तदशभगाद्विकैकोदय-सभगा प्राप्यते । सप्तकाउदयेएवउपशमक्षायिकदर्शनलाभ इति वेदकेक्षयोपशमेसम्यक्त्वेषोडशचतुर्विंशनय सम्यक्त्वमोहनीयो-दययुक्ता तुर्येगुणेचनस्र पचमेचतस्र प्रमत्तेचनस्र अप्रमत्तेच-तस्र एवषोडशभवति । तथाकेवलद्विकेयथाख्यातेमोहनीयोदया-

भागात् भगानभवति । यथाख्यातेउपशातापेक्षया अष्टाविंशति चतुर्विंशनय एकविंशतिरूपासत्त्वाभवतिनक्षपकस्येतिस्वयमूह्यम् १८६

टबार्थ —हवे मोहनीकर्मना भागा कहे छे । उपशमसमकित तथा क्षायिकसमकिते वीस चोवीस सत्तर भागा छे २०। २४।१७। तिहां समकितगुणठाणेउदये १ चोवीसीसात उदय २ चोवीसी आठमे उदये एक चोवीसी इम पाचमे गुणठाणे पांचने उदये एक चोवीसी ने २ चोवीसी ७ ने उदये एक चोवीसी छ गुणठाणे च्यार उदये एक चोवीसी ५ उदये २ चोवीसी ६ उदये एक चोवीसी सातने पण च्यार चोवीसी आठमे ४ चोवीची इम चोवीसी थई ॥ क्षयोपशमसमकिते सोल चोवीसी समकितमोहनीना उदयसहितनी छेवी केवलदुग यथाख्यातचारित्रे मोहनीनो भगो नथी ॥ १८६ ॥

सुहमेगसेसेसुअ, मग्गणठाणेसुगुणभवाभंगा ।
चउवीसगायभगा, पयसखाउदयपचईया ॥१८७॥

टीका—सुहमेगसेसेसुअइत्यादि॥ सूक्ष्मसपरायेएकलोभोदयरूपभगक सेसेसुइतिशेषेषुमार्गणास्थानेषु,गुणभवायस्यामार्गणायायावत्य चतुर्विंशतय तस्यातावत्य चतुर्विंशतयोज्ञेया तथा यस्यामार्गणायायावन्त्य चतुर्विंशनयस्ताश्चतुर्विंशतिगुणिताभगसख्याभगानासख्याभवति, भगसख्याचउदयस्थानसख्यागणितापदसख्याभवति । ततनरकगतौमिथ्यात्वेअष्टौअष्टकायत नारकस्यनपुसकवेदोदयात्नपुसकवेदप्रत्ययाअष्टौभगाभवति । तेननरकगतौअष्टकापुवतत्रसप्तोदयेएक अष्टोदयेत्रय नवोदयेत्रय दशोदयेएक एवअष्टौअष्टकास्तस्यभगाश्चतु षष्टि सास्वादनेसप्तोदये एक अष्टो-

नवोदयेएकश्चत्वारोअष्टका तस्यभगाद्वात्रिंशत्, मिश्रेसप्तोदये- अष्टोदयेद्वौनवोदयेएक एवचत्वारोअष्टकास्तस्यभगाद्वात्रिंशत् तसम्यक्त्वेषड्दयेएक सप्तोदयेनय, अष्टोदयेनय नवोदये- वअष्टोअष्टका तस्यभगाश्वतु पष्टि सर्वसंख्याभगा एकशत- त्र्यधिक भगानाएतेचभगत्राउदयस्थानगुणिना पदसंख्या- ते तत्रषड्दयेअष्टभगा षड्गुणिताअष्टोचत्वारिंशत् पदसंदा दयेअष्टौचत्वारिंशत्भगा तेचसप्तगुणिता षट्त्रिंशदधिकत्रिशा- ष्टोदयेअशीतिभगा तेचाष्टगुणिता चत्वारिंशदधिकपट्शत- ये अष्टचत्वारिंशत्भगास्तेचनवगुणिताश्चतु शतद्वात्रिंशदधिक शतानाभवति । दशोदयेअष्टोभगा तेचदशगुणिताअशीति श भवति, एवचसर्वसंख्यापदशशतानिपट्त्रिंशदधिकानि- शतानिभवति ॥ एवसर्वत्रभावनाकार्या ॥ १८७ ॥

टबार्थ —सूक्ष्मसपरायमध्ये लोभनो उदयनो एक भगो छे ो मार्गणा जे रही ते मार्गणाये गुणठाण प्रत्ययी चोवीसी वी जे मार्गणाये जेटली चोवीसी होवे तेहने चोवीस करीये तेवारे भागानी संख्या आवे, अने जे भगा जे स्थानकना होवे ते भागा ते स्थानक गुणा करीये तेवारे संख्या आवे एटले दसने उदये चोवीसी १ तेहना भागा तेहने दस गुणा करीये तेवारे २४० पद संख्या छे इम । जोडी लेज्यो ॥ १८७ ॥

तिउदयचउवीस, दुगिसोलसएगिअट्ठभंगाय । ाइंसुछगसखा, भगागुणट्ठाणसखसमा ॥१८८॥

इतिमोहोदयभगा,

टीका—येयनिउदय इत्यादि ॥ यत्रमार्गणायावेदनिकम्पउदयस्तत्रचतुर्विंशतिभगायत्रमार्गणायादुगिइनिनेद्रिकोदय तत्रषोडशका भवन्तियत्रमार्गणायाएकवेदोदयस्तत्रअष्टकाभवति । तत्रकषायचतुष्टयेचत्वारोभगास्तेह्रास्ययुगलेनचत्वारोऽरतिशोकेनचत्वार । एवअष्टैतेचपुरुषवेदेनएवस्त्रीवेदेनअष्टौ एव नपुसकवेदेनअष्टौएव चतुर्विंशतिर्भवति । कोहाइसु इत्यादि नोधादिषु क्रोधमानमायालोभेप्रत्येकपट्पदभगा भवन्तियत क्रोधोदयेवेदत्रयान्यतरवेदोदये तत्रयेभगास्तेचयुगलद्वयान्यतरोदयेगुणिता पट्एवक्रोधोदयेद्विपचाशत्पट्का भवति । तस्यभगास्त्रिशतद्वादशाधिकभवति । तस्यपदवृदाएकविंशतिशतद्वादशाधिकक्रोधोदये पचत्रयेद्वादशभगास्तस्यपदवृदाश्चतुर्विंशति चतुर्थवेएकोभगस्तत्पदमपिएकएवसर्वसख्याएकविंशतिशतत्रिदशदधिकपदवृदानाभवति । एवमानादिष्वपिज्ञेय । सर्वास्वपिमार्गणासु मोहोदयभगागुणस्थानभगसख्यासमासुख्याभवति ॥ भावनाचनरकगतौचतुर्विंशति अष्टकास्तेषाभगाद्विनवत्यधिक एकशत पदवृदाश्च पचदशशतपट्त्रिंशदधिका भवति, तिर्यग्गतौमोहोदयचतुर्विंशतिकागुणस्थानकपचकस्यद्वात्रिंशत्तस्यभगका सप्तशतानिअष्टपष्ट्यधिकानिपदवृदचतुर्विंशतिका २४४ द्विशतचतुश्चत्वारिंशदधिकतेचचतुर्विंशतिगुणिता पचसहस्राणिअष्टौशतानिपरपचाशदधिकानिपदवृदगणितभवति ॥ एवमनुष्यगतौपचेंद्रियेत्रसकायेयोगत्रयेचक्षुरचक्षुर्दर्शनेशुक्ललेश्यायाभव्येसज्ञिआहारकलक्षणासुमोहोदयचतुर्विंशतिकाद्विपचाशत्सप्तदशभगका ॥ सर्वभगाद्वादशशतानिपचषष्टिअधिकानिपदवृन्दचतुर्विंशतिकात्रीणिशतानिद्विपचाशदधिकानिचतुर्विंशतिगुणितचतुरशीतिशतान्यष्टचत्वारिंशत्तेचएकोनत्रिंशत्मिलिताश्चतुशीतिशतसप्तसप्तति पदवृदकाभवतिपुरुषादिवेदत्रयेद्विपचाशत्अष्टकाश्चत्वारोभगा एकेंद्रियद्वींद्रियत्रींद्रियचतुरि-

द्रियपृथ्वीकायअपकायवनस्पतिकाय असंज्ञिमार्गणासुद्वादशाऽष्टका पण्णवतिभंगाअष्टशतानिपदवृंदम्भवति। तेजोवायुकायलक्षणासुमार्गणासुअष्टौअष्टकाण्युनपुंसकवेदएवोदयात् कषायचतुष्टयेद्विपंचाशत्पदका पड्विंशतिरष्टविंशतिरेकोनत्रिंशत्भंगाल्भ्यते । मत्यादिज्ञानत्रयेअवधिदर्शनेपञ्चत्रिंशत् चतुर्विंशतिका सप्तदशभंगाभवन्ति। मन पर्यवज्ञानेसामायिकेच्छेदोपस्थापनीयेविंशतिचतुर्विंशतिका सप्तदशभंगकास्तत्रप्रमत्तेअष्टौ अप्रमत्तेअष्टौ अपूर्वेचत्वार एवविंशति चतुर्विंशतिका नवमेदशमेसप्तदशभंगाभवन्ति ॥ अज्ञानत्रयेमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रभवा षोडशचतुर्विंशतय परिहारविशुद्धौप्रमत्ताप्रमत्तभवा षोडशचतुर्विंशतयोमिथ्यात्वेसास्वादनेमिश्रेदेशविरतौअष्टौचतस्रश्चतस्र अपरेऽस्वगुणस्थानसभंगाश्चतुर्विंशतय अविरतिमार्गणायामिथ्यात्वादिअविरतसम्यग्दर्शनगुणास्थानसभंगाश्चतुर्विंशतिचतुर्विंशतय कृष्णादिलेश्यात्रयेचत्वारिंशत्चतुर्विंशतिका तत्रमिथ्यात्वेअष्टौसास्वादनेचत्वारोमिश्रेचत्वार अविरतेअष्टौदेशविरतेअष्टौ प्रमत्तेअष्टौ एवचत्वारिंशत्, तेज पद्मलेश्याद्वयेचत्वारिंशत्पूर्वोक्ताअप्रमत्तसभंगाअष्टौएवअष्टचत्वारिंशत्चतुर्विंशतय अभयेचतस्र चतु० तत्रअनतानुबंधिउदयरहितामिथ्यात्वसमवाअभयस्यनभवतितेनअष्टौदयाएकानवोदयाद्वेदशोदयाएकाप्राप्यते । अनाहारकमार्गणायाविंशतिश्चतुर्विंशतय तत्रमिथ्यात्वेअष्टौसास्वादनेचतस्र अविरतेअष्टौएवभवन्ति सर्वासुमार्गणासुभंगा पदवृंदसंख्या स्वत करणानुसारेणऊह्या इत्युक्तामोहोदयभंगामार्गणासु ॥ १८८ ॥ साम्प्रतनामकर्मवंधभंगकान्दर्शयन्नाह ॥

टवार्थ —वेद तीन जिहां उदय होवे ते मार्गणाये चोवीस भंगा होवे,–जिहा २ वेद उदय होवे तिहा सोल भंगा होवे

जिहा एक वेद उदय होवे तिहा ८ भगा होवे, जिहा एक कषाय उदय होवे तिहा ७ भगा होवे, च्यार कषाय होवे तिहा २४ भगा होवे तथा नरकगति पाच थावरे असज्ञी एटली मार्गणाये नपुसकवेद १ उदय छे तेमाटे भगाना अष्टक कहेवा, क्रोधकषाये वेद तीनना ३ भगा ते हास्यरतियी वली ३ भगा अरती शोकथी इम जाणना इम सर्वत्र सभाळी लेवा ॥१८८॥

तेवीसपन्नवीसा, छवीसाअट्ठवीसगुणतीसा ।
तीसेगतीसमेग, वधठाणाणिनामस्स ॥ १८९ ॥

टीका—तेवीसपन्नवीसा इत्यादि ॥ नाम्न अष्टौबधस्थानानि ॥ तद्यथा ॥ त्रयोविंशति पचविंशति षड्विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् त्रिंशत् एकत्रिंशत् एकचेत्यष्टौ, अमूनिच गतिप्रायोग्यतया अनेकप्रकाराणिततस्तनेवोपदर्शयतेतत्रतिर्यग्गतिप्रायोग्यबध्नत सामान्येनपचस्थानानि ॥ तद्यथा ॥ त्रयोविंशति पचविंशति षड्विंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत । तत्राऽप्येकेन्द्रियप्रायोग्यबध्नत त्रीणिबधस्थानानित्रयोविंशति पचविंशति षड्विंशति तत्रत्रयोविंशति तिरियतिर्यग्द्विकएकेन्द्रियजाति औदारिकतैजसकार्मणानिहुडकसस्थानवर्णगधरसस्पर्शचतुष्टय अगुरुलघु उपघातनामस्थावरनामसूक्ष्मबादरयोरेकतर अपर्याप्तनामप्रत्येकसाधारणयोरेकतरद् अस्थिरअशुभदुर्भगअनादेयअयश कीर्त्तिनामनिर्माणनामएतासात्रयोविंशतिप्रकृतीनासमुदायएकबधस्थानएतच्चापर्याप्तप्रायोग्यबध्नत मिथ्यादृष्टेरत्रसेयअत्रभगाश्चत्वार तथाहिबादरनाम्निबध्यमानेप्रत्येकेनसहएक तथाबादरसाधारणेनसहएक सूक्ष्मप्रत्येकेनसहएक सूक्ष्मसाधारणेनसहएक सर्वसख्ययाचतस्र

एवैतत्रयोविंशति पराघातोच्छ्वाससहितापचविंशति नवप्रकृति-नामनिर्यगद्विकपूर्वेंद्रियजाति औदारिकतैजसकार्मणानिहुंडकसं-स्थानवर्णादिचतुष्टय अगुरुलघुनाम उपघातनाम पराघातनाम उच्छ्वासनाम स्थावरनाम पर्याप्तक बादरसूक्ष्मयोरेकतरद् प्रत्येकसा-धारणयोरेकतरत् स्थिरास्थिरयोरेकतरत् शुभाशुभयोरेकतरत् यश कीर्ति-रयश कीर्त्योरेकतरत् दुर्भगनामअनादेयनामनिर्माणनामइतिनासा-पचविंशतिप्रकृतीनासमुदाय एकेन्द्रियप्रायोग्यवघपर्याप्तकेकेन्द्रियमा-योग्यतनोमिथ्यादृष्टेरेतत् पचभगाविंशति तत्रबादरपर्याप्त-प्रत्येकेषुस्थिरास्थिरशुभाशुभयश कीर्त्ययश कीर्तिपदैरष्टौभगास्त-थाबादरसाधारणत सूक्ष्मप्रत्येकत सूक्ष्मसाधारणत चत्वारश्चत्वा-रोभगा यत अत्रयश कीर्तिनाम्न बधाभावात्तचत्वारएवभगा एवविंशति पर्याप्तत्रयोविंशति नवरस्थानेत्रसनामएकेंद्रिय-जातिरितिप्रकृतिद्वयविनावगनामसवार्त्तसहननऔदारिकागोपागद्वी-न्द्रियादिएकाजाति इतिचतुष्टयेक्षिप्तेपचविंशति साचद्वीन्द्रिया-दिजातिचतुष्टयतरेणचत्वारोभगा एवतिर्यगतिप्रायोग्याचतु-र्विंशति तत्रबादरप्रत्येकप्रायोग्याष्टकभगरूपापचविंशति देवनि-र्यगमनुष्या बध्नन्तिशेषाभगा षोडशतिर्यगनराएवबध्नन्ति देवाना तथागमनाभावात्पर्यन्तेन्द्रियप्रायोग्यपचविंशतौतिर्यगद्विकनिष्कास्यते मनुष्यद्विकक्षिप्यतेइत्येषापचविंशति मनुष्यापर्याप्तप्रायोग्यानिर्यग्-मनुष्यास्तेजोवायुकायवर्जा बध्नन्ति । इत्येवपचविंशति त्रयेपचविंश-तिभगा बादरप्रत्येकपचविंशतिमध्ये आतपयुक्तापड्विंशति बध्नन्ति। अथवा उद्योतयुक्ताषड्विंशति एकेन्द्रियप्रायोग्याविंशतिकोमिथ्या-दृष्टय बध्नातिषोडशभगा तथा द्युत्रयविनवक त्रसबादरपर्याप्तप्रत्ये-करूपचतुष्टयपचेन्द्रियजाति पराघातउच्छ्वासनामवैक्रियद्विक देव-द्विकशुभविहायोगति १ समचतुरस्रसंस्थानस्थिरास्थिरयोरन्यतरत्

शुभाशुभयोरेकतरं यशस्कीर्त्ययशस्कीर्त्योरन्यतरत्सुभगसुस्वरादेय-
त्रिकं एवमष्टाविंशतिः देवगतिप्रायोग्यानामष्टभंगाः स्थिरास्थिर-
शुभाशुभयशोऽयशोऽन्यतमाः अष्टौ भंगाः मिथ्यादृगुणस्थानमस्त्य-
पूर्वकरणपर्यन्तं द्विगतिजासंयतनिर्देशोऽदेशविरतिपर्यन्त मनुष्या अपू-
र्वकरणपर्यन्तं स्थानि। तथा पुनः नरकगतिपञ्चेन्द्रियजातिः नारकानुपूर्व्यग-
घातउच्छ्वासं वैक्रियिकद्विकं नरकगतिरं अशुभविहायोगतिः स्थिरानं अ-
स्थिरषट्कमुत्पद्यमानं शति । नरकगतिप्रायोग्यातिर्यक्पञ्चेन्द्रियपर्याप्त-
श्रिन मनुष्यपञ्चेन्द्रियाश्रिन बध्नन्ति । विकलेन्द्रियप्रायोग्यपञ्च-
विंशतिकस्थानानि पर्याप्तपरघातोच्छ्वासादुस्वरप्रत्येकेऽपर्याप्तनाम-
पहारे एकोनत्रिंशतं तिर्यक्पञ्चेन्द्रियमनुष्या बध्नन्ति विकलप्रायोग्या-
मिथ्यादृष्टयः ग्रेत्रीन्द्रियादिषु प्रत्येकमष्टौ भंगाः पृथगष्ट विकलत्रि-
कगतानि एव । तिर्यग्गतिपञ्चेन्द्रियप्रायोग्यस्थानं त्रीणि स्थानानि
नानि । तद्यथा । पञ्चविंशतिः एकोनत्रिंशत् त्रिंशत् नवपञ्चविंशति
पञ्चेन्द्रियजानि युक्तानि षष्ठौ भंगाः एकोनत्रिंशत् पुनरपि तिर्यक्पञ्चेन्द्रिय-
जानि औदारिकद्विकं तैजसकार्मणे षण्णां संस्थानानामेकतरत् षण्णां
संहननानामेकतमत्संहननं वर्णादिचतुष्कं अगुरुलघूपघातपरघात
उच्छ्वासनाम प्रशस्ताप्रशस्तविहायोगत्योरेकतरं त्रसनाम बादरनाम प-
र्याप्तनाम प्रत्येकं स्थिरास्थिरयोरेकतरत् शुभाशुभयोरेकतरं सुभगदुर्भ-
गयोरेकतरत् सुस्वरदुःस्वरयोरेकतरत् आदेयानादेययोरेकतरत् यश-
स्कीर्त्ययशस्कीर्त्योरेकतरत् निर्माणमिति एकोनत्रिंशत्प्रकृतीनामेकं ब-
स्थानमेतद् मिथ्यादृष्टिः पर्याप्ततिर्यक्पञ्चेन्द्रियप्रायोग्यं बध्नन् बध्नाति य-
द्यपि पुनः सासादनो बध्नाति तर्हि पञ्चानां संस्थानानां पञ्चानां संह-
ननानां अन्यतमत् संहननसंस्थानमिति वक्तव्य । अस्याश्चैकोनत्रिं-
शत्यासामान्येन षट्सु संस्थानेषु षड्भिः संहननैर्गुणिताः षट्त्रिंशत्
ते च विहायोगतिद्वयेन गुणिता द्वासप्ततिः ते च स्थिरादिकगुणिता श्चत्वारि-

शच्छतवेचशुभाशुभद्विकगुणिताद्विशती अष्टाशीत्यधिकाभवतिवेच-
सुभगदुर्भगद्विकगुणिता पंचशनीपंचसप्ततिर्भवति तेचसुस्वरदुःस्वर-
गुणिता एकादशशतद्विपंचाशत्भगा भवति तेचआदेयानादेया-
भ्यागुणिता द्वयोर्विंशतिशतानिचतुरधिकानि भवन्तितेचयश
अयशोभ्यागुणिताभगा अष्टाधिकपट्चत्वारिंशच्छतसंख्यावेदित या
एवंचएकोनत्रिंशद्वयोतसहितात्रिंशद् भवति अत्रापिमिथ्यादृष्टिन्सा-
स्वादनानधिकृत्यनयैवाबगन्तयो अत्रापिअष्टाधिकपट्चत्वारिंशच्छ-
तसंख्याभगानाभवति ॥ उक्तंच ॥ गुणतासनोसेवियभगाअट्टा-
हीपाठयालसयापचिदितिरियतिरिजोगापणवीसनवेभणिको ॥ १ ॥
सर्वसंख्यापाद्विनवतिशतानिसप्तदशाधिकानि सर्वस्यातिर्यग्गतौसर्वस-
ख्ययाभगा नितवतिशतानिअष्टाधिकानि॥ मनुष्यगतिप्रायोग्यपंच-
विंशतिसत्कभगएकपूर्वोक्ततिर्यग्गतिप्रायोग्येकोनत्रिंशतितिर्यग्द्विका-
पसारेनरद्विकक्षेपेअष्टाधिकपट्चत्वारिंशच्छतसंख्याभगा भवति ॥
एतामिथ्यादृष्टि सास्वादनमिश्राविरतसम्यग्दृष्टिर्वाबध्नाति । तत्रस-
म्यग्दृष्टिप्रत्ययाएकोनत्रिंशत् जिननामसहितात्रिंशत् अत्रस्थि-
रास्थिरशुभाशुभयश अयशोभ्याअष्टौभगा अत्रजिननामत्रय स-
हननाद्यशुभानामवन्धक एवंसर्वसंख्यामनुष्यगतिप्रायोग्यत्रयाणा-
नेषुभगा पट्चत्वारिंशच्छतानिसप्तदशाधिकानि । उक्तंचपणवीसय-
सिइक्को ॥ उयालसयाछोसगइगुणतीसे, मणुतीसेअट्ठउसवेछायाल-
सयाउससरस ॥ १ ॥ तथादेवगतिप्रायोग्य अष्टाविंशतिस्थानके-
अष्टौभगापूर्वउक्ता तत्रैवाष्टात्रिंशतोजिननामप्रक्षेपेदेवगतिप्रायोग्या
एकोनत्रिंशतसम्यग्दृष्टि मनुष्य अविरतसम्यग्दर्शनत अपूर्वकर-
णयावत्बध्नातिअष्टौभगा देवगतिप्रायोग्याष्टाविंशतोआहारकद्विक-
क्षेपेत्रिंशत् । अत्रसर्वप्रशस्तप्रकृतिबन्धात् एकएवभगकस्तथाआहा-
रकयुक्तात्रिंशत्जिननामयुक्ताएकत्रिंशत्अत्रापिएकएवभगक एषा-

बंधकः सम्यग्दृष्टि मनुष्योबंधकोभवति ॥ तथाचोक्तं ॥ अठ्ठए-
केकभगा अठ्ठारदेवजोग्गासु । तथानरकगतौअशुभाष्टाविंशतिमत्य-
यएक एवभगकमिथ्यादृष्टिरेवबध्नाति । नरकद्विकबंधस्तुमिथ्यात्वे-
एवएकतुबंधस्थानेयश कीर्त्तिलक्षणतद्वदेवगतिप्रायोग्यबंधेऽप्यच्छि-
न्नेअपूर्वकरणादीनाबंधाणाअनगत च ॥ समतिकस्मिन्नबंधस्थानके-
कतिभगकास्तन्निरूपणार्थंगाथामाह ॥ १८९ ॥

चउपणवीसासोलस, नववाणुईसयायवायाला ।
एयालुत्तछायाल, सयाइक्किकवधविही ॥ १९० ॥

टीका—चउपणवीसाद्दत्यादि ॥ त्रयोविंशत्यादिषुयथाक्रमंब-
धप्रकारावेदित या तत्रत्रयोविंशतिबंधस्थानेषुचत्वारोभगास्तेचैकें-
द्रियप्रायोग्यामेवबंधतोविज्ञेया तान्यत्रपंचविंशतिस्थानेपंचविंशति-
भगाअत्रैकेंद्रियप्रायोग्यापंचविंशतिबंधत विंशति अपर्याप्तद्वि-
त्रिचतुरिंद्रियतिर्यग्पंचेंद्रियमनुष्यप्रायोग्या बध्नतामेकैकइतिसर्वस-
ख्ययापंचविंशति षट्विंशतिबंधस्थानेषोडश तेचैकेंद्रियप्रायोग्यामे-
बंधतः अवसेया तान्यत्रअष्टाविंशतिबंधस्थानेभगानवतत्रदेवगति-
प्रायोग्याअष्टौनरकगतोप्रायोग्य एकएकोनत्रिंशत्बंधस्थानेभगाअ-
ष्टचत्वारिंशदधिकानिद्विनवतिशतानितत्राष्टौद्वींद्रियाणा अष्टौत्रींद्रियाणा
अष्टौचतुरिंद्रियाणापट्चत्वारिंशच्छत अष्टाधिकतिर्यग्पंचेंद्रियप्रायोग्य
तथा षट्चत्वारिंशच्छत अष्टाधिकशत मनुष्यप्रायोग्यअष्टौदेवग-
तिप्रायोग्य तथा त्रिंशद्बंधस्थानेएकचत्वारिंशदधिक षट्चत्वारिं-
शच्छतभगानातत्रचतुर्विंशति विकलानापट्चत्वारिंशच्छत अष्टा-
धिकतिर्यग्पंचेंद्रियप्रायोग्य अष्टौमनुष्यप्रायोग्या एकदेवगतिप्रायोग्य।
तथाएकत्रिंशत बंधेदेवगतिप्रायोग्यएकएकविधबंधेचएक सर्वसरय-

यासर्वत्र स्थानेषुभगा त्रयोदशसहस्त्राणिनवशतानिपचचत्वारिंशद-धिकानिभवति, इत्युक्तानामकर्मण बधभगा, साम्प्रतनामकर्मण उदयभगसख्याप्रतिपादनार्थमाह ॥ १९० ॥

वीसिगवीसागचउवीसाय, एगाहीयाअइगतीसा ।
उदयठाणाणिभवे, नवअट्ठयहुतिनामस्स ॥ १९१ ॥

टीका—उदयस्थानानिद्वादश, तद्यथाविंशतिरेकविंशति चतुर्विंशति पचविंशति षड्विंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत तथा नवअष्टोचएतानिचैकेंद्रियाद्यपेक्षयानानाप्रकाराणि,इतितानाश्रित्यसामस्तमुपदर्श्यतेइतितत्रएकेंद्रियाणामुदयस्थानानिपचतद्यथाएकविंशति चतुर्विंशति पचविंशति षड्विंशति सप्तविंशति तत्रतैजसकार्मणेअगुरुलघुस्थिरास्थिरेशुभाशुभेवर्णरसगधस्पर्शनिर्माणमितिद्वादशध्रुवोदया प्रकृतय । तिर्यग्गतितिर्यगानुपूर्वीस्थावरनामएकेन्द्रियजातिवादरसूक्ष्मयोरेकतरत्पर्याप्तापर्याप्तयोरेकतरद्दुर्भग अनादेययश कीर्त्त्ययश कीर्त्त्योरेकतरदित्येतानवप्रकृतिसहिताएकविंशति अत्रभगा पचवादरसूक्ष्माभ्यापर्याप्ताऽपर्याप्ताभ्या अयश इतितेनसहचत्वार वादरपर्याप्तस्ययशसासहपचम सूक्ष्मपर्याप्ताभ्यासहयश कीर्त्ते रुदयोनभवति । तेनतदाश्रितोविकल्पोन भवति । एषाचैकविंशतिरेकेन्द्रियस्यापातरालगतौवर्त्तमानस्यवेदितव्यातत शरीरस्थस्य औदारिकशरीरहुडकसस्थानउपघातप्रत्येकसाधारणयोरेकतरदितिचतस्र प्रक्षिप्यते । तिर्यगानुपूर्वीचापनीयते ततश्चतुर्विंशतिर्भवति । अत्रचभगादश ॥ तद्यथा ॥ वादरपर्याप्तस्य प्रत्येकसाधारणपश कीर्त्त्ययश कीर्त्तिपदेश्चत्वार अपर्याप्तवादरस्यप्रत्येकसाधारणाभ्याअयश कीर्त्त्यासहद्वौ । सूक्ष्मपर्याप्त अपर्याप्तप्रत्ये-

कसाधारणयोरयश कीर्त्यासहचत्वार इतिद्वग बादर वायुकायिकस्यवैक्रियकुर्वत औदारिकस्थानेवैक्रियवक्तव्यनतश्चनस्यापिचतुर्विंशतिरुदयेप्राप्यते । केवलमिहबादरपर्याप्तप्रत्येकअयश कीर्तिपदैरेकएवभग तेजस्कायिकवायुकायिकयो साधारणयश कीर्त्युदयोनभवति तदाश्रिताविकल्पानप्राप्यते । सर्वसरययाचतुर्विंश-

	बधमा	२३	२५	२६	२८	२९	३०	३१	१
४०	एकेन्द्रिय	४	२०	१६					
१७	द्वीन्द्रिय		१			८	८		
१७	त्रीन्द्रिय		१			८	८		
१७	चतुरिन्द्रिय		१			८	८		
९२१७	तिर्यक्पचेंद्रिय		१			४६०८	४६०८		
४६१८	मनुष्यपचेंद्रिय		१			४६०८	८		१
१८	देवता				८	८	१	१	
१	नारक				१				
	सर्व	४	२५	१६	९	९२४८	४८४१	१	१

त्युदयेएकादशभगारतन शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपरघातेक्षिप्तेपचत्रिंशति अत्रभगा षट तद्यथाबादरप्रत्येकसाधारणयश कीर्तिअयश कीर्तिपदेश्चत्वार सूक्ष्मप्रत्येकसाधारणाभ्याअयश कीर्त्त्यासहद्वौ तथा बादरवायुकायिकस्यवैक्रियशुर्वन शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्य पराघातेक्षिप्तेपचविंशतिर्भवति अत्रघप्राग्वदेवैकएवभग सर्वसख्ययाप-घविंशतौसप्तभगा प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासेक्षिप्तेषड्विंशति अत्रापिभगा षट तद्यथाबादरस्योद्योतेनसहितस्यप्रत्येकसाधारणयश कीर्तिपदेश्चत्वारआनपसहितस्यचप्रत्येकयश अयशोभ्याद्वौ बादरवायुकायिकस्यवैक्रियकुर्वन प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासेक्षिप्तेप्रागुक्तापचविंशति पड्विंशतिर्भवति तत्रापिप्राग्वदेकएवभग तेजस्कायिकवायुकायिकयोरातपोद्योतयश कीर्त्तीनाउदयाभावात् । तदाश्रितानाविकल्पानामप्यते सर्वसख्ययाषड्विंशतौनयोदशभगा । तथाप्राणापानपर्याप्तापर्याप्त्यस्यउच्छ्वाससहितायाषड्विंशतौआनपोद्योतान्यतरसहितायाषट्त्रय आनपसभवास्त्रय उद्योतसभवा, सप्तविंशत्युदयेषट्सर्वसख्ययाचेकेन्द्रियाणाभगाद्विचत्वारिंशत् ॥ उ॰ क्तच ॥ एगेन्दियउदयेसु पचइक्कारसतत्तेरसपउक्क । कमसोभगाबायालाहोंतिसव्वेवि ॥ १ ॥ द्वीन्द्रियाणामुदयस्थानानिषट्तद्यथाएकविंशति षड्विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् त्रिंशत् एकत्रिंशत् तत्रध्रुवोदयाद्वादशनिर्यग्द्विकद्वीन्द्रियजाति त्रसनामबादरनामदुर्भगअनादेयपर्याप्तापर्याप्तयोरेकतरद्यश कीर्त्त्यश कीर्त्त्योरेकतरदितिनवप्रकृत्यासहएकविंशति एषाचापातरालगतौवर्त्तमानस्य-द्वीन्द्रियस्यावाप्यते अत्रभगास्त्रय, तद्यथाअपर्याप्तकनामोदयेवर्त्तमानस्यअयश कीर्त्त्यासहएक पर्याप्तनामोदयेवर्त्तमानस्ययश कीर्त्त्यश कीर्तिभ्याद्वाविनितस्यैवचशरीरस्थस्यऔदारिकशरीरऔदारिकागोपागहुडकसस्थानसेवार्त्तसहननउपघातप्रत्येक इतिषट्

प्रकृतय प्रक्षिप्यतेतिर्यगानुपूर्वीचापनीयते जानापड्विंशति अत्रा-
पिभगास्त्रय तेचप्रागिवद्रष्टव्या तत्र शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्य अप्र-
शस्तविहायोगतिपराघातयो प्रक्षिप्तयोरष्टाविंशति अत्रयश
कीर्त्त्ययश कीर्त्तिभ्याद्वौभगौअपर्याप्तरूपशस्तविहायोगत्योरत्रोदया-
भावात । तत्र प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासेक्षिप्तेएकोन-
त्रिंशत, अत्रापितावेवद्वौभगौ अथवा शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्व-
सेअनुदितेउद्योतनाम्निउदितेएकोनत्रिंशतअत्रापिप्रागिवद्वौभगौ-
सर्वेप्येकोनत्रिंशतित्रीन्द्रियस्यचत्वारोभगा ततोभाषापर्याप्त्यापर्याप्त-
स्यउच्छ्वाससहितायाभेकोनत्रिंशति, सुस्वरदुःस्वरयोरेकतरस्मिन्प्र-
क्षिप्तेत्रिंशत्भवति । अत्रसुस्वरदुःस्वरयश कीर्त्त्ययश कीर्त्तिपदैश्च-
त्वारोभगा एवसर्वसख्ययाद्वीन्द्रियाणाद्वाविंशतिभगा एव त्री-
न्द्रियाणाद्वाविंशतित्रीन्द्रियजाति प्रक्षेप्या एव चतुरिन्द्रियाणाम-
पिद्वाविंशतिभगाश्चतुरिन्द्रियजात्याबाच्या इतिसर्वसख्ययाविकले-
न्द्रियाणाषट्षष्टि भगा तदुक्त तिगतिगडुचउछच्छउविगलाणछसट्ठि-
होइतिण्हपि प्राकृततिर्यक्पचेन्द्रियाणाउदयस्थानानिषट्तद्यथाएक-
विंशति षड्विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत् एकत्रि-
शत, तत्रतिर्यग्गतिस्तिर्यगानुपूर्वीपचेन्द्रियजाति त्रसनामबादरनाम-
पर्याप्तापर्याप्तयोरेकतरत् सुभगदुर्भगयोरेकतरत् अनादेयआदेययोरे-
कतरद्यश कीर्त्त्ययश कीर्त्योरेकतरदित्येतानत्रप्रकृतयोद्वादशस-
ख्याभिर्ध्रुवोदयाभि सहएकविंशति एषाचापातरालगतौवर्त्तमान-
स्यतिर्यक्पचेन्द्रियस्यवेदितव्या, अत्रभगानव, पर्याप्तकनामोदये-
वर्त्तमानस्य सुभगदुर्भगाभ्याआदेयानादेयाभ्यायश कीर्त्तिअयश
कीर्त्तिभ्याचाष्टौभगा अपर्याप्तकनामोदयेवर्त्तमानस्यदुर्भगाद्यप्रश-
स्तप्रकृत्यासहएकएव, अन्येपुन सुभगादेययुगपद्दुर्भगानादेय-
युगपत्उदेतीतितदायश अयशोभ्याचत्वारोभगाएक अपर्याप्तस्य-

इत्येवपचमगाभवनि । तद्भावनीयनन शरीरस्थस्यआनुपूर्वीमप- नीयऔदारिकऔदारिकागोपागपणा सस्थानानाणकनमतसस्थान- पणासहननानामेकसहननउपघातप्रत्येकमितिषट्कमक्षिप्यते ततो- जातिषट्कप्रक्षिप्यतेततोजानापञ्चविंशति अत्रभगानाद्वेशतेएकोन- नवति अधिकेतत्रपर्याप्तस्यषड्भि सस्थाने षड्तेयषड्भि सह- ननैर्गुणिता षट्त्रिंशत्तेच सुभगदुर्भगाभ्याद्वासप्तति आदेयाना- देयाभ्याचतुश्चत्वारिंशच्छततदेवयश अयशोभ्याद्विशतेअष्टाशीत्य- धिकेभवत , अपर्याप्तकस्यहुडकमस्थानसेवार्तदुर्भगानादेयायश- कीर्तिपदैरेक इतिअस्यामेवपञ्चविंशतौशरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपरा- घातप्रशस्ताप्रशस्तविहायोगतिमध्ये अ यतरगतौचक्षिप्तायाअष्टाविं- शति तत्रयेप्राकपर्याप्तानाद्विशत अष्टाशीत्यधिकेउक्तेतेअत्रवि- हायोगत्योरन्यतरगत्याद्वाविंशतिर्गुणितेअत्रभगानापचशतानिपट्सप्तत्य- धिकानिभवति । तत प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासेक्षि- प्तेएकोनत्रिंशत् अत्रापिभगा प्राग्वत्पचशतानिषट्सप्तत्यधि- कानि अथवाशरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्य उच्छ्वासेअनुदितेउद्योतना- म्निउदितेएकोनत्रिंशद्भवतिअत्रापिभगा पचशतानिषट्सप्तत्यधि- कानिसर्वसर ययाभगानामेकोनत्रिंशद्विपचाशदधिकानि एकादश- शतानि । ततोभाषापर्याप्त्यापर्याप्तस्यसुस्वरदु स्वरयोर यतरस्मिन् प्रक्षिप्तेत्रिंशद्भवति, अत्रयेप्रागुच्छ्वासेनपचशतानिषट्सप्तत्यधिकानि उक्तानितायेस्वरद्विकेनगुण्यन्तेततोजातानिद्विपचाशदधिकानिए- कादशशतानि, अथवाप्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यस्वरेअनुदिते उद्यो- तनाम्निउदितेत्रिंशद्भवति । अत्रापिभगानाप्राग्वत्पचशतानिषट्- सप्तत्यधिकानिसर्वसर ययात्रिंशतिभगानांसप्तदशशतानिअष्टाविंशत्य- धिकानि, तत स्वरसहितायात्रिंशतिउद्योतनाम्निप्रक्षिप्तेएकत्रिंश द्भवति । अत्रयेप्राक्स्वरसहितायात्रिंशतिभगाद्विपचाशदधिकएका-

दशशतसरव्याउक्तास्तएवात्रापिद्रष्टव्या सर्वसंख्ययाप्राकृततिर्यक्पंचेंद्रियाणांउदयभंगाएकोनपंचाशच्छतानिषडधिकानि, इदानींवैक्रियतिरश्चांउदयस्थानानि पंचतद्यथापंचविंशति सप्तविंशति अष्टविंशति एकोनत्रिंशत् त्रिंशत्, तत्रवैक्रियांगोपांगसमचतुरस्रउपघातप्रत्येकमितिपंचप्रकृतय प्रागुक्तायांतिर्यक्पंचेंद्रिययोग्यायामेकविंशतौप्रक्षिप्यते तिर्यगानुपूर्वीचापनीयतेतत पंचविंशतिर्भवति। अत्रसुभगदुर्भगाभ्यामादेयानादेयाभ्यायश अयशोभ्याचाष्टौभंगा, तत शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपराघातेप्रशस्तविहायोगतौचप्रक्षिप्तायां सप्तविंशति तत्रापिप्रागिवाष्टौभंगा तत प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासनाम्निप्रक्षिप्तेअष्टाविंशतिर्भवतिअत्रापिप्रागिवाष्टौभंगा अथवा उच्छ्वासेअनुदितेउद्योतेउदितेप्रागिवाष्टौभंगा इतिषोडशतत भाषापर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वाससहितायां अष्टाविंशतौसुस्वरेक्षिप्तेएकोनत्रिंशत् अत्रापिप्रागिवाष्टौभंगा तस्याउच्छ्वाससहितायां अष्टाविंशतौस्वरेअनुदितेउद्योतनाम्निउदितेएकोनत्रिंशत् सर्वसंख्ययाएकोनत्रिंशतिषोडशतत समुच्छ्वासस्वरसहितायांएकोनत्रिंशतिउद्योतेक्षिप्तेत्रिंशत् अत्रापिप्रागिवाष्टौभंगा सर्वसंख्ययावैक्रियतिरश्चांपंचपंचाशत्भंगा सर्वेपांतिर्यक्पंचेंद्रियाणांसर्वसंख्यया एकोनपंचाशच्छतानिद्विपष्ठ्यधिकानिभंगानामवसेयानि, सामान्येनमनुष्याणामुदयस्थानानिपंचतद्यथाएकविंशति षड्विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् त्रिंशत्, एतानिसर्वाण्यपियथाप्राक्तिर्यक्पंचेंद्रियाणां उक्तानितथैवात्रापिवक्तव्यानिनवरंतिर्यग्गतितिर्यगानुपूर्वीस्थाने मनुष्यगतिमनुष्यानुपूर्व्यौवक्तव्ये ये एकोनत्रिंशत्त्रिंशच्चउद्योतसहितावक्तव्यावैक्रियाहारकसंयतान्मुक्त्वाशेषमनुष्याणांउद्योतोदयाभावात्तत्र एकोनत्रिंशतिभंगानांपंचशतानिपट्सप्तत्यधिकानित्रिंशत्येकादशशतानिद्विपंचाशदधिकान्येवावगंतव्यानिसर्वसंख्ययाप्राकृतमनुष्याणांषड्विंश-

निशतानिद्विकाधिकानिभगानाभवनि, वैक्रियमनुष्याणामुदयस्था-
मानिपचनवयापचविंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिं-
शत्त्रिंशत्, तत्रमनुष्यगतिपचेंद्रियजातिवैक्रियवैक्रियांगोपांगसमचतु-
रस्र उपघातत्रसनामपर्याप्तनामप्रत्येकनामसुभगदुर्भगयोरेकतरदादे-
यानादेययोरेकतरद्यश कीर्त्ययश कीर्त्योरेकतर दितिप्रयोदशप्र-
कृतयोद्वादशसर यामिध्रुवोदयामि सहपचविंशति अत्रसुभगदुर्भ-
गानादेयानादेययश कीर्त्ययश कीर्तिपदरष्टौभगा देशविरतानां-
सयतानाचवैक्रियकुर्वतासर्वेप्रशस्ताएवभगावेदितव्यास्तत उत्तर-
वैक्रियशरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपराघातेप्रशस्तविहायोगतौचप्रक्षिप्तायां
सप्तविंशति अत्रापितएवाष्टभगा तत प्राणापानपर्याप्त्यापर्या-
प्तस्यउच्छ्वासेक्षिप्तेअष्टाविंशति अत्रापिप्रागिवाष्टौभगा अथवा
सयतानामुत्तरवैक्रियकुर्वताशरीरपर्याप्त्यापर्याप्तानाउच्छ्वासेअनुदिते
उद्योतनाम्निउदितेऽष्टाविंशति अत्रएकएवभग सयतानादुर्भगा-
नादेयायश कीर्त्युदयाऽभावात्, सर्वसख्ययाअष्टाविंशतौवैक्रियवता-
नवभगा ततोभाषापर्याप्तापर्याप्त्यस्यउच्छ्वाससहितायाअष्टाविंश-
तौसुस्वरेक्षिप्तेएकोनत्रिंशद्भवति । अत्रापिप्रागिवाष्टौभगा अथवा
सयतानास्वरेअनुदितेउद्योतनाम्निउदितेएकोनत्रिंशद्भवति अत्रापि
प्रागिवैकएवभग सर्वसख्ययावैक्रियएकोनत्रिंशति भगानवसुस्वर-
सहितायाएकोनत्रिंशतिसयतानाउद्योतनाम्निउदितेत्रिंशद्भवति, अ-
त्रापिप्रागिवैकएवभग सर्वसख्ययावैक्रियमनुष्याणाभगा पचत्रिं-
शत्, आहारकसयतानाउदयस्थानानिचत्वारिभवनि । तद्यथा-
पचविंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्तत्रआहारक-
आहारकांगोपांगसमचतुरस्रसस्थानउपघातप्रत्येकमितिपचप्रकृतय
प्रागुक्तायामनुष्यगतिप्रायोग्यायाएकविंशतौप्रक्षिप्यतेमनुष्यानुपूर्वी-
चापनीयते ततोजातापचविंशति केवलमिहपदानिसर्वाण्यपिप्रश-

रता ये नभवन्ति, आहारकस्यापनानाद्दुर्भगाऽनादेयाऽयश कीर्त्त्युदया-
भावात् अत एकएवात्रभगस्तत शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपगतावे-
प्रशस्तविहायोगतौचप्रक्षिप्तायांसप्तविंशति अत्राप्येकएवभग तत
प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्योच्छ्वासेक्षिप्तेअष्टाविंशतिर्भवति अत्रा-
प्येकएवभग अथवाशरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासेअनुदितेउद्यो-
तनाम्निउदितेअष्टाविंशतिर्भवति । अत्राप्येकएवभग सर्वसंख्यया-
अष्टाविंशतौद्वौभगौ ततोभाषापर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वाससहितायां
अष्टाविंशतौसुस्वरेक्षिप्तेएकोनत्रिंशत्भवति। अत्राप्येकएवभग अथवा
प्राणापानपर्याप्तस्यसुस्वरेअनुदितेउद्योतनाम्निउदितेएकोनत्रिंशत्अ-
त्राप्येकएवभग सर्वसंख्ययाएकोनत्रिंशतिद्वौभगौ। ततोभाषापर्या-
प्त्यापर्याप्तस्यसुस्वरसहितायां एकोनत्रिंशतिउद्योतेक्षिप्तेत्रिंशद्भवति।
अत्राप्येकएवभग सर्वसंख्ययाआहारकशरीरिणांसप्तभगा केवलि-
नामुदयस्थानानिदश,तद्यथाविंशति एकविंशति षड्विंशति सप्त-
विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत् एकत्रिंशत्नवअष्टौचतत्र-
मनुष्यगतिपंचेंद्रियजातित्रसनामबादरनामपर्याप्तनामसुभगमादेययशः-
कीर्तिरित्यष्टौध्रुवोदयाभि द्वादशसंख्याभि सप्तविंशति अत्रैकोभग
एषाचातीर्थकरकेवलिन समुद्घातावस्थायांकार्मणकाययोगेवर्त्तमा-
नस्यवेदितव्यासैवविंशतिस्तीर्थकरनामसहिताएकविंशति अत्रैकभग
एषाचातीर्थकरकेवलिन समुद्घातगतस्यकार्मणकाययोगेवर्त्तमान-
स्यवेदित मानथानस्यामेवविंशतौ। औदारिकशरीरषण्णांसंस्थाना-
मेकतमत्संस्थानऔदारिकांगोपांगवज्रऋषभनाराचसंहननउपघात
प्रत्येकमितिषट्प्रकृतय प्रक्षिप्यन्तेतत षड्विंशतिर्भवति इतिए-
षाचतीर्थकरकेवलिन औदारिकमिश्रकाययोगेवर्त्तमानस्यवेदित-
व्याअत्रषड्भि संस्थाने षड्भगा भवति, परंसामान्यमनुष्येषुगृ-
हीतत्वात् अत्रनगृहीताइत्येकएवगृहीत एषैवषड्विंशतिस्तीर्थकर-

सहितासप्तविंशतिर्भवति एषातिर्थंकरकेवलिन औदारिकमिश्रकाय-
योगेवर्त्तमानस्यावसेया ॥ अत्रसंस्थानसमचतुरस्रमेवात्रसेय । तत
एकएवात्रभग सप्तविंशति परागानोच्छ्वासप्रशस्ताऽप्रशस्ताविहायोगत्य
हायोगत्य तत्रविहायोगतिसुस्वरद्व स्वगन्यतरस्वरसहितात्रिंशत एषा-
ऽतीर्थंकरकेवलिन औदारिक काययोगे वर्त्तमानस्यावगन्तव्या अत्र-
भगाश्चतुर्विंशति जीवमेनामभवति । तथापिनपृथग्गृहीता-
मनुष्योदयेगृहीतत्वात् एषैवत्रिंशत्तीर्थंकरनामसहिताएकत्रिंशत्भ-
वति साचसयोगिकेवलिनस्तीर्थंकरस्योदारिकयोगे वर्त्तमानस्यावसेया,
एषैवैकत्रिंशद्वाग्योगेनिरुद्धेत्रिंशद्भवति उच्छ्वासेऽपिचनिरुद्धेएकोनत्रिंशत्अतीर्थंकरस्य केवलिन प्रागुक्तात्रिंशत्वाग्योगेनिरुद्धेसये-
कोनत्रिंशत्भवति । अत्रापिसंस्थानविहायोग यावद्वादशभगाभ-
वति, तथानगण्यते कमप्रकृत्यान्तरगृहीतत्वात् । तथाउच्छ्वास-
निरुद्धेअष्टाविंशति अत्रापिभगा पूर्ववत् । तथामनुष्यगतिपचे-
न्द्रियजातित्रसबादरपर्याप्तसुभगआदेययश कीर्तिस्तीर्थंकरमितिनवो-
दय एषचतीर्थंकृतोऽयोगिकेवलिन चरमसमयेवर्त्तमानस्यप्राप्यते-
सएवतीर्थंकरनामरहित अष्टोदय इहकेवलिन उदयस्थानान्ये-
विंशत्येकविंशतिसप्तविंशयेकोनत्रिंशत्त्रिंशत् एकत्रिंशन्नवाष्टरूपेषु
उदयस्थानेषुप्रत्येक एकैकोविशेषभग इत्यष्टौभगा तत्रविंश षष्ट-
कयोर्भगावतीर्थंकरकृतौशेषेषुषट्सुदयस्थानेषुतीर्थंकृत षड्भगा ।
सर्वसख्ययामनुष्याणा उदयस्थानेषुषड्विंशतिशतानिद्विपचाशद-
धिकानिदेवाना उदयस्थानानिपञ्चतद्यथाएकविंशति पचविंशति
सप्तविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत् तत्रदेवगतिदेवानु-
पूर्वीपचेन्द्रियजातित्रसबादरपर्याप्तसुभगदुर्भगयोरेकतर आदेयाऽना-
देययोरेकतरयश अयशसोरेकतर इतिनवप्रकृतयोद्वादशसराध्रुवोदयाश्च
ध्रुवोदयाश्च सहएकविंशति अत्रसुभगदुर्भगादेयानादेययश अयश.

पदैरष्टौभगादुर्भगअनादेयापयशाशुदय पिशाचादीनामरागन प
तस्यशरीरस्थस्यवैक्रियवैक्रियागोपाग उपघातप्रत्येक समचतुरस्र
संस्थानमितिपचमक्षिप्त्य मक्षिप्यते देवानुपूर्वीचापनीयते ततोजा-
तापचविंशति अत्रापितेएवाष्टौभगा तत शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्य-
पराघातेप्रशस्तविहायोगतौचक्षिप्तायासप्तविंशति अत्रापितेएवाष्टौ-
भगा देवानामप्रशस्तखगतेरुदयाभावान्नतद्धितविकल्पानभवति
तत प्राणापानपर्याप्त्योच्छ्वासेक्षिप्तेअष्टाविंशति तत्रापितएव-
वाष्टौभगा अथवा शरीरपर्याप्तापर्याप्तस्यउच्छ्वासेअनुदितेउद्यो-
तनाम्निउदितेअष्टाविंशति अत्रापिमाणिवाष्टौभगा सर्वसंख्यया-
अष्टाविंशतौषोडश,ततोभाषापर्याप्त्यापर्याप्तस्यसुस्वरेक्षिप्तेएकोनत्रिं-
शद्भवति । अत्राप्यष्टौभगा दु स्वरोदयोदेवानानभवति । अथवा
प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यसुस्वरे अनुदितेउद्योतनाम्निउदितेएकोन-
त्रिंशद्भवति । उत्तरवैक्रियदिकुर्वत देवस्योद्योतोदयोलभ्यतेअत्रापित-
एवाष्टौभगा सर्वसंख्ययाएकोनत्रिंशतिषोडशभगा ततोभाषापर्या-
प्त्यापर्याप्तस्यसुस्वरसहिताया एकोनत्रिंशति उद्योतेक्षिप्तेत्रिंशद्भवति,
अत्रापितएवाष्टौभगा सर्वसंख्ययादेवानाचतु षष्टिभगा तथानैरयि-
काणाउदयस्थानानिपच, तद्यथाएकविंशति पचविंशति सप्तविं-
शति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् । तत्रनारकगतिनारकानुपूर्वी
पचेंद्रियजातित्रसबादरपर्याप्तनामदुर्भगअनादेयअयश इत्येता
नवध्रुवोदयाभि सहएकविंशति एषभग कार्मणशरीरस्थ-
स्यतत्रसर्वपदाऽप्रशस्तत्वेनएकएवभग तत शरीरपर्याप्त्यापर्या-
प्तस्य वैक्रियवैक्रियागोपागहुडसस्थानउपघातप्रत्येकमितिपचमक्षिप्त्य
प्रक्षिप्यतेनरकानुपूर्वीचापनीयतेतत पचविंशतिर्भवतिअत्राप्येकए-
वभग तत शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपराघाताप्रशस्तविहायोगतौक्षि-
प्तायोसप्तविंशति अत्राप्येकएवभग नैरयिकाणापराघात, प्रदेशो-

दयरूप पूर्वाचार्यैर्गृहीत ततः प्राणापानपर्याप्त्यउच्छ्वासे क्षिप्ते अष्टविंशतिस्ततः भाषापर्याप्त्यापर्याप्तस्यद्वे स्वरे क्षिप्ते एकोनत्रिंशत्। अत्रापिएकएवभंगः सर्वसंख्ययानैरयिकाणांपंचभंगाः । सत्क्ष्मोदयस्थानभंगाः पुनः सप्तसप्ततिशतानिएकनवत्यधिकानि । सम्प्रतिकस्मिन्उदयस्थानेकतिभंगाः प्राप्यन्ते इतिचिंतायांतन्निरूपणार्थमाह ॥ १९१ ॥

एगवयालिक्कारस, तित्तीसा छस्सयाणितित्तीसा ।
वारससत्तरससयाणि, हिगाणिविपंचसीइहि॥१९२॥
अउणत्तासिक्कारस, सयाणिहियसत्तरपंचसट्ठीहि ।
एक्केक्कगचउवीसा, द्वट्ठुदयतेसुउदयविही ॥१९३॥

टीका—एगवयालिक्कारस इत्यादि ॥ विंशत्यादिअष्टपर्यंतेषुद्वादशसुउदयस्थानेषु यथासंख्यमएकादिसंख्याउदयविकल्पप्रकाराः, उदयभंगाइत्यर्थः तत्रविंशतावेकोभंगः सचातीर्थकरकेवलिनः एकविंशतौद्वाचत्वारिंशत्तत्रएकेन्द्रियानधिकृत्यपंच, विकलेन्द्रियानधिकृत्यनव, पंचेन्द्रियतिरश्चोऽधिकृत्यनव, मनुष्यानधिकृत्यनव, तीर्थकरमधिकृत्यैकः सुरानधिकृत्याष्टौ, नैरयिकानधिकृत्यएकः इतिद्वाचत्वारिंशत्चतुर्विंशतावेकादशतेचएकेन्द्रियानधिकृत्यप्राप्यन्ते, पंचविंशतौत्रयस्त्रिंशत्भंगाः ,तत्रैकेन्द्रियानधिकृत्यसप्त वैक्रियतिरश्चाअष्टौ, वैक्रियमनुष्यानधिकृत्याष्टौ, आहारकसंयतानाश्रित्यएकः, देवानधिकृत्याष्टौ, नैरयिकानधिकृत्यैकः इतित्रयस्त्रिंशत्, षड्विंशतौषट्शतानि । तत्रएकेन्द्रियानाश्रित्यत्रयोदशविकलानांत्रयाणांतिरश्चांद्वेशतेएकोननवत्यधिके, प्राकृतमनुष्याणांद्वेशतेएकोननवत्यधिके इतिषट्शतानि, सप्तविंशतौत्रयस्त्रिंशत् तत्रैकेन्द्रियाणांषड्वैक्रिय-

तिरश्चाअष्टौ वैक्रियमनुष्याणाअष्टौ आहारकमुनीनामेकं केवलिना-मेकं देवानाअष्टौ नरयिकाणाएकं इतिनवपरिशत् । अष्टाविंश-त्यधिकानिद्वादशशतानि, तत्रविकलेन्द्रियानधिकृत्य पटदप्राकृतानि-रश्चापञ्चशतानि पटसप्तत्यधिकानि, वैक्रियतिरश्चापोडश, प्राकृत-मनुष्याणापञ्चशतानि पटसप्तत्यधिकानि, वैक्रियमनुष्याणानव, आहारकसप्तनानाद्वेदेवानधिकृत्य पोडश,नारकानधिकृत्यएकं इति-एकोनत्रिंशतिपञ्चाशीत्यधिकानि सप्तदशशतानि । तत्रविकलाना-द्वादश, प्राकृततिर्यग्पञ्चेन्द्रियाणाद्विपञ्चाशदधिकानिएकादशशतानि, वैक्रियतिर्यग्पञ्चेन्द्रियाणापोडश, प्राकृतमनुष्याणापञ्चशतानि पट-सप्तत्यधिकानि, वैक्रियमनुष्याणानवआहारकमुनीनाद्वौतीर्थंकरगणा एकं देवानापोडश नेरयिकाणाएकं इतित्रिंशतिएकोननिशच्छता-निसप्तदशाधिकानि, तत्रविकलानाअष्टादश, प्राकृततिरश्चासप्त-दशशतानि अष्टाविंशत्यधिकानि । वैक्रियतिरश्चाअष्टौ, प्राकृतम-नुष्याणा एकादशशतानिद्विपञ्चाशदधिकानि, वैक्रियमनुष्याणा, एकं, आहारकाणाएकं, केवलिनाएकोदेवानाअष्टौ इतिएक-त्रिंशतिएकादशशतानि पञ्चपष्टयधिकानि, तत्रविकलानाद्वादश, प्राकृततिरश्चाद्विपञ्चाशदधिकानिएकादशशतानि, तीर्थंकरमधिकृ-त्यैकं, एकोनत्रोदये,एकं अष्टोदये,सर्वोदयस्थानेषुभगसख्यासप्त-तिशतानि एकनवत्यधिकानिइत्युक्तानिनामकर्मण उदयस्थानानि॥ ॥ अथमार्गणासुबंधसख्यानायनायगाथाह ॥ १९३ ॥

इगविगलथावरेसु, अजिणनेउव्वाअन्नाणतिरीएसु ।
मिच्छिअसन्निअभव्वे, अजिणाहारासजिणअजये ॥१९४

टीका—इगविगल इत्यादि ॥ एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय पृथि-व्यादिस्थावरपञ्चकलक्षणासु नवमार्गणासु अजिणत्तिजिननामयुक्ता-

प्रायोग्योदय	२०	२१	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	९	८	
एकेंद्रि		५	११	[redacted]	१३	६		०					४२
बेंद्री		३			३		२	४	६	४			२२
तेंद्री		३			३		२	४	६	४			२२
चउरेंद्री		३			४		२	४	६	४			२२
प्रा ति		९			२८९		५७६	११५२	१७२८	११५२			४९०६
वैति				८		०	१६	१६	८				५६
प्रा मनु		९			२८९		५७६	५७६	११५२				२६०२
वै मनु				८		८	९	९	१				३५
अहा				१		१	२	२	१				[redacted]
केवली	१	१				१		१	१	१	१	१	८
देवता		८		८		८	१६	१६	८				६४
नारकी		१		१		१	१	१					५
सर्व संख्या	१	४२	११	३३	६००	३३	१२०२	१७८९	२१६९		१	१	७५९१

येव नभगा वैक्रियोपलक्षिताइत्यनेनदेवनारकप्रायोग्याये भगास्तेन-प्राप्यतेअन मनुष्यप्रायोग्याजिननामयुक्ता नव, देवप्रायोग्याअ-ष्टादश, नैरयिकप्रायोग्यएक एव अष्टाविंशतिर्नभवति शेषा १३९१७ प्राप्यते, तथा अज्ञानत्रयतिर्यग्गतिमिथ्यात्वअसंज्ञिमा-र्गणासु अभव्यलक्षणमार्गणासु जिननामाहारकरहिता इत्यनेन-मनुष्यप्रायोग्यानवदेवप्रायोग्याएकोनत्रिंशत् प्रत्ययाअष्टाविंशत्प्र-त्ययएक एकत्रिंशत्प्रत्ययप्रायोग्यएक एवएकोनत्रिंशतिवर्ज्या शेषा १३९२६ भगाभवन्ति । अजये इत्यादि अविरतमार्गणायासजिना-जिननामयुक्ता १३९३४ भगाभवंति शेषादशनभवति ॥१९४॥

अर्थ —हवे नामकर्मना भागा कहे छे । एकेंद्रिमार्गणाये विकल ३ मार्गणाये जिननामना तथा वैक्रियना भागा नथी बीजा सर्व छे ॥ १३९२७ भागा छे ३ अज्ञानमार्गणाये तिर्यंचगति मिथ्यात्वे १ असंज्ञी १ अभव्ये जिननाम आहा-रकना भागा नथी १३९२६ भागा छे ॥ १९४ ॥

अविगल (इगतिरि) विउविर्तिरिया, समुच्छासम्म-नाणुवहिदसे।
चरणतिदेसेसुरजा, अहक्सायदुकेवलेणवा ॥१९५॥

टीका—अविगलविउविनयतिरियाइत्यादि ॥ विकलप्रत्यया-एकपंचाशतउपलक्षणत एकेंद्रियप्रायोग्याश्चत्वारिंशत् नैरयिकएक तिर्यग्प्रायोग्याद्विनवतिशतसप्तदशाधिकान्भगान् वर्जयित्वाशेषाम-नुष्यप्रायोग्यादेवप्रायोग्या षट्चत्वारिंशच्छतपंचत्रिंशदधिकभगाना-पदसमुच्छत्तिसम्यग्दर्शनग्रहणे गुणस्थानेयेउत्तिष्ठन्तितेसम्यक्त्वत्रिके-ज्ञानत्रिकेअवधिदर्शनेप्राप्यते । चारित्रत्रयेदेशविरतौदेवप्रायोग्या-स्तत्रदेशविरतौअष्टाविंशतिप्रत्ययाअष्टौएकोनत्रिंशत्प्रत्ययाअष्टौएव-

षोडशभगाभवति । परिहारविशुद्धौअष्टाविंशतिषुवैअष्टौएकोनत्रिंशद्बंधेअष्टौ, त्रिंशद्बंधेएक, एकत्रिंशद्बंधेएक- एवअष्टादशसामायिकछेदोपस्थापनीयेतेणपर्याप्ताअष्टादश, एकविधबंधसंभवएक एवएकोनविंशति भगाप्राप्यते । यथाख्यातचारित्रेकेवलद्विके- नामकर्मबंधाऽभावात्तननामबंधभगाभवति ॥ १९५ ॥

टबार्थ—विकुलप्रत्ययीभगा वैक्रियना भगा तिर्यंचना भगा टालीये समकितना उत्कृष्टा भगा ३५ पामीये, समकित ३ ज्ञान ३ अवधिदर्शनने विषे पामीये, चारित्र तीन देशविरतीने विषे देवनाप्रायोग्य १९ पामीये । यथाख्यातचारित्रे केवल २ ने विषे नथी नामकर्मना बंधना अभावथी ॥ १९५ ॥

देवेपरित्तवायर, तिरिअनरासेसयासुठाणभवा ।
भगामग्गणठाणे, नामबंधस्सणेयवा ॥ १९६ ॥

टीका—देवेपरित्तबायरइत्यादि ॥ देवगतौबादरप्रत्येक एकेंद्रियप्रायोग्याश्चतुर्विंशतिद्विन्त्रिशतषोडशनियमप्रत्यया पञ्चरत्वारिंशत्सप्तदशाधिकभगा प्राप्यतेत्रयोदशसहस्राष्टशनपद्मधाशत् प्राप्यते । शेषासुमार्गणासुठाणभवा गुणस्थानभवाइत्यनेनगुणस्थानानियस्यामार्गणायायावतिनस्यामार्गणाया तावन्तएवभगाप्राप्या ॥ नरकगतौएकेंद्रियप्रायोग्याद्यत्वारिंशत्विकलप्रायोग्या एकपंचाशत् नियमनुष्यापर्याप्तप्रायोग्यौपचविंशतित्रसमंगौद्वौदेवप्रायोग्याअष्टादश, नैरयिकस्य एकविधबंधसंभव एक इतिएकशनत्रयोदशभगानवर्जयित्वाशेषा १३८३२ भगानभवंति, मनुष्यगतिपचेंद्रियजातित्रसकाययोगत्रयवेदत्रयकषायचतुष्टयचक्षुर्दर्शनशुक्लेश्याभव्यसंज्ञि, आहारकलक्षणासुसर्वेनामबंधभगा प्राप्यतेकृष्णादिलेश्यात्रये-

एकवि ग्यवसभवोद्वौभगौनभवत तेज पद्मलेश्यायाएकवि यवस-भवोभग एक नप्राप्यतेशेषा प्राप्यते ॥ १९६ ॥

टबार्थ —देवगतिने विषे प्रत्येक बादरएकेंद्रिय प्रायोग्य-भगा तथा तिर्यंच प्रायोग्य मनुष्य प्रायोग्य १३८५४ भागा पामीये । शेष मार्गणाये गुणठाणे जिणे भगा होवे जिणे मार्ग-णाये जेटला गुणठाणा होवे तेटला भागा जाणवा ॥१९६॥

अणहारेनिरयभवा, आहारगतणुभवायनोभगा।
मणनाणेसामईया, भगाअहनामउदयस्स ॥१९७॥

टीका—अणाहारेनिरयभवाइत्यादि ॥ अनाहारकमार्गणाया-नरकभन एक आहारकनवसभवोद्वौएकविधयवसभव एकइति-भगचतुष्टयवर्जयित्वाशेषा १३९४१ भगा प्राप्यते ॥ नारक-प्रायोग्याआहारकद्विकप्रायोग्यामगानभवति, मन पर्यवज्ञानेसामा-यिकचारित्रसभनाएकोननिंशतिभगा इत्युक्तामार्गणाहुनामग्रथभगा अथनामकर्मण उदयभगामार्गणासु ॥ १९७ ॥

टबार्थ —अनाहारकमार्गणाए नारकी प्रायोग्य अहारकश-रीर प्रायोग्य भगा नथी, बीजा १३९४१ भगा छे । मन पर्या-यज्ञानमध्ये सामायिकचारित्रमध्ये जे भागा छे । हवे नामक-र्मना उदयना भगा कहे छे ॥ १९७ ॥

गुणट्ठाणगउदयाओ, उदयसामित्तओयनेयव्वा ।
गोएविमग्गणाए, भगागुणठाणपच्चईया ७ ॥१९८॥

* पाठान्तरम्

कम्मसवेहगथाओ, भगागुणठाणसग्गणेनेया ।

टीका—गुणट्ठाणगउदयाओइत्यादि ॥ गुणस्थानकेषुउदया-इतिउदयस्थानानि तथा उदयस्वामित्वेयामकृति यस्यामार्गणाया-उदयेप्राप्यते तन्प्रकृतिसभवाभगा तस्यामार्गणायाज्ञान यास्ते-चअस्मत्कृतकर्मग्रंथग्रथत गुणस्थानकेषुमार्गणास्थानकेषुज्ञेया तत्रोक्तत्वादिहनोक्ता तथापि विचारसारयमकर्त्तोनेया अस्य-ग्रन्थस्योपज्ञमेवास्ति । विचारसारसूत्रगाथा तथा मदावबोधशिष्य-जनोपकारायटबार्थं तथा यन्त्रसर्वद्वारसूचक नच्चावृत्तिरितिसवा-म्यास स्वोपज्ञएवज्ञान यइति ॥ १९८ ॥

टबार्थ —गुणठाणाना उदयथी तथा स्वामित्वथी उदयना ५ भागा मार्गणाये जाणवा । गोत्रकर्मना ७ भागा छे, तेपण मार्गणाए गुणठाणानी रीते जाणवा ए भगमर्व ए वर्णीकृत स-वेध प्रकरणथी जाणज्यो ॥ १९८ ॥

बारसपणसट्ठिसया, भगामोहस्सतहयपयवन्दा ।
चुलसीसयसत्तुत्तरि, भेयापरिणामभेएण ॥ १९९ ॥

टीका—बारसपणगट्ठियाइत्यादि ॥

टबार्थ —बारसे पासठ मोहनीना भागा छे ५२ चोवीसी तेने चोवीसगुणा करता थया १२४८ तेमध्ये सत्तर भागा भेळीये तेवारे बारसेने पासठ थाय । तिमज पदवर्ण चोरासीसो सत्योत्तहरि थाये, दसने उदये चोवीसी १ भगा २४ तेहने दसगुणा करता २४० पदवर्ण थाये । नवने उदये चोवीसी ६ तेहना भगा १४४ तेहने नवगुणा करता १२९६ पदवर्ण थाये ए रीते सर्वत्र लेज्यो ए भगा एटला जे कह्या ते स्यामाटे

जे परिणामने भेदे जे परिणामनो नरतमयोगवर तोपिण तर तमवद तोपण तरतमना थाये ॥ १९९ ॥

तेरसहस्सानवसय, पणयालानामवधभगाय ।
सत्तसहस्सासगसय, इगनवईउदयभगाय ॥२००॥

टीका—तेरसहस्सानवसयइत्यादि गाथाद्वयसुगमप्रभंगाधिकार यार याया यार यातत्वात् इहन यार यानम् ॥ अयग्रथोपसहारार्थं भव्यजीवानायथार्थागमप्रतीनिवहृगानार्थंचाह ॥२००॥

टबार्थ—नामकर्मनी तेरहजार नवमे पीरतालीस नामकर्मनाबधना भगा थाय छे २३ ने बधे ४ भगा २५ बधे २५ भगा २६ ने बधे सोल भगा २८ ने बधे नव भगा २९ ने बधे भाणसो अडतीस भगा छे ३० बधे ४६ सो इकतालीस भागा छे ३१ बधे एक भगो छे, एकने बधे एक भगो छे, ते मिल्या तेरहजार नवसोपेंतालीस भगा छे, स्वना नामकर्मना उदयना भगा २०॥२० ने उदये एक भगो छे, २१ ने उदये ४२ भगा छे, २४ ने उदये इग्यार भागा छे, २५ ने उदये तेत्रीस भगा छे, छवीसने उदये ६०० भागा छे, २७ ने उदये ३३ भागा छे, २८ ने उदये १२०२ भागा छे २९ ने उदये १८८५ भागा छे, ३० ने उदये २९१७ भागा छे, ३१ ने उदये ११६५ भगा छे, नवमे उदये १ भागो छे आठने उदये १ भागो छे, सर्व मिल्या सातहजार सातसोनेउ भागा उदयना छे ॥ २०० ॥ ,

एवसुअउदहीओ, नेयद्यसव्ववत्थुविन्नाण ।
जनाऊणसुविहिआ, सच्चधम्मपयासति ॥२०१॥

टीका—एवसुअउदही ओइत्यादि ॥ एवममुनाप्रकारेणयथागमरीत्याकेवलिज्ञानावबोधवेदितसर्वतत्त्वानावचनप्रमाणेन श्रुत आचारांगादिगणिपिटकलोकालोकगतसर्वभावपर्यायोपदेशकपरमतत्त्वमार्गदर्शनप्रदीपसूत्रनिर्युक्तिभाष्यचूर्णिटीकापरंपराऽनुभवागमबोधगम्य नयनिक्षेपभंगगमागाधउदधिरिवउदधि श्रुतमेवोदधि तस्मात्श्रुतोदधित अनोपमाअबाधानेकानपर्यायज्ञानजलसंचयसंपूर्णद्रव्यास्तिकपर्यास्तिकोभयतट अनेकोत्सर्गापवादमार्गप्रवृत्तक्रियाज्ञानव्यानसद्वीप स्याद्वादानंतगुणपर्यायद्रव्यानुयोगचरणकरणानुयोगगणितानुयोगधर्मकथानुयोगमहाकलश अनेकमत्यादिज्ञानश्रुतज्ञाननयगमपरिपाटीसापेक्षनदीसमूहविवृद्धमानसलिलौघ अनेकालापकगाथोक्तियुक्तिहेतुऊर्मिसहस्ररम्य अभिनवानवद्यविशुद्धाध्यवसायोत्कर्षप्रवृत्तकल्लोल जीवाजीवादिनवपदार्थगुणस्थानवस्तुनोमस्वरूपानभासनाऽसरयेयज्ञानाध्यवसायरूपानिविधरत्नराशिस्थानमत श्रुतसमुद्रस्तस्मात्ज्ञात यसर्ववस्तु धर्माधर्माकाशपुद्गलजीवास्तिकायादिकस्यविज्ञानविशिष्टनिर्मलवुनयनयाभासादिदोषरहितज्ञानज्ञात यद्विसर्वत्र, यस्त्वरूपनित्यानित्यैकानेकास्तिनास्तिभेदाऽभेद यत्क यद्रूपकारणकार्यकर्त्रादिकारकसाधनसाध्यसाधकबाधकादिक ज्ञात्वासुविहिता शुद्धकार्यसाधनोद्यतासम्यग्धर्मोद्धारमस्वभावसर्वजीवसत्तास्थितसम्यग्दृष्टिदेशविरतप्राणिगणश्रद्धागृहीतसाधुसाध्वसाध्यआचार्योपाध्यायैर्गीयमानअर्हद्भिरास्वादितसिद्धे सपूर्ण प्रगम्यतधर्मप्रकाशयति ॥ २०१ ॥

टबार्थ—एवसुकहिता ए रीते श्रुतसमुद्रथी जाणवो, सर्व वस्तुनो विज्ञान विशिष्टज्ञान ते विज्ञान, जे जाणीने सुविहित उत्तम बहुश्रुतसत्ययथाय धर्म जे वस्तुनो समाव ते प्रकाशे उपदेश करे ॥ २०१ ॥

कत्थविवहारनओ, कत्थविनिच्छियनओपहाणयरो।
कत्थविसतीसंता, कत्थवियोगत्तणमुरक ॥ २०२ ॥

टीका—कत्थविवहारनओइत्यादि ॥ श्रीमदर्हन्प्रवचनमे पारंपर्यकुत्रचित् व्यवहारनय प्रधान कुत्रचिनिश्चयनय प्रधान तत्र कत्थविसतीसनीइतिकुत्रचित्सतीविद्यमानामत्ताजीवरूपा, क्वचित्योग्यत्वमत्तामुख्यापुद्गलस्य पस्पर्शादीनां योग्यरूपा सत्तातथाजीवस्याऽनन्तसारित्वरूपायोग्यत्वसत्ताइत्यादिपरिपाट्या वस्तुस्वरूपप्रकाशनीयइति ॥ २०२ ॥

बालार्थ—जिनमार्गनी एह रीति छे जे किहांक व्यवहारनय मुख्य कहे छे । किहांक निश्चयनय मुख्य कहे छे, जिहां कारण नथा प्रवृत्ति तिहां व्यवहारनी मुख्यता छे । किहांक छतीसत्ता तेहज गवेषे, किहांइक योग्यता सत्ता गवेषे जिम आउखा ४ नी सत्ता एक जीवने होयेनहीं परयोग्यता गवेषी छे ॥ २०२ ॥

तसव्वपिपमाणं, सुअनिवुहेहिचजसुएभणीयं ।
जेहिंपरपरनाणं, तेसिनाणप्पहाणयरं ॥ २०३ ॥

टीका—तसव्वपिपमाण इत्यादि ॥ तत्सर्वमपिवीतरागवाक्यानुसारिपद्यवचनतत्प्रमाणरावनाऽनाचत्वात् । सर्वभावानामेकसमयेनज्ञानात्, यस्य समयांतरज्ञान तस्यनन्समयेकिंचित्अज्ञानभवति। तस्यवाक्ययथार्थनभवति । श्रीमज्जिनरागकेवलज्ञानवतासर्वमपिप्रमाणएकसमयेनेत्र्प्रत्यक्षावयोवात्तस्यवाक्ययथार्थं तद्वाक्यानुयायिसर्वमपिप्रमाणश्रुतविबुधैर्बद्धश्रुतंयत् श्रुतेपचागलक्षणेभणित कथित तत्रापिपरम्परागतज्ञानं श्रीमत्सुधर्म्मगणधरपरम्पराविच्छिन्नज्ञान

तत्ज्ञान प्रधानतरयत आगमस्यत्रेविव्यपचमागे अत्तागमे अणतरागमे परपरागमे अत्यओअरिहताण अनागमे नाणहराण अणनरागमे गणहरासासाण परपरागमे सुत्तओगणहराण अत्तागमे गणहरत्तासाण अणतरागमे तस्ससीसाण परपरागमे 'तओसत्वे सिंपरपरागमे एव परपरा आचार्यपरपरयाआगत ज्ञानप्रमाण इतिज्ञेयम् ॥ २०३ ॥

टबार्थ—इत्यादिक कयु जे सर्व प्रमाण छे आम्नायवतने आ भासनमध्ये छे, श्रुतने विबुध जे दक्ष तिणे जे श्रुत पचागीमध्ये कयु ते जे पचागी विना आगमना अर्थ कहे ते अप्रमाण छे, भगवती तथा नदीसूत्रे कयु छे अने आगमना ३ भेद छे आत्मागम, अनतरागम, परपरागमतेमध्ये जम्बूस्वामी ते पछे सूत्रे परपरागम कह्यो छे ते माटे जे परपराये ज्ञानवत थया तेहनो ज्ञान प्रधानतर जाणवो, बीजा सर्वना ज्ञान ते अज्ञान छे ॥ २०३ ॥

नाणकिरियाहिमुक्खो, तत्थविनाणंपहाणतरगच ।
तम्हानाणभ्भासो, कायव्वोमुक्खअथ्थींहि ॥२०४॥

टीका—नाणकिरियाहिंमुक्खो इत्यादि ॥ ज्ञानक्रियाभ्यामोक्ष इत्यागमवचन प्रामाण्यात्ज्ञान एकातेनमोक्षसाधक यद्ज्ञान तदेवास्य यदाश्रयत्यागोयत तथा चावश्यकनिर्युक्तौजहाखरोचदणभार वाही,भारस्सभागीनहुसुग्गइए, एव खुनाणीचरणेणहीणो,नाणस्समार्गीनहुसुग्गइए(?)इत्यादि क्रियामुख्यनास्य तथापि श्रीदशविकालिकसूत्रे पढमनाणतओदयाएव चिट्ठइस नसजये अनाणिकिकाही किंवा नाहीछच्छेयमीवगा ॥ १ ॥ जीवोविवियाणइ

अजीवोविवियाणइ, जीवाजीवेवियाणेइ सोयनाहीउसयम ॥ २ ॥ अनापिज्ञान मुख्य, श्रीभगवत्यासीत्सयशुअसेय इतिचतुर्भंगी-व्याख्यानेश्रुतसपन्न विशेषतोमोक्षसाधक श्रीसूयगडागेअहगडा-इमुञ्जति, अणमण्णसकम्मुणा, उवलित्तेवियाणिज्जा, अणुवलित्तेवि-यापुणो ॥१॥ एवेहिंदोहिंठाणेहिं ववहारोनविज्जति एवेहिं दोहिं-ठाणेहिं अणायारतुजाणइ ॥ २ ॥ इत्यादि आगमवचनात्ज्ञान क्रियायुक्तेयुक्त सत्यतगपिज्ञानप्रधानतर यत नाणाहिओ वरतर-हीणोविहुपवयणपभावतो, णयदुक्करकरतो, सुटठुवितप्पागमोपुरिसो इत्युपदेशमालाख्यान् तथा उपदेशपदप्रकरणेक्रियाकृत कर्मक्षय मडुकचूर्णरूप पुनरपिकारणात्प्रादुर्भवति ज्ञानभावनयाप्राप्तध्या-नानुभवबलात् कृतकर्मक्षय मडुकचूर्णभस्मतुल्य सर्वथाअभावरूप भवति । तेनज्ञानप्रधानतर अत्यन्तमुख्यतन आत्मन स्वरूपे-ज्ञानप्रधान तेनसाध्येपिज्ञानप्रधान तम्हानाणभ्भासोतस्मात्-ज्ञानाभ्यास कर्तव्योमोक्षार्थिमि यथास्तनोपयोगीसप्राप्तभवेमुच्यत-एव ॥ अस्यविचारसारप्रकरणस्यकरणेकारणमाह ॥ २०४ ॥

टवार्थ —तथा मोक्षमार्ग ज्ञानक्रियाये छे, तेमध्ये ज्ञान प्रधान छे दश विकालिके कह्यु छे जे पढमनाणतओदयाएव-चिठ्ठइसव्व सजए, अन्नाणीकिंकाही किंवाहिओछेयपावग ? तथा उत्तराध्ययने नादसणस्सनाणनाणेणविणानहुति चरणगुणा, अगुण-स्सनत्थिमुक्खो नत्थिअमुक्कस्सनि वाण ॥ १ ॥ तेमाटे आत्मार्थी जीने ज्ञानाभ्यास करवो, सर्वं प्रकारे ते कारणे ज्ञान विना मोक्ष न निपजे, तथा आत्मानो मुख्य गुण ज्ञान छे ॥२०४॥

रावणपुरवत्थव्वो, सङ्घोनामेणसतिदासोत्ति ।
तेणगुणमग्गणासु, सव्वेभावायसगहिया ॥ २०५ ॥

टीका—राधनपुरवत्यन्त्रो इत्यादि ॥ राधनपुर वास्तय श्राद्ध श्रद्धायुक्त नाम्नाशांतिदासइतितद्विज्ञप्त्या गुणस्थानेषु तथा मार्गणास्थानेषु सर्वेभावा मूलोत्तरभवादिरूपाद्वारशतसख्याका प्रथमसगृहीता सम्यक्प्रकारेणगृहीतागृहीयद्वाइति ॥२०५॥

टबार्थ —ए विचारसारप्रकरण तेहना अधिकार बे छे, तिहाँ पहिलो अधिकार गुणठाणानो छे बीजो अधिकार मार्गणानो छे ए ग्रथ राधनपुरवासी श्रद्धावत शांतिदास नामे गृहस्थ तिणे ए द्वार सर्व गुणठाणे तथा मार्गणाइ ए भाव सगृह्या ॥ २०५ ॥

तस्साणुग्गहकज्जे, गाहारईआवियारसारस्स ।
आगमगमेणमुद्धा, सापमाणासुगुरुवाणी ॥२०६॥

टीका—तस्साणुग्गहकज्जे इत्यादि ॥ तस्यानुग्रहकार्ये तदनुग्रहार्थमित्यर्थ गाथारचिता विचारसारस्यआगमगमेणइति आगमगणधरपूर्वधरविरचितस्यगमज्ञान तेनशुद्धानिर्दोषायावाणीवाक्यपद्धति सासम्गुरुवाणीइतिनिज्ञेय आधुनिकजीवोपकारार्थं बधादिद्वारशतप्रमाण तथाशतकमितिसज्ञागुणस्थानशतकमार्गणास्थानशतक इत्यधिकारद्वयरूप विचारसारास्यप्रकरणनिर्मापितं पंडितदेवचद्रगणिनाइति/अथग्रथकार स्वकीयपरपराद्दर्शयन्नाह ॥ परंपद्धपरंपरागतस्यवचनप्रमाण तदर्थपरंपरोद्देश तत्रश्रीमन्वर्द्धमानशासनाधार श्रीगणधर सुधर्मास्वामीतत्पट्टानुक्रमेण अविच्छिन्नपरंपरायातपञ्चोनचत्वारिंशत्तमोमहापुरुष श्रीमदुद्योतनसूरि तत्पट्टप्रभावकश्रीवर्द्धमानसूरि येनअ पत्कीपूनसूरिमनसशोधनात्तजिनपदादात तत्प्रदत्तसूरिमत्रप्रत्यक्षीकृते द्वादिदेवगण सर्वेबरगशा—

लादिशतशास्त्ररचनाप्रवण श्रीजिनेश्वरसूरि प्राप्तखरतरबिरुद, तत्पट्टानुक्रमायात श्रीजिनचंद्रसूरि, तत्पट्टेनवांगीवृत्तिउपपातिकोपांग पंचाशकादिवृत्तिरत्नप्रभाभास्करनवदर्त तत्र तत्पट्टाधनेकस्तंभेय यभाष्यादिरचनारचितयथार्थक्रियामार्ग श्रीमज्जिनवल्लभसूरिस्तत्पट्टपूर्वाचलभानुस्वरूप गणधरसार्द्धशतकादि धर्मरहस्यादिग्रंथविरचनारचितयथार्थमार्ग श्रीमद्जिनदत्तसूरि तत्पट्टे मणिधर श्रीजिनचंद्रसूरि तत्पट्टसाठिसोप्रकरणकारक श्रीनेमिचंद्रभंडारिकसुत श्रीवीतरागमार्गंयपार्श्वपरीक्षाकगोपल्लोपमान पटत्रिंशत् वादस्थलकारकश्रीजिनपतिसूरि तत्पट्टेश्रीजिनेश्वरसूरिस्तत्पट्टेश्रीजिनप्रबोधसूरि तत्पट्टेश्रीजिनचंद्रसूरि तत्पट्टेश्रीसिद्धाचलखरतरवसहिनेमिप्रासादप्रतिष्ठापकश्रीजिनकुशलसूरि तत्पट्टेजिनपद्मसूरि तत्पट्टेजिनलब्धिसूरि तत्पट्टेश्रीजिनचंद्रसूरि तत्पट्टेजिनोदयसूरि तत्पट्टेजिनराजसूरि तत्पट्टेजिनभद्रसूरि तत्पट्टेजिनचंद्रसूरि तत्पट्टेजिनसमुद्रसूरि तत्पट्टेजिनहंससूरि तत्पट्टेजिनमाणिक्यसूरि तत्पट्टेइत्यादिदर्शयति ॥ २०६ ॥

टबार्थ —विचारि चोखा कर्या तेना अनुग्रहने अरथे गाथा रची विचारसारनी आगमनी रीते जे शुद्ध ते गुरुनी वाणी प्रमाण छे ॥ २०६ ॥

सुविहियखरयरगच्छे, युगवरजिणचंदसूरिसाहाए ।
जिणरयणसारपवणा, उवज्झायाराजसाररका ॥१०७॥

टीका—सुविहितखरतरगच्छे इत्यादि ॥ श्रीमत्वज्रस्वामिपरंपरानुगतत्वात्सुविहित श्रीमचंद्रकुलेवज्रस्वामिशाखायांकोटिगणान्वये यथार्थमार्गप्रकाशनचैत्यवासनिवारणात् समाप्तखरतरविरुद-

द्यनेकतीर्थचैत्यप्रतिष्ठाप्राप्तयुगप्रधानाभिधान तस्यशाखायांश्रीमद्-पुण्योपाध्यायशिष्यश्रीसुमतिसागरोपाध्यायशिष्यवाचकोत्तमसाधुरंग-वाचकशिष्य जिनवचनसारेप्रवणाइतप्रवणाउपाध्यायाज्ञानद्यक्षो-द्धारादिसद् ग्रंथकरणअनेकचैत्यप्रतिष्ठास्थापितानेकजिनबिंबालया श्रीराजसाराख्या ॥ २०७ ॥

टबार्थ —सुविहितयथार्थ जिनआणाअनुसारी सामाचारी जेहनी एहवो खरतरगछ छे, तिहा युगप्रधान श्रीसद्गुरु श्री जिनचद्रसूरि थया, तेहना शीष्य परपरामध्ये श्रीजिनचद्रसूरिना शिष्य महोपाध्याय पुण्यप्रधानजी, तेहना शिष्य श्रीसुमतिसारजी तेहना शिष्य वाचकमुख्य श्रीसाधुरगजी तेहना शिष्य मुख्य श्रीजिनवचननो जे सारतत्व तेहमे प्रवीण उपाध्याय श्रीराज-सारजी एहवे नामे थया ॥ १०७ ॥

तस्सीसन ... ...रासिरिनाण धम्मनामेण ।
तेसिंसीसाधीर, दीपचदाउवज्झाया ॥ २०८ ॥

टीका—तस्सीस इत्यादि ॥ ततशिष्याज्ञानधर्माववोध धर्मचारित्रारपनयोराधारमना श्रीमत्ज्ञानधर्मोपाध्याया तेषा-शिष्या श्रीशत्रुंजयेसमवसरणमेरुप्रमुखानेकचैत्यश्रीराजनगरेसहस्र फणादिअनेकसत्तायप्रतिष्ठाकृतात्मसाफल्या श्रीदीपचद्रोपाध्याया तेषांशिष्येणदेवचंद्रविरचितमितिसंबंध ॥ १०८ ॥

टबार्थ —तेहना शिष्यज्ञानधर्म जे चारित्र तेहना धरण-हार श्रीउपाध्यायज्ञानधर्म एहवे नामे थया, तेहना शिष्य धीर उपाध्याय श्रीदेवचद्रना ,एहवे नामे शीष्य थया ॥ १०८ ॥

तेसिंसीसोअज्झत्थ, तत्तरसगयगोजिणाणरुई ।
गणिदेवचदनामा, तेणविहीयइमसुत्त ॥ २०९ ॥

टीका—तेसिंसीसोअज्झत्थ इत्यादि ॥ तेषांशिष्य अध्यात्मतत्त्वरसास्वादनरसिकजिनागमाभ्याससमाप्तजिनाज्ञारुचि गणिदेवचद्रइतिनाम्नातेनविहितइदसूत्रम् ॥ २०९ ॥

टबार्थ—अध्यात्मतत्वनो रसिक जिनागम प्रमाणतत्व स्वरूपनो कथक आगमसार १ ज्ञानसारतत्त्वावबोध प्रमुखनो ग्रथनो रचवो आत्माने हित करतो जिनाज्ञारुचि देवचद्रगणि एहवे नामे तिणे ए सूत्र रच्यो गाथा ब्रवभ यनी बने उपकार काजे ॥ २०९ ॥

रसनिहिसजमवरिसे, सिरिगोयमकेवलस्सवरदिवसे ।
आयरथउद्धरीयो, समयसमुद्दाओरुद्दाओ ॥ २१० ॥

टीका—रसनिहिसजमवरिसे इत्यादि गाथासुगमा ॥ अथात्र ग्रथे मति यामोहात्‌छद्मस्थदोषेणाकिंचित् नावगत तन्नगुणज्ञा स्वपसशोध्यकथयतु इतिप्रार्थना ।।नदर्शनार्थगाथारचयति॥२१०

टबार्थ—रस ६ निधि ९ सयम १७ इटले १७९६ सत्तरसेछनुये वरसे श्रीगौतमकेवलज्ञान पाम्या ते दिवसे एटले कार्तिकसुदि एकम जुहारसटारीपर्व दिवसे आत्मानो बोध करवाने उवर्यो, समय कहेता सिद्वात जे समुद्र तेहथी सिद्धात समुद्रनो पार पामवा दुर्लभपर पु अध्यात्मज क्रयाण छे ॥ २१० ॥

जिणसासणसमयन्नू, भवतिगुणगाहिणोयसवेसिं ।
तेअपढतिसुणतिअ, लभ्भतिनाणलद्धीओ ॥२११॥

टीका—जिणसासनसमयन्नू इत्यादि ॥ जिनशासनसमयआगमतस्यज्ञा वेदितजैनागमरहस्यास्तेगुणग्राहिण एव नदोपग्रहणरसिका इत्यनेनयत्किंचित्मद्बालचापत्यनत्ते न प्रेक्षते इतिवेचजैनागमतत्त्वरसिका पठतिइतिस्वयपठतिपरपाठमति शृण्वतिचते लभन्तेज्ञानलब्धी इति वेनज्ञानार्थिन विचारसारारयप्रकरणअत्यादरेणअभ्यस्यतुइतिप्रार्थनाएव ॥ अथनमयेदस्वमनीषयाविलसितकिंतुपूर्वाचार्यपरपराग्रथाऽऽज्ञापानउद्धत्यआधुनिकजीवानाहितायसगृहीत इति दर्शयन्नाह ॥ २११ ॥

टबार्थ—जे जिनशासनना समय आगम तेहना जे जाण छे तेह जीवसमुद्दो जीवना गुण गवेषे, परछिद्रग्राही न होवे, गुणग्राहीपणो ते आमाने हित, ते जीव जे मउरी न हुवे ज्ञान रसिया होस्ये, ए ग्रथ भणस्ये तथा सुणस्ये ते ज्ञानलब्धि निरमल पामशे ॥ २११ ॥

कम्मपयडीअसगह, सिवसम्मयसुजिणवल्लहोसूरी ।
देविंदसूरिपमुहाण, वयणदट्ठूणइयभणिय ॥२१२॥

टीका—कम्मपयडीअसगह इत्यादि ॥ तत्राग्रायणीयपूर्वात् उद्धृत श्रीमत्भद्रबाहुस्वामिनाकम्मपयडीसूत्र तच्चूर्णिश्चकृताश्रीदेवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणैस्तट्टीकाचकृताश्रीम मलयगिरिसूरिणा इतिसूक्ष्मभावप्रकाशनपटुश्री कम्मपयडीसूत्र तथाचपुन सगहत्तिपचसग्रहाख्यप्रकरण श्रीचदमहत्तराचार्यकृत तथा श्रीशिवशर्मसूरिकृताश्चबृहत्कर्मस्तवादयोजीर्णकर्मग्रथा तथा श्रीजिनवल्लभसूरिकृतकर्मग्रथा तथा श्रीदेवेन्द्रसूरिकृतकर्मविपाकप्रमुखा कर्मग्रथा इत्यादि रान्मुनीनावाक्यवचनदृष्ट्वाइयइतिइद विचारसाराख्यभ-

णितकथितनस्वमत्याश्रीमत्भगवतीमज्ञापनादिसदागमपरिपाट्या-निवेदितसर्वेनाप्यागमवाक्यप्रमाण, आगमानुसारिमतय आरावका शेषाणास्वमतिकल्पितकल्पनाप्रवृत्तिमतानास्माग्वकृतम् ॥ अत वीतरागागमरहस्यज्ञानतत्त्वभावनाभ्यासतत्पराभवतु ॥ साप्रत-जिनागमस्यचिरकालाऽवस्थायित्व भवतुइत्याशीर्वाक्यपूर्वकउपदि-शन्नाह ॥ २१२ ॥

टबार्थ —कम्मपयडी, अग्रायणीय पूर्वनो उद्धार छे तथा पचसग्रह श्रीचन्द्रमहत्तरसूरिनो कीधो महाग्रथ छे तथा शिव सूरिकृतभाष्य छे तथा श्रीजिनवल्लभसूरिकृत कर्मग्रथ छे, तेहनी टीका मलयगिरिसूरिकृत छे तथा देवेन्द्रसूरिकृतकर्मग्रथ छे, तेहनी टीका पण श्रीदेवेन्द्रसूरिकृत छे इत्यादि पूर्वसूरिना जे वचन ते सर्वे जोइने तेहने अनुसारे ए विचारसारग्रथ रच्यो छे ॥ २१२ ॥

जाजिणवाणीविजयइ, तावथिरचिट्ठउइमवयण ।
नूतणपुरम्मिरईय, देवचदेणनाणट्ठ ॥ २१३ ॥

इतिश्रीविचारसारप्रकरणसमाप्तम्

टीका—जाजिणवाणीविजयइ इत्यादि ॥ यावत्जिनस्य वीतरागस्यवाणीवचनपद्धति विजयतितावत्इदवचनस्थिरत्वेनाति-ष्ठतु श्रीहृदयारदेशेनूतनपुरेनवनगरेरचित ज्ञानप्रकाशकरणायवा-चनापृच्छनापरिवर्तनाधर्मकथानुप्रेक्षादिस्वाध्यायकरणेचसवरनिर्ज-राग्रहरूपस्वाध्यायात्शुपरिणामनैर्मल्यपरीणामनैर्मल्यात्यथार्थाऽनुभव यथार्थानुभवात्स्वरूपविश्रान्ति स्वरूपविश्रान्त्याध्यानैकत्व, तेनच-

अभिनवकर्माऽग्रहणनापूर्वकर्मक्षय ताभ्याचपरमसिद्धि अ यात्रा-घसुखप्राप्ति इति ॥ सवणेनाणेविन्नाणेपच्चक्खाणेसयमे ॥ अण-ण्हवेतवेचेव । वोहाणेअकिरीयासिद्धा ॥ १ ॥ इतिभगवतीसूत्र-प्रमाणनयाश्रुताभ्यास करणीय सर्वभ यै, देवचद्रेणज्ञानार्थ-स्वपरावभासनार्थपचमकालायकारमुग्जजनप्रबोधनभानुश्रीदीपचद्र-सद्गुरुचरणचचरीकेणरचिनगाथाभिवेनयत्नकन्यासादिनाअक्षरवि या-सीकृत, इतिश्रीदेवचद्रगणिविरचितास्वोपज्ञविचारसारटीकासमाप्ता ॥ २१३ ॥

टवार्थ —आसीभजिनवाणीजयवर्तावरने, ता सीम थीररहो, ए ग्रथना वचननी रचना, ए ग्रथनी पूरणता नूतनपुर नवानगर-मध्ये पडीत देवचद्रगणि पोताने तथा परने पण ज्ञान विशेष-वृद्धिने अरथे करी ॥ २१३ ॥

जयतात्सच्चिदानद–महोदयसमाश्रित ।
वर्द्धमानजिनाधीशो, भ येप्सितमहामणि ॥ १ ॥

क्षुद्रोज्ज्वलयश कीर्ति–प्रोज्ज्वलीकृतविष्टप ।
दुग्धिर्सिधुर्जगद्बधु पातुरोनमसद्गुरु ॥ २ ॥

श्रीमद्सुधर्मस्वामी, जम्बूप्रभवादयोमुनिवरिष्ठा ।
धाचक्रवशप्रभवा, भ यानाश्रेयसेसतु ॥ ३ ॥

क्रमातूखरतरेगच्छे, कुलेचाद्रेगुणाकरा ।
श्रीजिनचद्रसूरीशा अभूवन्मुनिनायका ॥ ४ ॥

तदन्वयाब्धिसद्रत्ना, राजसाराह्ववाचका ।

उगज्ञानिनशोभाना, तेषामौगवक्षियुगम ।
रिपा गमनादन, देवपद्मा सुनाढ्या ॥ ८ ॥
रसा पयोरपाराय, देवऽर्द्गार्गापना ।
रिथरलाश्रीकेय, गुणोपशान्तिनिर्मले ॥ ७ ॥
मतिरनराजलाभाषा, शुनाभ्यासनरायणा ।
ज्ञाना ‌‌‌‌‌(शल्टाहाम, प्रमोदशिष्यायबोधाय ॥ ८ ॥
पद्मजिनपन्यमतिना, सिद्धान्तविरुद्धमिहकिमपिदारव्रम ।
विद्वद्भिरनल्पर्ज्ञे , प्रसादमाधाय शुद्धोध्यम् ॥ ९ ॥
यन्नूमवृत्तिरत्ना, वृन्दैमामपार्जितसुरत्नम ।
तेनर्थीभिनवर्मे, हृष्टचित्ता सुभव्यजना ॥ १० ॥
अर्हन्तोमगलसिद्धा, साधवोधर्ममार्हनम ।
रपाद्मासारशाख्यान, श्रीमाणगुरुपभगवम ॥ ११ ॥

॥ इतिश्रीविचारसारप्रकरणटीकासमाप्ता ॥

अर्थ—इतिश्रीविचारसार मूल टीका टबा साथे संपूर्ण थयो. ॥ मुकाम पेथापुरमध्ये आचार्य माहाराज ॥ श्री ५ ॥ बुद्धिसागरजी माहाराजना हस्तक हुकममां रहीने लख्यो छे श्री० लहीया जेठालाल चुनिलाल संवत् १९७३ प्रथम भाद्रव मास कृष्णपक्ष ९ दीने घटनासरे संपूर्ण लिख्यो छे ॥ श्लोक संख्या ॥ ४५०० ॥

श्रीमद् देवचंद्र द्वितीय भाग अशुद्धि शुद्धि पत्रक.



पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१	३	मनुदप	मनुदमु
"	४	जिप	जीप
"	१९	१६	७
२	११	तिश्त्य	तिश्न्त्य
"	१४	शुद्धयकर्ष	शुद्धयपकर्ष
३	६	निश्रे	नि श्रे
"	८	सहस्त्रा	सहआस्त्रा
"	१२	वर्त्तत	सहवर्त्तत
"	१५	स्थानन	स्थान
"	"	सम्यग	सम्यग्
४	११	गठि	गठि
"	१९	दवाल्न	दवानल
"	२२	देश	देस
"	"	मिठस्स	मिन्ठस्स
५	२	मुहूर्त्तक्या	मुहूर्त्तिस्या
"	३	विसिपे	विमीप
"	१८	समस्ती	समस्ति
६	२	इच्ठतो	इच्छतो
"	४	दिठी	दिठ्ठी
"	११	सन्ठपति	सयच्छति
"	१५	इत्यज	इत्य

पृ.	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	१९	विशुद्ध	विशुद्धय
७	४	पुनवि	पुनर्वि
,,	६	तारिस्य	तारितस्य
,,	२३	पतणा	पतृणा
८	१	,,	,,
,,	६	एतानिएतानि	एतानि
,,	१२	नि,शक्ति	निश्शक्ति
९	२३	युगप	युगपद्
,,	२४	माया	माया
,,	,,	युगप	युगपद्
१०	२४	दसनन	दतं
११	२०	त्तिस्र	त्तिस्र
१२	९	सकासा	सकाशा
,,	१६	ध्यान	ध्यानं
,,	२३	ध्याययन्	ध्यायन्
१३	१	शैलेश	शीलेश
,,	८	गच्छद्	गच्छन्
,,	११	चूर्णो	चूर्णो
१४	११	हेतुद्रा	हेतुद्वार
१५	१०	तन	तमं
,,	,,	चतुपष्टि	चतु पष्टि
१६	१६	अपमत्तत्तासत्तठ	अपमत्तता सत्तट्ठ
,,	१८	चनेत्ति	चेवेति
,,	,,	मेदा	भेद

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१६	१८	भेदा	भेद
,,	१९	,,	,,
,,	२२	अमि	आमि
१७	२	निरेध्यते	निरेधन्ते
,,	,,	कर्मण	कर्मणाम्
,,	३	जीर	जीत्र
,,	८	प्रमनाना	प्रमत्ता ता
,,	१२	मति	मत्ति
१८	१३	सम्यक्त्न	सम्पक्त्त्र
,,	१६	नध्राति	व ध्यते
१९	८	सख्या	सरया
२०	२	ह्रसा	हार्सा
,,	३	दिठी	दिट्ठी
,,	३	इति	इति
,,	४	नरायुदे	नरायुर्दे
,,	१९	तिर्यंघ	तिर्यंच
,,	२३	सगट्ठि	सगसट्टि
,,	,,	वेत्रद्दि	वेसट्टि
,,	२४	यन्ना	यन्ना
२१	७	नरायुलक्षण	नरायुर्लक्षण
,,	१६	पुनानतेव	एतावनैव
२२	१	तेत्रठि	तेसट्टि
,,	८	देवायुवचन्	देवायुर्भवन्
,,	२३	तेजस	तैजस
२३	१४	प्रचला	निद्रानिद्रा

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
२३	१७	तेजस	तैजस
२४	१	भवति	भवति
२५	१५	उच्चैगोत्र	उच्चैर्गोत्र
२६	९	सपराय	सपराय
२७	८	नीच्चै	नीचै
२८	१८	तिग	तिगे
,,	२३	आयुकर्म	आयु कर्म
३१	१९	ज्झा	जा
,,	२०	१६	१४
३२	१२	बन्यते	बन्यन्ते
३३	१	अटण्ह	अट्ठण
,,	६	सभाप्यते	सभाप्यन्ते
३४	१३	द्विक	द्विकम्
,	१५	उदयोभवति	भवति
,,	२३	पद्यत्ते	पद्यते
३५	२१	पद्यते	पद्यन्ते
३६	७	ब या	बद्धा
,,	,,	चतुर्षु	चतसृषु
,,	१०	मनुजापूर्वी	मनुजाऽनुपूर्वी
,,	१२	दृष्टयातात्	दृष्टयन्तात्
३७	१	तस्तु	तास्तु
,,	२	इग	सग
,,	१९	सठि	सट्ठि
,,	,,	सठी	सट्ठी

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३८	३	नीयते	नीयन्ते
,,	७	तिर्यंगति	तिर्यग्गति
,,	२१	प्रमादायत्वात्	प्रमादायत्तत्वात्
३९	६	भवति	वति
,,	१५	सज्वल	सज्वलन
४०	१९	,,	,,
४१	२२	पञ्चशीति	पञ्चाशीति
४२	१५	नवय	नव
४३	५	स्त्यानद्ध्युदये	स्त्यानद्ध्युदये
,,	२१	अटार	अट्ठार
४४	२२	सहाय्यात्	साहाय्यात्
,,	२३	साहायात्	,,
४५	३	नव च न	न वचन
,,	२१	येयणीससय	नेयणीयस्स
४६	१	चतुर्ष्वपि	चतसृष्वपि
,,	१७	सठी	सट्ठी
,,	,,	,,	,,
,,	१९	,,	,,
४८	८	देसि	देस
,,	१६	नामोदयो	नामुदयो
,,	२१	नीमे	नीचे
,,	२२	,,	,,
,,	२३	एव	एव
,,	२४	टीकाइय	टीकाया

पृ.	प	अशुद्धि	शुद्धि.
४९	१९	दीयते	दीर्यते
५०	१०	वेदनी	वेदनीय
५१	१९	ओघत	ओघतो
,,	२१	थीणद्धी	थीणद्धी
५२	१०	उपशात	उपशान्त
,,	,,	अत्तुरया	अन्तुरया
,,	११	कयावत्	यावत्
,,	१५	चरिमद्विके	चरमद्विके
,,	१६	सु नाम	सुनाम
५३	१	शमनात	शमनात्
,,	१४	पुण	गुण
,,	१५	सत्ता आठ कर्मनी छे	ॐ
५५	१	इगचत्तसत्तय	इगचत्तसय
,,	७	चत्वारिंशशत	चत्वारिंशच्छत
,,	१३	,,	,,
,,	१५	बन्धायु	अबद्धायु
,,	१६	चत्वारिंशशन	चत्वारिंशच्छन
,,	१७	कुल	क्रल
,,	,,	माउ	मान
,,	२१	क्षयोपसमकित	क्षयोपशमसमकिती
५६	३	वज्या	वर्ज्या
५७	८	पट्क	षट्क
,,	१२	क्षयणा	क्षपणा
,,	१५	पचासीति	पचाशीति

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
५७	१६	पचासीति	पञ्चाशीति
,,	१७	सप्तति	सप्तर्ति
५९	६	नवापि	नवानामपि
,,	१७	मैव	मेव
६०	८	उपसम	उपशम
६१	१	टा णाणि	ठाणाणि
,,	२	सुहुमज्ज	सुहुमजा
,,	१२	सञ्वलनोमा	सञ्वलनोमानखपोवेदेवारे
६२	६	सुनव	सुरेव
,,	७	माम्मिति	नामम्मित्ति
,,	११	सता	सत्ता
६३	७	केद्रिय	केन्द्रिय
,,	१६	सार	सारस
,,	१७	द्विधा	द्विधा
६४	२	पर्याति	पर्याप्ति
,,	३	वेच	याच
,,	,,	पुद्गला	पुद्गलात्
,,	७	परिणामय्य	परिणमय्य
,,	१०	पट	पट्
,,	१५	सर्वानि	सर्वाणि
,,	१६	भवनि	भवति
,,	,,	बादरे	बादरे
,,	२५	स्थ्यय	स्थ्यप
६६	३	विशेतर	विशेषतर

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
६६	५	अप्प	अप्प
,,	१०	निजरा	निर्जरा
६७	३	दुगि	दुग
,,	५	मिच्छ	मिच्छि
,,	१८	समुग्वात	समुद्घात
,,	२१	वीर्यो	⊘
,,	२२	त्रिविध	त्त्रिविध
६८	१	द्वीर्यं	द्वीर्यं
,,	२	स्तया	तया
,,	५	व्यवहारोतथा	व्यवहारस्तथा
,,	६	चर्पते	चर्पते
,,	१७	कर्मणोनपेक्ष	कर्मणाऽनपेक्ष
,,	२२	तिष्ठति	तिष्ठति
६९	३	पुसामपि	पुसामपि
,,	१०	निवृ	निवृत्त
,,	१२	चतुर्विधो	श्चतुर्विधो
७०	१२	योगा	योगा
७१	८	वचनान्	वचनरा
,,	१६	विभग	विभगाऽ
७२	३	चक्षुअचक्षुअवधि	चक्षुरचक्षुरवधि
,,	५	दृष्ट्या	दृष्ट्या
,,	८	सम्य	सम्यग्
,,	१०	प्रम	प्रमत्ताऽ
,	१३	केवली	केवलि

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
७२	,,	केवली	केवलि
,,	१६	मत्यादीना	मत्यादीना
७३	२१	मारभते	मारभ्यते
,,	,,	चोचत्वार	चश्चत्वार
,,	२३	गृहेण	ग्रहेण
७४	३	मात्यस्था	मात्यस्थ्य
,,	४	गोष्टा	गोष्टा
,,	११	पनान	पादान
,,	१४	कप	कपस्य
७५	२०	हेतुन्	हेत्रन्
,,	२२	चतुसि	चतुर्भि
७६	७	हेतु	हेतू
,,	८	उक्षण	लक्षण
,,	९	द्वादश	द्वादशकम
७७	११	निशनिरै	निशनिर्ये
,,	,,	असत्या	असत्य
,,	,,	,,	,,
,,	१९	दशमे	दशे
७९	१	मिच्छना	मिच्छत्ता
,,	८	स्नाव	स्तावन्
,,	९	पावद्याग	पावद्योग
,,	१५	अ रति	अविरति
,,	२१	कपाया	कपायान्
८०	१४	लोभाख्य	लोभाख्य

2

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
८१	७	दृष्टय	द्रष्टव्य
,,	१९	नियदि	निर्यद्वि
,,	२०	किलाटा	किलट्ठा
८२	१२	व्रजति	व्रजन्ति
८४	१०	समुलिछ्ला	समुल्लिछा
८५	१६	कषाय	कसाय
,,	१८	सगृहीत	संगृहीत
,,	२०	युषि	यृषि
,,	,,	ल्हास्यादि	ह्रांस्यादि
,,	२३	पर्याप्तिनाम	पर्याप्तिनाम
८६	१	सगृहीत	संगृहीत
,,	२	लेश्या	लेसा
,,	४	गृहणेन	ग्रहणेन
८८	१०	सगठ	सगट्ठ
,,	१५	चक्षुदर्शन	चक्षुर्दर्शन
८९	२२	भा	भाव
९४	२३	सम्यग	सम्यग्
९७	५	द्वदशम	द्वादश
९८	१०	ऊजय	अजय
,,	१२	उपशातमोह	उपशाशान्तमोहक्षीणमोह
९९	१६	अयते	अयते
,,	,,	सम्यगु	सम्यग्
१००	१०	तिग	तिगतिग
,,	११	इग	इगइग

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१००	१३	प॒	पद,
१०१	१५	सभवि	समविसमवि
,,	१६	तीसही	तीसहीया
,,	१९	नय	नय,
१०२	१	रयणरय	रयणृक्ख
,,	२०	निंशन	निंशन्
१०३	४	मुहत्तं	मुहूर्त्त
,,	४	कि त्रसिया	किव्विसिया
,,	७	अपज्झत्ता	अपज्जत्ता
,,	२२	तदेन	तदेव
१०४	२	पर्यासाअ	पर्याप्ताऽ
,,	,,	मिथ्यात्वे	मिथ्यात्वे
,,	,,	पृन्त्रि	पृन्वि
१०५	१	वशात्र्	वशात्
,,	४	वस्थनो	वस्थातो
,,	७	अजयत्त	अपज्जत्त
,,	,,	भवन्ति	भवति
१०६	११	दुविहा	दुविहो
,,	२२	तिरिस्का	निरिक्खा
१०७	३	ना	नो
१०८	१३	गामि	गमि
,,	२०	दशमे	दशे
१०९	१३	अट	अद्द
,,	१७	द्वार	द्वार,

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
११०	३	अतमुह	अन्तर्मुहू
”	७	शुक्ल	सुक्क
”	८	मट्ट	मट्ट
”	२२	अट्टम्मि	अट्टम्मि
१११	१	”	”
”	११	शासो	सासो
”	१८	वेरग्ग	वैरग्ग
११२	३	दोष	दोस
११३	२०	देश	देस
”	२२	चउज्झेओ	चउब्भेओ
११४	२१	व्युछिन्न	व्युच्छिन्न
११५	१२	चतुर्विंशपि	चतुर्विंशतिरपि
११६	१२	सामायेन	समायेन
”	१६	श्रद्दधत	श्रद्दधत
”	”	छेदा	छेदो
११७	१२	मोकृष्ट	मोत्कृष्ट
११८	२		
११९	६	ख्यातो	ख्यात
”	१५	दडक	दण्डक
१२१	८	दीना	दीना
”	१४	चतुशीति	चतुरशीति
”	१५	तेजो	तेज
१२२	१	पचेदि	पचेंदि
”	२	नराणा	नराण

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१२३	५	कुठा	कुच्छ
,,	१२	शन	शत्
,,	१३	,,	,,
१२४	४	सुहुम्म	सुहुम
,,	२१	पशाशन्	पश्चाशत्
१२६	५	ऊन्वीस	ऊन्वीस
,,	१८	गृहि	गृही
१२७	१७	भावत्	भागात्
१२८	७	हीयसय	हियसय
,,	१८	घुवचाविशेपेति	धुवनधिसेसेति
,,	२१	हुजुअल	दुजुअल
१२९	४	नीचे	नीचे
,,	,,	शन	शत
,,	१५	रूपो	रूप
१३०	११	नामकर्मनी	नामकर्मनी ८२
,,	१२	४	१
,,	,,	१	७
१३१	७	ज्ञान	ज्ञाना
१३३	४	इति	इत्ति
१३४	७	दश	दस
१३५	६	घ्रुन घ्रुवो	घ्रुवो
,,	१९	ग्रह	ग्रह
,,	,,	क्रम	त्रम
१३६	१	देवायु	देवायू

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१३६	२४	त्तिग	तिग
१३७	१	विषये	निषये
"	२१	अनि त्ति,	अनिवृत्ति
१४३	१४	रुकृष्टा	रुत्कृष्टा
१४४	१५	गृहणेन	ग्रहणेन
"	२०	योष्ठुवो	योर्ध्रुवो
१४७	१५	स्वगति	स्वगति
"	१९	गृह	ग्रह
१४९	२	मोऽहेपि	मोहेऽपि
"	१८	विगृण	विगृण्व
१५१	२०	अनैका	अनैका
१५२	१५	युगपत्म	युगपत्म
१५३	२२	द्व्येक	द्व्येक
१५४	२	भगकाम्	भगकानाम्
"		भवति,	भवति, तेषुसप्तदशामीलनेपञ्चप-ष्ट्यधिका द्वादशशतीभवति, मि-थ्यात्वेद्विनवत्यधिक शतम्
"	१८	षड्विंशति	षण्णवति
"	"	"	"
"	२०	२४८	१२४८
१५७	२०	१	छनोग्र
"	"	नवनवनी	नवती
१५९	२१	उचै	उच्चै
१६०	७	उच्चैनीचै	उच्चनीचै

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१६०	१०	गोन	गोन
,,	,,	अय	र्अय
,,	१२	सना	सत्ता
१६२	२४	प्राप्यते	प्राप्यन्ते
१६३	२५	नथार्य	टर्यार्थं
१६७	३	द्वादश	द्वादश
१६९	२१	द्विकृत्यषि	षिकृत्यद्वि
१७०	१३	मनात्	ⅅ
१७१	१६	तद्विषयो	तद्विषय
,,	२०	अर्यासेषु	अपर्या सेषु
१७२	११	मुहूर्त्तं	र्मुहूर्त्तं
,,	२१	द्वादशानि	द्वादशाधिकानि
,,	१२	प्राप्यन	प्राप्येते
१७३	२१	तिम	तिग
१७४	२५	तन्नो	तत
१७५	८	सम्य	सम्यग्
१७६	६	पश्चतु	पश्च तु
१७७	१४	बन्व ने	बन्धस्थाने
,,	१६	विंशन्	निंशन्
,,	१७	वन्यि	वैक्रिय
१७९	११	मप्टा	मष्टा
१८३	१४	मृषा	मृषात्वा
,,	१७	चलायु	चलायू
१८४	१	गुणपर्यायण्य	गुणपर्याय

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
"	५	धन्य	धन
"	१२	ग्रृह	ग्रह
"	१४	परायत्त	परायत्त
"	१६	चतुर्विंशति	चतुर्विंशति
"	१८	इर्या	ईर्या
"	१९	निरत्ता	निर्वृत्ता
"	२०	द्रव्यतो	द्रव्यत
"	"	कारग	करण
१८६	२०	सकल्इयो	सकल्पो
१८७	६	इर्या	ईर्या
"	"	उम	उप
"	२९	इर्या	ईर्या
१८८	७	सकलायी	सकषायी
"	१३	अपच	अपद्य
"	१६	मयोगिकी	मायोगिकी
१९०	६	श्रव	स्रव
"	१९	"	"
"	२०	समाससादित	समासादित
"	२३	आसूयते	आस्रूयते
१९१	४	मेदे	मे दे
"	१४	विहारा	विहार
१९२	१६	विकल्य	विकल्प
१९३	१७	भावत्रा	भावाऽव
१९४	५	म्यान्तर	म्यन्तर

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	१४	चर्म	चर्म
,,	२५	अन	अन
१९५	१	जनादयो	जनादय
,,	४	एव	एन
,,	५	मशरण	मशरण
,,	८	चवरणा	वरणा
१९६	३	रूप	रूप
,,	४	ग्रयादयोन	ग्रन्यादयस्त
,,	९	वसवर	सवर
,,	२०	स्थानेषु	स्थानेषुनान्
१९७	१८	गेपा	गेपा
१९८	१०	गुणु	गुण
,,	२०	पशान्	पशान्
१९९	१	मणाना	पणाना
,,	१५	उक्तघ	उक्तच
,,	१७	ह्राति	हुत्ति
२००	१	वव छे,	नव छे, मकृति नव
,,	८	१००	१०७
,,	११	श्रीमत्स	श्रीमत्सु
,,	१६	मधाना	मधानास्त
,,	१९	मतिश्ठ	मतिश्ठा
,,	२१	सहम्र	सहस्र
,,	,,	मतिश्ठ	मतिश्ठा
,,	२२	द्वीप	दीप

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
२००	२३	शिष्येन	शिष्येण
„	२४	विरचित	विरचिन
२०१	६	श्रीमतिर्व्वीर	श्रीमनीचिर
„	७	ग़चकोत्तम	वाचकोत्तम
„	९	साराद्धक	साराद्ध
„	१०	ज्ज्वाला	ज्ज्वला
„	१३	तद्	तद्
„	१४	विचार	विचारसार
२०३	५	गुरुन्	गुरून्
„	७	इहा	ईहा
„	१०	जिनेंद्र	जिनेन्द्र
„	१३	सहस्त्र	सहस्र
„	१४	त्यापि	त्यादि
„	„	सहस्ता	सहस्रा
„	१५	वार वेरि	वेरि
„	१६	परमा	परमा
„	१७	कदनक	कदम्बक
२०४	१	कथयामित्यर्थ	कथयामीत्यर्थ
„	२	पराय	परा
„	„	रसिका	रसिका
„	१४	सचिवै	सचिवै
„	१६	इद्रनार्दीद्र	इन्द्रनादिन्द्र
„	१६	मार्गणा	मार्गणा
„	„	द्वीन्दिय	द्वीन्द्रिय

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	२२	कप्यतेर्हिंस्यते	कप्यन्तेर्हिंस्यन्ते
२०५	२	त्रिशेष	विशेष
,,	१०	शुशोभना	सुशोभना
,,	१३	विरति	विरति
,,	१५	सामा यमक्रो	सामान्यात्मक्रो
,,	१६	इत्यर्थं	मि यर्थं
,,	२२	लेश्यानु	लेश्यातु
,,	२३	वारिणोनत्तद	वारिणस्तत्तद्
,,	,,	णामिति	ण मिति
,,	२५	योगे	येग्यो
,,	२९	सिद्ध	सिद्धि
२०६	१	अविरुद्धायो	अविरुद्धार्थ
,,	९	विपाक्नो	विपाकन
,,	१०	सम्पक्त्वास्पदीनय	सम्यक्त्वस्योदीयमानस्य
,,	१६	युक्ता	युक्ता
,,	१८	अयोगी	अयोगि
२०७	१०	स्थानका	स्थानका
,,	१६	मिथ्यात्र	मिथ्यात्व
,,	१९	नस	नसा
२०८	११	वद्रश	दशक
,,	१२	अभय	अजय
,,	१८	चक्षुदर्शन	चक्षुर्दर्शने
,,	,,	,,	,,
,,	१९	पद्	पद्र

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
"	२१	अचक्षुचक्षुदर्शने	अचक्षुश्चक्षुर्दर्शने
२०९	२	अयोमी	अयोगि
"	१७	सगति	सगत्ति
२१०	१	दशम	दश
२११	३	समि	समि
"	१३	स्थानि	स्थानानि
२१२	११	आराव्या	आरा॰य
"	१४	तेजो	तेज
"	१६	"	"
"	१७	कमित्याह	कथमित्याह
२१३	६	५।	५। ६।
"	७	अविग्तिक०	अविरति
"	१२	दस	दश
"	१३	दारे	आहारे
"	१६	दर्श	दर्शन
"	१७	सज्ञा	सज्ञी
२१४	९	निणि	त्रीणि
२१५	९	एक	एकाऽ
"	२४	नीचं	नीचै
"	"	दुभग	दुर्भग
२१६	१	तासप्तति	तासप्तति
"	२५	रुपम	ऋषभ
२१७	५	एत	एतद्
"	७	चतुरा	चतुर

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	१२	त्ताप	ऽऽत्तप
,,	१३	विंशती	विंशति
२१९	४	ए कोन	एकोना
,,	११	तथा	स्तथा
२२०	४	पष्ठी	षष्ठी
२२१	१	नोघ	नोघ
,,	,,	अजयति	अजयत्ति
,,	४	प्रमते	प्रमत्ते
,,	११	द्यत	द्योत
,,	१३	द्रिक	द्विक
,,	१५	विगमे	विगमे
,,	२०	लेश्या	लेश्याये नरक
,,	,,	२	३
२२२	७	चाजुर्दर्शन	चक्षुर्दर्शन
,,	९	वक्त य	वक्त य
,,	२१	त्यादि	इत्यादि
२२३	१	लक्षणा	लक्षणा
,,	३	गा	गा
,,	,,	कर्त्तार	कर्त्र्यं
२२४	४	नीचै	नीचै
,,	५	सम्यग	सम्यग्
,,	१६	गोत्रनीच	गोत्रनीचै
,,	,,	मोहे	मोहे
,,	२३	नपुसक	नपुसक

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
२२५	९	हस्वाए	ह्रस्वाए
,,	११	,,	,,
२२६	६	समवाओ	समवाओ
,,	७	देवगते	देवगतौ
,,	१९	देवारूपा	देवरूपा
,,	२०	प्रकृति	प्रकृतिं
२२७	१७	सठी	सट्ठी
,,	१८	चतुर्षु	त्वतसृषु
२२७	२४	बन्पते	बध्यन्ते
,,	,,	एके	रेके
२२८	१४	२१	२२
२२८	१५	मगाणा	मग्गणा
,,	२०	बवन्ति	बद्धयते
,,	,,	मिच्छतगियासु	मिच्छत्तठियासु
२२९	५	स्थाननीय	स्थापनीय
,,	८	आहारकर	आहारक २
,,	११	ह्रस्वाय	ह्रस्वाय
,,	१३	प्राप्यने	प्राप्यन्ते
,,	१६	केवलद्विक	केवलद्विक
,,	,,	प्रकृति	प्रकृतिं
,,	१७	अजयति	अर्जयति
,,	,,	तयति	बध्नाति
२३०	७	सज्ञी	संज्ञि
२३१	१६	पचेन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	१८	चउ	घउ
,,	२०	चतु	चतू
२३३	३	नाम्न	नाम्न
,,	८	प्रेक्षया	ऽपेक्षया
,,	१२	मोहनीउ	मोहनीयो
,,	१४	सप्तति	सप्तति
,,	२१	चतुस्र	चतुरस्र
,,	२७	इच्छन्नि	मिच्छन्ति
२३४	४	ग्रथीके	ग्रंथिके
,,	,,	पच्चना	पच्चना
,,	,,	,,	,,
,,	,,	रति	इति
,	२१	पदक्कदुम्बर	पदक्कदु स्वर
,,	२३	ग्रथीकेषु	ग्रंथिकेषुं
,,	२४	दुर्द्दर	दुर्द्दर
,,	,,	द्वाशीति	द्वयशीति
,,	२५	प्पन्ने	प्पन्ने
२३५	९	मोह	मोह
,,	१०	द्व्याधिक	द्व्यधिक
,,	१७	शपो	शय
,,	१८	राधिक	रधिक
२३६	४	यश	यशो
,,	६	र्नीचे	नीचे
,,	१३	दुसद्	दुर्साई

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
२३६	१५	इंत्यादि	इत्यादि
,,	१६	द्वाशीति	द्व्यशीति
,,	२२	सयम्रि	सयमि
२३७	६	दश	दस
,,	१९	पद्क्त	पद्क
,,	,,	दुस्वर	दु स्वर
,,	२०	गीरस्तु	गीकारस्तु
,,	२१	एकाना	एकोना
२३८	४	मेच	मेर
,,	,,	अप	अप्
,,	७	दुस्वरनिक	दु स्वरनिक
,,	९	चतु	चतु
,,	,,	लक्षणा	लक्षण
,,	,,	सप्तति	सप्तति
,,	१३	पष्ट	पद्
,,	,,	लक्षणा	लक्षण
,,	२०	चख़ू	चस्खू
२३९	११	नथि	नार्थि
,,	१३	योगति	योगत्ति
,,	१९	नेद्यो	नादेयाऽ
,,	२२	सप्तति	सप्तति
२४०	१	प्येय	ऽप्येव
,,	२	तेचक्षुद	स्तेचक्षुर्द
,,	४	चक्षुद	चक्षुर्द

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
२४०	५	बवी	नन्वि
,,	१३	,,	,,
२४३	९	पच	पञ्चक
,,	,,	पडधिक	पटधिक
,,	१४	नीश्चे	नीचे
,,	१९	पूॅया	पूर्वी
२४३	२०	एव्र	एव
२४८	१३	आहार	⊘
,,	१४	मार्गणामे	मार्गणामे चार आनुपूर्वीना ११८ नो उदय छे
२५०	१	सेपासु	शेपासु
,,	१२	नीश्चे	नीचे
,,	१७	,,	,,
२५१	४	दय	दय प्राप्यते
,,	५	माप्यते	⊘
,,	२२	तेजो	तजो लेश्या
२५४	२२	सम्प	सम्प
२५५	१६	रगति	इगति
२५६	८	अढार	अढार
,,	९	देस	देश
,,	१४	६५	४५
२५८	१४	३८	३९
२६१		सड	सग
२७४	३	लक्षणासु	लक्षणेषु

पृ	पं	अशुद्धि	शुद्धि
२७५	२९	लभ्यते	लभ्यते
२७६	१२	सम्क्त्व	सम्यक्त्व
”	२५	कर्य	कर्म
२७७	१२	अपज्जअ	अपज्जत्तुअ
२७८	६	पर्याप्ता	पर्याप्त
”	९	यदाहु	यदाह
२७९	१३	मवि	भव्वि
२८०	१६	चक्षुद	चक्षुर्द
२८२	२०	मोस	मौस
२८४	६	मृत्वा	मृत्वा
२८६	३	आहरो	आहारो
२८८	१	एव	एव
२८९	१८	पर्याप्ता क्ष्स्मा	पर्याप्त सूक्ष्म
”	२३	भनोचरम	भवश्चरम
२९०	२३	मना	मनो
२९२	११	क्ष्विति	प्विति
२९२	२२	जिअलख	जिअलक्ख
२९३	४	लक	लक्ख
२९४	१५	लेश्यायु	लेश्यासु
२९६	१	अदखोए	अहक्खाए
२९७	४	चखु	चक्खु
”	६	नाण	नाण
२९९	१	अहक्कार	अहक्खा
”	६	करण	करण

पृ	प.	अशुद्धि	शुद्धि
२९९	१८	१	गति,
,,	१९	गतिनेंद्री	पञ्चेंद्रि जाति
,,	२०	२	१ अनाहारक १
,,	२०	भव्य	भव्य १ अभव्य १
३००	१	हेनगोमूलोत्तरा	हेतू मूलोत्तर
,,	३	कपया	कषाय
३०५	११	मिश्र	मिश्र
,,	१३	ओदारिक	औदारिक
,,	१७	२	१
,,	१८	छवीस	ए छवीस
,,	१९	विषे	विषे, ए छवीस माहेथी
,,	,,	स्त्रीवेद	स्त्रीवेद, १ वैक्रिय, २ विना
,,	,,	२३	२१
,,	२०	छे	छे परिहारविशुद्धि चारित्रमें
३०६	१२	छे	छे मन पर्यवज्ञानमध्ये छठा गुणठाणावाला इहा वचन विरोध टाले छे.
,,	१६	३	१३
,,	२०	योगा	योग
३०७	२२	सपरा	सापरा
३०८	१९	मार्यणा	मार्गणा
३१०	९	हीना	हीना
३१२	११	व्यापारतो	व्यापारव्रतो
,,	,,	सच्छी	नेसल्यी १

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३१२	११	साहच्छी	साहत्यी
"	"	विदीरणा	विदारणा
३१३	९	ज्ञान	ज्ञाना
३१४	१६	पाउम्मी	पाउम्मी
३१५	३	भगति	[illegible]
३१६	१०	उक्त"च	उक्तच"
३१७	४	परीषह	परिसह
"	१८	तत्र	तत्त्व
"	१९	मित्र	मित्र
"	२३	वेच	ताँश्च
"	,	रूपा	रूपान्
३२०	१८	दमि	दमि
३२१	५	कथा	कथा
३२२	२०	वाउक्ता	वा
३२५	१	मपा	मपा
"	६	तिर्यक	तिर्यक्र
"	२४	केवलिन	केवलिनोऽनन्तगुणास्तेषां
३२७	१	समई	समईय
३२८	१२	वन्तोऽन	वतामन
"	४	पुसेसु	पुसेषु
३३०	२३	६२	४१
३३२	८	मेवा	मेवा
३३३	३	एमिभावे	एमिर्भावे
३३४	१४	रूत	रूप

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३३७	१२	२ अचक्षु	१ अचक्षु
,,	१३	पुरुषवेद २	पुरुषवेद
,,	१७	ज्ञूआ	जुआ
३३८	१२	ते मध्ये	ते २९ मध्ये
,,	,,	लेश्या	लेश्या विना
,,	१९	तथा	तथा ज्ञान ये विकलने सूत्रे कह्या छे सास्वादनने सम्यक्त्व माने छे ते माटे
,,	१७	छे,	छे, इहा आम्ना ए जे मिथ्यात्वनो उदय नहि ते माटे ज्ञान माने छे अने कर्मग्रंथ करना माड्यो ते थयो ए नये अज्ञान माने छे
३४१	४	जीव	जीवत्व
,,	१९	भव्यने	अभव्यने
३४२	७	उपशम	उपशम
३४३	१	मासे	मीसे
,,	१८	शत्सु	शति
,,	२३	तून	तन
३४४	१९	क्षयोपशम	उपशम
३४६	३	जयि	जह, यया
३५०	२३	क्रिय	क्रिया
३५१	२४	कारणा	करणी
३५२	२३	प्रमते	प्रमत्ते

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३५३	८	अट्ट	अद्द
३५५	२	कैक	कैको
"	८	पचेंद्रीय १	पचेंद्रिय २
३५८	५	रुप	रूप
"	६	"	"
३६१	९	अस	नस
३६३	९	नरगनौ १९	नरकगतो ७९
"	१६	विशति	विंशति
"	२२	भवति	भवन्ति
३६४	१५	भवन्ति	भवति
"	२३	नरक	नरक, १
"	"	नरकायु	नरकायु, तिर्यगायु
३६५	१	नरायु	नरकायु
३६७	२३	तत्व	तत्त्व
३७१	४	तद्द	तद्ध
३७३	५	उप	उव
"	१९	उरलस	उरल
३७४	१३	ध्यशीति	द्वयशीति
३७८	१७	पुण	पण
३८०	१०	अतमु	अन्तर्मु
३८१	१	"	"
३८४	९	ऽतथा	तथा
३८६	१७	सर्वं	सर्वे
३९०	१७	पचेंद्रि	पञ्चेन्द्रिय

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३९०	२१	भगा	भगा
३९४	१	मिश्रे	मिश्रे
३९७	८	सम्यक्त्वा	सम्यक्त्वा
,,	१६	उम	उत्त
३९८	१०	चोवीवी	चोवीसी
४००	१०	देये	दये
४०१	१२	गुणास्थान	गुणस्थान
४०३	८	वत्तनो	वत्तो
,,	२१	विंशर्ति	विंशर्ति
४०५	६	भवन्ति	भवति
,,	७	गत यो	गन्तव्यो
,,	१७	एव	एव
,,	२१	भगा	भङ्गा
४०६	९	क्रम	नम
४०९	१३	पर्यात्प्यस्य	पर्याप्तस्य
,,	१६	सन	स
,,	१९	तिर्यग	तिर्यग्
४११	३	सहननना	सहननाना
,,	४	पङ्क्त	पङ्क्त
,,	१७	त्रिंश	त्रिंशद्
४१२	१२	पर्याप्तस्य	पर्याप्तस्य
४१३	७	दुर्भगाना	दुर्भगाऽऽ
४१४	४	उच्चासे	च्छासे
,,	७	भगा	भङ्गो

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३५३	८	अट्ट	अद्द
३५५	२	कँक	कँको
"	८	पचेंद्रोय १	पचेंद्रिय २
३५८	५	रुप	रूप
"	६	"	"
३६१	९	अस	घरा
३६२	९	नरगनौ १९	नरकगनौ ७९
"	१६	विशति	विंशति
"	२२	भवति	भवन्ति
३६४	१५	भवन्ति	भवति
"	२३	नरक	नरक, १
"	"	नरकायु	नरकायु, तिर्यगायु
३६५	१	नरातु	नरकातु
३६७	२३	तत्व	तत्त्व
३७१	४	तद्ब	तद्ब
३७३	५	उप	उव
"	१९	उरलस	उरल
३७४	१३	द्वयशीति	द्वयशीति
३७८	१७	पुण	पण
३८०	१०	अतमु	अन्तर्मु
३८१	१	"	"
३८४	९	ऽतथा	तथा
३८६	१७	सर्व	सर्वे
३९०	१७	पचेंद्रि	पञ्चेन्द्रिय

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३९०	२१	मगा	भंगा
३९४	१	मिश्चे	मिश्रे
३९७	८	सम्पक्त्वा	सम्यक्त्वा
"	१६	उम	उन
३९८	१०	चोवीवी	चोवीसी
४००	१०	देये	दये
४०१	१२	गुणास्थान	गुणस्थान
४०३	८	बन्नतो	नन्नतो
"	२१	विंशतिं	निंशतिं
४०५	६	भवन्ति	भवंति
"	७	गनयो	गतव्यो
"	१७	एन	एन
"	२१	भगा	भङ्गा
४०६	९	नम	नम
४०९	१३	पर्यात्प्यस्य	पर्यासस्य
"	१६	सन	स
"	१९	तिर्यग	तिर्यग्
४११	३	सहननना	सहनननाना
"	४	पद्दक	पट्क
"	१७	निंश	निंशद्
४१२	१२	पयाप्तस्त्र	पर्याप्तस्य
४१३	७	दुर्भगाना	दुर्भगाऽऽ
४१४	४	छन्दुमे	चङ्कसे
"	७	भगा	भङ्गा

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
४१५	१६	अष्टौ	अष्टो
४१६	८	पर्याप्त	पर्याप्त्य
४१८	२०	सख्यानायनायागा	सरयानायगाया
४२०	४	१७	२७
,,	२०	प्रायोग्या	प्रायोग्यान्
४२१	४	भगा	भङ्गा
,,	९	१९	२९
४२२	१५	अहारक	आहारक
४२३	१५	सट्टि	सट्ठिसया
४२४	११	अडतीस	अटतालीस
,,	१८	१८८५	१७८५
,,	२०	नेउ	एकाणु
४२५	११	अमि	अमि
,,	१३	मू	मूत
,,	१४	धर्म	धर्माऽ
,,	२२	सु	सुअ
,,	१६	व्यस्त	वक्त
४२७	९	पचागी	पचागी
,,	२१	मागी	भागी
४२८	१८	चिटइ	चिट्ठइ
,,	२०	आत्मार्या	आत्मार्थी
४३०	७	नें	ने
,,	२१	हीय	हिय
४३१	२३	देव	दीप